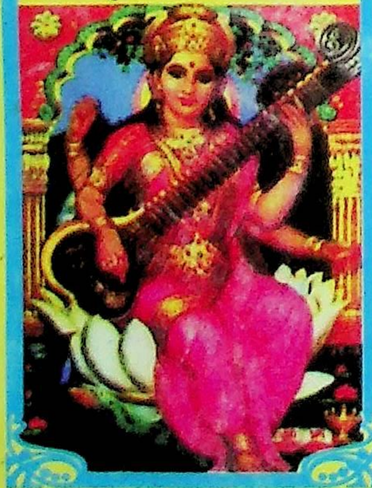
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्योतिष ज्ञान प्रचारार्थ आर्य संस्कृति पोषके

श्री आर्यभट्ट पंचांगम् विद्वद् वृन्द समर्पितं

ॐ ह्रीं महासरस्वत्यै नमः



ॐ श्री सरस्वत्यैमया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढ़ा विद्या दान ददातु मे॥

राजा बुध



मन्त्री चन्द्र

ज्योतिः शास्त्र समुद्रं प्रमथ्य मति मन्दराद्रिणाथ मया।
लोकस्या लोक करः शास्त्र शशांकः समुद्धितः॥



पूर्वाचार्यां ग्रन्था नोत्सृष्टा: कुर्वतामया शास्त्रम्।
तान वलोक्येदं च प्रयतध्वं कामत: सुजना:॥

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, ज्योतिष वाचस्पति



भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-2077 शकः-1942 सन्-2020-2021 भारतीय गणराज्य सम्वत् 71-72

प्रधान सम्पादक : पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य

सम्पादक : धर्मपाल अग्रवाल, 2/45-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026

मूल्य: 110.00

धर्मसन प्रकाशन नई सड़क दिल्ली-110006

वर्ष 35

अब शतक मार्तण्ड 150 वर्ष का

शतक मार्तण्ड 1900 to 2050 ₹ 500/-only

दोनों भाग इकट्ठे लेने पर

केवल 500/-

शतक मार्तण्ड 2001 to 2050 ₹ 200/-only

दोनों अंक सीमित संख्या में हैं। पहले बुक करवायें। नोट–रकम अग्रिम भेजने पर डाक खर्च नहीं लगेगा। जिनके पास प्रथम भाग है वे केवल 150 रुपये अग्रिम भेजकर द्वितीय भाग (2001–2050) प्राप्त कर सकते हैं

भारत के प्रमुख ज्योतिर्विदों द्वारा कठोर परिश्रम से निर्मित उपरोक्त ग्रन्थ ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसका सम्पादन कई ज्योतिष संबंधी पुस्तकों के रचयिता पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी.ए. प्रभाकर व अन्य कई विद्वानों ने बड़े ही सुन्दर और सुचारू रूप से तैयार किया है।

विशेषताएं

महादशा सारिणी, अंतर्दशा सारिणी, प्रत्यन्तर दशा सारिणी व सूक्ष्मदशा सारिणी सहित विशिष्ट संस्करण सन् 1900 से 2050 ई. तक के सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि के साप्ताहिक स्पष्ट व चन्द्रमा के दैनिक स्पष्ट, राहू-हर्षल-नेपच्यून-प्लूटो के मासिक स्पष्ट, वक्री-मार्गी, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, लघुरिक्थ सारिणी गणित, 0 से 63 उत्तर एवं 0 से 25 दक्षिण अक्षांश पर प्रति छः दिन का सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल, भारत के प्रमुख नगरों के भारतीय पद्धति से तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण, सन्, सम्वत्, मास, पक्ष का ज्ञान व मान निकालने की विधि सहित, सूर्य व चन्द्र स्पष्ट [illegible] सारिणी, सांपातिक काल का सम्पूर्ण गणित-जिसकी सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता [illegible] सकता है। उदाहरण सहित।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली बनाने के लिए ज्योतिषियों को जिन [illegible] आवश्यकता होती है, वे सभी इसमें उपलब्ध हैं। इस संस्करण में सूक्ष्म दशा सारिणी को 16 पेजों में [illegible] दिया ग[illegible] में कुछ और विषय बढ़ाकर बहुत उपयोगी बनाया है। इसके नये संस्करण को बढ़ि[illegible] पर सुन्दर व स[illegible] छापा गया है।

जो लेंगे भाग्यशाली होंगे

पुस्तक मिलने का पता:

धर्मसन प्रकाशन

CUSTOM[illegible] 7290900095

2596-97, [illegible] Delhi-6 Ph : 011-2[illegible] 3285234, 41730050

H.O. : 2/45A, Punjabi Bagh West, New Delhi-110026 Ph : 8700062919

Dharmson Prakashan A/c No. 10048614183, IDFC Bank (IFS Code : [illegible]0040101) Branch : Model Town, New Delhi-9

॥ श्री गणेशाय नमः ॥





श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित



श्री आर्यभटट्-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्–2077 ● शाके :–1942

सन्–2020–2021 ई. ● भारतीय गणराज्य संवत् 71–72

प्रधान सम्पादक
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न, प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली

सम्पादकः
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, 2/45-ए,
वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

प्रकाशकः

धर्मसन प्रकाशन

2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ❖ दूरभाष : 011-23264986, 23285234, 41730050, 7290900095

विषय सूची–2077

आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि

1. हमारे "**आर्यभट्ट पंचांग**" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश 28°।38 एवं पूर्व रेखांश 77°।12 के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।
2. **आर्यभट्ट पंचांग** के गणित में प्राचीन ज्योर्तिविदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सूक्ष्म दृक्गणित एवं चित्रा पक्षीय **निरयण पद्धति** को ही अपनाया गया है।
3. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अंतर आना स्वाभाविक है। अत: प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 2 मिनट ऋण (–) तथा सूर्यास्त में 2 मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।
4. इस पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।
5. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग आदि भा.स्टै.टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।
6. महीनों में अष्टमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टै.टा. प्रात: 5 घं. 30 मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी, उदयास्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुण्डली भी उपरोक्त समय की है।
7. लस्टर में A, B, C, D आदि चिन्ह दिये गये हैं, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका, जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाईन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचांग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।
8. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी-पल, उनका समाप्ति काल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरांत से माना जाये। उन घटी-पलों के घंटा-मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घंटा-मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भा.स्टै.टा. में ज्ञात हो जायेगा।
9. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि, नक्षत्रादि के घटी-पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घंटा-मिनट में भी दे दिये गये हैं। जिससे तिथि, नक्षत्रादि के समाप्ति काल को घंटा-मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे-मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां 24 लिखा हो वह रात्रि के ठीक 12 बजे समझे जायें। जहां 27।18 लिखा हो वहां 27 में से 24 घटाकर रात्रि के 3 बजकर 18 मि. समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।
10. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कॉलम में 15 को पूर्णमासी तथा कृष्ण पक्ष में 30 को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को बदी भी कहते हैं।
11. रा. मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कॉलम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिये गये हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रविष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें लिखी है।
12. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रात: 5।30 बजे (दिल्ली) के दिये गये हैं और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है। अपने अभिष्ट समय पर उनकों ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।
13. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य (0) चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे 60।00 घटी लिखा है। उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ.-अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त-अप्रैल-अक्टूबर (मास)
अनु.-अनुराधा (नक्षत्र)
आ.-आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आपा., आश्विन
अं.-अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ.-उदय, उपरांत
उ.फा.-उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.पा.-उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा.-उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ऐं-ऐन्द्र (योग)
क.-कर्क-कन्या (राशि), कला
का.-कार्तिक मास
क्रांति सा.-साम्य (महापात)
कृ.-कृतिका नक्षत्र, कृष्ण पक्ष
कु.-कुंभ राशि
गु.-गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा.-गुरु दान से
गो.-गोधूलि (लग्न)
गं.-गंड (योग)
घ.-घटी
घं.-घंटा
चि.-चित्रा (लग्न)
चै.-चैत्र (मास)
चौ.-चौर (पंचक)
चं.-चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज.-जयंती, जनवरी (मास)
जू.-जून (मास)
जु.-जुलाई (मास)
ज्ये.-ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता.-तारीख
तु.-तुला राशि
दि. ल.-दिन में लग्न
ध.-धनु (राशि), धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु.-धूलिमुख (अन्यगोधूली) लग्न
ध्रु.-ध्रुव (योग)
धृ.-धृति (योग)
नि.-निम्बार्क (सम्प्रदाय)
नृ.-नृप (पंचक)
प.-परिध (योग), पल
प्र.-प्रवेश
प्रा.-प्रारंभ
प्री.-प्रीति (योग)
पु.-पुष्य (नक्षत्र)
पुन.-पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा.-पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा.-पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा.-पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु.-फाल्गुन (मास)
ब्र.-ब्रह्म योग
वृ.-वृद्धि योग
बु.-बुध (वार), बुध ग्रह
भ.-भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र.-भाद्रपद (मास)
म.-मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास)
मा.-मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि.-मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी.-मीन राशि
मु.-मुहूर्त्त
मू.-मूल (नक्षत्र)
मे.-मेष (राशि) लग्न
मृ.-मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र.-रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा.-राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे.-रेवती (नक्षत्र)
रो.-रोहणि (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल.-लग्न
व.-वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र.-व्रत
व्य.-व्यतिपात (योग)
वृ.-वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या.-व्याघात (योग)
वि.-विशाखा (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि.मु.-विवाह मुहूर्त
वै.-वैष्णव सम्प्रदाय, वैधृत योग, वैशाख मास
श.-शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि.-शिव योग
शु.-शुक्रवार, शुक्रग्रह, शुभ, शुक्लयोग, शुक्ल पक्ष
श्रा.-श्रावण (मास)
सा.-साध्य (योग)
स्वा.-स्वाती (नक्षत्र)
स्मा.-स्मार्त (सम्प्रदाय)
सि.-सिद्धि (योग), सितंबर मास
सिं.-सिंह (राशि)
सु.-सुकर्मा (योग)
सौ.-सौभाग्य (योग)
ह.-हस्त (नक्षत्र), हर्षल (योग)
हि.-हिन्दी (मास तारीख)

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र की स्थापना सन् 1983 में हुई और भारत सरकार से इसका पंचीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोगादि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्यकाल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी, ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अंतर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया, तब हमारे देशवासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसंधान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री रामकृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानंद जी ने अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप आदि देशों में घूम-घूमकर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदोपरांत स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों संत-महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलंबन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन-मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थाएं हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला-कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई है। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थलों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचें। लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारण उत्तर भारत में इस विद्या का सबसे अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भंडार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रन्थों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिए अत्यंत उपयोगी ग्रन्थ **"शतक मार्त्तण्ड"** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है, उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता **श्री आर्यभट्ट** थे, जिनका जन्म 476 ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ **"आर्य भटीय"** कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यंजनों की सहायता से बड़ी-बड़ी सख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्वप्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्ही महापुरुष के नाम पर **आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

शतक मार्त्तण्ड जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने **श्री आर्यभट्ट पंचांग** ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरंभ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिए क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

–सम्पादक

...अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

—सम्पादक

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ **वृहत् जातक** की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने **आर्यभटीय** ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय से ही मिलता है। यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरंभ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रह-नक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धांत, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरूप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा सिद्धांत, गणित संहिता, मुहूर्त, फलित प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरंतर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अंदर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थाएं थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्या अध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम से कम 28000 वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् 476 में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **आर्यभटीय** में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि 4967 योजन बताई है। सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः-छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग, आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया-जैसे पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क=1, ख=2, ग=3, घ=4, ङ=5, च=6, छ=7, ज=8, इसी प्रकार क्रम से म=25, य=30, र=40, ल=50, व=60, श=70, ष=80, स=90, ह=100; क=एक, कि=सौ, कु=दस हजार, कृ=दस लाख, क्लृ=दस करोड़, के=दस अरब, कै=दस खरब, को=दस नील, कौ=दस शंख, इसी प्रकार ख=दो, खि=दो सौ, खु=बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ **आर्यभटीय** की रचना प्राचीन कुसुमपुर (जो आज का पटना नगर है) में रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद् विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि 598 ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल 1114 ई. के पहले का है, इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ **महा आर्यभटीय** है। इसमें 18 अध्याय हैं। जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीजगणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धांतों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ **महा आर्यभटीय** भी बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान विद्वान् थें और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थें और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बनाये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध तथा आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते है कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

— लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

प्रमुख व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत व्रत पर्वादि सं. 2077 वि.

भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन (ता. 25 मार्च 2020 से 12 अप्रैल 2021 ई. तक)

अवकाश	तिथि
श्री राम नवमी	02 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	06 "
शब-ए-बारात (ऐ.)	09 "
गुड फ्राइडे	10 "
वैशाखी	13 "
डॉ. अम्बेडकर ज.	14 "
मई दिवस	01 मई
बुद्ध पूर्णिमा	07 "
ईद-उल-फित्र	25 "
गंगा दशहरा	01 जून
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	01 अग.
रक्षा बंधन	03 "
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	11 "
भा. स्वतंत्रता दिवस 74वां वर्ष	15 "
श्री गणेश जन्म चतुर्थी	22 "
मुहर्रम ताजिया	30 "
अनन्त चतुर्दशी	01 सितं.
महात्मा गांधी व शास्त्री ज.	02 अक्टू.
चैहल्लुम (ऐ.)	08 "
श्री अग्रसेन जयंती	17 "
विजया दशमी	25 अक्टू.
ईद-ए-मिलाद (ऐ.)	30 "
श्री वाल्मीकि जयंती	31 "
ईद-ए-मौलाद (ऐ.)	04 नवं.
दीपावली, महावीर निर्वाण दिवस	14 "
भैया दूज	16 "
छठ पूजा (बिहार)	20 "
गुरु तेग बहादुर बलिदान दि.	19 दिसं
क्रिसमस डे	25 "
गुरु नानक देव जयंती	30 "
अंग्रेजी नववर्ष 2021 प्रा. (ऐ.)	01 जन.
लोहड़ी उत्सव (पं.-हरि.-हि.प्र.)	13 "
मकर संक्रांति (ऐ.)	14 "
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	20 "
भा. गणतंत्र दिवस 72वां वर्ष	26 "
वसंत पंचमी	16 फर.
श्री महाशिवरात्री व्रत	11 मार्च
शब-ए-मिराज (ऐ.)	12 "
होलिका दहन	28 "
गुड फ्राइडे	02 अप्रै.

प्रमुख व्रत पर्वोत्सवादि

व्रत पर्वोत्सव	तिथि
नववर्ष प्रारंभ, गुडी पड़वा	25 मार्च
गौतम ज., वसंत नवरात्र प्रारंभ	25 "
सिंधारा (राज.), चेटीचण्ड	26 "
झूलेलाल जयंती	26 "
गणगौर 3, गौरी 3, सौभाग्य 3	27 "
मनोरथ 3, मत्स्य जयंती	27 "
विनायक चतुर्थी	28 "
श्री पंचमी	29 "
स्कंद षष्ठी व्रत, यमुना जयंती	30 "
श्री दुर्गाष्टमी (भवान्युत्पत्ति), महाष्टमी	01 अप्रै.
अन्नपूर्णा पूजा, अशोकाष्टमी	01 "
श्री रामनवमी, नवरात्र पूर्ण	02 "
धर्मराज दशमी, नवरात्रोत्थापन	03 "
कामदा एकादशी व्रत	04 "
प्रदोष व्रत, मदन 12, वामन 12	05 अप्रै.
हरिदमनोत्सव	05 "
अनंग त्रयोदशी, महावीर जयंती	06 "
दमनक चतुर्दशी	07 "
श्री हनुमान ज. वैशाख स्नान प्रा.	08 "
गुड फ्राइडे	10 "
अनुसुइया जयंती	11 "
अम्बेडकर ज.	14 "
शीतला पूजन, बूढ़ा बासोड़ा	15 "
वरूथिनी 11 व्रत, वल्लभाचार्य ज.	18 "
मन्वादि 15	18 "
शुकदेव जयंती	22 "
बाबू कुंवर सिंह जयंती	23 "
देव दामोदर पुण्य तिथि (असम)	24 "
वर्षीतप, अक्षय-कल्पादि 3, मातंगी ज.	26 "
श्री शंकराचार्य जयंती, सूरदास ज.	28 "
रामानुजाचार्य जयंती, चंदन षष्ठी	29 अप्रै.
श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति)	30 "
श्री सीता नवमी (जानकी ज.)	01 मई
बगलामुखी जयंती, मजदूर दिवस	01 "
रुक्मिणी द्वादशी	04 "
अशोक त्रिरात्री व्रत	05 "
श्री नृसिंह जयंती	06 "
छिन्नमस्ता ज., बुद्ध ज., कूर्म ज.	07 "
वैशाख पूर्णिमा व्रत, पीपल पूजन	07 "
वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा	07 "
देवर्षि नारद जयंती	09 "
श्री दादूदयाल पुण्य तिथि	15 "
मधुसूदन द्वादशी	19 "
वट सावित्री व्रत अमा. प्रा.	20 "
भावुका अमावस्या	22 "
शनैश्चर ज., वट सावित्री व्रत स.	22 "
करवीर व्रत	23 "
दशाश्वमेध घाटे स्नान प्रा. (काशी)	23 "
रम्भा तृतीया व्रत	25 "
अरण्य षष्ठी, जामित्र 6 (बंगाल)	28 "
धूमावती जयंती	30 "
महेश नवमी	31 "
श्री गंगा दशहरा (मे. हरिद्वार)	01 जून
वट सावित्री व्रत प्रा., चम्पक 12	03 "
कबीर जयंती, विश्व पर्यावरण दि.	05 "
वटसावित्री व्रत पू., ज्येष्ठी पूर्णिमा	05 "
मनोरथ द्वितीया (बंगाल)	23 "
जगदीश रथ यात्रा (पुरी)	23 "
कुमार षष्ठी व्रत	26 "
वैवस्वत सप्तमी (सूर्य पूजन)	27 "
भड्डली नवमी, शुद्रादि 9	29 "
आशा दशमी व्रत	30 "
जैन चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रा.	04 जुला.
आषाढ़ी पूर्णिमा, मन्वादि 15	05 "
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	05 "
अशून्य शयन व्रत प्रा. (बंगाल)	06 "
मंगला गौरी पूजा	07 "
नाग पंचमी (मरुस्थले)	10 जुला.
हरियाली 30, मन्वादि 30	20 "
सिंधारा (राजस्थान)	22 "
लोकमान्य तिलक जयंती	23 "
हरियाली-मधुश्रवा (छोटी) तीज	23 "
कल्कि ज., नाग पंचमी देशाचारे	25 "
तुलसीदास ज, भानु-शीतला 7(सिंध)	27 "
पवित्रार्पण द्वादशी	31 "
लोकमान्य तिलक पुण्य दिवस	01 अग.
हयग्रीव जयंती	02 "
उपाकर्म (अथर्व.), गायत्री जयंती	03 "
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन	03 "
अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	03 "
कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज	06 "
संकट चतुर्थी, बहुला चतुर्थी	07 "
रक्षा पंचमी (उड़ीसा)	08 "
चंदन 6, ऊभी-ललही 6, हल 6	09 "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)	11 "
मां आद्यकाली जयंती	11 "
जन्माष्टमी व्रत (वै.), ज्ञानेश्वर ज	12 "
गोगा नवमी, नंदोत्सव (गोकुल)	13 "
भा. स्वतंत्रता दिवस 74वां वर्ष	15 "
गोवत्स द्वादशी, बिछ बारस	16 "
कुशोत्पाटिनी, पिठोरी अमावस्या	18 "
अघोरा 14, कैलाश यात्रा	18 "
मन्वादि 30, लोहार्गल स्नान (राज.)	19 "
तेलाधर तपस्या जैन	20 "
हरितालिका 3, गौरी 3, मन्वादि 3	21 "
विनायक-कलंकी-पत्थर 4	22 "
संवत्सरी जैन	22 "
ऋषि पंचमी व्रत	23 "
सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता 6 (गुज.)	24 "
बलदेव षष्ठी, मुक्ताभरण-संतान 7	24 "
श्री राधा जयंती	25 "
दधीचि जयंती	26 "
श्री चन्द नवमी, अदुःख नवमी	27 "
भुवनेश्वरी जयंती, मुहर्रम ताजिया	30 "

नोट-अवकाश (ऐ.) को ऐच्छिक अर्थात् वैकल्पिक समझें। मुस्लिम त्यौहार चांद से होते हैं। स्थान भेद आदि कारणों से कभी-कभी एक दिन का फर्क आ जाता है। अवकाशों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है।

आर्यभट्ट पंचांगम्

व्रत / पर्व	तिथि
अनन्त चतुर्दशी व्रत	01 सितं.
प्रोष्ठपदी पूर्णिमा व्रत	02 "
चन्दन षष्ठी व्रत	08 "
जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत	10 "
सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध	11 "
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	02 अक्टू.
शारदीय नवरात्र प्रा., घटस्थापन	17 "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	20 "
सरस्वती आवाहनम्	21 "
सरस्वती पूजनं	22 "
भद्रकाल्यावतार	23 "
मन्वादि 9, महाष्टमी, दुर्गाष्टमी	24 "
महानवमी, सरस्वती बलिदानम्	24 "
नवरात्र पूर्ण, सरस्वती विसर्जन	25 "
विजया दशमी (रावण दाह)	25 "
अपराजिता व शमी पूजन	25 "
भरत मिलाप, श्री माधवाचार्य ज.	26 "
कोजागर व्रत	30 "
शरत्पूर्णिमा, महारास पूर्णिमा (वृंदा.)	31 "
सरदार पटेल ज., इन्दिरा गांधी पु.दि.	31 "
कार्तिक स्नान प्रा., वाल्मीकि ज.	31 "
करवा चौथ, ईद-ए-मौलाद (मु.)	04 नवं.
कर्क 4, दशरथ 4	04 "
अहोई अष्टमी	08 "
राधा जयंती	09 "
गोवत्स द्वादशी (गोवत्स पूजन)	12 "
धनतेरस, धन्वंतरी ज., यमाय दीपदानं	13 "
नरकहारिणी रूप चतुर्दशी	14 "
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	14 "
पं.जवाहर लाल नेहरू ज., बाल दि.	14 "
महावीर निर्वाण दि., कमला जयंती	15 "
गोवर्धन पूजा, विश्वकर्मा पूजा	15 "
अन्नकूट, बली पूजा	15 "
भैया दूज, यम द्वितीया	16 "
यमुना स्नान, चित्रगुप्त पूजन	16 "
सूर्य षष्ठी व्रतारंभ (बिहार)	19 "
सौभाग्य पंचमी, पाण्डव 5	19 "
श्रीमती इंदिरा गांधी जन्म दिवस	19 "
सूर्य षष्ठी (डाला छठ) पूजा (बिहार)	20 "
गोपाष्टमी, गोसंवर्धन सप्ताह पूर्ति	22 "
अक्षय नवमी, कूष्माण्ड 9	23 "
आंवला 9, कृतयुगादि 9	23 "
भीष्मपंचक व्रत प्रा., तुलसी विवाह	25 नवं.
प्रबोधिनी एकादशी व्रत	25 "
कालीदास जयंती	26 "
फातिहा यजदहूम (मु.)	27 "
वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत	28 "
जैन चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण	29 "
गुरु नानकदेव जयंती, देव दीपोत्सव	30 "
कार्तिकी पूर्णिमा, भीष्म पंचक पूर्ण	30 "
कार्तिक स्नान पूर्ण, मन्वादि 15	30 "
विश्व एड्स दिवस	01 दिसं.
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	03 "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ज. दि.	03 "
श्री काल भैरवाष्टमी, भैरव पूजन	07 "
भारतीय झण्डा दिवस	07 "
विश्व मानवाधिकार दिवस	10 "
बालाजी जयंती	13 "
गुरु तेगबहादुर बलिदान दि.	19 "
क्रिसमस डे (बड़ा दिन)	25 "
वैकुण्ठ 11 (द.भा.), गीता ज.	25 "
श्री दत्तात्रेय जयंती	29 "
त्रिपुर भैरव जयंती, अन्नपूर्णा जयंती	30 "
न्यू ईयर इवनिंग डे	31 "

सन् 2021 ई.

व्रत / पर्व	तिथि
नववर्ष प्रारंभ	01 जन.
वृत्तिकार भगवान बोधायन जयंती	10 "
लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस	11 "
स्वामी विवेकानन्द जयंती	12 "
लोहड़ी उत्सव	13 "
मकर संक्रांति, पोंगल पर्व	14 "
भारतीय थल सेना दिवस	15 "
सुभाष चन्द्र बोस ज., शाम्ब दशमी	23 "
भारतीय गणतंत्र दिवस 72 वां वर्ष	26 "
पौषी पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नान प्रा.	28 "
शाकंभरी जयंती	28 "
महात्मा गांधी पुण्य दिवस	30 "
श्री रामानंदाचार्य ज.	04 फर.
श्री शीतलनाथ जन्म-तप (जैन)	08 "
ऋषभदेव मोक्ष	10 "
मौनी अमावस्या	11 "
गौरी3 व्रत, गोंतरी (पं.), वैलेन्टाइन डे	14 "
वरद-तिल 4	15 "
वसन्त (श्री) पंचमी, तक्षक पूजा	16 "
रति कामोत्सव, सरस्वती पूजन	16 फर.
शीतला 6 (बंगाल), दारिद्रय हरण 6	17 "
रथ सप्तमी, आरोग्य 7, अचल 7	19 "
मन्वादि 7, चन्द्रभागा 7, भानु 7	19 "
भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी	20 "
भीष्म द्वादशी (भीष्म तर्पण)	24 "
माघस्नान पू., ललिता ज., रविदास ज.	27 "
समर्थ गुरु रामदास जयंती	07 मार्च
महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती	08 "
श्री महाशिवरात्री व्रत	11 "
शिव खप्पर पूजन	13 "
फुलरिया दूज, रामकृष्ण परमहंस ज.	15 "
पं. लेखराम वीर तृतीया	16 "
महर्षि याज्ञवल्क्य जयंती	18 "
गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल)	19 "
होलाष्टक प्रारम्भ, दादुदयाल जयंती	22 "
होलिका दहन, होलाष्टक पूर्ति	28 "
मन्वादि 15, श्री चैतन्य महाप्रभु ज.	28 "
छारेंडी, होली (धुलैण्डी)	29 "
वसन्त प्रतिपदा, गणगौरी पू.प्रा.(राज.)	29 "
संत तुकाराम जयंती	30 "
आशा चतुर्थी व्रत (राज.)	31 "
रंग 5, एकनाथ 6 व्रत, गुड फ्राइडे	02 अप्रै.
शीतलाष्टमी पूजन	04 "
रंग त्रयोदशी	09 "
मन्वादि 30, चान्द्र संवत्सर 2077 पूर्ण	12 "

विनायक चौथ व्रत (शुक्ल पक्षीय)

मास	वार	तिथि
चैत्र	शनिवार	28 मार्च
वैशाख	सोमवार	27 अप्रै.
ज्येष्ठ	मंगलवार	26 मई
आषाढ़	बुधवार	24 जून
श्रावण	शुक्रवार	24 जुला.
भाद्रपद	शनिवार	22 अग.
प्र.आश्विन	रविवार	20 सितं.
द्वि.आश्विन	सोमवार	19 अक्टू.
कार्तिक	बुधवार	18 नवं.
मार्गशीर्ष	शुक्रवार	18 दिसं.
सन् 2021 ई.		
पौष	शनिवार	16 जन.
माघ	सोमवार	15 फर.
फाल्गुन	बुधवार	17 मार्च

चतुर्थी व्रत (कृष्ण पक्षीय)

मास	वार	तिथि
वैशाख	शनिवार	11 अप्रै.
ज्येष्ठ	रविवार	10 मई
आषाढ़	सोमवार	08 जून
श्रावण	बुधवार	08 जुला.
भाद्रपद	शुक्रवार	07 अग.
प्र.आश्विन	शनिवार	05 सितं.
द्वि.आश्विन	सोमवार	05 अक्टू.
कार्तिक	बुधवार	04 नवं.
मार्गशीर्ष	गुरुवार	03 दिसं.
सन् 2021 ई.		
पौष	शनिवार	02 जन.
माघ	रविवार	31 "
फाल्गुन	मंगलवार	02 मार्च
चैत्र	बुधवार	31 "

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

मास	वार	तिथि
चैत्र	बुधवार	01 अप्रै.
वैशाख	शुक्रवार	01 मई
ज्येष्ठ	शनिवार	30 "
आषाढ़	रविवार	28 जून
श्रावण	सोमवार	27 जुला.
भाद्रपद	बुधवार	26 अग.
प्र.आश्विन	गुरुवार	24 सितं.
द्वि.आश्विन	शुक्रवार	23 अक्टू.
कार्तिक	रविवार	22 नवं.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	22 दिसं.
सन् 2021 ई.		
पौष	गुरुवार	21 जन.
माघ	शनिवार	20 फर.
फाल्गुन	सोमवार	22 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत

मास	वार	तिथि
वैशाख	मंगलवार	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	गुरुवार	14 मई
आषाढ़	शनिवार	13 जून
श्रावण	रविवार	12 जुला.
भाद्रपद	मंगलवार	11 अग.
प्र.आश्विन	गुरुवार	10 सितं.
द्वि.आश्विन	शनिवार	10 अक्टू.

कार्तिक	रविवार	08 नवं.
मार्गशीर्ष	सोमवार	07 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
पौष	बुधवार	06 जन.
माघ	गुरुवार	04 फर.
फाल्गुन	शुक्रवार	05 मार्च
चैत्र	रविवार	04 अप्रै.

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	कामदा	04 अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी	18 "
"	शुक्ल	मोहिनी	03 मई
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	18 "
"	शुक्ल	निर्जला	02 जून
आषाढ़	कृष्ण	योगिनी	17 "
आषाढ़.	शुक्ल	देवशयनी	01 जुला.
श्रावण	कृष्ण	कामदा	16 "
"	शुक्ल	पवित्रा	30 "
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	15 अग.
"	शुक्ल	पद्मा (जलझू)	29 "
प्र.आश्वि.	कृष्ण	इन्दिरा	13 सितं.
"	शुक्ल	कमला	27 "
द्वि.आश्वि.	कृष्ण	पुरुषोत्तमा	13 अक्टू.
"	शुक्ल	पापांकुशा	27 "
कार्तिक	कृष्ण	रमा	11 नवं.
"	शुक्ल	देव प्रबोधिनी	25 "
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पत्ति	10 दिसं.
"	शुक्ल	मोक्षदा	25 "
		सन् 2021 ई.	
पौष	कृष्ण	सफला	09 जन.
"	शुक्ल	पुत्रदा	24 "
माघ	कृष्ण	षट्तिला	07 फर.
"	शुक्ल	जया	23 "
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	09 मार्च
"	शुक्ल	आमलकी	25 "
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	07 अप्रै.

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	रविवार	05 अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	सोमवार	20 "
वैशाख	शुक्ल	मंगलवार	05 मई
ज्येष्ठ	कृष्ण	बुधवार	20 "
"	शुक्ल	बुधवार	03 जून
आषाढ़	कृष्ण	गुरुवार	18 "
"	शुक्ल	गुरुवार	02 जुला.
श्रावण	कृष्ण	शनिवार	18 "
"	शुक्ल	शनिवार	01 अग.
भाद्रपद	कृष्ण	रविवार	16 "
"	शुक्ल	रविवार	30 "
प्र.आश्वि.	कृष्ण	मंगलवार	15 सितं.
"	शुक्ल	मंगलवार	29 "
द्वि.आश्वि.	कृष्ण	बुधवार	14 अक्टू.
"	शुक्ल	बुधवार	28 "
कार्तिक	कृष्ण	शुक्रवार	13 नवं.
"	शुक्ल	शुक्रवार	27 "
मार्गशीर्ष	कृष्ण	शनिवार	12 दिसं.
"	शुक्ल	रविवार	27 "
		सन् 2021 ई.	
पौष	कृष्ण	रविवार	10 जन.
"	शुक्ल	मंगलवार	26 "
माघ	कृष्ण	मंगलवार	09 फर.
"	शुक्ल	बुधवार	24 "
फाल्गुन	कृष्ण	बुधवार	10 मार्च
"	शुक्ल	शुक्रवार	26 "
चैत्र	कृष्ण	शुक्रवार	09 अप्रै.

मासिक शिवरात्री व्रत

वैशाख	मंगलवार	21 अप्रै.
ज्येष्ठ	बुधवार	20 मई
आषाढ़	शुक्रवार	19 जून
श्रावण	रविवार	19 जुला.
भाद्रपद	सोमवार	17 अग.
प्र.आश्विन	मंगलवार	15 सितं.
द्वि.आश्विन	गुरुवार	15 अक्टू.
कार्तिक	शुक्रवार	13 नवं.
मार्गशीर्ष	रविवार	13 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
पौष	सोमवार	11 जन.
माघ	बुधवार	10 फर.
फाल्गुन	गुरुवार	11 मार्च
चैत्र	शनिवार	10 अप्रै.

पूर्णिमा व्रत

चन्द्रोदय व्यापिनी	मास	सूर्योदय व्यापिनी
07 अप्रै.	चैत्र	08 अप्रै.
06 मई	वैशाख	07 मई
05 जून	ज्येष्ठ	05 जून
04 जुला.	आषाढ़	05 जुला.
03 अग.	श्रावण	03 अग.
01 सितं.	भाद्रपद	02 सितं.
01 अक्टू.	प्र.आश्विन	01 अक्टू.
31 "	द्वि.आश्विन	31 "
29 नवं.	कार्तिक	30 नवं.
29 दिसं.	मार्गशीर्ष	30 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
28 जन.	पौष	28 जन.
26 फर.	माघ	27 फर.
28 मार्च	फाल्गुन	28 मार्च

अमावस्याएं

पितृकार्या तर्पणादि निमित्त	मास	देवकार्या स्नान दानार्थ
22 अप्रै.	वैशाख	23 अप्रै.
22 मई	ज्येष्ठ	22 मई
21 जून	आषाढ़	21 जून
20 जुला.	श्रावण	20 जुला.
18 अग.	भाद्रपद	19 अग.
17 सितं.	प्र.आश्विन	17 सितं.
16 अक्टू.	द्वि.आश्विन	16 अक्टू.
14 नवं.	कार्तिक	15 नवं.
14 दिसं.	मार्गशीर्ष	14 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
12 जन.	पौष	13 जन.
11 फर.	माघ	11 फर.
13 मार्च	फाल्गुन	13 मार्च
11 अप्रै.	चैत्र	12 अप्रै.

श्री सत्यनारायण व्रत

चैत्र	मंगलवार	07 अप्रै.
वैशाख	बुधवार	06 मई
ज्येष्ठ	शुक्रवार	05 जून
आषाढ़	शनिवार	04 जुला.
श्रावण	सोमवार	03 अग.
भाद्रपद	मंगलवार	01 सितं.
प्र.आश्विन	गुरुवार	01 अक्टू.
द्वि.आश्विन	शनिवार	31 "
कार्तिक	रविवार	29 नवं.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	29 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
पौष	गुरुवार	28 जन.
माघ	शुक्रवार	26 फर.
फाल्गुन	रविवार	28 मार्च

सायन संक्रांतियां

वृष	रविवार	19 अप्रै.
मिथुन	बुधवार	20 मई
कर्क	शनिवार	20 जून
सिंह	बुधवार	22 जुला.
कन्या	शनिवार	22 अग.
तुला	मंगलवार	22 सितं.
वृश्चिक	शुक्रवार	23 अक्टू.
धनु	रविवार	22 नवं.
मकर	सोमवार	21 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
कुम्भ	बुधवार	20 जन.
मीन	गुरुवार	18 फर.
मेष	शनिवार	20 मार्च

निरयण संक्रांतियां (पुण्यकाल)

मेष	सोमवार	13 अप्रै.
वृष	गुरुवार	14 मई
मिथुन	रविवार	14 जून
कर्क	गुरुवार	16 जुला.
सिंह	रविवार	16 अग.
कन्या	बुधवार	16 सितं.
तुला	शनिवार	17 अक्टू.
वृश्चिक	सोमवार	16 नवं.
धनु	मंगलवार	15 दिसं.
	सन् 2021 ई.	
मकर	गुरुवार	14 जन.
कुम्भ	शुक्रवार	12 फर.
मीन	रविवार	14 मार्च

षडऋतु, गोल एवं अयनारंभ

तारीख	ऋतु	अयन	गोल
19 अप्रै.	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर
21 जून	वर्षा	-	दक्षिण
22 अग.	शरद	-	-
22 सितं.	-	दक्षिण	दक्षिण
23 अक्टू.	हेमन्त	-	-
21 दिसं.	शिशिर	-	उत्तर
18 फर.	वसन्त	-	-
20 मार्च	-	उत्तर	-

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध (महालय)

पूर्णिमा श्राद्ध	02 सितं.
प्रतिपदा श्राद्ध	03 "
द्वितीया श्राद्ध	04 "
तृतीया श्राद्ध	05 "
चतुर्थी श्राद्ध	06 "
पंचमी श्राद्ध	07 "
षष्ठी श्राद्ध	08 "
सप्तमी श्राद्ध	09 "
अष्टमी श्राद्ध	10 "
नवमी श्राद्ध (सौभाग्यवती श्राद्ध)	11 "
दशमी श्राद्ध	12 "
एकादशी श्राद्ध	13 "
द्वादशी श्राद्ध	14 "
त्रयोदशी श्राद्ध	15 "
चतुर्दशी श्राद्ध (दुर्मरण श्राद्ध)	16 "
अमावस्या श्राद्ध (सर्वपितृ श्राद्ध)	17 "
मातामह श्राद्ध	18 "

दशावतार जयन्तियां

श्री मत्स्य जयंती	27 मार्च
श्री राम जयंती	02 अप्रै.
श्री परशुराम जयंती	25 "
श्री नृसिंह जयंती	06 मई
श्री कूर्म जयंती	06 "
श्री बुद्ध जयंती	07 "
श्री कल्की जयंती	25 जुला.
श्री कृष्ण जयंती	11 अग.
श्री वराह जयंती	21 "
श्री वामन जयंती	29 "

दसमहाविद्या जयंतियां

श्री महातारा जयंती	01 अप्रै.
श्री मातंगी जयंती	26 "
श्री बगलामुखी जयंती	01 मई
श्री छिन्नमस्ता जयंती	07 "
श्री धूमावती जयंती	30 "
आद्या मां श्रीकाली जयंती	11 अग.
श्री भुवनेश्वरी जयंती	30 "
श्री कमला जयंती	14 नवं.
श्री त्रिपुर भैरवी जयंती	30 दिसं.
श्री विद्या मां ललिता जयंती	27 फर

जैन व्रत, पर्वोत्सव

दशलक्षण व्रत प्रा.	29 मार्च
श्री अजित नाथ जी मोक्ष	29 "
रोहिणी व्रत, श्री संभवनाथ जी मोक्ष	30 "
आर्यबिल ओली प्रा.	31 "
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	02 अप्रै.
श्री सुमतिनाथ जन्म-ज्ञान-मोक्ष	04 "
श्री महावीर जयंती	06 "
दशलक्षण व्रत-आर्यबिल ओली पूर्ण	07 "
श्रीमुनि सुव्रत नाथ जन्म-तप	17 "
श्री कुन्थुनाथ जन्म-तप-मोक्ष	23 "
रोहिणी व्रत	26 "
श्री महावीर स्वामी कैवल्य ज्ञान	03 मई
ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा.	08 "
श्री अनन्त नाथ जन्म-तप	19 "
श्री शांति नाथ जन्म-तप	21 "
रोहिणी व्रत	23 "
श्रुति पंचमी	27 "
श्री सुपार्श्व नाथ जन्म-तप	03 जून
ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण	05 "
श्री नमिनाथ जन्म-तप	15 "
रोहिणी व्रत	20 "
नेमीनाथजी मोक्ष	27 "
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	28 "
चौमासी 14, चातुर्मास व्रत नियम प्रा.	04 जुला.
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	05 जुला.
तेरा पंथ स्थापना दिवस	05 "
रोहिणी व्रत	17 "
श्री नेमी नाथ जन्म-तप	26 "
श्री पार्श्वनाथ मोक्ष	26 "
रोहिणी व्रत	13 अग.
पर्युषण पर्व प्रा.	16 "
कल्पसूत्र पाठ	19 "
तेलाधर तप	20 "
संवत्सरी महापर्व, पर्युषण पर्व पूर्ण	22 "
दशलक्षण व्रत प्रा.	22 "
ऋषि पंचमी	23 "
श्री कालू निर्वाण दिवस	24 "
सुगन्ध दशमी	28 "
रत्नत्रय प्रा., आचार्यभिक्षु निर्वाण दि.	31 "
दस लक्षण व्रत पूर्ण	01 सितं.
रत्नत्रय समाप्त	02 "
क्षमावणी पर्व	03 "
रोहिणी व्रत	10 "
रोहिणी व्रत	07 अक्टू.
आर्यबिल ओली प्रा.	22 "
आर्यबिल ओली पूर्ण	31 "
रोहिणी व्रत	03 नवं.
श्री पद्मप्रभु जन्म-तप	13 "
श्री महावीर निर्वाण दि.	15 "
जैन संवत् प्रारंभ	15 "
ज्ञान पंचमी	19 "
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	22 "
रोहिणी व्रत, श्री संभवनाथ जन्म	30 "
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	30 "
चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण	30 "
श्री महावीर स्वामी तप	10 दिसं.
श्री पुष्पदंत नाथ जन्म-तप	15 "
मौनी 11, श्री मल्लिनाथ जन्म-तप	25 "
रोहिणी व्रत, श्री अरहनाथ जन्म	28 "

सन् 2021 ई.

श्री पार्श्वनाथ जन्म-तप	09 जन.
श्री चन्द्रप्रभु जन्म-तप	09 "
श्री यतेन्द्र सुरेश्वर ज.-पुण्य	15 "
श्री राजेन्द्र सुरेश्वर ज.-पुण्य	20 "
रोहिणी व्रत	24 "
श्री शीतल नाथ जन्म-तप	08 फर.
मेरु त्रयोदशी	09 "
श्री ऋषभदेव मोक्ष	10 "
श्री विमल नाथ जन्म-तप	15 "
दशलक्षण व्रत प्रा.	16 "
रोहिणी व्रत	20 "
श्री अजितनाथ जन्म-तप	22 "
श्री धर्मनाथ जन्म-तप	25 "
श्री जिनेन्द्र रथयात्रा, दशलक्षण व्रत पू.	26 "
श्री पद्मप्रभु मोक्ष	02 मार्च
श्री श्रेयांश नाथ जन्म-तप	09 "
रोहिणी व्रत	20 "
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	21 "
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	28 "
श्री ऋषभदेव जन्म-तप	05 अप्रै.
श्री अरहनाथ मोक्ष	11 "

इस्लामी त्यौहार

शब-ए-बारात (मु.)	09 अप्रै.
पाक रोजे शुरू	25 "
सहादत-ए-हजरत अली	15 मई
जमात-ए-अलविदा	22 "
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	25 "
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	01 अग.
मोहर्रम हिजरी सन् 1442 प्रा.	21 "
मुहर्रम ताजिया	30 "
चेहल्लम शहीद करबला	08 अक्टू.
आखरी चाहर शम्बा	14 "
सहादत-ए-इमाम हसन	16 "
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	30 "
ईद-ए-मौलाद	04 नवं.
फातिहा यजदहूम	27 "

क्रिश्चियन पर्व

पाम सण्डे	05 अप्रै.
गुड फ्राइडे	10 "
ईस्टर सण्डे	12 "
क्रिसमस डे (बड़ा दिन), ईसा ज.	25 दिसं.
न्यू ईयर ईवनिंग डे	31 "
न्यू ईयर सन् 2021 प्रा.	01 जन.
वेलेण्टाईन डे	14 फर.

पाम सण्डे	28 मार्च
गुड फ्राइडे	02 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	04 "

महापुरुष जयन्तियां

श्री गौतम जयन्ती	25 मार्च
श्री झूलेलाल जयंती	26 "
डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती	14 अप्रै.
श्री बल्लभाचार्य जयंती	18 "
श्री शुकदेव मुनि जयंती	22 "
श्री बाबू कुंवरसिंह जयंती (बिहार)	23 "
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयंती	28 "
श्री सूरदास जयंती	28 "
श्री रामानुजाचार्य जयंती (द.भा.)	29 "
श्री नरसिंह जयंती	06 मई
बुद्ध जयंती, कूर्म जयंती	07 "
कवि श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	07 "
श्री नारद जयंती	09 "
श्री महाराणा प्रताप जयंती	25 "
संत कबीर जयंती	05 जून
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयंती	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	27 "
संत ज्ञानेश्वर जयंती	12 अग.
संत सुधरंशाह जयंती	19 "
स्वामी हरिदास ज., ऋषि दधीचि ज.	26 "
डॉ. सर्वपल्ली श्री राधाकृष्णन जयंती	05 सितं.
स्वामी शिवानन्द जयंती	08 "
पंडित गोविन्द वल्लभ पंत जयंती	09 "
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	02 अक्टू.
महाराजा अग्रसेन जयंती	17 "
महर्षि वाल्मीकि ज., सरदार पटेल ज.	31 "
कविकुल गुरु कालीदास जयंती	26 नवं.
वीर वैरागी जयंती (नकोदर)	28 "
श्री निम्बार्काचार्य जयंती	30 "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस	03 दिसं.
भक्त नरसी मेहता जयंती	21 "
ईसा मसीह जयंती (क्रिश्चियन)	25 "
पं. मदनमोहन मालवीय जयंती	25 "

सन् 2021 ई.

भगवान बोधायन जयंती	10 जन.
स्वामी विवेकानन्द जयंती	12 "
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती	23 "
लाला लाजपत राय जयंती	28 जन.
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	04 फर.
योगीराज बाबा लाल दयाल जयंती	13 "
भक्त रैदास जयंती	27 "
सत्य साईं बाबा जयंती	06 मार्च
समर्थ गुरु रामदास जयंती	07 "
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती	08 "
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	15 "
पं. लेखराम वीर जयंती	16 "
महर्षि याज्ञवल्क जयंती	18 "
संत श्री दादूदयाल जयंती	22 "
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	28 "
संत तुकाराम जयंती	30 "

सिक्ख गुरु पर्व (प्रा. मत से)

प्रकाश दिवस

खालसा पंथ साजना	13 अप्रै.
गुरु तेगबहादुर जी	12 "
गुरु अर्जुनदेव जी	14 "
गुरु अंगददेव जी	24 "
गुरु अमरदास जी	06 मई
गुरु हरगोविन्द जी	06 जून
गुरु हरकिशन जी	14 जुला.
गुरुग्रंथ साहिब जी	19 अग.
गुरु रामदास जी	02 नवं.
गुरु ग्रंथ साहिब जी गद्दी	16 "
गुरु नानकदेव जी	30 "
गुरु गोविन्द सिंह जी (2021)	20 जन.
गुरु हरराय जी (2021)	25 फर.

गुरुयाई मिली (प्रा. मत से)

गुरु नानकदेव जी	अवतार दिन से
गुरु अमरदास जी	25 मार्च
गुरु तेगबहादुर जी	06 अप्रै
गुरु हरगोविन्द जी	15 मई
गुरु अर्जुनदेव जी	20 अग.
गुरु रामदास जी	31 "
गुरु अंगददेव जी	07 सितं.
गुरु हरकिशन जी	09 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	17 दिसं.
गुरु हरराय जी (2021)	09 अप्रै.

ज्योति जोत समाए (प्रा. मत से)

गुरु अंगददेव जी	28 मार्च
गुरु हरगोविन्द जी	29 "
गुरु हरकिशन जी	07 अप्रै
गुरु अर्जुनदेव जी	26 मई
गुरु रामदास जी	21 अग.
गुरु अमरदास जी	02 सितं.
गुरु नानकदेव जी	12 "
गुरु हरराय जी	09 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	19 "
गुरु तेगबहादुर जी	19 दिसं.

प्रकाश दिवस

(नानकशाही कैलेण्डर से)
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अनुसार)

खालसा पंथ साजना	13 अप्रै.
गुरु अंगददेव जी	18 "
गुरु तेगबहादुर जी	18 "
गुरु अर्जुनदेव जी	02 मई
गुरु अमरदास जी	23 "
गुरु हरगोविन्द जी	05 जुला.
गुरु हरकिशन जी	23 "
गुरु ग्रंथ साहिब जी	01 सितं.
गुरु रामदास जी	09 अक्टू.
गुरु ग्रंथ साहिब जी गद्दी	20 "
गुरु नानकदेव जी	30 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	05 जन.
गुरु हरराय जी	31 "

गुरुयाई मिली

गुरु नानकदेव जी	अवतार दिन से
गुरु हरराय जी	14 मार्च
गुरु तेगबहादुर जी	16 अप्रै.
गुरु अमरदास जी	16 "
गुरु हरगोविन्द जी	11 जून
गुरु रामदास जी	16 सितं.
गुरु अर्जुनदेव जी	16 "
गुरु अंगददेव जी	18 "
गुरु हरकिशन जी	20 अक्टू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	24 नवं.

ज्योति जोत समाए

गुरु हरगोविन्द जी	19 मार्च
गुरु अंगददेव जी	16 अप्रै.
गुरु हरकिशन जी	16 "
गुरु अर्जुनदेव जी	16 जून
गुरु अमरदास जी	16 सितं.
गुरु रामदास जी	16 "
गुरु नानकदेव जी	22 "
गुरु हरराय जी	20 अक्टू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	21 "
गुरु तेगबहादुर जी	24 नवं.

मेले एवम् उत्सवादि

मेला चीमा नानकसर (पंजाब)	25 मार्च
मेला झण्डेवाला (दिल्ली)	25 "
मेला गणगौर (जयपुर)	27 "
मेला माई सरखाना (पंजाब)	30 "
मेला बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	01 अप्रै.
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	01 "
मेला श्री राम जन्मोत्सव (अयोध्या)	02 "
मेला माता कांसा देवी (कांसल रोपड़)प्रा.	06 "
मेला देवी हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	07 "
मेला बालासुन्दरी देवबंद (उ.प्र.)	07 "
मेला मानकपुर शरीफ (पंजाब)	08 "
मेला हनुमान जयंती सालासर (राज.)	08 "
मेला वैशाखी उत्सव (पं.हरि.हि.)	13 "
मेला कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू)	15 "
मेला पिंजौर (हरियाणा)	23 "
मेला श्रीबांकेबिहारीजी चरणदर्शन (वृन्दा.)	26 "
मेला पीपल जातर (कुल्लू)	28 "
मेला आनी आउटर सिराज (कुल्लू)	07 मई
मेला डूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 "
मेला बंजार 4 दिन का प्रा. (कुल्लू)	14 "
मेला साढ़ी जातरनगर प्रा. (हि.प्र.)	18 "
मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)	30
मेला गंगा दशहरा (हरिद्वार)	01 जून
मेला सपोर यात्रा धारलदा (ऊधमपुर)	01 "
मेला वरहे भटिण्डा (पंजाब)	02 "
मेला पीपल (ऊना) हि.प्र.	02 "
मेला पाण्डवों की बाड़ी का (सोलन)	14 "

मेला भून्तर (कुल्लू) प्रा. 3 दिन का 14 जून
मेला श्री जगन्नाथ रथयात्रा (पुरी) 23 "
मेला शरीफ भवानी (कश्मीर) 29 "
मेला परिक्रमा नैमिषारण्य 05 जुला.
मेला गुरु पूर्णिमा (कुराली) 05 "
मेला संतोष सिंह जी नानकसर चींमा प्रा. 09 "
मेला नैना देवी व चिंतपूर्णी (हि.प्र.) 13 "
मेला अमरनाथ दर्शन (कश्मीर) 03 अग.
मेला बाबा प्यारासिंह जी चमकौर प्रा. 05 "
मेला द्रौण दनकौर प्रा. (उ.प्र.) 11 "
मेला श्री कृष्ण जन्मोत्सव 11 "
मेला नंदोत्सव नन्दगांव, बरसाना 13 "
मेला गोगा पीर (ददरेवा) 13 "
मेला कैलाश यात्रा (कश्मीर) 18 "
मेला सुथरेशाह (दिल्ली) 19 "
मेला राणीसती (झुंझुनू) राज. 19 "
स्नान मेला (लोहार्गल) राज. 19 "
मेला गुसाईं आंणा कुराली (पंजाब) 20 "
मेला गणेश जन्मोत्सव (मण्डी) हि.प्र. 22 "
मेला गणेश जन्मोत्सव (महा.) 22 "
मेला पट्टा प्रा. (कश्मीर) 23 "
मेला देवछटी ब्रजमण्डल व गौतम 24 "
मेला श्रीराधाजन्मोत्सव बरसाना (उ.प्र.) 27 "
मेला गरुड़ गोविन्द छटीकरा (उ.प्र.) 27 "
मेला बाबारामदेवजी पूर्ण रुणीचा व तारानगर 28 "
मेला चारभुजानाथ मेवाड़ (राज.) 29 "
मेला वामन द्वादशी अंबाला 29 "
मेला बाबासोढल व छपार (जालंधर) 01 सितं.
मेला गोइंद वाल साहिब (तरनतारन) 02 "
मेला आशापति यात्रा (कश्मीर) 16 "
मेला फल्गु. पिहोवा (हरि.) 17 "
मेला ज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.) 24 अक्टू.
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) 24 "
मेला दशहरा (रावणदाह) सर्वत्र 25 "
मेला शाकंभरी देवी (उ.प्र.) 30 "
मेला देवि हर्थीहरा (कुरुक्षेत्र) 30 "
मेला महारासोत्सव (ब्रजमण्डल) 31 "
मेला राधाकुण्ड स्नान गोवर्धन (उ.प्र.) 08 नवं.
मेला जुगल जोड़ी परिक्रमा (वृंदावन) 09 "
मेला दीपावली (अमृतसर) 14 "
मेला अन्नकूट गोवर्धन (उ.प्र.) 15 "

मेला यमुना स्नान मथुरा (उ.प्र.) 16 नवं.
मेला छटपर्व (बिहार) 20 "
मेला रेणुका (नाहन) हि.प्र. 25 "
मेला बाबा रुद्रानंदनागी (ऊना) 26 "
मेला वीर वैरागी नकोदर (पंजाब) 28 "
मेला हरिहर क्षेत्र सोनपुर (बिहार) 30 "
मेला रामतीर्थ (अमृतसर) 30 "
मेला पुष्कर (राज.), गढ़गंगा (उ.प्र.) 30 "
मेला कपालमोचन (हरि.) 30 "
मेला दुदहर साहिब (अमृतसर) 05 दिसं.
मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू) 13 "
मेला श्रीबांके बिहारी जी प्रादु. (वृंदा.) 19 "
मेला रामजानकी विवाहोत्सव जनकपुर 19 "
मेला श्री घालदास ज. रामधाम खेड़ापा 25 "
मेला जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.) 26 "
मेला संगीत (बाबा हरवल्लभ) प्रा.(जाल.) 27 "
मेला कपर्दीश्वरयात्रा दर्शन (कश्मीर) 28 "

सन् 2021 ई.

मेला बोधायनसर 2 दिन प्रा. (बिहार) 09 जन.
मेला हतापन नाशन स्नान (चेन्नई) 13 "
मेला लोहरी उत्सव (पं. हरि. हि.प्र.) 13 "
मेला माघी मुक्तसर (पंजाब) 14 "
मेला मकर संक्रांति (सर्वत्र) 14 "
मेला पोंगल पर्व (द.भा.) 14 "
मेला मौनी अमावस्या (प्रयाग व हरिद्वार) 11 फर.
मेला बसन्त पंचमी (सर्वत्र) 16 "
मेला वेणेश्वर (मुख्य) बांसवाड़ा 23 "
मेला पंचखण्डपीठ विराटनगर (राज.) 25 "
मेला माघी पूर्णिमा (उ.प्र.) 27 "
मेला नीलकण्ठ महादेव (उत्तरांचल) 11 मार्च
मेला होलियां, होलाष्टक प्रा. 22 "
मेला फूलडोलोत्सव शाहपुरा (मेवाड़) 25 "
मेला श्यामजी खाटू (राज.) 25 "
मेला पंखा झज्जर (हरि.) 29 "
मेला होला श्रीआनंदपुर साहिब (पं.) 29 "
मेला गुरु रामसहाय (देहरादून) 02 अप्रै.
मेला बीरमदास बधोछी (पटियाला) 02 "
मेला शीतला माता कुराली (पंजाब) 03 "
मेला केशरिया (मेवाड़) 04 "
मेला कैलादेवी 15 दिन का प्रा. (करौली) 04 "
मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.) 11 "

पंचक सं. 2077 वि.

प्रारंभ			समाप्त		
तारीख		घं. मि.	तारीख		घं. मि.
17	अप्रै.	12।18	22	अप्रै	13।18
14	मई	19।22	19	मई	19।53
10	जून	27।41	15	जून	27।17
08	जुला.	12।31	13	जुला.	11।14
04	अग.	20।47	09	अग.	19।06
31	अग.	27।48	05	सितं.	26।21
28	सितं.	09।41	03	अक्टू.	08।50
25	अक्टू.	15।26	30	अक्टू.	14।57
21	[illegible]	22।26	26	नवं.	21।20
1[illegible]	दिसं.	07।16	23	दिसं.	28।33
15	जन.21	17।06	20	जन.21	12।36
11	फर.	26।10	16	फर.	20।56
11	मार्च	09।21	15	मार्च	28।43
07	अप्रै.	15।00	12	अप्रै.	11।29

पचंक–धनिष्ठा नक्षत्र के तीसरे चरण से रेवती के अन्तिम चरण तक का समय अर्थात् कुंभ एवं मीन राशि से चन्द्रमा के गोचर के समय को पंचक कहा जाता है। मुहूर्त ग्रंथों एवं शास्त्रों के अनुसार पंचकों में नये भवन का निर्माण, घास की खरीद, अग्नि दाह, शैयादान, पंचकों में शवदाह, दक्षिण की यात्रा करना, खाट बुनना, घर के ऊपर छप्पर-शेड लगाना वर्जित है। साथ ही काष्ठ, घास एकत्रित करना भी वर्जित है परन्तु तम्बू लगाया जा सकता है।

गण्ड मूलादि नक्षत्र सं. 2077 वि.

प्रारंभ			समाप्त		
तारीख		घं. मि.	तारीख		घं. मि.
03	अप्रै.	18।40	05	अप्रै.	14।57
11	"	20।11	13	"	19।02
21	"	10।22	23	"	16।05
30		25।52	02	मई	23।40
09	मई	06।33	10	"	28।13
18	"	16।58	20	"	22।37
28	"	07।27	30		06।03
05	जून	16।43	07	जून	14।10
14	"	24।21	17	"	06।04
24	"	13।10	26		11।26
02	जुला.	25।13	04	जुला.	23।22
12	जुला.	08।18	14	जुला.	14।06
21	"	20।30	23	"	17।44
30		07।40	01	अग.	06।48
08	अग.	16।12	10	"	22।05
17	"	29।43	19	"	26।07
26	"	13।04	28	"	12।37
04	सितं.	23।28	06	सितं.	29।23
14	"	15।52	16	"	12।20
22	"	19।18	24	"	18।09
01	अक्टू.	29।57	04	अक्टू.	11।52
11	"	25।18	13	"	22।54
19	"	27।52	21	"	25।13
29	"	12।00	31		17।58
08	नवं.	08।45	10	नवं.	07।56
16	"	14।36	18	"	10।39
25	"	18।20	27	"	24।22
05	दिसं.	14।27	07	दिसं.	14।32
13	"	25।40	15	"	21।31
22	"	25।37	25	"	07।39
01	जन.21	20।15	03	जन.21	19।56
10	"	10।49	12	"	07।38
19	"	09।54	21	"	15।36
28	"	27।50	30		26।28
06	फर.	17।17	08	फर.	15।21
15	"	18।29	17	"	23।49
25	"	13।17	27	"	11।18
05	मार्च	22।37	07	मार्च	20।59
14	"	26।19	17	"	07।31
24	"	23।12	26	"	21।39
01	अप्रै.	29।19	03	अप्रै.	26।38

गंड मूल–गंडान्त काल अशुभ काल फल दायक होता है। तिथि गंडान्त, नक्षत्र गंडान्त, लग्न गंडान्त में बालक का जन्म हो तो जीवित नहीं रहता, परन्तु यदि जीवित रह जाये तो धनी होता है। गंडान्त काल में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं किये जाते। इसमें विशेषता यह है कि अभिजित संज्ञक मुहूर्त में शुभ कार्य करने से गंडान्त दोष नहीं होता। किसी आचार्य के मत से दिन में उत्पन्न कन्या को एवं रात्रि में उत्पन्न पुत्र को गंडान्त दोष नहीं होता। गंडान्त मूल में ज्येष्ठा, रेवती तथा आश्लेषा नक्षत्र के अन्तिम दो दंड तथा मूल, अश्विनी तथा मघा के प्रारम्भ के दो दंड वर्जित हैं।

ग्रहण विवरण संवत् 2077 विक्रमी वर्ष 2020-21

विक्रम संवत् 2077 (25 मार्च 2020 ई. से 12 अप्रैल 2021 के मध्य) में पृथ्वी पर सूर्य के दो ग्रहण घटित होंगे। भारतीय भू-भाग पर सूर्य का केवल एक ग्रहण (21 जून 2020 ई.) ही दिखाई देगा। भारतीय भू-भाग पर जो ग्रहण दृश्य नहीं होगा, उसका धार्मिक महत्व-स्नान, दान, सूतकादि का विचार नहीं होगा।

1. **कंकणाकृति सूर्यग्रहण** (भारते दृश्य) रविवार ता. 21 जून 2020 ई.।
2. **पूर्ण सूर्यग्रहण** (भारते अदृश्य) सोमवार ता. 14 दिसंबर 2020 ई.।

इसके अतिरिक्त संवत् 2077 में पृथ्वी पर तीन उपच्छाया चन्द्रग्रहण भी घटित होंगे। यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण वास्तव में ग्रहण नहीं होता है। ग्रहण की अवधि में चन्द्रमा की चांदनी में कुछ धुंधलापन आ जाता है। अत: इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण का सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होता है।

1. **उपच्छाया चन्द्रग्रहण** (भारते दृश्य) शुक्रवार ता. 5/6 जून 2020 ई.।
2. **उपच्छाया चन्द्रग्रहण** (भारते अदृश्य) शनिवार ता. 5 जुलाई 2020 ई.।
3. **उपच्छाया चन्द्रग्रहण** (भारते अदृश्य) रविवार ता. 30 नवंबर 2020 ई.।

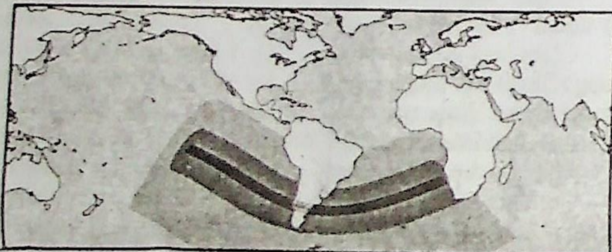
(सन् 2021 में संवत् 2077 के अंत यानि 12 अप्रैल 2021 तक कोई ग्रहण नहीं होगा।)

भारत में दिखाई न देने वाले ग्रहण का विवरण

1. पूर्ण सूर्यग्रहण (ता. 14/15 दिसंबर 2020 ई.)

मार्गशीर्ष सोमवती अमावस्या दिनांक 14 दिसंबर 2020 को भा.स्टै.टा. 19।03 पर प्रारम्भ होने वाला पूर्ण सूर्यग्रहण दक्षिण अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका के अधिकांश भागों, पैसेफिक, अटलान्टिक, अन्टार्टिका तथा हिन्द महासागर में दिखाई देगा। ग्रहण आंशिक रूप से गेम्बियर आईलैण्ड, एडम्स टाउन, रियो ग्रांड, रियो द जेनेरियो तथा साओ पालो ब्राजील, किंग एडवर्ड प्वाइंट, दक्षिणी जार्जिया, लिमा, सैन्टियागो, लुबांगो, ब्यूनस आयर्स, जेम्स टाउन में दिखाई देगा। क्षितिज से नीचे होने के कारण **भारत में दिखाई नहीं देगा।** भारत में दृश्य नहीं होने के कारण इसका सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का विवरण इस प्रकार है-

ग्रहण प्रारंभ	19।03	14 दिसंबर	खग्रास समाप्त	23।34	14 दिसंबर
खग्रास प्रारंभ	20।02	14 "	**ग्रहण मोक्ष**	00।23	15 "
ग्रहण मध्य	21।43	14 "			



भारत में दिखाई देने वाले ग्रहण का विवरण

2. कंकणाकृति सूर्यग्रहण (ता. 21 जून 2020 ई.)

आषाढ़ी अमावस, मृगशिरा नक्षत्र, मिथुन राशि, रविवार दिनांक 21 जून 2020 को भा. स्टै.टा. 09।16 पर प्रारम्भ होने वाला कंकणाकृति सूर्यग्रहण दक्षिण-पूर्वी यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश भागों, उत्तरी आस्ट्रेलिया, पैसेफिक तथा हिन्द महासागर में दिखाई पड़ेगा। भारत में ग्रहण की कंकणाकृति राजस्थान के घरसाना, सिरसा हरियाणा, देहरादून तथा टेहरी उत्तराखंड में, कांगो के पम्चफान्डों, सैन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक के ओबो, इथेपिया के लालीबेला, पाकिस्तान सिंध प्रांत के सुकूर, पानो आकिल, चीन के झियामेन में दिखाई देगा। दिल्ली में ग्रहण कंकणाकृति न दिखाई देकर आंशिक ग्रहण के रूप में दिखाई पड़ेगा। इसके अतिरिक्त दक्षिण सूडान के जूबा तथा सूडान के खरतोम, इथोपिया के एडिस अबाबा, यमन के सना, कतर के दोहा, ओमान के मस्कट, पाकिस्तान में इस्लामाबाद, लाहौर तथा सिंध प्रांत के कराची, नेपाल के काठमांडू, भूटान के थिम्पू, चीन के चांगकिंग, हांगकांग, ताईवान के ताईपाई में आंशिक सूर्य ग्रहण का दृश्य दिखाई पड़ेगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का विवरण इस प्रकार है-

ग्रहण प्रारंभ	**09।16**	21 जून
खग्रास प्रारंभ	10।17	21 "
ग्रहण मध्य	**12।10**	21 "
खग्रास समाप्त	14।02	21 "
ग्रहण मोक्ष	**15।04**	21 "

ग्रहण वेध (सूतक)-ता. 20 जून 2020 ई., शनिवार की रात्रि 24।16 से शुरू हो जायेगा। ग्रहण वेध काल में बालक, वृद्ध और रोगी जनों को छोड़कर सूतक के समय भोजन, शयन, मूर्ति पूजा, स्पर्श, हास्य विनोद इत्यादि करना निषेध है। ग्रहण अवधि में अन्न, वस्त्र, धन, स्वर्ण का दान, होम देव पूजन विशेष फलदायक होता है। गर्भवती स्त्री को शांत भाव से ईश्वर व जगत् जननी मां दुर्गा जी का कीर्तन व भजन करना चाहिए। ग्रहण मोक्ष के समय श्राद्ध और अन्न, वस्त्र, धन आदि का दान करें। पश्चात् स्नान अवश्य करें।

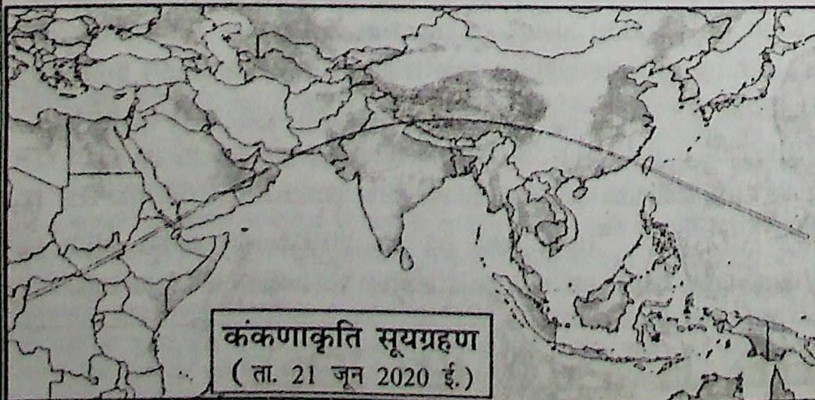
ग्रहण फल-चन्द्रमा के ग्रहण के एक पक्ष पश्चात् के सूर्य ग्रहण से संवत् साधारण रहेगा। स्त्री-पुरुषों के मध्य आरोप, वाद-विवाद बढेंगे। अनीति का बोलवाला रहेगा। आषाढ़ मास में दक्षिणायण के रविवारी, मृगशिरा नक्षत्र के सूर्य ग्रहण से ग्रहण प्रभावित देशों तथा क्षेत्रों में पानी के स्त्रोतों नदी, तालाब तथा बांधों में जल की कमी होगी। अफगानिस्तान, कश्मीर तथा चीन में जन-धन की हानि का योग होगा। सब स्थानों पर समान वर्षा के अभाव से कृषि की हानि होगी। भारी मालवाहक परम्परागत तथा आधुनिक साधनों, पशुओं, ट्रक आदि के मूल्यों तथा भाड़े में वृद्धि होगी। आसाम में हाथियों की हानि होगी। आंधियां चलेंगी।

ठंड अधिक होगी। ग्रहण के तीन मास बाद तक का समय व्यापारियों, अन्त्यज वर्ग के लिये उत्तम नहीं है। राजकीय वातावरण दूषित होगा। शासक एवं शासित दोनों ही अनीतियों के चलते पीड़ित होंगे। दक्षिणी प्रदेशों में उच्चाधिकारियों, सैनिक तथा अर्धसैनिक बलों तथा वैज्ञानिक वर्ग में असंतोष व्याप्त होगा। नौकरी पेशा वर्ग त्रस्त रहेंगे। चोरों, तस्करों का वर्चस्व बढ़ेगा। अग्निकांडों में वृद्धि होगी। इन पर ग्रहण का प्रभाव 07 दिनों तक रहेगा। ग्रहण स्वामी ब्रह्मा से कष्ट फलों में कुछ न्यूनता रहेगी। राजकीय कोष में वृद्धि होगी।

ग्रहण का व्यापार पर प्रभाव–मंगल से दृष्ट ग्रहण के प्रभाव से सभी प्रकार के लाल रंग के पदार्थों में तेजी बनेगी। कृषि उत्पादों, फल, आलू, अदरक, हल्दी, लहसुन, प्याज के उत्पादन में कमी आयेगी। गेहूं, चावल, मूंग आदि धान्यों तथा गुड़ का संग्रह करने से दो मास में अच्छा लाभ मिलेगा। वस्त्र, फल-फूल, मोती, बहुमूल्य रत्न, सुगन्धित वस्तुओं में तेजी रहेगी। मादक पदार्थों तथा चांदी में गिरावट आयेगी।

भारत के विभिन्न शहरों में ग्रहण का समय

भोपाल	10।15	13।48	अमृतसर	10।22	13।44	नागपुर	10।18	13।51
कोलकाता	10।45	14।16	अजमेर	10।12	13।40	धनबाद	10।40	14।12
कोटा	10।15	13।45	आगरा	10।19	13।50	गया	10।35	14।08
कोचीन	10।10	13।17	पटना	10।38	14।10	गुवाहाटी	10।55	14।22
करनाल	10।22	13।48	पुणे	10।02	13।30	वडोदरा	10।03	13।31
झुंझुनू	10।15	13।45	पुरी	10।37	14।10	वाराणसी	10।30	14।03
जयपुर	10।14	13।44	रांची	10।40	14।13	कानपुर	10।26	13।56
इम्फाल	11।03	14।27	शिमला	10।25	13।50	बरेली	10।25	13।55
इटानगर	11।05	14।28	श्रीनगर	10।23	13।40	भुवनेश्वर	10।39	14।11
हैदराबाद	10।15	13।45	मथुरा	10।20	13।50	ग्वालियर	10।20	13।52
हरिद्वार	10।26	13।52	मुम्बई	10।01	13।28	चण्डीगढ़	10।25	13।50
चैन्नई	10।23	13।42	मेरठ	10।21	13।50	लखनऊ	10।28	14।00



कंकणाकृति सूयग्रहण (ता. 21 जून 2020 ई.)

ग्रहण का मेषादि राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष-चिन्ता	वृष-सौख्य	मिथुन-दंपति वियोग	कर्क-रोग
सिंह-अपमान	कन्या-सिद्धि	तुला-लाभ	वृश्चिक-हानि
धनु-घात	मकर-हानि	कुंभ-धन प्राप्ती	मीन-विध्वंश

चन्द्रमा के उपच्छाया ग्रहणों के विवरण

1. उपच्छाया चन्द्रग्रहण (ता. 5/6 जून 2020 ई.)

ज्येष्ठी पूर्णिमा, ज्येष्ठा नक्षत्र, वृश्चिक राशि, शुक्रवार दिनांक 5 जून 2020 को भा. स्टै.टा. 23।15 पर प्रारम्भ होने वाला उपच्छाया चन्द्रग्रहण सम्पूर्ण भारत के अतिरिक्त यूरोप, एशिया महाद्वीप के अधिकांश भागों, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, दक्षिण पूर्व अमेरिका, पैसेफिक, अटलांटिक तथा हिन्द महासागर तथा अन्टार्कटिक में दिखाई पड़ेगा। भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार है–

प्रारंभ	23।15	5 जून
मध्य	00।54	6 "
मोक्ष	02।34	6 "

उपच्छाया चन्द्रग्रहण, ग्रहण नहीं होने से इसका सूतकादि दोष मान्य नहीं होगा।

2. उपच्छाया चन्द्रग्रहण (ता. 5 जुलाई 2020 ई.)

आषाढ़ी पूर्णिमा रविवार दिनांक 5 जुलाई 2020 को भा.स्टै.टा. 08।37 पर प्रारम्भ होने वाला उपच्छाया चन्द्रगहण दक्षिण-पश्चिम यूरोप, अफ्रीका तथा उत्तरी अमेरिका के अधिकांश भागों, पैसेफिक, अटलान्टिक, अन्टार्टिका तथा हिन्द महासागर में ग्रहण दिखाई देगा। ग्रहण क्षितिज से नीचे होने के कारण भारत में दिखाई नहीं देगा। परन्तु लन्दन, पेरिस, एलजीरस, लागोस, मेक्सिको, सेन्टिगो, न्यूयार्क, वाशिंगटन डी सी में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार है–

प्रारंभ	08।37	5 जुलाई
मध्य	09।59	5 "
समाप्त	11।22	5 "

उपच्छाया चन्द्रग्रहण, ग्रहण नहीं होने से इसका सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होगा।

3. उपच्छाया चन्द्रग्रहण (ता. 30 नवंबर 2020 ई.)

कार्तिक पूर्णिमा सोमवार दिनांक 30 नवंबर 2020 को भा.स्टै.टा. 13।02 पर प्रारम्भ होने वाला उपच्छाया चन्द्रगहण दक्षिण-पश्चिम यूरोप, एशिया, आस्टेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, पैसेफिक, अटलान्टिक, अन्टार्टिका तथा हिन्द महासागर में ग्रहण दिखाई देगा। ग्रहण क्षितिज से नीचे होने के कारण भारत में दिखाई नहीं देगा। भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार है–

प्रारंभ	13।02	30 नवंबर
मध्य	15।12	30 "
समाप्त	17।23	30 "

उपच्छाया चन्द्रग्रहण, ग्रहण नहीं होने से इसका सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होगा

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् 2077 वि.

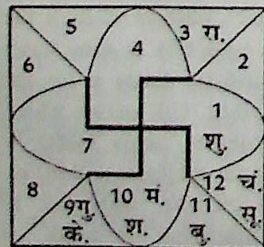
आकाशीय परिषद् की गणना एवं विविध लग्नों तथा वर्ष प्रवेश, वर्षेश प्रवेश, आर्द्रा प्रवेश, लग्नानुसार मेदनीय ज्योतिष गणना से वि-सं- 2077 शाके 1942 का सारांश सूत्र के भविष्य संसार चक्र इस प्रकार रहेगा:

- ❑ इस वर्ष का राजा बुध मंत्री चन्द्र होने से विश्व के देशों द्वारा सर्वत्र शाँति के प्रयास किये जायेंगे। महिलाओं का वर्चस्व सभी क्षेत्रों में बना रहेगा।
- ❑ मंगल को धान्येश पद प्राप्त होने से विश्व के अनेक देशों में युद्ध जैसी स्थितियां हमेशा बनती रहेंगी।
- ❑ समूचे विश्व में आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने हेतु महत्वपूर्ण देश मिलकर एक साझा अभियान की शुरूआत करेंगे।
- ❑ सुनामी (समुद्री तूफान), भू-स्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आशंका वर्ष पर्यन्त बनी रहेगी। स्थानीय सरकारों के मंत्रिमंडल भी चिंता में शासन करेंगे।
- ❑ अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि के साथ वर्षा का संतुलन बिगड़ता नजर आएगा। प्राकृतिक आपदाओं से तटीय प्रदेशों में जन जीवन संकट मय रहेगा।
- ❑ मुस्लिम राष्ट्रों में दंगा बाधाएं गृह युद्ध की तरह चलने का संकेत है। अमेरिका, चीन, रूस में अहम भावना का मुद्दा विश्व में नया मोड़ परिवर्तन का कारण बनेगा।
- ❑ शैक्षिक स्तर का विकास अच्छा होगा। तकनीकी शिक्षा निदेशालय से नवीन शिक्षा शोध पत्र जारी होंगे। जिससे रोजगार संबंधी क्षेत्र बढ़ेगा। कार्य योजना सफल होगी।
- ❑ वैदिक संस्कृति व योग विज्ञान का विश्व में प्रचार-प्रसार बढ़ेगा।
- ❑ केन्द्रीय सरकार भारत का वर्चस्व आर्थिक सामाजिक एवं व्यापारिक दृष्टि से वर्चस्व बढ़ेगा। जनता में भी सरकार के प्रति आस्था का अच्छा संकेत बनेगा।
- ❑ छात्र संगठनों के आंदोलन से सरकार एवं जनता दोनों चिंतित होगी। युद्ध जैसा वातावरण बनेगा।
- ❑ श्रीराम मन्दिर का निर्माण सर्वोच्च न्यायालय के निर्णायक फैसले के बाद वर्तमान केन्द्र सरकार (श्री नरेन्द्र मोदी) एवं राज्य सरकार (योगी आदित्यनाथ) के कार्यकाल में शुरू होगा।
- ❑ राष्ट्रीय राजनैतिक पार्टियों का वर्चस्व घटेगा। घिनौनी हरकतों से विधान सभा, राज्य सभा, लोक सभा की मर्यादा भंग होगी। तोड़-फोड़, मुकुद्दमा बाजी का योग।
- ❑ अशोभनीय घटनाएं सच्ची व झूठी दोनों ही चलेंगी। सच्चे फसेंगे। सच्चाई को झूठे वाले संकट में डाल देंगे। यत्र-तत्र-सर्वत्र मेहमानों का दौर चलता रहेगा।
- ❑ बंगाल में स्थानीय पार्टी का वर्चस्व विशेष बढ़ेगा। उड़ीसा, चेन्नई, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, पश्चिमी क्षेत्र, बंगाल तथा हिमालय क्षेत्रों में प्राकृतिक स्थिति बिगड़ेगी।
- ❑ विशिष्ट जनों के पद व शरीर त्याग, चुनाव, पर्वतीय क्षेत्रों में अनहोनी घटनाएं घटेंगी। गुप्त रहस्यों का पर्दा खुलेगा।
- ❑ भारत के पड़ोसी देशों में भय का वातावरण बना रहेगा। सन् 2019 से 2022 तक का समय चिंतादायक।
- ❑ मानवता की हीनता से अशोभनीय कृत्यों तथा अणु बमों से भी अग्नि कांड जन्य वारदातों से भय का वातावरण रहेगा।
- ❑ राजकीय कार्यों में योजनाओं की गति में तीव्रता का अभाव रहेगा।
- ❑ यत्र-तत्र आपात काल तथा धारा 144 का अलर्ट योग यदा-कदा यत्र-तत्र सर्वत्र बनने का योग।
- ❑ सीमांकन जिला निर्माण, तहसील, निर्माण संबंधी मुद्दों से एवं कृषक वर्ग नीति, व्यापार नीति का शिष्टाचार में दुराचार योग से बंद जैसा वातावरण बनेगा।
- ❑ हवाई दुर्घटनाएं एवं अपहरण के योग शनि+मंगल तथा गुरु ग्रह के कारण बनेंगे। रेलवे यातायात में भी दंगा दुर्घटनाएं व चोरी की घटनाएं ज्यादा घटेंगी।
- ❑ भूस्खलन, जल प्रवाह, नदियों का बहाव कहीं तर-बतर तो कहीं सूखा भी रहेगा।

वि. सं. 2077 शाके 1942 का वर्ष-वर्षेश-आर्द्रा एवं जगत लग्न प्रवेश

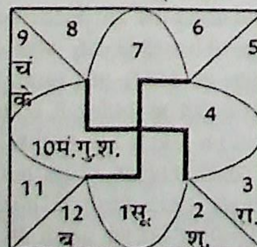
विगत दो दशक से **"श्री आर्यभट्ट पंचांग"** द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के संबंध में जो भविष्यवाणियां की गईं उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का प्रारंभ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है। उसमें एक मिनट का भी अंतर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैव विद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के संबंध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैव विद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। अत: समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा। ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत **"वाराही संहिता"** के आधार पर **"दैवज्ञ"** वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं वे सभी अभी तक 70-80 प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

वर्ष लग्नम् 15।01



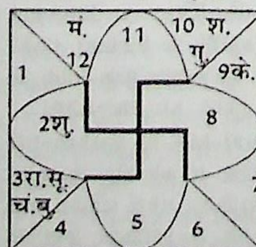
दिनांक: 24 मार्च 2020

वर्षेश लग्नम् 20।27



दिनांक : 13 अप्रैल 2020

आर्द्रा प्रवेश लग्नम् 23।31



दिनांक : 21 जून 2020

संवत् 2077 का शुभारंभ 24 मार्च 2020 मंगलवार मध्यान्ह 15।01 पर तदनुसार कर्क लग्न में हो रहा है। इसी दिन से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आरंभ रहने से नवरात्र भी आरंभ हो जायेगा। इस संवत्सर में राजा बुध और मंत्री चन्द्र को मिला है। इन दशाधिकारियों के मंत्रीमंडल में पांच विभाग शुभ ग्रहों और पांच विभाग क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुये हैं। बुध ग्रह को चपल और कूटनीतिज्ञ ग्रह माना जाता है। मंत्री पद स्त्रीकारक ग्रह चन्द्रमा को प्राप्त है। सस्येश-निरसेश गुरु, धान्येश विभाग क्रूर ग्रह मंगल को, मेघेश-फलेश-दुर्गेश सूर्य, रसेश शनि, धनेश बुध को प्राप्त हुआ है। इस साल का वर्ष का नाम आषाढ़, मेघ का नाम आवर्त है। रोहिणी का निवास संधि स्थल में है। समय का निवास वैश्य के घर में है।

कुण्डली में लग्नेश चन्द्र-सूर्य के साथ द्विग्रह योग बनाकर नवम भाव में विराजमान है। ग्रह स्थिति अनुसार वर्ष में विश्व राजनीतिक मंच पर विशेष घटनाप्रद परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। आतंकवाद, हिंसक वारदातें जैसी घटनाओं में अत्यधिक बढ़ोत्तरी होगी। विश्व के अधिकतर राष्ट्र अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रयत्न करेंगे। कुछ देशों में आंतरिक कलह युद्ध का रूप ले सकता है। पश्चिमी देशों में सैन्य शक्ति का प्रदर्शन सदैव बनेगा। वर्ष लग्न पर शनि-मंगल, सूर्य-शनि व शुक्र-गुरु की दृष्टि से अशांति का माहौल बना रहेगा। विशेष रूप से दक्षिण एशिया में भूकम्प, सुनामी व हिंसक आंदोलन का माहौल बना रहेगा। विश्व के अधिकतर राष्ट्र मंदी की चपेट में आ जायेंगे। प्रमुख रूप से भारत-अमेरिका विश्व शांति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगे। आतंकवाद पर महत्त्वपूर्ण फैसले लिये जायेंगे। कर्क लग्न में वर्षारंभ से पूर्वी क्षेत्रों में सुख-समृद्धि का वातावरण बनता रहेगा। उत्तर में कष्ट तथा आसन बल होगा। प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। पश्चिम में दुर्भिक्ष का वातावरण रहेगा।

जगत लग्न विचार–13 अप्रैल 2020 सोमवार की रात्रि 20।27 बजे तुला लग्न की कुंडली में लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में अपनी वृष राशि में गुरु से दृष्ट है। लग्न पर शनि की उच्च तथा सूर्य की नीच दृष्टि है। व्यय भाव बुध की उच्च तथा गुरु की मित्र दृष्टि है। सूर्य उच्च राशि मेष में तथा बुध एवं गुरु अपनी नीच राशियों में हैं। वर्गोत्तमी सूर्य, गुरु, शुक्र तथा बुध का नीच भंग होने से सुभिक्ष रहेगा। कृषि उत्पादन उत्तम होगा। विश्व के अधिकांश देशों में आंतरिक व राजनीतिक स्थिति परेशानी कारक होगी। विशेषकर अमेरिका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान, ईराक, चीन आदि देशों में स्थिति अशांतिपूर्ण एवं अस्थिर होगी। युद्ध जैसी स्थिति बनेगी। प्रजा को भारी कष्टों का सामना करना पड़ेगा। खाड़ी देशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। देश व प्रदेश की सरकारें संकटग्रस्त हो सकती हैं।

आर्द्रा प्रवेश फल–संवत् 2077 में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश 21 जून मध्य रात्रि 23।31 पर अर्थात् आषाढ़ कृष्ण रविवारी अमावस्या में होने से शुभ फल होंगे। अमावस्या तिथि को आर्द्रा प्रवेश से शुभ तथा लोक कल्याणकारी कार्य अधिक होंगे। रविवार को आर्द्रा प्रवेश से पशुओं की हानि होगी। चन्द्र नक्षत्र भी आर्द्रा होने से हिसंक घटनायें, चौरी, भ्रष्टाचार तथा आतंकवाद बढ़ेगा। आर्द्रा प्रवेश के समय के वृद्धि योग से पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। शुभ कार्य सम्पन्न होंगे। सन्तान की उन्नति होगी। लग्न में वायु तत्व की राशि कुंभ, पंचम भाव में वायु तत्व की मिथुन राशि स्थित, राहु से युत सूर्य तथा चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि से उक्त शुभ फलों में न्यूनता रहेगी। कतिपय आचार्यों के मत से सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के दिन वर्षा होने से आगे चलकर वर्षा में अनियमितता रहती है। अनावृष्टि-अतिवृष्टि से कृषि की हानि होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में ग्रह योग भविष्य बोध

अमेरिका–इसकी प्रभाव राशि मिथुन है तथा 22 सितंबर तक राहु का संचार होने से अशुभ रहेगा। वर्ष में व्यवसायिक स्थिति के नियंत्रण में कमी तथा विद्रोह, चोरी, डकैती या लूटपाट जैसा योग बनेगा। अमेरिका सुरक्षा की दृष्टि से सम्पन्न तथा पश्चिमी एशिया के देशों की मदद भी करेगा। व्यापारिक दृष्टि से अमेरिका विश्व में कीर्ति प्राप्त कर सकता है। विश्व स्तरीय सम्मेलनों में अमेरिका का वर्चस्व बना रहेगा। भारत और अमेरिका का संबंध व्यापार और सुरक्षा के क्षेत्र में काफी अग्रसर होगा। ग्रहों के योग प्रभाव से गुप्तचरों द्वारा असहनीय घटनाएं घटित होंगी। आतंकवादी घटनाएं भी घटित होने का योग बनता है। सैन्य की सतर्कता से निष्फल करने का सतत् प्रयास भी किया जायगा।

नेपाल–हिंदु राष्ट्र से चर्चित यह पड़ोसी देश सन् 2020-21 में शनि, मंगल, वरुण की राशियों से ग्रसित रहकर अनेक विडम्बना से परेशानियों का सामना करेगा। प्राकृतिक आपदा, भू-स्खलन, भूकम्प, असामयिक वर्षा के योग से जन-धन का व्यापक नुकशान होगा। विधान मंडल में अकृत्यों के प्रदर्शन से जन जन में अशांति का प्रभाव बढ़ेगा। युवा संगठन का योग बनेगा। भारत के साथ संबंध में कटुता पैदा होगी। व्यापार के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव पड़ेगा। आंदोलन, बंद का दौर चलता रहेगा। वरिष्ठ राजनेता व अधिकारी का त्याग व देहावसान या अपमान जनक कार्य योग भी बनेगा।

पाकिस्तान–ग्रह गणनानुसार देश में आवश्यक वस्तुओं की कमी, रोजगार में कमी, गरीबी से आम जनता त्रस्त रहेगी। विभिन्न आतंकवादी संगठन को मदद कर भारत में अस्थिरता प्रदान करने की कोशिश करेगा। भारतीय सैन्य शक्ति के आगे वह अपने मुंह की खायेगा। आतंकवाद के साथ से भारतीय कूटनीति के कारण पाकिस्तान विश्व में अलग-थलग पड़ जायेगा। विश्व के कोई भी राष्ट्र इसके सहयोग करने के लिये तैयार नहीं होगा। पाकिस्तान दिन-प्रतिदिन कर्ज के बोझ से दबता जायेगा। कश्मीर की झूठी लड़ाई के लिए भारत से युद्ध या मुठभेड़ करेगा। सीमा पर सैन्य शक्ति का प्रदर्शन यत्र-तत्र होता रहेगा। स्त्री वर्ग पाकिस्तान में संकटों से गुजरेगी। तीन विशिष्ट नेताओं का हनन जैसा योग होगा। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में सरकार के खिलाफ आंदोलन चलता रहेगा।

बंग्लादेश–इस देश का भविष्य काफी संकटों से गुजरेगा। गरीबी, बेरोजगारी अपने चरम सीमा पर होगी। आतंकवादी घटनाओं का भी दौर चलता रहेगा। रक्षा विभाग की योजना भी विफल हो जायेगी। स्त्री वर्ग संकट में रहेगा। प्राकृतिक आपदाओं से जान-माल नुकसान होने का योग बनता है। ग्रह योग से राजनैतिक क्षेत्र में काफी फेरबदल बनता है। देश की जमीन का उपयोग आतंकवादी घटना को अंजाम देने के लिये कर सकते हैं। भारत के साथ संबंध अनुकूल रहेगा।

रूस–ग्रह योगानुसार पुराने विवाद, घोटालों का पर्दाफाश होने का संकेत है। विभिन्न प्रकार के नवीन उद्योग-व्यावसाय, सैन्य शक्ति के आधुनिकीकरण से विश्व में कीर्ति प्राप्त करेगा। अमेरिका के साथ तनाव की स्थिति हमेशा रहेगी। प्राकृतिक आपदाओं से जन-धन की हानि होगी। भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध व्यापारिक, राजनैतिक क्षेत्र में बना रहेगा। व्यापारिक लेन-देन में बढ़ोतरी होगी। यह वर्ष रूस की अर्थ-व्यवस्था हेतु श्रेष्ठ रहेगा। राजतंत्र में बाधाएं आएंगी।

ब्रिटेन–यह वर्ष काफी प्रगतिदायक रहेगा। विश्व शांति का पैगाम जैसी भावना का उद्भव स्थल बनेगा। सैनिक बल बढ़ेगा। सीमांकन के विवाद में कुछ क्रांति योग बनता है। आतंकवाद के विरुद्ध आंदोलन भी चलेगा। राजनीतिक उथल-पुथल योग बनेगा। आंतकवादी घटना का योग भी बनता है। भूकंप, भूस्खलन तथा शीत लहर से जन धन हानि, ज्वालामुखी, भीषण अग्निकांड तथा राजनेताओं की फूट से शासन तंत्र में अशोभनीय घटनाएं घटेंगी।

जर्मनी–यह वर्ष काफी विकासदायक रहेगा। शासक वर्ग का नियंत्रण शोभनीय रहेगा। जनता में विश्वास बढ़ायेगा। वर्षा की अनियमितता से अतिवृष्टि का योग बनेगा। स्त्री वर्ग कुछ आगे आकर अपनी करतूतों का दुष्परिणाम भोगेगी। क्रियान्वयन धंधा, उद्योग में, तकनीकी कार्य में नये शोध की प्रस्तुति होगी। मैकेनिक लोगों का मनोबल बढ़ेगा। शिक्षा का स्तर भी बढ़ेगा। शासकीय गति में जो विरोध होगा। जनहित से विपरीत गति पकड़ेगा। तनाव पूर्ण वातावरण में न्यायालय कार्य चलेगा।

जापान–यहां पर शत्रु पक्षीय वार्ता विफल होगी। शैक्षिक दृष्टि से जापान तकनीकी शिक्षा में अग्रगामी देश रहेगा। वैज्ञानिक क्षेत्र में विशेष अनुसंधान करके विश्व में चमत्कारिक घटना का क्षेत्र बनेगा। प्राकृतिक आपदा से आर्थिक एवं जन हानि का योग बन सकता है। भारत मैत्री योग में व्यापारिक क्षेत्र में विशेष सहयोग देगा। भारत के साथ व्यापारिक रिश्ते और भी मजबूत होंगे। गुप्त योग से झगड़ा भी किसी देश से होने का संकेत बनता है। यातायात दुर्घटनाएं, आतंकवाद तथा विवाद जनक योग रहेगा।

चीन–इस देश में औद्योगिक व्यापारिक गतिविधियां काफी तीव्र गति से बढ़ेंगी। केन्द्रीय सत्ता पक्ष में असामान्य घटना से देश में शोक की लहर भी चलेगी। सामाजिक पतन का कारण बनेगा। संवैधानिक अधिकारों के प्रति जनता में क्रांति भी छा सकती है। बंद, आंदोलानों का दौर यत्र-तत्र बनता रहेगी। राजकीय सेवारत लोग भी संकट में रहेंगे। घोटाला एवं अनैतिकता की बाढ़ जैसा योग रहेगा। प्राकृतिक आपदा से जान-माल नुकशान का योग भी बनता है। भारत के साथ मित्रता बढ़ेगी। परन्तु यदा-कदा सीमा पर सैन्य टकराव देखने को मिलेगा।

श्रीलंका, अफगानिस्तान, फ्रांस, आस्ट्रेलिया–कृषि एवं व्यापार संबंधी कार्यों में शोध चलेगा। औद्योगिक क्रांति का योग बनता है।। दो-तीन वरिष्ठ नेताओं का देहावसान योग बनेगा। अश्लील हरकतों से विश्व में मान घटेगा। मंदिरों, गिरिजा घरों, संत आश्रमों की गरिमा भी आतंकवादी घटनाओं के कारण अस्त-व्यस्त होगी। अणु, परमाणु संबंधी वैज्ञानिक तकनीकी अनुकरणीय होगी। व्यापारिक दृष्टि से निर्यात बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदा से जन-धन का हानि योग। भारत के साथ संबंधों में मधुरता आयेगी।

इजरायल, ईरान, ईराक, फ्रांस, अफगानिस्तान, ब्रह्मा–इन देशों में इस वर्ष राजनीतिक अशांति का योग तथा विद्रोह बढ़ेगा। आपसी संबंधों में टकराव की स्थिति उत्पन्न होगी। रोजगार जन्य बाधा तथा विविध कंपनियों को न्यायालय की शरण लेनी पड़ सकती है। अशोभनीय घटनाएं, हत्याएं तथा दुर्घटनाओं का योग बनता है। राष्ट्रपति जैसे गरिमामय पद का भी अपमान या हत्या जैसा योग बनता है। व्यापारिक गतिविधियों में धोखा होगा, लेकिन उत्पादन एवं मशीनरी कार्य शैली में सम्मान प्राप्त करेंगे। प्राकृतिक आपदाओं से यहां के लोगों को भय का स्थिति बनती रहेगी। भारत के साथ इनका मैत्री पूर्ण व्यवहार बन सकता है। सत्ता पक्ष में स्थान या स्वयं सत्ताधारी भी बन सकती हैं।

भारतवर्ष–भविष्यफल बोध एवं ग्रह गोचर स्थिति

भारत–संवत् 2077 का शुभारंभ 24 मार्च 2020 मंगलवार मध्यान्ह 15।01 पर तदनुसार कर्क लग्न में हो रहा है। अतः पूर्वी क्षेत्रों में सुख रहेगा। केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा पूर्वी क्षेत्र के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य योजनाओं का शुभारंभ होगा। उत्तर में कष्ट तथा आसन बल होगा। पश्चिम में दुर्भिक्ष का योग बनता है। **कर्केसुखं तु पूर्वस्याम्, उत्तरस्यां तु विग्रह। स्याच्चासन बलं यावत, दुर्भिक्षं पयिचमेदिशि॥** अर्थात् कर्क लग्न वर्ष का लग्न होने से भारत एवं विश्व में पूर्वी राज्यों में सुख समृद्धि होगी। उत्तरी राज्यों-देशों में उपद्रव अधिक होगा। पश्चिमी देशों एवं प्रांतों में दुर्भिक्ष योग बनता है। ता. 29 मार्च को मंगल-गुरु-शनि के त्रिग्रहीय संयोग से अकाल, अनावृष्टि जैसे हालात का सामना करना पड़ सकता है। देश में राजनीतिक स्थिरता, नेताओं में आपसी तकरार दृष्टिगोचर हो सकती है। प्राकृतिक आपदाओं से जान-माल की व्यापक क्षति हो सकती है। उच्च का गुरु स्वयं को नहीं अन्यों को लाभ पहुंचाएगा। यानि मकर राशि पति शनि संबंधी तकनीकी शिक्षा अणु बम-विस्फोटक पदार्थ, मशीनरी में विकास का कारक होगा। रा+के के कारण प्रसिद्ध राष्ट्र नेताओं को पद्च्युत होना पड़ेगा या अपहरण जैसी घटना घटेगी। विदेशी व्यापार में वृद्धि तथा भारत में संस्कार जन्य शिक्षा के प्रति लोगों का मन बनेगा। दुर्घटना तथा अन्य अशोभनीय घटनाओं को गिनना संभव नहीं होगा। लोक सभा, राज्य सभाओं में हंगामा से मर्यादा भंग जैसा योग बनेगा। हालांकि नियंत्रण तुरंत हो जाएगा। विदेशी संबंध बढ़ेगा। दक्षिणी भारत में राजनीतिक संकट से राष्ट्रपति शासन का दो बार योग बनेगा। दिल्ली में स्थानीय सरकार का वर्चस्व न्यून होगा। जनता का विश्वास घटेगा। विदेशों में भारत का वर्चस्व भी बढ़ेगा। प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी।

वर्षा–इस वर्ष वर्षा की अनियमितता के कारण फसलों में हानि होगी। कहीं-कहीं वर्षा का अभाव, तो कहीं-कहीं बाढ़ का योग बनेगा। भारत के उत्तरी भागों में अतिवृष्टि से जान माल का व्यापक नुकशान होगा। बाढ़ों से भयंकर तबाही का योग बनता है। तिलहन, दलहन-मूंग, मोठ, चना, मसूर की फसलों में बाढ़ के कारण हानि होगी। वायु वेग से यत्र-तत्र वर्षा की असमानता से कृषि की पैदावार बाधित होगी। दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा का संचार उत्तम रहेगा। सरकारी तंत्र से कृषक वर्ग को सहयोग प्राप्त होगा। बिजली गिरने से यत्र-तत्र जन-धन हानि भी होगी।

कृषि–वर्षा असमानता के कारण पैदावार में भी अनिश्चितता रहेगी। कहीं पर बाढ़ से फसलों को नुकसान तो कहीं सूखे की स्थिति बनेगी। शासक वर्ग के सहयोग से कृषि कार्य में हानि का दायित्व सर्वे द्वारा शुभ बनेगा। केन्द्र सरकारों तथा राज्य सरकारों द्वारा किसानों को समय-समय पर आर्थिक मदद मिलती रहेगी। जिससे किसानों में असंतोष की भावना व्याप्त नहीं होगी। जनता को सहयोग प्राप्त होगा। कृषि जन्य संस्थाओं का योगदान कृषि में अच्छा रहेगा। मजदूर वर्ग के लिए वर्ष ठीक रहेगा। किसानों की आय अधिक बढ़ाने के लिए केन्द्र सरकार तकनीकी शिक्षा पर अधिक जोर देगी।

शिक्षा–इस वर्ष शिक्षा में राजनीति के कारण शिक्षा का स्तर गिर सकता है। मानव संसाधन मंत्रालय की देखरेख में योजनाओं से गति तेज होगी। राजकीय व राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा की छवि सुधारने का भरसक प्रयास किया जायेगा। तकनीकि शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ेगा। नवाचार तकनीक के योग से प्रतिस्पर्धा का कार्य भी बढ़ेगा। यत्र-तत्र शिक्षाविदों का सम्मेलन भी होता रहेगा।

स्त्री वर्ग–इस वर्ष धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक आर्थिक क्षेत्रों में स्त्री वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। राज्य सत्तापक्ष कार्यकारिणी में स्त्री वर्ग का पूर्णतः योगदान रहेगा। स्त्री वर्ग का भविष्य उज्जवल प्रतीत हो रहा है। राजनैतिक गणकों में स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। प्रत्येक विभाग, संस्था में स्त्री वर्ग की भागीदारी अग्रसर रहेगी। गरिमामय पद की प्राप्ति में स्त्री वर्ग काफी अग्रसर रहेगी।

धनाढ्य वर्ग–इस वर्ष धनिक वर्ग को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। अनेक नवीन योगजनाओं के जंजाल में जीवन-यापन गुजारना पड़ेगा। जी.एस.टी या अन्य टैक्स से जनता चिन्तित रहेगी। विश्वस्तरीय व्यापार में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका से रोजगार प्राप्ति के नये अवसर प्राप्त होंगे। अनेक प्रकार के धार्मिक या समाजिक कार्यक्रमों में इनका सहयोग रहेगा।

सेना–भारत की तीनों सैन्य शक्ति में काफी तकनीकी विकास होगा। तीनों सेनाओं में आपसी सामंजस्य भी स्थापित होगा। कार्य की दृष्टि से सभी सेना प्रमुख नियंत्रण के साथ दायित्व को वहन करेंगे। सीमा पर आतंकवादी गति का निरस्त कर अपने देश की हिफाजत करेंगे। भारत का वर्चस्व बढ़ायेंगे। सेवार्थ तत्पर रहेंगे। भारतीय सीमाएं तथा आंतरिक क्षेत्रों में उग्रवादियों को मुंह की खानी पड़ेगी।

परिवहन विभाग–यातायात के विभिन्न साधनों का विकास होगा। यातायात में दुर्घटनाओ का योग भी बनेगा। रेल परिवहन में काफी समस्याओं से सेवाओं में बांधा आयेंगी। वायु सेवा में भी काफी परिवर्तन योग बनेगा। काफी यात्री दुर्घटना की चपेट में जीवन भी खो देंगे। रेल यातायात में नवीन तकनीक के प्रयोग से जनता परेशानी में रहेगी। वाहनों का संचालन भी अनियंत्रित होगा। सरकार द्वारा यातायात के नियमों में कठिन कार्यवाही के निर्णय लिए जायेंगे। अशुभ योग ज्यादा बनेंगे। हड़तालें, बंद, क्रांति तथा अशोभनीय घटनाएं ज्यादा होंगी।

विशेष–इस वर्ष 2077 में महंगाई चरम शिखर पर रहेगी। महंगाई पर नियंत्रण पाने में सरकार असफल रहेगी। जिससे जनता में तनाव रहेगा। चोरी, डकैती आदि घटनाओं में वृद्धि होगी। आतंकवादी घटनाओं का योग बनेगा। सीमा पर युद्ध का माहौल देखने को मिलेगा। छद्मवेशी, आतंकवादियों का गुप्त प्रवेश का खतरा रहेगा। बैंकिंग व्यवस्था से जनता में तनाव रहेगा। सरकार की ओर से महत्वपूर्ण विकासात्मक कार्य जनता की भलाई के लिये किया जायेगा। देश में नयी फसल क्रांति से काफी उत्पादन बढ़ेगा। प्रत्येक वर्ग का अपने-अपने दायित्व में संलग्न रहने से विकासात्मक कार्य को सफलता मिलेगी।

प्रान्तीय / राज्य वार दैवज्ञ दृष्टि का भविष्य फल बोध

राजस्थान, गुजरात, हरियाणा–इन राज्यों में वर्ष 2077 में उच्च विकास होगा। शैक्षिक संस्थाएं खुलेंगी, रोजगार बढ़ेगा। नवीन उद्योग नीति से जनता को लाभ मिलेगा। वर्षा का यत्र-तत्र अभाव रहेगा। राजतंत्र में विद्रोह बढ़ेगा। कुछ अशोभनीय हत्याएं एवं अपहरण के योग से त्राहि-त्राहि मचेगी। शनि+राहु के प्रभाव से रक्त क्रांति भी बन सकती है। महंगाई के खिलाफ तथा अन्य मांगों के लिए हड़तालों का बोलवाला रहेगा। पाकेटमार, चोर तथा शुभ स्थानों पर अशुभता का ताण्डव बना रहेगा। इन राज्यों में राजनीतिक गतिविधियां अस्थिरता के साथ चलेंगी। जनता में विश्वास घात जैसी धारणाएं बनेंगी। प्राकृतिक प्रकोप से जन धन हानि के साथ अशोभनीय घटनाएं तथा चोरी की वारदातों का तांडव छाया रहेगा। राजतंत्र में पुरानी घटनाओं के विवाद में नेता उलझकर शत्रुता जैसा व्यवहार करेंगे। तकनीकी कार्य बढ़ेगा। औद्योगिक कार्य योजना सफल होंगी। विशिष्ट नेता का अपहरण तुल्य योग बनता है।

पंजाब, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, बिहार–इन प्रांतों में कृषक वर्ग का आंदोलन चलेगा। नृशंस हत्याएं एवं बलात्कार में नित नयी योजनाएं बनकर क्रियान्वयन होंगी। वर्षा अच्छी होगी। यहां पर काग्रेस-सपा-बसपा पार्टियों का वर्चस्व बढ़ेगा। अपहरण, लूटमार, भ्रष्टाचार मय दुराचारों का वर्चस्व दिन दहाड़े चलेगा। आतंकवादी छिटपुट घटनाएं होती रहेंगी। केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों को इनसे सतर्क रहना होगा। शत्रुता का भाव बढ़ेगा। भौतिक विकास अच्छा होगा। प्राकृतिक आपदाओं से जान-माल का व्यापक नुकसान होगा। बाढ़, अतिवृष्टि से जन-धन हानि होगी। राजकीय कार्य व्यवस्था बिगड़ेगी। मंत्रीमण्डलों में परिवर्तन चलता रहेगा। राजनीति में स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। महिला आयोग की गति बढ़ेगी। प्रशासक वर्ग विपक्ष की नीतियों से दुःखी होगा। गौ मांस का व्यापार बढ़ेगा। बांधों को टूटने या रिसने के योग से कृषि कार्यों में, फसलों में हानि होगी। युवा वर्ग में देश सेवा की भावना जागृत होगी। बिहार में गुप्त रहस्यों का खुलासा से नेताओं की पोल सामने आयेगी।

झारखण्ड, बंगाल, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, शिलांग, त्रिपुरा–ग्रहों की स्थिति के अनुसार इन प्रांतों में कृषि कार्य अच्छा रहेगा। वन-विभाग से आय अच्छी होगी। राजनैतिक स्थिति संकटदायक होगी। यत्र-तत्र भुखमरी का ताण्डव छाया रहेगा। छद्मवेशी योग ज्यादा बनेंगे। गुप्तचर विभाग स्वयं भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में आयेगा। प्राकृतिक आपदाओं का योग ज्यादा रहेगा। जहरीले जानवरों का भी प्रभाव रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार होगा। तकनीकी शिक्षा में वर्चस्व बढ़ेगा। यहां स्त्री वर्ग के मुख्यमंत्री पदेन होने के समाचार से विद्रोह बढ़ेगा। तथा विरोध चलेगा। इन राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियों का वर्चस्व बढ़ेगा। अपहरण की घटना तो यहां खेल बन जायेगा। बाढ़ों की बौछारें चलती रहेंगी। वर्षा का आधिक्य होने के कारण कृषि कार्यों में हानि। बाढ़ जैसा वातावरण तथा बहाव में जन पशुओं की मृत्यु जैसा योग बनता रहेगा। इन प्रांतों में विपक्ष वर्ग का सरकार में बोलवाला रहेगा। अभ्यता के गुण जनता में पाये जाएंगे। भुखमरी यातनाएं एवं हत्याओं की गणना भी मुश्किल होगी। क्षेत्रीय पार्टियों में भी विद्रोह बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदा का भय से जन धन हानि एवं व्याधि का प्रकोप बढ़ेगा। पशुधन हानि योग। भूस्खलन, नदी का तट टूटना या भराव आधिक्य से हानि। युवा वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। युवा कार्य अच्छा करेंगे।

छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, केरल, तामिलनाडु, तैलंगाना, मध्य प्रदेश, गुजरात का पश्चिमी भाग, गोआ, भूटान, ब्रह्मपुत्र क्षेत्र–इन राज्यों में भौतिक विकास एवं राजतंत्र की व्यवस्था अच्छी होगी। लेकिन तीन-चार वरिष्ठ राजनेता का संसार छोड़कर जाने का योग यत्र-तत्र बनेगा। गुण्डाराज की परिभाषा चलेगी। अग्निकांड, हैजा, पेचिश, महामारी का योग, प्लेग रोग बढ़ेगा। दुर्भिक्ष योग। वर्षा की भी असमानता कहीं ज्यादा वर्षा से संतुलन बिगड़ेगा। यहां की राजनीति से जनता में असंतोष छाया रहेगा। होटल, पर्यटन तथा औद्योगिक क्रांति बढ़ेगी। मुख्य मंत्रियों के पुत्र-पुत्रियों का अपहरण योग बनेगा। राजकीय घोटालों से केन्द्र एवं राज्य सरकारों में तालमेल में कमी आयेगी। अनाचार, दुराचार, देह व्यापार विशेष होंगे। इन राज्यों में भौतिक विकास एवं राजतंत्र की व्यवस्था में गड़बड़ होगी। तीन-चार राजनेताओं में गड़बड़ी का योग एवं प्राकृतिक आपदा से चिंता बनी रहेगी। जनता में विशेष योग से नवीन योजना का प्रादुर्भाव बनेगा। पुलिस सेवा में विशेष संकट छाया रहेगा। विदेशी व्यापार में स्थानीय उत्पादों का वर्चस्व बढ़ेगा। मुख्य मंत्रियों पर संकट का बादल छाया रहेगा। नारी वर्ग की सुरक्षा का अभाव रहेगा। समुद्र तटीय स्थानों में सुनामी जैसा वातावरण या आपदा से प्रभावित होकर धन हानि होगी। मछुआरों का जीवन संकट मय रहेगा। समाचार ब्यूरो की सूचनाओं से प्रदेशों का विकास जन आंदोलन के भय में होगा। अग्नि कांडों का **तांडव रहेगा।** प्राकृतिक प्रतिक्रियाओं से संकट छाया रहेगा।

दिल्ली, दमन द्वीप, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, चण्डीगढ़–ग्रह योग गणनानुसार इन प्रांतों की सरकारों पर संकट के बादल छाये रहेंगे। विपक्षी दल प्रभावी रूप से अपना अभिमत के साथ प्रश्नोत्तर काल से विधान सभाओं में नोक झोंक बनेगी। पुराने वरिष्ठ नेताओं को अपमान जनक स्थिति से गुजरना पड़ेगा। विविध वर्गों में बेरोजगारी, भ्रष्टाचारी, दुराचारी योग बनेगा। महिलाओं की स्थिति दयनीय होगी। सरकारी काम-काज में घोटालों का बोलवाला होगा। अश्लीलता का तांडव नृत्य होगा। न्यायालयों में भीड़ बढ़ेगी। रोगोपद्रव बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदा से भी अरबों की हानि। अपहरण एवं हत्याएं-आत्म हत्याएं नियंत्रित कार्य की भांति अपना रौद्र रूप प्रकट करेगी। नदियों के बहाव से कृषि कार्यों में भी हानि होगी। सरकारी सहयोग बावत आंदोलन चलेंगे। रेल वाहन, बस अड्डों में बलात्कारी कार्यों का दैनिक क्रम चलेगा। दिल्ली में भी भाजपा का वर्चस्व बढ़ेगा। पार्टियों द्वारा लोक लुभावने वायदे होते रहेंगे। गुप्त व्यापार, अफीम, जर्दा, तम्बाकू, गुटखा का व्यापार बढ़ेगा। विधान सभा के संचालन में बाधाएं बढ़ेंगी। चार विशिष्ट नेताओं का निधन का योग बनता है। अतिवृष्टि से जन-धन की हानि योग। महंगाई के खिलाफ तथा अन्य मांगों के लिए बंद हड़तालों एवं आंदोलन का बोलवाला रहेगा।

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल वि.सं. 2077, सन् 2020-21 ई.

नोटः-यह राशिफल गोचर ग्रहों के योग से नाम राशि-जन्म राशि मिश्रित गणना के रूप में लिखा गया है। सुविधा के लिए नामाक्षर, राशि स्वामी एवं नग भी लिखे हैं।

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

मेष



स्वामी-मंगल नग-मूंगा शुभ

अप्रैल 2020-मास का ग्रह गोचर शुभ कार्यों में प्रवृति तथा आर्थिक लाभ के लिये अनुकूल होते हुए भी अन्य क्षेत्रों के लिये प्रतिकूल रहेगा। यात्राओं में व्यस्तता रहेगी। बंधु-बांधवों एवं मित्रों से वाद-विवाद में हानि होगी। कार्य में मन नहीं लगेगा। सतान के विषय में चिन्तित रहेंगे। मान-सम्मान में कमी आयेगी। शारीरिक अवस्था के अनुरूप थकावट, नेत्र रोग, रक्तचाप अथवा हृदय रोग का भय बनेगा। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह की पूजा करें। अन्तिम सप्ताह में स्थिति में परिवर्तन होगा। व्यय नियन्त्रण में सफलता मिलेगी। **शुभ दिवस**- 06, 08, 17, 22, 27 हैं। **अशुभ दिवस**-02, 04, 10, 12, 15, 20, 25, 29 हैं। **मई**-सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे।नये मित्र तथा सहयोगी मिलेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेल मिलाप बढ़ेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। व्यर्थ के वाद-विवादों में समय व्यतीत करेंगे। भू-सम्पत्ति के विवाद बढ़ेंगे। मुकदमों में अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे। सन्तान के विषय में चिन्ता रहेगी। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। अपव्यय होगा। दुख तथा मानसिक व्यथा से पीड़ित रहेंगे। पापकर्मों में लिप्तता बढ़ेगी। नौकरी तथा रोजगार में विघ्न बाधायें आयेंगी। हृदय रोग की आशंका बनेगी। **शुभ दिवस**-04, 06, 14, 19, 31। **अशुभ दिवस**-02, 08, 10, 12, 17, 22, 24, 27, 29 हैं। **जून**-व्यय पर नियन्त्रण रखने में सफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहयोगियों से सम्पर्क बनेंगे। आर्थिक वृद्धि होगी। घर-परिवार का सुख मिलेगा। धैर्यपूर्वक कार्य करने पर सफलता प्राप्त होगी। सन्तान के कार्यों से मान-सम्मान बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नया आवास मिलेगा। सूर्य के अरिष्ट गोचर से किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा। प्रसन्नता का अभाव रहेगा। व्यर्थ के वाद-विवादों में समय व्यतीत होगा। महिलावर्ग से हानि होगी। प्रेमी युगलो के लिये समय अनुकूल नहीं है। हृदय रोग की आशंका रहेगी। **शुभ दिवस**-02, 08, 11, 16, 21, 27, 29 हैं। **अशुभ दिवस**-04, 06, 13, 18, 23, 25 हैं। **जुलाई**-घर-परिवार का सुख मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। सन्तान के कार्यों से मान-सम्मान बढ़ेगा। धनागम में वृद्धि होगी। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मानसिक तथा शारीरिक व्यथायें बढ़ेंगी। यात्राओं में असुविधा होगी। भू-सम्पत्ति के मामलों में विघ्न बाधाएं आयेंगी। जीवन साथी से मतभेद होंगे। स्वजनों से विवाद होगा। सन्तान के विषय में चिन्तित रहेंगे। अरिष्ट निवारण के लिये आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें। **शुभ दिवस**-06, 08, 13, 18, 24, 26। **अशुभ दिवस**-01, 04, 10, 15, 20, 22, 29, 31 हैं। **अगस्त**-रोजी रोजगार तथा कार्यालय की उलझनें समाप्त होंगी। यात्राओं में व्यस्त रहेंगे। मातृ तुल्य महिलाओं से प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त होगा। भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पत्ति की वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विद्वतजनों तथा भद्रपुरुषों से मित्रता होगी। परिश्रम तथा साहस में कमी आयेगी। मान-सम्मान की हानि होगी। भाग्योदय में रुकावट रहेगी। शासकीय कारणों से प्रताड़ित होंगे। धार्मिक कार्यों में अरुचि रहेगी। नौकरी तथा रोजगार में विघ्न बाधायें आयेंगी। सूर्य प्रीत्यर्थ दान दें तथा जप करें। **शुभ दिवस**-02, 04, 09, 12, 14, 23 हैं। **अशुभ दिवस**-07, 12, 17, 19, 21, 25, 27, 29 है। **सितंबर**-कार्यों में सफलता मिलेगी। सुख-समृद्धि रहेगी। धनागम बढ़ेगा। दाम्पत्य एव पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। नया भवन प्राप्त होगा। घर के लिये दैनिक उपभोग की सामग्री के साथ-साथ वैभवी सामग्री क्रय होगी। मानसिक शांति रहेगी। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। लेखन तथा संगीत में, वाद्य कला में ख्याति प्राप्त होगी। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ होगा। शनि के अरिष्ट गोचर से शुभ फलों में किंचित न्यूनता अनुभव होगी। **शुभ दिवस**-01, 11, 17, 19 एवं **अशुभ दिवस**-03, 06, 08, 13, 15, 21, 23, 26, 28, 30 हैं। **अक्टूबर**-धनागम में वृद्धि से आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। संचित धन की स्थिति संतोषजनक बनेगी। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किसी नये भवन की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। कार्यों, यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ होगा। मतभेदों का सम्मानजनक समाधान होगा। नेत्र विकार से पीड़ित होंगे। शुभ फलों में न्यूनता अनुभव होने पर नवग्रह शांति करायें। **शुभ दिवस**-08, 23, 30 हैं। **अशुभ दिवस**-03, 05, 10, 13, 15, 17, 19, 21, 25, 28 हैं। **नवम्बर**-आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होंगे। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। बहुमूल्य वस्तु की प्राप्ति का आनन्द मिलेगा। महिलाओं के माध्यम से लाभ मिलेगा। मास में सूर्य तथा बुध का गोचर अरिष्टकारक रहेगा। व्यय अधिक होगा। उच्च रक्तचाप, खांसी आदि कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। सन्तान सुख बाधित होगा। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। मन में असंतोष रहेगा। **शुभ दिवस**-04, 11, 19, 21, 26 हैं। **अशुभ दिवस**-02, 07, 09, 13, 15, 17, 24, 29 हैं। **दिसम्बर**-मास का ग्रह गोचर अनुकूल नहीं है। सहयोगियों तथा साझेदारों से मनमुटाव तथा झगड़े होंगे। इच्छा के विपरीत, परिस्थितियों के वशीभूत होकर समझोतों के लिये विवश होना पड़ेगा। असफलता से निराशा तथा खिन्नता रहेगी। मिथ्या आरोप लगेंगे। आत्मविश्वास गिरेगा। वरिष्ठों, मित्रों तथा सहोदरों से विरोध होगा। सुखोपभोग तथा विलासिता की सामग्री में कमी रहेगी। शल्य क्रिया आपरेशन अथवा चोट लगने का भय बनेगा। शिक्षा में बाधा आयेगी। दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी। अरिष्ट निवारण के नवग्रह का पूजन करें। **शुभ दिवस**-01, 08, 17, 19, 24, 29 हैं। **अशुभ दिवस**-04, 06, 10, 12, 14, 21, 26, 31 हैं। **जनवरी 2021**-आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रतिष्ठित कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। मास में ग्रह गोचर से मन अशान्त रहेगा। किसी प्रियजन से अलग रहना होगा। अरिष्ट निवारण के लिये पंचमुखीहनुमत् कवच का नियमित पाठ करें। **शुभ दिवस**-01, 04, 09, 15, 24, 26, 31। **अशुभ दिवस**-06,11,13, 17,19, 21, 29। **फरवरी**-व्यवसायिक सफलता मिलेगी। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। खोई हुई वस्तु प्राप्त होगी। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ग्रह गोचर से नये अनुबंधों के क्रियान्वयन में बाधायें तथा अवरोध आयेंगे। वरिष्ठों से मतभेद होंगे। मांगलिक कार्य स्थगित होगा। अरिष्ट निवारण के लिये सूर्यदेव को अर्घ्य दें तथा मंगल के मंत्रो का जप करें। लाल वस्तुओं का दान दें। **शुभ दिवस**-05, 11, 13, 20, 23, 28 हैं। **अशुभ दिवस**-03, 07, 09, 15, 18, 25 है। **मार्च**-यात्राओं में व्यस्त रहेंगे। विरोधी पराजित होंगे। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। सुखोपभोग के साधन प्राप्त होंगे। मन भोग विलास की ओर आकर्षित होगा। अविवाहितों के लिये विवाह का योग। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। नये

शेष पृष्ठ 193 पर

वि. स. 2077, शाके 1942 मध्ये शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः (अभिजित् मुहूर्त्त सहित)

यहां दिये गये विवाह मुहूर्त "**लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुध पंचकम्। एकार्गलोपग्रहौ च क्रांति साम्यं तथा परम्॥ दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषाः महाबला॥ एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधैः॥**" श्लोक सूत्रगत प्रमुख दश दोष रहित हैं तथा जिन दोषों के परिहार वाक्य मिले उन्हें भी दिया गया है। इस दश दोष शुद्धि को रेखाओं में प्रदर्शित किया गया है। रेखाओं में जहां (।) ऐसी खड़ी रेखा है वहां उस दोष की पूर्ण शुद्धि समझें तथा जहां (ऽ) ऐसा चिन्ह है उसे परिहार सहित दोष जानें। **वैवाहिक नक्षत्र "रोहिण्युत्तर रेवत्यो स्वाती मूलं मृगो मघा। अनुराधाश्च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदा॥"** किन्तु कात्यायनोक्त "**त्रिषुः त्रिषूत्तरादिषु**" (गृह्य सूत्र) के अनुसार चार विशेष विवाह नक्षत्र भी हैं। इस विषय में धर्म सिंधुकार ने भी लिखा है। "**चित्रा श्रवण धनिष्ठाऽश्विनी यजुर्वेदीनाम्**" अतः यजुर्वेदियों के विवाह इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों में भी हो सकते हैं। हम पाठकों की सुविधा हेतु इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों के मुहूर्त्त भी अलग से दे रहे हैं।

नोटः-यहां क्रांतिसाम्य (महापात) दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है। लग्नों का समय भा. स्टे. टा. दिल्ली हेतु है। अतः अन्य नगरों के लिये समय परिवर्तित करके संशोधित कर लें। गुरु-शुक्र का उदयास्त सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लिया गया है। लग्नों के आगे दिया गया समय लग्नारंभ काल है।

समय शुद्धि

卐 **संक्रांति दोष**–वर्षारंभ से वैशाख कृ. 5 रविवार, दिनांक 12 अप्रैल 2020 तक तथा मार्गशीर्ष शु. प्रतिपदा मंगलवार, दिनांक 15 दिसंबर 2020 ई. से पौष कृ. 30 बुधवार, दिनांक 13 जनवरी 2021 ई. तक तथा पुनः फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा रविवार, दिनांक 14 मार्च 2021 ई. से संवत् 2077 के अंत 12 अप्रैल 2021 तक (सर्वत्र वर्ज्य)

卐 **चातुर्मास** (चौमासा) **दोष**–आषाढ़ शुक्ला 11 बुधवार, दिनांक 1 जुलाई 2020 से कार्तिक शुक्ला 11 बुधवार, दिनांक 25 नवंबर 2020 तक (सर्वत्र वर्ज्य)

卐 **अधिकमास** (मलमास) **दोष**–प्र. आश्विन शुक्ला 1 शुक्रवार, दिनांक 18 सितंबर से द्वि. आश्विन कृ. 30 शुक्रवार, दिनांक 16 अक्टूबर 2020 तक (सर्वत्र वर्ज्य)

卐 **शुक्रास्त** (तारा)–ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी शुक्रवार, दिनांक 29 मई 2020 से अस्त होकर आषाढ़ कृ. 3 सोमवार, दिनांक 8 जून 2020 तक। पुनः माघ शुक्ल 2 शनिवार, दिनांक 13 फरवरी 2021 से संवत् 2077 के अंत (दिनांक 12 अप्रैल 2021 तक) (सर्वत्र वर्ज्य)

卐 **गुरु अस्त** (तारा)–पौष शुक्ला 3 शनिवार, दिनांक 16 जनवरी 2021 से माघ कृष्ण अमावस्या, गुरुवार, दिनांक 11 फरवरी 2021 तक (सर्वत्र वर्ज्य)

卐 **होलाष्टक**–फाल्गुन शुक्ला 8 सोमवार, दिनांक 22 मार्च 2021 से फाल्गुन शुक्ला 15 रविवार, दिनांक 28 मार्च 2021 ई. तक (रावी, व्यास, सतलुज के किनारे एवं पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश में वर्ज्य)

विवाहे सूर्य, गुरु व चन्द्र बल विचार

सूर्यः- 3, 6, 10, 11वां **शुभ**। 1, 2, 5, 7, 9वां **पूज्य**। 4, 8, 12वां **नेष्ट**। **गुरुः**- 2, 5, 7, 9, 11वां **शुभ**। 1, 3, 6, 10वां पूज्य। 4, 8, 12वां **नेष्ट**।

चन्द्रः- 1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11वां **शुभ**। 12वां **ग्राह्य (पूज्य)**। 4, 8वां **नेष्ट**।

वैशाख कृष्ण पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
16 अप्रै.	9	गुरु	धनि	9	IIIIIIIऽII	23।08 से 29।54 तक, लग्न रात्रि कुंभ, मीन (मीने शुक्र 3 पूज्य, रा. 4 दोष)			
17 अप्रै.	10	शुक्र	धनि	9	IIIIIIIऽII	05।54 से 07।05 तक, 20।04 से 25।36 तक, लग्न गो.रात्रि. वृ. वैधृति महा. 22।42 से 28।25 तक	मकर	मेष	मकर
							मकर	मेष	मकर

वैशाख शुक्ल पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
25 अप्रै.	2	शनि	रोहि	9	IIऽIIIIIII	21।00 से 29।45 तक, लग्न रात्रि कुंभ, मीन श्रेष्ठ (अत्यावश्यके योग)			
26 अप्रै.	3	रवि	मृग.	9	IIऽIIIIIII	05।45 से 22।56 तक, लग्न रात्रि मकर, कुंभ श्रेष्ठ, मीन (शु.3दा., रा.4दान), रिं.ति. आव., भ.शु.	वृष	मेष	मकर
27 अप्रै.	4	सोम	मृग.	7	IIऽऽIऽIIII	15।30 से 24।29 तक, लग्न दिवा वृष (चं.शु.दा.), रात्रि लग्न वृश्चिक (चं.शु.दा.)	वृष	मेष	मकर
01 मई	8	शुक्र	मघा	9	IIIIऽIIIII	25।53 से 29।40 तक, लग्न रात्रि कुंभ (चं. दा.), मीन (चं. दान) रि. ति. आव.	वृष/मि.	मेष	मकर
02 मई	9	शनि	मघा	9	IIIIऽIIIII	05।40 से 09।03 तक, 14।05 से 23।40 तक, ल.दि. वृष, सिंह, कन्या (वृ.दा.), रा.ल. वृश्चि. (श.दा.)	सिंह	मेष	मकर
							सिंह	मेष	मकर

...05|40 से 09|03 तक, 14|05 से 23|40 तक, ल.दि. वृष सिंह कन्या (...) रा.ल. वृश्चि. (श.दा.) सिंह मेष मकर

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टैं.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
04 मई	11	सोम	हस्त	7	SSIIISIIII	19|22 से 28|44 तक, रा.ल. वृश्चि. (शु.दा.), कुभ (चं.श.दा.), मीन (चं.शु.दा.)	कन्या	मेष	मकर
05 मई	13	मंगल	हस्त	8	SSIIIIIIII	05|56 से 16|39 ल.दि.कन्या (चं.के.दा.), 16|39 से 29|36 ल.रा. वृश्चि.(शु.दा.), मीन (चं.दा.)	कन्या	मेष	मकर
06 मई	14	बुध	चित्रा	9	SIIIIIIII	05|36 से 13|51 तक, लग्न दिवा वृष (मं. शु. दा.)	तुला	मेष	मकर
06 मई	14	बुध	स्वाति	9	SIIIIIIII	13|54 से 19|45 तक, ल. दि. कन्या (सू. बु. दा.), गोधूलि, ल. रा. वृश्चि. (शु. दा.)	तुला	मेष	मकर

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टैं.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
17 मई	10	रवि	उ.भा.	7	SIIIISSII	14|01 से 27|32 तक, लग्न दिवा कन्या (चं. के. दा.), गोधूलि, लग्न रात्रि मीन, मेष (चं. दा.)	मीन	वृष	मकर
18 मई	11	सोम	उ.भा.	7	SIIIISSII	05|29 से 16|58 तक, लग्न दिवा कन्या (चं. के. दा.)	मीन	वृष	मकर
18 मई	11	सोम	रेवती	7	SIIIISSII	17|00 से 28|29 तक, गोधूलि, लग्न रात्रि मीन (च. दा.), मेष (चं. दा.)	मीन	वृष	मकर
19 मई	12	मंगल	रेवती	9	IIIIIISII	05|28 से 17|32 तक, लग्न दिवा कन्या (चं. के. दा.), उपरांत कृष्ण 13	मीन	वृष	मकर

आषाढ़ कृष्ण पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टैं.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
11 जून	6	गुरु	धनि.	8	ISIIIIISII	11|28 से 16|35 तक, लग्न दिवा सिंह (चं. मं. 7 पू.)	कुंभ	वृष	मकर
15 जून	10	सोम	रेवती	8	ISIIIISII	05|23 से 16|31 तक, लग्न दिवा कन्या (चं. मं. 7 पू.)	मीन	मिथुन	मकर

आषाढ़ शुक्ल पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टैं.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
27 जून	7	शनि	उफा	8	ISIIIIISII	23|07 से 26|54 तक, लग्न रात्रि कुंभ (श. दा.), मेष (चं. दा.), वृष (शु. दा.)	कन्या	मिथुन	मकर
29 जून	9	सोम	चित्रा	9	IIIIISIII	20|22 से 28|27 तक, लग्न रात्रि कुंभ (श.दा.), मेष (मं.दा.), वृष (चं.दा.)	क.-तुला	मिथुन	मकर
30 जून	10	मंगल	स्वाति	10	IIIIIIIII	05|39 से 28|04 तक, लग्न दिवा सिंह (मं. दा., पू.) वृश्चिक (शु. चं. दा.), लग्न रात्रि कुंभ (श. दा.), मेष (चं. मं. दा), वृष (चं. शु. दा.)	तुला	मिथुन	मकर

कार्तिक शुक्ल पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टैं.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
25 नवं.	11	बुध	उभा.	8	SIIIIISII	15|09 से 18|20 तक, लग्न दिवा धनु, कुंभ (गु.श.दा.), मेष (चं.बु.शु.दा.)	मीन	वृश्चिक	मकर
27 नवं.	12	शुक्र	अश्वि.	8	SSIIIIIIII	08|28 से 24|22 तक, लग्न दिवा धनु, कुंभ (श.दा.), मेष, ल.रा. मिथुन, सिंह	मेष	वृश्चिक	मकर

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष संवत् 2077 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश-दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टैं.टा.)	चन्द्र	सूर्य	गुरु
01 दिसं.	1	मंगल	रोहि	8	IIIISIISII	06|57 से 08|30 तक, लग्न दिवा धनु श्रेष्ठ	वृष	वृश्चिक	मकर
07 दिसं.	7	सोम	मघा	8	ISIIIISIII	07|40 से 14|32 तक, लग्न दिवा धनु (गु.दा.), कुंभ (चं.श.दा.), मेष (सू.शु.दा.)	सिंह	वृश्चिक	मकर
09 दिसं.	9	बुध	हस्त	8	SIIIIISII	12|35 से 26|08 तक, ल.दि. कुंभ (च.पू.), मेष, ल.रा. मिथु., सिंह (गु.श.दा.), तुला(चं.शु.दा.), द.ति.आ.	कन्या	वृश्चिक	मकर
10 दिसं.	10	गुरु	चित्रा	8	IIIISIISII	12|52 से 31|04 तक, ल.दि. कुंभ (चं.पू.), मेष (चं.शु.दा.), ल.रा. मिथु. (बु.गु.दा.), सिंह (गु.शु.दा.)	क-तुला	वृश्चिक	मकर
11 दिसं.	11	शुक्र	स्वाति	8	IIIISIISII	08|51 से 15|50 तक, 18|14 से 30|30 तक, ल. दि मकर, कुंभ श्रेष्ठ, मेष (चं. शु. दा.), मिथुन, सिंह, कन्या (मं. दा.)	तुला	वृश्चिक	मकर

विवाह मुहूर्त विवेचन वर्ष 2020-21

अप्रैल–13 अप्रैल रात्रि 20।24 तक मीनार्क दोष होने से विवाह मुहूर्त नहीं दिये गये हैं। ता.14- पंचशलाका वेध राहु से, ता.15–शनि आक्रांत नक्षत्र, ता.18, 19 तथा 20 अप्रैल–विवाह नक्षत्राभाव, 21 तथा 22 अप्रैल–क्षीण चन्द्रमा, अशुभ तिथि 23 अप्रैल वृद्धि तिथि अमावस्या ता. 24–शुक्ल प्रतिपदा च विवाह नक्षत्रभाव, मृत्युबाण (रात्रि 02।46 से 25 अप्रैल रात्रि 02।46 तक) ता. 27 पंचशलाका वेध-शनि से, ता. 28, 29, 30 विवाह नक्षत्राभाव।

मई–03 मई-विवाह नक्षत्र नहीं च मृत्यु बाण (प्रातः 08।17 से 04 मई प्रातः 08।02 तक)। ता. 04 मई– द्वादशी क्षय तिथि, 07 मई–विष्टिकरण, व्यतिपात योग, ता. 08 मई–विशाखा विवाह नक्षत्र नहीं, ता. 09 मई-विवाह नक्षत्र नहीं। ता.10 मई–विप्टिकरण, केतु आक्रांत नक्षत्र, ता. 11 मई–विवाह नक्षत्र नहीं मृत्यु बाण (मध्यान्ह 12।36 से 12 मई 16।28 तक) च शनि आक्रांत नक्षत्र, ता. 13 मई–14 मई–वृष संक्रांति 15 मई–प्रातः 08।29 के बाद विवाह नक्षत्र नहीं, ता. 16 मई–मृत्यु बाण, ता. 20, 21, 22 मई–क्षीण चन्द्रमा च विवाह नक्षत्रभाव, 23 मई–प्रतिपदा च वैधृति महापात, ता. 24 मई–पंचश्लाका वेध शनि से, ता. 25 मई–पंचश्लाका वेध शनि से, च मृत्यु बाण (02।36 से 26 मई 06।04 तक), 26 मई–विवाह नक्षत्र नहीं, पात च विष्कुम्भ योग दोष। ता. 27 मई–पंचशलाका वेध विवाह नक्षत्र नहीं। ता. 28 मई–गुरु पुष्य योग, विवाह नक्षत्र नहीं। ता. 29 मई–विवाह नक्षत्र नहीं ता. 30 तथा 31 मई–शुक्रास्त प्रातः 05।12 से, विष्टिकरण।

जून–शुक्रास्त 08 जून 23।44 तक, 09 जून शनि आक्रांत नक्षत्र, 10 शुक्रास्त दोष, ता. 11–परिघ योग, ता. 12, 13 विवाह नक्षत्राभाव च मृत्युबाण (12 जून 22।16 से 13 जून 23।24 तक), ता.14 मिथुन संक्रांति, ता. 16 विवाह नक्षत्राभाव, ता. 18 जून–विवाह नक्षत्राभाव, ता. 19 जून 10।30 तक विवाह नक्षत्राभाव च तिथि दोष, ता. 20, 21 तथा 22 क्षीण तिथि, ता. 23, 24, 25 विवाह नक्षत्राभाव (25 जून 11।27 से 26 जून 12।36 तक मृत्यु बाण।

जुलाई–01 जुलाई से 25 नवम्बर तक देवशयन, 26 नवंबर वृद्धि तिथि च मृत्यु बाण (04।29 से 27 नवं. 04।12 तक) 28 नवंबर विवाह नक्षत्राभाव, 30 नवंबर चन्द्रग्रहण च ग्रहण नक्षत्र।

दिसम्बर–02दिसंबर -पंचशलाका वेध शनि से, 02 दिसम्बर ग्रहण नक्षत्र, 02 दिसम्बर-राहु आक्रांत नक्षत्र 03 से 06 दिसम्बर–विवाह नक्षत्राभाव, 08 दिसंबर–विवाह नक्षत्राभाव, 11 दिसंबर–मकरस्थ गुरु नीच नवांश च क्षय तिथि। 15 दिसम्बर प्रतिपदा च धनार्कः पश्चात् गुरुवास्त च शुक्रास्त दोष।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
20 अप्रै.	वैशा.	कृ. 13	सोम	पूभा.	07।23 से 20।30 तक
25 "	"	शु. 2	शनि	कृति.	20।57 से 29।45 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	06।13 से 19।19 तक
08 "	ज्ये.	कृ. 1	शुक्र	विशा.	23।14 से 29।34 तक
09 "	"	कृ. 2	शनि	अनु./ज्ये.	05।34 से 06।33 तक
18 "	"	कृ. 11	सोम	उभा.	05।29 से 28।29 तक
23 "	"	शु. 1	शनि	रोहि.	05।26 से 28।51 तक

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
08 अप्रै.	चैत्र	शु. 15	बुध	चित्रा	08।05 से 30।02 तक
09 "	वैशा.	कृ. 2	गुरु	स्वा.	06।02 से 24।15 तक
15 "	"	कृ. 8	बुध	उषा.	05।56 से 16।51 तक
16 "	"	कृ. 9	गुरु	श्रव.	23।05 से 29।54 तक
17 "	"	कृ. 10	शुक्र	धनि.	05।54 से 29।53 तक
18 "	"	कृ. 11	शनि	शत.	05।53 से 28।24 तक
20 "	"	कृ. 13	सोम	पूभा.	07।23 से 20।30 तक
25 "	"	शु. 2	शनि	कृति.	20।57 से 29।45 तक

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
27 अप्रै.	वैशा.	शु. 4	सोम	मृग.	14।30 से 24।29 तक
29 "	"	शु. 6	बुध	पुन.	26।01 से 29।41 तक
30 "	"	शु. 7	गुरु	पुष्य	05।41 से 14।39 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	06।13 से 19।19 तक
08 "	ज्ये.	कृ. 1	शुक्र	विशा.	08।28 से 29।34 तक
11 "	"	कृ. 4	सोम	पूषा.	28।10 से 29।32 तक
15 "	"	कृ. 8	शुक्र	धनि.	05।30 से 08।22 तक
18 "	"	कृ. 11	सोम	उभा.	05।29 से 28।29 तक
23 "	"	शु. 1	शनि	रोहि.	05।26 से 28।51 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	07।28 से 26।19 तक
28 "	"	शु. 6	गुरु	पुष्य	05।25 से 07।27 तक
03 जून	"	शु. 12	बुध	स्वा.	05।23 से 20।43 तक
05 "	"	शु. 15	शुक्र	अनु.	13।56 से 16।43 तक
09 जुला.	श्राव.	कृ. 4	गुरु	शत.	10।12 से 27।09 तक
11 "	"	कृ. 6	शनि	पूभा.	05।33 से 29।32 तक
13 "	"	कृ. 8	सोम	रेव.	05।32 से 10।26 तक
17 "	"	कृ. 12	शुक्र	रोहि.	05।34 से 29।35 तक
18 "	"	कृ. 13	शनि	मृग.	05।35 से 21।23 तक
24 "	"	शु. 4	शुक्र	पूफा.	19।25 से 29।39 तक
25 "	"	शु. 5	शनि	उफा.	05।39 से 14।18 तक
27 जुला.	श्राव.	शु. 7	सोम	चित्रा	05।40 से 28।58 तक
29 "	"	शु. 10	बुध	विशा.	08।33 से 29।42 तक
30 "	"	शु. 11	गुरु	अनु.	05।42 से 07।40 तक
07 नवं.	कार्ति.	कृ. 6	शनि	पुन.	19।32 से 30।39 तक
13 "	"	कृ. 13	शुक्र	चित्रा	06।43 से 17।59 तक
19 "	"	शु. 5	गुरु	पूषा.	09।38 से 30।48 तक
20 "	"	शु. 6	शुक्र	उषा.	06।48 से 09।22 तक
21 "	"	शु. 7	शनि	श्रव.	11।55 से 21।48 तक
25 "	"	शु. 11	बुध	उभा.	06।52 से 30।53 तक
26 "	"	शु. 12	गुरु	रेव.	06।53 से 07।34 तक
30 "	"	शु. 15	सोम	रोहि.	06।56 से 30।57 तक
02 दिसं.	मार्ग.	कृ. 2	बुध	मृग.	06।58 से 10।37 तक
05 "	"	कृ. 5	शनि	पुष्य	07।00 से 14।27 तक
10 "	"	कृ. 10	गुरु	हस्त	12।52 से 31।04 तक
11 "	"	कृ. 11	शुक्र	चि./स्वा.	07।04 से 30।30 तक
16 "	"	शु. 2	बुध	पूषा.	20।04 से 31।08 तक
17 "	"	शु. 3	गुरु	उषा.	07।08 से 15।18 तक
18 "	"	शु. 4	शुक्र	श्रव.	19।04 से 31।09 तक
19 "	"	शु. 5	शनि	धनि.	07।09 से 31।10 तक
31 "	पौष	कृ. 1	गुरु	पुन.	19।49 से 31।14 तक

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
01फर.21	माघ	कृ. 4	सोम	उफा.	18:25 से 23:57 तक
03 "	"	कृ. 6	बुध	चित्रा	07:08 से 31:08 तक
04 "	"	कृ. 7	गुरु	स्वा.	07:08 से 19:45 तक
06 "	"	कृ. 9	शनि	अनु.	08:13 से 16:37 तक
13 "	"	शु. 2	शनि	शत.	07:01 से 15:11 तक
22 "	"	शु. 10	सोम	मृग.	06:53 से 10:58 तक
24 "	"	शु. 12	बुध	पुन.	13:17 से 30:51 तक
25 "	"	शु. 13	गुरु	पुष्य	06:51 से 13:17 तक
01 मार्च	फाल्गु.	कृ. 2	सोम	उफा/ह.	06:46 से 07:37 तक
03 "	"	कृ. 5	बुध	स्वा.	06:44 से 25:35 तक
05 "	"	कृ. 7	शुक्र	अनु.	08:54 से 22:37 तक
08 "	"	कृ. 10	सोम	पूषा.	20:40 से 30:38 तक
10 "	"	कृ. 12	बुध	श्रव.	21:03 से 30:36 तक
11 "	"	कृ. 13	गुरु	धनि.	06:36 से 14:40 तक
15 "	"	शु. 2	सोम	रेव.	06:31 से 27:55 तक
19 "	"	शु. 6	शुक्र	कृति.	13:44 से 30:25 तक
20 "	"	शु. 7	शनि	रोहि.	06:25 से 30:24 तक
24 "	"	शु. 10	बुध	पुष्य	06:21 से 22:12 तक

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
18 अप्रै.	वैशा.	कृ. 11	शनि	शत.	05:53 से 13:49 तक
20 "	"	कृ. 13	सोम	पूभा.	07:23 से 13:58 तक
23 "	"	कृ. 30	गुरु	अश्वि.	07:56 से 15:47 तक
26 "	"	शु. 3	रवि	रोहि.	05:45 से 13:23 तक
30 "	"	शु. 7	गुरु	पुष्य	05:41 से 14:39 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	06:13 से 15:04 तक
15 "	ज्ये.	कृ. 8	शुक्र	धनि.	05:30 से 08:22 तक
17 "	"	कृ. 10	रवि	पूभा.	13:58 से 14:12 तक
18 "	"	कृ. 11	सोम	उभा.	05:29 से 14:09 तक
20 "	"	कृ. 13	बुध	अश्वि.	05:28 से 15:23 तक
23 "	"	शु. 1	शनि	रोहि.	05:26 से 16:05 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	07:28 से 15:49 तक
28 "	"	शु. 6	गुरु	पुष्य	05:25 से 07:27 तक
11 जून	आषा.	कृ. 6	गुरु	धनि.	11:28 से 14:50 तक
12 "	"	कृ. 7	शुक्र	शत.	09:58 से 14:47 तक
15 "	"	कृ. 10	सोम	रेव.	05:23 से 14:35 तक
17 "	"	कृ. 11	बुध	अश्वि.	05:23 से 06:04 तक

पश्चात् वर्ष पर्यन्त मुहूर्त्ता: अभाव

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
03 अप्रै.	चैत्र	शु. 10	शुक्र	पुष्य	06:09 से 13:57 तक
09 "	वैशा.	कृ. 2	गुरु	स्वा.	06:02 से 14:23 तक
26 "	"	शु. 3	रवि	रोहि.	05:45 से 13:23 तक
03 मई	"	शु. 10	रवि	पूफा.	05:39 से 12:08 तक
04 "	"	शु. 11	सोम	उफा.	06:13 से 15:04 तक
25 "	ज्ये.	शु. 3	सोम	मृग.	07:54 से 15:57 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	07:28 से 15:49 तक

पश्चात् वर्ष पर्यन्त मुहूर्त्ता: अभाव

अक्षरारंभ मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
16 अप्रै.	वैशा.	कृ. 9	गुरु	श्रव.	18:12 से 20:50 तक
19 "	"	कृ. 12	रवि	पूभा.	05:52 से 19:34 तक
26 "	"	शु. 3	रवि	रोहि.	05:45 से 13:23 तक
27 "	"	शु. 4	सोम	मृग.	14:30 से 20:07 तक
29 "	"	शु. 6	बुध	पुन.	05:42 से 15:13 तक
03 मई	"	शु. 10	रवि	पूफा.	05:39 से 19:43 तक
04 "	"	शु. 11	सोम	उफा.	06:13 से 19:19 तक
11 "	ज्ये.	कृ. 4	सोम	पूषा.	06:35 से 19:12 तक
17 "	"	कृ. 10	रवि	पूभा.	12:43 से 21:07 तक
18 "	"	कृ. 11	सोम	उभा.	05:29 से 21:03 तक
24 "	"	शु. 2	रवि	मृग.	05:26 से 20:39 तक
25 "	"	शु. 3	सोम	मृग.	05:26 से 20:35 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	05:25 से 20:28 तक
28 "	"	शु. 6	गुरु	पुष्य	05:25 से 20:24 तक
31 "	"	शु. 9	रवि	उफा.	17:37 से 20:12 तक
01 जून	"	शु. 10	सोम	हस्त	05:24 से 13:16 तक
07 "	आषा.	कृ. 2	रवि	मूल	05:23 से 19:44 तक
08 "	"	कृ. 3	सोम	पूषा.	05:23 से 08:21 तक
10 "	"	कृ. 5	बुध	श्रव.	05:23 से 10:34 तक
11 "	"	कृ. 6	गुरु	धनि.	11:28 से 19:29 तक
15 "	"	कृ. 10	सोम	रेव.	05:23 से 16:31 तक
17 "	"	कृ. 11	बुध	अश्वि.	05:23 से 06:04 तक
14 जन.21	पौष	शु. 1	गुरु	श्रव.	09:02 से 20:00 तक
15 "	"	शु. 2	शुक्र	धनि.	07:15 से 19:50 तक
17 "	"	शु. 4	रवि	पूभा.	09:09 से 18:33 तक
18 जन.	पौष	शु. 5	सोम	पूभा.	07:15 से 18:26 तक
24 "	"	शु. 11	रवि	रोहि.	07:13 से 10:01 तक
25 "	"	शु. 12	सोम	मृग.	07:13 से 19:16 तक
31 "	माघ	कृ. 3	रवि	पूफा.	07:10 से 09:21 तक
03 फर.	"	कृ. 6	बुध	चित्रा	07:08 से 14:12 तक
07 "	"	कृ. 11	रवि	ज्ये.	16:14 से 18:25 तक
08 "	"	कृ. 12	सोम	मूल	07:05 से 18:21 तक
14 "	"	शु. 3	रवि	पूभा.	07:01 से 20:15 तक
17 "	"	शु. 6	बुध	अश्वि.	06:58 से 19:00 तक
21 "	"	शु. 9	रवि	रोहि.	15:43 से 19:48 तक
22 "	"	शु. 10	सोम	मृग.	06:53 से 19:44 तक
24 "	"	शु. 12	बुध	पुन.	06:51 से 18:06 तक
28 "	फाल्गु.	कृ. 1	रवि	पूफा.	11:19 से 16:21 तक
01 मार्च	"	कृ. 2	सोम	उफा/ह.	06:46 से 19:11 तक
03 "	"	कृ. 5	बुध	स्वा.	06:44 से 19:08 तक
08 "	"	कृ. 10	सोम	पूषा.	15:45 से 18:49 तक
10 "	"	कृ. 12	बुध	श्रव.	06:37 से 14:41 तक
14 "	"	शु. 1	रवि	उभा.	17:06 से 18:03 तक

गृहारंभ (नींव रखना) मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
18 अप्रै.	वैशा.	कृ. 11	शनि	शत.	05:53 से 20:42 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	06:13 से 08:57 तक
11 जून	आषा.	कृ. 6	गुरु	धनि.	16:35 से 19:29 तक
12 "	"	कृ. 7	शुक्र	शत.	09:58 से 18:48 तक
17 जुला.	श्राव.	कृ. 12	शुक्र	रोहि.	05:34 से 20:27 तक
25 "	"	शु. 5	शनि	उफा.	14:18 से 20:22 तक
27 "	"	शु. 7	सोम	चित्रा	18:02 से 20:14 तक
29 "	"	शु. 10	बुध	विशा.	08:33 से 15:11 तक
30 "	"	शु. 11	गुरु	अनु.	05:42 से 07:40 तक
21 अग.	भाद्र.	शु. 3	शुक्र	उफा.	05:54 से 20:03 तक
24 "	"	शु. 6	सोम	स्वा.	05:55 से 15:20 तक
02 सितं.	"	शु. 15	बुध	शत.	06:00 से 18:33 तक
04 "	प्र.आश्वि.	कृ. 2	शुक्र	उभा.	06:01 से 19:08 तक
09 "	"	कृ. 7	बुध	कृति.	13:08 से 18:16 तक
10 "	"	कृ. 8	गुरु	रोहि.	06:04 से 13:39 तक
14 "	"	कृ. 12	सोम	पुष्य	06:06 से 14:52 तक
19 अक्टू.	द्वि.आश्वि.	शु. 3	सोम	अनु.	06:25 से 07:25 तक
12 नवं.	कार्ति.	कृ. 12	गुरु	हस्त	06:42 से 17:37 तक

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
25 नवं.	कार्ति.	शु. 11	बुध	उभा.	06:52 से 15:55 तक
30 "	"	शु. 15	सोम	रोहि.	06:56 से 18:22 तक
09 दिसं.	मार्ग.	कृ. 9	बुध	उफा.	15:18 से 17:46 तक
10 "	"	कृ. 10	गुरु	हस्त	12:52 से 17:42 तक
11 "	"	कृ. 11	शुक्र	चि./स्वा.	07:04 से 15:50 तक
15 जन.21	पौष	शु. 2	शुक्र	धनि.	07:15 से 19:50 तक

व्यापारारंभ मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
15 अप्रै.	वैशा.	कृ. 8	बुध	उषा.	05:56 से 16:51 तक
20 "	"	कृ. 13	सोम	पूभा.	07:23 से 20:30 तक
23 "	"	कृ. 30	गुरु	अश्वि.	07:56 से 16:05 तक
26 "	"	शु. 3	रवि	रोहि.	05:45 से 13:23 तक
27 "	"	शु. 4	सोम	मृग.	14:30 से 20:07 तक
30 "	"	शु. 7	गुरु	पुष्य	05:41 से 14:39 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	06:13 से 19:19 तक
08 "	ज्ये.	कृ. 1	शुक्र	विशा.	08:38 से 12:55 तक
17 "	"	कृ. 10	रवि	पूभा.	13:58 से 21:07 तक
18 "	"	कृ. 11	सोम	उभा.	05:29 से 21:03 तक
20 "	"	कृ. 13	बुध	अश्वि.	05:28 से 19:43 तक
23 "	"	शु. 1	शनि	रोहि.	05:26 से 20:43 तक
24 "	"	शु. 2	रवि	मृग.	05:26 से 20:39 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	07:28 से 20:28 तक
15 जून	आषा.	कृ. 10	सोम	रेव.	05:23 से 16:31 तक
19 "	"	कृ. 13	शुक्र	कृति.	10:31 से 11:02 तक
24 "	"	शु. 3	बुध	पुष्य	05:25 से 10:14 तक
28 "	"	शु. 8	रवि	उफा.	13:45 से 20:12 तक
02 जुला.	"	शु. 12	गुरु	अनु.	05:27 से 20:10 तक
11 "	श्राव.	कृ. 6	शनि	पूभा.	05:33 से 13:34 तक
12 "	"	कृ. 7	रवि	उभा.	05:32 से 19:31 तक
13 "	"	कृ. 8	सोम	रेव.	05:32 से 18:10 तक
17 "	"	कृ. 12	शुक्र	रोहि.	05:34 से 20:27 तक
18 "	"	कृ. 13	शनि	मृग.	05:35 से 20:49 तक
25 "	"	शु. 5	शनि	उफा.	05:39 से 20:22 तक
26 "	"	शु. 6	रवि	हस्त	05:39 से 20:18 तक
29 "	"	शु. 10	बुध	विशा.	08:33 से 15:11 तक
08 अग.	भाद्र.	कृ. 5	शनि	उभा.	05:47 से 19:27 तक
09 "	"	कृ. 6	रवि	रेव.	05:47 से 18:18 तक
13 अग.	भाद्र.	कृ. 9	गुरु	रोहि.	13:26 से 19:07 तक
14 "	"	कृ. 10	शुक्र	मृग.	14:02 से 19:03 तक
21 "	"	शु. 3	शुक्र	उफा.	05:54 से 20:03 तक
23 "	"	शु. 5	रवि	चित्रा	05:55 से 17:06 तक
29 "	"	शु. 11	शनि	पूषा.	13:03 से 19:13 तक
30 "	"	शु. 12	रवि	उषा.	05:58 से 13:52 तक
19 अक्टू.	द्वि.आशि.	शु. 3	सोम	अनु.	06:25 से 14:08 तक
28 "	"	शु. 12	बुध	पूभा.	09:11 से 18:36 तक
29 "	"	शु. 13	गुरु	उभा.	06:31 से 15:16 तक
31 "	"	शु. 15	शनि	अश्वि.	07:02 से 17:58 तक
08 नवं.	कार्ति.	कृ. 7	रवि	पुष्य	06:39 से 08:45 तक
12 "	"	कृ. 12	गुरु	हस्त	06:42 से 17:37 तक
13 "	"	कृ. 13	शुक्र	चित्रा	06:43 से 17:33 तक
15 "	"	कृ. 30	रवि	विशा.	17:16 से 19:21 तक
19 "	"	शु. 5	गुरु	पूषा.	09:38 से 19:05 तक
20 "	"	शु. 6	शुक्र	उषा.	06:48 से 09:22 तक
25 "	"	शु. 11	बुध	उभा.	06:52 से 15:55 तक
26 "	"	शु. 12	गुरु	रेव.	06:53 से 07:34 तक
27 "	"	शु. 12	शुक्र	अश्वि.	08:28 से 18:34 तक
30 "	"	शु. 15	सोम	रोहि.	06:56 से 18:22 तक
02 दिसं.	मार्ग.	कृ. 2	बुध	मृग.	06:58 से 10:37 तक
05 "	"	कृ. 5	शनि	पुष्य	07:00 से 14:27 तक
09 "	"	कृ. 9	बुध	उफा.	15:18 से 17:46 तक
10 "	मार्ग	कृ. 10	गुरु	हस्त	12:52 से 17:42 तक
11 "	"	कृ. 11	शुक्र	चि/स्वा.	07:04 से 08:48 तक

पश्चात् वर्ष पर्यन्त मुहूर्त्ता: अभाव

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
16 अप्रै.	वैशा.	कृ. 9	गुरु	श्रव.	18:12 से 20:50 तक
17 "	"	कृ. 10	शुक्र	धनि.	05:54 से 07:05 तक
27 "	"	शु. 4	सोम	मृग.	14:30 से 20:07 तक
29 "	"	शु. 6	बुध	पुन.	05:42 से 19:58 तक
30 "	"	शु. 7	गुरु	पुष्य	05:41 से 14:39 तक
13 मई	ज्ये.	कृ. 6	बुध	श्रव.	05:32 से 19:04 तक
14 "	"	कृ. 7	गुरु	श्रव.	05:31 से 06:51 तक
20 "	"	कृ. 13	बुध	अश्वि.	05:28 से 19:19 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	05:25 से 20:28 तक
28 "	"	शु. 6	गुरु	पुष्य	05:25 से 07:27 तक
01 जून	ज्ये.	शु. 10	सोम	हस्त	05:24 से 13:16 तक
03 "	"	शु. 12	बुध	स्वा.	16:35 से 19:35 तक
05 "	"	शु. 15	शुक्र	अनु.	16:43 से 19:52 तक
10 "	आषा.	कृ. 5	बुध	श्रव.	05:23 से 10:34 तक
11 "	"	कृ. 6	गुरु	धनि.	11:28 से 19:29 तक
12 "	"	कृ. 7	शुक्र	शत.	09:58 से 18:48 तक
15 "	"	कृ. 10	सोम	रेव.	05:23 से 16:31 तक
14जन.21	पौष	शु. 1	गुरु	श्रव.	09:02 से 20:00 तक
15 "	"	शु. 2	शुक्र	धनि.	07:15 से 19:50 तक
20 "	"	शु. 7	बुध	रेव.	07:14 से 13:15 तक
28 "	"	शु. 15	गुरु	पुष्य	13:06 से 19:05 तक
03 फर.	माघ	कृ. 6	बुध	चित्रा	07:08 से 14:12 तक
04 "	"	कृ. 7	गुरु	स्वा.	07:08 से 12:08 तक
17 "	"	शु. 6	बुध	अश्वि.	06:58 से 19:00 तक
22 "	"	शु. 10	सोम	मृग.	06:53 से 10:58 तक
24 "	"	शु. 12	बुध	पुन.	18:06 से 19:36 तक
25 "	"	शु. 13	गुरु	पुष्य	06:51 से 13:17 तक
01 मार्च	फाल्गु.	कृ. 2	सोम	उफा/ह.	07:37 से 19:11 तक
03 "	"	कृ. 5	बुध	स्वा.	06:44 से 19:08 तक
10 "	"	कृ. 12	बुध	श्रव.	14:41 से 18:41 तक
11 "	"	कृ. 13	गुरु	धनि.	06:36 से 14:40 तक

द्विरागमन मुहूर्त्ता: सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
16 अप्रै.	वैशा.	कृ. 9	गुरु	श्रव.	23:05 से 25:13 तक
17 "	"	कृ. 10	शुक्र	धनि.	05:54 से 25:09 तक
20 "	"	कृ. 13	सोम	पूभा.	07:23 से 20:30 तक
23 "	"	कृ. 30	गुरु	अश्वि.	07:56 से 16:05 तक
30 "	"	शु. 7	गुरु	पुष्य	05:41 से 14:39 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	08:57 से 26:54 तक
20 नवं.	कार्ति.	शु. 6	शुक्र	उषा.	09:22 से 25:53 तक
25 "	"	शु. 11	बुध	उभा.	06:52 से 15:55 तक
27 "	"	शु. 12	शुक्र	अश्वि.	08:28 से 24:22 तक
30 "	"	शु. 15	सोम	रोहि.	06:56 से 25:14 तक
09 दिसं.	मार्ग.	कृ. 9	बुध	उफा.	15:18 से 26:08 तक
10 "	"	कृ. 10	गुरु	हस्त	12:52 से 26:51 तक
11 "	"	कृ. 11	शुक्र	चि/स्वा.	07:04 से 26:47 तक

पश्चात् वर्ष पर्यन्त मुहूर्त्ता: अभाव

09 " " कृ. 6 रवि रेव. 05:47 से 18:18 तक | 28 " " शु. 6 गुरु पुष्य 05:25 से 07:27 तक | पश्चात् वर्ष पर्यन्त मुहूर्त्तः अभाव

वाहन क्रय मुहूर्त्ताः सं. 2077

दिनांक	मास	पक्ष.ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)
25 मार्च	चैत्र	शु. 1	बुध	रेव.	06:19 से 22:17 तक
26 "	"	शु. 2	गुरु	रेव.	06:18 से 16:28 तक
30 "	"	शु. 6	सोम	रोहि.	17:17 से 21:57 तक
01 अप्रै.	"	शु. 8	बुध	आर्द्रा	19:29 से 21:49 तक
03 "	"	शु. 10	शुक्र	पुष्य	06:09 से 18:40 तक
08 "	"	शु. 15	बुध	ह/चि.	06:03 से 21:22 तक
09 "	वैशा.	कृ. 2	गुरु	स्वा.	06:02 से 21:18 तक
16 "	"	कृ. 9	गुरु	श्रव.	18:12 से 20:50 तक
17 "	"	कृ. 10	शुक्र	धनि.	05:54 से 21:43 तक
18 "	"	कृ. 11	शनि	शत.	05:53 से 22:18 तक
23 "	"	कृ. 30	गुरु	अश्वि.	07:56 से 16:05 तक
27 "	"	शु. 4	सोम	मृग.	14:30 से 22:25 तक
29 "	"	शु. 6	बुध	पुन.	05:42 से 21:47 तक
30 "	"	शु. 7	गुरु	पुष्य	05:41 से 14:39 तक
04 मई	"	शु. 11	सोम	उफा.	19:19 से 21:58 तक
08 "	ज्यें.	कृ. 1	शुक्र	विशा.	08:38 से 12:55 तक
13 "	"	कृ. 6	बुध	श्रव.	05:32 से 21:23 तक
14 "	"	कृ. 7	गुरु	श्रव.	05:31 से 21:19 तक
15 "	"	कृ. 8	शुक्र	धनि.	05:30 से 08:22 तक
18 "	"	कृ. 11	सोम	उभा.	16:58 से 23:07 तक
20 "	"	कृ. 13	बुध	अश्वि.	05:28 से 19:43 तक
27 "	"	शु. 5	बुध	पुन.	05:25 से 22:32 तक
10 जून	आषा.	कृ. 5	बुध	श्रव.	05:23 से 10:34 तक
11 "	"	कृ. 6	गुरु	धनि.	11:28 से 21:11 तक
12 "	"	कृ. 7	शुक्र	शत.	09:58 से 18:48 तक
15 "	"	कृ. 10	सोम	रेव.	05:23 से 16:31 तक
22 "	"	शु. 1	सोम	आर्द्रा	13:31 से 22:32 तक
24 "	"	शु. 3	बुध	पुष्य	05:25 से 10:14 तक
02 जुला.	"	शु. 12	गुरु	अनु.	05:27 से 21:52 तक
09 "	श्राव.	कृ. 4	गुरु	शत.	10:12 से 21:25 तक
13 "	"	कृ. 8	सोम	रेव.	05:32 से 18:10 तक
17 "	"	कृ. 12	शुक्र	रोहि.	20:27 से 22:21 तक
18 "	"	कृ. 13	शनि	मृग.	05:35 से 21:23 तक
25 "	"	शु. 5	शनि	उफा.	14:18 से 21:49 तक
27 "	"	शु. 7	सोम	चित्रा	05:40 से 21:41 तक
29 "	"	शु. 10	बुध	विशा.	08:33 से 21:34 तक
03 अग.	श्राव.	शु. 15	सोम	उषा.	09:26 से 21:14 तक
05 "	भाद्र.	कृ. 2	बुध	धनि.	05:45 से 22:31 तक
06 "	"	कृ. 3	गुरु	शत.	07:31 से 11:18 तक
08 "	"	कृ. 5	शनि	उभा.	16:12 से 22:19 तक
10 "	"	कृ. 6	सोम	अश्वि.	05:48 से 22:05 तक
14 "	"	कृ. 10	शुक्र	मृग.	14:02 से 21:56 तक
22 "	"	शु. 4	शनि	हस्त	19:57 से 21:24 तक
24 "	"	शु. 6	सोम	स्वा.	05:55 से 15:20 तक
31 "	"	शु. 13	सोम	श्रव.	05:59 से 08:49 तक
17 अक्टू.	द्वि.आश्वि.	शु. 1	शनि	चित्रा	06:23 से 21:09 तक
19 "	"	शु. 3	सोम	अनु.	06:25 से 14:08 तक
26 "	"	शु. 10	सोम	शत.	06:29 से 20:39 तक
29 "	"	शु. 13	गुरु	उभा.	12:00 से 15:16 तक
31 "	"	शु. 15	शनि	अश्वि.	07:02 से 17:58 तक
06 नवं.	कार्ति.	कृ. 5	शुक्र	आर्द्रा	06:45 से 19:56 तक
12 "	"	कृ. 12	गुरु	हस्त	06:42 से 19:32 तक
13 "	"	कृ. 13	शुक्र	चित्रा	06:43 से 17:59 तक
16 "	"	शु. 1	सोम	अनु.	06:45 से 14:36 तक
20 "	"	शु. 6	शुक्र	उषा.	09:22 से 21:16 तक
21 "	"	शु. 7	शनि	श्रव.	06:49 से 21:12 तक
27 "	"	शु. 12	शुक्र	अश्वि.	08:28 से 20:48 तक
02 दिसं.	मार्ग.	कृ. 2	बुध	मृग.	06:58 से 10:37 तक
05 "	"	कृ. 5	शनि	पुष्य	07:00 से 14:27 तक
09 "	"	कृ. 9	बुध	उफा.	15:18 से 20:01 तक
10 "	"	कृ. 10	गुरु	हस्त	12:52 से 19:57 तक
11 "	"	कृ. 11	शुक्र	चि/स्वा.	07:04 से 19:53 तक
18 "	"	शु. 4	शुक्र	श्रव.	14:23 से 21:46 तक
19 "	"	शु. 5	शनि	धनि.	07:09 से 19:40 तक
24 "	"	शु. 10	गुरु	अश्वि.	07:11 से 21:22 तक
30 "	"	शु. 15	बुध	आर्द्रा	18:55 से 20:59 तक
31 "	पौष	कृ. 1	गुरु	पुन.	07:14 से 19:49 तक
01 जन.21	"	कृ. 2	शुक्र	पुष्य	14:49 से 20:15 तक
06 "	"	कृ. 8	बुध	हस्त	07:15 से 20:31 तक
08 "	"	कृ. 10	शुक्र	स्वा.	07:15 से 10:50 तक
09 "	"	कृ. 11	शनि	विशा.	12:32 से 20:19 तक
14 "	"	शु. 1	गुरु	श्रव.	07:15 से 20:00 तक
15 "	"	शु. 2	शुक्र	धनि.	07:15 से 19:50 तक

पश्चात् वर्ष पर्यन्त मुहूर्त्तः अभाव

विशिष्टाद्वैत के आद्यप्रवर्तकाचार्य-बोधायन



श्री सम्प्रदाय (श्री रामावत सम्प्रदाय/श्री वैष्णव सम्प्रदाय) भगवान राम को आदिकाल से भगवान और परम ब्रह्म के परा-स्वरूप के रूप में मानते हैं। श्री सम्प्रदाय-वैष्णव सम्प्रदाय मूल रूप से विशिष्टाद्वैत सिद्धांत पर आधारित है। जिसका वर्णन वेदों, उपनिषदों, रामायण, पुराणों, संहिता आदि में मिलता है और इस विशिष्टाद्वैत सिद्धांत के आद्यप्रवर्तक भगवान् बोधायन पुरुषोत्तमाचार्य जी, जिनका प्रादुर्भाव श्री सम्प्रदाय के 9वीं पीढ़ी एवं रामानन्दाचार्य जी से 14वीं पीढ़ी पूर्व में हुआ था। भगवान श्री वेदव्यास जी (श्री सम्प्रदाय के 7वीं पीढ़ी) इनके परमगुरु एवं भगवान् शुकदेव (शुकाचार्य) जी (श्री सम्प्रदाय के 8वीं पीढ़ी) इनके गुरु थे।

जगद्गुरु रामानुजाचार्य (1017-1137 ई.) व जगद्गुरु रामानंदाचार्य (1299-1411ई.) श्री सम्प्रदाय के अंतर्गत ही वेदांत दर्शन का अनुशरण कर भगवान बोधायन के विशिष्टाद्वैत समन्वय सिद्धांत का प्रचार-प्रसार क्रमशः दक्षिण व उत्तर भारत में किये। अतः रामानंद एवं रामानुज सम्प्रदाय दोनों ही भगवान् बोधायन के विशिष्टाद्वैत वेदांत का ही अनुशरण करते हैं। दोनों में क्षेत्रीयता व समय का अंतर है, दार्शनिक सिद्धांत समान है। उत्तरी भारत में बेहद् लोकप्रिय श्री रामवत् सम्प्रदाय ही श्री रामानंद सम्प्रदाय के रूप में जाना जाता है।

भगवान् बोधायन की जन्मभूमि व तपोभूमि पर स्थित उनका पुनीत आश्रम बिहार राज्य अंतर्गत सीतामढ़ी के बनगांव (बाजपट्टी) में आज भी विद्यमान है। जहां पर इन्होंने त्रिकांड मीमांसा पर विशाल वृत्ति ग्रन्थ सहित अनेक ग्रन्थों की रचना की। श्री बोधायन सर के नाम से सरोवर और बोधायन वटवृक्ष आज भी शोभायमान होकर इनकी प्रमाणिकता को आज भी प्रदर्शित करता है। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान के दर्शन, पूजा, प्रदक्षिणा, सरोवर के दर्शन-पान से जीवन धन्य हो जाता है। विशेष रूप से बोधायन जयंती जो प्रतिवर्ष पौष कृष्ण द्वादशी को मनाया जाता है, इसका विशेष महात्म्य माना गया है।

वर्तमान में पर्यटक मंत्रालय द्वारा बोधायन की तपोस्थली को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

धन्यवाद।

निवेदक: **बोधायन सेवा संघ**-9958766101

बनगांव, भाया-बाजपट्टी, सीतामढ़ी (बिहार)-843314

अथ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् 2077 वि. (दिनांक: 25 मार्च 2020 से 12 अप्रैल 2021 तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर-कन्या को सूर्य, गुरु व चन्द्र बल विचार सहित)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कॉलम में जो तारीखें एक समान मिलें, उन तारीखों में उन राशि वाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए 4, 8, 12वें सूर्य व 4, 8वें चन्द्र का परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अत: 4, 8, 12वें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है। तथा चतुर्थ और अष्टम चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। यहां कात्यायनोक्त चार नक्षत्रों व अशुद्ध विवाह मुहूर्तों की तारीखें भी सम्मिलित हैं। अत: स्वप्रथानुसार ग्रहण करें।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेष–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई- 1, 2, 4, 5, 6, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 17, 27, 29, 30, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल अशुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक विशेष पूज्य, 14 मई से 14 जून पूज्य, 14 जून से 16 जुला. शुभ, 16 जुला. से 16 अग. अशुभ, 16 अग. से 16 सितं. तक पूज्य, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक विशेष पूज्य, 16 नवं. से 15 दिसं. तक अशुभ, 15 दिसं से 14 जन. 21 तक पूज्य।	**मेष**–अप्रैल-16,17, 25, 26, मई- 1, 2, 4, 5, 6, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-27, 29, 30, दिसम्बर- 1, 7, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नव. तक गुरु शुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
वृष–मई-15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-27, 29, 30, दिसम्बर-1, 9, 10, 11, जन. 2021- ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल शुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक अशुभ, 14 मई से 14 जून विशेष पूज्य, 14 जून से 16 जुला. पूज्य, 16 जुला. से 16 अग. शुभ, 16 अग. से 16 सितं. तक अशुभ, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक शुभ, 16 नवं. से 15 दिसं. तक विशेष पूज्य, 15 दिसं. से 14 जन. 21 तक अशुभ।	**वृष**–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-4, 5, 6, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-27, 29, 30, दिसम्बर-1, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु अशुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु अशुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
मिथुन–अप्रैल-17, 25, 26, मई-1, 2, 5, 6, जून-15, 17, 29, 30, नवम्बर-27, 29, 30, दिसं.-1, 7, 10, 11, जन. 2021- ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल शुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक शुभ, 14 मई से 14 जून अशुभ, 14 जून से 16 जुला. विशेष पूज्य, 16 जुला. से 16 अग. पूज्य, 16 अग. से 16 सितं. तक शुभ, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक पूज्य, 16 नवं. से 15 दिसं. तक शुभ, 15 दिस से 14 जन. 21 तक विशेष पूज्य।	**मिथुन**–अप्रैल-25, 26, मई-1, 2, 5, 6, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 17, 29, 30, नवम्बर-27, 29, 30, दिसं.-1, 7, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक अशुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु अशुभ।
कर्क–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 17, 18, 19, 23, नवम्बर-27, 29, 30, दिसम्बर-1,7, 9, 10, जन. 2021- ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल पूज्य, 13 अप्रैल से 14 मई तक शुभ, 14 मई से 14 जून शुभ, 14 जून से 16 जुला. शुभ, 14 जून से 16 जुला. अशुभ, 16 जुला. से 16 अग. विशेष पूज्य, 16 अग. से 16 सितं. तक पूज्य, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक अशुभ, 16 नवं. से 15 दिसं. तक पूज्य, 15 दिसं से 14 जन. 21 तक शुभ।	**कर्क**–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 17, 18, 19, 23, जून-15, 17, 27, 29, नवम्बर-27, 29, 30, दिसं.-1, 7, 9, 10, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
सिंह–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 15, 23, जून- 11, 17, 27, 29, 30, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं है।	14 मार्च से 13 अप्रैल अशुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक पूज्य, 14 मई से 14 जून शुभ, 14 जून से 16 जुला. शुभ, 16 जुला. से 16 अग. अशुभ, 16 अग. से 16 सितं. तक विशेष पूज्य, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक शुभ, 16 नवं. से 15 दिसं. तक अशुभ, 15 दिसं. से 14 जन. 21 तक पूज्य।	**सिंह**–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 15, 23, जून-11, 17, 27, 29, 30, नवं.-27, 29, 30, दिसं.-1, 7, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से सं. 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नव. तक गुरु शुभ, 20 नव से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।

तक विवाह मुहूर्त नहीं है। 15 दिस से 14 जन 21 तक ... तक गुरु शुभ।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्या–मई-15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 27, 29, 30, नवम्बर-29, 30, दिसम्बर-1, 7, 9, 10, 11, जन. 2021- ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल विशेष पूज्य, 13 अप्रैल से 14 मई तक अशुभ, 14 मई से 14 जून पूज्य, 14 जून से 16 जुला. शुभ, 16 जुला. से 16 अग. शुभ, 16 अग. से 16 सितं. तक अशुभ, 17 अक्टू.से 16 नवं. तक पूज्य, 16 नवं. से 15 दिसं. तक शुभ, 15 दिसं से 14 जन. 21 तक अशुभ।	**कन्या–**अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 27, 29, 30, नवम्बर-25, 29, 30, दिसम्बर- 1, 7, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु अशुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु अशुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
तुला–अप्रैल-17, मई-1, 2, 4, 5, 6, जून-15, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-27, दिसम्बर-7, 9, 10, 11, जन. 2021- ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल शुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक विशेष पूज्य, 14 मई से 14 जून अशुभ, 14 जून से 16 जुला. पूज्य, 16 जुला. से 16 अग. शुभ, 16 अग. से 16 सितं. तक शुभ, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक विशेष पूज्य, 16 नवं. से 15 दिसं. तक पूज्य, 15 दिसं. से 14 जन. 21 तक शुभ।	**तुला–**अप्रैल-17, मई-1, 2, 4, 5, 6, 15, 17, 18, 19, जून-11, 15, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-27, दिसम्बर-7, 9, 10, 11, जनवरी 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक अशुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु अशुभ।
वृश्चिक–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 17, 18, 19, 23, नवम्बर-17, 18, 20, 21, 24, 25, 27, 29, 30, दिसम्बर- 1, 7, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल पूज्य, 13 अप्रैल से 14 मई तक शुभ, 14 मई से 14 जून विशेष पूज्य, 14 जून से 16 जुला अशुभ, 16 जुला से 16 अग पूज्य, 16 अग. से 16 सित. तक शुभ, 17 अक. से 16 नव. तक अशुभ, 16 नव. से 15 दिस. तक विशेष पूज्य, 15 दिस से 14 जन 21 तक पूज्य।	**वृश्चिक–**अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 17, 18, 19, 23, जून-15, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-17, 18, 20, 21, 24, 25, 27, 29, 30, दिसम्बर-1, 7, 9, 10, 11, जनवरी 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
धनु–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 15, 23, जून-11, 17, 27, 29, 30, जन. 2021- ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल अशुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक पूज्य, 14 मई से 14 जून शुभ, 14 जून से 16 जुला विशेष पूज्य, 16 जुला से 16 अग अशुभ, 16 अग. से 16 सित. तक पूज्य, 17 अक. से 16 नव. तक शुभ, 16 नव. से 15 दिस. तक अशुभ, 15 दिस से 14 जन 21 तक विशेष पूज्य।	**धनु–**अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 6, 15, 23, जून-11, 17, 27, 29, 30, नवम्बर-27, 29, 30, दिसम्बर-1, 7, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
मकर–मई-15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 27, 29, 30, नवम्बर-29, 30, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल शुभ, 13 अप्रैल से 14 मई तक अशुभ, 14 मई से 14 जून पूज्य, 14 जून से 16 जुला. शुभ, 16 जुला. से 16 अग. विशेष पूज्य, 16 अग. से 16 सितं. तक अशुभ, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक शुभ, 16 नवं. से 15 दिसं. तक शुभ, 15 दिसं. से 14 जन. 21 तक अशुभ।	**मकर–**अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-4, 5, 6, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 27, 29, 30, नवम्बर-29, 30, दिसम्बर-1, 9, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु पूज्य, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु पूज्य, 20 नवं. से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।
कुंभ–अप्रैल-16, 17, मई-1, 2, 5, 6, जून-15, 17, 29, 30, नवम्बर-27, दिसम्बर-7, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल पूज्य, 13 अप्रैल से 14 मई तक शुभ, 14 मई से 14 जून अशुभ, 14 जून से 16 जुला. पूज्य, 16 जुला. से 16 अग. शुभ, 16 अग. से 16 सितं. तक विशेष पूज्य, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक पूज्य, 16 नवं. से 15 दिसं. तक शुभ, 15 दिसं. से 14 जन. 21 तक शुभ।	**कुंभ–**अप्रैल-16, 17, मई-1, 2, 5, 6, 15, 17, 18, 19, जून-11, 15, 17, 29, 30, नवम्बर-27, दिसम्बर-7, 10, 11, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक पूज्य, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं से 06 अप्रैल तक गुरु पूज्य।
मीन–अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, नवम्बर-27, 29, 30, दिसम्बर-1, 7, 9, 10, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	14 मार्च से 13 अप्रैल विशेष पूज्य, 13 अप्रैल से 14 मई तक पूज्य, 14 मई से 14 जून शुभ, 14 जून से 16 जुला. अशुभ, 16 जुला. से 16 अग. पूज्य, 16 अग. से 16 सितं. तक अशुभ, 17 अक्टू. से 16 नवं. तक अशुभ, 16 नवं. से 15 दिसं. तक पूज्य. 15 दिसं से 14 जन. 21 तक शुभ।	**मीन–**अप्रैल-16, 17, 25, 26, मई-1, 2, 4, 5, 15, 17, 18, 19, 23, जून-11, 15, 17, 27, 29, नवम्बर-27, 29, दिसम्बर-1, 7, 9, 10, जन. 2021-ता. 01 से संवत् 2077 के अन्त तक विवाह मुहूर्त नहीं हैं।	30 मार्च तक गुरु शुभ, 30 मार्च से 30 जून तक शुभ, 30 जून से 20 नवं. तक गुरु शुभ, 20 नवं से 06 अप्रैल तक गुरु शुभ।

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र-राशि संचार, वक्री-मार्गी एवं उदयास्तादि सं. 2077 वि.

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
27	मार्च	उ.भा.	4	मीन	22:06
31	"	रेवती	1		07:01
03	अप्रै.	"	2		16:08
06	"	"	3		25:24
10	"	"	4		10:51
13	"	अश्वि.	1	मेष	20:27
16	"	"	2		30:10
20	"	"	3		10:02
23	"	"	4		26:02
27	"	भरणी	1		12:12
30	"	"	2		22:32
04	मई	"	3		09:01
07	"	"	4		19:40
10	"	कृति.	1		30:27
14	"	"	2	वृष	17:20
17	"	"	3		28:20
21	"	"	4		15:25
24	"	रोहि.	1		26:37
28	"	"	2		13:56
01	जून	"	3		01:22
04	"	"	4		12:54
07	"	मृग.	1		24:32
11	"	"	2		12:13
14	"	"	3	मिथुन	23:57
18	"	"	4		11:43
21	"	आर्द्रा	1		23:31
25	"	"	2		11:21
28	"	"	3		23:14
02	जुला.	"	4		11:09
05	"	पुन.	1		23:06
09	"	"	2		11:02
12	"	"	3		22:57
16	"	"	4	कर्क	10:49
19	"	पुष्य	1		22:38
23	"	"	2		10:24

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
26	जुला.	पुष्य	3	कर्क	22:09
30	"	"	4		09:51
02	अग.	आश्ले.	1		21:30
06	"	"	2		09:05
09	"	"	3		20:34
13	"	"	4		07:57
16	"	मघा	1	सिंह	19:12
19	"	"	2		30:21
23	"	"	3		17:22
26	"	"	4		28:18
30	"	पूफा.	1		15:08
02	सितं.	"	2		25:50
06	"	"	3		12:24
09	"	"	4		22:49
13	"	उफा.	1		09:04
16	"	"	2	कन्या	19:09
19	"	"	3		29:04
23	"	"	4		14:51
27	"	हस्त	1		24:30
30	"	"	2		10:00
03	अक्टू.	"	3		19:22
06	"	"	4		28:34
10	"	चित्रा	1		13:35
13	"	"	2		22:26
17	"	"	3	तुला	07:06
20	"	"	4		15:37
24	"	स्वा.	1		24:00
27	"	"	2		08:16
30	"	"	3		16:23
03	नवं.	"	4		24:23
06	"	विशा.	1		08:14
09	"	"	2		15:55
12	"	"	3		23:29
15	"	"	4	वृश्चि.	30:54
19	"	अनु.	1		14:12

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
22	नवं.	अनु.	2	वृश्चि.	21:25
25	"	"	3		28:32
29	"	"	4		11:35
02	दिसं.	ज्ये.	1		18:33
05	"	"	2		25:25
09	"	"	3		08:12
12	"	"	4		14:54
15	"	मूल	1	धनु	21:32
18	"	"	2		28:07
22	"	"	3		10:40
25	"	"	4		17:13
28	"	पूषा.	1		23:45
31	"	"	2		30:17
04	जन.21	"	3		12:47
07	"	"	4		19:17
10	"	उषा.	1		25:46
14	"	"	2	मकर	08:16
17	"	"	3		14:47
20	"	"	4		21:22
23	"	श्रव.	1		28:00
27	"	"	2		10:43
30	"	"	3		17:29
03	फर.	"	4		24:20
06	"	धनि.	1		07:13
09	"	"	2		14:11
12	"	"	3	कुंभ	21:14
15	"	"	4		28:23
19	"	शत.	1		11:38
22	"	"	2		19:02
25	"	"	3		26:34
01	मार्च	"	4		10:14
04	"	पूभा.	1		18:01
07	"	"	2		25:55
11	"	"	3		09:56
14	"	"	4	मीन	18:05

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
17	मार्च	उभा.	1	मीन	26:23
21	"	"	2		10:51
24	"	"	3		19:30
27	"	"	4		28:18
31	"	रेव.	1		13:17
03	अप्रै.	"	2		22:23
07	"	"	3		07:39
10	"	"	4		17:02

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
27	मार्च	उषा.	3	मकर	09:45
31	"	"	4		28:51
05	अप्रै.	श्रव.	1		23:58
10	"	"	2		19:04
15	"	"	3		14:12
20	"	"	4		09:25
24	"	धनि.	1		28:51
30	"	"	2		24:34
04	मई	"	3	कुंभ	20:39
09	"	"	4		17:05
14	"	शत.	1		13:59
19	"	"	2		11:30
24	"	"	3		09:50
29	"	"	4		09:09
03	जून	पूभा.	1		09:38
08	"	"	2		11:26
13	"	"	3		14:49
18	"	"	4	मीन	20:12
23	"	उभा.	1		28:08
29	"	"	2		15:11
04	जुला.	"	3		30:01
10	"	"	4		25:35
16	"	रेव.	1		27:30
23	"	"	2		14:17
30	"	"	3		13:50

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
07	अग.	रेव.	4	मीन	09:12
16	"	अश्वि.	1	मेष	18:23
31	"	"	2		11:49
19	सितं.	"	1		16:59
04	अक्टू.	रेव.	4	मीन	10:44
14	"	"	3		25:54
26	"	"	2		19:53
02	दिसं.	"	3		28:24
14	"	"	4		28:08
24	"	अश्वि.	1	मेष	10:09
01	जन.21	"	2		12:08
08	"	"	3		22:08
15	"	"	4		21:24
22	"	भर.	1		12:59
28	"	"	2		23:01
03	फर.	"	3		28:53
10	"	"	4		07:24
16	"	कृति.	1		07:07
21	"	"	2	वृष	28:37
28	"	"	3		24:22
05	मार्च	"	4		18:43
11	"	रोहि.	1		11:49
16	"	"	2		27:49
22	"	"	3		18:56
28	"	"	4		09:20
02	अप्रै.	मृग.	1		23:11
08	"	"	2		12:29

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
25	मार्च	शत.	3	कुंभ	14:37
28	"	"	4		14:25
31	"	पूभा.	1		08:01
02	अप्रै.	"	2		21:16
05	"	"	3		07:12

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
07	अप्रै.	पूभा.	4	मीन	14:27
09	"	उभा.	1		19:26
11	"	"	2		22:28
13	"	"	3		23:45
15	"	"	4		23:29
17	"	रेव.	1		21:46
19	"	"	2		18:44
21	"	"	3		14:28
23	"	"	4		09:05
24	"	अश्वि.	1	मेष	26:37
26	"	"	2		19:12
28	"	"	3		10:55
29	"	"	4		25:50
01	मई	भरणी	1		16:06
02	"	"	2		29:47
04	"	"	3		19:03
06	"	"	4		08:03
07	"	कृति.	1		20:55
09	"	"	2	वृष	09:50
10	"	"	3		23:00
12	"	"	4		12:38
13	"	रोहि.	1		26:58
15	"	"	2		18:14
17	"	"	3		10:43
18	"	"	4		28:43
21	"	मृग.	1		24:38
22	"	"	2		22:51
24	"	"	3	मिथुन	23:57
26	"	"	4		28:40
29	"	आर्द्रा	1		14:04
31	"	"	2		29:56
04	जून	"	3		07:35
07	"	"	4		27:07
14	"	पुन.	1		09:03
22	"	आर्द्रा	4		13:49

23 " " 2 10:24 | 19 " अनु. 1 ... 3 07:12 | 22 " आर्द्रा 4 13:49

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
29	जून	आर्द्रा	3	मिथुन	14:01
05	जुला.	"	2		09:02
18	"	"	3		29:26
23	"	"	4		10:32
26	"	पुन.	1		10:45
28	"	"	2		22:39
30	"	"	3		27:26
01	अग.	"	4	कर्क	27:35
04	"	पुष्य	1		24:32
05	"	"	2		19:14
07	"	"	3		12:23
08	"	"	4		28:27
10	"	आश्ले.	1		19:53
12	"	"	2		10:57
13	"	"	3		25:57
15	"	"	4		17:04
17	"	मघा	1	सिंह	08:31
19	"	"	2		24:25
20	"	"	3		16:54
22	"	"	4		10:05
23	"	पूफा.	1		28:03
25	"	"	2		22:52
27	"	"	3		18:38
29	"	"	4		15:23
31	"	उफा.	1		13:11
02	सितं.	"	2	कन्या	12:04
04	"	"	3		12:07
06	"	"	4		13:21
08	"	हस्त	1		15:53
10	"	"	2		19:45
12	"	"	3		25:05
15	"	"	4		08:01
17	"	चित्रा	1		16:45
19	"	"	2		27:34
22	"	"	3	तुला	16:54
25	"	"	4		09:27
27	"	स्वाती	1		30:26
01	अक्टू.	"	2		10:10

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
04	अक्टू.	स्वा.	3	तुला	26:21
10	"	"	4		09:06
17	"	"	3		21:05
21	"	"	2		26:41
24	"	"	1		22:30
27	"	चित्रा	4		14:29
30	"	"	3		21:55
07	नवं.	"	4		29:57
11	"	स्वाती	1		21:47
14	"	"	2		16:48
16	"	"	3		28:29
19	"	"	4		12:31
21	"	विशा.	1		18:31
23	"	"	2		23:19
25	"	"	3		27:25
28	"	"	4	वृश्चि.	07:05
30	"	अनु.	1		10:32
02	दिसं.	"	2		13:51
04	"	"	3		17:06
06	"	"	4		20:19
08	"	ज्ये.	1		23:31
10	"	"	2		26:40
12	"	"	3		29:46
15	"	"	4		08:46
17	"	मूल	1	धनु	11:39
19	"	"	2		14:24
21	"	"	3		16:57
23	"	"	4		19:17
25	"	पूषा.	1		21:22
27	"	"	2		23:12
30	"	"	3		24:45
31	"	"	4		26:03
03	जन.21	उषा.	1		03:06
04	"	"	2	मकर	27:57
06	"	"	3		28:41
08	"	"	4		29:25
10	"	श्रवण	1		30:22
13	"	"	2		07:49

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
15	जन.	श्रव.	3	मकर	10:15
17	"	"	4		14:27
19	"	धनि.	1		21:49
22	"	"	2		11:23
25	"	"	3	कुंभ	16:30
04	फर.	"	2	मकर	23:10
07	"	"	1		27:12
10	"	श्रवण	4		22:46
13	"	"	3		27:58
01	मार्च	"	4		07:00
05	"	धनि.	1		07:18
08	"	"	2		14:15
11	"	"	3	कुंभ	12:36
13	"	"	4		29:32
16	"	शत.	1		18:37
18	"	"	2		28:44
21	"	"	3		12:27
23	"	"	4		18:08
25	"	पूभा.	1		22:03
28	"	"	2		24:22
29	"	"	3		25:14
31	"	"	4	मीन	24:46
02	अप्रै.	उभा.	1		23:03
04	"	"	2		20:10
06	"	"	3		16:11
08	"	"	4		11:10
09	"	रेवती	1		29:10
11	"	"	2		22:17

गुरु का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
29	मार्च	उषा.	2	मकर	28:52
29	जून	"	1	धनु	28:19
26	जुला.	पूषा.	4		14:16
06	सितं.	"	3		13:46
19	"	"	4		22:24
30	अक्टू.	उषा.	1		13:29
20	नवं.	"	2	मकर	13:35
07	दिसं.	"	3		21:01

गुरु का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
23	दिसं.	उषा.	4	मकर	11:21
06	जन.21	श्रव.	1		27:49
21	"	"	2		08:47
04	फर.	"	3		09:52
18	"	"	4		13:13
04	मार्च	धनि.	1		25:53
20	"	"	2		08:34
05	अप्रै.	"	3	कुंभ	24:13

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
24	मार्च	कृति.	1	मेष	29:31
28	"	"	2	वृष	15:41
31	"	"	3		28:22
04	अप्रै.	"	4		20:12
08	"	रोहि.	1		16:06
12	"	"	2		17:25
16	"	"	3		26:19
21	"	"	4		22:57
27	"	मृग.	1		17:01
05	मई	"	2		26:01
20	"	"	1		16:55
28	"	रोहि.	4		12:27
02	जून	"	3		26:26
08	"	"	2		11:55
14	"	"	1		25:59
06	जुला.	"	2		11:24
13	"	"	3		14:53
18	"	"	4		26:04
23	"	मृग.	1		20:02
27	"	"	2		27:59
31	"	"	3	मिथुन	29:11
04	अग.	"	4		25:29
08	"	आर्द्रा	1		18:00
12	"	"	2		07:34
15	"	"	3		18:42
18	"	"	4		27:53
22	"	पुन.	1		11:23
25	"	"	2		17:29

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
28	अग.	पुन.	3	मिथुन	22:20
31	अग.	"	4	कर्क	26:05
03	सितं.	पुष्य	1		28:51
06	"	"	2		30:43
10	"	"	3		07:46
13	"	"	4		08:06
16	"	आश्ले.	1		07:47
18	"	"	2		30:52
21	"	"	3		29:25
24	"	"	4		27:28
27	"	मघा	1	सिंह	25:04
30	"	"	2		22:13
03	अक्टू.	"	3		18:58
06	"	"	4		15:19
09	"	पूफा.	1		11:19
11	"	"	2		30:59
14	"	"	3		26:20
17	"	"	4		21:24
20	"	उफा.	1		16:12
23	"	"	2	कन्या	10:46
25	"	"	3		29:07
28	"	"	4		23:15
31	"	हस्त	1		17:10
03	नवं.	"	2		10:54
05	"	"	3		28:27
08	"	"	4		21:49
11	"	चित्रा	1		15:02
14	"	"	2		08:07
16	"	"	3	तुला	25:03
19	"	"	4		17:53
22	"	स्वाती	1		10:37
24	"	"	2		27:15
27	"	"	3		19:47
30	"	"	4		12:14
02	दिसं.	विशा.	1		28:37
05	"	"	2		20:55

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
08	दिसं.	विशा.	3	तुला	13:08
10	"	"	4	वृश्चि.	29:18
13	"	अनु.	1		21:25
16	"	"	2		13:28
18	"	"	3		29:30
21	"	"	4		21:29
24	"	ज्ये.	1		13:27
26	"	"	2		29:24
29	"	"	3		21:19
01	जन.21	"	4		13:13
03	"	मूल	1	धनु	29:05
06	"	"	2		20:56
09	"	"	3		12:46
11	"	"	4		28:36
14	"	पूषा.	1		20:24
17	"	"	2		12:13
19	"	"	3		28:02
22	"	"	4		19:52
25	"	उषा.	1		11:41
27	"	"	2	मकर	27:30
30	"	"	3		19:22
02	फर.	"	4		11:13
04	"	श्रवण	1		27:04
07	"	"	2		18:55
10	"	"	3		10:47
12	"	"	4		26:39
15	"	धनि.	1		18:33
18	"	"	2		10:28
20	"	"	3	कुंभ	26:23
23	"	"	4		18:23
26	"	शत.	1		10:23
28	"	"	2		26:24
03	मार्च	"	3		18:27
06	"	"	4		10:31
08	"	पूभा.	1		26:36
11	"	"	2		18:43

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
14 मार्च	पूभा.	3	कुंभ	10।52
16 "	"	4	मीन	27।03
19 "	उभा.	1		19।16
22 "	"	2		11।32
24 "	"	3		27।51
27 "	"	4		20।12
30 "	रेवती	1		12।35
01 अप्रै.	"	2		29।01
04 "	"	3		21।29
07 "	"	4		13।59
09 "	अश्वि.	1	मेष	30।32
12 "	"	2		23।07

शनि का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
03 अप्रै.	उषा.	4	मकर	11।58
19 जून	"	3		24।30
05 अग.	"	2		26।56
20 नवं.	"	3		10।22
24 दिसं.	"	4		25।52
22 जन.21	श्रव.	1		19।58
20 फर.	"	2		08।17
25 मार्च	"	3		13।07

राहु का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
22 अप्रै.	मृग.	4	मिथुन	14।44
18 अग.	"	3		16।30
18 सितं.	"	2	वृष	20।45
29 अक्टू.	"	1		18।05
13 फर.21	रोहि.	4		08।25
15 मार्च	"	3		15।49

केतु का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
22 अप्रै.	मूल	2	धनु	14।44
18 अग.	"	1		16।30
18 सितं.	ज्ये.	4	वृश्चि.	20।45
29 अक्टू.	"	3		18।05
13 फर.21	"	2		08।25
15 मार्च	"	1		15।49

मंगल वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
09 सितं.20	वक्री	29।10
14 नवं.	मार्गी	07।30

बुध वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
18 जून 20	वक्री	09।48
12 जुला.	मार्गी	13।10
13 अक्टू.	वक्री	29।42
03 नवं.	मार्गी	22।21
30 जन.21	वक्री	20।24
20 फर.	मार्गी	29।29

गुरु वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
14 मई 20	वक्री	29।19
13 सितं.	मार्गी	15।12

शुक्र वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
13 मई 20	वक्री	11।52
25 जून	मार्गी	11।59

शनि वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
11 मई 20	वक्री	28।36
29 सितं.	मार्गी	29।33

हर्षल वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
17 अग.20	वक्री	11।03
15 जन.21	मार्गी	28।00

नेपच्यून वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
25 जून 20	वक्री	20।35
01 दिसं.	मार्गी	13।48

प्लूटो वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
27 अप्रै.20	वक्री	20।26
06 अक्टू.	मार्गी	11।56

उदयास्त भौमः

सं.2077 में मंगल अस्त नहीं होगा।

उदयास्त बुधः

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
21 अप्रै.20	अस्त	21।10
17 मई	उदय	09।43
22 जून	अस्त	28।16
09 जुला.	उदय	19।35
04 अग.	अस्त	11।40
02 सितं.	उदय	15।48
20 अक्टू.	अस्त	08।09
31 "	उदय	23।19
24 नवं.	अस्त	18।55
12 जन.21	उदय	16।44
02 फर.	अस्त	15।38
14 "	उदय	13।00
04 अप्रै.	अस्त	26।51

उदयास्त गुरुः

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
16 जन.21	अस्त	28।59
12 फर.	उदय	11।03

उदयास्त शुक्रः

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
29 मई 20	अस्त	20।56
08 जून	उदय	25।38
13 फर.21	अस्त	25।25

उदयास्त शनि

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
06 जन.21	अस्त	13।50
10 फर.	उदय	28।36

उदयास्त हर्षल

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
10 अप्रै.20	अस्त	08।04
12 मई	उदय	26।02

उदयास्त नेपच्यून

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
23 फर.21	अस्त	16।36
26 मार्च	उदय	21।51

उदयास्त प्लूटो

ता. मास	उदय/अस्त	घं.मि.
30 दिसं.20	अस्त	14।46
29 जन.21	उदय	25।33

श्रीपुरुषोत्तम मास सं. 2077 वि. (18 सितं. से 16 अक्टू. 2020 ई. तक)

एकस्मिन् वर्षे आधियुगे अधिकः द्वयो सति पूर्वाधिमासौ। प्रथमोधि मासः प्राकृतः यज्ञेय अधिक वन्तः त्याज॥ असंक्रांति यासो अधिक मासौ स्फुट स्यात्। द्वि संक्रांति मास क्षयरोख्यः कदाचित॥ भास्कराचार्य॥ ज्योतिष की चन्द्र गणना से जब सूर्य की एक ही संक्रांति में दो अमावस्याएं आ जाती हैं। तब दूसरी अमावस्या वाले अमान्त महीने की वृद्धि होकर वह अधिक मास बन जाता है। भविष्य पुराण के कथनानुसार चन्द्र और सौर मास के अन्तर को ही अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) कहा जाता है।

कहा जाता है कि एक समय दुःखी होकर मलमास ने भगवान् विष्णु से प्रार्थना की थी कि हे नाथ! क्या आप इस अभागे की पीड़ा को जानते हो? लव, क्षण, मुहूर्त, पक्ष, दिन, रात्रि, नक्षत्र और राशियां सभी अपने-अपने स्वामी अनुसार निर्भय होकर के विचरण करते हैं। हे नाथ! मुझ अभागे का नाम तो है लेकिन न मेरा कोई स्वामी है और हे नाथ! यहां तक कि विवाह, उद्यापन, मुहूर्त, शुभ कार्य मुझमें नहीं किये जाते हैं। इसलिए मै मरना चाहता हूं। मलीय मास की पीड़ा को समझकर भगवान् विष्णु ने कहा–हे! मल के रूप में निंदित मास, आज से मैं तुझे अपना नाम प्रदान करता हूं। जो लोग मेरे नाम वाले अधिक मास में जप, तप, ध्यान, पूजा, ईश्वर आराधना व दान-पुण्य करेंगे तो उन्हें पृथ्वी लोक में सुख भोगने के पश्चात् विष्णु लोक की प्राप्ति होगी। इसलिए तब से आज तक अधिक मास में श्री वृज गिरांज गोवर्धन परिक्रमा व वृज चौरासी की परिक्रमा, श्री मद्भागवत सप्ताह दान पुण्य का विशेष महत्त्व है।

श्रीपुरुषोत्तम मास निर्णय–सन् 2020 ई. में आश्विन नामक पुरुषोत्तम मास है क्योंकि 18 सितंबर 2020 ई. प्रथम आश्विन कृष्णा 14 बुधवार को सायं कन्या संक्रांति है और 17 अक्टूबर को सूर्य की तुला संक्रांति है। द्वितीय अमावस्या ता. 16 अक्टूबर, 2020 की है। इस प्रकार सूर्य की एक राशि संक्रांति में दो आश्विन मास बन गये। अतः 18 सितंबर, 2020 ई. से 16 अक्टूबर 2020 ई. तक मललास (अधिक मास, लौंदमास, पुरुषोत्तम मास) रहेगा। लेकिन भारतवर्ष में महीने की गणना सूर्य व चन्द्रमा के हिसाब से की जाती है। परन्तु मलमास व क्षय मास के उपाय से सूर्य का हिसाब ठीक कर लिया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं होता कि मुस्लिम, इस्लामी धर्म वर्ष में प्रति वर्ष पांच-पांच दिन साल की गणना में ही न लिए जाएं और एक हजार वर्ष में 137 साल गायब हो जाएं और त्यौहार भी हर मौसम में आ जाएं।

अधिक आश्विन मास फल–आश्विन परचक्रेण तस्करैः पीडिता प्रजाः। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणापथे॥ अर्थात् दो आश्विन मास से संक्रामक रोगों से प्रजा को कष्ट। उत्तरी राज्यों व प्रदेशा में सुभिक्ष, खुशहाली का वातावरण बनेगा। दक्षिणी राज्यों व प्रदेशों में दुर्भिक्ष अथवा अकाल जन्य परिस्थितियां बनेंगी।

अधिक मास में करने योग्य कार्य–तीर्थ श्राद्धदर्शश्राद्ध प्रेत श्राद्ध सपिण्डनम्। मनुस्मृतौ। अर्थात् मल मास में प्राण घातक रोगों की निवृत्ति के लिये रुद्र जप, अनुष्ठान कपिल षष्ठी आदि व्रत, अनावृष्टि धारण के लिए पुरश्च ग्रहण संबंधी श्राद्ध, दान, जप-तप, पुत्र जन्म के कार्य, पितृमरण के श्राद्ध, सपिण्डी जैसे संस्कार किये जा सकते हैं।

अधिक मास में ना करने योग्य कार्य–वेद व्रत वृषोत्सर्ग चूड़ा करण मेखलाः। मांगल्याभिषेक च मलमासे विवर्जयेत॥ वृहस्पतिः। **वापी कूप तड़ागादि प्रतिष्ठा यज्ञ कर्म च। न कुर्यान्मलमासे तु तथा॥** वशिष्ठ संहिता। अर्थात् मल मास में कूप निर्माण, वावली, देव प्रतिष्ठा, किसी प्रकार के प्रायोजन, व्रत, उद्यापन, ऋषि पूजा, विवाह, कूप पूजन, गृह प्रवेश व अन्य मुहूर्त, निन्दित अन्न का भोजन, नशीले पदार्थों का सेवन मलमास में नहीं करना चाहिये।

13 फर.21 " 2 08:25 | 27 अप्रै.20 वक्री 20:26 | ... प्रवेश व अन्य मुहूर्त, निन्दित अन्न का भोजन, नशील

15 मार्च " 1 15:49 | 06 अक्टू. मार्गी 11:56 | 29 जन.21 उदय 25:33 | पदार्थों का सेवन मलमास में नहीं करना चाहिये।

वि. सं. 2077 के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, रवि आदि योगों का विवरण

निम्नांकित शुभ योगों में किये गये शुभ कार्य सिद्धि प्रद होते हैं किन्तु द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योगों में घटित होने वाले शुभ व अशुभ दोनों ही प्रकार के कार्य द्विगुण व त्रिगुण फलप्रद होते हैं। अतः इन में यदि मृत्यु हो तो विधिवत् शांति करवानी आवश्यक होती है। यहां सभी योगों का प्रारंभ व समाप्ति काल अंग्रेजी तारीख अनुसार भा.स्टै.टा. में दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
26 मार्च	06:18	26 मार्च	30:17
27 "	06:17	27 "	10:09
30 "	06:13	30 "	30:12
02 अप्रै.	06:10	02 अप्रै.	30:09
08 "	06:03	08 "	06:07
10 "	21:54	10 "	30:00
12 "	19:12	12 "	29:58
21 "	05:50	21 "	10:22
23 "	05:48	23 "	16:05
25 "	20:57	25 "	29:45
27 "	05:44	27 "	24:29
30 "	05:41	30 "	25:52
03 मई	21:42	03 मई	29:38
08 "	08:38	08 "	29:34
10 "	05:34	10 "	28:13
17 "	13:58	17 "	29:29
19 "	19:53	19 "	29:28
23 "	05:26	23 "	28:51
25 "	05:26	25 "	06:09
28 "	05:25	28 "	07:27
31 "	05:24	31 "	29:24
04 जून	18:36	04 जून	29:23
05 "	05:23	05 "	16:43
07 "	05:23	07 "	14:10
14 "	05:23	14 "	24:21
16 "	05:23	16 "	29:23
20 "	05:24	20 "	12:02
28 "	05:26	28 "	29:26
01 जुला.	26:34	01 जुला.	29:27
02 "	05:27	02 "	25:13
05 "	23:02	05 "	29:29
06 "	23:12	06 "	29:29
12 "	05:32	12 "	08:18

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
14 जुला.	05:33	14 जुला.	14:06
15 "	16:43	15 "	29:34
20 "	21:20	20 "	29:37
21 "	20:30	21 "	29:37
26 "	05:39	26 "	12:37
29 "	08:33	29 "	29:42
30 "	05:42	30 "	07:40
02 अग.	06:52	02 अग.	29:44
03 "	07:19	03 "	29:44
09 "	19:06	09 "	29:48
11 "	24:57	11 "	29:49
12 "	05:49	12 "	29:49
17 "	06:44	17 "	29:43
18 "	05:52	18 "	28:08
26 "	05:56	26 "	13:04
30 "	05:58	30 "	13:52
31 "	05:59	31 "	15:04
04 सितं.	23:28	04 सितं.	30:01
06 "	06:02	06 "	29:23
08 "	08:26	08 "	30:03
09 "	06:03	09 "	30:04
13 "	16:34	13 "	30:06
14 "	06:06	14 "	15:52
15 "	06:06	15 "	14:25
19 "	25:20	19 "	30:09
21 "	20:48	21 "	30:10
26 "	19:25	26 "	30:12
01 अक्टू.	29:57	01 अक्टू.	30:15
02 "	06:15	02 "	30:15
04 "	06:16	04 "	11:52
06 "	06:17	06 "	17:54
07 "	06:18	07 "	30:18
09 "	24:26	09 "	30:19
11 "	06:20	11 "	25:18
17 "	11:51	17 "	30:24

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
19 अक्टू.	06:25	19 अक्टू.	27:52
23 "	25:28	23 "	30:28
24 "	06:28	24 "	26:38
29 "	12:00	29 "	30:32
30 "	06:32	30 "	30:33
02 नवं.	23:49	02 नवं.	30:35
04 "	06:36	04 "	28:51
06 "	06:45	06 "	30:38
08 "	06:39	08 "	08:45
11 "	28:25	11 "	30:42
14 "	06:43	14 "	20:09
16 "	06:45	16 "	14:36
20 "	09:22	20 "	30:49
21 "	06:49	21 "	09:53
24 "	15:32	24 "	30:52
26 "	06:53	26 "	30:54
27 "	06:54	27 "	24:22
30 "	06:56	30 "	30:57
02 दिसं.	06:58	02 दिसं.	10:37
03 "	12:21	03 "	30:59
04 "	06:59	04 "	13:39
09 "	12:32	09 "	31:03
18 "	07:08	18 "	19:04
22 "	07:11	22 "	25:37
24 "	07:11	24 "	31:12
25 "	07:12	25 "	07:36
28 "	07:13	28 "	31:13
31 "	07:14	31 "	31:14
06 जन.21	07:15	06 जन.21	17:09
19 "	07:15	19 "	09:54
21 "	07:14	21 "	15:36
23 "	21:32	23 "	31:13
25 "	07:13	25 "	25:55
28 "	07:12	28 "	27:50
31 "	25:18	31 "	31:09

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
05 फर.	18:28	05 फर.	31:06
07 "	16:14	07 "	31:05
14 "	16:33	14 "	31:00
16 "	20:56	16 "	30:58
20 "	06:55	20 "	30:54
22 "	06:53	22 "	10:58
25 "	06:51	25 "	13:17
28 "	09:35	28 "	30:46
04 मार्च	23:57	04 मार्च	30:42
05 "	06:42	05 "	22:37
07 "	06:40	07 "	20:59
14 "	06:32	14 "	26:19
16 "	06:30	16 "	30:29
20 "	06:25	20 "	16:45
28 "	06:16	28 "	30:15
01 अप्रै.	07:22	01 अप्रै.	29:19
04 "	26:05	04 "	30:07
05 "	26:05	05 "	30:06
11 "	06:00	11 "	08:57

अमृत सिद्धि योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
30 मार्च	17:17	30 मार्च	30:12
02 अप्रै.	19:28	02 अप्रै.	30:09
25 "	20:57	25 "	29:45
27 "	05:44	27 अप्रै	24:29
30 "	05:41	30 "	25:52
19 मई	19:53	19 मई	29:28
23 "	05:26	23 "	28:51
25 "	05:26	25 "	06:09
28 "	05:25	28 "	07:27
31 "	27:01	31 "	29:24
16 जून	05:23	16 जून	29:23
20 "	05:24	20 "	12:02
28 "	08:46	28 "	29:26
01 जुला.	26:34	01 जुला.	29:27

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
14 जुला.	05:33	14 जुला.	14:06
26 "	05:39	26 "	12:37
29 "	08:33	29 "	29:42
26 अग.	05:56	26 अग.	13:04
04 सितं.	23:28	04 सितं.	30:01
02 अक्टू.	06:15	02 अक्टू.	30:15
30 "	06:32	30 "	14:57
28 दिसं.	15:39	28 दिसं.	31:13
31 "	19:49	31 "	31:14
23 जन.21	21:32	23 जन.21	31:13
25 "	07:13	25 "	25:55
28 "	07:12	28 "	27:50
16 फर.	20:56	16 फर.	30:58
20 "	06:55	20 "	30:54
22 "	06:53	22 "	10:58
25 "	06:51	25 "	13:17
16 मार्च	06:30	16 मार्च	30:29
20 "	06:25	20 "	16:45
28 "	17:35	28 "	30:15

द्विपुष्कर योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
31 मार्च	06:12	31 मार्च	18:44
23 मई	28:51	23 मई	29:26
24 "	05:26	24 "	25:01
02 जून	12:05	02 जून	22:54
26 जुला.	12:37	26 जुला.	29:40
04 अग.	21:55	04 अग.	29:45
19 सितं.	06:08	19 सितं.	09:10
27 "	20:49	27 "	30:13
21 नवं.	09:53	21 नवं.	21:48
01 दिसं.	16:52	01 दिसं.	30:58
24 जन.21	24:01	24 जन.21	31:13
20 मार्च	16:45	20 मार्च	30:24
21 "	06:24	21 "	07:10
30 "	06:14	30 "	12:21

गुरु पुष्य योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
02 अप्रै.	19:28	02 अप्रै	30:09
30 "	05:41	30 "	25:52
28 मई	05:25	28 मई	07:27
31 दिसं.	19:49	31 दिसं.	31:14
28 जन.21	07:12	28 जन.21	27:50
25 फर.	06:51	25 फर.	13:17

रवि पुष्य योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
13 सितं.	16:34	13 सितं.	30:06
11 अक्टू.	06:20	11 अक्टू.	25:18
08 नवं.	06:39	08 नवं.	08:45

इसके पश्चात् संवत् के अन्त तक रविपुष्य योग नहीं हैं।

त्रिपुष्कर योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
18 अप्रै.	28:24	18 अप्रै.	29:52
19 "	05:52	19 "	24:43
25 "	05:46	25 "	11:52
23 जून	05:24	23 जून	11:20
27 "	10:11	27 "	26:54
16 अग.	07:03	16 अग.	13:51
25 "	05:56	25 "	12:22
29 "	13:03	29 "	29:58
30 "	05:58	30 "	08:22
08 सितं.	24:03	08 सितं.	30:03
18 अक्टू.	08:51	18 अक्टू.	17:28
27 "	10:47	27 "	30:31
01 नवं.	22:50	01 नवं.	30:34
07 "	07:24	07 "	08:05
20 दिसं.	21:01	20 दिसं.	31:10
26 "	10:35	26 "	28:19
05 जन.21	07:15	05 जन.21	18:20
13 फर.	15:11	13 फर.	24:57
23 "	18:06	23 "	30:52
28"	11:19	28 "	30:46
02 मार्च	[illegible]	02 मार्च	[illegible]

रवि योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
27 मार्च	10:09	27 मार्च	30:16
28 "	06:16	28 "	12:52
29 "	15:17	29 "	30:13
30 "	06:13	30 "	17:17
31 "	06:58	31 "	18:44
02 अप्रै.	19:28	02 अप्रै.	30:09
03 "	06:09	03 "	30:08
04 "	06:08	04 "	17:08
06 "	12:16	06 "	30:04
07 "	06:04	07 "	09:15
12 "	19:12	12 "	29:58
13 "	05:58	13 "	19:02
13 "	20:23	13 "	29:57
14 "	05:57	14 "	19:40
25 "	20:57	25 "	29:45
26 "	05:45	26 "	22:56
27 "	12:08	27 "	24:29
28 "	25:33	28 "	29:42
29 "	05:42	29 "	26:01
01 मई	25:05	01 मई	29:40
02 "	05:40	02 "	29:39
03 "	05:39	03 "	21:42
05 "	16:39	05 "	29:36
06 "	05:36	06 "	13:51
12 "	28:54	12 "	29:32
13 "	05:32	13 "	29:31
14 "	05:31	14 "	06:23
26 "	07:02	26	29:25
27 "	05:25	27 "	07:28
28 "	07:27	28 "	29:24
29 "	05:24	29 "	06:58
30 "	28:42	30 "	29:24
31 "	05:24	31 "	29:24
01 जून	05:24	01 जून	25:03
03 "	20:43	03 "	29:23
04 "	05:23	04 "	18:36
11 "	16:35	11 "	29:23
12 "	05:23	12 "	18:48
24 "	13:10	24 "	29:25
25 जून	05:25	25 जून	12:26
26 "	11:26	26 "	29:26
27 "	05:26	27 "	10:11
29 "	07:14	29 "	29:27
30 "	05:27	30 "	28:04
02 जुला.	25:13	02 जुला.	29:28
03 "	05:28	03 "	24:08
11 "	05:33	11 "	29:32
12 "	05:32	12 "	08:18
23 "	17:44	23 "	29:38
24 "	05:38	24 "	16:02
25 "	14:18	25 "	29:39
26 "	05:39	26 "	12:37
28 "	09:41	28 "	29:41
29 "	05:41	29 "	29:42
30 "	05:42	30 "	07:40
01 अग.	06:48	01 अग.	29:43
02 "	05:43	02 "	06:52
02 "	21:28	02 "	29:44
03 "	05:44	03 "	07:19
09 "	19:06	09 "	29:48
10 "	05:48	10 "	22:05
21 "	21:29	21 "	29:54
22 "	05:54	22 "	19:11
23 "	17:06	23 "	29:55
24 "	05:55	24 "	15:20
26 "	13:04	26 "	29:57
27 "	05:57	27 "	29:57
28 "	05:57	28 "	12:37
30 "	13:52	30 "	15:07
31 "	15:04	31 "	29:59
01 सितं.	05:59	01 सितं.	16:38
08 "	08:26	08 "	30:03
09 "	06:03	09 "	11:15
19 "	25:20	19 "	30:09
20 "	06:09	20 "	22:51
21 "	20:48	21 "	30:10
22 "	06:10	22 "	19:18
24 "	18:09	24 "	30:11
25 "	06:11	25 "	30:12
26 "	06:12	26 "	19:23
26 सितं.	24:29	26 सितं.	30:12
27 "	06:12	27 "	20:49
29 "	24:48	29 "	30:14
30 "	06:14	30 "	27:15
07 अक्टू.	20:35	07 अक्टू.	30:18
08 "	06:18	08 "	22:50
18 "	30:08	18 "	30:25
19 "	06:25	19 "	27:52
20 "	26:12	20 "	30:26
21 "	06:26	21 "	25:13
24 "	26:38	24 "	30:29
25 "	06:29	25 "	30:29
26 "	06:29	26 "	30:30
27 "	06:30	27 "	06:36
29 "	12:00	29 "	30:32
30 "	06:32	30 "	14:57
06 नवं.	06:45	06 नवं.	08:14
07 "	08:05	07 "	30:39
08 "	06:39	08 "	08:45
17 "	12:21	17 "	30:47
18 "	06:47	18 "	10:39
20 "	09:22	20 "	30:49
21 "	06:49	21 "	09:53
23 "	13:04	23 "	30:51
24 "	06:51	24 "	30:52
25 "	06:52	25 "	18:20
27 "	24:22	27 "	30:55
28 "	06:55	28 "	27:19
06 दिसं.	14:46	06 दिसं.	31:01
07 "	07:01	07 "	14:32
17 "	19:13	17 "	31:08
18 "	07:08	18 "	19:04
19 "	19:40	19 "	31:10
20 "	07:10	20 "	21:01
22 "	25:37	22 "	31:11
23 f"	07:11	23 "	31:11
24 "	07:11	24 "	31:12
25 f"	07:12	25 "	07:36
27 "	13:19	27 "	31:13
28 "	07:13	28 "	15:39
28 "	23:45	28 "	31:13
29 "	07:13	29 "	17:32
04 जन.21	19:17	04 जन.21	31:15
05 "	07:15	05 "	18:20
15 "	29:17	15 "	31:15
16 "	07:15	16 "	30:09
18 "	07:43	18 "	31:15
19 "	07:15	19 "	09:54
21 "	15:36	21 "	31:14
22 "	07:14	22 "	31:13
23 "	07:13	23 "	21:32
23 "	27:59	23 "	31:13
24 "	07:13	24 "	24:01
26 "	27:12	26 "	31:12
27 " -	07:12	27 "	27:49
02 फर.	22:32	02 फर.	31:08
03 "	07:08	03 "	21:07
14 "	16:33	14 "	31:00
15 "	07:00	15 "	18:29
16 "	20:56	16 "	30:58
17 "	06:58	17 "	23:49
21 "	08:43	21 "	30:53
22 "	06:53	22 "	30:52
23 "	06:52	23 "	12:31
25 "	13:17	25 "	30:50
26 "	06:50	26 "	12:35
03 मार्च	25:35	03 मार्च	30:43
04 "	06:43	04 "	17:59
04 "	23:57	04 "	30:42
05 "	06:42	05 "	22:37
15 "	28:43	15 "	30:30
16 "	06:30	16 "	30:29
17 "	06:29	17 "	07:31
17 "	26:21	17 "	30:28
18 "	06:28	18 "	10:34
19 "	13:44	19 "	30:25
20 "	06:25	20 "	16:45
22 "	21:28	22 "	30:22
23 "	06:22	23 "	30:21
24 "	06:21	24 "	23:12
26 "	21:39	26 "	30:17
27 "	06:17	27 "	19:52
02 अप्रै.	27:43	02 अप्रै.	30:09
03 "	06:09	03 "	26:38

वि. सं. 2077 मध्ये शनि की साढ़ेसाती व ढैया विचार

26 जनवरी 2017 रात्रि 19।30 से धनु राशि मूल नक्षत्र से गोचर कर रहे शनिदेव 24 जनवरी 2020 प्रात: 09।56 तक धनु राशि में गोचर करने के पश्चात् अपनी मकर राशि में प्रवेश करेंगे। शनि के धनु राशि से 02 वर्ष 11 मास 28 दिन की गोचर की अवधि में विश्व में अनेक महत्वपूर्ण घटनायें घटित हुई। रिसर्च को गति मिली, वैज्ञानिक क्षेत्र में रोबोट के लिये आर्टीफीशियल त्वचा की खोज हुई। इस खोज से आने वाले दिनों में रोबोट टेक्नोलोजी में आमूलचूल परिवर्तन की सम्भावनायें बढ़ गई हैं। मंगल ग्रह के गहन आंतरिक तथा बाह्य अध्ययन के लिये अंतरिक्ष यान का सफल प्रक्षेपण तथा स्थापन हुआ। बुध ग्रह के अध्ययन के लिये वर्ष 2018 में ही बेपी कोलम्बो नाम का यान भेजा गया। भारतवर्ष स्पेश एजेन्सी ईसरो ने अंतरिक्ष में एक साथ सर्वाधिक सैटेलाईट स्थापित करने का न केवल सफल कीर्तिमान बनाया बल्कि अंतरिक्ष विज्ञान में विश्व में इस विद्या की चतुर्थ ताकत बना।

24 जन. 2020 प्रात: 09।53 से शनि देव के मकर राशि में प्रवेश करने के साथ ही धनु, मकर तथा कुंभ राशि के जातक शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव में तथा मिथुन तथा तुला राशि के जातक शनि की ढैया के प्रभाव में रहेंगे। मकर राशि गत शनि में जन्मे जातक-**नरपतेरिव गौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नर:। अगुरुणा कुसुमैमृगजातया विमलया मलयाचलजै: सुखम्॥** गुणी तो होंगे ही साथ ही विद्वान्, कार्यकुशल तथा साहसी भी होंगे। तकनीकी रूप से श्रेष्ठ होकर अपने क्षेत्र में प्रख्यात होंगे। वस्त्राभूषण तथा नवीन वस्तुओं में रुचि रहेगी। मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। प्रवास अधिक करेंगे तथा जन्म स्थान से दूर, प्राय: ही विदेश में निवास करेंगे। यद्यपि जन्म समय पर अन्य ग्रहों की स्थिति से फलों में न्यूनाधिक परिवर्तन होना अवश्यम्भावी है।

पाया विचार–शनि देव के मकर राशि में प्रवेश के समय चन्द्रमा भी मकर राशि से गोचर कर रहे होंगे। इस स्थिति में सिंह, मकर तथा मीन राशि के जातकों को शनिदेव का प्रवेश स्वर्णपाद से होने के प्रभाव से कष्टपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना होगा। व्यवसायिक समस्यायें बढ़ेंगी। पारिवारिक सुख में कमी होगी। वाद-विवाद होंगे। विरोधियों का वर्चस्व रहेगा। मानसिक तनाव से स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। अपव्यय रहेगा। मिथुन, तुला तथा कुंभ राशि के जातकों को लौह पाद से हुए शनि प्रवेश से आर्थिक तथा पारिवारिक परेशानियों तथा उलझनों का सामना करना पड़ेगा। मानसिक तनाव बढ़ेगा। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। दुर्घटना योग होने से सावधानी अपेक्षित रहेगी। व्यवसायिक कार्यों में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। आय के अनुपात में व्यय की अधिकता से आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। वृष, कन्या तथा धनु राशि के जातकों को शनि का प्रवेश रजत पाद से होने से इन राशियों के जातकों को अपने प्रयासों से कार्यों में सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ होगा। पदोन्नति, पद-प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्थायी सम्पत्ति अर्जित करेंगे। भूमि-भवन तथा वाहन सम्बन्धी लाभ मिलेगा। वैवाहिक कार्य सम्पन्न होंगे। योग्य व्यक्तियों को संतान प्राप्ति होगी। सन्तान सुख मिलेगा। मेष, कर्क तथा वृश्चिक राशियों पर शनि का प्रवेश ताम्रपद से होने के प्रभाव से इन राशियों के जातकों को शुभ फल अनुभव होंगे। कार्यों तथा व्यवसाय में लाभ मिलेगा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि-भवन तथा वाहन सम्बन्धी सुख प्राप्त होगा। भौतिक पदार्थों का उपयोग करेंगे। पद-प्रतिष्ठित, प्रभावशाली व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। विद्यार्जन में सफलता मिलेगी। उच्च विद्या प्राप्ति का योग रहेगा। वैवाहिक जीवन का सुख मिलेगा। पारिवारिक सुख रहेगा। विभिन्न स्थानों की यात्राओं, सुदूर स्थान के भ्रमण अथवा विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा।

मकर राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव

मेष राशि–मेष राशि के लिये शनि दशमेश-आयेश होने से अकारक ग्रह है। वर्ष 2019 में धनु राशि से गोचर करते हुए शनि की तृतीय दृष्टि लाभ भाव स्थित अपनी कुंभ राशि पर होने इस राशि के लिये वर्ष 2019 में रजतपद से प्रविष्ट शनि के प्रभाव से 24 जनवरी 2020 तक शनि के धनु राशि से गोचर में कष्ट रहेगा। रोग तथा शत्रु बढ़ेंगे। कभी-कभी धन प्राप्ति होती रहेगी तथापि आय में कमी रहेगी। स्त्री तथा सन्तान से कभी सुख तथा कभी असुविधा होगी। आर्थिक हानि होगी। शुभ कार्यों में बाधा आयेंगी। पिता अथवा भाई को शारीरिक कष्ट होगा। मित्रों से विचारों में सामंजस्य न होने से अनबन होगी। आधीनस्थ विवाद का कारण बनेंगे। यात्राओं से अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा। धार्मिक कार्यों से विरक्ति होगी, मन में अजीब सा वैराग्य आयेगा। कई जातक धर्म परिवर्तन कर लें तो भी आश्चर्य नहीं होना चाहिये। बन्धन तथा आरोपों का भय रहेगा। इसके बाद वर्ष के अन्त तक शनि के मकर राशि से गोचर में दुख तथा मानसिक व्यथा से पीड़ित रहेंगे। नियम विरुद्ध कार्यों में संलग्न होंगे। नौकरी तथा रोजगार में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। मान-हानि होगी। हृदय रोग की आशंका रहेगी। 22 सितंबर से 11 दिसंबर 2020 तक की अवधि में कष्ट तथा अरिष्ट फलों में न्यूनता रहेगी। अपेक्षाकृत शुभ फल होंगे।

वृष राशि–वर्ष 2019 में अष्टम भाव से गोचर कर रहे शनि के प्रभाव से यह समय शनि की ढैया का रहेगा। 24 जनवरी तक शनि की ढैया में आर्थिक लाभ होगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। राजकीय अथवा प्रशासनिक कार्यों में उन्नति का अवसर प्राप्त होगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। कष्ट तथा परेशानियां समाप्त होंगी। पारिवारिक सुख मिलेगा। इसके बाद वर्ष के अन्त तक अरिष्ट फलों की अधिकता से परेशान रहेंगे। रोग तथा शत्रु बढ़ेंगे। आर्थिक हानि होगी। कभी-कभी धन प्राप्ति होती रहेगी तथापि आय में कमी रहेगी। स्त्री तथा सन्तान से कभी सुख तथा कभी असुविधा होगी। शुभ कार्यों में बाधा आयेगी। पिता तथा भाई भी कष्ट फल अनुभव करेंगे। मित्रों तथा आधीनस्थों के साथ वाद-विवाद की स्थिति बनेगी। यात्राओं से लाभ नहीं होगा। धार्मिक कार्यों से विरक्ति होगी। आस्थाओं में परिवर्तन होगा। बन्धन तथा आरोपों का भय रहेगा। 15 अग. से 02 सितं. तक तथा 28 सितं. से 23 अक्टू. के समय में अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल होंगे।

मिथुन राशि–24 जनवरी 2020 तक ताम्रपद से सप्तम स्थान से शनि के गोचर में आरोपों तथा अपवादों का शिकार होंगे। गुप्त परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। दाम्पत्य जीवन तथा शारीरिक सुख में कमी रहेगी। भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पत्ति से किंचित विलम्ब से लाभ मिलेगा। स्थानान्तरण अथवा विदेश यात्रा से भाग्योन्नति होगी। 24 जनवरी 2020 से लोह पाद का गोचर शनि की ढैया का होने से वर्ष के अन्त तक कार्यों में असफलता मिलेगी। स्पैकुलेशन तथा इन्वेस्टमेन्ट में हानि होगी। आर्थिक लाभ में कमी रहेगी। व्यसनों तथा दुष्ट व्यक्तियों से मित्रता के कारण परेशानियां उत्पन्न होंगी। मान-हानि का भय रहेगा। राजकीय अथवा प्रशासनिक कारणों से भय, प्रताड़ना तथा दंड का योग बनेगा। जीवन अव्यवस्थित रहेगा। सन्तान को घर से दूर रहना होगा। शरीर रोग ग्रस्त तथा कष्ट में रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। 03 अगस्त से 18 अगस्त तक तथा 02 सितंबर से 27 सितंबर तक के समय में अरिष्ट फलों में कमी आकर शुभ फल होंगे।

कर्क राशि–24 जनवरी तक विपक्षियों का वर्चस्व बढ़ने के उपरान्त भी [illegible] क्रियाकलापों से हानि नहीं होगी। धन-धान्य तथा सुखों की वृद्धि होगी। परिवार तथा दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। भूमि-भवन का लाभ मिलेगा। इस समयावधि में 13 तथा 14 जनवरी अपेक्षाकृत अशुभ होने से इन दिनों में सावधानी पूर्वक कार्य करें। इसके बाद 23 सितं. तक के समय में मानसिक शांति का है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अपवादों, विवादों आदि का निराकरण होगा। स्थानान्तरण तथा यात्रायें स्थगित होंगी। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। शोक-भय दूर होंगे। 23 सितं. के बाद किसी अपवाद का शिकार होंगे। मानसिक व्यथा बढ़ेगी। धन हानि होगी। स्थानान्तरण होगा। सुदूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। जीवन साथी को कष्ट रहेगा। किसी अनजाने भय से ग्रसित रहेंगे। 08, 09 तथा 10 अक्टूबर, 05 तथा 06 नवंबर, 02 तथा 03 दिसंबर, 26 तथा 27 जनवरी 2021, 22 तथा 23 फरवरी, 21 तथा 22 मार्च कार्य सम्पादित करने के लिये शुभ हैं।

सिंह राशि–24 जनवरी तक पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति होगी। आर्थिक लाभ होगा। पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परन्तु आचरण के प्रति सावधानी अपेक्षित रहेगी। 02 तथा 03 जनवरी शुभ होने से अपने महत्वपूर्ण कार्य इन दिनों में करने के लिये योजना बना लें। इसके बाद वर्ष के अन्त तक धन-धान्य तथा सुखों की वृद्धि होगी। परिवार तथा दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। मामले मुकद्मों में सफलता मिलेगी। भूमि-भवन से लाभ मिलेगा। 02 सितं. से 22 सितंबर तथा 23 अक्टूबर से 17 नवंबर तक उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता रहेगी। परिवार तथा दाम्पत्य जीवन के सुख का अभाव रहेगा। विरोधी मुखर होंगे। भूमि-भवन के कार्यों में हानि होगी।

कन्या राशि–24 जनवरी 2020 तक लौह पाद की शनि की ढैया के प्रभाव से सुख-शांति में कमी रहेगी। भूमि-भवन सम्बन्धी कार्यों में अड़चनें बनेंगी। वाद-विवाद होंगे। विरोधियों का प्रभाव बढ़ेगा। कार्यस्थल पर तथा कार्यों में असफलता मिलेगी। स्थान परिवर्तन होगा। पितृतुल्य व्यक्तियों को कष्ट होगा। स्वयं के स्वास्थ्य में गिरावट रहेगी। आर्थिक संकट बनेगा। 24 जनवरी 2020 से शनि देव का गोचर मकर राशि में रजत पाद से होगा। पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य लाभ होगा। आर्थिक लाभ होगा। पद प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। परन्तु आचरण दूषित रहेगा। 01 मार्च से 28 मार्च तक, 25 अप्रैल से 09 मई तक तथा 24 दिसं. 2020 से 22 फर. 2021 तक पारिवारिक एवं दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी। कार्यों में असफलता से व्यवसाय तथा नौकरी में अवनति होगी। स्वास्थ्य गिरेगा। आर्थिक हानि होगी। मान-पद प्रतिष्ठा की हानि होगी। मन सात्विक कार्यों की ओर झुकेगा।

तुला राशि–24 जनवरी 2020 तक कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। स्वास्थ्य में गिरावट अनुभव होगी। पद-प्रतिष्ठा प्रभावित होगी। व्यवसाय-नौकरी में व्यवधान आयेंगे। आर्थिक हानि होगी। आचरण में सात्विक परिवर्तन होगा। 24 जनवरी से लोह पाद की शनि की ढैया में विरोधियों का वर्चस्व रहेगा। शरीर रोगग्रस्त रहेगा। स्थान परिवर्तन का योग बनेगा। दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन में बाधा आयेगी। धन-हानि से आर्थिक संकट बनेगा। 03 फरवरी से 29 फरवरी, 07 अप्रैल से 09 मई, 18 जून से 24 दिसंबर, 17 मार्च 2021 से 16 अप्रैल 2021 तक का समय शुभ रहेगा। इन दिनों में विरोधी मुंह की खायेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। घर-परिवार तथा दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। धन का लाभ होगा। व्यय पर नियन्त्रण रखने में सफलता मिलेगी।

वृश्चिक राशि–09 जन. 2020 तक व्यर्थ वाद-विवादों से छुटकारा मिलेगा। स्वजनों से मधुर सम्बन्ध रहेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। सन्तान सुख रहेगा। परन्तु कार्यों में असफलता मिलेगी। 24 जनवरी 2020 तक रजत पाद से प्रविष्ट शनि की साढ़े साती से संचित धन में कमी आयेगी। आय के स्त्रोत बने रहने के उपरान्त भी आय तथा लाभ में कमी रहेगी। व्यय अधिक होगा। स्वभाव तथा वाणी में उग्रता रहेगी। पारिवारिक वाद-विवाद बढ़ेंगे। सुदूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। 24 जनवरी 2020 से 23 सितं. तक, 17 दिसं. 2020 से 28 जन. तक ताम्रपाद से शनि देव के गोचर में कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। धन हानि होगी। पद-प्रतिष्ठा प्रभावित होगी। नौकरी में व्यवधान आयेगा। मन सात्विक कार्यों में लगेगा। शेष समय में शुभ फल होंगे।

धनु राशि–24 जनवरी प्रातः 09।53 तक रोगों से छुटकारा मिलेगा, स्वास्थ्य लाभ होगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। पद-प्रतिष्ठा का लाभ होगा। धनागमन बढ़ेगा। आचरण में शिथिलता के योग होने से अपने व्यवहार के प्रति सावधान रहें। 24 जन. 2020 से शनि की उतरती साढ़ेसाती से वर्ष के अन्त तक व्यर्थ वाद-विवादों में उलझेंगे। स्वजनों से विरोध होगा। सन्तान के प्रति चिंता बढ़ेगी। क्लेश रहेगा। अपेक्षित लाभ में न्यूनता रहेगी परन्तु कार्यों में सफलता मिलेगी। इस अवधि में 07 अप्रैल तक तथा 04 मई से 18 जून तक व्यर्थ वाद विवादों से छुटकारा मिलेगा। स्वजनों से मधुर सम्वन्ध रहेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। सन्तान सुख रहेगा। परन्तु कार्यों में असफलता मिलेगी।

मकर राशि–24 जनवरी तक दूरस्थ स्थानों की यात्रा होगी। व्यय की अधिकता रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। कार्य करने में परेशानी आयेगी। किसी उच्च अधिकारी से असुविधा होगी। मान-प्रतिष्ठा की हानि होगी। आय में गिरावट आयेगी। स्वास्थ्य खराब होगा। दाम्पत्य जीवन में कष्ट रहेगा सन्तान के दायित्वों की पूर्ति में व्यवधान होगा। 24 जनवरी 2020 से साढ़ेसाती के द्वितीय चरण का स्वर्ण पाद से गोचर प्रायः ही शुभ फल देगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। धनागमन बढ़ेगा। आचरण के प्रति सावधान रहें। 22 मार्च से 04 मई तक, 30 मार्च से 30 जून तक तथा इसके बाद 20 नवंबर मध्यान्ह 13।35 से वर्ष के अन्त तक गुरु से वेध में उक्त के विपरीत परिणाम होने से कष्ट फल होंगे।

कुंभ राशि–24 जनवरी उच्च अधिकार प्राप्त व्यक्ति के माध्यम से लाभान्वित होंगे। उत्तम स्वास्थ्य, जीवन साथी तथा सन्तान का सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। यश, मान-सम्मान प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। वर्ष के अन्त तक शनि के मकर राशि से गोचर में हानि होगी। दूरस्थ स्थानों की यात्रा होगी। व्यय की अधिकता रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। कार्य करने में परेशानी आयेगी। नौकरी पेशा वर्ग को प्रमोशन में तथा व्यापारियों को व्यवसायिक उन्नति में बाधा आयेगी। व्यवसाय में हानि होने से लोन लेने की स्थिति बनेगी। शासकीय दंड का योग रहेगा। घर परिवार से दूर रहना होगा। विदेश जाने की स्थिति बनेगी। जीवन साथी को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें होंगी। 24 जनवरी से 08 फरवरी तक तथा 28 नवंबर से 04 जनवरी 2021 तक समय शुभ होने से तथा शुक्र से वेध में उक्त के विपरीत परिणाम होंगे। अपने कार्य को इसी प्रकार योजान्वित करें।

मीन राशि–24 जनवरी तक कष्ट तथा मानसिक व्यथा का सामना करना पड़ेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में सलंग्न होंगे। व्यवसाय तथा सर्विस में विघ्न-बाधायें आयेंगी। आर्थिक स्थिति निर्बल बनेगी। हृदय रोग की आशंका रहेगी। मान-हानि होगी। इसके बाद वर्ष के अन्त तक उत्तम स्वास्थ्य का आनंद रहेगा। किसी उच्च अधिकारी का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक सुख रहेगा। दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मान-सम्मान तथा आय में वृद्धि होगी। 28 मार्च से 01 अगस्त तक तथा 23 सितंबर मध्यान्ह 12।08 से वर्ष [illegible]

घर-परिवार तथा दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। धन ... अगस्त तक तथा 23 सितंबर मध्यान्ह 12।08 से वर्ष
में सफलता मिलेगी।

गुरु-राहु-केतु का शुभाशुभ गोचर फल संवत् 2077 वि.

धनु-मकर राशिस्थ गुरु का द्वादश राशियों पर प्रभाव

वर्ष 2020-21 तदनुसार बि. संवत् 2077 में गुरु वर्षारम्भ से 30 मार्च प्रातः 04।52 तक अपनी धनु राशि में गोचर करने के उपरान्त मकर राशि में प्रवेश करेंगे। शनि देव की मकर राशि देव गुरु बृहस्पति की नीच राशि है। 15 मई प्रातः 05।19 पर मकर राशि में वक्री होने के पश्चात् गुरुदेव 30 जून प्रातः 04।19 पर पुनः धनु राशि में गोचर करेंगे। 20 नवम्बर मध्यान्ह 13।35 पर गुरु मकर राशि में आकर 06 अप्रैल 2021 रात्रि 00।13 तक मकर राशि में ही रहेंगे। अतः वर्ष में गुरु का गोचर धनु तथा मकर राशि से होता रहेगा। मकर में गुरु के प्रभाव से जातक **हतमतिः परकर्मकरो नरःस्मरविहीनतरो बहुरोषभाक्। सुरगुरौ मकरे विद्धाति नो जनमनो न मनोरथ साधनम्॥** कुबुद्धि, अन्य के कार्य करने वाला, काम रहित, क्रोधी स्वभाव तथा मनोरथ विहीन होता है। फलों में अन्तर गुरु की अन्य ग्रहों से युति तथा दृष्टि प्रभाव से होना निश्चित है।

मेष राशि–इस राशि के जातकों को गुरु का गोचर नवम तथा दशम भाव से होगा। नवम भाव से गुरु के गोचर में धनागम बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। स्थाई सम्पत्ति, भूमि अथवा भवन क्रय करेंगे। मार्च से जून तक की अवधि में व्यर्थ के वाद-विवादों में समय व्यतीत होगा। भू-सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद होंगे। अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह से नवम्बर मास के तीसरे सप्ताह तक विद्याभ्यास में बाधा रहेगी। परीक्षाओं में असफलता मिलेगी। स्कूल अथवा कालेज छोड़ना पड़ सकता है। लेखकों, प्रकाशकों को लाभ होगा। यात्राओं में सफलता मिलेगी। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह से अप्रैल 2021 के प्रथम सप्ताह तक निरुद्यमता रहेगी। किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा। सन्तान के विषय में चिन्तित रहेंगे।

वृष राशि–इस राशि के जातकों को गुरु के अष्टम तथा नवम भाव से गोचर में प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। वाणी में सरलता तथा स्पष्टता रहेगी। यात्राओं में सफलता मिलेगी। भाग्योन्नति से मन प्रसन्न रहेगा। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किसी नये भवन की प्राप्ति होगी। प्राध्यापक तथा वकील लाभान्वित होंगे। भाग्योन्नति होगी। आकस्मिक लाभ मिलेगा। अध्ययन के लिये समय अनुकूल होने से विभिन्न परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। नवम्बर के अन्तिम तथा दिसम्बर मास के प्रथम तीन सप्ताहों में अपेक्षित सफलता नहीं मिलेगी। सन्तान के प्रति चिंता रहेंगी। विद्याभ्यास में बाधा रहेगी। पारिवारिक सुख प्रभावित होगा। इसके पश्चात् राजकीय वर्गों, समाज तथा वरिष्ठ अधिकारियों में सम्मान होगा। सन्तान सुख रहेगा।

मिथुन राशि–वर्ष के पहले दिन मन में किंचित निराशा रहेगी परन्तु इसके बाद राजकर्मियों से अनबन के उपरान्त भी प्रशासकीय मान-सम्मान मिलेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य लाभ होगा। दाम्पत्य जीवन तथा सन्तान सुख रहेगा। परिवार में विवाह आदि उत्सवों का आनंद रहेगा। शुभ कार्य के लिये यात्रा होगी। धन की कमी से मन चिन्तित रहेगा। अप्रैल से जून तक व्यवसायिक हानि का योग है। जीवन साथी अथवा सन्तान के स्वास्थ्य में गिरावट रहेगी। कार्यों में असफलता रहेगी। परीक्षा में अपेक्षित सफलता नहीं मिलेगी। प्रमोशन में व्यवधान बनेगा। जुलाई मास से नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य सुख रहेगा। सन्तान तथा सम्बन्धियों से मनमुटाव के कारण चिंताग्रस्त होंगे। किसी शुभ कार्य के लिये यात्रा करेंगे। कैश फ्लो गड़बड़ायेगा। दिसम्बर मास से वर्ष के अन्त तक चोरी तथा अग्निकांड से नुकसान होगा। वाणी में कठोरता। प्रशासनिक भय रहेगा। शासन-सत्ता की ओर से हानि होगी। यात्राओं में कष्ट होगा।

कर्क राशि–वर्ष के प्रारम्भ से जून अन्त तक मन अनेक कारणों से शोक ग्रस्त रहेगा। घरेलू वातावरण में एक अजीब प्रकार की उदासीनता रहेगी। जीवन साथी, सन्तान तथा पारिवारिक सदस्यों से मतभेद होंगे। शासन-सत्ता का भय रहेगा। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। पेट के रोगों अथवा किसी अन्य रोग से पीड़ा होगी। शार्ट सर्किट तथा अग्निकांडों के प्रति सचेत रहें। धन की कमी अनुभव होगी। विवाह आदि किसी पारिवारिक समारोह-उत्सव को निरस्त (स्थगित) करने का कष्ट होगा। दाम्पत्य जीवन में तनाव रहेगा। 30 जून से 20 नवं. तक मन प्रसन्न रहेगा। धन-धान्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगा। घरेलू वातावरण में सौहार्द्रता रहेगी। जीवन साथी, सन्तान तथा पारिवारिक सदस्यों का सहयोग मिलेगा। विग्रह-विवादों की स्थिति समाप्त होगी। शासन-सत्ता का सहयोग रहगा तथा लाभ मिलेगा। किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति होगी। पेट के रोगों अथवा अन्य रोगों से छुटकारा मिलेगा। विरोधियों का वर्चस्व समाप्त होगा। किसी आकस्मिक हानि से बचाव होगा। 20 नवं. से 06 अप्रैल 2021 तक प्रशासकीय कारणों से मान-सम्मान की हानि होगी। समय-कुसमय का भोजन होगा। प्रायः ही सभी कार्यों में असफलता का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। बुद्धि चातुर्य कुंठित होगा। समझ में नहीं आयेगा कि क्या करें और क्या ना करें? सुखोपभोग में अनेक प्रकार से अड़चनें आयेंगी। विवाह आदि किसी पारिवारिक समारोह-उत्सव को निरस्त (स्थगित) करने का कष्ट होगा। किसी शुभ कार्य के लिये विचारी जा रही यात्राओं में बाधा आयेगी। दाम्पत्य जीवन में तनाव रहेगा। सन्तान (के कारण) से कष्ट रहेगा।

सिंह राशि–जून अन्त तक सभी प्रकार की उन्नति का सुख प्राप्त होगा। धनागम बढ़ेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार जनों के साथ आनन्द रहेगा। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। सन्तान की प्राप्ति होगी। शासक वर्ग से लाभ होगा। घरेलू वातावरण में सौहार्द्रता रहेगी। जीवन साथी, सन्तान तथा पारिवारिक सदस्यों का सहयोग मिलेगा। विग्रह-विवादों की स्थिति समाप्त होगी। शासन-सत्ता के सहयोग से लाभ मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। विरोधियों का वर्चस्व समाप्त होगा। जुलाई से वर्षान्त तक अवनति का योग होने से धनागम में बाधा रहेगी। कार्यों में असफल होंगे। परिवार सुख का अभाव रहेगा। पद-प्रतिष्ठा की हानि होगी। शासक वर्ग से हानि होगी। मन अनेक कारणों से शोक ग्रस्त रहेगा। धन की कमी अनुभव होगी। घरेलू वातावरण में एक अजीब प्रकार की उदासीनता रहेगी। जीवन साथी, सन्तान तथा पारिवारिक सदस्यों से मतभेद होंगे। शासन-सत्ता का भय रहेगा। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। शार्ट सर्किट तथा अग्निकांडों के प्रति सचेत रहें।

कन्या राशि–मार्च अन्त तक मन अशांत रहेगा। आर्थिक हानि रहेगी। विरोधी पक्ष प्रबल तथा आक्रामक रहेगा। किसी अति निकट तथा विश्वासी सहयोगी से धोखा मिलेगा। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग नहीं मिलने से परिस्थितियां विकट रूप धारण करेंगी। स्थान परिवर्तन होगा। अपमान जनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अकस्मात् का भय रहेगा। अप्रैल आरम्भ से जून अन्त तक सभी प्रकार से उन्नति का सुख प्राप्त होगा। धनागम बढ़ेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार जनों के साथ आनन्द रहेगा। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शासक वर्ग से लाभ होगा। जुलाई से नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक मन अशांत रहेगा। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक का समय शुभ रहेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवारजनों के साथ आनन्द रहेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

तुला राशि–मार्च अन्त तक परिवार में मतभेद तथा झगड़े-झंझट होंगे। रोजी-रोजगार में रुकावट आयेगी। स्थान परिवर्तन होगा। शारीरिक कष्ट एवं रोगों से परेशान रहेंगे। पिता अथवा पिता

तुल्य व्यक्तियों को मरणांतक कष्ट होगा। कार्यों में बाधाएं रहेंगी। अप्रैल आरम्भ से वर्ष के अन्त तक पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। आर्थिक लाभ होगा। विरोधी पक्ष परास्त होगा। किसी अति निकट तथा विश्वासी सहयोगी से लाभ मिलेगा। पारिवारिक सदस्यों का भी सहयोग रहेगा। स्थान लाभ होगा। मतभेद समाप्त होंगे। झगड़े-झंझटों से छुटकारा मिलेगा। रोजी रोजगार में प्रगति होगी। शारीरिक कष्ट एवं रोगों से छुटकारा मिलेगा। पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। कार्यों में सफलता मिलेंगी।

वृश्चिक राशि–मास का प्रारम्भ शुभ फलों से होगा। नवम्बर मास के अन्त तक मान-सम्मान तथा पद वैभव की वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख की प्राप्ति होगी। पूर्वार्जित भूमि-भवन का विस्तार होगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ मिलेगा। मानसिक शांति रहेंगी। ऋण मुक्त होंगे। विद्या में यश प्राप्त होगा। अधिकारियों तथा वरिष्ठों के कृपा पात्र बनेंगे। परिवार के मतभेद तथा शारीरिक कष्ट समाप्त होंगे। झगड़े-झंझटों से छुटकारा मिलेगा। रोजी रोजगार में प्रगति होगी। स्थान लाभ होगा। पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। पद-प्रतिष्ठा तथा ख्याति में वृद्धि होगी। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विरोध समाप्त होगा तथा विरोधी नष्ट होंगे। दान-धर्म में रुचि रहेंगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक परिवार में मतभेद झगड़े-झंझटों से कष्ट रहेगा। रोजी-रोजगार में रुकावट आयेगी। स्थान परिवर्तन होगा। शारीरिक कष्ट एवं रोगों से परेशान रहेंगे। पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्तियों को मरणांतक कष्ट होगा। कार्यों में बाधाएं रहेंगी।

धनु राशि–अप्रैल मास के प्रारम्भ से 30 जून के अन्त तक धनागम में बाधा रहेगी। सुख की हानि होगी। पद-प्रतिष्ठा तथा ख्याति नष्ट होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट आयेगी। उन्नति के अवसरों में बाधायें मिलेंगी। विरोधी बढ़ेंगे। धार्मिक कार्यों तथा दान-धर्म के कार्यों में अरुचि रहेगी। जुलाई से नवम्बर तक व्यय पर नियन्त्रण होगा। व्यर्थ के विरोध समाप्त होंगे। शासन से सहयोग मिलेगा। कार्यस्थल पर सहयोग प्राप्त होगा। किसी प्रिय वस्तु का लाभ मिलेगा। स्थान लाभ होगा। शांत चित्त रहकर कठिनाईयों तथा समस्याओं के समाधान प्राप्त करेंगे। आर्थिक लाभ मिलेगा। अधिकार वृद्धि होगी। अधिकारियों में स्वीकार्यता बढ़ेगी। उत्साह वर्द्धन होगा। मित्रों की संख्या बढ़ेगी। मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। विद्याध्ययन में सहायता मिलेगी, रुचि बढ़ेगी। वैवाहिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। गर्भ धारण-सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक धनागम में बाधा आयेगी। सुख की हानि होगी। पद-प्रतिष्ठा तथा ख्याति नष्ट होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट आयेगी। उन्नति के अवसरों में बाधायें मिलेंगी। विरोधी बढ़ेंगे। धार्मिक कार्यों तथा दान-धर्म के कार्यों से मन में अरुचि रहेगी। कर्ज के कारण स्थाई सम्पत्ति को गिरवी रखने का योग बनेगा। नौकरी धन्धों में अपयश मिलेगा। पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी।

मकर राशि–धनागम में वृद्धि होगी। मन प्रसन्न रहेगा। प्रायः ही सभी कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। विरोधी पक्ष पराजित होगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। अप्रैल से जून के अन्त तक मान सम्मान तथा आत्म विश्वास बढ़ेगा। शासन से सहयोग मिलेगा। कार्यस्थल पर सहयोग प्राप्त होगा। किसी प्रिय वस्तु का लाभ मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। जुलाई से नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक शुभ कार्यों में धन का व्यय आवश्यकता से अधिक हो जायेगा। आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ेगा। अपने ही विश्वासपात्रों से धोखा मिलेगा। मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। स्थान परिवर्तन होगा। परिवारजनों से अलग रहने का योग बनेगा। कोर्ट-कचहरी के चक्कर बढ़ेंगे। मुकद्दमेबाजी होगी। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक स्थान लाभ

कुंभ राशि–मार्च के अन्तिम सप्ताह से जून के अन्त तक शुभ कार्यों में आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। आर्थिक तंगी बनेगी। विश्वासपात्रों से धोखा मिलेगा। मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। स्थान परिवर्तन के कारण परिवारजनों से अलग रहना होगा। कोर्ट-कचहरी के चक्कर बढ़ेंगे। मुकद्दमेबाजी होगी। जुलाई से नवम्बर तीसरे सप्ताह तक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनागम में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। विरोधी पक्ष पराजित होगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक आर्थिक उन्नति होगी। अपने विश्वासपात्रों का सहयोग मिलेगा। मिथ्या अपवाद समाप्त होगा। स्थान लाभ होगा तथा परिवार के साथ रहने का सुयोग बनेगा। कोर्ट-कचहरी तथा मुकद्दमेबाजी से छुटकारा मिलेगा।

मीन राशि–30 मार्च तक स्वजनों से विवाद होगा। स्वभाव में जड़ता तथा निरुद्यमता रहेगी। किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा। व्यर्थ के वाद-विवादों में समय व्यतीत होगा। स्थान हानि होगी। भू-सम्पत्ति के वाद-विवाद बढ़ेंगे। सन्तान के विषय में चिन्तित रहेंगे। अप्रैल से जून के अन्त तक आय बढ़ेगी। मन प्रसन्न रहेगा। विरोधी पक्ष पराजित होगा। मनोबल बढ़ेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। जुलाई से नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक मन चिन्तित रहेगा। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। आय वृद्धि होगी।

राहु-केतु गोचर फल वर्ष 2020-21

वर्ष के आरम्भ से मिथुन राशि में गोचर कर रहे राहु का राशि परिवर्तन वृष राशि में 18 सितम्बर को 20।45 पर होने से राहु वर्ष में दो राशियों मिथुन तथा वृष का भोग करेंगे। वृष राहु की प्रिय राशि है। वर्षारंभ से केतु धनु राशि में विचरण करते हुए 18 सितंबर को 20।45 पर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे और वर्ष पर्यन्त इसी राशि में विचरण करते रहेंगे।

अतः केतु भी वर्ष में दो राशियों धनु और वृश्चिक का भोग करेंगे। राहु तथा केतु की उच्च-नीच तथा मूल त्रिकोण राशियों के संदर्भ में अलग-अलग मत प्रचलित है तथापि अनेक विद्वान् वृष को राहु की उच्च राशि मानते हैं, वचन है:

राहोस्तु वृषभं केतोः वृश्चिके तुंग संशितम्। मूल त्रिकोणं कुंभं च प्रियं मिथुन मुच्यते।।

महर्षि पराशर, रामशर्मा के मत से भी राहु वृष राशि में उच्चस्थ होता है। फलदीपिका के मत से राहु इस राशि में बलवान होता है।

विभिन्न राशियों पर राहु के गोचर का प्रभाव

मेष राशि–इस राशि के लिये 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक मिथुन राशि से राहु के गोचर में 28 मार्च मध्यान्ह 15।36 से 01 अग. प्रातः 05।07 तक की अवधि को छोड़कर शेष समय में उत्तम परिणाम मिलेंगे। तकनीकी ज्ञान तथा कला-कौशल में वृद्धि होगी। आर्थिक लाभ मिलेगा। भ्रमण तथा प्रवास से आर्थिक लाभ होगा। आत्म-विश्वास बढ़ेगा। परिश्रम वाले कार्यों में व्यस्त रहेंगे। वाद-विवाद में हानि होगी तथापि अन्य व्यक्तियों पर प्रभाव स्थापित करने में सफलता मिलेगी। अधूरे काम पूरे होंगे। मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा का लाभ होगा। विद्यार्थी परीक्षा में डिस्टिंकशन के साथ सफलता तथा यश प्राप्त करेंगे। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में शारीरिक कष्ट होगा। नेत्र विकार से पीड़ित होंगे। मानसिक क्लेश रहेगा। पैसा हाथ में नही रुकेगा। आय से अधिक व्यय करेंगे। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। मन में असंतोष रहेगा। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। जीवन साथी से विरोध होगा। नये उद्योग धन्धों में हाथ आजमायेंगे। व्यवसाय बढ़ाने के लिये ऋण लेंगे। कोर्ट-कचहरी के मामलों में मुकद्मों सम्बन्धी पुराने कागजात प्राप्त होंगे। स्थाई सम्पत्ति से सम्बन्धित मामलों में विपरीत निर्णय होंगे तथापि स्थाई

अपवाद का भय रहेगा। स्थान परिवर्तन होगा। परिवा[illegible] ... [illegible] होंगे। कोर्ट-कचहरी के मामलों में मुकदमों सम्बन्धी
कोर्ट-कचहरी के चक्कर बढ़ेंगे। मुकदमेबाजी होगी। दिसम्बर से वर्ष के अन्त तक स्थान लाभ | पुराने कागजात प्राप्त होंगे। स्थाई सम्पत्ति से सम्बन्धित मामलों में विपरीत निर्णय होंगे तथापि स्थाई
होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

आर्यभट्ट पंचांगम्

वृष राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में शारीरिक कष्ट रहेगा। नेत्र विकार से पीड़ित होंगे। आर्थिक हानि होगी। व्यय-आय से अधिक रहेगा। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। जीवन साथी से विरोध होगा। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। कोर्ट-कचहरी के मामलों में विपरीत निर्णय होंगे। नये उद्योग धन्धों में हाथ आजमायेंगे। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में अहंकारवश उचित निर्णय लेने में बाधा होने से हानि होगी। शारीरिक कष्ट रहेगा। आलस्य में वृद्धि होगी। उद्योगों में अपनी सामर्थ्य से बढ़कर कार्य करेंगे तथा यश प्राप्त करेंगे। पारिवारिक जीवन में अधिक रुचि रहेगी। दूसरों से कार्य कराने की क्षमता तथा कला उत्तम रहेगी। प्रबन्धन कला में निखार आयेगा। उच्च पदाधिकारियों की विजिट से लाभ होगा।

मिथुन राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में शारीरिक कष्ट के उपरान्त भी मन शान्त तथा गम्भीर रहेगा। समस्याओं का उचित समाधान मिलेगा। मन में ऊंची कल्पनायें आयेंगी। क्षमता तथा सामर्थ्य से अधिक बढ़कर कार्य करेंगे। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में व्यय की अधिकता से ऋणग्रस्त होने की स्थिती बनेगी। मिथ्या अपवाद होंगे। अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अधिकारीयों का कोपभाजन बनेंगे। शासन सत्ता की हानि होगी। व्यापारियों को दीवानी मुकद्दमों का सामना करना पड़ेगा। अमानतें वापस करनी होंगी। रकम वसूली नहीं होगी। प्रवास होगा।

कर्क राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में धन हानि तथा व्यय की अधिकता से ऋणग्रस्त होने की स्थिती बनेगी। आर्थिक दंड लगेगा। झूठे तथा आधारहीन आरोपों का सामना करना पड़ेगा। प्रशासनिक सहयोग में बाधा रहेगी। अधिकारों में कमी आयेगी। कोर्ट केंसेज बनेंगे। डिपोजिट्स वापस करने होंगे परन्तु उधार दी रकम की वसूली नहीं होगी। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में विभिन्न स्थानों की यात्रा होगी। भ्रष्टाचारी अधिकारियों की कृपा प्राप्त करेंगे। चैलेंजिंग वर्क लेने का प्रभाव पड़ेगा। इच्छाओं की पूर्ति होगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी। बंधु-बांधवों से विग्रह विवाद होंगे। बड़े भाई को कष्ट होगा। किसी अनिष्ट का भय रहेगा। अकस्मात् ही लाभ मिलेगा परन्तु व्यय अधिक होगा। कन्या सन्तान होगी। योग्य पात्रों का विवाह होगा।

सिंह राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में भ्रष्ट अधिकारियों की कृपा से कोर्ट केंसेज से छुटकारा मिलेगा। नई चुनोतियां स्वीकार करेंगे। इण्टरव्यू में सफलता मिलेगी। व्यय बढ़ेगा। निकट परिचितों से मतभेद होंगे। बड़े भाई को कष्ट होगा। मन में किसी अनिष्ट की आशंका रहेगी। योग्य जीवन साथी मिलेगा। 23 सितं. मध्यान्ह 12:08 से राहु के वृष राशि से गोचर में अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। सर्विस क्लास की पदोन्नति होगी। नई जिम्मेदारियां मिलेंगी। सार्वजनिक संस्थाओं के चुनाव में विजय मिलेगी। कोर्ट-कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों -पद प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। पिता अथवा पितृतुल्य व्यक्तियों से मतभेद होंगे। नियम विरोधी कार्यों में लिप्त रहने पर पद-प्रतिष्ठा की हानि होगी।

कन्या राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में उन्नति के पथ पर आगे बढ़ेंगे। महत्वपूर्ण अधिकार तथा जिम्मेदारियां मिलेंगी। कानूनी कार्यों में सफलता मिलेगी। चुनाव में विजय मिलेगी। प्रतिष्ठित व्यक्ति विजय में सहभागी होंगे। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में महत्वाकांक्षी कार्यों में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। भाग्योन्नति में अड़चनें आयेंगी परन्तु विदेश में भाग्योदय होने का योग है।

तुला राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में महत्वपूर्ण कार्यों के निष्पादन में बाधाओं तथा अड़चनों के कारण सफलता सन्दिग्ध लगेगी। भाग्योन्नति में बाधा अनुभव होगी। जन्म स्थान से दूर रहकर भाग्योदय होने का योग बनेगा। भाई-बहनों को कष्ट रहेगा। आय के साधन कम होंगे। शिक्षा बाधित तथा अपूर्ण रहेगी। अनिश्चय की स्थिति से मानसिक तनाव बनेगा। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में अड़चनों तथा अवरोधों का निवारण कुछ हानि के मध्य होगा। मन अनुचित कार्यो से हटेगा। रोगों से बचाव रहेगा। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा।

वृश्चिक राशि–23 सितंबर मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में स्वास्थ्य लाभ होगा। दुर्घटना से बचाव होगा। आचार-विचार में शुभता रहेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। सन्तान लाभ होगा। आर्थिक उन्नति होगी। 23 सितंबर मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में दाम्पत्य जीवन में मतभेद बनेंगे। सुख-आनन्द में कमी रहेगी। यात्राओं में कष्ट होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में विपरीत परिणाम प्राप्त होने से आर्थिक हानि होगी। पद-प्रतिष्ठा गिरेगी। कृषि, डेयरी तथा एनीमल फार्मिंग से अपेक्षित लाभ में कमी आयेगी। प्रतिस्पर्धियों से हानि होगी।

धनु राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक कन्या सन्तान के जन्म का सुख रहेगा। दाम्पत्य जीवन में मतभेद बनेंगे। विषय वासनाओं में लिप्तता बढ़ने से स्वास्थ्य गिरेगा। सुख-आनन्द में कमी आयेगी। यात्राओं में कष्ट होगा। कानूनी मामलों में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। मन पर यदि नियन्त्रण न रख पाये तो अन्याय मार्ग पर बढ़ते देर नहीं लगेगी। विभिन्न प्रकार की आपत्तियों से दो चार होंगे। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में रोगों से छुटकारा मिलेगा। विरोध समाप्त होगा। मन ऐडवेंचरस कार्यो की ओर आकर्षित होगा। चैलेजिंग कार्य प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। उद्योग धन्धों के लिये समय अनुकूल है। विरोधियों पर प्रभाव स्थापित करने में सफलता मिलेगी। कृषि कार्य, डैयरी तथा पशु पालन के लिये समय उत्तम है।

मकर राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर का समय श्रेष्ठ है। समय का सदुपयोग करें। उद्योग-धन्धों में सफलता मिलेगी। मन ऐडवेन्चरस कार्यों की ओर आकर्षित होगा। चैलेजिंग कार्य स्वीकार करने में संकोच न करें। आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण होगा। विरोध समाप्त होगा। मातृपक्ष से लाभ रहेगा। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। कार्यकुशलता में कमी आयेगी परन्तु झूठे अभिमान से आनन्दित रहेंगे। भाग्य, आय, धन तथा ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि होगी। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। मानसिक व्यथा का योग रहेगा। संतान के प्रति चिंता बढ़ेगी।

कुंभ राशि–23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में भाग्योन्नति होगी। आर्थिक स्थिति तथा कैश फ्लो में सुधार होगा। शिक्षा के क्षेत्र में परिश्रम से सफलता मिलेगी। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन में किया गया इन्वेस्टमेन्ट लाभकारी रहेगा। योग्य महिलाओं में कन्सीव करने का योग रहेगा। 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में जमीन-जायदाद का साधारण लाभ होगा। मातृ सुख में कमी रहेगी। पैतृक स्थान से दूर होंगे। वाहनादि से कष्ट रहेगा। अपव्यय होगा। सम्बन्धियों से कष्ट रहेगा। स्थाई सम्पत्ति की हानि होगी। नई-नई चिन्तायें बनेंगी। पारिवारिक सुख में अनियमितता रहेगी।

मीन राशि–23 सितंबर मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में भू-सम्पत्ति के कार्यों से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। वाहन यात्रा में कष्ट रहेगा। मन चिन्ताग्रस्त होगा। दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी। 23 सितंबर मध्यान्ह 12।08 से राहु के वृष राशि से गोचर में आर्थिक लाभ होगा। यात्राओं में व्यस्त रहेंगे। बंधु-बांधवों एवं मित्रों से वाद-विवाद में अन्ततोगत्वा हानि ही होगी।

शेष पृष्ठ 192 पर

साढ़े पांच बजे (प्रातः 5 बजकर 30 मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भा.स्टै.टा. 5।30 के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **15 अगस्त 2020 शाम 8:45 मि. का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए 16 अगस्त प्रातः 5।30 बजे के सूर्य स्पष्ट में से 8।45 घंटे की गति घटायेंगे। 16 अगस्त के सूर्य स्पष्ट (03-29-27-03) में से 15 अगस्त के सूर्य स्पष्ट (03-28-29-23) घटा देने से 24 घंटे की गति पता चलेगी जोकि 57।40 कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें 57 कला के सामने 8 घंटे के नीचे 19।00 मिले। इसमें 45 मिनट की गति 1।47 कलादि जमा कर देने से हमें 20।47 कलादि योग प्राप्त हुआ। अब 40 विकला के संस्कार समीपस्थ 40 कला के (8।45 घंटे) संस्कार 14 विकला जमा कर देने से हमें 21।01 कलादि 8 घंटे 45 मिनट की गति प्राप्त हुई इसको 16 अगस्त 5।30 के सूर्य स्पष्ट (03-29-27-03) में से घटा देने से शाम 8।45 मि. का सूर्य स्पष्ट 3-29-06-02 राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं।

मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में से घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।

5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का ग्रह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया पृथक-पृथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये 15 अगस्त सन् 2020 को शाम के 8:45 मि. के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए-सूर्य-15 अग. के प्रातः 5।30 बजे का सूर्य स्पष्ट 03-28-29-23 है और अगले दिन 16 अगस्त के प्रातः 5।30 बजे का सूर्य स्पष्ट 03-29-27-03 है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं। यहां 16 तारीख के सूर्य स्पष्ट में से 15 तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
16 ता. को सूर्य स्पष्ट	03	29	27	03
15 ता. को सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	03	28	29	23
	00	00	57	40

अतः 57′ कला, 40″ विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। 57′-40″ के विकला बनाये: 57×60+40=3460 विकला। सूर्य की यह गति 15 तारीख के 5।30 बजे से 16 तारीख के 5।30 बजे तक 24 घंटे (1440 मि.) की है। अब अपने इष्ट समय 8।45 मि. में से 5।30 बजे को घटाया तो समय अंतराल 15 घंटे 15 मिनट (915 मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की 1440 मि. में सूर्य की गति 3460 विकला है। 915 मि. में से सूर्य की गति 3460×915÷1440=2198 विकला= 2198÷60 कला=36 कला 38 विकला 36′-38″ इसको 15 अगस्त के सूर्य स्पष्ट में जोड़ दें (03-28-29-23)+(36-38)= 3-29-06-01 अतः 15 अगस्त की शाम 8।45 मि. का सूर्य स्पष्ट 3-29-06-01 बना। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री (शनि) ग्रहों के लिए-15 जुलाई 2020 शाम 8:45 मि. का शनि स्पष्ट ज्ञात करना है। अतः उल्टी क्रिया करनी होगी। अर्थात् 15 जुलाई के शनि स्पष्ट में 16 जुलाई के शनि स्पष्ट घटाने होंगे। 15 जुलाई के शनि स्पष्ट 09-04-55-39 में से 16 जुलाई के शनि स्पष्ट 09-04-51-15 को घटायें-04-24 यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। 4 क. 24 वि.=264 विकला। अतः क्रिया पूर्ववत् 264×915÷1440 =168 वि.=02 क. 47 वि.। 02-48 को 15 जुलाई के शनि स्पष्ट में से घटाया (09-04-55-39)-(02-48)= 09-04-52-51 अतः 15 जुलाई को 8।45 मि. पर वक्री शनि स्पष्ट 09-04-52-51 आया। यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो 5।30 बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

(कृपया पाठक इन ◆ को ¼ चौथाई, ■ को ½ आधा और ● ¾ तिहाई पढ़ें।)

दैनिक गति 24घं.	गति 30मि. क.वि.	गति 1 घं. क.वि.	गति 2 घं. क.वि.	गति 3 घं. क.वि.	गति 4 घं. क.वि.	गति 5 घं. क.वि.	गति 6 घं. क.वि.	गति 7 घं. क.वि.	गति 8 घं. क.वि.	गति 9 घं. क.वि.	गति 10घं. क.वि.	गति 11घं. क.वि.	गति 12घं. क.वि.
1	0।01 ◆	0।02 ■	0।05	0।07 ■	0।10	0।12 ■	0।15	0।17 ■	0।20	0।22 ■	0।25	0।27 ■	0।30
2	0।02 ■	0।05	0।10	0।15	0।20	0।25	0।30	0।35	0।40	0।45	0।50	0।55	1।00
3	0।03 ●	0।07 ■	0।15	0।22 ■	0।30	0।37 ■	0।45	0।52 ■	1।00	1।07 ■	1।15	1।22 ■	1।30
4	0।05	0।10	0।20	0।30	0।40	0।50	1।00	1।10	1।20	1।30	1।40	1।50	2।00
5	0।06 ◆	0।12 ■	0।25	0।37 ■	0।50	1।02 ■	1।15	1।27 ■	1।40	1।52 ■	2।05	2।17 ■	2।30
6	0।07 ■	0।15	0।30	0।45	1।00	1।15	1।30	1।45	2।00	2।15	2।30	2।45	3।00
7	0।08 ●	0।17 ■	0।35	0।52 ■	1।10	1।27 ■	1।45	2।02 ■	2।20	2।37 ■	2।55	3।12 ■	3।30
8	0।10	0।20	0।40	1।00	1।20	1।40	2।00	2।20	2।40	3।00	3।20	3।40	4।00
9	0।11 ◆	0।22 ■	0।45	1।07 ■	1।30	1।52 ■	2।15	2।37 ■	3।00	3।22 ■	3।45	4।07 ■	4।30
10	0।12 ■	0।25	0।50	1।15	1।40	2।05	2।30	2।55	3।20	3।45	4।10	4।35	5।00
11	0।13 ●	0।27 ■	0।55	1।22 ■	1।50	2।17 ■	2।45	3।12 ■	3।40	4।07 ■	4।35	5।02 ■	5।30
12	0।15	0।30	1।00	1।30	2।00	2।30	3।00	3।30	4।00	4।30	5।00	5।30	6।00
13	0।16 ◆	0।32 ■	1।05	1।37 ■	2।10	2।42 ■	3।15	3।47 ■	4।20	4।52 ■	5।25	5।57 ■	6।30
14	0।17 ■	0।35	1।10	1।45	2।20	2।55	3।30	4।05	4।40	5।15	5।50	6।25	7।00
15	0।18 ●	0।37 ■	1।15	1।52 ■	2।30	3।07 ■	3।45	4।22 ■	5।00	5।37 ■	6।15	6।52 ■	7।30
16	0।20	0।40	1।20	2।00	2।40	3।20	4।00	4।40	5।20	6।00	6।40	7।20	8।00
17	0।21 ◆	0।42 ■	1।25	2।07 ■	2।50	3।32 ■	4।15	4।57 ■	5।40	6।22 ■	7।05	7।47 ■	8।30
18	0।22 ■	0।45	1।30	2।15	3।00	3।45	4।30	5।15	6।00	6।45	7।30	8।15	9।00
19	0।23 ●	0।47 ■	1।35	2।22 ■	3।10	3।57 ■	4।45	5।32 ■	6।20	7।07 ■	7।55	8।42 ■	9।30
20	0।25	0।50	1।40	2।30	3।20	4।10	5।00	5।50	6।40	7।30	8।20	9।10	10।00
21	0।26 ◆	0।52 ■	1।45	2।37 ■	3।30	4।22 ■	5।15	6।07 ■	7।00	7।52 ■	8।45	9।37 ■	10।30
22	0।27 ■	0।55	1।50	2।45	3।40	4।35	5।30	6।25	7।20	8।15	9।10	10।05	11।00
23	0।28 ●	0।57 ■	1।55	2।52 ■	3।50	4।47 ■	5।45	6।42 ■	7।40	8।37 ■	9।35	10।32 ■	11।30
24	0।30	1।00	2।00	3।00	4।00	5।00	6।00	7।00	8।00	9।00	10।00	11।00	12।00
25	0।31 ◆	1।02 ■	2।05	3।07 ■	4।10	5।12 ■	6।15	7।17 ■	8।20	9।22 ■	10।25	11।27 ■	12।30
26	0।32 ■	1।05	2।10	3।15	4।20	5।25	6।30	7।35	8।40	9।45	10।50	11।55	13।00
27	0।33 ●	1।07 ■	2।15	3।22 ■	4।30	5।37 ■	6।45	7।52 ■	9।00	10।07 ■	11।15	12।22 ■	13।30
28	0।35	1।10	2।20	3।30	4।40	5।50	7।00	8।10	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
29	0।36	1।12	2।25	3।27	4।50	6।02 ■	7।15	8।27 ■	9।40	10।52 ■	12।05	13।17 ■	14।30

दैनिक गति 24घं.	गति 30मि. क.वि.	गति 1 घं. क.वि.	गति 2 घं. क.वि.	गति 3 घं. क.वि.	गति 4 घं. क.वि.	गति 5 घं. क.वि.	गति 6 घं. क.वि.	गति 7 घं. क.वि.	गति 8 घं. क.वि.	गति 9 घं. क.वि.	गति 10घं. क.वि.	गति 11घं. क.वि.	गति 12घं. क.वि.
31	0।38 ◆	1।17 ■	2।35	3।52 ■	5।10	6।27 ■	7।45	9।02 ■	10।20	11।37 ■	12।55	14।12 ■	15।30
32	0।40	1।20	2।40	4।00	5।20	6।40	8।00	9।20	10।40	12।00	13।20	14।40	16।00
33	0।41 ◆	1।22 ■	2।45	4।07 ■	5।30	6।52 ■	8।15	9।37 ■	11।00	12।22 ■	13।45	15।07 ■	16।30
34	0।42 ■	1।25	2।50	4।15	5।40	7।05	8।30	9।55	11।20	12।45	14।10	15।35	17।00
35	0।43 ●	1।27 ■	2।55	4।22 ■	5।50	7।17 ■	8।45	10।12 ■	11।40	13।07 ■	14।35	16।02 ■	17।30
36	0।45	1।30	3।00	4।30	6।00	7।30	9।00	10।30	12।00	13।30	15।00	16।30	18।00
37	0।46 ◆	1।32 ■	3।05	4।37 ■	6।10	7।42 ■	9।15	10।47 ■	12।20	13।52 ■	15।25	16।57 ■	18।30
38	0।47 ■	1।35	3।10	4।45	6।20	7।55	9।30	11।05	12।40	14।15	15।50	17।25	19।00
39	0।48 ●	1।37 ■	3।15	4।52 ■	6।30	8।07 ■	9।45	11।22 ■	13।00	14।37 ■	16।15	17।52 ■	19।30
40	0।50	1।40	3।20	5।00	6।40	8।20	10।00	11।40	13।20	15।00	16।40	18।20	20।00
41	0।51 ◆	1।42 ■	3।25	5।07 ■	6।50	8।32 ■	10।15	11।57 ■	13।40	15।22 ■	17।05	18।47 ■	20।30
42	0।52 ■	1।45	3।30	5।15	7।00	8।45	10।30	12।15	14।00	15।45	17।30	19।15	21।00
43	0।53 ●	1।47 ■	3।35	5।22 ■	7।10	8।57 ■	10।45	12।32 ■	14।20	16।07 ■	17।55	19।42 ■	21।30
44	0।55	1।50	3।40	5।30	7।20	9।10	11।00	12।50	14।40	16।30	18।20	20।10	22।00
45	0।56 ◆	1।52 ■	3।45	5।37 ■	7।30	9।22 ■	11।15	13।07 ■	15।00	16।52 ■	18।45	20।37 ■	22।30
46	0।57 ■	1।55	3।50	5।45	7।40	9।35	11।30	13।25	15।20	17।15	19।10	21।05	23।00
47	0।58 ●	1।57 ■	3।55	5।52 ■	7।50	9।47 ■	11।45	13।42 ■	15।40	17।37 ■	19।35	21।32 ■	23।30
48	1।00	2।00	4।00	6।00	8।00	10।00	12।00	14।00	16।00	18।00	20।00	22।00	24।00
49	1।01 ◆	2।02 ■	4।05	6।07 ■	8।10	10।12 ■	12।15	14।17 ■	16।20	18।22 ■	20।25	22।27 ■	24।30
50	1।02 ■	2।05	4।10	6।15	8।20	10।25	12।30	14।35	16।40	18।45	20।50	22।55	25।00
51	1।03 ●	2।07 ■	4।15	6।22 ■	8।30	10।37 ■	12।45	14।52 ■	17।00	19।07 ■	21।15	23।22 ■	25।30
52	1।05	2।10	4।20	6।30	8।40	10।50	13।00	15।10	17।20	19।30	21।40	23।50	26।00
53	1।06 ◆	2।12 ■	4।25	6।37 ■	8।50	11।02 ■	13।15	15।27 ■	17।40	19।52 ■	22।05	24।17 ■	26।30
54	1।07 ■	2।15	4।30	6।45	9।00	11।15	13।30	15।45	18।00	20।15	22।30	24।45	27।00
55	1।08 ●	2।17 ■	4।35	6।52 ■	9।10	11।27 ■	13।45	16।02 ■	18।20	20।37 ■	22।55	25।12 ■	27।30
56	1।10	2।20	4।40	7।00	9।20	11।40	14।00	16।20	18।40	21।00	23।20	25।40	28।00
57	1।11 ◆	2।22 ■	4।45	7।07 ■	9।30	11।52 ■	14।15	16।37 ■	19।00	21।22 ■	23।45	26।07 ■	28।30
58	1।12 ■	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	12।05	14।30	16।55	19।20	21।45	24।10	26।35	29।00
59	1।13 ●	2।27 ■	[illegible]	7।22 ■	9।50	12।17 ■	14।45	17।12 ■	19।40	22।07 ■	24।35	27।02 ■	29।30

दैनिक ग्रह स्पष्ट सं. 2077 वि.

इस पंचांग में नीचे यहां सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला, सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः 5।30 बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित हैं। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टै. टा. का भारतीय स्टै. टा. से अन्तर +3 घं. 30 मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टै. टा. के अनुसार प्रातः 9 घं. 00 मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अंतर के घटी-पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे, वह गति होगी।

मार्च सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।02''

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. मार्च
25	11 10 40 03	11 17 13 53	09 01 49 14	10 12 56 09	08 29 19 49	00 26 39 56	09 06 03 44	02 09 39 36	00 10 40 59	10 24 53 03	09 00 36 40	25
26	11 11 39 30	11 29 06 07	09 02 30 56	10 13 59 42	08 29 28 10	00 27 38 55	09 06 07 59	02 09 36 25	00 10 44 05	10 24 55 15	09 00 37 34	26
27	11 12 38 55	00 11 00 00	09 03 12 38	10 15 05 42	08 29 36 23	00 28 37 27	09 06 12 09	02 09 33 14	00 10 47 12	10 24 57 27	09 00 38 26	27
28	11 13 38 19	00 22 57 27	09 03 54 19	10 16 14 03	08 29 44 27	00 29 35 30	09 06 16 14	02 09 30 04	00 10 50 21	10 24 59 38	09 00 39 17	28
29	11 14 37 39	01 05 01 02	09 04 36 01	10 17 24 36	08 29 52 24	01 00 33 03	09 06 20 14	02 09 26 53	00 10 53 31	10 25 01 49	09 00 40 06	29
30	11 15 36 58	01 17 13 57	09 05 17 43	10 18 37 18	09 00 00 12	01 01 30 07	09 06 24 09	02 09 23 42	00 10 56 42	10 25 03 59	09 00 40 53	30
31	11 16 36 14	01 29 40 05	09 05 59 25	10 19 52 02	09 00 07 52	01 02 26 38	09 06 28 00	02 09 20 31	00 10 59 54	10 25 06 08	09 00 41 39	31

अप्रैल सन् 2021 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।56''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
1	11 17 20 02	07 02 09 54	01 22 17 38	11 00 20 13	09 29 04 51	11 18 47 00	09 17 12 43	01 19 56 48	00 14 53 14	10 27 16 19	09 02 29 02	1
2	11 18 19 13	07 16 44 53	01 22 53 32	11 02 03 33	09 29 16 33	11 20 01 29	09 17 17 21	01 19 53 37	00 14 56 23	10 27 18 29	09 02 29 48	2
3	11 19 18 23	08 01 01 01	01 23 29 28	11 03 48 17	09 29 28 10	11 21 15 58	09 17 21 55	01 19 50 27	00 14 59 34	10 27 20 38	09 02 30 32	3
4	11 20 17 31	08 14 56 57	01 24 05 25	11 05 34 27	09 29 39 42	11 22 30 25	09 17 26 24	01 19 47 16	00 15 02 46	10 27 22 46	09 02 31 14	4
5	11 21 16 37	08 28 33 12	01 24 41 24	11 07 22 01	09 29 51 08	11 23 44 51	09 17 30 49	01 19 44 05	00 15 05 59	10 27 24 54	09 02 31 54	5
6	11 22 15 41	09 11 51 15	01 25 17 25	11 09 11 02	10 00 02 29	11 24 59 17	09 17 35 09	01 19 40 54	00 15 09 13	10 27 27 00	09 02 32 33	6
7	11 23 14 44	09 24 53 04	01 25 53 27	11 11 01 29	10 00 13 45	11 26 13 41	09 17 39 25	01 19 37 43	00 15 12 28	10 27 29 07	09 02 33 10	7
8	11 24 13 44	10 07 40 38	01 26 29 30	11 12 53 24	10 00 24 55	11 27 28 04	09 17 43 36	01 19 34 33	00 15 15 45	10 27 31 12	09 02 33 45	8
9	11 25 12 43	10 20 15 40	01 27 05 35	11 14 46 46	10 00 36 00	11 28 42 27	09 17 47 42	01 19 31 22	00 15 19 02	10 27 33 16	09 02 34 19	9
10	11 26 11 41	11 02 39 38	01 27 41 42	11 16 41 35	10 00 46 58	11 29 56 48	09 17 51 44	01 19 28 11	00 15 22 20	10 27 35 20	09 02 34 51	10
11	11 27 10 36	11 14 53 42	01 28 17 50	11 18 37 50	10 00 57 51	00 01 11 09	09 17 55 41	01 19 25 01	00 15 25 39	10 27 37 23	09 02 35 21	11
12	11 28 09 29	11 26 58 56	01 28 53 59	11 20 35 32	10 01 08 38	00 02 25 28	09 17 59 33	01 19 21 50	00 15 28 59	10 27 39 25	09 02 35 50	12

अप्रैल सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।05''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
1	11 17 35 28	02 12 23 45	09 06 41 07	10 21 08 44	09 00 15 24	01 03 22 37	09 06 31 46	02 09 17 20	00 11 03 07	10 25 08 17	09 00 42 23	1
2	11 18 34 40	02 25 29 21	09 07 22 49	10 22 27 20	09 00 22 47	01 04 18 02	09 06 35 27	02 09 14 10	00 11 06 22	10 25 10 25	09 00 43 06	2
3	11 19 33 49	03 09 00 49	09 08 04 31	10 23 47 46	09 00 30 01	01 05 12 52	09 06 39 02	02 09 10 59	00 11 09 37	10 25 12 32	09 00 43 46	3
4	11 20 32 56	03 23 00 42	09 08 46 13	10 25 10 00	09 00 37 07	01 06 07 05	09 06 42 33	02 09 07 48	00 11 12 53	10 25 14 39	09 00 44 25	4
5	11 21 32 01	04 07 29 06	09 09 27 55	10 26 33 58	09 00 44 04	01 07 00 41	09 06 45 59	02 09 04 37	00 11 16 10	10 25 16 44	09 00 45 02	5
6	11 22 31 03	04 22 22 44	09 10 09 37	10 27 59 39	09 00 50 52	01 07 53 37	09 06 49 20	02 09 01 27	00 11 19 28	10 25 18 49	09 00 45 38	6
7	11 23 30 03	05 07 34 40	09 10 51 19	10 29 27 00	09 00 57 31	01 08 45 53	09 06 52 35	02 08 58 16	00 11 22 47	10 25 20 53	09 00 46 12	7
8	11 24 29 02	05 22 54 49	09 11 33 01	11 00 56 00	09 01 04 01	01 09 37 27	09 06 55 46	02 08 55 05	00 11 26 06	10 25 22 56	09 00 46 44	8
9	11 25 27 58	06 08 11 39	09 12 14 43	11 02 26 38	09 01 10 22	01 10 28 18	09 06 58 51	02 08 51 55	00 11 29 27	10 25 24 59	09 00 47 14	9
10	11 26 26 52	06 23 14 09	09 12 56 25	11 03 58 52	09 01 16 34	01 11 18 23	09 07 01 51	02 08 48 44	00 11 32 48	10 25 27 00	09 00 47 42	10
11	11 27 25 44	07 07 53 43	09 13 38 07	11 05 32 42	09 01 22 37	01 12 07 42	09 07 04 46	02 08 45 33	00 11 36 10	10 25 29 00	09 00 48 09	11
12	11 28 24 35	07 22 05 17	09 14 19 49	11 07 08 08	09 01 28 30	01 12 56 14	09 07 07 35	02 08 42 22	00 11 39 32	10 25 31 00	09 00 48 34	12
13	11 29 23 23	08 05 47 22	09 15 01 31	11 08 45 08	09 01 34 14	01 13 43 55	09 07 10 19	02 08 39 11	00 11 42 55	10 25 32 58	09 00 48 58	13
14	00 00 22 10	08 19 01 22	09 15 43 13	11 10 23 44	09 01 39 48	01 14 30 45	09 07 12 58	02 08 36 01	00 11 46 19	10 25 34 56	09 00 49 19	14
15	00 01 20 56	09 01 50 43	09 16 24 54	11 12 03 54	09 01 45 13	01 15 16 41	09 07 15 31	02 08 32 50	00 11 49 43	10 25 36 52	09 00 49 39	15
16	00 02 19 39	09 14 19 46	09 17 06 35	11 13 45 40	09 01 50 27	01 16 01 42	09 07 17 59	02 08 29 39	00 11 53 07	10 25 38 48	09 00 49 57	16
17	00 03 18 21	09 26 33 15	09 17 48 15	11 15 29 02	09 01 55 32	01 16 45 46	09 07 20 21	02 08 26 28	00 11 56 32	10 25 40 42	09 00 50 13	17
18	00 04 17 01	10 08 35 40	09 18 29 55	11 17 13 59	09 02 00 27	01 17 28 51	09 07 22 38	02 08 23 18	00 11 59 58	10 25 42 35	09 00 50 28	18
19	00 05 15 40	10 20 31 08	09 19 11 34	11 19 00 33	09 02 05 12	01 18 10 54	09 07 24 49	02 08 20 07	00 12 03 24	10 25 44 27	09 00 50 41	19
20	00 06 14 17	11 02 23 04	09 19 53 12	11 20 48 43	09 02 09 46	01 18 51 52	09 07 26 54	02 08 16 56	00 12 06 50	10 25 46 18	09 00 50 52	20
21	00 07 12 52	11 14 14 12	09 20 34 49	11 22 38 31	09 02 14 11	01 19 31 44	09 07 28 54	02 08 13 46	00 12 10 16	10 25 48 08	09 00 51 01	21
22	00 08 11 25	11 26 06 40	09 21 16 25	11 24 29 57	09 02 18 25	01 20 10 27	09 07 30 48	02 08 10 35	00 12 13 43	10 25 49 56	09 00 51 08	22
23	00 09 09 56	00 08 02 06	09 21 58 00	11 26 23 01	09 02 22 28	01 20 47 58	09 07 32 37	02 08 07 24	00 12 17 10	10 25 51 43	09 00 51 14	23
24	00 10 08 26	00 20 01 54	09 22 39 34	11 28 17 42	09 02 26 21	01 21 24 14	09 07 34 19	02 08 04 14	00 12 20 37	10 25 53 29	09 00 51 18	24
25	00 11 06 53	01 02 07 29	09 23 21 07	00 00 14 01	09 02 30 03	01 21 59 13	09 07 35 56	02 08 01 03	00 12 24 04	10 25 55 14	09 00 51 20	25
26	00 12 05 19	01 14 20 28	09 24 02 38	00 02 11 56	09 02 33 35	01 22 32 50	09 07 37 27	02 07 57 52	00 12 27 31	10 25 56 57	09 00 51 20	26
27	00 13 03 42	01 26 42 54	09 24 44 09	00 04 11 26	09 02 36 56	01 23 05 03	09 07 38 53	02 07 54 41	00 12 30 58	10 25 58 39	09 00 51 19	27
28	00 14 02 03	02 09 17 15	09 25 25 37	00 06 12 29	09 02 40 06	01 23 35 49	09 07 40 12	02 07 51 30	00 12 34 25	10 26 00 20	09 00 51 16	28
29	00 15 00 23	02 22 06 28	09 26 07 04	00 08 15 02	09 02 43 06	01 24 05 04	09 07 41 26	02 07 48 19	00 12 37 52	10 26 01 59	09 00 51 11	29
30	00 15 58 40	03 05 13 42	09 26 48 30	00 1[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	00 12 41 19	10 26 03 37	09 00 51 0[illegible]	30

मई सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°108'108''

ता. मई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि.	ता. मई
1	00 16 56 55	03 18 41 55	09 27 29 54	00 12 24 18	09 02 48 32	01 24 58 47	09 07 43 36	02 07 41 58	00 12 44 46	10 26 05 13	09 00 50 56	1
2	00 17 55 08	04 02 33 16	09 28 11 16	00 14 30 50	09 02 50 59	01 25 23 08	09 07 44 32	02 07 38 47	00 12 48 12	10 26 06 48	09 00 50 46	2
3	00 18 53 19	04 16 48 18	09 28 52 37	00 16 38 28	09 02 53 15	01 25 45 43	09 07 45 22	02 07 35 36	00 12 51 39	10 26 08 21	09 00 50 34	3
4	00 19 51 29	05 01 25 10	09 29 33 56	00 18 47 02	09 02 55 19	01 26 06 29	09 07 46 07	02 07 32 26	00 12 55 05	10 26 09 53	09 00 50 20	4
5	00 20 49 36	05 16 19 13	10 00 15 14	00 20 56 21	09 02 57 13	01 26 25 23	09 07 46 45	02 07 29 15	00 12 58 30	10 26 11 23	09 00 50 05	5
6	00 21 47 41	06 01 23 03	10 00 56 30	00 23 06 13	09 02 58 56	01 26 42 20	09 07 47 18	02 07 26 04	00 13 01 56	10 26 12 52	09 00 49 48	6
7	00 22 45 45	06 16 27 26	10 01 37 44	00 25 16 23	09 03 00 27	01 26 57 17	09 07 47 45	02 07 22 53	00 13 05 21	10 26 14 20	09 00 49 30	7
8	00 23 43 47	07 01 22 42	10 02 18 57	00 27 26 36	09 03 01 47	01 27 10 11	09 07 48 06	02 07 19 43	00 13 08 45	10 26 15 45	09 00 49 09	8
9	00 24 41 47	07 16 00 25	10 03 00 08	00 29 36 35	09 03 02 56	01 27 20 57	09 07 48 22	02 07 16 32	00 13 12 09	10 26 17 10	09 00 48 48	9
10	00 25 39 46	08 00 14 32	10 03 41 17	01 01 46 03	09 03 03 54	01 27 29 34	09 07 48 31	02 07 13 21	00 13 15 33	10 26 18 32	09 00 48 24	10
11	00 26 37 43	08 14 01 57	10 04 22 24	01 03 54 44	09 03 04 41	01 27 35 57	व09 07 48 35	02 07 10 10	00 13 18 56	10 26 19 54	09 00 47 59	11
12	00 27 35 39	08 27 22 22	10 05 03 29	01 06 02 18	09 03 05 16	01 27 40 05	09 07 48 32	02 07 06 59	00 13 22 18	10 26 21 13	09 00 47 32	12
13	00 28 33 34	09 10 17 43	10 05 44 31	01 08 08 31	09 03 05 40	व01 27 41 54	09 07 48 24	02 07 03 48	00 13 25 40	10 26 22 31	09 00 47 04	13
14	00 29 31 27	09 22 51 27	10 06 25 31	01 10 13 05	व09 03 05 52	01 27 41 23	09 07 48 10	02 07 00 38	00 13 29 01	10 26 23 47	09 00 46 34	14
15	01 00 29 19	10 05 07 50	10 07 06 28	01 12 15 47	09 03 05 53	01 27 38 29	09 07 47 51	02 06 57 27	00 13 32 22	10 26 25 02	09 00 46 02	15
16	01 01 27 10	10 17 11 32	10 07 47 23	01 14 16 22	09 03 05 43	01 27 33 12	09 07 47 25	02 06 54 16	00 13 35 42	10 26 26 14	09 00 45 29	16
17	01 02 25 00	10 29 07 08	10 08 28 15	01 16 14 39	09 03 05 21	01 27 25 29	09 07 46 54	02 06 51 05	00 13 39 01	10 26 27 26	09 00 44 54	17
18	01 03 22 49	11 10 58 57	10 09 09 04	01 18 10 27	09 03 04 48	01 27 15 22	09 07 46 16	02 06 47 55	00 13 42 19	10 26 28 35	09 00 44 18	18
19	01 04 20 36	11 22 50 44	10 09 49 49	01 20 03 38	09 03 04 03	01 27 02 51	09 07 45 33	02 06 44 44	00 13 45 37	10 26 29 43	09 00 43 40	19
20	01 05 18 23	00 04 45 35	10 10 30 31	01 21 54 03	09 03 03 07	01 26 47 55	09 07 44 45	02 06 41 33	00 13 48 53	10 26 30 48	09 00 43 01	20
21	01 06 16 08	00 16 46 02	10 11 11 10	01 23 41 37	09 03 02 00	01 26 30 38	09 07 43 50	02 06 38 23	00 13 52 09	10 26 31 53	09 00 42 20	21
22	01 07 13 52	00 28 54 04	10 11 51 45	01 25 26 14	09 03 00 41	01 26 11 02	09 07 42 50	02 06 35 12	00 13 55 23	10 26 32 55	09 00 41 38	22
23	01 08 11 34	01 11 11 13	10 12 32 16	01 27 07 50	09 02 59 11	01 25 49 11	09 07 41 44	02 06 32 01	00 13 58 37	10 26 33 55	09 00 40 54	23
24	01 09 09 15	01 23 38 41	10 13 12 43	01 28 46 22	09 02 57 29	01 25 25 09	09 07 40 32	02 06 28 50	00 14 01 49	10 26 34 54	09 00 40 09	24
25	01 10 06 55	02 06 17 31	10 13 53 06	02 00 21 47	09 02 55 37	01 24 59 02	09 07 39 15	02 06 25 39	00 14 05 01	10 26 35 51	09 00 39 22	25
26	01 11 04 34	02 19 08 46	10 14 33 24	02 01 54 01	09 02 53 33	01 24 30 57	09 07 37 52	02 06 22 28	00 14 08 11	10 26 36 46	09 00 38 34	26
27	01 12 02 11	03 02 13 33	10 15 13 39	02 03 23 04	09 02 51 18	01 24 01 02	09 07 36 24	02 06 19 17	00 14 11 20	10 26 37 39	09 00 37 44	27
28	01 12 59 46	03 15 32 58	10 15 53 49	02 04 48 51	09 02 48 52	01 23 29 26	09 07 34 50	02 06 16 07	00 14 14 28	10 26 38 31	09 00 36 53	28
29	01 13 57 21	03 29 08 04	10 16 33 54	02 06 11 22	09 02 46 15	01 22 56 20	09 07 33 11	02 06 12 56	00 14 17 35	10 26 39 20	09 00 36 01	29
30	01 14 54 53	04 12 59 22	10 17 13 55	02 07 30 32	09 02 43 28	01 22 21 54	09 07 31 26	02 06 09 45	00 14 20 40	10 26 40 08	09 00 35 07	30
31	01 15 52 25	04 27 06 35	10 17 53 51	02 08 46 21	09 02 40 29	01 21 46 20	09 07 29 36	02 06 06 34	00 14 23 44	10 26 40 54	09 00 34 12	31

जून सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।13''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
1	01 16 49 55	05 11 28 07	10 18 33 42	02 09 58 44	09 02 37 20	01 21 09 52	09 07 27 41	02 06 03 24	00 14 26 47	10 26 41 37	09 00 33 16	1
2	01 17 47 23	05 26 00 53	10 19 13 28	02 11 07 39	09 02 34 00	01 20 32 44	09 07 25 41	02 06 00 13	00 14 29 48	10 26 42 19	09 00 32 19	2
3	01 18 44 51	06 10 40 10	10 19 53 10	02 12 13 02	09 02 30 30	01 19 55 10	09 07 23 35	02 05 57 02	00 14 32 48	10 26 42 59	09 00 31 20	3
4	01 19 42 17	06 25 19 58	10 20 32 46	02 13 14 48	09 02 26 50	01 19 17 25	09 07 21 25	02 05 53 51	00 14 35 47	10 26 43 37	09 00 30 20	4
5	01 20 39 43	07 09 53 41	10 21 12 18	02 14 12 55	09 02 23 00	01 18 39 43	09 07 19 09	02 05 50 40	00 14 38 44	10 26 44 14	09 00 29 19	5
6	01 21 37 07	07 24 14 57	10 21 51 44	02 15 07 17	09 02 18 59	01 18 02 20	09 07 16 48	02 05 47 30	00 14 41 39	10 26 44 48	09 00 28 16	6
7	01 22 34 30	08 08 18 33	10 22 31 04	02 15 57 49	09 02 14 49	01 17 25 31	09 07 14 23	02 05 44 19	00 14 44 33	10 26 45 20	09 00 27 13	7
8	01 23 31 53	08 22 01 00	10 23 10 19	02 16 44 27	09 02 10 29	01 16 49 28	09 07 11 52	02 05 41 08	00 14 47 26	10 26 45 51	09 00 26 08	8
9	01 24 29 15	09 05 20 44	10 23 49 28	02 17 27 05	09 02 05 59	01 16 14 27	09 07 09 17	02 05 37 57	00 14 50 16	10 26 46 19	09 00 25 03	9
10	01 25 26 36	09 18 18 06	10 24 28 31	02 18 05 38	09 02 01 19	01 15 40 40	09 07 06 37	02 05 34 46	00 14 53 05	10 26 46 46	09 00 23 56	10
11	01 26 23 56	10 00 55 03	10 25 07 27	02 18 40 00	09 01 56 30	01 15 08 18	09 07 03 53	02 05 31 35	00 14 55 53	10 26 47 11	09 00 22 48	11
12	01 27 21 17	10 13 14 41	10 25 46 17	02 19 10 06	09 01 51 32	01 14 37 33	09 07 01 04	02 05 28 24	00 14 58 39	10 26 47 33	09 00 21 39	12
13	01 28 18 36	10 25 20 57	10 26 25 00	02 19 35 52	09 01 46 25	01 14 08 34	09 06 58 10	02 05 25 14	00 15 01 23	10 26 47 54	09 00 20 29	13
14	01 29 15 56	11 07 18 19	10 27 03 36	02 19 57 13	09 01 41 09	01 13 41 30	09 06 55 12	02 05 22 03	00 15 04 05	10 26 48 13	09 00 19 18	14
15	02 00 13 15	11 19 11 20	10 27 42 05	02 20 14 05	09 01 35 44	01 13 16 27	09 06 52 10	02 05 18 52	00 15 06 45	10 26 48 30	09 00 18 06	15
16	02 01 10 33	00 01 04 28	10 28 20 26	02 20 26 25	09 01 30 11	01 12 53 33	09 06 49 03	02 05 15 42	00 15 09 24	10 26 48 45	09 00 16 54	16
17	02 02 07 51	00 13 01 50	10 28 58 39	02 20 34 11	09 01 24 29	01 12 32 53	09 06 45 52	02 05 12 31	00 15 12 01	10 26 48 58	09 00 15 40	17
18	02 03 05 09	00 25 07 03	10 29 36 44	व02 20 37 25	09 01 18 39	01 12 14 29	09 06 42 37	02 05 09 20	00 15 14 35	10 26 49 09	09 00 14 25	18
19	02 04 02 27	01 07 23 06	11 00 14 41	02 20 36 06	09 01 12 41	01 11 58 25	09 06 39 18	02 05 06 09	00 15 17 08	10 26 49 18	09 00 13 10	19
20	02 04 59 44	01 19 52 16	11 00 52 28	02 20 30 20	09 01 06 36	01 11 44 44	09 06 35 55	02 05 02 58	00 15 19 39	10 26 49 25	09 00 11 53	20
21	02 05 57 01	02 02 36 01	11 01 30 07	02 20 20 13	09 01 00 23	01 11 33 26	09 06 32 28	02 04 59 47	00 15 22 08	10 26 49 30	09 00 10 36	21
22	02 06 54 17	02 15 34 59	11 02 07 37	02 20 05 54	09 00 54 03	01 11 24 31	09 06 28 58	02 04 56 37	00 15 24 35	10 26 49 33	09 00 09 18	22
23	02 07 51 33	02 28 49 03	11 02 44 57	02 19 47 36	09 00 47 36	01 11 17 59	09 06 25 24	02 04 53 26	00 15 26 59	10 26 49 34	09 00 08 00	23
24	02 08 48 48	03 12 17 23	11 03 22 07	02 19 25 33	09 00 41 03	01 11 13 49	09 06 21 46	02 04 50 15	00 15 29 22	10 26 49 33	09 00 06 40	24
25	02 09 46 03	03 25 58 40	11 03 59 07	02 19 00 07	09 00 34 23	मा01 11 12 00	09 06 18 05	02 04 47 04	00 15 31 42	व10 26 49 30	09 00 05 20	25
26	02 10 43 17	04 09 51 15	11 04 35 57	02 18 31 38	09 00 27 37	01 11 12 30	09 06 14 21	02 04 43 53	00 15 34 00	10 26 49 25	09 00 04 00	26
27	02 11 40 31	04 23 53 11	11 05 12 37	02 18 00 33	09 00 20 45	01 11 15 16	09 06 10 34	02 04 40 43	00 15 36 16	10 26 49 19	09 00 02 38	27
28	02 12 37 44	05 08 02 23	11 05 49 06	02 17 27 22	09 00 13 48	01 11 20 16	09 06 06 44	02 04 37 32	00 15 38 30	10 26 49 10	09 00 01 17	28
29	02 13 34 56	05 22 16 33	11 06 25 24	02 16 52 36	09 00 06 46	01 11 27 27	09 06 02 50	02 04 34 21	00 15 40 41	10 26 48 59	08 29 59 54	29
30	02 14 32 09	06 06 33 10	11 07 01 31	02 16 16 51	08 29 59 39	[illegible]	[illegible]	[illegible]	00 15 42 51	10 26 48 47	08 29 58 31	30

जुलाई सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैंण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°08'18''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुला.
1	02 15 29 20	06 20 49 26	11 07 37 27	02 15 40 41	08 29 52 27	01 11 48 11	09 05 54 55	02 04 27 59	00 15 44 58	10 26 48 32	08 29 57 08	1
2	02 16 26 32	07 05 02 16	11 08 13 12	02 15 04 45	08 29 45 11	01 12 01 37	09 05 50 54	02 04 24 49	00 15 47 02	10 26 48 16	08 29 55 44	2
3	02 17 23 43	07 19 08 23	11 08 48 45	02 14 29 39	08 29 37 51	01 12 17 02	09 05 46 51	02 04 21 38	00 15 49 04	10 26 47 58	08 29 54 19	3
4	02 18 20 54	08 03 04 24	11 09 24 06	02 13 56 02	08 29 30 27	01 12 34 23	09 05 42 45	02 04 18 27	00 15 51 04	10 26 47 38	08 29 52 55	4
5	02 19 18 04	08 16 47 15	11 09 59 14	02 13 24 27	08 29 23 00	01 12 53 34	09 05 38 36	02 04 15 16	00 15 53 02	10 26 47 16	08 29 51 30	5
6	02 20 15 15	09 00 14 25	11 10 34 11	02 12 55 28	08 29 15 30	01 13 14 34	09 05 34 26	02 04 12 05	00 15 54 57	10 26 46 52	08 29 50 04	6
7	02 21 12 26	09 13 24 15	11 11 08 54	02 12 29 36	08 29 07 56	01 13 37 18	09 05 30 14	02 04 08 54	00 15 56 49	10 26 46 26	08 29 48 39	7
8	02 22 09 37	09 26 16 14	11 11 43 24	02 12 07 20	08 29 00 21	01 14 01 44	09 05 26 00	02 04 05 43	00 15 58 39	10 26 45 59	08 29 47 12	8
9	02 23 06 48	10 08 51 01	11 12 17 40	02 11 49 04	08 28 52 43	01 14 27 47	09 05 21 44	02 04 02 33	00 16 00 27	10 26 45 30	08 29 45 46	9
10	02 24 04 00	10 21 10 25	11 12 51 42	02 11 35 09	08 28 45 03	01 14 55 24	09 05 17 26	02 03 59 22	00 16 02 12	10 26 44 59	08 29 44 20	10
11	02 25 01 12	11 03 17 15	11 13 25 29	02 11 25 53	08 28 37 22	01 15 24 33	09 05 13 [illegible]	02 03 56 11	00 16 03 55	10 26 44 26	08 29 42 53	11
12	02 25 58 24	11 15 15 11	11 13 59 01	म 02 11 21 33	08 28 29 40	01 15 55 08	09 05 08 4[illegible]	[illegible] 53 01	00 16 05 35	10 26 43 51	08 29 41 26	12
13	02 26 55 37	11 27 08 31	11 14 32 18	02 11 22 18	08 28 21 56	01 16 27 08	09 05 04 26	02 03 49 50	00 16 07 12	10 26 43 14	08 29 39 59	13
14	02 27 52 50	00 09 01 51	11 15 05 19	02 11 28 20	08 28 14 12	01 17 00 28	09 05 00 03	02 03 46 39	00 16 08 47	10 26 42 36	08 29 38 32	14
15	02 28 50 04	00 20 59 56	11 15 38 03	02 11 39 44	08 28 06 28	01 17 35 07	09 04 55 39	02 03 43 28	00 16 10 19	10 26 41 56	08 29 37 05	15
16	02 29 47 19	01 03 07 23	11 16 10 30	02 11 56 35	08 27 58 44	01 18 11 00	09 04 51 15	02 03 40 17	00 16 11 49	10 26 41 14	08 29 35 38	16
17	03 00 44 34	01 15 28 19	11 16 42 40	02 12 18 55	08 27 51 00	01 18 48 06	09 04 46 49	02 03 37 07	00 16 13 16	10 26 40 30	08 29 34 11	17
18	03 01 41 50	01 28 06 12	11 17 14 31	02 12 46 46	08 27 43 17	01 19 26 20	09 04 42 24	02 03 33 56	00 16 14 40	10 26 39 45	08 29 32 43	18
19	03 02 39 06	02 11 03 24	11 17 46 04	02 13 20 06	08 27 35 35	01 20 05 41	09 04 37 58	02 03 30 45	00 16 16 01	10 26 38 58	08 29 31 16	19
20	03 03 36 23	02 24 20 59	11 18 17 18	02 13 58 55	08 27 27 54	01 20 46 06	09 04 33 31	02 03 27 34	00 16 17 20	10 26 38 09	08 29 29 49	20
21	03 04 33 41	03 07 58 20	11 18 48 13	02 14 43 11	08 27 20 16	01 21 27 31	09 04 29 04	02 03 24 23	00 16 18 36	10 26 37 19	08 29 28 22	21
22	03 05 30 59	03 21 53 15	11 19 18 48	02 15 32 49	08 27 12 39	01 22 09 56	09 04 24 38	02 03 21 12	00 16 19 49	10 26 36 27	08 29 26 56	22
23	03 06 28 17	04 06 02 00	11 19 49 02	02 16 27 48	08 27 05 05	01 22 53 17	09 04 20 11	02 03 18 02	00 16 20 59	10 26 35 33	08 29 25 29	23
24	03 07 25 36	04 20 19 54	11 20 18 55	02 17 28 02	08 26 57 34	01 23 37 33	09 04 15 45	02 03 14 51	00 16 22 06	10 26 34 38	08 29 24 03	24
25	03 08 22 55	05 04 41 57	11 20 48 26	02 18 33 26	08 26 50 06	01 24 22 41	09 04 11 19	02 03 11 40	00 16 23 11	10 26 33 41	08 29 22 37	25
26	03 09 20 14	05 19 03 29	11 21 17 36	02 19 43 56	08 26 42 41	01 25 08 40	09 04 06 54	02 03 08 29	00 16 24 13	10 26 32 42	08 29 21 11	26
27	03 10 17 34	06 03 20 42	11 21 46 24	02 20 59 24	08 26 35 21	01 25 55 27	09 04 02 30	02 03 05 19	00 16 25 11	10 26 31 42	08 29 19 46	27
28	03 11 14 55	06 17 30 51	11 22 14 49	02 22 19 43	08 26 28 04	01 26 43 02	09 03 58 06	02 03 02 08	00 16 26 07	10 26 30 41	08 29 18 21	28
29	03 12 12 16	07 01 32 09	11 22 42 51	02 23 44 45	08 26 20 52	01 27 31 22	09 03 53 43	02 02 58 57	00 16 27 00	10 26 29 38	08 29 16 56	29
30	03 13 09 37	07 15 23 38	11 23 10 29	02 25 14 19	08 26 13 45	01 28 20 26	09 03 49 22	02 02 55 46	00 16 27 51	10 26 28 33	08 29 15 32	30
31	03 14 06 59	07 29 04 41	11 23 37 44	02 26 48 15	08 26 06 43	01 29 10 12	09 03 45 02	02 02 52 35	00 16 28 38	10 26 27 27	08 29 14 08	31

अगस्त सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।23''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
1	03 15 04 21	08 12 34 47	11 24 04 33	02 28 26 19	08 25 59 46	02 00 00 40	09 03 40 43	02 02 49 25	00 16 29 23	10 26 26 20	08 29 12 45	1
2	03 16 01 44	08 25 53 20	11 24 30 58	03 00 08 18	08 25 52 54	02 00 51 47	09 03 36 25	02 02 46 14	00 16 30 04	10 26 25 11	08 29 11 22	2
3	03 16 59 08	09 08 59 38	11 24 56 56	03 01 53 53	08 25 46 09	02 01 43 33	09 03 32 10	02 02 43 03	00 16 30 43	10 26 24 01	08 29 10 00	3
4	03 17 56 33	09 21 53 01	11 25 22 29	03 03 42 48	08 25 39 29	02 02 35 56	09 03 27 56	02 02 39 52	00 16 31 19	10 26 22 50	08 29 08 38	4
5	03 18 53 58	10 04 33 05	11 25 47 34	03 05 34 43	08 25 32 56	02 03 28 55	09 03 23 43	02 02 36 41	00 16 31 51	10 26 21 37	08 29 07 17	5
6	03 19 51 25	10 16 59 59	11 26 12 11	03 07 29 17	08 25 26 29	02 04 22 29	09 03 19 33	02 02 33 31	00 16 32 21	10 26 20 23	08 29 05 57	6
7	03 20 48 53	10 29 14 35	11 26 36 20	03 09 26 08	08 25 20 10	02 05 16 37	09 03 15 25	02 02 30 20	00 16 32 48	10 26 19 08	08 29 04 37	7
8	03 21 46 22	11 11 18 41	11 26 59 59	03 11 24 55	08 25 13 57	02 06 11 18	09 03 11 19	02 02 27 09	00 16 33 12	10 26 17 52	08 29 03 18	8
9	03 22 43 52	11 23 14 55	11 27 23 08	03 13 25 15	08 25 07 52	02 07 06 30	09 03 07 16	02 02 23 59	00 16 33 33	10 26 16 34	08 29 02 00	9
10	03 23 41 24	00 05 06 50	11 27 45 46	03 15 26 47	08 25 01 54	02 08 02 13	09 03 03 15	02 02 20 48	00 16 33 51	10 26 15 15	08 29 00 42	10
11	03 24 38 57	00 16 58 39	11 28 07 52	03 17 29 09	08 24 56 04	02 08 58 25	09 02 59 16	02 02 17 37	00 16 34 06	10 26 13 55	08 28 59 25	11
12	03 25 36 31	00 28 55 12	11 28 29 25	03 19 32 03	08 24 50 22	02 09 55 07	09 02 55 20	02 02 14 26	00 16 34 18	10 26 12 34	08 28 58 09	12
13	03 26 34 07	01 11 01 32	11 28 50 25	03 21 35 09	08 24 44 49	02 10 52 16	09 02 51 27	02 02 11 16	00 16 34 28	10 26 11 11	08 28 56 54	13
14	03 27 31 44	01 23 22 42	11 29 10 51	03 23 38 13	08 24 39 24	02 11 49 51	09 02 47 37	02 02 08 05	00 16 34 34	10 26 09 48	08 28 55 40	14
15	03 28 29 23	02 06 03 20	11 29 30 41	03 25 40 59	08 24 34 07	02 12 47 53	09 02 43 50	02 02 04 54	00 16 34 37	10 26 08 24	08 28 54 26	15
16	03 29 27 03	02 19 07 06	11 29 49 56	03 27 43 14	08 24 29 00	02 13 46 20	09 02 40 06	02 02 01 43	00 16 34 37	10 26 06 58	08 28 53 14	16
17	04 00 24 45	03 02 36 11	00 00 08 33	03 29 44 49	08 24 24 01	02 14 45 11	09 02 36 26	02 01 58 32	00 16 34 34	10 26 05 32	08 28 52 02	17
18	04 01 22 28	03 16 30 34	00 00 26 33	04 01 45 33	08 24 19 12	02 15 44 25	09 02 32 49	02 01 55 21	00 16 34 28	10 26 04 05	08 28 50 51	18
19	04 02 20 12	04 00 47 41	00 00 43 54	04 03 45 19	08 24 14 33	02 16 44 03	09 02 29 15	02 01 52 11	00 16 34 20	10 26 02 36	08 28 49 42	19
20	04 03 17 58	04 15 22 19	00 01 00 36	04 05 44 01	08 24 10 03	02 17 44 02	09 02 25 45	02 01 49 00	00 16 34 08	10 26 01 07	08 28 48 33	20
21	04 04 15 45	05 00 07 18	00 01 16 38	04 07 41 35	08 24 05 43	02 18 44 22	09 02 22 19	02 01 45 49	00 16 33 53	10 25 59 37	08 28 47 26	21
22	04 05 13 33	05 14 54 27	00 01 31 59	04 09 37 56	08 24 01 33	02 19 45 03	09 02 18 57	02 01 42 39	00 16 33 35	10 25 58 06	08 28 46 19	22
23	04 06 11 23	05 29 36 06	00 01 46 38	04 11 33 02	08 23 57 33	02 20 46 05	09 02 15 38	02 01 39 28	00 16 33 15	10 25 56 35	08 28 45 14	23
24	04 07 09 14	06 14 06 08	00 02 00 36	04 13 26 51	08 23 53 44	02 21 47 25	09 02 12 24	02 01 36 17	00 16 32 51	10 25 55 02	08 28 44 10	24
25	04 08 07 06	06 28 20 39	00 02 13 51	04 15 19 22	08 23 50 05	02 22 49 05	09 02 09 14	02 01 33 06	00 16 32 25	10 25 53 29	08 28 43 06	25
26	04 09 04 59	07 12 17 59	00 02 26 23	04 17 10 33	08 23 46 36	02 23 51 04	09 02 06 08	02 01 29 56	00 16 31 55	10 25 51 56	08 28 42 05	26
27	04 10 02 53	07 25 58 16	00 02 38 11	04 19 00 26	08 23 43 19	02 24 53 21	09 02 03 06	02 01 26 45	00 16 31 23	10 25 50 22	08 28 41 04	27
28	04 11 00 49	08 09 22 41	00 02 49 14	04 20 48 59	08 23 40 12	02 25 55 55	09 02 00 09	02 01 23 34	00 16 30 48	10 25 48 47	08 28 40 05	28
29	04 11 58 46	08 22 32 51	00 02 59 32	04 22 36 13	08 23 37 16	02 26 58 47	09 01 57 17	02 01 20 23	00 16 30 10	10 25 47 11	08 28 39 06	29
30	04 12 56 44	09 05 30 19	00 03 09 04	04 24 22 09	08 23 34 31	02 28 01 56	09 01 54 29	02 01 17 12	00 16 29 29	10 25 45 36	08 28 38 10	30
31	04 13 54 44	09 18 16 20	00 03 17 49	04 26 [illegible] 47	08 23 31 57	[illegible]	09 01 51 45	02 01 14 02	00 16 28 45	10 25 43 59	08 28 37 14	31

सितम्बर सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।27''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
1	04 14 52 45	10 00 51 45	00 03 25 47	04 27 50 09	08 23 29 34	03 00 09 04	09 01 49 06	02 01 10 51	00 16 27 58	10 25 42 22	08 28 36 20	1
2	04 15 50 48	10 13 17 06	00 03 32 58	04 29 32 16	08 23 27 22	03 01 13 02	09 01 46 33	02 01 07 40	00 16 27 09	10 25 40 45	08 28 35 27	2
3	04 16 48 52	10 25 32 53	00 03 39 19	05 01 13 08	08 23 25 21	03 02 17 16	09 01 44 03	02 01 04 30	00 16 26 17	10 25 39 08	08 28 34 35	3
4	04 17 46 58	11 07 39 45	00 03 44 51	05 02 52 46	08 23 23 32	03 03 21 45	09 01 41 39	02 01 01 19	00 16 25 22	10 25 37 30	08 28 33 45	4
5	04 18 45 06	11 19 38 50	00 03 49 34	05 04 31 12	08 23 21 54	03 04 26 30	09 01 39 20	02 00 58 08	00 16 24 25	10 25 35 51	08 28 32 56	5
6	04 19 43 15	00 01 31 59	00 03 53 25	05 06 08 26	08 23 20 27	03 05 31 28	09 01 37 06	02 00 54 58	00 16 23 24	10 25 34 13	08 28 32 09	6
7	04 20 41 27	00 13 21 49	00 03 56 25	05 07 44 28	08 23 19 12	03 06 36 42	09 01 34 57	02 00 51 47	00 16 22 21	10 25 32 34	08 28 31 23	7
8	04 21 39 41	00 25 11 48	00 03 58 33	05 09 19 21	08 23 18 08	03 07 42 09	09 01 32 53	02 00 48 36	00 16 21 16	10 25 30 55	08 28 30 38	8
9	04 22 37 56	01 07 06 12	व00 03 59 49	05 10 53 03	08 23 17 15	03 08 47 50	09 01 30 55	02 00 45 25	00 16 20 07	10 25 29 16	08 28 29 55	9
10	04 23 36 14	01 19 09 53	00 04 00 12	05 12 25 35	08 23 16 34	03 09 53 45	09 01 29 01	02 00 42 15	00 16 18 56	10 25 27 37	08 28 29 13	10
11	04 24 34 33	02 01 28 06	00 03 59 43	05 13 56 59	08 23 16 05	03 10 59 53	09 01 27 13	02 00 39 04	00 16 17 43	10 25 25 58	08 28 28 33	11
12	04 25 32 55	02 14 06 06	00 03 58 19	05 15 27 13	08 23 15 47	03 12 06 13	09 01 25 31	02 00 35 53	00 16 16 26	10 25 24 18	08 28 27 55	12
13	04 26 31 19	02 27 08 36	00 03 56 03	05 16 56 18	मा08 23 15 41	03 13 12 46	09 01 23 54	02 00 32 42	00 16 15 08	10 25 22 39	08 28 27 17	13
14	04 27 29 45	03 10 39 06	00 03 52 53	05 18 24 13	08 23 15 47	03 14 19 31	09 01 22 22	02 00 29 31	00 16 13 46	10 25 21 00	08 28 26 42	14
15	04 28 28 13	03 24 38 57	00 03 48 50	05 19 50 58	08 23 16 04	03 15 26 29	09 01 20 57	02 00 26 21	00 16 12 23	10 25 19 20	08 28 26 08	15
16	04 29 26 44	04 09 06 32	00 03 43 54	05 21 16 32	08 23 16 32	03 16 33 37	09 01 19 36	02 00 23 10	00 16 10 56	10 25 17 41	08 28 25 36	16
17	05 00 25 16	04 23 56 47	00 03 38 06	05 22 40 53	08 23 17 13	03 17 40 57	09 01 18 22	02 00 19 59	00 16 09 28	10 25 16 02	08 28 25 05	17
18	05 01 23 50	05 09 01 35	00 03 31 25	05 24 04 01	08 23 18 04	03 18 48 28	09 01 17 13	02 00 16 49	00 16 07 57	10 25 14 23	08 28 24 36	18
19	05 02 22 25	05 24 10 45	00 03 23 54	05 25 25 53	08 23 19 08	03 19 56 09	09 01 16 09	02 00 13 38	00 16 06 23	10 25 12 45	08 28 24 08	19
20	05 03 21 03	06 09 13 57	00 03 15 32	05 26 46 27	08 23 20 23	03 21 04 01	09 01 15 12	02 00 10 27	00 16 04 47	10 25 11 06	08 28 23 42	20
21	05 04 19 43	06 24 02 20	00 03 06 21	05 28 05 41	08 23 21 50	03 22 12 03	09 01 14 20	02 00 07 17	00 16 03 09	10 25 09 28	08 28 23 18	21
22	05 05 18 24	07 08 29 58	00 02 56 22	05 29 23 31	08 23 23 28	03 23 20 15	09 01 13 35	02 00 04 06	00 16 01 29	10 25 07 51	08 28 22 55	22
23	05 06 17 07	07 22 34 03	00 02 45 36	06 00 39 55	08 23 25 18	03 24 28 37	09 01 12 55	02 00 00 55	00 15 59 46	10 25 06 13	08 28 22 34	23
24	05 07 15 52	08 06 14 35	00 02 34 05	06 01 54 47	08 23 27 20	03 25 37 08	09 01 12 21	01 29 57 44	00 15 58 02	10 25 04 37	08 28 22 15	24
25	05 08 14 38	08 19 33 26	00 02 21 50	06 03 08 04	08 23 29 32	03 26 45 49	09 01 11 53	01 29 54 33	00 15 56 15	10 25 03 00	08 28 21 58	25
26	05 09 13 26	09 02 33 24	00 02 08 53	06 04 19 40	08 23 31 56	03 27 54 40	09 01 11 31	01 29 51 23	00 15 54 26	10 25 01 24	08 28 21 42	26
27	05 10 12 16	09 15 17 34	00 01 55 16	06 05 29 29	08 23 34 31	03 29 03 39	09 01 11 15	01 29 48 12	00 15 52 35	10 24 59 49	08 28 21 28	27
28	05 11 11 07	09 27 48 47	00 01 41 01	06 06 37 24	08 23 37 18	04 00 12 48	09 01 11 05	01 29 45 01	00 15 50 42	10 24 58 14	08 28 21 16	28
29	05 12 10 01	10 10 09 28	00 01 26 08	06 07 43 18	08 23 40 15	04 01 22 06	मा09 01 11 01	01 29 41 50	00 15 48 48	10 24 56 40	08 28 21 05	29
30	05 13 08 56	10 22 21 32	00 01 10 41	06 08 47 00	08 23 43 24	04 02 31 33	09 01 11 02	01 29 38 40	00 15 46 51	10 24 55 07	08 28 20 56	30

अक्टूबर सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।30''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
1	05 14 07 53	11 04 26 28	00 00 54 42	06 09 48 22	08 23 46 44	04 03 41 08	09 01 11 10	01 29 35 29	00 15 44 53	10 24 53 34	08 28 20 49	1
2	05 15 06 52	11 16 25 26	00 00 38 12	06 10 47 12	08 23 50 14	04 04 50 52	09 01 11 24	01 29 32 19	00 15 42 53	10 24 52 02	08 28 20 44	2
3	05 16 05 53	11 28 19 35	00 00 21 14	06 11 43 19	08 23 53 56	04 06 00 44	09 01 11 43	01 29 29 08	00 15 40 51	10 24 50 31	08 28 20 40	3
4	05 17 04 56	00 10 10 22	00 00 03 51	06 12 36 27	08 23 57 48	04 07 10 45	09 01 12 09	01 29 25 57	00 15 38 47	10 24 49 01	08 28 20 38	4
5	05 18 04 01	00 21 59 41	11 29 46 04	06 13 26 21	08 24 01 50	04 08 20 54	09 01 12 40	01 29 22 47	00 15 36 42	10 24 47 31	08 28 20 38	5
6	05 19 03 09	01 03 50 07	11 29 27 56	06 14 12 44	08 24 06 04	04 09 31 12	09 01 13 18	01 29 19 36	00 15 34 35	10 24 46 02	मा08 28 20 40	6
7	05 20 02 18	01 15 45 01	11 29 09 31	06 14 55 16	08 24 10 28	04 10 41 37	09 01 14 01	01 29 16 25	00 15 32 26	10 24 44 34	08 28 20 43	7
8	05 21 01 30	01 27 48 24	11 28 50 50	06 15 33 37	08 24 15 02	04 11 52 10	09 01 14 50	01 29 13 14	00 15 30 16	10 24 43 08	08 28 20 48	8
9	05 22 00 45	02 10 04 50	11 28 31 57	06 16 07 23	08 24 19 47	04 13 02 50	09 01 15 46	01 29 10 03	00 15 28 05	10 24 41 42	08 28 20 55	9
10	05 23 00 01	02 22 39 18	11 28 12 55	06 16 36 08	08 24 24 43	04 14 13 38	09 01 16 47	01 29 06 52	00 15 25 52	10 24 40 17	08 28 21 04	10
11	05 23 59 20	03 05 36 37	11 27 53 46	06 16 59 26	08 24 29 48	04 15 24 34	09 01 17 54	01 29 03 42	00 15 23 38	10 24 38 53	08 28 21 14	11
12	05 24 58 42	03 19 00 58	11 27 34 34	06 17 16 48	08 24 35 04	04 16 35 37	09 01 19 08	01 29 00 31	00 15 21 22	10 24 37 30	08 28 21 26	12
13	05 25 58 05	04 02 54 53	11 27 15 21	व06 17 27 43	08 24 40 30	04 17 46 46	09 01 20 27	01 28 57 20	00 15 19 05	10 24 36 08	08 28 21 40	13
14	05 26 57 31	04 17 18 19	11 26 56 12	06 17 31 43	08 24 46 06	04 18 58 03	09 01 21 52	01 28 54 10	00 15 16 47	10 24 34 47	08 28 21 56	14
15	05 27 56 59	05 02 07 55	11 26 37 09	06 17 28 16	08 24 51 52	04 20 09 26	09 01 23 23	01 28 50 59	00 15 14 28	10 24 33 28	08 28 22 14	15
16	05 28 56 29	05 17 16 41	11 26 18 15	06 17 16 56	08 24 57 48	04 21 20 55	09 01 24 59	01 28 47 48	00 15 12 08	10 24 32 10	08 28 22 33	16
17	05 29 56 02	06 02 34 46	11 25 59 34	06 16 57 19	08 25 03 54	04 22 32 31	09 01 26 42	01 28 44 38	00 15 09 47	10 24 30 53	08 28 22 54	17
18	06 00 55 36	06 17 50 57	11 25 41 08	06 16 29 09	08 25 10 09	04 23 44 13	09 01 28 31	01 28 41 27	00 15 07 25	10 24 29 37	08 28 23 17	18
19	06 01 55 12	07 02 54 38	11 25 23 01	06 15 52 19	08 25 16 35	04 24 56 00	09 01 30 25	01 28 38 16	00 15 05 02	10 24 28 22	08 28 23 42	19
20	06 02 54 50	07 17 37 31	11 25 05 15	06 15 06 57	08 25 23 09	04 26 07 54	09 01 32 25	01 28 35 05	00 15 02 38	10 24 27 09	08 28 24 08	20
21	06 03 54 30	08 01 54 40	11 24 47 53	06 14 13 25	08 25 29 53	04 27 19 53	09 01 34 31	01 28 31 54	00 15 00 14	10 24 25 58	08 28 24 37	21
22	06 04 54 12	08 15 44 29	11 24 30 58	06 13 12 28	08 25 36 47	04 28 31 57	09 01 36 43	01 28 28 44	00 14 57 49	10 24 24 47	08 28 25 07	22
23	06 05 53 56	08 29 08 05	11 24 14 33	06 12 05 11	08 25 43 50	04 29 44 08	09 01 39 01	01 28 25 33	00 14 55 23	10 24 23 38	08 28 25 38	23
24	06 06 53 41	09 12 08 14	11 23 58 38	06 10 53 03	08 25 51 01	05 00 56 23	09 01 41 24	01 28 22 22	00 14 52 57	10 24 22 31	08 28 26 12	24
25	06 07 53 28	09 24 48 35	11 23 43 18	06 09 37 53	08 25 58 22	05 02 08 44	09 01 43 53	01 28 19 11	00 14 50 30	10 24 21 25	08 28 26 47	25
26	06 08 53 17	10 07 12 58	11 23 28 33	06 08 21 49	08 26 05 52	05 03 21 09	09 01 46 27	01 28 16 00	00 14 48 03	10 24 20 21	08 28 27 24	26
27	06 09 53 07	10 19 25 05	11 23 14 25	06 07 07 08	08 26 13 30	05 04 33 40	09 01 49 07	01 28 12 50	00 14 45 35	10 24 19 18	08 28 28 03	27
28	06 10 52 59	11 01 28 17	11 23 00 56	06 05 56 08	08 26 21 17	05 05 46 16	09 01 51 52	01 28 09 39	00 14 43 08	10 24 18 17	08 28 28 44	28
29	06 11 52 53	11 13 25 20	11 22 48 07	06 04 51 02	08 26 29 13	05 06 58 57	09 01 54 43	01 28 06 28	00 14 40 40	10 24 17 17	08 28 29 26	29
30	06 12 52 48	11 25 18 31	11 22 36 00	06 03 53 47	08 26 37 17	05 08 11 43	09 01 57 40	01 28 03 18	00 14 38 11	10 24 16 19	08 28 30 10	30
31	06 13 52 45	00 07 09 42	11 22 24 35	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	01 28 00 07	00 14 35 43	10 24 15 22	08 28 30 56	31

नवम्बर सन् 2020 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।33''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
1	06 14 52 44	00 19 00 32	11 22 13 54	06 02 28 45	08 26 53 50	05 10 37 29	09 02 03 49	01 27 56 56	00 14 33 15	10 24 14 28	08 28 31 43	1
2	06 15 52 45	01 00 52 43	11 22 03 58	06 02 02 50	08 27 02 19	05 11 50 28	09 02 07 01	01 27 53 46	00 14 30 46	10 24 13 34	08 28 32 32	2
3	06 16 52 48	01 12 48 11	11 21 54 47	मा06 01 48 31	08 27 10 55	05 13 03 33	09 02 10 19	01 27 50 35	00 14 28 18	10 24 12 43	08 28 33 22	3
4	06 17 52 53	01 24 49 14	11 21 46 22	06 01 45 44	08 27 19 40	05 14 16 42	09 02 13 41	01 27 47 24	00 14 25 50	10 24 11 53	08 28 34 15	4
5	06 18 53 00	02 06 58 40	11 21 38 44	06 01 54 04	08 27 28 33	05 15 29 55	09 02 17 09	01 27 44 13	00 14 23 22	10 24 11 05	08 28 35 09	5
6	06 19 53 09	02 19 19 44	11 21 31 52	06 02 12 57	08 27 37 33	05 16 43 13	09 02 20 43	01 27 41 02	00 14 20 54	10 24 10 19	08 28 36 04	6
7	06 20 53 21	03 01 56 08	11 21 25 49	06 02 41 37	08 27 46 41	05 17 56 35	09 02 24 21	01 27 37 51	00 14 18 27	10 24 09 35	08 28 37 01	7
8	06 21 53 34	03 14 51 41	11 21 20 33	06 03 19 12	08 27 55 57	05 19 10 01	09 02 28 04	01 27 34 41	00 14 16 00	10 24 08 52	08 28 38 00	8
9	06 22 53 49	03 28 09 55	11 21 16 04	06 04 04 50	08 28 05 20	05 20 23 32	09 02 31 53	01 27 31 30	00 14 13 34	10 24 08 11	08 28 39 01	9
10	06 23 54 06	04 11 53 31	11 21 12 25	06 04 57 38	08 28 14 51	05 21 37 06	09 02 35 46	01 27 28 19	00 14 11 08	10 24 07 32	08 28 40 02	10
11	06 24 54 25	04 26 03 26	11 21 09 33	06 05 56 43	08 28 24 29	05 22 50 44	09 02 39 44	01 27 25 08	00 14 08 42	10 24 06 55	08 28 41 06	11
12	06 25 54 46	05 10 38 10	11 21 07 31	06 07 01 19	08 28 34 14	05 24 04 25	09 02 43 47	01 27 21 58	00 14 06 17	10 24 06 20	08 28 42 11	12
13	06 26 55 09	05 25 33 16	11 21 06 16	06 08 10 41	08 28 44 06	05 25 18 10	09 02 47 55	01 27 18 47	00 14 03 53	10 24 05 46	08 28 43 18	13
14	06 27 55 34	06 10 41 24	मा11 21 05 51	06 09 24 09	08 28 54 05	05 26 31 58	09 02 52 08	01 27 15 36	00 14 01 30	10 24 05 15	08 28 44 26	14
15	06 28 56 01	06 25 53 10	11 21 06 13	06 10 41 08	08 29 04 11	05 27 45 50	09 02 56 26	01 27 12 25	00 13 59 08	10 24 04 45	08 28 45 36	15
16	06 29 56 29	07 10 58 27	11 21 07 24	06 12 01 05	08 29 14 25	05 28 59 45	09 03 00 48	01 27 09 14	00 13 56 46	10 24 04 18	08 28 46 47	16
17	07 00 56 59	07 25 48 08	11 21 09 22	06 13 23 32	08 29 24 44	06 00 13 42	09 03 05 15	01 27 06 04	00 13 54 26	10 24 03 52	08 28 48 00	17
18	07 01 57 30	08 10 15 21	11 21 12 08	06 14 48 07	08 29 35 11	06 01 27 43	09 03 09 46	01 27 02 53	00 13 52 06	10 24 03 28	08 28 49 14	18
19	07 02 58 03	08 24 16 12	11 21 15 41	06 16 14 28	08 29 45 44	06 02 41 46	09 03 14 22	01 26 59 42	00 13 49 48	10 24 03 07	08 28 50 29	19
20	07 03 58 37	09 07 49 42	11 21 19 59	06 17 42 16	08 29 56 23	06 03 55 52	09 03 19 02	01 26 56 31	00 13 47 31	10 24 02 47	08 28 51 47	20
21	07 04 59 12	09 20 57 10	11 21 25 04	06 19 11 18	09 00 07 08	06 05 10 00	09 03 23 47	01 26 53 20	00 13 45 15	10 24 02 30	08 28 53 05	21
22	07 05 59 49	10 03 41 33	11 21 30 54	06 20 41 19	09 00 18 00	06 06 24 11	09 03 28 36	01 26 50 09	00 13 43 00	10 24 02 14	08 28 54 25	22
23	07 07 00 26	10 16 06 42	11 21 37 27	06 22 12 08	09 00 28 58	06 07 38 25	09 03 33 29	01 26 46 59	00 13 40 47	10 24 02 01	08 28 55 46	23
24	07 08 01 05	10 28 16 57	11 21 44 45	06 23 43 37	09 00 40 02	06 08 52 41	09 03 38 27	01 26 43 48	00 13 38 35	10 24 01 49	08 28 57 09	24
25	07 09 01 45	11 10 16 37	11 21 52 44	06 25 15 38	09 00 51 11	06 10 06 59	09 03 43 28	01 26 40 37	00 13 36 25	10 24 01 40	08 28 58 33	25
26	07 10 02 26	11 22 09 47	11 22 01 26	06 26 48 04	09 01 02 26	06 11 21 20	09 03 48 34	01 26 37 26	00 13 34 16	10 24 01 32	08 28 59 58	26
27	07 11 03 08	00 04 00 05	11 22 10 49	06 28 20 49	09 01 13 47	06 12 35 43	09 03 53 43	01 26 34 16	00 13 32 09	10 24 01 27	08 29 01 25	27
28	07 12 03 51	00 15 50 34	11 22 20 51	06 29 53 50	09 01 25 13	06 13 50 08	09 03 58 57	01 26 31 05	00 13 30 03	10 24 01 23	08 29 02 52	28
29	07 13 04 36	00 27 43 52	11 22 31 33	07 01 27 03	09 01 36 45	06 15 04 35	09 04 04 14	01 26 27 54	00 13 28 00	10 24 01 22	08 29 04 21	29
30	07 14 05 21	01 09 42 06	11 22 42 54	07 03 00 25	09 01 48 22	06 16 19 04	09 04 09 35	01 26 24 43	00 13 25 57	10 24 01 23	08 29 05 52	30

दिसम्बर सन् 2020 ई. प्रात:कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।38''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
1	07 15 06 08	01 21 47 09	11 22 54 52	07 04 33 53	09 02 00 05	06 17 33 35	09 04 15 00	01 26 21 32	00 13 23 57	मा10 24 01 26	08 29 07 23	1
2	07 16 06 56	02 04 00 38	11 23 07 26	07 06 07 27	09 02 11 52	06 18 48 09	09 04 20 29	01 26 18 22	00 13 21 58	10 24 01 31	08 29 08 56	2
3	07 17 07 45	02 16 24 08	11 23 20 37	07 07 41 04	09 02 23 45	06 20 02 45	09 04 26 01	01 26 15 11	00 13 20 02	10 24 01 38	08 29 10 30	3
4	07 18 08 36	02 28 59 17	11 23 34 23	07 09 14 43	09 02 35 42	06 21 17 22	09 04 31 37	01 26 12 00	00 13 18 07	10 24 01 47	08 29 12 04	4
5	07 19 09 27	03 11 47 48	11 23 48 43	07 10 48 24	09 02 47 45	06 22 32 02	09 04 37 16	01 26 08 49	00 13 16 15	10 24 01 58	08 29 13 41	5
6	07 20 10 21	03 24 51 31	11 24 03 37	07 12 22 07	09 02 59 52	06 23 46 43	09 04 42 59	01 26 05 38	00 13 14 24	10 24 02 11	08 29 15 18	6
7	07 21 11 15	04 08 12 11	11 24 19 03	07 13 55 51	09 03 12 04	06 25 01 26	09 04 48 45	01 26 02 27	00 13 12 35	10 24 02 27	08 29 16 56	7
8	07 22 12 11	04 21 51 09	11 24 35 02	07 15 29 36	09 03 24 21	06 26 16 12	09 04 54 34	01 25 59 17	00 13 10 49	10 24 02 44	08 29 18 35	8
9	07 23 13 08	05 05 49 02	11 24 51 33	07 17 03 24	09 03 36 42	06 27 30 58	09 05 00 27	01 25 56 06	00 13 09 05	10 24 03 03	08 29 20 16	9
10	07 24 14 06	05 20 05 10	11 25 08 35	07 18 37 13	09 03 49 07	06 28 45 47	09 05 06 23	01 25 52 55	00 13 07 22	10 24 03 25	08 29 21 57	10
11	07 25 15 05	06 04 37 18	11 25 26 07	07 20 11 05	09 04 01 38	07 00 00 37	09 05 12 22	01 25 49 44	00 13 05 43	10 24 03 49	08 29 23 39	11
12	07 26 16 05	06 19 21 17	11 25 44 09	07 21 45 00	09 04 14 12	07 01 15 28	09 05 18 24	01 25 46 34	00 13 04 05	10 24 04 14	08 29 25 22	12
13	07 27 17 07	07 04 11 11	11 26 02 40	07 23 18 59	09 04 26 50	07 02 30 21	09 05 24 29	01 25 43 23	00 13 02 30	10 24 04 42	08 29 27 07	13
14	07 28 18 09	07 18 59 49	11 26 21 39	07 24 53 02	09 04 39 33	07 03 45 15	09 05 30 37	01 25 40 12	00 13 00 58	10 24 05 12	08 29 28 52	14
15	07 29 19 12	08 03 39 39	11 26 41 07	07 26 27 11	09 04 52 20	07 05 00 10	09 05 36 48	01 25 37 01	00 12 59 28	10 24 05 44	08 29 30 38	15
16	08 00 20 16	08 18 03 50	11 27 01 02	07 28 01 25	09 05 05 11	07 06 15 06	09 05 43 02	01 25 33 50	00 12 58 00	10 24 06 18	08 29 32 25	16
17	08 01 21 21	09 02 07 07	11 27 21 24	07 29 35 47	09 05 18 05	07 07 30 03	09 05 49 18	01 25 30 39	00 12 56 35	10 24 06 54	08 29 34 12	17
18	08 02 22 26	09 15 46 25	11 27 42 12	08 01 10 16	09 05 31 03	07 08 45 01	09 05 55 37	01 25 27 28	00 12 55 12	10 24 07 32	08 29 36 01	18
19	08 03 23 31	09 29 00 53	11 28 03 25	08 02 44 54	09 05 44 05	07 10 00 01	09 06 01 59	01 25 24 17	00 12 53 53	10 24 08 12	08 29 37 50	19
20	08 04 24 37	10 11 51 39	11 28 25 03	08 04 19 41	09 05 57 10	07 11 15 00	09 06 08 24	01 25 21 07	00 12 52 35	10 24 08 54	08 29 39 40	20
21	08 05 25 43	10 24 21 28	11 28 47 05	08 05 54 39	09 06 10 19	07 12 30 01	09 06 14 50	01 25 17 56	00 12 51 21	10 24 09 39	08 29 41 31	21
22	08 06 26 50	11 06 34 14	11 29 09 30	08 07 29 48	09 06 23 31	07 13 45 02	09 06 21 19	01 25 14 45	00 12 50 09	10 24 10 25	08 29 43 23	22
23	08 07 27 56	11 18 34 27	11 29 32 18	08 09 05 10	09 06 36 46	07 15 00 04	09 06 27 51	01 25 11 34	00 12 49 00	10 24 11 13	08 29 45 15	23
24	08 08 29 03	00 00 26 57	11 29 55 28	08 10 40 44	09 06 50 04	07 16 15 07	09 06 34 24	01 25 08 24	00 12 47 54	10 24 12 03	08 29 47 07	24
25	08 09 30 10	00 12 16 28	00 00 18 59	08 12 16 32	09 07 03 25	07 17 30 10	09 06 41 00	01 25 05 13	00 12 46 51	10 24 12 55	08 29 49 01	25
26	08 10 31 17	00 24 07 23	00 00 42 51	08 13 52 34	09 07 16 49	07 18 45 14	09 06 47 38	01 25 02 02	00 12 45 50	10 24 13 50	08 29 50 55	26
27	08 11 32 24	01 06 03 39	00 01 07 04	08 15 28 50	09 07 30 16	07 20 00 19	09 06 54 18	01 24 58 51	00 12 44 52	10 24 14 46	08 29 52 49	27
28	08 12 33 31	01 18 08 33	00 01 31 36	08 17 05 22	09 07 43 46	07 21 15 24	09 07 00 59	01 24 55 40	00 12 43 57	10 24 15 44	08 29 54 44	28
29	08 13 34 38	02 00 24 39	00 01 56 27	08 18 42 09	09 07 57 18	07 22 30 30	09 07 07 43	01 24 52 29	00 12 43 06	10 24 16 43	08 29 56 40	29
30	08 14 35 46	02 12 53 45	00 02 21 37	08 20 19 11	09 08 10 53	07 23 45 36	09 07 14 28	01 24 49 19	00 12 42 17	10 24 17 45	08 29 58 36	30
31	08 15 36 53	02 25 36 46	00 02 47 04	08 21 56 29	09 08 24 31	[illegible]	[illegible]	[illegible]	00 12 41 30	10 24 18 49	09 00 00 32	31

आर्यभट्ट पंचांगम्

30 | 08 14 35 46 | 02 12 53 45 | 00 02 21 37 | 08 20 19 11 | 09 08 10 53 | 07 23 45 36 | 09 07 14 28 | 01 24 49 19 | 00 12 42 17 | 10 24 17 45 | 08 29 58 36 | 30
31 | [illegible] | 31

जनवरी सन् 2021 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°108'144''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
1	08 16 38 01	03 08 33 56	00 03 12 50	08 23 34 02	09 08 38 11	07 26 15 51	09 07 28 04	01 24 42 57	00 12 40 47	10 24 19 54	09 00 02 29	1
2	08 17 39 09	03 21 44 51	00 03 38 52	08 25 11 49	09 08 51 53	07 27 30 59	09 07 34 55	01 24 39 46	00 12 40 07	10 24 21 02	09 00 04 26	2
3	08 18 40 17	04 05 08 47	00 04 05 11	08 26 49 50	09 09 05 38	07 28 46 08	09 07 41 47	01 24 36 35	00 12 39 30	10 24 22 11	09 00 06 24	3
4	08 19 41 26	04 18 44 46	00 04 31 46	08 28 28 01	09 09 19 25	08 00 01 17	09 07 48 41	01 24 33 24	00 12 38 56	10 24 23 22	09 00 08 22	4
5	08 20 42 35	05 02 31 46	00 04 58 37	09 00 06 23	09 09 33 14	08 01 16 27	09 07 55 36	01 24 30 14	00 12 38 25	10 24 24 35	09 00 10 20	5
6	08 21 43 44	05 16 28 43	00 05 25 44	09 01 44 51	09 09 47 05	08 02 31 38	09 08 02 32	01 24 27 03	00 12 37 57	10 24 25 50	09 00 12 18	6
7	08 22 44 53	06 00 34 26	00 05 53 06	09 03 23 23	09 10 00 58	08 03 46 49	09 08 09 29	01 24 23 52	00 12 37 32	10 24 27 06	09 00 14 17	7
8	08 23 46 02	06 14 47 30	00 06 20 43	09 05 01 54	09 10 14 53	08 05 02 01	09 08 16 28	01 24 20 41	00 12 37 10	10 24 28 24	09 00 16 16	8
9	08 24 47 12	06 29 05 59	00 06 48 34	09 06 40 20	09 10 28 50	08 06 17 12	09 08 23 28	01 24 17 31	00 12 36 51	10 24 29 44	09 00 18 15	9
10	08 25 48 21	07 13 27 12	00 07 16 40	09 08 18 34	09 10 42 49	08 07 32 25	09 08 30 30	01 24 14 20	00 12 36 36	10 24 31 06	09 00 20 15	10
11	08 26 49 31	07 27 47 38	00 07 44 59	09 09 56 28	09 10 56 49	08 08 47 37	09 08 37 32	01 24 11 09	00 12 36 23	10 24 32 29	09 00 22 14	11
12	08 27 50 40	08 12 02 57	00 08 13 33	09 11 33 54	09 11 10 51	08 10 02 50	09 08 44 35	01 24 07 58	00 12 36 14	10 24 33 54	09 00 24 14	12
13	08 28 51 49	08 26 08 26	00 08 42 20	09 13 10 41	09 11 24 55	08 11 18 03	09 08 51 39	01 24 04 47	00 12 36 08	10 24 35 21	09 00 26 14	13
14	08 29 52 58	09 09 59 36	00 09 11 19	09 14 46 35	09 11 38 59	08 12 33 16	09 08 58 44	01 24 01 36	00 12 36 05	10 24 36 49	09 00 28 14	14
15	09 00 54 06	09 23 32 47	00 09 40 32	09 16 21 23	09 11 53 05	08 13 48 30	09 09 05 49	01 23 58 25	मा00 12 36 05	10 24 38 19	09 00 30 13	15
16	09 01 55 14	10 06 45 44	00 10 09 57	09 17 54 46	09 12 07 13	08 15 03 43	09 09 12 55	01 23 55 14	00 12 36 08	10 24 39 51	09 00 32 13	16
17	09 02 56 21	10 19 37 50	00 10 39 34	09 19 26 23	09 12 21 21	08 16 18 56	09 09 20 02	01 23 52 04	00 12 36 15	10 24 41 24	09 00 34 13	17
18	09 03 57 28	11 02 10 08	00 11 09 22	09 20 55 51	09 12 35 30	08 17 34 09	09 09 27 09	01 23 48 53	00 12 36 24	10 24 42 58	09 00 36 13	18
19	09 04 58 33	11 14 25 16	00 11 39 22	09 22 22 43	09 12 49 41	08 18 49 22	09 09 34 17	01 23 45 42	00 12 36 37	10 24 44 35	09 00 38 12	19
20	09 05 59 38	11 26 26 59	00 12 09 33	09 23 46 27	09 13 03 52	08 20 04 35	09 09 41 25	01 23 42 32	00 12 36 53	10 24 46 12	09 00 40 12	20
21	09 07 00 42	00 08 19 57	00 12 39 55	09 25 06 30	09 13 18 03	08 21 19 47	09 09 48 33	01 23 39 21	00 12 37 12	10 24 47 51	09 00 42 11	21
22	09 08 01 45	00 20 09 14	00 13 10 26	09 26 22 11	09 13 32 16	08 22 35 00	09 09 55 41	01 23 36 10	00 12 37 35	10 24 49 32	09 00 44 10	22
23	09 09 02 47	01 02 00 06	00 13 41 08	09 27 32 49	09 13 46 29	08 23 50 12	09 10 02 50	01 23 32 59	00 12 38 00	10 24 51 14	09 00 46 09	23
24	09 10 03 48	01 13 57 39	00 14 12 00	09 28 37 37	09 14 00 43	08 25 05 24	09 10 09 58	01 23 29 49	00 12 38 29	10 24 52 57	09 00 48 07	24
25	09 11 04 48	01 26 06 30	00 14 43 00	09 29 35 47	09 14 14 57	08 26 20 36	09 10 17 07	01 23 26 38	00 12 39 01	10 24 54 42	09 00 50 06	25
26	09 12 05 47	02 08 30 32	00 15 14 10	10 00 26 29	09 14 29 11	08 27 35 48	09 10 24 16	01 23 23 27	00 12 39 35	10 24 56 28	09 00 52 04	26
27	09 13 06 45	02 21 12 34	00 15 45 29	10 01 08 51	09 14 43 26	08 28 50 59	09 10 31 24	01 23 20 16	00 12 40 13	10 24 58 16	09 00 54 01	27
28	09 14 07 43	03 04 13 57	00 16 16 57	10 01 42 05	09 14 57 40	09 00 06 11	09 10 38 32	01 23 17 05	00 12 40 55	10 25 00 04	09 00 55 59	28
29	09 15 08 39	03 17 34 29	00 16 48 32	10 02 05 25	09 15 11 55	09 01 21 22	09 10 45 40	01 23 13 54	00 12 41 39	10 25 01 54	09 00 57 56	29
30	09 16 09 34	04 01 12 19	00 17 20 16	व10 02 18 14	09 15 26 11	09 02 36 33	09 10 52 48	01 23 10 44	00 12 42 26	10 25 03 46	09 00 59 52	30
31	09 17 10 29	04 15 04 18	00 17 52 08	10 02 20 03	09 15 40 26	09 03 51 44	09 10 59 55	01 23 07 33	00 12 43 16	10 25 05 38	09 01 01 48	31

फरवरी सन् 2021 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°108'149''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
1	09 18 11 22	04 29 06 27	00 18 24 07	10 02 10 37	09 15 54 41	09 05 06 55	09 11 07 02	01 23 04 22	00 12 44 10	10 25 07 31	09 01 03 44	1
2	09 19 12 15	05 13 14 37	00 18 56 14	10 01 49 57	09 16 08 55	09 06 22 06	09 11 14 08	01 23 01 11	00 12 45 06	10 25 09 26	09 01 05 39	2
3	09 20 13 07	05 27 25 03	00 19 28 28	10 01 18 24	09 16 23 10	09 07 37 17	09 11 21 14	01 22 58 01	00 12 46 06	10 25 11 22	09 01 07 34	3
4	09 21 13 58	06 11 34 50	00 20 00 49	10 00 36 39	09 16 37 24	09 08 52 28	09 11 28 19	01 22 54 50	00 12 47 08	10 25 13 19	09 01 09 28	4
5	09 22 14 48	06 25 42 02	00 20 33 18	09 29 45 45	09 16 51 38	09 10 07 38	09 11 35 23	01 22 51 39	00 12 48 13	10 25 15 17	09 01 11 21	5
6	09 23 15 38	07 09 45 31	00 21 05 53	09 28 47 03	09 17 05 52	09 11 22 49	09 11 42 26	01 22 48 28	00 12 49 22	10 25 17 16	09 01 13 14	6
7	09 24 16 26	07 23 44 30	00 21 38 36	09 27 42 16	09 17 20 05	09 12 37 59	09 11 49 29	01 22 45 17	00 12 50 34	10 25 19 16	09 01 15 07	7
8	09 25 17 14	08 07 38 11	00 22 11 25	09 26 33 15	09 17 34 18	09 13 53 09	09 11 56 31	01 22 42 07	00 12 51 48	10 25 21 17	09 01 16 59	8
9	09 26 18 00	08 21 25 22	00 22 44 21	09 25 22 00	09 17 48 29	09 15 08 19	09 12 03 32	01 22 38 56	00 12 53 05	10 25 23 19	09 01 18 50	9
10	09 27 18 46	09 05 04 13	00 23 17 23	09 24 10 30	09 18 02 40	09 16 23 28	09 12 10 31	01 22 35 45	00 12 54 26	10 25 25 22	09 01 20 40	10
11	09 28 19 30	09 18 32 29	00 23 50 31	09 23 00 39	09 18 16 51	09 17 38 37	09 12 17 30	01 22 32 34	00 12 55 49	10 25 27 26	09 01 22 30	11
12	09 29 20 13	10 01 47 48	00 24 23 46	09 21 54 09	09 18 31 00	09 18 53 46	09 12 24 27	01 22 29 23	00 12 57 15	10 25 29 31	09 01 24 18	12
13	10 00 20 54	10 14 48 11	00 24 57 07	09 20 52 25	09 18 45 08	09 20 08 54	09 12 31 23	01 22 26 13	00 12 58 44	10 25 31 37	09 01 26 06	13
14	10 01 21 35	10 27 32 25	00 25 30 34	09 19 56 38	09 18 59 15	09 21 24 02	09 12 38 18	01 22 23 02	00 13 00 16	10 25 33 43	09 01 27 54	14
15	10 02 22 13	11 10 00 29	00 26 04 06	09 19 07 37	09 19 13 21	09 22 39 09	09 12 45 11	01 22 19 51	00 13 01 51	10 25 35 50	09 01 29 40	15
16	10 03 22 50	11 22 13 42	00 26 37 44	09 18 25 58	09 19 27 25	09 23 54 16	09 12 52 03	01 22 16 41	00 13 03 29	10 25 37 58	09 01 31 26	16
17	10 04 23 26	00 04 14 38	00 27 11 27	09 17 51 59	09 19 41 28	09 25 09 22	09 12 58 53	01 22 13 30	00 13 05 09	10 25 40 07	09 01 33 10	17
18	10 05 23 59	00 16 07 00	00 27 45 15	09 17 25 47	09 19 55 30	09 26 24 28	09 13 05 41	01 22 10 19	00 13 06 52	10 25 42 16	09 01 34 54	18
19	10 06 24 31	00 27 55 27	00 28 19 08	09 17 07 17	09 20 09 29	09 27 39 32	09 13 12 28	01 22 07 09	00 13 08 38	10 25 44 27	09 01 36 37	19
20	10 07 25 01	01 09 45 09	00 28 53 06	09 16 56 18	09 20 23 28	09 28 54 36	09 13 19 13	01 22 03 58	00 13 10 26	10 25 46 37	09 01 38 18	20
21	10 08 25 29	01 21 41 40	00 29 27 08	09 16 52 32	09 20 37 24	10 00 09 40	09 13 25 56	01 22 00 47	00 13 12 17	10 25 48 48	09 01 39 59	21
22	10 09 25 55	02 03 50 28	01 00 01 15	09 16 55 39	09 20 51 19	10 01 24 42	09 13 32 37	01 21 57 36	00 13 14 11	10 25 51 00	09 01 41 39	22
23	10 10 26 19	02 16 16 39	01 00 35 26	09 17 05 16	09 21 05 12	10 02 39 44	09 13 39 16	01 21 54 25	00 13 16 07	10 25 53 12	09 01 43 18	23
24	10 11 26 42	02 29 04 20	01 01 09 42	09 17 20 58	09 21 19 03	10 03 54 45	09 13 45 54	01 21 51 14	00 13 18 06	10 25 55 25	09 01 44 55	24
25	10 12 27 02	03 12 16 11	01 01 44 01	09 17 42 22	09 21 32 52	10 05 09 46	09 13 52 29	01 21 48 04	00 13 20 07	10 25 57 39	09 01 46 32	25
26	10 13 27 21	03 25 52 50	01 02 18 25	09 18 09 04	09 21 46 39	10 06 24 45	09 13 59 02	01 21 44 53	00 13 22 11	10 25 59 52	09 01 48 08	26
27	10 14 27 38	04 09 52 25	01 02 52 52	09 18 40 42	09 22 00 23	10 07 39 44	09 14 05 32	01 21 41 42	00 13 24 18	10 26 02 06	09 01 49 42	27
28	10 15 27 53	04 24 10 39	01 03 27 23	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्च सन् 2021 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।08'।53''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
1	10 16 28 07	05 08 41 20	01 04 01 57	09 19 57 21	09 22 27 46	10 10 09 41	09 14 18 27	01 21 35 21	00 13 28 38	10 26 06 36	09 01 52 47	1
2	10 17 28 19	05 23 17 18	01 04 36 35	09 20 41 44	09 22 41 23	10 11 24 38	09 14 24 50	01 21 32 10	00 13 30 51	10 26 08 51	09 01 54 18	2
3	10 18 28 29	06 07 51 40	01 05 11 16	09 21 29 46	09 22 54 59	10 12 39 35	09 14 31 11	01 21 28 59	00 13 33 07	10 26 11 06	09 01 55 48	3
4	10 19 28 38	06 22 18 49	01 05 46 00	09 22 21 12	09 23 08 32	10 13 54 31	09 14 37 30	01 21 25 49	00 13 35 25	10 26 13 22	09 01 57 16	4
5	10 20 28 45	07 06 35 05	01 06 20 48	09 23 15 47	09 23 22 02	10 15 09 26	09 14 43 46	01 21 22 38	00 13 37 46	10 26 15 38	09 01 58 43	5
6	10 21 28 51	07 20 38 40	01 06 55 40	09 24 13 19	09 23 35 29	10 16 24 21	09 14 50 00	01 21 19 27	00 13 40 08	10 26 17 54	09 02 00 09	6
7	10 22 28 55	08 04 29 15	01 07 30 34	09 25 13 36	09 23 48 54	10 17 39 15	09 14 56 10	01 21 16 16	00 13 42 33	10 26 20 10	09 02 01 34	7
8	10 23 28 58	08 18 07 25	01 08 05 32	09 26 16 27	09 24 02 16	10 18 54 09	09 15 02 18	01 21 13 06	00 13 45 01	10 26 22 27	09 02 02 58	8
9	10 24 28 59	09 01 33 53	01 08 40 33	09 27 21 43	09 24 15 35	10 20 09 02	09 15 08 24	01 21 09 55	00 13 47 30	10 26 24 43	09 02 04 20	9
10	10 25 28 58	09 14 49 16	01 09 15 37	09 28 29 16	09 24 28 51	10 21 23 54	09 15 14 26	01 21 06 44	00 13 50 01	10 26 27 00	09 02 05 40	10
11	10 26 28 55	09 27 53 41	01 09 50 45	09 29 38 58	09 24 42 04	10 22 38 46	09 15 20 25	01 21 03 33	00 13 52 35	10 26 29 16	09 02 07 00	11
12	10 27 28 51	10 10 46 55	01 10 25 55	10 00 50 42	09 24 55 13	10 23 53 36	09 15 26 21	01 21 00 22	00 13 55 11	10 26 31 33	09 02 08 18	12
13	10 28 28 45	10 23 28 29	01 11 01 08	10 02 04 22	09 25 08 20	10 25 08 26	09 15 32 14	01 20 57 12	00 13 57 48	10 26 33 50	09 02 09 34	13
14	10 29 28 37	11 05 58 01	01 11 36 24	10 03 19 53	09 25 21 23	10 26 23 15	09 15 38 04	01 20 54 01	00 14 00 28	10 26 36 06	09 02 10 50	14
15	11 00 28 27	11 18 15 36	01 12 11 43	10 04 37 10	09 25 34 22	10 27 38 04	09 15 43 50	01 20 50 51	00 14 03 09	10 26 38 23	09 02 12 03	15
16	11 01 28 15	00 00 21 59	01 12 47 05	10 05 56 09	09 25 47 18	10 28 52 51	09 15 49 34	01 20 47 40	00 14 05 53	10 26 40 39	09 02 13 16	16
17	11 02 28 01	00 12 18 55	01 13 22 29	10 07 16 45	09 26 00 10	11 00 07 37	09 15 55 13	01 20 44 29	00 14 08 38	10 26 42 55	09 02 14 27	17
18	11 03 27 45	00 24 09 05	01 13 57 55	10 08 38 57	09 26 12 58	11 01 22 23	09 16 00 50	01 20 41 19	00 14 11 25	10 26 45 11	09 02 15 36	18
19	11 04 27 26	01 05 56 08	01 14 33 24	10 10 02 41	09 26 25 42	11 02 37 07	09 16 06 22	01 20 38 08	00 14 14 14	10 26 47 27	09 02 16 44	19
20	11 05 27 06	01 17 44 32	01 15 08 55	10 11 27 55	09 26 38 23	11 03 51 50	09 16 11 52	01 20 34 57	00 14 17 05	10 26 49 43	09 02 17 50	20
21	11 06 26 43	01 29 39 21	01 15 44 28	10 12 54 36	09 26 50 59	11 05 06 32	09 16 17 17	01 20 31 46	00 14 19 57	10 26 51 58	09 02 18 55	21
22	11 07 26 17	02 11 46 04	01 16 20 04	10 14 22 44	09 27 03 32	11 06 21 13	09 16 22 39	01 20 28 35	00 14 22 51	10 26 54 13	09 02 19 58	22
23	11 08 25 49	02 24 10 07	01 16 55 41	10 15 52 17	09 27 16 00	11 07 35 52	09 16 27 57	01 20 25 25	00 14 25 47	10 26 56 28	09 02 20 59	23
24	11 09 25 19	03 06 56 31	01 17 31 21	10 17 23 13	09 27 28 24	11 08 50 31	09 16 33 12	01 20 22 14	00 14 28 44	10 26 58 42	09 02 22 00	24
25	11 10 24 47	03 20 09 09	01 18 07 02	10 18 55 33	09 27 40 43	11 10 05 08	09 16 38 22	01 20 19 03	00 14 31 43	10 27 00 56	09 02 22 58	25
26	11 11 24 13	04 03 50 03	01 18 42 45	10 20 29 15	09 27 52 58	11 11 19 45	09 16 43 29	01 20 15 52	00 14 34 43	10 27 03 09	09 02 23 55	26
27	11 12 23 36	04 17 58 40	01 19 18 30	10 22 04 19	09 28 05 09	11 12 34 20	09 16 48 31	01 20 12 42	00 14 37 45	10 27 05 22	09 02 24 50	27
28	11 13 22 57	05 02 31 24	01 19 54 16	10 23 40 45	09 28 17 15	11 13 48 54	09 16 53 30	01 20 09 31	00 14 40 48	10 27 07 35	09 02 25 44	28
29	11 14 22 16	05 17 21 41	01 20 30 04	10 25 18 33	09 28 29 16	11 15 03 27	09 16 58 25	01 20 06 20	00 14 43 52	10 27 09 46	09 02 26 36	29
30	11 15 21 33	06 02 20 55	01 21 05 54	10 26 57 43	09 28 41 13	11 16 17 59	09 17 03 15	01 20 03 10	00 14 46 58	10 27 11 58	09 02 27 26	30
31	11 16 20 48	06 17 19 48	01 21 41 45	10 28 38 17	09 28 53 04	11 17 32 30	09 17 08 01	01 19 59 59	00 14 50 05	10 27 14 09	09 02 28 15	31

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥1॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥2॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारंभ होता है, उस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खाण्ड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शांति होती है।

संवत्सर के फल श्रवण का महात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव संवत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवाकर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरांत सम्वत्सर फल रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्॥" अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्षफल का श्रवण करता है, वह बहुत धन-धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्री राम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष महात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान 43,20,000 सौर वर्ष है। इस प्रकार 1000 चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में 14 मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में 71 महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक 6 मन्वन्तर के 26 महायुग बीत गये हैं और 27वां महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है। इसमें 5121 वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का 72वां वर्ष चल रहा है। प्रथम दिन का उदय होकर 13 घड़ी 42 पल 3 विपल 43 प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु 17,28,000 वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए। मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी। ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले [illegible] और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियां पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः 1,00,000 वर्ष, बाल्यावस्था 10,000 वर्ष, देह की लम्बाई 21 हाथ थी। पुण्य 20 विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण 20,000 और चन्द्रग्रहण 2,000 थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 12,96,000 वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का 21 बार वध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का बध किया। मनुष्य की परमायुः 10,000 वर्ष और बाल्यावस्था 1,000 वर्ष थी। पुण्य 15 विश्वे, पाप 5 विश्वे था। पुरुष का देहमान 14 हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण 20,000 और चन्द्रग्रहण 30,000 थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण 30 को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 8,64,000 वर्ष थी। इसमें 2 अवतार—श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायुः 1,000 वर्ष थी। बाल्यावस्था 100 वर्ष थी। पुरुष का देहमान 7 हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर, कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य 10 विश्वे था। सूर्यग्रहण 24,000 और चन्द्रग्रहण 36,000 थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण 13 को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 4,32,000 वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु 120 वर्ष और बाल्यावस्था 10 वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य 5 विश्वे, पाप 15 विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख, तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख, शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्रग्रहण 46,000 होंगे। सं. 2077 में कलियुग के 5121 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के 4,26,879 वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण [illegible]

संवत् 2077 वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि दशाधिकारी फलम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

**वागीशाद्या सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे। यं नत्वा कृत्कृत्या स्युः तन्नमामि विनायकम्॥
तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करण मेव च। पंचांगं शृणुते नित्य गंगा स्नान फलं लभेत्॥
तिथि आयुकरि प्रोक्ता नक्षत्रं पाप नाशनम्। वारं शत्रून् विनाशाय योगो वृद्धि शतानि च॥
करणं करोतु कल्याणं चन्द्रो लक्ष्मी दिने दिने। यशसो वर्द्धते नित्यं दिवाकरो भूमण्डले॥**

अथ कल्पादि से गतवर्ष (गताव्य) 1955885121, तत्र कृत युग प्रमाणम् (सतयुग) 1728000, त्रेता युग प्रमाणम् 1296000, द्वापर युग प्रमाणम् 864000, कलियुग प्रमाणम् 432000, तन्मध्ये गत कलि 5121, भोग्य शेष कलि 426879। अथास्मिन शुभ संवत्सरे श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् 2077, शाके 1942। अथा अस्मिन वर्षे दशाधिकारीगण परिषद गणना–राजा बुधः, मंत्री चन्द्रः, सस्येशो गुरुः, धान्येश भौमः, मेघेशो रविः, रसेशो शनिः, नीरशेसो गुरुः, फलेशो रविः, धनेशो बुधः, दुर्गेशो रविः। एते दशाधिकारिणः। तत्र बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादि षष्ट्ब्दानां मध्य रुद्र विंशतिकायां 8 प्रमादी नामस्यः संवत्सरं प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्क समय गत मासादि 0।27।33।07, भोग्य मासादि 11।02।26।53 इन्द्राग्नि दैवतं युगम्। वर्षनाम आषाढ़, चतुर्थ मेघनाम आवर्त्तः, रोहिणी निवासः संधौ, समय निवास वैश्य गृहे, समय विश्वा 18, समय वाहन सिंचाणु, स्तम्भौ 2 जल तृणयोः, सोमवत्या अमावस्या 3, सोमवती पंचमी 2, अंगारकी चतुर्थी 1, भानु सप्तमी 1, बुधाष्टमी 2, रविदशमी 1, समय मुहूर्तानि 390, समय दिनानि 384, तिथि क्षयः 16, तिथि वृद्धिः 10। अष्टोत्तरी मत्तेन उत्पत्ति विश्वा 105, खपति विश्वा 96। विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा 99, खपति विश्वा 99। वर्षा विश्वा 9, धान्यम् 13, तृणं 13, शीतम् 7, तेजः 17, वायुः 13, वृद्धिः 15, क्षयः 15, विग्रह 11, ऐक्यम् 113, क्षुधा 13, तृष्णा 15, निद्रा 3, आलस्य 3, उद्यम 5, शांति 7, क्रोध 13, दण्ड 5, लोभ 3, मैत्री 9, मैथुन 15, उत्सव 7, उत्साह 3, उग्रत्व 5, रसोत्पत्ति 7, फलोत्पत्तिः 13, व्याधि 9, व्याधिनाश 9, आचार 11, अनाचार 17, मृत्यु 15, जन्म 7, चौर 13, उपशमन 19, अग्निभय 9, अग्निशमः 19, सत्यम् आधा (½), धर्म डेढ़ (1½), पाप 18, पुण्य 9, शनि दृष्टि उत्तरं, ग्रहण 2 (सूर्यस्य 1, चन्द्रस्य 1), उद्भिजः 51, जरायुजः 3, पिण्डजः 15, स्वेदजः 13। इस वर्ष का फल उत्तम है। आगे गौ, प्रजा भाग्य प्रबल है।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता व लोक नायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के राजा-मंत्री आदि दशाधिकारियों का प्रभाव यूं तो न्यूनाधिक सर्वत्र होता है। तथापि राजा का प्रभाव भारत वर्ष मुकुटमणि कश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। इसी प्रकार मंत्री का प्रभाव कलिंग में, सस्येश का विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट व मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भू-भाग व कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धनेश व दुर्गेश का प्रभाव सर्वत्र समान रूप से पड़ता है।

अथ आनन्द नाम संवत्सर तत्फलम्

**आनंदाब्दे खिला लोकाः सर्वानन्द चेतसः।
राजानः सुखिनः सर्वे बहु सस्यार्घ वृष्टिभिः॥**

आनन्द नाम संवत्सर का फल–आनंद नाम संवत्सर से अधिकांश लोग सुखी रहें। राजा सुखी तथा धान्यों की पैदावार अच्छी हो। वर्षा उत्तम एवं समयानुकूल होती है। अन्नादि का भाव सस्ता रहे। सर्वत्र सुभिक्ष का वातावरण रहे।

नोट–ता. 25 मार्च 2020, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार 12 चैत्र, बुधवार को नव विक्रमी संवत् 2077 आरंभ हो रहा है। शास्त्रानुसार नवसंवत् का राजा का निर्णय वार अनुसार ही किया जाता है। अतः बुधवार से नवसंवत् प्रारंभ होने के कारण संवत् का **राजा बुध** ही होगा। **प्रमादी** संवत्सर का शुभारंभ गतवर्ष 10 अप्रैल, 2019 से हो चुका है। **अतः संवत् का आरंभ प्रमादी नामक संवत्सर से हो रहा है तथा दि. 6 अप्रैल, 2020 से आगामी आनन्द नामक संवत्सर प्रवृत हो जायेगा।** शास्त्र-परम्परानुसार संवतारंभ संवत्सर का प्रयोग वर्षपर्यन्त मानने का प्रचलन है। ता. 6 अप्रैल 2020 को आनन्द नाम संवत्सर शुरू होने से इसका प्रयोग कर सकते हैं।

अथ राजा बुधः तस्य फलम्

**बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्य विवाहमंगलम्।
प्रकुर्वन्ते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्य संकुलम्॥**

वर्ष के राजा बुध का फल–वर्ष का राजा बुध होने से पृथ्वी सजल रहेगी। घर-घर में विवाहादि मंगल कार्य होंगे। दान-धर्म की व्यवस्था बढ़ेगी। चैरेटी सम्बन्धित कार्यों में बढ़ोत्तरी होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों पर विशेष दिया जायेगा। धन-धान्य बाहुल्य से सुभिक्ष रहेगा।

अथ मंत्री चन्द्रः तस्य फलम्

**शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुख मण्डिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि सुशोभिताः॥**

वर्ष के मंत्री चन्द्र का फल–वर्ष का मंत्री चन्द्र होने से उत्तम वर्षा होगी। धन-धान्य व अन्य सुख ऐश्वर्य के साधनों में वृद्धि होगी। अन्न उत्पादन में वृद्धि होगी। मनुष्यों में अनेक प्रकार का सुख व्याप्त होगा। श्वेत वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होगी।

अथ सस्येशो गुरुः तस्य फलम्

**कणपती सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकरः श्रुतिपूर्वकाः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहुनि वसूनि वै॥**

वर्ष के सस्येश गुरु का फल-बैसाख मास की फसल, गेहूं, जौ, चना अर्थात् सस्य का स्वामी कर्क संक्रांति के दिन का स्वामी गुरु है, अतः उत्तम वर्षा होगी। अन्न तथा रस, गौरस दूध आदि भी बहुत हो। वेद विहित मार्ग के प्रचार से सौख्य हो। प्रजा सूख अनुभव करेगी।

अथ धान्येशो भौमः तस्य फलम्

भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्म धान्य महर्घकम्।
शालीक्षु घृत तैलादि महर्घाणि भवन्ति च।।

धान्येश भौम का फल-मंगल ग्रीष्म ऋतु की फसल का स्वामी होने से ग्रीष्म कालीन धान्यों में तेजी आयेगी। चावल, ईख, घी तथा तैल आदि में तेजी चलेगी। चोर, शत्रु से प्रजा में भय व्याप्त तथा यत्र-तत्र प्रजा की हानि होगी।

अथ मेघेशो सूर्यः तस्य फलम्

जलदपे यदि वासरपे तदा सरसि वै रमते जनता रसम्।
यवचणेक्षुनिवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते।।

मेघेश सूर्य का फल-मेघेश सूर्य होने से जनता में सुख-शांति व्याप्त हो। जौ, चना, ईख तथा चावल का उत्पादन उत्तम रहेगा। जगत सुख संचय से परिपूर्ण रहे। प्रजा में अमन चैन रहेगा। वस्तुओं के भाव मंदे रहेंगे।

अथ रसेशो शनिः तस्य फलम्

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अजगवा गंजवाजि खरोष्ट्रहाः जनपदेषु नरा न रसैर्युताः।।

वर्ष के रसेश शनि का फल-रसेश का पद शनि को प्राप्त होने से रसों का नाश होगा, बादलों से पानी के स्थान पर रोग वर्षा होगी। छेरी, गाय, हाथी, घोड़े गधो तथा ऊंटों की हानि होगी। मनुष्यों में नीरसता रहेगी।

अथ नीरसेशो गुरुः तस्य फलम्

हरिद्रापीत वस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।।

वर्ष के नीरसेश गुरु का फल-बृहस्पति वर्ष का नीरसेश होने से हल्दी, पीले वस्त्र, पीले रंग की वस्तुओं एवं धातुओं में मंदी रहे। मनुष्यों में परस्पर प्रेम रहेगा।

अथ फलेशो सूर्यः तस्य फलम्

द्रुमवतीवर पुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोग विशेषता।
बहुजलं जलदोभुविमुंचति क्वचिदपि प्रमितं फलपो रविः।।

वर्ष के फलेश सूर्य का फल-वर्ष का फलेश का पद रवि को प्राप्त होने से अनेक प्रकार के फल-फूल, पुष्प वृक्षों से पृथ्वी आच्छादित रहेगी। [illegible]

अथ धनेशो बुधः तस्य फलम्

द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविध संग्रह वस्तु फलार्थदा।
द्विजवरा जययज्ञसु संयुता कृषि विशेष विशेषित मानसाः।।

वर्ष के धनेश बुध का फल-धनेश बुध होने से कई वस्तुओं का संग्रह लाभदायक होगा। धार्मिक गतिविधियां तथा कृषि कार्यों की वृद्धि होगी। कृषि के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

अथ दुर्गेशो सूर्यः तस्य फलम्

नयविशेषकरस्तरणि स्तदा गतभया नरराज पुरोगभाः।
समधिको न तदा नृपजोन्यजः स्वपथजं व्रजतां न भयं क्वचित्।

वर्ष के दुर्गेश सूर्य का फल-सूर्य दुर्गेश होने से न्यायोचित कार्य होंगे। राजनेताओं तथा सामान्य जनों के साथ समान व्यवहार होगा। नियमानुसार कार्य करने वाले भयमुक्त रहेंगे।

अथ वर्षनाम् आषाढ़ तत्फलम्

आषाढ़ाब्दे तु राजानः सर्वदा कलह उत्सुकाः।
क्वचिदीतिः क्वचिद्भीति क्वचिवृद्धिः जलं क्वचित् ।।

वर्षनाम आषाढ़ का फल-वर्षनाम आषाढ़ होने से राजाओं (नेताओं) में परस्पर कलह का वातावरण बनेगा। समय पर व अनुकूल वर्षा होगी। जिससे अन्नादि की पैदावार अच्छी हो। जनता सुखी रहे।

मेघनाम् आवर्त्तः तस्य फलम्-आवर्त्ते छिन्न वृष्टिः स्यात्-मेघनाम आवर्त्त से वर्षा की एकरूपता का अभाव रहेगा। कहीं पर वर्षा कम तो कहीं पर अत्यधिक वर्षा होगी।

रोहिणी निवासो संधौ तत्फलम्-खण्ड वृष्टिश्च संधिषु-रोहिणी का वास संधि में होने से इस वर्ष देश में खण्डवृष्टि अर्थात् कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक से बाढ़ का प्रकोप तो कुछ क्षेत्रों में वर्षा की न्यूनता से सूखा, पेयजल संकट बनेगा।

समय निवासो वणिक् गृहे तत्फलम्-वणिक् गृहे शुभं नास्ति-समय का निवास वैश्य के घर होने से धन का प्रसार अधिक होगा। अनुकूल वर्षा की कमी रहने से सभी अनाज, धान्यादि तथा दुग्धादि पेय पदार्थों के भाव तेज रहेंगे। महंगाई से जनता परेशान रहेगी। व्यापारी वर्ग विशेष रूप से फायदे में रहेगा।

वर्ष के स्तम्भ-संवत्सर विचार में ग्रहों के मत्रिमंडल के अतिरिक्त वर्ष के चार स्तम्भों, जल, तृण, वायु तथा अन्न स्तम्भों का भी विचार किया होता है। वर्तमान संवत्सर में ज्येष्ठ तथा आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदाओ में क्रमशः मृगशिरा तथा पुनर्वसु नक्षत्र का अभाव होने से वर्ष में दो स्तम्भों का अभाव है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रेवती नक्षत्र युक्त होने से जल स्तंभ 49.61 प्रतिशत, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा में भरणी नक्षत्र सूर्योदय से सायं 18।39 तक होने से तृण स्तम्भ 68.78 प्रतिशत, ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा में मृगशिरा नक्षत्र का अभाव होने से वायु स्तम्भ 00.00 प्रतिशत तथा आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा में पुनर्वसु नक्षत्र का अभाव होने से अन्न स्तम्भ 00.00 प्रतिशत आता है। अतः संवत्सर में वायु से कष्ट रहेगा, तेज आंधियां चलेंगी। अन्न की स्थिति कष्टकारी बनेगी। जल तथा तृण, हर्बल्स, भूसा आदि पशु आहार, भूसा वाले [illegible]

चैत्र शुक्ल पक्षः -1

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 25 मार्च से 8 अप्रैल 2020 ई., रा. मिति 5 से 19 चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घं मि)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
चैत्र 05	बु	1 27 53 17 30	रे 60 00 - -	ब्र 23 15 15 39	ब 27 53 17 30	30 40	06 20 18 34	12 29 25	मीन	11 10 40 03	59/27	07 02 19 29	नवसंवत् प्रा., नवरात्र प्रा., घटस्थापन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रदर्शन मु. 30
06	गु	2 34 02 19 56	रे 02 29 07 19	ऐं 25 28 16 30	बा 01 01 06 44	30 44	06 19 18 35	13 चैत्र: 01 26	मे.07।19	11 11 39 30	25	07 32 20 20	सिंधारा 2, चेटीचण्ड, झूलेलाल ज., पंचक स. 07।16, ❖
07	शु	3 39 53 22 15	अ 09 44 10 12	वै 27 28 17 17	तै 07 02 09 07	30 49	06 18 18 35	14 02 27	मेष	11 12 38 55	23	08 03 21 13	गणगौर तीज मेला (राज) (चैत्र), गौरी 3, मनोरथ 3, A
08	श	4 45 09 24 21	भ 16 34 12 54	वि 29 06 17 55	व 12 38 11 20	30 53	06 17 18 36	15 03 28	वृ.19।33	11 13 38 19	20	08 36 22 07	भ. 11।18 से 24।18 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.), वृषे B
09	र	5 49 31 26 04	कृ 22 40 15 20	प्री 30 06 18 18	ब 17 30 13 16	30 57	06 16 18 36	16 04 29	वृष	11 14 37 39	18	09 12 23 02	श्री पंचमी, हयव्रत पंचमी, मकरे गुरुः 28।52
10	चं	6 52 37 27 18	रो 27 44 17 20	आ 30 15 18 21	कौ 21 16 14 45	31 01	06 15 18 37	17 05 30	मि.30।08	11 15 36 58	16	09 53 23 59	स्कंद षष्ठी, यमुना ज., मेला माइसर खाना (अमृतसर)
11	मं	7 54 08 27 53	मृ 31 22 18 46	सौ 29 15 17 56	ग 23 37 15 40	31 06	06 14 18 37	18 06 31	मिथुन	11 16 36 14	13	10 39 24 00	भ. 27।50 से, भोलावनी, जैन ओली प्रा., रेवत्यां सूर्य: 07।11
12	बु	8 53 47 27 43	आ 33 18 19 32	शो 26 55 16 58	वि 24 13 15 54	31 10	06 12 18 38	19 07 A1	मिथुन	11 17 35 28	11	11 30 00 55	भ. 15।51 तक, मूर्ख दि., मे. मनसा देवी, बसन्त दुर्गाष्टमी, C
13	गु	9 51 27 26 46	पुन 33 20 19 31	अति 23 03 15 24	बा 22 54 15 21	31 14	06 11 18 38	20 08 02	क.13।36	11 18 34 40	09	12 28 01 51	रामनवमी, नवरात्र समाप्त A मत्स्य ज., गंडमूल स. 10।09
14	शु	10 47 09 25 02	पु 31 23 18 43	सु 17 35 13 12	तै 19 34 14 00	31 18	06 10 18 39	21 09 03	कर्क	11 19 33 49	06	13 31 02 44	धर्मराज दशमी, नवरात्रोत्थापन, गंडमूल प्रा. 18।40
15	श	11 41 00 22 33	आ 27 35 17 11	धृ 10 35 10 23	व 14 19 11 52	31 23	06 09 18 40	22 10 04	सिं.17।11	11 20 32 56	04	14 37 03 33	भ. 11।50 से 22।30 तक, कामदा 11 व्रत, फूलडोल 11 वृंदा.
16	र	12 33 20 19 28	म 22 10 15 00	शू 02 10 07 00 / गं 52 34 27 10	ब 07 22 09 05	31 27	06 08 18 40	23 11 05	सिंह	11 21 32 01	02	15 44 04 18	प्रदोष व्रत, हरिदमनोत्सव, वामन 12, गंडमूल स. 14।57
17	चं	13 24 30 15 55	पूफा 15 30 12 19	वृ 42 11 22 59	तै 24 30 15 55	31 31	06 07 18 41	24 12 06	क.17।35	11 22 31 03	00	16 52 05 01	महावीर जयंती, अनंग त्रयोदशी व्रत ❖ शाबान मु. मास 8
18	मं	14 14 56 12 04	उफा 08 01 09 18	ध्रु 31 20 18 38	व 15 56 12 04	31 35	06 06 18 41	25 13 07	कन्या	11 23 30 03	58/58	18 01 05 41	भ. 12।02 से 22।03 तक, दमनक 14, श्री सत्यनारायण D
19	बु	15 05 08 08 07	ह 00 12 06 09 / चि 52 32 27 05	व्या 20 24 14 14	बव 05 08 08 07	31 40	06 04 18 42	26 14 08	तु.16।36	11 24 29 02	56	19 09 06 21	हनुमान ज., पूर्णिमा व्रत, वैशाख स्नान प्रा., B शुक्रः 15।41

C मासिक दुर्गाष्टमी D पूजा, विश्व स्वास्थ्य दि., मीने बुधः 14।27

चैत्र शु. 8 बुध प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 1 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	02	09	10	09	01	09	02	08	00	10	09
17	12	06	21	00	03	06	09	09	11	25	00
35	23	41	08	15	22	31	17	17	03	08	42
28	45	07	44	24	37	46	20	20	07	17	23
59	775	41	77	07	55	03	00	00	03	02	00
13	01	42	45	27	40	43	19	19	14	08	43
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible] 1	[illegible] 2	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 2	[illegible] 3	[illegible] 3	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 2

1 ह. | नें.11बु. | 10मं. श.गु. प्लू. | 2 शु. | 12 सू. | 9 के. | 3 चं.रा. | 6 | 4 | 8 | 5 | 7

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष बुधवार, रेवती नक्षत्र, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार दिनांक 25 मार्च से 8 अप्रैल 2020 तक रहेगा। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति होगा। इस पक्ष में पड़वा आठं पूर्णिमा बुधवारी होने से देश में महंगाई का जोर रहेगा। प्रजा परेशान रहेगी। प्रमादी नाम संवत्सर के योग से वि.सं. 2077 प्रारंभ हो रहा है। प्रमादी नाम संवत्सर के प्रभाव से वर्षा तथा कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। प्रजा का जीवन कष्टमय रहेगा। अधिकार सम्पन्न तथा सत्ता शिखर पर विराजमान व्यक्तियों, राजपुरुषों के मध्य परस्पर ईर्ष्या तथा द्वेष बढ़ेगा। दिनांक 6 अप्रैल, 2020 को आनन्द नाम संवत्सर प्रवृत हो जायेगा। **आनंदाब्दे खिला लोकाः सर्वानन्द चेतसः। राजानः सुखिनः सर्वे बहु सस्यार्घ वृष्टिभिः॥** अर्थात् आनंद नाम संवत्सर से प्रजाजन सुखी रहें। राजा सुखी तथा धान्यों की पैदावार अच्छी हो। वर्षा उत्तम एवं समयानुकूल होती है। अन्नादि का भाव सस्ता रहे। सर्वत्र सुभिक्ष का वातावरण रहे। चैत्र मास पांच मंगलवार तथा पांच बुधवार युत है। पांच मंगलवार युत होने से-**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** पश्चिमी देशों में रक्तपात, आंतकवाद की घटनायें घटित होंगी। किन्हीं स्थानों पर सत्ता परिवर्तन होगा। लाल वर्ण की वस्तुओं तथा धान्यों में तेजी आयेगी। पांच बुधवार होने से **'बुधस्य पंच वाराश्चेन्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तम् सुभिक्ष च प्रजायेत॥'** किन्हीं स्थानों पर अच्छी वर्षा तो किन्हीं स्थानों पर साधारण वर्षा रहेगी। गत संक्रांति से तीसरे दिन तीसरे नक्षत्र की 45 मुहूर्ति मीन संक्रांति में राजनेताओं में परस्पर विरोध विवाद होगा। धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। घी, गुड़, खांड आदि रसकसों, कुसुंभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओं, सोना, चांदी तथा वस्त्रादि में तेजी रहेगी। गाय भैंस, घोड़ा, हाथी आदि पशुओं के व्यापार में वृद्धि होगी। वर्ष का प्रारम्भ बुधवार से वर्ष मध्यम रहेगा। चातुर्मास में अच्छी वर्षा का योग होने के उपरान्त भी बुधवारी अष्टमी से वर्षा की कमी रहेगी।

चैत्र शु.15 बुध, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 8 अप्रैल

1 ह. | 11 ने. | मं.गु. 10श. प्लू. | 2 शु. | 12 सू. बु. | 9 के. | 3 रा. | 6 चं. | 4 | 8 | 5 | 7

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	05	09	11	09	01	09	02	08	00	10	09
24	22	11	00	01	09	06	08	08	11	25	00
29	54	33	56	04	37	55	55	55	26	22	46
02	49	01	00	01	27	46	05	05	06	56	44
58	920	41	89	06	51	03	12	12	03	02	00
57	15	42	54	25	10	07	05	05	20	03	31
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 4	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 2

वैशाख कृष्ण पक्षः -2

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 9 से 23 अप्रैल सन् 2020 ई., रा. मिति 20 चैत्र से 03 वैशा. तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसंत-ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय अस्त घं. मि. घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय अस्त घं. मि. घं. मि.)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
00	बु	1 55 29 28 16	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः A गंडमूल प्रा. 20।11
चैत्र 20	गु	2 46 36 24 42	स्वा 45 35 24 17	ह 09 47 09 58 व 59 48 29 59	तै 20 57 14 26	31 44	06 03 18 42	27 15 09	तुला	11 25 27 58	58/54	20 17 07 02	शब्बे बारात C अम्बेडकर ज.
21	शु	3 38 51 21 35	वि 39 47 21 57	सि 50 55 26 24	ब 12 35 11 04	31 48	06 02 18 43	28 16 10	वृ.16।29	11 26 26 52	52	21 25 07 44	भ. 11।01 से 21।32 तक, गुड फ्राइडे
22	श	4 32 38 19 05	अ 35 32 20 14	व्य 43 22 23 22	ब 05 33 08 14	31 52	06 01 18 44	29 17 11	वृश्चिक	11 27 25 44	50	22 32 08 29	गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.), संकष्ट चतुर्थी, अनुसूईया ज., A
23	र	5 28 16 17 19	ज्ये 33 08 19 15	वरि 37 21 20 57	कौ 00 14 06 06	31 56	06 00 18 44	30 18 12	ध.19।15	11 28 24 35	48	23 35 09 18	गुरु तेग बहादूर जयंती, ईस्टर सण्डे
24	चं	6 25 57 16 22	मू 32 45 19 05	परि 32 59 19 11	व 25 57 16 22	32 00	05 59 18 45	वैशा. 01 19 13	धनु	11 29 23 23	46	24 00 10 10	भ. 16।19 से 28।09 तक, वैशाखी, मेष संक्रांति, गंडमूल B
25	मं	7 25 41 16 14	पूषा 34 23 19 43	शि 30 15 18 04	ब 25 41 16 14	32 04	05 58 18 45	02 20 14	म.26।00	00 00 22 10	45	00 33 11 05	गुरु अर्जनदेव ज., मासिक कालाष्टमी व्रत, C
26	बु	8 27 23 16 54	उषा 37 55 21 07	सि 29 03 17 34	कौ 27 23 16 54	32 08	05 57 18 46	03 21 15	मकर	00 01 20 56	43	01 26 12 02	शीतला अष्टमी, बूढ़ा बासोड़ा
27	गु	9 30 47 18 14	श्र 43 01 23 08	सा 29 08 17 35	गर 30 47 18 14	32 12	05 56 18 46	04 22 16	मकर	00 02 19 39	41	02 13 12 58	B स. 19।02, अश्विन्यां मेषे सूर्यः 20।27
28	शु	10 35 29 20 07	ध 49 19 25 38	शुभ 30 15 18 01	व 03 01 07 07	32 16	05 55 18 47	05 23 17	कुं.12।20	00 03 18 21	40	02 54 13 54	भ. 07।05 से 20।04 तक, पंचक प्रा. 12।18
29	श	11 41 06 22 20	शत 56 23 28 27	शु 32 05 18 44	ब 08 14 09 11	32 20	05 54 18 47	06 24 18	कुम्भ	00 04 17 01	38	03 31 14 48	वरूथिनी एकादशी व्रत, वल्लभाचार्य ज.
30	र	12 47 13 24 46	पूभा 60 00 - -	ब्र 34 19 19 36	कौ 14 08 11 32	32 24	05 53 18 48	07 25 19	मी.24।40	00 05 15 40	36	04 04 15 41	ग्रीष्म ऋतु प्रा., सायन वृष संक्रांति
31	चं	13 53 27 27 15	पूभा 03 54 07 25	ऐं 36 43 20 33	ग 20 21 14 00	32 28	05 52 18 49	08 26 20	मीन	00 06 14 17	35	04 35 16 33	भ. 27।12 से, सोम प्रदोष व्रत (कृष्ण)
वैशा. 01	मं	14 59 34 29 40	उभा 11 26 10 25	वै 39 04 21 28	वि 26 34 16 28	32 32	05 51 18 49	09 27 21	मीन	00 07 12 52	33	05 05 17 24	भ. 16।26 तक, गंडमूल प्रा. 10।22, रा. वैशाख प्रा., बुधास्त 21।10
02	बु	30 60 00 - -	रे 18 47 13 20	वि 41 13 22 19	चतु 32 32 18 51	32 36	05 50 18 50	10 28 22	मे.13।20	00 08 11 25	31	05 35 18 16	तिथि वृद्धिः, पितृकार्य अमा., शुकदेव ज., पंचक स. 13।18
03	गु	30 05 23 07 58	अ 25 46 16 07	प्री 43 02 23 02	ना 05 23 07 58	32 40	05 49 18 50	11 29 23	मेष	00 09 09 56	29	06 05 19 08	गंडमूल स. 16।05, देवकार्य अमा., बाबू कुंबर सिंह जयंती

वैशाख कृ. 8 बुध, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 15 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	09	09	11	09	01	09	02	08	00	10	09
01	01	16	12	01	15	07	08	08	11	25	00
20	50	24	03	45	16	15	32	32	49	36	49
56	43	54	54	13	41	31	50	50	43	52	39
58	757	41	101	05	45	02	00	00	03	01	00
44	25	41	03	19	26	30	13	13	24	56	19
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
–	–	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ
अश्वि.1	उ.षा.2	श्रवण 2	उ.भा.3	उ.षा.2	रोहि.2	उ.षा.4	आर्द्रा 1	मूल 3	अश्वि.4	पू.भा.2	उ.षा.2

2 शु., 12 बु., 3 रा., 11 ने., 1 सू. ह., 10 चं. मं.गु.श.प्लू., 4, 5, 9 के., 6, 7, 8

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा बुधवार से प्रारंभ होकर गुरुवारी अमावस्या तदनुसार 9 से 23 अप्रैल तक रहेगा। पक्ष में मेष संक्रांति वैशाख कृष्ण षष्ठी दिनांक 13 अप्रैल चन्द्रवार होने से राज तंत्र में सुख-शांति को बढ़ायेगी। 22 अप्रैल वैशाख मावस को रेवती नक्षत्र होने से देश में पैदावार बढ़ेगी। प्रजा में सुख-शांति का विकास होगा। **मावस वैशाख में यदि रेवती नक्षत्र। धान्य उपज उत्तम हो सुख सुभिक्ष सर्वत्र।** अर्थात् प्रजा में खुशी हो। प्रतिपदा का क्षय होना कृषक वर्ग को हानिदायक योग। कृषि में रोगोत्पति का कारण बनेगा। आदिवासियों में पीड़ा बढ़ेगी। सत्ताधारी मंत्रीगणों में भी शत्रुता के कारण झलकेंगे। मास पांच बुधवार तथा पांच गुरुवार युत मास का प्रारम्भ बुधवार से होने से तीन मास तक अन्न में तेजी रहेगी। 13 अप्रैल कृष्ण पक्ष से संक्रांति में पाखण्डी, क्रूर बुद्धि देशों से आतंकवादियों को सहायता मिलती रहेगी। सभी प्रकार के श्वेत वस्त्रों, चांदी, चन्दन तथा अन्य श्वेत वस्तुओं की हानि होकर इनमें तेजी आयेगी। धान्यों की हानि से कहीं तेज तो कहीं मंदा रहेगा। सोमवारी संक्रांति में कपास, सूत, कपड़ा, गुड़, घी, तैल आदि वस्तुओं में तेजी बनेगी। रात्रि कालीन संक्रांति से शुभ फल होंगे। पक्ष तीन बुधवार युत होने से घी में तेजी रहेगी। पांच बुधवार होने से **'बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तम सुभिक्ष च प्रजायेत॥'** किन्हीं स्थानों पर अच्छी वर्षा तो किन्हीं स्थानों पर साधारण वर्षा योग रहेगा। कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। 12 अप्रैल रविवारी वैशाख कृ. पंचमी से अगले वर्ष की पंचमी में वर्षा नहीं होगी। पांच गुरुवार-**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रह पश्चिमी देशों** [illegible] **जायते॥** पश्चिमी देशों में विग्रह होगा। [illegible]

वैशाख कृ. 30 गुरु, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 23 अप्रैल

2 शु., 12 बु., 3 रा., 1 सू.चं. ह., ने., 10 मं. गु. श.प्लू., 11, 4, 7, 5, के., 6, 9, 8

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	00	09	11	09	01	09	02	08	00	10	09
09	08	21	26	02	20	07	08	08	12	25	00
09	02	58	23	22	47	32	07	07	17	51	51
56	06	00	01	28	58	37	24	24	10	43	14
58	717	41	113	03	36	01	09	09	03	01	00
30	37	34	57	58	50	45	20	20	27	46	05
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ
अश्वि.3	अश्वि.3	श्रवण 4	रेवती 3	उ.षा.2	रोहि.4	उ.षा.4	मृग.4	मूल 2	अश्वि.4	पू.भा.2	उ.षा.2

तो किन्हीं स्थानों पर साधारण वर्षा योग रहेगा। कृषि उत्पादन ... पांच गुरुवार-यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः।

वैशाख शुक्ल पक्षः -3

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 24 अप्रैल से 7 मई सन् 2020 ई., रा. मिति 4 से 17 वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घं मि)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय अस्त (घं मि घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. (रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय अस्त (घं मि घं मि)	निम्नांकित संदर्भ
04	शु	1 10 41 10 04	धर 32 14 18 42	आ 44 26 23 34	बव 10 41 10 04	32 44	05 48 18 51	12 30 24	वृ.25।18	00 10 08 26	58 27	06 38 20 02	चन्द्रदर्शन मु. 30, मेष बुधः 26।37, देवदामोदर पुण्य ❖
05	श	2 15 19 11 55	कृ 38 03 21 00	सौ 45 16 23 53	कौ 15 19 11 55	32 48	05 47 18 52	13 स.01 25	वृष	00 11 06 53	25	07 13 20 58	परशुराम ज., वीर शिवाजी ज., रमजान मु. मास 9, रोजे शुरू
06	र	3 19 09 13 26	रो 43 01 22 59	शो 45 25 23 56	गर 19 09 13 26	32 52	05 46 18 52	14 02 26	वृष	00 12 05 19	23	07 52 21 54	भ. 26।00 से, अक्षय 3, मातंगी ज., वर्षी तप, कल्पादि 3
07	चं	4 21 59 14 33	मृ 46 57 24 32	अ 44 45 23 39	वि 21 59 14 33	32 55	05 45 18 53	15 03 27	मि.11।49	00 13 03 42	21	08 36 22 51	भ. 14।30 तक, गणेश चतुर्थी व्रत, मृगे शुक्रः 17।01, ❑
08	मं	5 23 37 15 11	आ 49 38 25 35	सु 43 05 22 58	बा 23 37 15 11	32 59	05 44 18 53	16 04 28	मिथुन	00 14 02 03	19	09 25 23 46	शंकराचार्य ज., सूरदास ज. ❖ तिथि (असम)
09	बु	6 23 50 15 15	पुन 50 52 26 04	धृ 40 16 21 50	तै 23 50 15 15	33 03	05 43 18 54	17 05 29	क.20।00	00 15 00 23	17	10 20 24 00	चंदन छठ, रामानुजाचार्य जयंती ❑ भरण्यां सूर्यः 12।12
10	गु	7 22 29 14 42	पु 50 32 25 55	शू 36 12 20 11	व 22 29 14 42	33 07	05 43 18 55	18 06 30	कर्क	00 15 58 40	15	11 19 00 39	भ. 14।39 से 26।08 तक, गंगा जयंती, गंडमूल प्रा. 25।52
11	शु	8 19 30 13 30	आ 48 35 25 08	गं 30 49 18 01	बव 19 30 13 30	33 10	05 42 18 55	19 07 M1	सिं.25।08	00 16 56 55	13	12 22 01 28	मजदूर दिवस, सीता नवमी, बगलामुखी ज., मासिक दुर्गाष्टमी
12	श	9 14 55 11 39	म 45 05 23 43	वृ 24 09 15 20	कौ 14 55 11 39	33 14	05 41 18 56	20 08 02	सिंह	00 17 55 08	11	13 26 02 13	गंडमूल स. 23।40
13	र	10 08 51 09 12	पूफा 40 13 21 45	ध्रु 16 18 12 11	ग 08 51 09 12	33 17	05 40 18 56	21 09 03	कं.27।11	00 18 53 19	09	14 32 02 55	भ. 19।45 से, मोहिनी एकादशी व्रत, विश्व हास्य दिवस
14	चं	11 01 31 06 16	उफा 34 17 19 22	व्या 07 26 08 38 / ह 57 49 28 47	वि 01 31 06 16	33 21	05 39 18 57	22 10 04	कन्या	00 19 51 29	07	15 38 03 34	भ. 06।13 तक, कुम्भे भौमः 20।39, रुक्मिणी द्वादशी
00	चं	12 53 14 26 57	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः A जयंती, छिन्नमस्ता ज., पीपल पूजन
15	मं	13 44 24 23 24	ह 27 38 16 41	व 47 46 24 45	कौ 18 52 13 11	33 24	05 38 18 58	23 11 05	तु.27।18	00 20 49 36	05	16 45 04 13	भौम प्रदोष व्रत (शुक्ल), अशोक त्रिरात्री व्रत
16	बु	14 35 25 19 48	चि 20 41 13 54	सि 37 38 20 41	गर 09 55 09 36	33 28	05 38 18 58	24 12 06	तुला	00 21 47 41	03	17 53 04 52	भ. 19।45 से, नरसिंह जयंती, श्री सत्यनारायण व्रतं पुण्यं च
17	गु	15 26 42 16 18	स्वा 13 53 11 10	व्य 27 44 16 42	वि 01 01 06 01	33 31	05 37 18 59	25 13 07	वृ.27।16	00 22 45 45	01	19 01 05 33	भ. 05।59 तक, बुद्ध ज., बुद्ध पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, कूर्म A

वैशाख शु. 8 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 1 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	03	09	00	09	01	09	02	08	00	10	09
16	18	27	12	02	24	07	07	07	12	26	00
56	41	29	24	48	58	43	41	41	44	05	50
55	55	54	18	32	47	36	58	58	46	13	56
58	820	41	126	02	25	00	01	01	03	01	00
14	42	23	00	32	07	59	27	27	27	36	09
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ

कुण्डली: 1 सू.बु.ह.; 2 शु.; 3 रा.; 4 चं.; 5; 6; 7; 8; 9 के.; 10 मं. गु.श.प्लू.; 11; 12 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष वैशाख शुक्ल प्रतिपदा शुक्रववार से प्रारंभ होकर वैशाख शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार तद्नुसार दिनांक 24 अप्रैल से 7 मई 2020 तक रहेगा। अंतर्राष्ट्रीय विश्व समुदाय में युद्धोत्पात का षड्यत्र रचा जायेगा। अन्न-पानी के अभाव में जनता में जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। चल रहे सामयिक कार्यों में गतिरोध क्षोभ का कारण बनेगा। शांति परिचर्चा मात्र छलावा ही समझें। इस्लामिक देश संगठित होते नजर आयेंगे। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती साम्यार्घ कारक है। पक्षारंभ के बने भाव अंत में पलट सकते हैं। कुंभ का मंगल धान्यादि भाव तथा जलीय वस्तुओं में तेजी करेगा। तिथि घटने-बढ़ने का फल- **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥** अर्थात् उपयोगी वस्तुओं के कमी के कारण रोजमर्रा की चीजें मिलना कठिन हो जायेंगी। उपज की वस्तुएं मंदी रहेंगी। ता. 13 अप्रैल मेष की संक्रांति लालवर्ण की वस्तुएं, तिलहन, हल्दी, गुवार, मूल पदार्थ आदि तेज तो अरहर, मूंग, मसूर, मटर आदि मंदा करेगी। ता. 18 अप्रैल रेवती बुध एक सप्ताह में चांदी में भारी मंदी तो तिलहन, घी, गुड़, दालों में मंदा तो लालवर्ण की वस्तुऐं, लालमिर्च, सोना आदि में तेजी कारक है। महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, बंगाल एवं उड़ीसा के तटीय भू-भागों में तूफान, चक्रवात और वर्षा से जन-जीवन बाधित हो सकता है। देश के अधिकांश भागों में मौसम साफ रहेगा। मौसम का परिवर्तन, गर्मी बढ़ने और हवा में उष्णता बढ़ने से होगी। जिससे गर्मी का प्रकोप समय से पहले आश्चर्य जनक तरीकों से अपने पराकाष्ठा की ओर बढ़ता जायेगा। जिससे जन-जीवन कष्ट का अनुभव करेंगे।

वैशाख शु. 15 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 7 मई

कुण्डली: 1 सू.बु.ह.; 2 शु.; 3 रा.; 4; 5; 6; 7 चं.; 8; 9 के.; 10 गु.श.प्लू.; 11 मं.ने.; 12

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	06	10	00	09	01	09	02	08	00	10	09
22	16	01	25	03	26	07	07	07	13	26	00
45	27	37	16	00	57	47	22	22	05	14	49
45	26	44	23	27	17	45	53	53	21	20	30
58	900	41	130	01	13	00	07	07	03	01	00
03	55	13	14	25	50	24	07	07	25	27	19
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः -4

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 8 से 22 मई सन् 2020 ई., ग. मिति 18 वैशा. से 1 ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वा	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घ प)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय अस्त (घं मि घं मि)	दिनांक प्र. मु. अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा. अं. क. वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय अस्त (घं मि घं मि)	
वैशा 18	शु	1 18 41 13 05	वि 07 41 08 40	वरि 18 25 12 58	कौ 18 41 13 05	33 34	05 36 18 59	26 14 08	वृश्चिक	00 23 43 47	58/00	20 10 06 16	रेड क्रॉस डे ❖ वृषे बुध: 09।50
19	श	2 11 47 10 18	अ 02 31 06 36 / ज्ये 58 44 29 05	प 10 02 09 36	ग 11 47 10 18	33 38	05 36 19 00	27 15 09	ध.29।05	00 24 41 47	57/58	21 17 07 04	भ. 21।05 से, नारद जयंती, मदर्स डे, गंडमूल प्रा. 06।33, ❖
20	र	3 06 20 08 07	मू 56 42 28 16	शि 02 51 06 43 / सि 57 04 28 24	वि 06 20 08 07	33 41	05 35 19 01	28 16 10	धनु	00 25 39 46	57	22 20 07 56	भ. 08।04 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.), गंडमूल स. 28।13❑
21	चं	4 02 40 06 38	पूषा 56 36 28 13	सा 52 53 26 43	बा 02 40 06 38	33 44	05 34 19 01	29 17 11	धनु	00 26 37 43	56	23 17 08 52	शनि वक्री 28।36 ❑ कृतिकायां सूर्य: 30।27
22	मं	5 00 57 05 56	उषा 58 28 28 57	शुभ 50 17 25 40	तै 00 57 05 56	33 47	05 34 19 02	30 18 12	म.10।19	00 27 35 39	54	24 00 09 50	A प्रा. 19।22, गुरु वक्री 29।19, वृषे सूर्य: 17।20
23	बु	6 01 14 06 02	श्र 60 00 - -	शु 49 13 25 14	व 01 14 06 02	33 50	05 33 19 02	31 19 13	मकर	00 28 33 34	53	00 08 10 48	भ. 06।00 से 18।20 तक, शुक्र वक्री 11।52
24	गु	7 03 24 06 54	श्र 02 12 06 25	ब्र 49 28 25 19	ब 03 24 06 54	33 53	05 32 19 03	ज्ये. 01 20 14	कुं.19।24	00 29 31 27	52	00 52 11 45	वृष संक्रांति मु. 30, मासिक कालाष्टमी व्रत, पंचक A
25	शु	8 07 13 08 25	ध 07 31 08 32	ऐं 50 46 25 50	कौ 07 13 08 25	33 56	05 32 19 04	02 21 15	कुम्भ	01 00 29 19	51	01 31 12 41	श्री दादूदयाल पुण्य तिथि
26	श	9 12 17 10 26	श 14 02 11 08	वै 52 47 26 38	ग 12 17 10 26	33 59	05 31 19 04	03 22 16	कुम्भ	01 01 27 10	49	02 05 13 35	भ. 23।31 से B संक्रांति, भौम प्रदोष व्रत, गंडमूल स. 22।37
27	र	10 18 06 12 45	पूभा 21 16 14 01	वि 55 09 27 34	वि 18 06 12 45	34 02	05 31 19 05	04 23 17	मी.07।17	01 02 25 00	48	02 37 14 27	भ. 12।43 तक, बुधोदय 09।43
28	चं	11 24 13 15 11	उभा 28 46 17 00	प्री 57 33 28 31	बा 24 13 15 11	34 05	05 30 19 05	05 24 18	मीन	01 03 22 49	47	03 07 15 18	अपरा एकादशी व्रत, गंडमूल प्रा. 16।58
29	मं	12 30 11 17 34	रे 36 06 19 56	आ 59 43 29 23	तै 30 11 17 34	34 08	05 30 19 06	06 25 19	मे.19।56	01 04 20 36	46	03 37 16 10	पंचक स. 19।53, मधुसूदन द्वादशी
30	बु	13 35 40 19 45	अ 42 56 22 40	सौ 60 00 - -	ग 03 01 09 42	34 10	05 29 19 07	07 26 20	मेष	01 05 18 23	45	04 07 17 02	भ. 19।43 से, वट सावित्री व्रत प्रा. (अमा.), सायन मिथुन B
31	गु	14 40 26 21 39	भ 49 04 25 06	सौ 01 25 06 03	वि 08 10 08 45	34 13	05 29 19 07	08 27 21	मेष	01 06 16 08	43	04 39 17 56	भ. 08।42 तक C प्रा., देवपितृकार्य अमा., भावुका अमावस्या
ज्ये. 01	शु	30 44 18 23 11	कृ 54 19 27 12	शो 02 31 06 28	चतु 12 29 10 28	34 16	05 28 19 08	09 28 22	वृ.07।40	01 07 13 52	42	05 13 18 51	शनैश्चर जयंती, वट सावित्री व्रत स. (अमा.), रा. ज्येष्ठ C

▲ सकेंगे। लेकिन छठे मास में हानि की संभावना रहेगी। आकाश में उल्का पिंड अतिचार योग बनेगा तथा कृत्तिम ग्रहों में व्याधि खराबी का योग बनेगा। ज्येष्ठ मासे रवि तपें, उष्ण चलत जग वाय। तो जानो धन बहुत परत ध रती सकें न समाय। ज्येष्ठी अमावस्या को रहे नभ निर्मल दिन-रात। तो आगे वर्षांत में वर्षा उत्तम जान। **जेठ बदी प्रतिपदा को सोम शुक्र गुरुवार। वर्षा हो अत्यंत ही उत्तम पैदावार॥** आगे वर्षा काल में महान वर्षा करेगी।

ज्येष्ठ कृ. 8 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 15 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	10	10	01	09	01	09	02	08	00	10	09
00	05	07	12	03	27	07	06	06	13	26	00
29	07	06	15	05	38	47	57	57	32	25	46
19	50	28	47	53	29	51	27	27	22	02	02
57	728	40	121	00	04	00	00	00	03	01	00
52	38	56	34	05	12	23	08	08	20	14	32
-	-	मा	मा	व	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
2	4	1	1	2	2	4	4	2	1	2	2
कृति.	धनि.	शत.	रोहि.	उ.षा.	मृग.	उ.षा.	मृग.	मूल.	भरणी	पू.भा.	उ.षा.

3 रा. | 1 ह. | 4 | 2 सू. बु.शु. | 11 चं.मं.ने. | 12 | 5 | 8 | 10 गु.श.प्लू. | 6 | 9 के. | 7

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शुक्रवार विशाखा नक्षत्र से प्रारंभ होकर शुक्रवारीय अमावस्या कृतिका नक्षत्र तदनुसार दिनांक 8 से 22 मई 2020 तक रहेगा। मा॰ वृष संक्रांति ज्येष्ठ वदी 7 गुरुवार से धन-धान्य का भाव समान रहेगा। पांच शुक्रवार युत मास में '**शुक्रस्य पंचवारास्युर्यत्र मासे निरन्त्रम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्ष च सुखं तत्र प्रवर्तते॥**' राजा-प्रजा में सौहार्द की भावना बढ़ेगी। उत्तम वर्षा होगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी। रूख मंदे का रहेगा। रसकसों में भी मंदे का प्रभाव रहेगा। मास में बन रहे योगों से व्यापार तथा कृषि की स्थिति में निरन्तर परिवर्तन होता रहेगा॥ 08 मई शुक्रवारी ज्येष्ठ कृ. प्रतिपदा से चातुर्मास में कृषि उत्पादन अच्छा होगा। धन-धान्य वृद्धि होगी। 22 मई-आकाश साफ रहेगा तथा चातुर्मास में अच्छी वर्षा होगी। गुरुवारी संक्रांति साम्यार्घ कारक है। कालसर्प योग में तीन वक्री ग्रह अत्यंत हानि पहुंचाते हैं। **जिस समय दो ग्रह वक्री नृप को क्षोभ बढ़ाय। तीन ग्रह वक्री हों तो युद्ध वर्षा भय दाय॥** देश का शासक वर्ग पीड़ित होगा। 30 मुहूर्ति संक्रांति से मध्यम वर्षा होगी। कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। शासक तथा शासित समान रूप से सुखी रहेंगे। वृष संक्रांति के दिन वर्षा हुई तो छूत के रोगों का प्रकोप होगा। चोरों तथा अनावृष्टि से कृषि नष्ट होगी। चौपायें दुधारू पशुओं तथा जनसामान्य को विभिन्न उपद्रवों के कारण कष्ट होगा। धान्य तथा किराना का संग्रह कर पाचवें मास में बेचने से लाभ होगा। **"वृषराशौ यदा सूर्य कनक कान्त महर्घता। वात च बहते दीर्घ कर्पासादि विनाशनम्॥ सोम पुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुमच्चि लक्षणम्। मेदिनी नव खंडेषु कलहश्च महद्भयम्॥"** कलह योग बनेगा। इस पक्ष में रुई, सूत, कपास, सोना, [illegible] का संग्रह करें तो पांचवें मास कार्तिक में लाभ प्राप्त कर▲▲

ज्येष्ठ कृ. 30 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 22 मई

रा. 3 | चं. ह. 1 | 4 | 12 | 2 शु. सू.बु. | मं.ने. 11 | 5 | 8 | 10 गु.श. प्लू. | 6 | 9 के. | 7

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	00	10	01	09	01	09	02	08	00	10	09
07	28	11	25	03	26	07	06	06	13	26	00
13	54	51	26	00	11	42	35	35	55	32	41
52	04	45	14	41	02	50	12	12	23	55	38
57	732	40	102	01	20	01	03	03	03	01	00
43	49	33	58	25	51	03	23	23	14	01	43
-	-	मा	मा	व	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
4	1	2	1	2	1	4	4	2	1	2	2
कृति.	कृति.	शत.	मृग.	उ.षा.	मृग.	उ.षा.	मृग.	मूल.	भरणी	पू.भा.	उ.षा.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः -5

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 23 मई से 5 जून सन् 2020 ई., रा. मिति 2 से 15 ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	वा	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. (रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	नति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
ज्ये 02	श	1 47 10 24 20	रो 58 36 28 54	अ 02 53 06 37	किं 15 52 11 49	34 18	05 28 19 08	10 29 23	वृष	01 08 11 34	57 41	05 51 19 48	करवीर व्रत, दशाश्वमेध घाट स्नान प्रा. (काशी)
03	र	2 49 01 25 04	मृ 60 00 - -	सु 02 29 06 27	बा 18 14 12 45	34 20	05 27 19 08	11 30 24	मि.17I36	01 09 09 15	39	06 33 20 46	चन्द्रदर्शन मु. 30, रोहिण्यां सूर्यः 26I37, मिथुने बुधः 23I57
04	चं	3 49 45 25 21	मृ 01 53 06 12	धृ 01 15 05 57 / शू 59 10 29 07	तै 19 32 13 16	34 23	05 27 19 09	12 सव्वा 01 25	मिथुन	01 10 06 55	38	07 21 21 42	रंभा 3 व्रत, ईद-उल-फितर (मीठी ईद), सव्वाल मु. मास 10
05	मं	4 49 23 25 12	आ 04 05 07 05	गं 56 12 27 55	व 19 43 13 20	34 25	05 27 19 10	13 02 26	क.25I27	01 11 04 34	37	08 15 22 36	भ. 13I17 से 25I09 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.)
06	बु	5 47 52 24 35	पुन 05 11 07·31	वृ 52 19 26 22	ब 18 46 12 57	34 27	05 26 19 11	14 03 27	कर्क	01 12 02 11	35	09 13 23 26	नेहरू पुण्य दिवस **A** मासिक दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती
07	गु	6 45 11 23 30	पु 05 09 07 29	ध्रु 47 30 24 26	कौ 16 40 12 06	34 29	05 26 19 11	15 04 28	कर्क	01 12 59 46	34	10 15 24 00	अरण्य षष्ठी, जामित्र 6 (बंगाल), गंडमूल प्रा. 07I27
08	शु	7 41 21 21 58	आ 03 58 07 01	व्या 41 47 22 08	ग 13 25 10 48	34 31	05 26 19 12	16 05 29	सिं.07I01	01 13 57 21	32	11 18 00 12	भ. 21I56 से, **शुक्र अस्त 20I56**
09	श	8 36 27 20 00	म 01 40 06 05 / पूफा 58 19 28 45	ह 35 11 19 30	वि 09 02 09 02	34 33	05 26 19 12	17 06 30	सिंह	01 14 54 53	31	12 21 00 54	भ. 09I00 तक, गंडमूल स. 06I03, **A**
10	र	9 30 36 17 40	उफा 54 06 27 04	व 27 47 16 32	बा 03 39 06 53	34 35	05 25 19 13	18 07 31	कं. 10I22	01 15 52 25	30	13 25 01 33	महेश नवमी **B** चम्पक द्वादशी
11	चं	10 23 58 15 00	ह 49 11 25 06	सि 19 45 13 19	ग 23 58 15 00	34 37	05 25 19 13	19 08 J1	कन्या	01 16 49 55	28	14 29 02 10	भ. 25I32 से, श्री गंगा दशहरा (मे. हरिद्वार), रामेश्वर ❖
12	मं	11 16 47 12 08	चि 43 51 22 57	व्य 11 14 09 54	वि 16 47 12 08	34 39	05 25 19 14	20 09 02	तु. 12I02	01 17 47 23	27	15 34 02 47	भ. 12I05 तक, निर्जला एकादशी व्रत ❖ प्रतिष्ठा दि.
13	बु	12 09 18 09 08	स्वा 38 22 20 46	व 02 27 06 24 / परि 53 40 26 53	बा 09 18 09 08	34 40	05 25 19 14	21 10 03	तुला	01 18 44 51	26	16 40 03 26	प्रदोष व्रत (शुक्ल), वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा) प्रा., **B**
14	गु	13 01 51 06 09	वि 33 07 18 39	शि 45 08 23 28	तै 01 51 06 09	34 42	05 25 19 15	22 11 04	वृ.13I10	01 19 42 17	25	17 48 04 07	भ. 27I16 से, **C** श्री सत्यनारायण पूजा, कबीर ज., विश्व **D**
00	गु	14 54 45 27 19	0 00 00 00 00	00 00 00 00 00	० 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः **D** पर्यावरण दिवस, गंडमूल प्रा. 16I43
15	शु	15 48 21 24 45	अ 28 24 16 46	सि 37 07 20 15	वि 21 27 13 59	34 43	05 24 19 15	23 12 05	वृश्चिक	01 20 39 43	24	18 56 04 52	भ. 13I57 तक, वट सावित्री व्रत (पू.) स., पूर्णिमा व्रत. **C**

शुक्र अस्तः 29 मई 2020

ज्येष्ठ शु. 8 शनि, प्रातः 5I30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 30 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	04	10	02	09	01	09	02	08	00	10	09
14	12	17	07	02	22	07	06	06	14	26	00
54	59	13	30	43	21	31	09	09	20	40	35
53	22	55	32	28	54	26	45	45	40	08	07
57	840	39	77	02	35	01	00	00	03	00	00
32	12	58	20	53	05	47	18	18	05	47	54
-	-	मा	मा	व	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ

कुंडली (30 मई): 1 ह.; 2 सू. शु.; 3 बु.रा.; 4; 5 चं.; 6; 7; 8; 9 के.; 10 गु.श.प्लू.; 11 मं. ने.; 12

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शनिवारीय प्रतिपदा रोहिणी नक्षत्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा शुक्रवारीय अनुराधा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 23 मई से 5 जून 2020 तक रहेगा। **ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा यदि स्यानमंदवासराः। छत्रभंग प्रजा पीड़ा दुर्भिक्षं च तदादिशंत॥** देश-प्रदेश में राजनैतिक संकट गहराएगा। उपयोगी वस्तुओं का अभाव रहेगा। सुदी पक्ष में चतुर्दशी का क्षय होने से महंगाई बढ़ेगी। **पड़वा पांचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करै तेजी जब हो क्षीण॥** शुक्र ज्येष्ठ में अस्त होने से महावर्षा कारक। आषाढ़ में अनाजों में भारी तेजी। रुई, कालीमिर्च, सोना, चांदी आदि में तेजी कारक। बुधे मिथुन राशिस्थौ महर्घ च चतुष्पदाम्। तथा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्॥ सब्जी, फल-फूल, घी, दूध, दही, मेवा, मिष्ठान्न, तेल, साबुन, पेय पदार्थ, सूती वस्त्र, दाल, चावलों में तेजी संभव। मूंग, घी, सोना, चांदी के भाव तेज रहेंगे। गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी आदि, चौपाये पशु एवं वाहनों के भाव तेज होंगे। रस युक्त वस्तुएं सस्ती होंगी। तृण-घास, खल, पशु आहार में तेजी चलेगी। ता. 24 मई को सूर्य रोहिणी में प्रवेश करेंगे। ता. 3 जून को मंगल शत्रु शनि की राशि कुंभ में, ता. 9 मई को बुध वृष में जिससे मास के प्रारंभ से ही मौसम का मिजाज कुछ उपद्रवकारी हो सकता है। वायु-वेग तथा मेघा गमन की स्थिति भी उपद्रवकारी हो सकती है। ता. 14 को सूर्य की वृष संक्रांति अग्निमण्डल में पड़ने से मैदानी भू-भागों में गर्मी का प्रकोप अपनी चरम सीमा पर रहेगी। तापमान वृद्धि के कारण मृत्यु ग्राफ में वृद्धि हो सकती है। चित्रा स्वाती विशाखा जो जेठ मास बरसाय। अन्न भाव मंहगा रहे सावन वर्षा न आय। योग बने तो संकट दायक वर्ष रहेगा।

ज्येष्ठ शु. 15 शुक्र, प्रातः 5I30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 जून

कुंडली (5 जून): 1 ह.; 2 सू. शु.; 3 बु. रा.; 4; 5; 6; 7; 8 चं.; 9 के.; 10 गु.श.प्लू.; 11 मं.ने.; 12

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	07	10	02	09	01	09	02	08	00	10	09
20	09	21	14	02	18	07	05	05	14	26	00
39	53	12	12	23	39	19	50	50	38	44	29
43	41	18	55	00	43	09	40	40	44	14	19
57	867	39	56	03	37	02	01	01	02	00	01
25	51	28	04	56	33	18	23	23	56	35	01
-	-	मा	मा	व	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ

आषाढ़ कृष्ण पक्षः -6

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 6 से 21 जून सन् 2020 ई., रा. मिति 16 से 31 ज्येष्ठ तक। रवि उत्तर-दक्षिणायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान (घं. मि.)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	
ज्ये 16	श	1 42 59 22 36	ज्ये 24 36 15 15	सा 29 54 17 22	बा 15 31 11 37	34 45	05 24 19 16	24 13 06	ध.15।15	01 21 37 07	57/23	20 01 05 42	गुरु हरगोविन्द ज.
17	र	2 38 56 20 59	मूल 22 03 14 13	शुभ 23 43 14 53	तै 10 46 09 43	34 46	05 24 19 16	25 14 07	धनु	01 22 34 30	22	21 03 06 36	गंडमूल स. 14।10, मृगे सूर्य: 24।32
18	चं	3 36 28 19 59	पूषा 20 59 13 48	शु 18 46 12 55	व 07 29 08 24	34 47	05 24 19 16	26 15 08	म.19।48	01 23 31 53	21	21 58 07 34	भ. 08।21 से 19।57 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.), A
19	मं	4 35 44 19 42	उषा 21 36 14 03	ब्र 15 12 11 29	ब 05 52 07 45	34 48	05 24 19 17	27 16 09	मकर	01 24 29 15	21	22 46 08 34	A शुक्र उदय: 25।38
20	बु	5 36 48 20 07	श्र 23 59 15 00	ऐं 13 02 10 37	कौ 06 03 07 49	34 49	05 24 19 17	28 17 10	कुं.27।44	01 25 26 36	20	23 28 09 33	पंचक प्रा. 27।41
21	गु	6 39 34 21 14	ध 28 04 16 38	वै 12 16 10 19	ग 07 59 08 36	34 50	05 24 19 18	29 18 11	कुम्भ	01 26 23 56	20	24 00 10 30	भ. 21।11 से,
22	शु	7 43 47 22 55	श 33 37 18 51	वि 12 44 10 30	वि 11 31 10 01	34 51	05 24 19 18	30 19 12	कुम्भ	01 27 21 17	19	00 05 11 26	भ. 09।58 तक
23	श	8 49 04 25 02	पूभा 40 15 21 30	प्री 14 10 11 04	बा 16 20 11 56	34 52	05 24 19 18	31 20 13	मी.14।49	01 28 18 36	19	00 38 12 19	मासिक कालाष्टमी व्रत
24	र	9 54 55 27 22	उभा 47 29 24 24	आ 16 15 11 54	तै 21 57 14 11	34 53	05 24 19 19	आषा. 01 21 14	मीन	01 29 15 56	18	01 09 13 11	मिथुन संक्रांति मु. 45, गंडमूल प्रा. 24।21, मिथुने ❖
25	चं	10 60 00 - -	रे 54 49 27 20	सौ 18 35 12 50	व 27 53 16 33	34 53	05 24 19 19	02 22 15	मे.27।20	02 00 13 15	18	01 38 14 02	भ. 16।31 से, तिथि वृद्धिः, पंचक स. 27।17
26	मं	10 00 47 05 43	अ 60 00 - -	शो 20 48 13 44	वि 00 47 05 43	34 54	05 25 19 19	03 23 16	मेष	02 01 10 33	18	02 08 14 54	भ. 05।41 तक ❖ सूर्य: 23।57
27	बु	11 06 11 07 53	अ 01 44 06 06	अ 22 34 14 26	बा 06 11 07 53	34 54	05 25 19 20	04 24 17	मेष	02 02 07 51	17	02 38 15 47	योगिनी एकादशी व्रत, गंडमूल स. 06।04
28	गु	12 10 44 09 42	भ 07 51 08 33	सु 23 36 14 51	तै 10 44 09 42	34 54	05 25 19 20	05 25 18	वृ.15।06	02 03 05 09	17	03 11 16 42	प्रदोष व्रत (कृ.), मीने मंगल 20।12, बुध वक्री 9।48
29	शु	13 14 08 11 04	कृ 12 52 10 34	धृ 23 44 14 54	व 14 08 11 04	34 55	05 25 19 20	06 26 19	वृष	02 04 02 27	17	03 48 17 38	भ. 11।02 से 23।31 तक, मास शिवरात्री
30	श	14 16 15 11 55	रो 16 38 12 04	शू 22 50 14 33	श 16 15 11 55	34 55	05 25 19 20	07 27 20	मि.24।38	02 04 59 44	16	04 29 18 36	वर्षा ऋतु प्रा., सायन कर्क संक्रांति
31	र	30 17 02 12 14	मृ 19 07 13 04	गं 20 54 13 47	ना 17 02 12 14	34 55	05 25 19 21	08 28 21	मिथुन	02 05 57 01	16	05 15 19 35	आर्द्रायां सूर्य: 23।31, फादर्स डे, देवपितृकार्य अमावस्या

शुक्र उदय: 8 जून 2020

❑ सोना, सीसा, तांबा, कपास, तृण, घास तथा तांबा, लोहा, सोयाबीन, चना में तेजी का योग अचानक चिंता दायक बनेगा। व्यापारी सावधान रहें! पूर्वोत्तर भारत में बाढ़ जैसी स्थिति बनेगी। प्राकृतिक आपदा से नदियों में भी जलस्तर बढ़कर जन-धन हानि योग। **आषाढ़ बदी प्रतिपदा को वर्षा बादल गाज। अनावृष्टि से मास तक महंगा बिके अनाज॥ बदी पंचमी आषाढ़ में निर्मल रहे आकाश, ना बादल न बिजली कृषि का निश्चित नाश॥**

आषाढ़ कृ. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	10	10	02	09	01	09	02	08	00	10	09
28	25	26	19	01	14	06	05	05	15	26	00
18	20	25	35	46	08	58	25	25	01	47	20
36	57	00	52	25	34	10	14	14	23	54	29
57	720	38	23	05	27	02	00	00	02	00	01
19	37	39	21	12	57	56	14	14	43	20	10
–	–	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा	मा	व
–	–	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ
मृग. 2	पू.भा. 2	पू.भा. 2	आर्द्रा 4	उ.षा. 2	रोहि. 2	उ.षा. 4	मृग. 4	मृग. 2	भरणी 1	पू.भा. 3	उ.षा. 2

कुंडली (13 जून): 1 ह.; 2 सू.शु.; 3 बु.रा.; 4; 5; 6; 7; 8; 9 के.; 10 गु.श.प्लू.; 11 च.मं.ने.; 12

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा कृष्ण शनिवार ज्येष्ठा नक्षत्र से प्रारंभ होकर रविवारीय अमावस्या मृगशिरा नक्षत्र तक तदनुसार दिनांक 6 से 21 जून 2020 तक रहेगा। इस पक्ष में मिथुन संक्रांति मु. 45 आषाढ़ कृष्ण नवमी रविवार मंदी का संकेत देती है। अन्य ग्रह मास में तेजी को बल देते हैं। अतः मास में मंदी-तेजी दोनों का मिला-जुला असर रहेगा। मास में 5 शनि-रविवार हैं। **शनिवारा यदा पंच जायंते रवि पंचकम्। महार्घ जायते धान्यं रोग शोकाकुला मही॥** मास में धान्यादि के भाव मेत होंगे तथा व्यापक जन-धन की हानि की आशंका। बदी 2 रविवारी रुई में अच्छी तेजी के झटके एक सप्ताह के अंदर लायेगी। तो बाद में पक्ष के अंत तक भारी मंदी की आशंका। बदी पक्ष में कहीं शेयर्स मार्केट में जोरदार मंदी का धमाका संभव। ता. 9 जून बदी 4 मंगलवारी व 7 शुक्रवारी से पक्ष में सोना, चांदी, दालें, अनाज तेज करेगी। ता. 14 जून बदी 9 रविवारी अकाल सूचक है। मिथुन की संक्रांति मूल पदार्थ आलू आदि, गुड़, रस पदार्थ, अनाज, तिलहन, हल्दी, गुवार आदि में एक मास के अंदर भारी तेजी का वातावरण घटबढ़ से बना देगी। संक्रांति खर्पर योग युक्त रिक्ता तिथि में होने से अच्छी तेजी समर्थक है। अतः मास में अच्छी तेजी का वातावरण बना सकती है। ता. 15 जून को सोना, चांदी में अच्छी मंदी के झटके तो अनाज, मूल पदार्थ, तिलहन तेज रहेगा। ता. 20 जून बदी 14 शनि रोहिणी युक्त है। **आषाढ़ बदी चौदश दिना होय रोहिणी योग। कर्फ्यू अरु कन्ट्रोल से दुख पावै सब लोग॥** किसी क्षेत्र में उपद्रव, दंगे भड़क उठें जिससे कर्फ्यू आदि से जनता परेशान रहे। यह योग वर्षा की कमी, अकाल दुर्भिक्षकारी तेजी कारक है। यदि आज वायु चले तो खाद्य सामग्री में तेजी होगी। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। ता. 21 जून रविवारी मावस चना खरीदने की राय देती है। आगे तेजी आयेगी। आज [illegible]

आषाढ़ कृ. 30 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 21 जून

कुंडली (21 जून): 1 ह.; 2 शु.; 3 सू.बु.चं.रा.; 4; 5; 6; 7; 8; 9 के.; 10 गु.श.प्लू.; 11 ने.; 12 मं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	02	11	02	09	01	09	02	08	00	10	09
05	02	01	20	01	11	06	04	04	15	26	00
57	36	30	20	00	33	32	59	59	22	49	10
01	01	07	13	23	26	28	47	47	08	30	36
57	772	37	12	06	09	03	00	00	02	00	01
17	05	34	27	16	59	28	19	19	28	04	17
–	–	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा	मा	व
–	–	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ
मृग. 4	मृग. 3	पू.भा. 4	पुन. 1	उ.षा. 2	रोहि. 1	उ.षा. 3	मृग. 4	मृग. 2	भरणी 1	पू.भा. 3	उ.षा. 2

आषाढ़ शुक्ल पक्षः -7

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 5 जून से 5 जुलाई सन् 2020 ई., रा. मिति 1 से 14 आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घ प)	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	
01	चं	1 16 32 12 02	आ 20 20 13 34	वृ 17 58 12 37	ब 16 32 12 02	34 55	05 26 19 21	09 29 22	मिथुन	02 06 54 17	57/15	06 08 20 31	गुप्त नवरात्र प्रा., चन्द्रदर्शन मु. 45, बुधास्त 28।16, ❖
02	मं	2 14 51 11 22	पुन 20 24 13 35	ध्रु 14 05 11 04	कौ 14 51 11 22	34 54	05 26 19 21	10 जि.01 23	क.07।37	02 07 51 33	15	07 06 21 23	रथ यात्रा (पुरी), विश्व ओलम्पिक दि., मनोरथ 2 ❑
03	बु	3 12 08 10 17	पु 19 27 13 13	व्या 09 21 09 11	ग 12 08 10 17	34 54	05 26 19 21	11 02 24	कर्क	02 08 48 48	14	08 08 22 11	भ. 21।34 से, गंडमूल प्रा. 13।10, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.)
04	गु	4 08 30 08 51	आ 17 37 12 29	ह 03 54 07 00 / व 57 50 28 34	वि 08 31 08 51	34 54	05 26 19 21	12 03 25	सिं.12।29	02 09 46 03	14	09 11 22 55	भ. 08।48 तक, शुक्र मार्गी 11।59 ❖ रा. आषाढ़ प्रा.
05	शु	5 04 08 07 06	म 15 04 11 28	सि 51 15 25 57	बा 04 08 07 06	34 53	05 27 19 21	13 04 26	सिंह	02 10 43 17	13	10 15 23 35	कुमार षष्ठी व्रत, गंडमूल स. 11।26
00	शु	6 59 10 29 07	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	०० 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षय: ❑ (बंगाल), जिल्काद मु. मास 11
06	श	7 53 44 26 57	पूफा 11 57 10 14	व्य 44 16 23 09	ग 26 30 16 03	34 53	05 27 19 21	14 05 27	क.15।53	02 11 40 31	13	11 18 24 00	भ. 26।54 से, विवस्वत सप्तमी
07	र	8 47 58 24 38	उफा 08 23 08 49	वरि 37 00 20 15	वि 20 52 13 48	34 52	05 27 19 21	15 06 28	कन्या	02 12 37 44	12	12 21 00 12	भ. 13।46 तक, मासिक दुर्गाष्टमी
08	चं	9 42 01 22 16	ह 04 33 07 17	प 29 33 17 17	बा 15 00 11 28	34 51	05 28 19 21	16 07 29	तु.18।29	02 13 34 56	12	13 24 00 48	भडल्या नवमी, शूद्रादि 9, धने गुरु: 28।19
09	मं	10 36 02 19 53	चि 00 34 05 41 / स्वा 56 37 28 07	शि 22 03 14 17	तै 09 01 09 04	34 51	05 28 19 22	17 08 30	तुला	02 14 32 09	11	14 28 01 25	आशा दशमी व्रत, गुप्त नवरात्रा पारणा
10	बु	11 30 11 17 33	वि 52 51 26 37	सि 14 37 11 19	व 03 04 06 42	34 50	05 28 19 22	18 09 J1	वृ.20।59	02 15 29 20	11	15 33 02 04	भ. 06।39 से 17।30 तक, देवशयनी 11 व्रत, यमनियमादि A
11	गु	12 24 38 15 20	अनु 49 29 25 16	सा 07 25 08 27	बा 24 38 15 20	34 49	05 29 19 22	19 10 02	वृश्चिक	02 16 26 32	10	16 39 02 46	प्रदोष व्रत (शु.), गंडमूल प्रा. 25।13 A चातुर्मास्यारंभ:
12	शु	13 19 36 13 20	ज्ये 46 44 24 11	शुभ 00 34 05 43 / शु 54 16 27 12	तै 19 36 13 20	34 48	05 29 19 21	20 11 03	ध.24।11	02 17 23 43	10	17 45 03 32	C सूर्य: 23।06 B चातुर्मास प्रा., श्री सत्यनारायण पूजा
13	श	14 15 18 11 37	मू 44 48 23 25	ब्र 48 40 24 58	व 15 19 11 37	34 46	05 30 19 21	21 12 04	धनु	02 18 20 54	10	18 48 04 23	भ. 11।34 से 22।51 तक, गंडमूल स. 23।22, जैन B
14	र	15 11 58 10 17	पूषा 43 56 23 05	ऐं 43 57 23 05	ब 11 58 10 17	34 45	05 30 19 21	22 13 05	म.29।04	02 19 18 04	10	19 45 05 19	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, पूर्णिमा व्रत, मन्वादि 15, पुन. C

आषाढ़ शु. 8 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 28 जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	05	11	02	09	01	09	02	08	00	10	09
12	08	05	17	00	11	06	04	04	15	26	00
37	02	49	27	13	20	06	37	37	38	49	01
44	23	06	22	48	16	44	32	32	30	10	17
57	852	36	34	07	06	03	00	00	02	00	01
13	20	23	09	00	13	52	02	02	12	10	22
–	–	मा	व	व	मा	व	मा	मा	मा	व	व
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

4, 2 शु., 5, 3 सू.,बु.,रा., 1 ह., 12 मं., 6 चं., 9 के., 7, 11 ने., 8, 10 गु.,श.,प्लू.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार शुक्ल पक्ष प्रतिपदा आश्लेषा नक्षत्र से प्रारंभ होकर शुक्ल पूर्णिमा रविवार पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 22 जून से 5 जुलाई 2020 तक रहेगा। चन्द्रदर्शन मु. 45 महंगाई को बढ़ावा देता है। मास में तिथि घटाबढ़ी से सामग्रीयों में कमी से तेजी को बल मिलेगा। **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़ै, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥** अर्थात् उपयोगी वस्तुओं के कमी के कारण रोजमर्रा की चीजें मिलना कठिन हो जायेंगी। उपज की वस्तुएं मंदी रहेगी। ता. 29 जून भड्डली नवमी सुभिक्षकारी है। धनु राशि में गुरु-दो मास के अंदर रुई में जोरदार मंदी तो अनाज के व्यापार से लाभ। धातुओं, हल्दी, चावलों में अच्छी तेजी कारक। ता. 2 जुलाई से 2 दिन के अंदर सोना, चांदी, रुई, कालीमिर्च, चावल, चना, गेहूं, उड़द आदि दालें, तिलहन पदार्थों में अच्छी मंदी के झटके संभव। रविवारी पूनम इन्हीं वस्तुओं में एक सप्ताह के अंदर अच्छी तेजी के झटके लायेगी तो यहां पुनर्वसु सूर्य व उ.षा. पर शनि चल रहा है। **पू.षा., उ.षा. शनैश्चर पुनर्वसो पर आदित्य। भय भासै नाहे जलद त्रासे रैयत नित्य॥** 13 दिन तक वर्षा नहीं हो तो प्रजा त्रास से भयभीत तथा प्रमुख वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। गुरु-शुक्र, सूर्य से आगे होने से तथा सूर्य-भौम से युक्त होना प्राकृतिक आपदा का संकेत बनता है। पवन तेज चलेगा। तेज धूप से परेशानी। स्त्री वर्ग की काम भावना बढ़ेगी। पूर्वी भारत में भूकम्प या भू-स्खलन जैसा अशोभनीय योग बनेगा। **आषाढ़ सुदी चौथ को बिजली वर्षा गाज। उत्तम वर्षा जानिए उपजें खूब अनाज॥ आषाढ़ सुदी एकादशी घटा जो चढ़ै घनघोर। अनाज भाव भादो घटै घी मचावै शोर॥** यानी सुभिक्ष योग है।

आषाढ़ शु. 15 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 जुलाई

4, 2 शु., 5, 3 सू.,बु.,रा., 1 ह., 12 मं., 6, 9 चं.,गु.,के., 7, 11 ने., प्लू., 8, 10 श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	08	11	02	08	01	09	02	08	00	10	08
19	16	09	13	29	12	05	04	04	15	26	29
18	47	59	24	23	53	38	15	15	53	47	51
04	15	14	27	00	34	36	16	16	02	16	30
57	814	35	30	07	20	04	00	00	01	00	01
11	34	02	14	29	12	09	09	09	56	23	25
–	–	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	व	व
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रावण कृष्ण पक्षः -8

श्री सं. 2077 शाके 1942

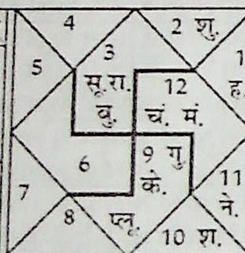
ता. 6 से 20 जुलाई सन् 2020 ई., रा. मिति 15 से 29 आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वा.	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान (घ. प.)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय (घं. मि.)	अस्त (घं. मि.)	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. (रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय (घं. मि.)	अस्त (घं. मि.)	निम्नांकित संदर्भ
आ. 15	चं	1 09 47 09 25	उषा 44 20 23 14	वै 40 15 21 36	कौ 09 47 09 25	34 44	05 30	19 21	23	14	06	मकर	02 20 15 15	57/10	20 37	06 18	अशून्य शयन व्रत प्रा. (बंगाल), सोमवार व्रत
16	मं	2 08 57 09 06	श्र 46 09 23 58	वि 37 41 20 35	गर 08 57 09 06	34 42	05 31	19 21	24	15	07	मकर	02 21 12 26	10	21 22	07 18	भ. 21।06 से, मंगला गौरी पूजा
17	बु	3 09 36 09 22	ध 49 26 25 18	प्री 36 19 20 03	वि 09 36 09 22	34 41	05 31	19 21	25	16	08	कुं.12।34	02 22 09 37	11	22 02	08 18	भ. 09।19 तक, पंचक प्रा. 12।31, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.)
18	गु	4 11 46 10 14	श 54 10 27 12	आ 36 07 19 59	बा 11 46 10 14	34 39	05 32	19 21	26	17	09	कुंभ	02 23 06 48	11	22 37	09 15	बुधोदय 19।35
19	शु	5 15 22 11 41	पूभा 60 00 - -	सौ 36 58 20 20	तै 15 22 11 41	34 38	05 32	19 21	27	18	10	मी.22।57	02 24 04 00	11	23 09	10 09	नाग पंचमी (मरुस्थलं)
20	श	6 20 09 13 36	पूभा 00 07 05 35	शो 38 39 21 00	व 20 09 13 36	34 36	05 33	19 20	28	19	11	मीन	02 25 01 12	12	23 39	11 02	भ. 13।34 से 26।39 तक, विश्व जनसंख्या दिवस
21	र	7 25 44 15 51	उभा 06 59 08 21	अ 40 50 21 53	ब 25 44 15 51	34 34	05 33	19 20	29	20	12	मीन	02 25 58 24	12	24 00	11 54	मासिक कालाष्टमी व्रत, गंडमूल प्रा. 08।18, बुध मार्गी 13।10
22	चं	8 31 37 18 12	रे 14 17 11 17	सु 43 09 22 49	कौ 31 37 18 12	34 32	05 34	19 20	30	21	13	मे.11।17	02 26 55 37	13	00 08	12 45	पंचक स. 11।14
23	मं	9 37 13 20 27	अ 21 28 14 09	धृ 45 10 23 38	तै 04 29 07 22	34 30	05 34	19 19	31	22	14	मेष	02 27 52 50	13	00 38	13 37	गंडमूल स. 14।06
24	बु	10 42 00 22 23	भ 27 58 16 46	शू 46 31 24 11	व 09 44 09 28	34 28	05 35	19 19	32	23	15	वृ.23।21	02 28 50 04	14	01 10	14 31	भ. 09।25 से 22।20 तक
25	गु	11 45 32 23 48	कृ 33 21 18 56	गं 46 53 24 20	ब 13 56 11 10	34 26	05 35	19 19	श्राव. 01	24	16	वृष	02 29 47 19	15	01 44	15 26	कामदा एकादशी व्रत, कर्क संक्रांति मु. 30, कर्क सूर्य: 10।49
26	शु	12 47 32 24 36	रो 37 16 20 30	वृ 46 02 24 01	कौ 16 44 12 17	34 24	05 36	19 18	02	25	17	वृष	03 00 44 34	15	02 23	16 24	
27	श	13 47 51 24 45	मृ 39 35 21 26	ध्रु 43 53 23 09	ग 17 53 12 46	34 21	05 36	19 18	03	26	18	मि.09।03	03 01 41 50	16	03 07	17 22	भ. 24।42 से, शनि प्रदोष व्रत
28	र	14 46 31 24 13	आ 40 15 21 43	व्या 40 24 21 47	वि 17 22 12 34	34 19	05 37	19 18	04	27	19	मिथुन	03 02 39 06	16	03 57	18 20	भ. 12।31 तक, सूर्य प्रवेश पुष्य 22।38
29	चं	30 43 41 23 06	पुन 39 25 21 23	ह 35 42 19 54	चतु 15 16 11 44	34 16	05 37	19 17	05	28	20	क.15।31	03 03 36 23	17	04 54	19 15	हरियाली 30, मन्वादि 30, सोमवती अमा., देवपितृकार्य अमा.

श्रावण कृ. 8 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 जुलाई

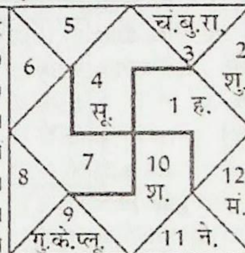
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	11	11	02	08	01	09	02	08	00	10	08
26	17	14	11	28	16	05	03	03	16	26	29
55	08	32	22	21	27	04	49	49	07	43	39
37	31	18	18	56	08	26	50	50	12	14	59
57	712	33	03	07	32	04	00	00	01	00	01
13	33	08	38	44	45	22	09	09	36	37	27
-	-	मा	मा	व	मा	व	मा	मा	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
पुन. 3	रेवती 4	उ.भा. 4	आर्द्रा 2	उ.षा. 1	रोहि. 2	उ.षा. 3	मृग. 4	मूल 2	भरणी 1	पू.भा. 3	उ.षा. 1



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा सोमवार उत्तराषाढ़ नक्षत्र से प्रारंभ होकर सोमवती अमावस्या पुनर्वसु नक्षत्र तदनुसार दिनांक 6 से 20 जुलाई 2020 तक रहेगा। इस पक्ष में कर्क संक्रांति मु. 30 एकादशी गुरुवार से धान्य भाव सम योग। उत्तम वर्षा योग भी। ता. 6 जुलाई बदी एकम् वैधृति योग से तिलहन, अनाजादि, दालों का संग्रह से सिंह संक्रांति काल के अंत में बेचने से लाभ होगा। ता. 11 जुलाई 6 शनिवारी गेहूं, अनाज स्टॉक की राय देती है। आगे कार्तिक से फाल्गुन तक उत्तम लाभ। श्रावण बदी 3 को पंचक लगेंगे। यह योग अतिवर्षा कारी है। वैसे भी पंचकों में वर्षा होना फसलों के लिए भी अच्छी होती हैं। यदि पंचकों में वर्षा न हो तो समय अच्छा नहीं होता। **श्रावण बदी तीज में पंचक लगे जो आन। जल उपद्रव रुके नहीं कष्ट होय महान॥** ता. 16 जुलाई कर्क संक्रांति प्रवेश से आगे भादव में वर्षा की कमी रहे। यहां सूर्य शनि आमने-सामने है तथा शनि उ.षा. पर चल रहा है। प्रमुख व्यपारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी का संचार हो। ता. 20 जुलाई श्रावण की सोमवती मावस व्यापारियों के हक में अच्छी नहीं होती। लाभ होते-होते हानि हो जाती है। **सोमवती तीनऊ बुरी सावन कातिक माह। गुण करती अवगुण करे सुन लो तुम यों साह॥** आंवला, पीपली, चंदन, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों में तेजी। अलसी, सरसों, तिल, तेल, तिलहन पदार्थ मंदा तथा रुई, कालीमिर्च में भारी तेजी योग बनेगा। आकाश तेज तपेगा। सूर्य की किरणों का ताप असह्य होगा। तेज आंधी, तूफान से वर्षा में खंड वृष्टि का योग बनेगा। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान [illegible] उ.षा. पर शनि [illegible] प्रजा पीड़ा से [illegible]॥ वर्षा की कमी रहे।

श्रावण कृ. 30 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 20 जुलाई



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	02	11	02	08	01	09	02	08	00	10	08
03	24	18	13	27	20	04	03	03	16	26	29
36	20	17	58	27	46	33	27	27	17	38	29
23	59	18	55	54	06	31	34	34	20	09	49
57	808	31	41	07	40	04	02	02	01	00	01
17	42	04	49	39	59	26	40	40	17	49	27
-	-	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
पुष्य 1	पुन. 2	रेवती 1	आर्द्रा 3	उ.षा. 1	रोहि. 4	उ.षा. 3	मृग. 4	मूल 2	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

श्रावण शुक्ल पक्षः -9

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 21 जुला. से 3 अग. सन् 2020 ई., रा. मिति 30 आषाढ़ से 12 श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

ता. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	क्रान्ति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
30	मं	1 39 34 21 28	पु 37 18 20 33	व 29 56 17 36	कि 11 46 10 20	34 14	05 38 19 17	06 29 21	कर्क	03 04 33 41	17	05 56 20 06	गंडमूल प्रा. 20।30 ❖ गंडमूल स. 17।44, रा. श्रावण प्रा.
31	बु	2 34 27 19 25	आ 34 09 19 18	सि 23 18 14 58	बा 07 06 08 29	34 11	05 38 19 16	07 30 22	सिं.19।18	03 05 30 59	18	07 01 20 52	चन्द्रदर्शन मु. 15, सिंधारा (राज.), सायन सिंह संक्रांति
	गु	3 28 38 17 06	म 30 19 17 47	व्य 16 03 12 04	तै 01 36 06 17	34 09	05 39 19 16	08 जि 01 23	सिंह	03 06 28 17	18	08 06 21 34	भ. 27।50 से, हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज, लोकमान्य A
02	शु	4 22 25 14 37	पूफा 26 04 16 05	व 08 23 09 01	वि 22 25 14 37	34 06	05 40 19 15	09 02 24	क.21।39	03 07 25 36	19	09 11 22 13	भ. 14।35 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.)
03	श	5 16 03 12 05	उफा 21 43 14 21	प 00 34 05 54 / शि 52 48 26 47	बा 16 03 12 05	34 03	05 40 19 15	10 03 25	कन्या	03 08 22 55	19	10 15 22 50	नाग पंचमी देशाचार, कल्कि जयंती, श्री अमरनाथ यात्रा प्रा.
04	र	6 09 47 09 35	ह 17 28 12 40	सि 45 12 23 45	तै 09 47 09 35	34 00	05 41 19 14	11 04 26	तु.23।52	03 09 20 14	19	11 18 23 27	B मासिक दुर्गाष्टमी, तुलसीदास ज., खरसी पूजा (त्रिपुरा)
05	चं	7 03 49 07 13	चि 13 33 11 06	सा 37 56 20 52	व 03 49 07 13	33 58	05 41 19 14	12 05 27	तुला	03 10 17 34	20	12 22 24 00	भ. 07।10 से 18।02 तक, शीतला 7 (सिंध), भानु 7, B
00	चं	8 58 19 29 01	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	०० 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षय: A तिलक जयंती, जिल्हिज मु. मास 12, ❖
06	मं	9 53 22 27 02	स्वा 10 06 09 44	शुभ 31 06 18 08	बा 25 45 16 00	33 55	05 42 19 13	13 06 28	वृ.26।51	03 11 14 55	20	13 26 00 04	D (बकरीद), लोकमान्य तिलक पुण्य दि., कर्के बुधः 27।35
07	बु	10 49 02 25 19	वि 07 14 08 36	शु 24 45 15 36	तै 21 06 14 09	33 52	05 42 19 12	14 07 29	वृश्चिक	03 12 12 16	21	14 30 00 44	E पूजा, उपाकर्म (अथर्व.), गायत्री ज., श्रीअमरनाथ दर्शन (कश्मीर)
08	गु	11 45 26 23 53	अनु 05 01 07 43	ब्र 18 58 13 18	व 17 08 12 34	33 49	05 43 19 12	15 08 30	वृश्चिक	03 13 09 37	21	15 34 01 28	भ. 12।31 से 23।50 तक, पवित्रदा एकादशी व्रत, गंडमूल C
09	शु	12 42 35 22 45	ज्ये 03 31 07 08	ऐं 13 47 11 14	बव 13 53 11 17	33 46	05 43 19 11	16 09 31	ध.07।08	03 14 06 59	22	16 37 02 16	पवित्रार्पण द्वादशी, मिथुने शुक्रः 29।11 C प्रा. 07।40
10	श	13 40 34 21 58	मू 02 47 06 51	वै 09 14 09 26	कौ 11 27 10 19	33 42	05 44 19 10	17 10 A1	धनु	03 15 04 21	23	17 36 03 10	शनि प्रदोष व्रत (शु.), गंडमूल स. 06।48, ईद-उल-जुहा D
11	र	14 39 29 21 32	पूषा 02 56 06 55	वि 05 24 07 54	ग 09 53 09 42	33 39	05 45 19 10	18 11 02	म.12।59	03 16 01 44	23	18 29 04 07	भ. 21।29 से, हयग्रीव जयंती, आश्लेषायां सूर्यः 21।30
12	चं	15 39 26 21 31	उषा 04 01 07 21	प्री 02 19 06 41	वि 09 18 09 28	33 36	05 45 19 09	19 12 03	मकर	03 16 59 08	24	19 16 05 06	भ. 09।26 तक, रक्षाबंधन, पूर्णिमा व्रत, श्री सत्यनारायण E

निहाल। रक्षा बंधन-सोमवार में 9।26 के बसद करें। **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामपि बध्नामी रक्षे माचल माचलः॥** सावन कृतिका नक्षत्र में यदि वर्षा हो जाए। चार मास वर्षा घनी मंदा धान्य बिकाय। **श्रावण बदी चौथ सभार, चढ़े जू रवि बादल मंजार। तो पैंतालीस दिन लौ मेह, बरसे नित्य न आवे छेह॥** यानि वर्षा की भरमार रहती है।

श्रावण शु. 7 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 27 जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	06	11	02	08	01	09	02	08	00	10	08
10	03	21	20	26	25	04	03	03	16	26	29
17	20	46	59	35	55	02	05	05	25	31	19
34	42	24	24	21	27	30	19	19	11	42	46
57	853	28	78	07	47	04	00	00	00	01	01
20	41	35	09	18	14	24	57	57	57	01	25
-	-	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
3	4	2	1	4	1	3	4	2	1	2	1
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

5 | बु.रा.3 | 2 शु. | 4 सू. | 1 ह. | 6 | 7 चं. | 10 श. | 12 मं. | 8 | 9 गु.के.प्लू. | 11 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा मंगलवार पुष्य नक्षत्र से प्रारंभ होकर सुदी पूर्णिमा सोमवार उत्तराषाढ़ नक्षत्र तदनुसार दिनांक 21 जुलाई से 3 अगस्त तक रहेगा। मास में ग्रह योग गणना से पांच सोमवार के होने से यथा-**सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्ये समृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा॥** पांच सोमवार होने से धन-धान्य का सुख प्राप्त हो। जनता में सौहार्दपूर्ण भावना परिलक्षित होती है। ता. 26 जुलाई पुनर्वसु बुध एक सप्ताह के अंदर रुई, खल, बिनौला, गुवार, सोना, चांदी, तिल तेलों में अचानक कहीं अच्छी मंदी संभव। अनाज, दालें तेज। सुदी 7 सोमवारी पक्ष में सोना, चांदी, गुड़, चीनी में घोर तेजी आकर अच्छी मंदी तथा अन्य सर्व प्रमुख वस्तुओं में मास में ऐसी खतरनाक तेजी-मंदी चलेगी कि व्यापारियों को संभलना मुश्किल होगा। व्यापारी हैरान-परेशान रहेंगे। तो अष्टमी का क्षय आगे कार्तिक मास में किसी राज्य का मंत्रीमण्डल भंग करेगा। ता. 3 अग. सोमवारी पूनम श्रवण युक्त है-**पूनम को श्रवण रहे सुख सुभिक्ष सर्वत्र।** महाश्रेष्ठ। आगे उत्तम उपज का परिचायक है। अन्य मंदी वस्तुएं खरीदना उचित। **शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि का नाश। छत्र भंग का योग है आगे कार्तिक मास॥** अष्टमी का क्षय दुर्भिक्षकारी है। अनाज, दालें तेज तो रुई, कपास, कालीमिर्च में तीन सप्ताह के अंदर जोरदार मंदी संभव है। कपास, चावल, बाजरा, बिनौला, धान्य, हल्दी, रुई, घी, मूंगफली, सौंफ, जीरा, समस्त तिलहन पदार्थ, मोंठ, उड़द आदि का बाजार भाव मंदा रहकर दो दिन बाद मंदी के झटके भी किसी-किसी वस्तु में बनेगा। वायु वेग के साथ वर्षा का आगमन। कच्चे मकानों को विशेष हानि। झुग्गी-झोपड़ियों का स्थान परिवर्तन जैसा योग। हिमालयवर्ती उत्तरी क्षेत्रों में ओलावृष्टि से हानि योग। वायुमंडल में बादल आच्छादित रहकर जीव-जंतुओं को पैदायश करेगा। **श्रावण शुक्ला सप्तमी को यदि वर्षा हो जाए। अन्न बहुत उपजै चलै, मंगसिर मंदी होय। श्रावण शुक्ला अष्टमी के दिन प्रातःकाल सूरज पर बादल छाए वर्षा करे।**

श्रावण शु. 15 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 3 अगस्त

5 | शु.रा.3 | 2 | 4 सू.बु. | 1 ह. | 6 | 7 | 10 चं. श. | 12 मं. | 8 | 9 गु.के.प्लू. | 11 ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	09	11	03	08	02	09	02	08	00	10	08
16	08	24	01	25	01	03	02	02	16	26	29
59	59	56	53	46	43	32	43	43	30	24	10
08	38	56	53	09	33	10	03	03	43	01	00
57	779	25	107	06	52	04	04	04	00	01	01
24	18	44	28	42	07	15	28	28	37	10	22
-	-	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
1	4	3	4	4	3	3	4	2	1	2	1
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद कृष्ण पक्षः -10

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 4 से 19 अगस्त 2020 ई., रा. मिति 13 से 28 श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान (घ. प.)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. (रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति (क. वि.)	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
13	मं	1 40 31 21 58	श्र 06 10 08 13	आ 00 06 05 48 / सौ 58 49 29 17	बा 09 49 09 41	33 33	05 46 19 08	20 13 04	कुं.20।50	03 17 56 33	57 25	19 58 06 05	वृजमंडल हिडोला प्रा., पंचक प्रा. 20।47, बुधास्त 11।40
14	बु	2 42 48 22 53	ध 09 27 09 33	शो 58 28 29 09	तै 11 30 10 22	33 29	05 46 19 07	21 14 05	कुम्भ	03 18 53 58	26	20 35 07 03	C सूर्य: 19।12, मेषे मंगल 18।23, बिछ बारस, गोवत्स 12
15	गु	3 46 18 24 18	श 13 55 11 21	अ 59 02 29 24	व 14 24 11.32	33 26	05 47 19 07	22 15 06	कुम्भ	03 19 51 25	27	21 08 07 59	भ. 11।29 से 24।15 तक, कज्जली तीज, सातूड़ी तीज
16	शु	4 50 55 26 09	पूभा 19 31 13 36	सु 60 00 - -	बव 18 28 13 11	33 23	05 47 19 06	23 16 07	मी.07।00	03 20 48 53	28	21 39 08 53	संकट-बहुला चतुर्थी, गणेश 4 व्रत (कृ.) A स. 19।06
17	श	5 56 25 28 22	उभा 26 06 16 14	सु 00 24 05 58	कौ 23 34 15 13	33 19	05 48 19 05	24 17 08	मीन	03 21 46 22	30	22 09 09 46	जीवंतिका पूजन, रक्षा 5 (उड़ीसा), गंडमूल प्रा. 16।12,
18	र	6 60 00 - -	रे 33 21 19 09	धृ 02 26 06 47	गर 29 22 17 33	33 16	05 48 19 04	25 18 09	मे.19।09	03 22 43 52	31	22 38 10 37	तिथि वृद्धिः, चांद छठ, हल 6, ऊभी-ललही 6. पंचक A
19	चं	6 02 23 06 46	अ 40 48 22 08	शू 04 49 07 44	वणि 02 23 06 46	33 12	05 49 19 03	26 19 10	मेष	03 23 41 24	32	23 09 11 29	भ. 06।43 से 19।56 तक, गंडमूल स. 22।05, कैर पूजा B
20	मं	7 08 21 09 10	भ 47 55 24 59	गं 07 09 08 41	बव 08 21 09 10	33 09	05 50 19 02	27 20 11	मेष	03 24 38 57	34	23 41 12 21	जन्माष्टमी (स्मार्त), मासिक कालाष्टमी, मां आद्यकाली ज.
21	बु	8 13 44 11 20	कृ 54 07 27 29	वृ 09 03 09 27	कौ 13 44 11 20	33 05	05 50 19 02	28 21 12	वृ.07।39	03 25 36 31	35	24 00 13 15	जन्माष्टमी (वै.), ज्ञानेश्वर ज., मां काली ज. B (त्रिपुरा)
22	गु	9 17 58 13 02	रो 58 55 29 25	ध्रु 10 05 09 52	गर 17 58 13 02	33 01	05 51 19 01	29 22 13	वृष	03 26 34 07	37	00 18 14 11	भ. 25।36 से, गोगा नवमी, नंदोत्सव (गोकुल)
23	शु	10 20 35 14 05	मृ 60 00 - -	व्या 09 54 09 49	वि 20 35 14 05	32 58	05 51 19 00	30 23 14	मि.18।07	03 27 31 44	38	00 59 15 08	भ. 14।02 तक D 29।43, सिंहे बुधः 08।31 F स्नान (राज.)
24	श	11 21 19 14 23	मृ 01 57 06 38	ह 08 17 09 11	बा 21 19 14 23	32 54	05 52 18 59	31 24 15	मिथुन	03 28 29 23	40	01 46 16 06	अजा 11 व्रत, स्वतंत्रता दिवस 74वां वर्ष E पिठोरी अमा.
25	र	12 20 04 13 54	आ 03 03 07 06	व 05 06 07 55	तै 20 04 13 54	32 50	05 52 18 58	भाद्र. 01 25 16	क.24।56	03 29 27 03	41	02 39 17 02	सिंह संक्रांति मु. 45, प्रदोष व्रत, सिंहे सूर्यः 19।12, मघायां C
26	चं	13 16 54 12 39	पुन 02 15 06 47 / पु 59 43 29 46	सि 00 21 06 01 / व्य 54 12 27 34	व 16 54 12 39	32 46	05 53 18 57	02 26 17	कर्क	04 00 24 45	43	03 38 17 55	भ. 12।36 से 23।42 तक, पर्यूषण पर्व प्रा., गंडमूल प्रा. D
27	मं	14 12 04 10 43	आ 55 44 28 11	वरि 46 49 24 37	श 12 04 10 43	32 43	05 53 18 56	03 27 18	सिं.28।11	04 01 22 28	44	04 43 18 44	पितृकार्य अमा., अघोरा 14, कैलाश यात्रा, कुशोत्पाटिनी, E
28	बु	30 05 51 08 14	म 50 40 26 10	परि 38 30 21 18	ना 05 51 08 14	32 39	05 54 18 55	04 28 19	सिंह	04 02 20 12	45	05 49 19 29	गंडमूल स. 26।07, देवकार्य अमा., मन्वादि 30, लोहार्गल F

भाद्रपद कृ. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 12 अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	00	11	03	08	02	09	02	08	00	10	08
25	28	28	19	24	09	02	02	02	16	26	28
36	55	29	32	50	55	55	14	14	34	12	58
31	12	25	03	22	07	20	26	26	18	34	09
57	721	21	123	05	56	03	00	00	00	01	01
35	05	15	04	37	57	54	39	39	11	21	15
–	–	मा	मा	व	मा	व	मा	मा	मा	व	व
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
आश्ले.3	कृत्ति.1	रेवती 4	आश्ले.1	पू.षा.4	आर्द्रा 1	उ.षा.2	मृग.4	मू. 2	भरणी 1	पू.भा.2	उ.षा.1

5 | शु.रा.3 | 6 | 4 सू. बु. | 2 | 1 चं. ह. | 7 | 10 श. | 8 | 12 मं. | 9 गु.के.प्लू. | 11 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष मंगलवार प्रतिपदा श्रवण नक्षत्र से प्रारंभ होकर अमावस्या बुधवार मघा नक्षत्र तद्नुसार दिनांक 04 से 19 अगस्त 2020 तक रहेगा। मास पांच मंगलवार तथा पांच बुधवार युत है। पांच मंगलवार युत होने से-**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** पश्चिमी देशों में रक्तपात, आंतकवाद की घटनायें घटित होंगी। छोटी-छोटी छुद्र बातों पर वाद-विवाद होंगे। उत्पात होगा। सत्ता परिवर्तन होगा। जनता में विक्षोभ तथा आपसी वैमनस्य बढ़ेगा। युद्धजनक परिस्थितियां बनेंगी। किसी बीमारी का प्रकोप बनेगा। लाल वस्तुओं तथा धान्यों में तेजी आयेगी। पांच बुधवार होने से **'बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तम सुभिक्ष च प्रजायेत॥** किन्हीं स्थानों पर अच्छी वर्षा तथा किन्हीं स्थानों पर साधारण वर्षा रहेगी। कृषि उपज उत्तम रहेगी। धान्य आदि के भाव स्थिर रहेंगे। जनता में सुख शांति रहेगी। समय शुभ कारक रहेगा। 16 दिवसीय पक्ष में चांदी में मंदा रहेगा। **मंगलेभ्रियते राजा।** विश्वस्तरीय सीमा विवाद का झगड़ा। जापान, जर्मनी में भी गृह युद्ध का वातावरण बनेगा। इराक, ईरान में हिंसा योग। मास में गुड़, चीनी तेज रहे। बदी पक्ष में किराना, अनाज, दालें, तेलों, धातुओं में प्रथम मंदा तथा रुई, शेयर्स मार्केट में प्रथम भारी मंदा आकर तेज होकर पक्ष के अंत तक भारी तेजी आयेगी। सुदी पक्ष में उपरोक्त वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी चलेगी। ता. 6 अग. बुध अतिचारी चलेगा। 15 दिन के अंदर खल-बिनौला, हल्दी, गुड़, रुई, सोना, चांदी में प्रथम मंदा आकर अच्छी तेजी की आशा रहेगी। ता. 16 अग. सिंह संक्रांति चांदी में अच्छी तेजी तो अनाज तेज करेगी। तथा मेषे मंगल प्रवेश शनि से केन्द्र स्थान में होने से मंदी की लाईन में अचानक भारी तेजी। महीना-बीस दिन सोना, चांदी, लालवर्ण की वस्तुएं, मूल पदार्थ आलू, प्याज, धनि... आकाश। अन्न खरीदो खूब ही तेजी फाल्गुन मास॥

भाद्रपद कृ. 30 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 19 अगस्त

6 | 4 | 3 शु. रा. | 7 | 5 सू.चं. बु. | 2 | 9 गु.के. प्लू. | 8 | 11 ने. | 1 मं.ह. | 10 श. | 12

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	04	00	04	08	02	09	02	08	00	10	08
02	00	00	03	24	16	02	01	01	16	26	28
20	47	43	45	14	44	29	52	52	34	02	49
12	41	54	19	33	03	15	11	11	20	36	42
57	867	17	119	04	59	03	10	10	00	01	01
45	49	00	12	34	49	31	00	00	10	29	09
–	–	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	व
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
मघा 1	मघा 1	अश्वि.1	मघा 2	पू.षा.4	आर्द्रा 4	उ.षा.2	मृग.3	मू. 1	भरणी 1	पू.भा.2	उ.षा.1

भाद्रपद शुक्ल पक्षः -11

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 20 अग. से 2 सितं. सन् 2020 ई., रा. मिति 29 श्राव. से 11 भाद्र. तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	
00	बु	1 58 41 29 22	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः A सन् 1442 प्रा., श्री वराह ज.
श्राव. 29	गु	2 50 55 26 16	पूफा 44 58 23 53	शि 29 34 17 44	बा 24 50 15 50	32 35	05 54 18 54	05 29 20	क.29।18	04 03 17 58	57 47	06 56 20 10	तेलाधर तपस्या जैन, चन्द्रदर्शन मु. 30 C मुक्ताभरण-संतान 7
30	शु	3 42 58 23 06	उफा 39 02 21 32	सि 20 21 14 03	तै 16 56 12 41	32 31	05 55 18 53	06 मोह. 01 21	कन्या	04 04 15 45	48	08 03 20 48	हरितालिका 3, गौरी तृतीया, मन्वादि 3, मोहर्रम 1 हिजरी A
31	श	4 35 13 20 00	ह 33 16 19 14	सा 11 09 10 23	व 09 02 09 32	32 27	05 55 18 52	07 02 22	कन्या	04 05 13 33	49	09 08 21 26	भ. 09।29 से 19।58 तक, कलंकी-पत्थर 4, गणपति B
भाद्र. 01	र	5 27 59 17 08	चि 28 02 17 09	शुभ 02 17 06 51 शु 54 01 27 32	बव 01 30 06 32	32 23	05 56 18 51	08 03 23	तु.06।09	04 06 11 23	50	10 14 22 04	ऋषि (बड़ी) पंचमी, संवत्सरी जैन, रा. भाद्रपद प्रा.
02	चं	6 21 35 14 34	स्वा 23 36 15 23	ब्र 46 28 24 31	तै 21 35 14 34	32 19	05 56 18 50	09 04 24	तुला	04 07 09 14	51	11 19 22 44	सूर्य षष्ठी व्रत, बलदेव 6, हल 6, ललिता 6 (गुज.), C
03	मं	7 16 10 12 25	वि 20 11 14 01	ऐं 39 47 21 52	व 16 10 12 25	32 15	05 57 18 49	10 05 25	वृ.08।19	04 08 07 06	53	12 24 23 27	भ. 12।22 से 23।27 तक, राधा अष्टमी
04	बु	8 11 53 10 43	अनु 17 53 13 07	वै 34 02 19 34	बव 11 53 10 43	32 11	05 58 18 48	11 06 26	वृश्चिक	04 09 04 59	54	13 28 24 00	मासिक दुर्गाष्टमी, दधीची जयंती, गंडमूल प्रा. 13।04
05	गु	9 08 46 09 28	ज्ये 16 45 12 40	वि 29 14 17 40	कौ 08 46 09 28	32 07	05 58 18 47	12 07 27	ध.12।40	04 10 02 53	55	14 31 00 14	श्री चन्द नवमी, अदुःख नवमी ❖ मोहर्रम (ताजिया)
06	शु	10 06 47 08 41	मू 16 43 12 40	प्री 25 20 16 06	ग 06 47 08 41	32 03	05 59 18 45	13 08 28	धनु	04 11 00 49	56	15 30 01 05	भ. 20।25 से, गंडमूल स. 12।37, सुगन्ध दशमी
07	श	11 05 54 08 21	पूषा 17 46 13 05	आ 22 16 14 54	वि 05 54 08 21	31 59	05 59 18 44	14 09 29	म.19।15	04 11 58 46	58	16 25 02 00	भ. 08।18 तक, पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयंती
08	र	12 06 02 08 25	उषा 19 48 13 55	सौ 20 00 14 00	बा 06 02 08 25	31 55	06 00 18 43	15 10 30	मकर	04 12 56 44	59	17 13 02 58	प्रदोष व्रत (शु.), भुवनेश्वरी ज., पूफायां सूर्यः 15।08, ❖
09	चं	13 07 10 08 52	श्रव 22 46 15 06	शो 18 30 13 24	तै 07 10 08 52	31 51	06 00 18 42	16 11 31	कुं.27।51	04 13 54 44	58 01	17 56 03 56	पंचक प्रा. 27।48, कर्के शुक्रः 26।05 D व्रतं पुण्यं च
10	मं	14 09 14 09 42	धनि 26 40 16 40	अति 17 44 13 06	व 09 14 09 42	31 47	06 01 18 41	17 12 S1	कुम्भ	04 14 52 45	02	18 34 04 54	भ. 9।39 से 22।15, अनन्त चतुर्दशी व्रत, श्री सत्यनारायण D
11	बु	15 12 14 10 55	शत 31 28 18 36	सु 17 41 13 05	बव 12 14 10 55	31 43	06 01 18 40	18 13 02	कुम्भ	04 15 50 48	04	19 08 05 51	सत्य पूर्णिमा, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा व्रत, श्राद्ध प्रारंभ

B स्थापना, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.), सायन कन्या संक्रांति, शरद् ऋतु प्रा.

भाद्रपद शु. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 26 अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	07	00	04	08	02	09	02	08	00	10	08
09	12	02	17	23	23	02	01	01	16	25	28
04	17	26	10	46	51	06	29	29	31	51	42
59	59	23	33	36	04	08	56	56	55	56	05
57	827	12	110	03	62	03	00	00	00	01	01
54	50	08	28	22	09	03	12	12	31	34	01
-	-	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
3	3	1	2	4	2	2	3	1	1	2	1
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा क्षय योग से द्वितीया तिथी गुरुवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र से आरंभ होकर भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा बुधवार शतभिषा नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 20 अगस्त से 2 सितबर 2020 तक रहेगा। पक्ष में फल गणना में माह में पांच मंगल होना किसी बड़े व्यक्ति का अभाव का कारक बनेगा। **बुधस्य पंचवाराः स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥** प्रजा में सुख-शांति का संचार होगा। उद्योगों में उत्पादन बढ़ेगा तथा खेती में पैदावार अच्छी होने से सुख-समृद्धि बढ़े। इसके योग से विश्व में रक्त-पात, हिंसा तथा छत्र भंग योग होगा। **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़ै, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥** योग के अनुसार फसलें कम होंगी। महंगाई बढेंगी। जिसका लाभ वयापारी उठायेंगे। ता. 20 अग. प्रतिपदा का क्षय तथा पंचमी रविवारी से पक्ष में रुई, सूत में अच्छी तेजी तो सोना, चांदी, धातुओं में प्रथम तेजी आकर अच्छी मंदी की आशंका। चन्द्रदर्शन मुहूर्त 30 साम्यार्घ कारक है। ता. 26-27 अग. को अच्छी मंदी की संभावना रहेगी। ता. 31 अग. उ.फा. बुध एक सप्ताह के अंदर सोना, चांदी, रुई, कालीमिर्च में मंदी तो उड़द, मूंग, अरहर में तेजी रहेगी। सिंह की सूर्य संक्रांति चन्द्र मण्डल में पड़ने से बाढ़ ग्रस्त इलाकों में बाढ़ का प्रकोप अपनी पराकाष्ठा पर रहेगा। बाढ़ से पूर्वोत्तर भारत, उत्तरी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेष रूप से प्रभावित हो सकते हैं। जबकि महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात में सामान्य या कम वर्षा हो सकती है। भादवा शुक्ल पंचमी मेघ न बरसे तोय। दैव कोप ही जानिये सज्जन-दुर्जन होय। भादवा शुक्ल अष्टमी निर्मल चंदा सूर। सस्ता सैंधव सूत सन पांच मास भरपूर॥

भाद्रपद शु. 15 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 2 सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	10	00	04	08	03	09	02	08	00	10	08
15	13	03	29	23	01	01	01	01	16	25	28
50	17	32	32	27	13	46	07	07	27	40	35
48	06	58	16	22	02	33	40	40	09	45	27
58	740	06	101	02	64	02	11	11	00	01	00
03	00	43	25	06	07	31	27	27	51	37	52
-	-	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
1	2	2	1	4	4	2	3	1	1	2	1
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्र.आश्विन कृष्ण पक्षः -12 श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 3 से 17 सितं. सन् 2020 ई., रा. मिति 12 से 26 भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वा.	तिथि स्टैं.टा.					नक्षत्र स्टैं.टा.					योग स्टैं.टा.					करण स्टैं.टा.					दिनमान		स्टैं. टा. सूर्योदयास्त				दिनांक			चन्द्र राशि प्रवेश	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली				
		ति	घ.	प.	घं.	मि.	न	घ.	प.	घं.	मि.	यो	घ.	प.	घं.	मि.	क	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
12	गु	1	16	11	12	30	पूभा	37	10	20	53	धृ	18	21	13	22	कौ	16	11	12	30	31	39	06	02	18	39	19	14	03	मी.14।17	04	16	48	52	58/06	19	40	06	45	प्रतिपदा श्राद्ध
13	शु	2	21	02	14	27	उभा	43	41	23	31	शू	19	42	13	55	गर	21	02	14	27	31	35	06	02	18	37	20	15	04	मीन	04	17	46	58	07	20	09	07	38	भ. 27।30 से, गंडमूल प्रा. 23।28, द्वितीया श्राद्ध
14	श	3	26	39	16	42	रे	50	53	26	24	गं	21	38	14	42	वि	26	39	16	42	31	31	06	03	18	36	21	16	05	मे.26।24	04	18	45	06	09	20	39	08	30	भ. 16।37 तक, पंचक स. 26।21, तृतीया श्राद्ध
15	र	4	32	47	19	10	अ	58	28	29	26	वृ	23	59	15	38	बा	32	47	19	10	31	26	06	03	18	35	22	17	06	मेष	04	19	43	15	11	21	09	09	22	चतुर्थी श्राद्ध, गंडमूल स. 29।23
16	चं	5	39	06	21	42	भर	60	00	-	-	ध्रु	26	29	16	39	कौ	05	56	08	26	31	22	06	04	18	34	23	18	07	मेष	04	20	41	27	13	21	40	10	14	पंचमी श्राद्ध B मृतकों का श्राद्ध, कात्यायनी ज., जैन 14 व्रत
17	मं	6	45	05	24	06	भर	06	01	08	28	व्या	28	49	17	36	गर	12	09	10	56	31	18	06	04	18	33	24	19	08	वृ.15।12	04	21	39	41	15	22	15	11	07	भ. 24।01 से, षष्ठी श्राद्ध, रोहिणी व्रत-जैन, चन्दन षष्ठी व्रत
18	बु	7	50	11	26	09	कृ	13	03	11	18	ह	30	35	18	19	वि	17	46	13	11	31	14	06	04	18	32	25	20	09	वृष	04	22	37	56	17	22	53	12	02	भ. 13।03 तक, सप्तमी श्राद्ध, गोविन्द वल्लभ पंत ज.
19	गु	8	53	52	27	38	रो	19	01	13	42	वज्र	31	23	18	38	बा	22	13	14	58	31	10	06	05	18	30	26	21	10	मि.26।40	04	23	36	14	19	22	36	12	57	अष्टमी श्राद्ध, जीवित्पुत्रिकाव्रतं, अष्टमी व्रत-जैन
20	शु	9	55	43	28	23	मृग	23	25	15	28	सि	30	52	18	26	तै	25	02	16	06	31	06	06	05	18	29	27	22	11	मिथुन	04	24	34	33	21	24	00	13	54	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध, मातृ नवमी
21	श	10	55	28	28	17	आ	25	53	16	27	व्य	28	46	17	37	व	25	51	16	26	31	01	06	06	18	28	28	23	12	मिथुन	04	25	32	55	23	00	26	14	49	भ. 16।15 से 28।14 तक, दशमी श्राद्ध
22	र	11	53	03	27	20	पुन	26	15	16	36	वरि	24	58	16	06	बव	24	31	15	55	30	57	06	06	18	27	29	24	13	क.10।39	04	26	31	19	26	01	21	15	43	एकादशी श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत C देवपितृकार्य अमा.
23	चं	12	48	34	25	33	पु	24	30	15	55	परि	19	28	13	54	कौ	21	02	14	32	30	53	06	07	18	26	30	25	14	कर्क	04	27	29	45	28	02	22	16	33	द्वादशी-सन्यासियों का श्राद्ध, गजच्छाया, गंडमूल प्रा. 15।52
24	मं	13	42	19	23	03	आ	20	51	14	28	शि	12	23	11	05	गर	15	38	12	23	30	49	06	07	18	24	31	26	15	सिं.14।28	04	28	28	13	30	03	27	17	19	भ. 23। 01 से, त्रयोदशी श्राद्ध, भौम प्रदोष व्रत, इन्जीनियर्स डे
25	बु	14	34	40	20	00	म	15	38	12	23	सि / सा	03 / 54	57 / 32	07 / 27	43 / 57	वि	08	38	09	35	30	44	06	08	18	23	आ. 01	27	16	सिंह	04	29	26	44	32	04	34	18	01	भ. 9।29 तक, गंडमूल स. 12।20, कन्या संक्रांति मु. 30, A
26	गु	30	26	02	16	33	पूफा	09	16	09	51	शुभ	44	24	23	54	चतु	00	26	06	19	30	40	06	08	18	22	02	28	17	क.15।10	05	00	25	16	34	05	41	18	42	सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्यु प्राप्त का अमावस्या श्राद्ध, C
																																									A कन्यायां सूर्य: 19।09, चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्र विष आदि से B

❑ चले धान्य पशु नाशक चक्र।। जब तक मार्गी चाल न होवे तब तक मनुज रहे बेहाल। एक साथ ही शनि मंगल की रहती तब तक वक्री चाल।। उपरोक्त उपद्रव दुर्घटना कारक है। तथा प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी का संचार होगा।

प्र.आश्विन कृ. 8 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 10 सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	01	00	05	08	03	09	02	08	00	10	08
23	19	04	12	23	09	01	00	00	16	25	28
36	09	00	25	16	53	29	42	42	18	27	29
14	53	12	35	34	45	01	15	15	56	37	13
58	730	00	91	00	66	01	00	00	01	01	00
19	48	06	55	34	02	50	00	00	12	39	40
-	-	व	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
पू.फा. 4	रोहि. 3	अश्वि. 2	हस्त 1	पू.षा. 3	पुष्य 2	उ.षा. 2	मृग. 3	मूल 1	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

6 बु., 5 सू., 4 शु., 3 रा., 7, 2 चं., 8, 11 ने., 9 के.गु. प्लू., 1 मं. ह., 10 श., 12

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र से प्रारंभ होकर अमावस्या गुरुवार पूर्वाफाल्गुली नक्षत्र तदनुसार दिनांक 3 से 17 सितंबर 2020 तक रहेगा। इस पक्ष में माह की ग्रह गति गणना से पक्ष फल पांच गुरुवार के योग से-**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रह पश्चिमी देशों खड्ग युद्धञ्च जायते।।** पश्चिमी देशों में विग्रह होंगे। सशस्त्र युद्ध का भय रहेगा। बुधवारी संक्रांति से धान्यों की हानि होगी। गत संक्रांति से चौथे दिन पांचवे नक्षत्र की संक्रांति में संक्रांति के अन्य अशुभ फल नष्ट होंगे। 30 मुहूर्ति खड़ी संक्रांति से मध्यम वर्षा होगी। बाजार मूल्य सामान्य रहेंगे। टेक्स्टाईल में तेजी रहेगी। संक्रांति के दिन की वर्षा से क्षेम तथा कल्याण रहेगा। दूसरे दिन की वर्षा से श्रेष्ठ फल, तीसरे दिन की वर्षा से सुभिक्ष होकर धान्यादि के भावों में गिरावट, चौथे दिन की वर्षा का फल साधारण रहेगा। संक्रांति से पांचवें दिन की वर्षा से अग्निकांड होंगे। छठे दिन की वर्षा से विजय होगी। सातवें दिन की वर्षा सभी प्रकार के उपद्रवों को नष्ट करेगी। यदि सात दिनों तक कुछ भी वर्षा नहीं हुई तो रोगादि के उपद्रव बढ़ेंगे तथा धान्यों के भावों में तेजी आयेगी। आश्विन कृष्ण रविवारी चतुर्थी से आगे घी में मंदा रहेगा परन्तु अन्नों में तेजी बनेगी। रुई, कपास तेज रहेगा। बदी पक्ष में घी, देशी घी में अच्छी तेजी संभव होगी। अपने वक्र काल 13 नवंबर तक सभी वस्तुओं में खतरनाक तेजी-मंदी की चाल देगी। 5 दिन पूर्व से सोना, चांदी में अच्छी तेजी के साथ यहां अच्छी मंदी भी तो खल, बिनौला, तेल, तिलहन, गुड़, चीनी, प्रमुख किराना बाजारों में अच्छी तेजी का वातावरण बना देगा। ता. 13 सितंबर गुरु मार्गी अनाज, दालें तेज तो रुई में अच्छी मंदी [illegible]

प्र.आश्विन कृ. 30 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 17 सितंबर

7, 5 च., 8, 6 सू. बु., 4 शु., 3 रा., 9 गु. के.प्लू., 12, 10 श., 2, 11 ने., 1 मं.ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	04	00	05	08	03	09	02	08	00	10	08
00	23	03	22	23	17	01	00	00	16	25	28
25	56	38	40	17	40	18	19	19	09	16	25
16	47	06	53	13	57	22	59	59	28	02	05
58	899	06	83	00	67	01	12	12	01	01	00
33	49	17	41	47	26	11	44	44	30	39	30
-	-	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
उ.फा. 2	पू.फा. 4	अश्वि. 2	हस्त 4	पू.षा. 3	आश्ले. 1	उ.षा. 2	मृग. 3	मूल 1	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

प्र.आश्विन शुक्ल पक्षः -13

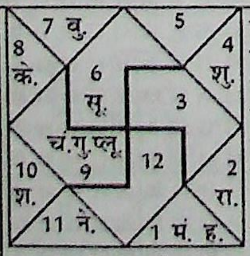
श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 18 सितं. से 1 अक्टू. 2020 ई., रा. मिति 27 भाद्र. से 9 आश्वि. तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घटी पल)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा अं क वि)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
भाद्र 27	शु	1 16 52 12 54	उफा 02 14 07 03 / ह 55 01 28 09	शु 33 59 19 45	बव 16 52 12 54	30 36	06 09 18 21	03 29 18	कन्या	05 01 23 50	58 35	06 49 19 20	पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) प्रारंभ
28	श	2 07 40 09 13	चि 48 04 25 23	ब्र 23 39 15 37	कौ 07 40 09 13	30 32	06 09 18 20	04 सफर 01 19	तु.14।45	05 02 22 25	37	07 57 19 59	चन्द्रदर्शन मु. 30, सफर मु. मास 2
00	श	3 58 52 29 42	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः
29	र	4 50 50 26 30	स्वा 41 51 22 54	ऐं 13 45 11 40	व 24 43 16 03	30 27	06 10 18 18	05 02 20	तुला	05 03 21 03	39	09 04 20 39	भ. 16।02 से 26।26 तक, गणेश चतुर्थी व्रत
30	चं	5 43 57 23 45	वि 36 42 20 51	वै 04 36 08 01 / वि 56 27 28 45	बव 17 13 13 04	30 23	06 10 18 17	06 03 21	वृ.15।19	05 04 19 43	41	10 12 21 22	
31	मं	6 38 28 21 34	अ 32 55 19 21	प्री 49 29 25 58	कौ 11 01 10 35	30 19	06 11 18 16	07 04 22	वृश्चिक	05 05 18 24	42	11 19 22 09	दक्षिण गोल प्रारंभ, गंडमूल प्रा. 19।18, सायन तुला संक्रांति
आश्वि 01	बु	7 34 32 20 00	ज्ये 30 40 18 28	आ 43 46 23 42	ग 06 17 08 42	30 15	06 11 18 15	08 05 23	ध.18।28	05 06 17 07	44	12 24 23 00	भ. 19।55 से, शहीद दिवस (हरियाणा), रा. आश्विन प्रा.
02	गु	8 32 12 19 05	मू. 30 01 18 12	सौ 39 21 21 56	वि 03 09 07 28	30 10	06 12 18 14	09 06 24	धनु	05 07 15 52	46	13 26 23 55	भ. 07।28 तक, गंडमूल सं. 18।09, मासिक दुर्गाष्टमी
03	शु	9 31 26 18 47	पूषा 30 53 18 34	शो 36 08 20 40	बा 01 37 06 51	30 06	06 12 18 12	10 07 25	म.24।44	05 08 14 38	48	14 22 24 00	A पर्यटक दिवस
04	श	10 32 05 19 03	उषा 33 08 19 28	अति 34 02 19 50	तै 01 35 06 51	30 02	06 13 18 11	11 08 26	मकर	05 09 13 26	49	15 12 00 52	B श्री सत्यनारायण व्रतं पुण्यं च
05	र	11 34 00 19 50	श्र 36 37 20 52	सु 32 54 19 23	व 02 53 07 23	29 58	06 13 18 10	12 09 27	मकर	05 10 12 16	51	15 56 01 51	भ. 07।23 से 19।46 तक, कमला एकादशी व्रत, विश्व A
06	चं	12 37 00 21 02	ध 41 07 22 41	धृ 32 36 19 17	बव 05 22 08 23	29 53	06 14 18 09	13 10 28	कुं.09।44	05 11 11 07	53	16 35 02 49	पंचक प्रा. 09।41
07	मं	13 40 54 22 36	श 46 30 24 50	शू. 33 00 19 27	कौ 08 50 09 47	29 49	06 15 18 08	14 11 29	कुम्भ	05 12 10 01	55	17 10 03 45	भौम प्रदोष व्रत
08	बु	14 45 35 24 29	पूभा 52 36 27 17	गं 34 00 19 51	ग 13 09 11 31	29 45	06 15 18 07	15 12 30	मी.20।39	05 13 08 56	57	17 42 04 40	भ. 24।24 से, बैंक अर्धवार्षिक लेखाबंदी
09	गु	15 50 56 26 38	उभा 59 19 29 59	वृ 35 31 20 28	वि 18 10 13 32	29 41	06 16 18 05	16 13 01	मीन	05 14 07 53	58	18 12 05 33	भ. 13।30 तक, गंडमूल प्रा. 29।57, सत्यव्रत-पूर्णिमा व्रत, B

प्र.आश्विन शु. 8 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 24 सितंबर

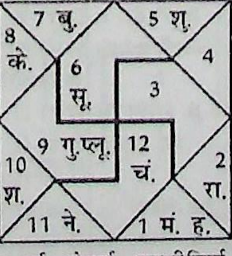
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	08	00	06	08	03	09	01	07	00	10	08
07	06	02	01	23	25	01	29	29	15	25	28
15	14	34	54	27	37	12	57	57	58	04	22
52	35	05	47	20	08	21	44	44	02	37	15
58	808	11	74	02	68	00	00	00	01	01	00
46	11	55	01	08	37	30	01	01	45	36	18
--	--	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	व
--	--	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
उ.फा. 4	पू.फा. 2	अश्वि. 1	चित्रा 3	पू.फा. 4	आश्ले. 3	उ.भा. 2	मृग. 2	ज्ये. 4	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार प्रतिपदा उफा. नक्षत्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा गुरुवार उभा. नक्षत्र तक तदनुसार दि. 18 सितंबर से 1 अक्टूबर 2020 तक रहेगा। दि. 18 सितं. से 16 अक्टूबर 2020 आश्विन अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) तक रहेगा। गुरुवारी मावस वर्षाकारी है। दालें, सोना, चांदी घटबढ़ से मंदा होगा। चौथ रविवारी-**आश्विन शुक्ला चतुर्थी को यदि आवे रविवार। घी बेचो अन्न संग्रहो आगे लाभ विचार॥**

प्र.आश्विन शु. 15 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 1 अक्टूबर



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	11	00	06	08	04	09	01	07	00	10	08
14	04	00	09	23	03	01	29	29	15	24	28
07	26	54	48	46	41	11	35	35	44	53	20
53	28	42	22	44	08	10	29	29	53	34	49
58	721	16	60	03	69	00	11	11	01	01	00
58	28	16	00	25	40	11	55	55	59	32	06
--	--	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
--	--	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
हस्त 2	उ.भा. 1	अश्वि. 1	स्वाति 1	पू.षा. 4	मघा 2	उ.षा. 2	मृग. 2	ज्ये. 4	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

ता. 30 सितं. को शनि मार्गी होगा। तीन दिन के अंदर चालू रुख पलट जायेगा। रुई, शेयर्स, कालीमिर्च में भारी मंदी तो तिलहन, दालें, आलू, प्याज, लालमिर्च तेज करेगा। गुड़, शक्कर, रस कस, सभी तरह का किराना सामग्री में तेजी बनेगी। फसलों की हानि से सभी खाद्यान्नों में भी तेजी बनेगी। स्टॉक कर्त्ता व्यापारी खुशी मनाएंगे। कपूर, औषधि, पान, सुपारी, नारियल, खोपरा आदि सभी में तेजी। स्टॉक नहीं करें तो अच्छा रहेगा। वायु वेग, बादल गाज तथा पशु चौपायों की हानि योग। आंधी, झंझावात से जनता दुखी रहेगी। खड़ी फसलें भूमि पर गिरेंगी। बूंदा-बांदी से शीत बढ़ेगा। वायुमंडल में अशोभनीय घटना का योग बनेगा। **सातें आठै सुदी में बरसै आश्विन मास। बढ़ै शांति सुख संपदा विग्रह होय विनाश। बादल वर्षा बिजली विजया दशमी देख। मूंग, उड़द, तिल, तेल में तेजी रहे विशेष।**

द्वि.आश्विन कृष्ण पक्षः -14

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 2 से 16 अक्टू. सन् 2020 ई., रा. मिति 10 से 24 आश्वि. तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान (घटी पल)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)		चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं. मि. अस्त घं. मि.)	
10	शु	1 56 49 29 00	रे 60 00 - -	ध्रु 37 26 21 15	बा 23 48 15 47	29 36	06 16 18 04	17 14 02	मीन	05 15 06 52	59/00	18 41 06 25	महात्मा गांधी ज., लाल बहादुर शास्त्री जयंती
11	श	2 60 00 - -	रे 06 31 08 53	व्या 39 42 22 09	तै 29 54 18 14	29 32	06 17 18 03	18 15 03	मे.08।53	05 16 05 53	03	19 10 07 17	तिथि वृद्धिः, पंचक स. 08।50
12	र	2 03 04 07 31	अ 14 04 11 55	ह 42 08 23 08	गर 03 04 07 31	29 28	06 17 18 02	19 16 04	मेष	05 17 04 56	05	19 41 08 09	भ. 20।43 से, गंडमूल स. 11।52, मीन में मंगल 10।44
13	चं	3 09 29 10 05	भर 21 43 14 59	वज्र 44 31 24 06	वि 09 29 10 05	29 24	06 18 18 01	20 17 05	वृ.21।44	05 18 04 01	07	20 14 09 01	भ. 10।01 तक, चतुर्थी व्रत
14	मं	4 15 42 12 35	कृ 29 06 17 57	सि 46 36 24 57	बा 15 42 12 35	29 20	06 18 18 00	21 18 06	वृष	05 19 03 09	09	20 51 09 55	❖ शहीद करबला
15	बु	5 21 19 14 50	रो 35 48 20 38	व्य 48 04 25 32	तै 21 19 14 50	29 15	06 19 17 59	22 19 07	वृष	05 20 02 18	11	21 31 10 50	रोहिणी व्रत
16	गु	6 25 51 16 40	मृग 41 23 22 53	वरि 48 33 25 45	व 25 51 16 40	29 11	06 19 17 57	23 20 08	मि.09।49	05 21 01 30	14	22 17 11 46	भ. 16।35 से 29।11 तक, वायु सेना दिवस, चेहल्लुम ❖
17	शु	7 28 51 17 53	आ 45 23 24 29	परि 47 45 25 26	बव 28 51 17 53	29 07	06 20 17 56	24 21 09	मिथुन	05 22 00 45	16	23 09 12 41	
18	श	8 29 58 18 20	पुन 47 29 25 20	शि 45 25 24 31	कौ 29 58 18 20	29 03	06 21 17 55	25 22 10	क.19।12	05 23 00 01	18	24 00 13 34	मासिक कालाष्टमी
19	र	9 28 59 17 57	पु 47 30 25 21	सि 41 25 22 55	गर 28 59 17 57	28 59	06 21 17 54	26 23 11	कर्क	05 23 59 20	21	00 06 14 23	भ. 29।16 से, गंडमूल प्रा. 25।18
20	चं	10 25 51 16 42	आ 45 26 24 32	सा 35 43 20 39	वि 25 51 16 42	28 54	06 22 17 53	27 24 12	सिं.24।32	05 24 58 42	23	01 08 15 10	भ. 16।38 तक
21	मं	11 20 42 14 39	म 41 27 22 57	शुभ 28 25 17 44	बा 20 42 14 39	28 50	06 22 17 52	28 25 13	सिंह	05 25 58 05	25	02 12 15 52	गंडमूल स. 22।54, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत
22	बु	12 13 48 11 54	पूफा 35 51 20 43	शु 19 44 14 16	तै 13 48 11 54	28 46	06 23 17 51	29 26 14	क.26।05	05 26 57 31	28	03 18 16 32	प्रदोष व्रत, आखरी चाहर शम्बा
23	गु	13 05 32 08 36	उफा 29 04 18 01	ब्र 09 56 10 22 / ऐ 59 25 30 10	व 05 32 08 36	28 42	06 24 17 50	30 27 15	कन्या	05 27 56 59	30	04 24 17 11	भ. 8।32 से 18।42 तक, मासिक शिवरात्री व्रत
00	गु	14 56 21 28 56	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः ❑ सहादत-ए-इमाम हसन
24	शु	30 46 40 25 04	ह 21 31 15 01	वै 48 30 25 48	चतु 21 32 15 01	28 38	06 24 17 49	31 28 16	तु.25।28	05 28 56 29	32	05 32 17 50	देवपितृकार्य अमा., पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) समाप्त, ❑

◆ अन्य हानिकारक जीवों से हानि होगी। अश्विनी भरणी कृतिका में शशि कुंडल होय। अन्न इकट्ठा करे तो लाभ लहे सब कोय॥ आश्विन लागत चौथ को बादल निकसे सूर। क्षेम कुशल आरोग्यता, वर्षा हो भरपूर॥ बदी घटे सुदी बढ़े तिथि क्रूरवार संक्रांति। संकट राज तंत्र में रहे सर्वत्र अशांति॥

द्वि.आश्विन कृ. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 10 अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	02	11	06	08	04	09	01	07	00	10	08
23	22	28	16	24	14	01	29	29	15	24	28
00	39	12	36	24	13	16	06	06	25	40	21
01	18	55	08	43	38	47	52	52	52	17	04
59	766	19	25	05	70	01	00	00	02	01	00
18	16	06	50	01	52	05	41	41	13	24	10
-	-	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
हस्त 4	पुन. 1	रेवती 4	स्वाती 3	पू.षा. 4	पू.फा. 1	उ.षा. 2	मृग. 2	ज्येष्ठा 4	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.भा. 1

7 बु. | 5 शु. | 8 के. | 6 सू. | 3 चं. | 4 | 9 गु. प्लू. | 12 मं. | 10 श. | 2 रा. | 11 ने. | 1 ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शुक्रवार रेवती नक्षत्र से प्रारंभ होकर शुक्रवारीय अमावस्या (पुरुषोत्तम मास समाप्त) हस्त नक्षत्र तदनुसार दिनांक 2 से 16 अक्टूबर 2020 तक रहेगा। फल गणना में माह में "शनेश्च पंचम **दृष्ट्वा पाताले कंपते फणी। ईशान देशे भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"** पांच शनिवार होने से ईशान देश का भंग। अनाज तेज और अग्नि का भय हो। पांच शुक्रवार होने से "**शुक्रस्य पंच वारास्युर्यत्र मासे निरंतरम्। प्रजा वृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥"** पांच शुक्रवार के कारण प्रजा की वृद्धि और सुभिक्ष योग तथा सुख की वृद्धि से युद्ध जैसा वातावरण में शांति होने का योग बनता है। मास में 5 शुक्रवार तथा 5 शनिवार तथा दोनों पक्षों की एकादशी मंगलवारी है। अतः मास में खल, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे। तथा एवरेज तौर पर सर्व प्रमुख वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी रहेगी। तेज वस्तुएं बेचें। ता. 7 अक्टू. रोहिणी व व्यतिपात योग से एक सप्ताह के अंदर रुई, कालीमिर्च, प्रमुख शेयर्स, सर्व धातुएं, गुंवार, मटर, तिल, तेल, नारियल, रेशम, उड़द आदि में जबरदस्त मंदी आ सकती है। ता. 9 अक्टू. पू.फा. शुक्र 15 दिन के अंदर वर्षा कारक एवं मंदी समर्थक है। दवाईयां तेज होंगी। सूर्य-मंगल अपोजिशन में होने से अमावस्या तक तेजी भी रह सकती है। तथा सप्ताह 10 दिन में लालवर्ण की वस्तुओं में अच्छी तेजी ला सकती है। ता. 16 अक्टू. शुक्रवारी मावस हस्त नक्षत्र युक्त होने से दुर्भिक्ष, फसलों को नुकसान। चांदी, शेयर्स में तेजी के झटके तो गेहूं, चना में अच्छी तेजी कारक है। पक्ष के अंतर्गत तिथियों के घटावढी से-जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाहीमें घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिकै, महंगाई हट जाय॥ अर्थात् भावों में गिरावट हो सकती है। **हस्त नखत अमावस्या दुर्भिक्ष कारक योग।** सर्व वस्तु महंगी बिके ऐसा बनता है। कुछ स्थानों पर तेज वायु के साथ अल्पवृष्टि का योग। उन

द्वि.आश्विन कृ. 30 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 16 अक्टूबर

7 बु. | 5 शु. | 8 के. | 6 सू. चं. | 3 | 4 | 9 गु. प्लू. | 12 मं. | 10 श. | 2 रा. | 11 ने. | 1 ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	05	11	06	08	04	09	01	07	00	10	08
28	17	26	17	24	21	01	28	28	15	24	28
56	16	18	16	57	20	24	47	47	12	32	22
29	41	15	56	48	55	59	48	48	08	10	33
59	915	18	15	06	71	01	09	09	02	01	00
31	42	47	50	01	33	40	57	57	21	17	20
-	-	व	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
चित्रा 2	हस्त 3	रेवती 3	स्वाती 4	पू.षा. 4	पू.फा. 3	उ.षा. 2	मृग. 2	ज्येष्ठा 4	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

ऐसा बनता है। कुछ स्थानों पर तेज वायु के साथ अल्पवृष्टि का ... हटे जाय॥ अर्थात् भावों में गिरावट हो सकती है। हस्त नखत अमावस्या दुर्भिक्ष कारक योग:। सर्व वस्तु महंगी बिके

आर्यभट्ट पंचांग

द्वि.आश्विन शुक्ल पक्षः -15

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 17 से 31 अक्टू. 2020 ई., रा. मिति 25 आश्विन से 9 कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद्-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वा.	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान (घं. मि.)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. (रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	
25	श	1 36 58 21 12	चि 13 44 11 54	वि 37 35 21 27	किं 11 46 11 07	28 34	06 25 17 48	01 29 17	तुला	05 29 56 02	59 34	06 41 18 30	शारदीय नवरात्र प्रा., घटस्थापन, महाराजा अग्रसेन ज., A
26	र	2 27 43 17 31	स्वा 06 12 08 54 / वि 59 24 30 11	प्री 27 03 17 15	बा 02 15 07 19	28 30	06 25 17 47	02 30 18	वृ.24।49	06 00 55 36	36	07 50 19 12	चन्द्रदर्शन मु. 45 A तुला संक्रांति मु. 30, तुला में सूर्य 07।06
27	चं	3 19 22 14 11	अ 53 42 27 55	आ 17 15 13 20	ग 19 22 14 11	28 26	06 26 17 46	03 7,38/01 19	वृश्चिक	06 01 55 12	38	09 00 19 59	भ. 24।43 से, गंडमूल प्रा. 27।52, गणेश चतुर्थी व्रत B
28	मं	4 12 18 11 22	ज्ये 49 30 26 15	सौ 08 29 09 50	वि 12 18 11 22	28 22	06 27 17 45	04 02 20	ध.26।15	06 02 54 50	39	10 09 20 50	भ. 11।19 तक, उपांग ललिता व्रत
29	बु	5 06 49 09 11	मू. 47 01 25 16	शो 01 00 06 51 / अति 54 58 28 26	बा 06 49 09 11	28 18	06 27 17 44	05 03 21	धनु	06 03 54 30	41	11 15 21 45	सरस्वती आवाहन, गंडमूल स. 25।13
30	गु	6 03 07 07 43	पूषा 46 23 25 01	सु 50 24 26 38	तै 03 07 07 43	28 14	06 28 17 43	06 04 22	धनु	06 04 54 12	43	12 16 22 44	सरस्वती पूजन, हेमंत ऋतु प्रारंभ, आमेर छठ
कार्ति 01	शु	7 01 19 07 00	उषा 47 35 25 31	धृ 47 19 25 24	व 01 19 07 00	28 10	06 29 17 42	07 05 23	म.07।05	06 05 53 56	45	13 09 23 43	भ. 6।58 से 18।59 तक, सायन वृश्चिक संक्रांति, C
02	श	8 01 22 7 02	श्र 50 28 26 41	शू 45 34 24 43	बव 01 22 07 02	28 06	06 29 17 41	08 06 24	मकर	06 06 53 41	46	13 56 24 00	सरस्वती बलिदानं, महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, महानवमी, मन्वादि 9
03	र	9 03 08 07 45	ध 54 49 28 26	गं 45 01 24 30	कौ 03 08 07 45	28 02	06 30 17 40	09 07 25	कुं.15।29	06 07 53 28	48	14 37 00 43	शरद नवरात्र स., विजया दशमी (रावण दाह), सरस्वती D
04	चं	10 06 22 09 03	श 60 00 - -	वृ 45 26 24 41	ग 06 22 09 03	27 58	06 31 17 39	10 08 26	कुम्भ	06 08 53 17	50	15 12 01 40	भ. 21।55 से, श्री माधवाचार्य ज., भरत मिलाप, बौद्धावतार
05	मं	11 10 46 10 50	श 00 20 06 39	ध्रु 46 35 25 09	वि 10 46 10 50	27 54	06 31 17 38	11 09 27	मी.26।33	06 09 53 07	51	15 45 02 35	भ. 10।48 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत
06	बु	12 16 03 12 57	पूभा 06 44 09 14	व्या 48 16 25 50	बा 16 03 12 57	27 50	06 32 17 38	12 10 28	मीन	06 10 52 59	53	16 15 03 29	प्रदोष व्रत D विसर्जन, अपराजिता-शमी पूजा, पंचक प्रा. 15।26
07	गु	13 21 56 15 19	उभा 13 44 12 02	ह 50 17 26 40	तै 21 56 15 19	27 47	06 33 17 37	13 11 29	मीन	06 11 52 53	55	16 44 04 21	गंडमूल प्रा. 12।00
08	शु	14 28 08 17 49	रेव 21 06 15 00	व 52 30 27 33	व 28 08 17 49	27 43	06 33 17 36	14 12 30	मे.15।00	06 12 52 48	57	17 13 05 12	भ. 17।44 से, कोजागरी व्रत, पंचक स. 14।57
09	श	15 34 29 20 22	अ 28 35 18 00	सि 54 44 28 28	वि 01 18 07 05	27 39	06 34 17 35	15 13 31	मेष	06 13 52 45	59	17 43 06 04	भ. 07।01 तक, कार्तिक स्नान प्रा., श्री सत्यनारायण व्रत, E

❑तेलों, सरसों, अरहर, दालों में धमाकेदार मंदी आ सकती है। सातें आठै सुदी में बरसै आश्विन मास। बढ़ै शांति सुख संपदा विग्रह होय विनाश। बादल वर्षा बिजली विजया दशमी देख। मूंग, उड़द, तिल, तेल में तेजी रहे विशेष।

B रवि-उल-अव्वल मु. मास 3 C मासिक दुर्गाष्टमी, भद्रकाल्यावतार, रा. कार्तिक प्रा. E सरदार पटेल ज., वाल्मीकि ज., गंडमूल स. 17।58, शरद पूर्णिमा, महारास पूर्णिमा (वृंदा.)

द्वि.आश्विन शु. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 24 अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	09	11	06	08	05	09	01	07	00	10	08
06	12	23	10	25	00	01	28	28	14	24	28
53	08	58	53	51	56	41	22	22	52	22	26
41	14	38	03	01	23	24	22	22	57	31	12
59	768	15	74	07	72	02	00	00	02	01	00
46	37	36	07	17	18	26	16	16	26	06	35
-	-	व	व	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

9 प्लू. गु.
8 के.
7 सू.बु.
6 शु.
5
4
10 चं.श.
1 ह.
3
11 ने.
12 मं.
2 रा.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शनिवार चित्रा नक्षत्र से प्रारंभ होकर आश्विन पूर्णिमा शनिवार अश्विनी नक्षत्र तदनुसार 17 से 31 अक्टूबर तक रहेगा। धार्मिक आयोजनों से सद्भावना वृद्धि का कारक रहेगा। पशु धन को हानि। दुर्घटनाओं का अम्बार योग बनेगा। शनिवारी संक्रांति फल-मास में जन्म वेध नामक अशुभ योग बना है। अनावृष्टि, भ्रष्टाचारियों, तस्करों तथा अग्निकांडों से हानि होगी तथापि गत संक्रांति से तीसरी तिथि की खड़ी संक्रांति से शुभफल भी होंगे। बाजार में न तो अधिक तेजी आयेगी और न ही अधिक गिरावट बनेगी। शनिवारी संक्रांति से सभी प्रकार की वस्तुओं की हानि होगी। 30 मुहूर्ति संक्रांति से मध्यम वर्षा होगी। कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। राज्यों के मध्य विग्रह-विवाद होंगे। सोना, चांदी में साधारण मंदा चलकर तेजी का रुख बनेगा। तुला संक्रांति के दिन की वर्षा से रोगों का प्रकोप होगा। चोरों तथा अनावृष्टि से हानि होगी। चौपाये दुधारु पशुओं तथा जनसामान्य को विभिन्न उपद्रवों के कारण कष्ट होगा। तिल तैल, मूंग, उड़द तथा मूंग का संग्रह करके पांचवे महीने में बेचने से लाभ होगा। घी में तेजी रहेगी। ता. 17 अक्टू. सुदी एकम् शनिवारी-**आश्विन शुक्ला प्रतिपदा जो शनिवारी होय। अन्न बेचिये क्योंकि फिर भारी मंदी होय॥** तुला की संक्रांति शनिवारी लाल वर्ण, काले वर्ण, पीले वर्ण की वस्तुओं में अच्छी तेजी कारक। तो धान, कपास, रुई में मंदी कारक। सुदी पक्ष में तीन शनिवार से खाद्य पदार्थ, रुई, कालीमिर्च आदि में अच्छी मंदी चलेगी। ता. 23 अक्टू. कन्या शुक्र से फसलों को व्यापक नुकसान। तीन सप्ताह के अंदर चावलों में अच्छी तेजी कारक तो चांदी, गुड़ में अच्छी मंदी। यहां मंगल-शुक्र का अपोजिशन योग से एक मास के अंदर गुंवार, जीरा, तिलहन, दालों में अच्छा मंदा चल सकता है। ता. 31 अक्टू. पूनम अश्विनी युक्त से सप्ताह-10 दिन में तिलहन,❑

द्वि.आश्विन शु. 15 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 31 अक्टूबर

9 प्लू. गु.
8 के.
7 सू. बु.
6 शु.
5
4
10 श.
1 चं. ह.
3
11 ने.
12 मं.
2 रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	00	11	06	08	05	09	01	07	00	10	08
13	07	22	03	26	09	02	28	28	14	24	28
52	09	24	05	45	24	00	00	00	35	15	30
45	42	35	59	29	33	42	07	07	43	22	56
59	710	11	42	08	72	03	06	06	02	00	00
58	43	00	08	17	53	05	35	35	28	55	46
-	-	व	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिक कृष्ण पक्षः -16

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 1 से 15 नवंबर 2020 ई., रा. मिति 10 से 24 कार्ति. तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान		स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र. कार्तिक	मु. अक्टूबर	अं. नवंबर	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
10	र	1	40	46	22	53	भर	36	02	21	00	व्य	56	52	29	20	बा	07	38	09	38	27	35	06	35	17	34	16	14	01	वृ.27।44	06	14	52	44	60 00	18	15	06	57	B दीप दानम्, हनुमान ज., प्रदोष व्रत
11	चं	2	46	44	25	17	कृ	43	12	23	52	वरि	58	44	30	05	तै	13	47	12	06	27	32	06	36	17	34	17	15	02	वृष	06	15	52	45	02	18	50	07	50	C बालदिवस/नेहरु ज., पितृकार्य अमावस्या, मंगल मार्गी 7।30
12	मं	3	52	09	27	28	रो	49	51	26	33	परि	60	00	-	-	व	19	31	14	25	27	28	06	36	17	33	18	16	03	वृष	06	16	52	48	04	19	30	08	45	भ. 14।22 से 27।25 तक, बुध मार्गी 22।21
13	बु	4	56	42	29	18	मृ	55	41	28	53	परि	00	06	06	39	बव	24	32	16	26	27	24	06	37	17	32	19	17	04	मि.15।46	06	17	52	53	06	20	14	09	41	करवा चौथ, कर्क 4, दशरथ 4, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.), A
14	गु	5	60	00	-	-	आ	60	00	-	-	शि	00	49	06	57	कौ	28	33	18	03	27	21	06	38	17	32	20	18	05	मिथुन	06	18	53	00	08	21	03	10	36	तिथि वृद्धिः, A ईद-ए-मौलाद (मु.)
15	शु	5	00	03	06	40	आ	00	22	06	47	सि सा	00 59	38 22	06 30	54 23	तै	00	03	06	40	27	17	06	39	17	31	21	19	06	क.25।51	06	19	53	09	10	21	58	11	29	विशाखायां सूर्यः 08।14
16	श	6	01	58	07	27	पुन	03	41	08	08	शुभ	56	44	29	21	व	01	58	07	27	27	14	06	39	17	30	22	20	07	कर्क	06	20	53	21	13	22	56	12	18	भ. 07।24 से 19।32 तक
17	र	7	02	11	07	33	पु	05	20	08	48	शु	52	41	27	44	बव	02	11	07	33	27	10	06	40	17	30	23	21	08	कर्क	06	21	53	34	15	23	57	13	05	अहोई अष्टमी, मासिक कालाष्टमी व्रत, गंडमूल प्रा. 08।45
18	चं	8	00	33	06	54	आ	05	11	08	45	ब्र	47	09	25	32	कौ	00	33	06	54	27	07	06	41	17	29	24	22	09	सिं.08।45	06	22	53	49	17	24	00	13	47	राधा जयंती
00	चं	9	57	06	29	31	00	00	00	00	00	0	00	00	00	00	0	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	तिथि क्षयः D बली पूजा, देवकार्य अमा., कमला जयंती
19	मं	10	51	51	27	26	मघा पूफा	03 59	12 33	07 30	59 31	ऐं	40	11	22	46	व	24	40	16	33	27	04	06	42	17	28	25	23	10	सिंह	06	23	54	06	19	01	00	14	26	भ. 16।30 से 27।23 तक, गंडमूल स. 07।56
20	बु	11	45	05	24	44	उफा	54	24	28	28	वै	31	57	19	29	बव	18	37	14	09	27	00	06	42	17	28	26	24	11	क.12।03	06	24	54	25	21	02	04	15	04	रमा एकादशी व्रत
21	गु	12	37	06	21	33	ह	48	05	25	57	वि	22	39	15	47	कौ	11	12	11	12	26	57	06	43	17	27	27	25	12	कन्या	06	25	54	46	22	03	09	15	41	गोवत्स द्वादशी (गोवत्स पूजन)
22	शु	13	28	16	18	02	चि	41	01	23	08	प्री	12	33	11	45	गर	02	45	07	50	26	54	06	44	17	27	28	26	13	तु.12।34	06	26	55	09	24	04	16	16	19	भ. 17।59 से 28।09 तक, धनतेरस, धन्वंतरी ज., यमाय B
23	श	14	19	01	14	21	स्वा	33	38	20	12	आ सौ	02 51	00 22	07 27	33 18	शकु	19	01	14	21	26	51	06	45	17	26	29	27	14	तुला	06	27	55	34	26	05	24	17	00	नरकहारिणी रूप चतुर्दशी, दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, C
24	र	30	09	46	10	40	वि	26	22	17	18	शो	40	56	23	08	ना	09	46	10	40	26	48	06	46	17	26	30	28	15	वृ.12।01	06	28	56	01	28	06	34	17	44	गोवर्धन पूजा, महावीर स्वामी निर्वाण दिवस, अन्नकूट, D

कार्तिक कृ. 8 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 9 नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	03	11	06	08	05	09	01	07	00	10	08
22	28	21	04	28	20	02	27	27	14	24	28
53	09	16	04	05	23	31	31	31	13	08	39
49	55	04	50	20	32	53	30	30	34	11	01
60	811	04	49	09	73	03	01	01	02	00	01
6	52	01	43	27	32	51	26	26	26	40	01
–	–	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
–	–	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible]	आश्ले. 4	रेवती 2	चित्रा 4	उ.षा. 1	हस्त 4	उ.षा. 2	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

9 गु.प्लू. — 8 के. — 7 सू. बु. — 6 शु. — 5 — 4 चं. — 3 — 2 रा. — 1 ह. — 12 मं. — 11 ने. — 10 श.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा रविवार भरणी नक्षत्र से आरंभ होकर अमावस्या रविवार विशाखा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 01 से 15 नवं. 2020 तक रहेगा। मास में ग्रह योग गणना से पांच रविवार के योग से-**एक मासे रवेर्वारा पंचस्यु शुभावहाः।** पांच रविवार मास में नेष्ट फलदायक रहेंगे तथा पांच सोमवार होने से यथा-**सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्ये समृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा॥** पांच सोमवार होने से धन-धान्य का सुख प्राप्त हो। बदी पक्ष में तिथि वृद्धि होकर तिथि क्षय तथा सुदी पक्ष में तिथि क्षय होकर पक्ष में ही तिथि वृद्धि होने से मास में प्रमुख वस्तुओं में काफी हलचल रहेगी। ता. 5 नवं. बदी पंचमी आर्द्रा युक्त है-**कार्तिक कृष्णा पंचमी को आर्द्रा आ जाये। कम वर्षा हो घास तृण चारा तेज बिकाय॥** यह योग मास में पशु आहार तेज करेगा। ता. 11 नवं. चित्रा शुक्र से रुई में भारी घटाबढ़ी। सोना, चांदी, शेयर्स, गेहूं, जौ, चना, गुड़, कालीमिर्च में मंदी तो दालों में तेजी। ता. 14 नवं. शनिवार 14।21 बजे उपरांत अमावस्या शुभ दीपावली को स्वाती नक्षत्र एवं आयुष्मान योग का संयोग रहेगा। **कार्तिक मावस के दिना स्वाती नखत विचार। गिरे कहीं भूकम्प से पर्वत या मीनार॥ स्वाती में दीपक जलै, विशाखा खेले गाय। घना गयन्दा रण चढ़ै, उपजी खाख नसाय॥** दुर्भिक्षकारी योग है। प्रमुख वस्तुओं में भयंकर तेजी ड्योढ़े-दुगुने तक आ सकती है। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कांसा, रांगा आदि धातु में तेजी [illegible] रहेगा। रुई, कपास, मूंग, मोठ, ग्वार में मंदी का योग बनेगा।

कार्तिक कृ. 30 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 15 नवंबर

9 गु.प्लू. — 8 के. — 7 सू.चं. बु. — 6 शु. — 5 — 4 — 3 — 2 रा. — 1 ह. — 12 मं. — 11 ने. — 10 श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	06	11	06	08	05	09	01	07	00	10	08
28	25	21	10	29	27	02	27	27	13	24	28
56	53	06	41	04	45	56	12	12	59	04	45
01	10	13	08	11	50	26	25	25	08	45	36
60	909	00	78	10	73	04	03	03	02	00	01
28	50	49	41	10	53	20	01	01	22	28	11
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
–	–	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
विशा. 3	विशा. 2	रेवती 2	स्वाती 2	उ.षा. 1	चित्रा 2	उ.षा. 2	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

कार्तिक शुक्ल पक्षः -17

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 16 से 30 नवंबर सन् 2020 ई., रा. मिति 25 कार्तिक से 9 मार्ग. तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

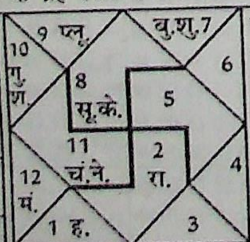
ता. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	दिनांक प्र. मु. अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा. अं. क. वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय अस्त घं. मि. घं. मि.	
कार्ति. 25	चं	1 00 58 07 10	अ 19 42 14 39	अ 31 05 19 12	बव 00 58 07 10	26 45	06 46 17 26	01 29 16	वृश्चिक	06 29 56 29	60/29	07 45 18 34	भैया दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा, चन्द्रदर्शन मु. 15, A
00	चं	2 53 04 28 00	0 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः B व्रतारंभ (बिहार), गणेश चतुर्थी व्रत (शु.)
26	मं	3 46 24 25 21	ज्ये 14 02 12 24	सु 22 08 15 38	तै 19 32 14 36	26 42	06 47 17 25	02 23/01 17	ध.12।24	07 00 56 59	31	08 55 19 29	रवि-उल-उस्सानी मु. मास 4, लाला लाजपतराय पुण्य दि.
27	बु	4 41 19 23 19	मू 09 46 10 42	धृ 14 21 12 32	व 13 37 12 15	26 39	06 48 17 25	03 02 18	धनु	07 01 57 30	32	10 00 20 28	भ. 12।12 से 23।16 तक, गंडमूल स. 10।39, सूर्य षष्ठी B
28	गु	5 38 04 22 02	पूषा 07 11 09 41	शू 07 57 10 00	बव 09 26 10 35	26 36	06 49 17 24	04 03 19	म.15।33	07 02 58 03	33	10 59 21 30	ज्ञान-सौभाग्य-पाण्डव 5, अनुराधायां सूर्यः 14।12
29	शु	6 36 49 21 33	उषा 06 29 09 25	गं 03 05 08 04 / वृ 59 49 30 45	कौ 07 11 09 42	26 33	06 50 17 24	05 04 20	मकर	07 03 58 37	35	11 51 22 32	सूर्य षष्ठी (डाला छठ) पूजा (बिहार), मकरे गुरुः 13।35
30	श	7 37 33 21 52	श्र 07 44 09 56	ध्रु 58 01 30 03	ग 06 55 09 37	26 30	06 50 17 24	06 05 21	कुं.22।29	07 04 59 12	36	12 35 23 31	भ. 21।49 से, पंचक प्रा. 22।26,
मार्ग. 01	र	8 40 09 22 55	ध 10 52 11 12	व्या 57 35 29 53	वि 08 37 10 18	26 28	06 51 17 24	07 06 22	कुम्भ	07 05 59 49	37	13 13 24 00	भ. 10।15 तक, सायन धनु संक्रांति, रा. मार्गशीर्ष प्रा. C
02	चं	9 44 19 24 36	श 15 38 13 07	ह 58 16 30 10	बा 12 02 11 41	26 25	06 52 17 23	08 07 23	कुम्भ	07 07 00 26	38	13 47 00 29	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड-आंवला-कृतयुगादि 9
03	मं	10 49 42 26 46	पूभा 21 44 15 34	व 59 46 30 47	तै 16 52 13 38	26 22	06 53 17 23	09 08 24	मी.08।55	07 08 01 05	39	14 18 01 23	आशा दशमी C गोपाष्टमी, गोसंवर्धन सप्ताह पू.
04	बु	11 55 50 29 14	उभा 28 43 18 23	सि 60 00 - -	व 22 41 15 58	26 20	06 54 17 23	10 09 25	मीन	07 09 01 45	40	14 47 02 16	भ. 15।55 से 29।11 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, D
05	गु	12 60 00 - -	रे 36 12 21 23	सि 01 45 07 36	बव 29 03 18 31	26 18	06 54 17 23	11 10 26	मे.21।23	07 10 02 26	42	15 16 03 07	तिथि वृद्धिः, कालीदास ज., पंचक स. 21।20
06	शु	12 02 17 07 50	अ 43 45 24 25	व्य 03 59 08 31	बा 02 17 07 50	26 15	06 55 17 23	12 11 27	मेष	07 11 03 08	43	15 45 03 59	प्रदोष व्रत, गंडमूल स. 24।22, फातिहा यजदहूम (मु.)
07	श	13 08 42 10 25	भ 51 04 27 21	वरि 06 10 09 24	तै 08 42 10 25	26 13	06 56 17 23	13 12 28	मेष	07 12 03 51	44	16 17 04 51	बैकुण्ठ 14 व्रत, वृश्चिके बुधः 07।05 E जैन चातुर्मास स.
08	र	14 14 46 12 51	कृ 57 52 30 06	परि 08 06 10 11	व 14 46 12 51	26 11	06 57 17 22	14 13 29	वृ.10।04	07 13 04 36	45	16 51 05 45	भ. 12।48 से 25।56 तक, श्री सत्यनारायण पूजा, E
09	चं	15 20 13 15 03	रो 60 00 - -	शि 09 35 10 47	बव 20 13 15 03	26 09	06 57 17 22	15 14 30	वृष	07 14 05 21	46	17 29 06 39	कार्तिकी पूर्णिमा व्रत, भीष्मपंचक पू., कार्तिक स्नान पू., F

A वृश्चिक संक्रांति मु. 30, चित्रगुप्त पूजन, गंडमूल प्रा. 14।36, वृश्चिके सूर्यः 06।54, तुलायां शुक्रः 25।03

D चातुर्मास स., भीष्मपंचक प्रा., तुलसी विवाह, गंडमूल प्रा. 18।20 F मन्वादि 15, गुरु नानकदेव ज., देवदीपोत्सव

कार्तिक शु. 8 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 22 नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	10	11	06	09	06	09	01	07	00	10	08
05	03	21	20	00	06	03	26	26	13	24	28
59	41	30	41	18	24	28	50	50	43	02	54
49	33	54	19	00	11	36	09	09	00	14	25
60	753	06	90	10	74	04	00	00	02	00	01
37	07	14	29	55	12	51	30	30	14	14	21
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
अनु. 1	धनि. 4	रेवती 2	विशा. 1	उ.षा. 2	चित्रा 4	उ.षा. 3	मृ. 1	ज्येष्ठा 3	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा सोमवार अनुराधा नक्षत्र से प्रारंभ होकर सुदी पूर्णिमा सोमवार रोहिणी नक्षत्र तदनुसार दिनांक 16 से 30 नवं. 2020 तक रहेगा। चन्द्रदर्शन सोमवार अनुराधा नक्षत्रे मु. 15 तेजी कारक योग करेगा तथा नई योजनाओं की क्रियान्विति से जनता को रोजगार प्राप्ति होगी। इस पक्ष शुक्ल प्रतिपदा चन्द्रवार में भुवन भास्कर सूर्यदेव वृश्चिक राशि से अशुभ फलकारक रहेंगी। आणविक संस्थानों में विस्फोट योग। तकनीकी शिक्षा का अवसर बढ़ेगा। विश्व की प्रत्येक घटना सर्वत्र दृष्टिगोचर लेकिन प्राकृतिक आपदाओं से सभी छिन्न-भिन्न होने का योग बनेगा। मास में जन्म वेध नामक अशुभ योग बना है। वृश्चिक संक्रांति के दिन की वर्षा से रोगों का प्रकोप होगा। कृषि नष्ट होगी। विभिन्न उपद्रव होंगे। सोना, पीतल, मूंग मोठ, तृण का संग्रह करके आठ मास बाद बेचने से लाभ होगा। रोहिणी युत कार्तिक पूर्णिमा से सभी प्राणियों को कष्ट रहेगा। मास के चन्द्रग्रहण से किसी स्थान पर भूकम्प का योग बनेगा। आकाशीय विद्युत के प्रकोप से हानि होगी। किसी स्थान पर वर्षा होगी। यदि इनमें से कोई भी उत्पात हुआ तो सभी जिन्स के स्टाक कर के पांचवें महीने में बेचने से लाभ होगा। घी तथा सफेद वस्तुओं में तेजी होगी। तीन मास में लाभ मिलेगा। तेल के संग्रह से लाभ मिलेगा। ता. 20 नवं. मकर राशि में गुरु का प्रवेश होकर शनि के साथ राशि योग बनायेगा। **समसप्तक शनि गुरु रहे अथवा हो इकठोर। प्रजा नाश अरु अन्न में महंगाई का जोर॥** तीन मास गेहूं, चना आदि में तेजी कारक। **तीन मास गेहूं, चना आदि में तेजी कारक।** ता. 21 नवंबर सुदी 7 शनिवारी-कार्तिक **शुक्ला सप्तमी जो शनिवारी आव। चावल, चांदी, रुई, सूत, सन, पटसन महंगा भाव॥** सफेद वर्ण की वस्तुएं तेज होंगी। तथा रुई, कपास में भारी तेजी अथवा भारी मंदी चलेगी। दो-तीन मास में अच्छी तेजी का वातावरण बना सकती है। अनुराधा का बुध अच्छी मंदी भी करता है। अतः घटबढ़ रहेगी। खल-बिनौला, मूंग, मोठ में भारी मंदी ला सकता है।

कार्तिक शु. 15 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 30 नवम्बर



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	01	11	07	09	06	09	01	07	00	10	08
14	09	22	03	01	16	04	26	26	13	24	29
05	42	42	00	48	19	09	24	24	25	01	05
21	06	54	25	22	04	35	43	43	57	23	52
60	721	11	93	11	74	05	00	00	02	00	01
46	42	41	26	40	31	23	31	31	01	02	31
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ
अनु. 4	रोहि. 4	रेवती 2	विशा. 4	उ.षा. 2	स्वाती 3	उ.षा. 3	मृ. 1	ज्येष्ठा 3	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 1

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः -18

श्री सं. 2077 शाके 1942

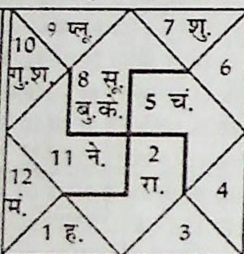
रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. ति	घ	प	घं	मि	नक्षत्र स्टैं.टा. न	घ	प	घं	मि	योग स्टैं.टा. यो	घ	प	घं	मि	करण स्टैं.टा. क	घ	प	घं	मि	दिनमान		स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	ता. 1 से 14 दिसंबर सन् 2020 ई., रा. मिति 10 से 23 मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु। निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
10	मं	1	24	53	16	55	रो	03	57	08	33	सि	10	29	11	10	कौ	24	53	16	55	26	07	06	58	17	22	16	15	01	मि.21।40	07	15	06	08	60/47	18	11	07	35	विश्व एड्स दिवस
11	बु	2	28	36	18	25	मृ	09	13	10	40	सा	10	43	11	16	ग	28	36	18	25	26	05	06	59	17	22	17	16	02	मिथुन	07	16	06	56	49	19	00	08	31	भ. 30।58 से, ज्येष्ठायां सूर्यः 18।33
12	गु	3	31	16	19	30	आ	13	31	12	24	शुभ	10	10	11	04	व	00	03	07	01	26	03	07	00	17	22	18	17	03	मिथुन	07	17	07	45	50	19	53	09	25	भ. 19।27 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.), सौभाग्य सुन्दरी व्रत
13	शु	4	32	46	20	07	पुन	16	42	13	41	शु	08	46	10	31	बव	02	09	07	52	26	02	07	01	17	22	19	18	04	क.07।25	07	18	08	36	51	20	50	10	16	नौसेना दिवस A गंडमूल स. 14।32, भारतीय झण्डा दि.
14	श	5	33	01	20	14	पु	18	43	14	30	ब	06	25	09	35	कौ	03	02	08	14	26	00	07	01	17	23	20	19	05	कर्क	07	19	09	27	53	21	50	11	03	गंडमूल प्रा. 14।27
15	र	6	31	56	19	48	आ	19	26	14	49	ऐं/वै	03/58	04/41	08/30	15/30	ग	02	38	08	05	25	58	07	02	17	23	21	20	06	सिं.14।49	07	20	10	21	54	22	51	11	46	भ. 19।45 से,
16	चं	7	29	29	18	50	म	18	51	14	35	वि	53	13	28	20	वि	00	52	07	23	25	57	07	03	17	23	22	21	07	सिंह	07	21	11	15	55	23	53	12	26	भ. 07।20 तक, भैरव पूजन, मासिक कालाष्टमी व्रत, A
17	मं	8	25	43	17	21	पूफा	16	57	13	50	प्री	46	42	25	44	कौ	25	43	17	21	25	56	07	03	17	23	23	22	08	कं.19।34	07	22	12	11	56	24	00	13	02	B शुक्रः 29।18, विश्व मानवाधिकार दिवस
18	बु	9	20	41	15	21	उफा	13	48	12	35	आ	39	14	22	46	गर	20	41	15	21	25	54	07	04	17	23	24	23	09	कन्या	07	23	13	08	58	00	55	13	38	भ. 26।08 से,
19	गु	10	14	34	12	55	ह	09	32	10	54	सौ	30	56	19	27	वि	14	35	12	55	25	53	07	05	17	23	25	24	10	तु.21।55	07	24	14	06	59	01	59	14	14	भ. 12।52 तक, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त), वृश्चिके B
20	शु	11	07	35	10	07	चि/स्वा	04/58	23/38	08/30	51/33	शो	21	58	15	53	बा	07	35	10	07	25	52	07	06	17	24	26	25	11	तुला	07	25	15	05	61/00	03	03	14	52	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)
00	शु	12	60	00	31	05	0	00	00	00	00	00	00	00	00	00	०	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	तिथि क्षयः
21	श	13	52	05	27	56	वि	52	33	28	07	अति	12	35	12	08	गर	26	02	17	31	25	51	07	06	17	24	27	26	12	वृ.22।44	07	26	16	05	01	04	11	15	33	भ. 27।53 से, शनि प्रदोष व्रत (कृ.)
22	र	14	44	13	24	48	अनु	46	30	25	43	म/धृ	03/53	00/33	08/28	19/32	वि	18	06	14	21	25	50	07	07	17	24	28	27	13	वृश्चिक	07	27	17	07	02	05	20	16	19	भ. 14।18 तक, बालाजी ज., गंडमूल प्रा. 25।40
23	चं	30	36	45	21	49	ज्ये	40	53	23	28	शू	44	28	24	55	चतु	10	24	11	17	25	50	07	07	17	25	29	28	14	ध.23।28	07	28	18	09	03	06	30	17	11	सोमवती अमा., देवपितृकार्य अमा., विश्व ऊर्जा दिवस

मार्गशीर्ष कृ. 8 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 8 दिसंबर

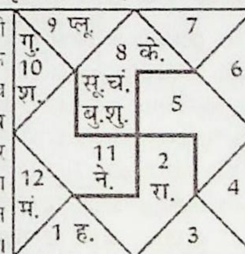
[पक्ष फलम्]

मार्गशीर्ष कृ. 30 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 14 दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	04	11	07	09	06	09	01	07	00	10	08
22	21	24	15	03	26	04	25	25	13	24	29
12	51	35	29	24	16	54	59	59	10	02	18
11	09	02	36	21	12	34	17	17	49	44	35
60	829	16	93	12	74	05	00	00	01	00	01
56	22	16	46	19	46	51	14	14	45	18	40
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ
ज्येष्ठा 2	पू.फा. 3	रेवती 3	अनु. 4	उ.षा. 3	विशा. 2	उ.षा. 3	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.भा. 1



यह पक्ष प्रतिपदा मंगलवार रोहिणी नक्षत्र से प्रारंभ होकर सोमवती अमावस्या ज्येष्ठा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 1 से 14 दिसं. 2020 तक चलेगा। इस पक्ष में मासिक धारणा का फलादेश माह में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार होने से-**यत्र मासे महीसूनोर्जायंते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत॥** पांच मंगलवार होने से पृथ्वी पर रक्तपात (खून-खराबा) का योग तथा छत्र भंग योग बनेगा। किसी बड़े व्यक्ति का अभाव योग बनता है। लेकिन पांच बुधवार होने से-**बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरं। प्रजानां सुखमत्यंतं सुभिक्ष च प्रजायते॥**" पांच बुधवार होने से जनता को सुख और सुभिक्ष योग बनेगा। युद्ध, हत्यायें, मंत्री मण्डल परिवर्तन, किसी देश का पतन संभव है। बदी पक्ष में खल, बिनौला, तिलहन, तेलों में अच्छी तेजी की आशा तो अनाज मंदा। लालवर्ण की वस्तुएं तेज रहें। सुदी पक्ष में सर्व वस्तुएं तेज। अच्छी तेजी रह सकती है। मास में किसी नामी सटोरिया का दिवाला निकल सकता है। ता. 3 दिसंबर बदी तीज आर्द्रा युक्त है-स्टॉक खाली करने की राय देता है। **मंगसिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आय। राजा प्रजा सुखी रहे मंदा धान्य बिकाय॥** ता. 6 दिसं बदी छट रविवारी तथा दशमी गुरुवारी रुई में प्रथम दो-तीन दिन मंदा रहकर फिर पक्ष के अंत तक अच्छी तेजी तो घी तेज होगा। ता. 8 दिसंबर ज्येष्ठा बुध एक सप्ताह-10 दिन में घी, गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल, मूंग, मोंठ, आलू, प्याज, हरी सब्जियां, मूंगफली आदि में घटबढ़ से भारी तेजी ला सकता है। तो नौमी बुधवारी वर्षा में कमी से आगे सूखा पड़े। बदी 12 का क्षय-**मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाय। कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाय॥** ता. 14 दिसं. सोमवती मावस मंदी कारक है। तीन दिन के अंदर सर्व प्रमुख [illegible] से काफी भी अच्छा मंदा लायेगी।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	07	11	07	09	07	09	01	07	00	10	08
28	18	26	24	04	03	05	25	25	13	24	29
18	59	21	53	39	45	30	40	40	00	05	28
09	49	39	02	33	15	37	12	12	58	12	52
61	885	19	94	12	74	06	00	00	01	00	01
03	01	15	06	45	55	10	09	09	31	31	46
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ
ज्येष्ठा 4	ज्येष्ठा 1	रेवती 3	ज्येष्ठा 3	उ.षा. 3	अनु. 1	उ.षा. 3	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.भा. 1

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः -19

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 15 से 30 दिसं. सन् 2020 ई., रा. मिति 24 मार्ग. से 9 पौष तक। रवि दक्षिण-उत्तरायने, दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ. प. घं. मि.)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ. प. घं. मि.)	योग स्टैं.टा. (यो घ. प. घं. मि.)	करण स्टैं.टा. (क घ. प. घं. मि.)	दिनमान	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. (रा. घं. मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	
मार्ग 24	मं	1 30 04 19 10	मू 36 04 21 34	ग 36 03 21 33	किं 03 17 08 27	25 49	07 08 17 25	01 29 15	धनु	07 29 19 12	01 03	07 38 18 08	धनु संक्रांति मु.30, गंडमूल स. 21।31, मूल धने सूर्यः 21।32
25	बु	2 24 33 16 58	पूषा 32 25 20 07	वृ 28 36 18 35	कौ 24 33 16 58	25 48	07 09 17 25	02 30 16	म.25।50	08 00 20 16	04	08 42 19 10	चन्द्रदर्शन मु. 30 A मु. मास 5
26	गु	3 20 29 15 21	उषा 30 16 19 16	ध्रु 22 20 16 05	गर 20 29 15 21	25 48	07 09 17 26	03 01 17	मकर	08 01 21 21	05	09 38 20 14	भ. 26।45 से, मूल धने बुधः 11।39, जमादि-उल-अव्वल A
27	शु	4 18 11 14 26	श्रव 29 52 19 07	व्या 17 28 14 09	वि 18 11 14 26	25 48	07 10 17 26	04 02 18	मकर	08 02 22 26	05	10 27 21 16	भ. 14।23 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.)
28	श	5 17 48 14 18	ध 31 21 19 43	ह 14 05 12 48	बा 17 48 14 18	25 47	07 10 17 27	05 03 19	कुं.07।19	08 03 23 31	05	11 09 22 16	श्री पंचमी, पंचक प्रा. 07।16, गुरु तेगबहादुर बलिदान दि.
29	र	6 19 22 14 56	शत 34 42 21 04	व 12 12 12 04	तै 19 22 14 56	25 47	07 11 17 27	06 04 20	कुम्भ	08 04 24 37	06	11 45 23 13	स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी, श्री राम कलेवा
30	चं	7 22 47 16 18	पूभा 39 45 23 05	सि 11 45 11 53	व 22 47 16 18	25 47	07 11 17 28	07 05 21	मी.16।32	08 05 25 43	06	12 18 24 00	भ. 16।15 से 29।11 तक, मित्र सप्तमी, सायन मकर B
पौष 01	मं	8 27 44 18 18	उभा 46 10 25 40	व्य 12 29 12 12	बव 27 44 18 18	25 47	07 12 17 28	08 06 22	मीन	08 06 26 50	06	12 48 00 08	मासिक दुर्गाष्टमी, गंडमूल प्रा. 25।37, रा. पौषारंभ
02	बु	9 33 46 20 43	रेव 53 27 28 35	वरि 14 07 12 51	बा 00 38 07 28	25 47	07 12 17 29	09 07 23	मे.28।35	08 07 27 56	06	13 17 01 00	पंचक स. 28।33, महानन्दा नवमी
03	गु	10 40 19 23 21	अ 60 00 - -	परि 16 16 13 43	तै 07 00 10 01	25 47	07 13 17 29	10 08 24	मेष	08 08 29 03	06	13 46 01 52	मेषे मंगल 10।09
04	शु	11 46 51 25 58	अ 01 04 07 39	शि 18 32 14 38	व 13 37 12 40	25 48	07 13 17 30	11 09 25	मेष	08 09 30 10	06	14 17 02 44	भ. 12।37 से 25।55 तक, वैकुण्ठ 11, मौनी 11, मोक्षदा C
05	श	12 52 50 28 22	भ 08 31 10 38	सि 20 33 15 27	बव 19 55 15 12	25 48	07 14 17 30	12 10 26	वृ.17।21	08 10 31 17	07	14 50 03 37	C एकादशी व्रत, गीता ज., क्रिसमस डे, गंडमूल स. 07।39
06	र	13 57 54 30 24	कृ 15 19 13 22	सा 22 01 16 02	कौ 25 30 17 26	25 49	07 14 17 31	13 11 27	वृष	08 11 32 24	07	15 26 04 31	प्रदोष व्रत (शु.)
07	चं	14 60 00 - -	रो 21 09 15 42	शुभ 22 42 16 19	गर 30 00 19 14	25 49	07 14 17 31	14 12 28	मि.28।42	08 12 33 31	07	16 07 05 27	तिथि वृद्धिः, पूपायां मूर्यः 23।45, पिशाच मोचिनी चतुर्दशी
08	मं	14 01 47 07 58	मृ 25 50 17 35	शु 22 28 16 14	व 01 47 07 58	25 50	07 15 17 32	15 13 29	मिथुन	08 13 34 38	07	16 54 06 23	भ. 07।55 से 20।30 तक, दत्तात्रेय ज., श्री सत्यनारायण पूजा
09	बु	15 04 25 09 01	आ 29 17 18 58	ब्र 21 16 15 45	बव 04 25 09 01	25 51	07 15 17 33	16 14 30	मिथुन	08 14 35 46	07	17 46 07 19	पूर्णिमा व्रत, अन्नपूर्णा ज., त्रिपुर भैरव जयंती

B संक्रांति, संत धीसाराम ज., नरसी मेहता ज., शिशिर ऋतु प्रा.

⌟आलू आदि, लाल वर्ण की वस्तुएं चना, गुड़, मसूर आदि में तेजी तथा बीच-बीच में अच्छी तेजी का वातवरण भी बना सकता है। ता. 25 दिसं. पू.षा. बुध-एक सप्ताह के अंदर अनाज मंदा तो सोना, चांदी में घटबढ़ से अच्छी मंदी कारक। ता. 30 दिसंबर बुधवारी पूनम-रुई, कपास, तिलहन पदार्थ, दालों में तेजी के झटके तो अलसी में विशेष तेजी कारक है।

मार्गशीर्ष शु. 8 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 22 दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	11	11	08	09	07	09	01	07	00	10	08
06	06	29	07	06	13	06	25	25	12	24	29
26	34	09	29	23	45	21	14	14	50	10	43
50	14	30	48	31	02	19	45	45	09	25	23
61	725	22	95	13	75	06	00	00	01	00	01
06	05	38	16	14	02	30	23	23	10	47	52
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ
[illegible] 2	[illegible] 1	[illegible] 4	[illegible] 3	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 3	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 1

कुण्डली (ता. 22 दिसंबर): 10 गु.श., शु.के.8, 11 ने., 9 प्लू. सू.बु., 6, 7, 12 चं. मं., 3, 1 ह., 5, 2 रा., 4

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा मंगलवार मूल नक्षत्र से आरंभ होकर पूर्णिमा बुधवार आर्द्रा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 15 से 30 दिसं. तक चलेगा। मास में पांच मंगलवार नेष्ट तो बुधवार श्रेष्ठ हैं। फल समान प्राप्त होंगे। यथा-**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** पक्ष में चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति हो रहा है। आभूषण-जेवरातों में तेजी का झटका चलेगा तथा सरकारी कार्यों में गति बढ़ेगी। यात्री वर्ग तीर्थाटनों का लाभ लेंगे। पक्ष में भुवन भास्कर सूर्यदेव धनु राशि में मंगलवार होने से घी, तिल तथा तैल में तेजी चलेगी। 30 मुहूर्ति संक्रांति में शुभाशुभ के मध्यम फल प्राप्त होंगे। घी, तिल, तैल गुड़, खांड आदि रसकसों, कुसुंभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओं में तेजी बनेगी। अग्निकांडो से हानि होगी। तेज हवायें चलेंगी। किसी रोग का प्रकोप होगा। धनु संक्रांति के दिन दिन की वर्षा से अनावृष्टि तथा महामारी का योग बनेगा। गेहूं, चना आदि की खेतियों की वृद्धि होगी। चांदी में मंदा रहेगा। रुई में तेजी चलेगी। ता. 15 दिसंबर धनु संक्रांति मंगलवारी खर्पर योग युक्त है-**शनिवारी संक्रांति फिर दूजी हो रविवार। तीजी मंगलवार को खर्पर योग विचार॥** दुर्भिक्षकारी है। अरहर, मटर, मूंग में मंदी कारक तो लालवर्ण की वस्तुऐं, गुड़, लालमिर्च आदि, सोना, चांदी, अनाज, चना, गुंवार, मक्का, सरसों, चावल आदि में तेजी कारक है। सुदी 2 बुधवारी पक्ष में घी, रुई, तिलहन पदार्थों में अच्छी तेजी तथा आलू, प्याज, मूल पदार्थ भी अच्छे तेज होंगे। ता. 20 दिसं सुदी 6 रविवारी तथा दशमी गुरुवारी भी पक्ष में उपरोक्त समर्थक है। रुई में और अधिक तेजी आ सकती है। ता. 23 दिसंबर सुदी 9 बुधवारी-**मंगसिर नोमी रेवती बुधवारी दुर्भिक्ष।** दुर्भिक्षकारी है। उ.षा. 4 गुरु एवं मेष का मंगल एक मास के अंदर खल, बिनौला, घी, सोना, चांदी, तांबा, हल्दी, धनियां, मूल पदार्थ⌟

मार्गशीर्ष शु. 15 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 30 दिसंबर

कुण्डली (ता. 30 दिसंबर): 10 गु.श., शु.के.8, 11 ने., 9 सू. बु.प्लू., 6, 7, 12, 3 चं., 1 मं.ह., 5, 2 रा., 4

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	02	00	08	09	07	09	01	07	00	10	08
14	12	02	20	08	23	07	24	24	12	24	29
35	53	21	19	10	45	14	49	49	42	17	58
46	45	37	11	53	36	28	19	19	17	45	36
61	756	25	97	13	75	06	01	01	00	01	01
08	40	20	11	37	07	47	42	42	47	03	56
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible] 1	[illegible] 2	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 1

पौष कृष्ण पक्षः -20

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 31 दिसं. से 13 जन. 2021 ई., रा. मिति 10 से 23 पौष तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घ प)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दैं. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
पौष 10	गु	1 05 45 09 34	पुन 31 30 19 51	ऐं 19 05 14 53	कौ 05 45 09 34	25 52	07 15 17 33	17 15 31	क.13।41	08 15 36 53	61/07	18 44 08 12	न्यू ईयर इवनिंग डे
11	शु	2 05 53 09 37	पु 32 36 20 18	वै 15 59 13 39	गर 05 53 09 37	25 53	07 16 17 34	18 16 J1	कर्क	08 16 38 01	08	19 44 09 01	भ. 21।25 से, नववर्ष दिवस, गंडमूल प्रा. 20।15
12	श	3 04 53 09 13	आ 32 39 20 20	वि 12 03 12 05	वि 04 53 09 13	25 54	07 16 17 35	19 17 02	सिं.20।20	08 17 39 09	08	20 46 09 46	भ. 09।10 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.)
13	र	4 02 54 08 26	म 31 48 19 59	प्री 07 20 10 12	बा 02 54 08 26	25 55	07 16 17 36	20 18 03	सिंह	08 18 40 17	08	21 48 10 27	गंडमूल स. 19।56, धने शुक्रः 29।05
14	चं	5 00 02 07 17	पूफा 30 09 19 20	आ 01 57 08 03 / सौ 55 57 29 39	तै 00 02 07 17	25 57	07 16 17 36	21 19 04	कं.25।07	08 19 41 26	08	22 49 11 04	भ. 29।47 से, मकरे बुधः 27।57
00	चं	6 56 25 29 50	0 00 00 00 00	0 00 00 00 00	0 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः
15	मं	7 52 06 28 07	उफा 27 47 18 23	शो 49 25 27 02	वि 24 20 17 00	25 58	07 16 17 37	22 20 05	कन्या	08 20 42 35	09	23 51 11 40	भ. 16।57 तक
16	बु	8 47 13 26 10	ह 24 49 17 12	अति 42 25 24 15	बा 19 44 15 10	26 00	07 17 17 38	23 21 06	तु.28।32	08 21 43 44	09	24 00 12 14	मासिक कालाष्टमी व्रत, शनि अस्त 13।50
17	गु	9 41 51 24 01	चि 21 19 15 48	सु 35 01 21 17	तै 14 35 13 07	26 01	07 17 17 39	24 22 07	तुला	08 22 44 53	09	00 53 12 50	A प्रा. 10।49, उषायां सूर्यः 25।46
18	शु	10 36 07 21 43	स्वा 17 26 14 15	धृ 27 19 18 13	व 09 01 10 53	26 03	07 17 17 39	25 23 08	वृ.31।00	08 23 46 02	09	01 57 13 29	भ. 10।50 से 21।40 तक
19	श	11 30 09 19 20	वि 13 15 12 35	शू 19 25 15 03	बव 03 09 08 32	26 05	07 17 17 40	26 24 09	वृश्चिक	08 24 47 12	09	03 03 14 11	सफला एकादशी व्रत — B बुधोदयः 16।44
20	र	12 24 08 16 56	अ 08 59 10 52	गं 11 27 11 52	तै 24 08 16 56	26 07	07 17 17 41	27 25 10	वृश्चिक	08 25 48 21	09	04 11 14 58	वृत्तिकार भगवान बोधायन जयंती, प्रदोष व्रत, गंडमूल A
21	चं	13 18 17 14 36	ज्ये 04 48 09 12	वृ 03 34 08 42 / ध्रु 55 58 29 40	व 18 17 14 36	26 09	07 17 17 42	28 26 11	ध.09।12	08 26 49 31	09	05 19 15 52	भ. 14।33 से 25।26 तक, लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस
22	मं	14 12 53 12 26	मू 00 59 07 40 / पूषा 57 48 30 24	व्या 48 52 26 50	श 12 53 12 26	26 11	07 17 17 42	29 27 12	धनु	08 27 50 40	09	06 24 16 52	गंडमूल स. 07।38, पितृकार्य अमा., स्वामी विवेकानन्द जयंती, B
23	बु	30 08 11 10 33	उषा 55 35 29 31	ह 42 30 24 17	ना 08 11 10 33	26 13	07 17 17 43	30 28 13	म.12।08	08 28 51 49	08	07 23 17 54	लोहिड़ी, पुण्य अमावस्या, बकुला अमा., देवकार्य अमावस्या

पौष कृ. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 6 जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	05	00	09	09	08	09	01	07	00	10	09
21	16	05	01	09	02	08	24	24	12	24	00
43	28	25	44	47	31	02	27	27	37	25	12
44	43	44	51	05	38	32	03	03	57	50	18
61	841	27	98	13	75	06	00	00	00	01	01
09	59	15	31	52	11	57	20	20	26	16	59
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ
पू.षा. 3	हस्त 2	अभिज.2	उ.षा. 2	उ.षा. 4	मूल 1	उ.षा. 4	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अभिज.4	पू.भा. 2	उ.षा. 2

बु.गु.प्लू.श. 10 | 8 के. | 11 ने. | 9 सू.शु. | 6 चं. | 7 | 12 | 3 | 1 मं.ह. | 5 | 2 रा. | 4

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार पुनर्वसु नक्षत्र से प्रारंभ होकर बुधवारी अमावस्या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 31 दिसंबर 2020 से 13 जन. 2021 तक रहेगा। इस पक्ष एवं मास का फलम्-पांच गुरुवार युत मास में 'यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रह पश्चिमी देशो खड्ग युद्धञ्च जायते॥ पश्चिमी देशों में विग्रह होंगे। सशस्त्र युद्ध का योग बनेगा। व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। रुख मंदे का रहेगा। रसकस की हानि से रसादि में तेजी चलेगी। पौष में बुध का उदय होने से कहीं भी प्राकृतिक आपदा योग बनने से सभी वस्तुएं तेजी में चलेंगी। बुध के उत्तराषाढ़ में गोचर से शिशुओं को कष्ट का योग रहेगा। वायु वेग के साथ किन्हीं स्थानों पर वर्षा होगी। खेती को पाला, बर्फबारी अथवा ओला वृष्टि से हानि होगी। चने की फसल विशेष रूप से प्रभावित होगी। कई राजनेताओं को सन्तान के कार्यों से आरोपित होना पड़ेगा। धनु का शुक्र से गेहूं, जौ, चना, तुअर, उड़द, मटर, मसूर, ज्वार, बाजरा तथा सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुएं और वस्त्रों में तेजी बन सकती है। जबकि रुई, कपास, कॉटन, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, हल्दी में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 4 को बुध मकर राशि में प्रवेश से सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं, रुई, कपास, कॉटन, गुड़, खाण्ड, घृत, कुछ तेल तेलवाना तथा किराना जिन्सों में तेजी व अनाजों में मंदी की धारणा बन सकती है।

पौष कृ. 30 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 जनवरी

बु.गु.प्लू.श. 10 | 8 के. | 11 ने. | 9 सू.चं.शु. | 6 | 7 | 12 | 3 | 1 मं.ह. | 5 | 2 रा. | 4

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	08	00	09	09	08	09	01	07	00	10	09
28	26	08	13	11	11	08	24	24	12	24	00
51	08	42	10	24	18	51	04	04	36	35	26
49	26	20	41	55	03	39	47	47	08	21	14
61	838	28	96	14	75	07	03	03	00	01	02
09	18	54	21	04	13	05	26	26	04	28	00
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
–	–	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ
उ.षा. 1	पू.षा. 4	अभिज.3	श्रवण 1	श्रवण 1	मूल 4	उ.षा. 4	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अभिज.4	पू.भा. 2	उ.षा. 2

पौष शुक्ल पक्षः -21

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 14 से 28 जन. सन् 2021 ई., रा. मिति 24 पौष से 8 माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. ति घ. प. घं. मि.	नक्षत्र स्टैं.टा. न घ. प. घं. मि.	योग स्टैं.टा. यो घ. प. घं. मि.	करण स्टैं.टा. क घ. प. घं. मि.	दिन मान घं. मि.	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा. अं. क. वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
पौष 24	गु	1 04 30 09 05	श्र 54 36 29 07	व 37 06 22 07	ब 04 30 09 05	26 15	07 17	17 44	01	29	14	मकर	08 29 52 58	61/08	08 16	18 58
25	शु	2 02 08 08 08	ध 55 07 29 19	सि 32 50 20 25	कौ 02 08 08 08	26 17	07 17	17 45	02	ज.उ. 01	15	कुं.17।08	09 00 54 06	07	09 01	20 00
26	श	3 01 21 07 49	श 57 19 30 12	व्य 29 53 19 13	ग 01 21 07 49	26 20	07 16	17 46	03	02	16	कुम्भ	09 01 55 14	07	09 41	21 00
27	र	4 02 18 08 12	पू.भा 60 00 - -	वरि 28 17 18 35	वि 02 18 08 12	26 22	07 16	17 47	04	03	17	मी.25।18	09 02 56 21	06	10 15	21 56
28	चं	5 05 02 09 17	पू.भा 01 13 07 45	परि 28 01 18 29	बा 05 02 09 17	26 25	07 16	17 47	05	04	18	मीन	09 03 57 28	05	10 47	22 50
29	मं	6 09 25 11 02	उ.भा 06 43 09 57	शि 28 55 18 50	तै 09 25 11 02	26 27	07 16	17 48	06	05	19	मीन	09 04 58 33	04	11 17	23 43
30	बु	7 15 06 13 18	रे 13 28 12 39	सि 30 41 19 32	व 15 06 13 18	26 30	07 16	17 49	07	06	20	मे.12।39	09 05 59 38	04	11 46	24 00
माघ 01	गु	8 21 35 15 53	अ 20 59 15 39	सा 32 56 20 26	बव 21 35 15 53	26 33	07 15	17 50	08	07	21	मेष	09 07 00 42	03	12 16	00 35
02	शु	9 28 13 18 32	भ 28 39 18 43	शुभ 35 13 21 20	कौ 28 13 18 32	26 36	07 15	17 51	09	08	22	वृ.25।27	09 08 01 45	02	12 48	01 27
03	श	10 34 22 20 59	कृ 35 51 21 35	शु 37 06 22 05	तै 01 24 07 48	26 38	07 15	17 52	10	09	23	वृष	09 09 02 47	01	13 22	02 21
04	र	11 39 27 23 01	रो 42 02 24 03	ब्र 38 11 22 31	व 07 04 10 04	26 41	07 14	17 52	11	10	24	वृष	09 10 03 48	00	14 01	03 15
05	चं	12 43 04 24 28	मृ 46 50 25 58	ऐं 38 11 22 30	बव 11 28 11 49	26 44	07 14	17 53	12	11	25	मि.13।05	09 11 04 48	60/59	14 46	04 11
06	मं	13 45 02 25 14	आ 50 02 27 14	वै 36 55 22 00	कौ 14 16 12 56	26 47	07 14	17 54	13	12	26	मिथुन	09 12 05 47	58	15 36	05 08
07	बु	14 45 18 25 20	पुन 51 36 27 52	वि 34 22 20 58	गर 15 23 13 22	26 51	07 13	17 55	14	13	27	क.21।46	09 13 06 45	57	16 32	06 03
08	गु	15 44 00 24 49	पु 51 41 27 53	प्री 30 35 19 27	वि 14 51 13 09	26 54	07 13	17 56	15	14	28	कर्क	09 14 07 43	56	17 33	06 54

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

पोंगल (तमिल), मकर संक्रांति पुण्य काल दिन भर, मकर A
चन्द्रदर्शन मु. 30, पंचक प्रा. 17।06, भारतीय थल सेना B
भ. 19।52 से, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.), गुरो अस्त: 28।59
भ. 08।09 तक A सूर्य: 08।16, संक्रांति मु. 30
C स. 12।36, गुरु गोविन्द सिंह ज., भानु सप्तमी
गंडमूल प्रा. 09।54 B दिवस, जमादि उस्सानी मु. मास 6
भ. 13।15 से 26।31 तक, सायन कुंभ संक्रांति, पंचक C
मासिक दुर्गाष्टमी, गंडमूल स. 15।36, रा. माघ प्रा.
भरणी में भौम: 12।59, श्रवण 1 शनि 19।58
सुभाष चन्द्र बोस जयंती, शाम्ब दशमी, श्रवणे सूर्य: 28।00
भ. 10।01 से 22।58 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत, वैकुण्ठ 11
कुम्भे बुध: 16।30, महाद्वादशी
गणतंत्र दिवस 72वां, प्रदोष व्रत (शु.)
भ. 25।18 से, मकरे शुक्र: 27।30
भ. 13।06 तक, माघ स्नान प्रारंभ, पूर्णिमा व्रत, शाकम्भरी D
D जयंती, श्री सत्यनारायण पूजा, गंडमूल प्रा. 27।50

गुरु अस्त: 16 जन. 2021

पौष शु. 8 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 21 जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	00	00	09	09	08	09	01	07	00	10	09
07	08	12	25	13	21	09	23	23	12	24	00
00	19	39	06	18	19	48	39	39	37	47	42
42	57	55	30	03	47	33	21	21	12	51	11
61	710	30	77	14	75	07	00	00	00	01	01
03	04	27	45	12	13	08	02	02	21	40	59
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ
उ.षा. 4	अभि. 3	अश्वि. 4	धनि. 1	श्रवण 1	पू.भा. 3	उ.भा. 4	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.भा. 2

कुण्डली (ता. 21 जनवरी): 11 ने., 9 शु., 10 सू., 8 के., 12, प्लू.गु.बु.श. 7, 1 चं.मं.ह., 4, 2 रा., 6, 3, 5

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार श्रवण नक्षत्र से प्रारंभ होकर गुरुवारीय पूर्णिमा पुष्य नक्षत्र तद्नुसार दि. 14 से 28 जनवरी 2021 तक रहेगा। इस पक्ष में शुक्रवार को चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति से सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी होकर बाद में भाव सम हो जायेंगे। रुई, सूत, सूती वस्त्र, रेशमी-ऊनी वस्त्रों, घी, सरसों, तेल तेजी में रहेंगे। सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, कांसा के भाव में मंदी। खाण्ड, गुड़, चीनी, शक्कर के भावों में मंदी का रुख रहेगा। इसी पक्ष में मकर राशि में सूर्य पौष सुदी प्रतिपदा गुरुवार दिनांक 14 जन. 2021 पर गुरुवारी संक्रांति धान्यों की हानि होगी। अधिक वर्षा होगी। श्रवण नक्षत्र की गुरुवारी बैठी 30 मुहूर्ति मकर संक्रांति से अशुभ फलों में न्यूनता रहेगी तथा वैश्विक शांति बनाने के सार्थक प्रयास होंगे। किसी रोग का प्रकोप होगा। चौपायें पशुओं में भी रोग फैलेगा। प्रशासन में चिन्ता बढ़ेगी। मध्यम वर्षा होगी। ठंड बढ़ेगी। कतिपय विशिष्ट व्यक्ति सम्मानित होंगे। कृषि की हानि होगी। उपद्रवों का भय रहेगा। कुसुम्भा, मजीठ, केसर आदि का संग्रह कर चौथे मास में बेचने से लाभ होगा। **करक मकर दो बहिन हैं, जो बैठें एकहि वार। कै परजा को पति मरे, कै पड़े अचिन्त्यो कार॥** गुरुवार की संक्रांति मकरेऽर्क से पीत वर्ण वाली वस्तुओं में उठा-पटक योग बनेगा। अन्नोत्पादन अच्छा होते हुए भी सरकारी नियंत्रण से भावों में गति बढ़ेगी। तिलहन, दलहन एवं अन्य पैट्रोलियम पदार्थों से जनता में क्रांति एवं आंदोलन करने जैसी स्थिति बन जाएगी। इस पक्ष में वर्षा एवं अवर्षा दोनों योग बनते हैं। शीत लहर का प्रकोप बना रहेगा। हिमालयवर्ती क्षेत्रों में बादल चाल के साथ रुक-रुककर वर्षा होने की संभावना रहेगी। कहीं-कहीं ओला वृष्टि योग। **पौष सुदी तेरस दिना, मंगल या शनिवार। वर्षा ना हो तो भरे, गेहूं के भंडार॥**

पौष शु. 15 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 28 जनवरी

कुण्डली (ता. 28 जनवरी): बु.ने. 11, 9, 10 सू., 8 के., 12, शु.प्लू.श.गु. 7, 1 मं.ह., 4 चं., 2 रा., 6, 3, 5

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	03	00	10	09	09	09	01	07	00	10	09
14	04	16	01	14	00	10	23	23	12	25	00
07	13	16	42	57	06	38	17	17	40	00	55
43	57	57	05	40	11	32	05	05	55	04	59
60	792	31	27	14	75	07	07	07	00	01	01
57	06	32	54	15	11	08	12	12	43	49	57
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ
श्रवण 2	पुष्य 1	भरणी 1	धनि. 3	श्रवण 2	उ.षा. 2	श्रवण 1	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.भा. 2

माघ कृष्ण पक्षः -22

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 29 जन. से 11 फर. सन् 2021 ई., रा. मिति 9 से 22 माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

ता. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घ प)	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय (घं मि)	अस्त (घं मि)	दिनांक प्र. मु. अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति क.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय (घं मि)	अस्त (घं मि)
माघ 09	शु	1 41 22 23 45	आ 50 28 27 24	आ 25 42 17 29	बा 12 51 12 21	26 57	07 12	17 57	16 15 29	सिं.27।24	09 15 08 39	60/55	18 36	07 42
10	श	2 37 40 22 16	म 48 17 26 31	सौ 19 55 15 10	तै 09 38 11 03	27 00	07 12	17 57	17 16 30	सिंह	09 16 09 34	54	19 39	08 25
11	र	3 33 11 20 28	पूफा 45 23 25 20	शो 13 27 12 34	व 05 31 09 24	27 04	07 11	17 58	18 17 31	क.31।01	09 17 10 29	53	20 42	09 04
12	चं	4 28 13 18 28	उफा 42 03 24 00	अति 06 32 09 47 सु 59 18 30 54	बव 00 46 07 29	27 07	07 11	17 59	19 18 F1	कन्या	09 18 11 22	52	21 45	09 41
13	मं	5 23 00 16 22	ह 38 32 22 35	धृ 52 00 27 58	तै 23 00 16 22	27 10	07 10	18 00	20 19 02	कन्या	09 19 12 15	52	22 48	10 17
14	बु	6 17 44 14 15	चि 35 01 21 10	शू 44 43 25 03	व 17 44 14 15	27 14	07 10	18 01	21 20 03	तु.09।52	09 20 13 07	51	23 51	10 52
15	गु	7 12 34 12 11	स्वा 31 37 19 48	गं 37 33 22 10	बव 12 34 12 11	27 17	07 09	18 01	22 21 04	तुला	09 21 13 58	50	24 00	11 29
16	शु	8 07 35 10 10	वि 28 26 18 31	वृ 30 35 19 22	कौ 07 35 10 10	27 21	07 08	18 02	23 22 05	वृ.12।50	09 22 14 48	49	00 56	12 09
17	श	9 02 51 08 16	अ 25 32 17 20	धृ 23 49 16 39	गर 02 51 08 16	27 25	07 08	18 03	24 23 06	वृश्चिक	09 23 15 38	48	02 01	12 54
00	श	10 58 24 30 29	0 00 00 00 00	0 00 00 00 00	0 00 00 00 00	00 00	00 00	00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00	00 00
18	र	11 54 19 28 51	ज्ये 22 56 16 17	व्या 17 19 14 03	बव 26 19 17 39	27 28	07 07	18 04	25 24 07	ध.16।17	09 24 16 26	47	03 07	13 44
19	चं	12 50 41 27 23	मू 20 43 15 23	ह 11 07 11 33	कौ 22 27 16 05	27 32	07 06	18 05	26 25 08	धनु	09 25 17 14	46	04 12	14 40
20	मं	13 47 37 26 09	पूषा 18 59 14 41	व 05 18 09 13 सि 59 56 31 04	ग 19 05 14 44	27 36	07 06	18 05	27 26 09	म.20।33	09 26 18 00	45	05 12	15 40
21	बु	14 45 18 25 12	उषा 17 54 14 15	व्य 55 13 29 10	वि 16 22 13 38	27 39	07 05	18 06	28 27 10	मकर	09 27 18 46	44	06 06	16 42
22	गु	30 43 56 24 38	श्रव 17 39 14 08	वरि 51 16 27 35	चतु 14 30 12 52	27 43	07 04	18 07	29 28 11	कुं.26।13	09 28 19 30	42	06 54	17 45

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

श्री रसिक माधुरी जयंती, दशाश्वमेध घाट स्नान प्रा. (काशी)
गंडमूल स. 26।28, बुध वक्री 20।24, महात्मा गांधी A
भ. 09।21 से 20।25 तक, संकष्ट चतुर्थी, गणेश चतुर्थी B
A पुण्य दिवस B व्रत (कृ.)
बुधास्त 15।38
भ. 14।12 से 25।10 तक D मूर्यः 07।13
मासिक कालाष्टमी व्रत, रामानन्दाचार्य ज., श्रवण 3 गुरुः C
C 9।52, श्रवण शुक्रः 27।04, मकरे बुधः 23।10
भ. 19।19 से 30।26 तक, गंडमूल प्रा. 17।17, धनिष्ठायां D
तिथि क्षयः E विश्व कुष्ठ निवारण दिवस
षट्तिला एकादशी व्रत स्मार्त F शनि उदय 28।36
गंडमूल स. 15।21, श्री शीतलनाथ जन्म-तप (जैन), E
भ. 26।06 से, मेरु त्रयोदशी, प्रदोप व्रत (कृ.)
भ. 13।35 तक, ऋषभदेव मोक्ष, श्रवणे बुधः 22।46, F
मौनी-माघी अमावस्या, देवपितृकार्य अमा., पंचक प्रा. 26।10

माघ कृ. 8 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	06	00	09	09	09	09	01	07	00	10	09
22	25	20	29	16	10	11	22	22	12	25	01
14	42	33	45	51	07	35	51	51	48	15	11
48	02	18	45	38	38	23	39	39	13	17	21
60	845	32	55	14	75	07	00	00	01	01	01
50	18	32	26	14	11	04	13	13	07	59	53
–	–	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ
श्रवण 4	विशा. 2	भरणी 3	धनि. 2	श्रवण 3	श्रवण 1	श्रवण 1	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.षा. 2

11 ने. | 9 | 10 सू.बु. | 12 | 8 के. | गु.शु. श.प्लू. | 7 चं. | 1 मं.ह. | 4 | 2 रा. | 6 | 3 | 5

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शुक्रवार, आश्लेषा नक्षत्र से प्रारंभ होकर मौनी-माघी अमावस्या गुरुवार श्रवण नक्षत्र तदनुसार दिनांक 29 जनवरी से 11 फरवरी 2021 तक रहेगा। ग्रह योग गणना से पांच शुक्रवार तथा पांच शनिवार युत मास में '**शुक्रस्य पंचवारास्युर्यत्र मासे निरन्नम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्ष च सुखं तत्र प्रवर्तते॥**' तथा '**शनैश्च पंचक दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥**' के अनुसार साधारण वर्षा होगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी। महगाई बढ़ने से प्रत्येक वस्तु में तेजी बनेगी। रसकसों में मंदे का प्रभाव रहेगा। भूकम्पों तथा अग्निकांडों से जन-धन की हानि होगी। राजनैतिक वाद-विवाद तथा विग्रह होंगे। उत्तरी पूर्वी देशों में सत्ता परिवर्तन होगा। माघ कृष्ण सप्तमी में यदि ओला वृष्टि हुई अथवा हिमपात हुआ, वर्षा करते हुए बादल गर्जे, आकाश में दिन रात बादल छाये रहे तो आगामी वर्षा काल में कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। अन्न में मंदा आने से प्रजा में सुख रहेगा। दशमी तिथि के क्षय से घी में तेजी बनेगी। अमावस्या श्रवण नक्षत्र युक्त होने से कष्टकारी योग। दुर्भिक्ष दायक योग भी। खाण्ड, रस पदार्थ, गुड़, मूंग, मोठ, गेहूं, उड़द, राई, चावल, ज्वार, अरहर, मटर आदि व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, तांबा में घटबढ़ योग। औषधि बाजार अनियंत्रित कारक तेजी में चलेगा। लोहा, कांसा, पीतल, तांबा, रांगा, अष्टधातु पदार्थ तेज चलेंगे। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, आसाम, उत्तरी राजस्थान में शीत लहर का प्रकोप छायेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात योग बनेगा। **माघ मास प्रतिपदा** [illegible] बने प्रकाश।

माघ कृ. 30 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 11 फरवरी

11 ने. | 10 | 9 | 12 | सू.बु.चं. | 8 के. | गु.शु. श.प्लू. | 7 | 1 मं.ह. | 4 | 2 रा. | 6 | 3 | 5

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	09	00	09	09	09	09	01	07	00	10	09
28	18	23	23	18	17	12	22	22	12	25	01
19	32	50	00	16	38	17	32	32	55	27	22
30	29	31	39	51	37	30	34	34	49	26	30
60	801	33	68	14	75	06	08	08	01	02	01
44	32	12	16	10	09	58	59	59	25	04	49
–	–	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
धनि. 2	श्रवण 3	भरणी 4	श्रवण 4	श्रवण 3	श्रवण 3	श्रवण 1	मृग. 1	ज्येष्ठा 3	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.षा. 2

माघ शुक्ल पक्षः -23

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 12 से 27 फर. सन् 2021 ई., रा. मिति 23 माघ से 8 फाल्गु. तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर-वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वा	तिथि	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय (दिल्ली) उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
23	शु	1	43	43	24	33	ध	18	26	14	26	प	48	16	26	22	किं	13	41	12	32	27	47	07	03	18	08	01	29	12	कुम्भ	09	29	20	13	60/41	07	35	18	45	गुप्त नवरात्र प्रा., गुरु उदयः 11।03, कुंभ संक्रांति मु. 15, A
24	श	2	44	53	25	00	श	20	28	15	14	शि	46	19	25	34	बा	14	08	12	42	27	51	07	03	18	08	02	30	13	कुम्भ	10	00	20	54	40	08	12	19	43	चन्द्रदर्शन मु. 30, **शुक्र अस्त 25।25** A कुम्भे सूर्यः 21।14
25	र	3	47	31	26	02	पूभा	23	54	16	35	सि	45	30	25	14	तै	16	01	13	26	27	55	07	02	18	09	03 रज्जब 01		14	मी.10।12	10	01	21	35	38	08	45	20	39	गौरी तीज, गोंतरी (पं.), वेलेन्टाइन डे, रज्जब मु. मास 7, B
26	चं	4	51	38	27	40	उभा	28	46	18	31	सा	45	49	25	21	व	19	25	14	47	27	59	07	01	18	10	04	02	15	मीन	10	02	22	13	37	09	15	21	32	भ. 14।44 से 27।37 तक, वरद-तिल 4, गणेश 4 व्रत, C
27	मं	5	57	03	29	49	रे	34	57	20	59	शुभ	47	08	25	51	बव	24	13	16	41	28	03	07	00	18	11	05	03	16	मे.20।59	10	03	22	50	35	09	45	22	25	बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, श्री पंचमी, तक्षक पूजा, रति D
28	बु	6	60	00	-	-	अ	42	10	23	51	शु	49	12	26	40	कौ	30	09	19	03	28	07	06	59	18	11	06	04	17	मेष	10	04	23	26	33	10	14	23	17	तिथि वृद्धिः, गंडमूल स. 23।49, शीतला 6 (बंगाल), E
29	गु	6	03	26	08	21	भ	49	56	26	57	ब्र	51	38	27	38	तै	03	26	08	21	28	11	06	58	18	12	07	05	18	मेष	10	05	23	59	31	10	45	24	00	वसंत ऋतु प्रा., सायन मीन संक्रांति E दारिद्रय हरण 6
30	शु	7	10	10	11	01	कृ	57	36	30	00	ऐं	54	01	28	34	व	10	10	11	01	28	15	06	57	18	13	08	06	19	वृ.09।43	10	06	24	31	29	11	18	00	10	भ. 10।59 से 24।17 तक, आरोग्य-आरोग्य-रथ-अचला 7,F
01	श	8	16	36	13	35	रो	60	00	-	-	वै	55	51	29	17	बव	16	36	13	35	28	19	06	57	18	14	09	07	20	वृष	10	07	25	01	28	11	55	01	04	मासिक दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, बुध मार्गी 29।29, कुम्भे G
02	र	9	22	04	15	45	रो	04	36	08	46	वि	56	42	29	36	कौ	22	04	15	45	28	23	06	56	18	14	10	08	21	मि.21।58	10	08	25	29	26	12	37	01	59	गुप्त नवरात्र पारणा, वृषे मंगल 28।37
03	चं	10	26	02	17	20	मृ	10	14	11	00	प्री	56	15	29	25	गर	26	02	17	20	28	27	06	55	18	15	11	09	22	मिथुन	10	09	25	55	24	13	24	02	55	भ. 29।47 से, विश्व स्काउट दि.
04	मं	11	28	07	18	08	आ	14	09	12	33	आ	54	18	28	37	वि	28	07	18	08	28	31	06	54	18	16	12	10	23	मिथुन	10	10	26	19	22	14	17	03	50	भ. 18।06 तक, जया एकादशी व्रत
05	बु	12	28	10	18	09	पुन	16	08	13	20	सौ	50	46	27	11	बा	28	10	18	09	28	35	06	53	18	16	13	11	24	क.07।13	10	11	26	42	20	15	16	04	43	भीष्म द्वादशी (भीष्म तर्पण), प्रदोष व्रत
06	गु	13	26	15	17	22	पु	16	10	13	20	शो	45	45	25	10	तै	26	15	17	22	28	39	06	52	18	17	14	12	25	कर्क	10	12	27	02	18	16	18	05	33	गंडमूल प्रा. 13।17, मं. विराट नगर (राज.)
07	शु	14	22	35	15	53	आ	14	27	12	38	अति	39	26	22	37	व	22	35	15	53	28	43	06	51	18	18	15	13	26	सिं.12।38	10	13	27	21	17	17	23	06	18	भ. 15।50 से 26।52 तक, श्री सत्यनारायण पूजा, ज. दिन ❑
08	श	15	17	31	13	50	म	11	18	11	21	सु	32	04	19	39	बव	17	30	13	50	28	48	06	50	18	18	16	14	27	सिंह	10	14	27	38	15	18	28	07	00	माघ स्नान समाप्त, पूर्णिमा व्रत, ललिता ज., रविदास ज., ❖

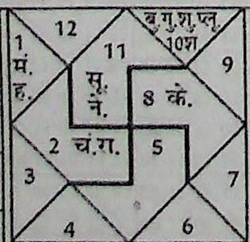
गुरु उदयः 12 फर. 2021

शुक्र अस्तः 13 फर. 2021

B बुधोदय 13।00 C गंडमूल प्रा. 18।29 D कामोत्सव, पंचक स. 20।56 ❖ गंडमूल स. 11।18 ❑ हजरत अली F मन्वादि-चन्द्रभागा-भानु 7, मर्यादा महोत्सव, शतंसूर्यः 11।38 G शुक्रः 26।23, रा. फाल्गुन प्रा.

माघ शु. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 20 फरवरी

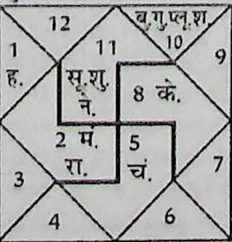
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	01	00	09	09	09	09	01	07	00	10	09
07	09	28	16	20	28	13	22	22	13	25	01
25	45	53	56	23	54	19	03	03	10	46	38
01	09	06	18	28	36	13	58	58	26	37	18
60	712	34	06	13	75	06	00	00	01	02	01
29	32	00	57	57	04	44	06	06	50	11	41
-	-	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
शत. 1	कृत्ति. 4	कृत्ति. 1	श्रवण 3	श्रवण 4	धनि. 2	श्रवण 1	रोहि. 4	ज्येष्ठा 2	अश्वि. 4	पू.भा. 2	उ.षा. 2



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शुक्रवार धनिष्ठा नक्षत्र, गुप्त नवरात्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा शनिवार मघा नक्षत्र तदनुसार दिनांक 12 से 27 फरवरी 2021 तक रहेगा। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति, कुंभ राशि, शतभिषा नक्षत्र से सभी वस्तुओं में तेजी कारक योग करेगा। स्त्री वर्ग संबंधी श्रृंगार सामग्री एवं मशीनरी पार्ट्स में तेजी का घटक बनेगा। इस पक्ष में भुवन भास्कर सूर्य देव कुंभ राशि में माघ शुक्ला प्रतिपदा शुक्रवार तथा अमावस्या से खप्पर योग बना होने से प्राणियों को कष्ट रहेगा परन्तु संक्रांति शुक्रवारी होने से कष्टफलों में न्यूनता आयेगी। घी गुड़, खांड आदि रसकशों, कुसुंभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओं तथा धान्यों में तेजी आयेगी। चौपाये पशु रोग ग्रस्त होंगे। बुद्धिजीवी वर्ग पीड़ित रहेगा। कुंभ संक्रांति के दिन की वर्षा से अनावृष्टि, महामारी का योग बनेगा। पक्ष में बुध मार्गी होकर बाजार के रुख में परिवर्तन ला सकता है। **वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की एकदम पलटा खाय॥** वृष का मंगल सभी अनाज, चन्दन, कुमकुम, वस्त्र, कपासादि में तेजी करेगा। **वृष राशौ यदा भौमः सर्वधान्य महर्घता। चन्दनं कुमकुम वस्त्रं कार्पासादि महर्घता॥ पूर्णिमा मघा युक्ता अहोरात्र का ध्यान। धन धान्य उत्तम बने खुशी जन-जन जान॥** पक्ष में वायदा व्यापार मंदा। हाजिर बाजार में लाभ। पेट्रोल, डीजल महंगा होगा। तेल, तिल, कोयला, लोहा, बांस, घास, गेहूं, चना, मक्का, मिर्च, जीरा, नमक बाजार तेज चलेगा। सोना, चांदी, तांबा, धातु बाजार उतार-चढ़ाव में चलेगा। अशोभनीय घटनाओं अपहरण, गंदी वस्तुएं खिलाकर जान खतरे में डालना। छुपना-छिपाना शीत लहर की आड़ में लुच्चे लोग लूटेंगे। **"माघ सुदी नौमी दिना चौथे प्रहर निहार। बादल हो तो भादव वर्षे भली प्रकार॥ माघी साते सुदी में बादल मेघ गर्जन्त। तो आषाढ़ में भड्डरी घणो मेघ करन्त॥"**

माघ शु. 15 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 27 फरवरी



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	04	01	09	09	10	09	01	07	00	10	09
14	09	02	18	22	07	14	21	21	13	26	01
27	52	52	40	00	39	05	41	41	24	02	49
38	25	52	42	23	44	32	42	42	18	06	42
60	850	34	34	13	74	06	12	12	02	02	01
16	45	29	12	43	59	29	40	40	08	14	34
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ
शत. 3	मघा 3	कृत्ति. 2	श्रवण 3	श्रवण 4	शत. 1	श्रवण 2	रोहि. 4	ज्येष्ठा 2	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 2

फाल्गुन कृष्ण पक्षः -24

श्री सं. 2077 शाके 1942 | दिन मान | स्टैं. टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. 28 फर. से 13 मार्च 2021 ई., रा. मिति 9 से 22 फाल्गुन तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान	सूर्य उदय अस्त (घं मि घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	5घं. 30मि. रा. अं. क. वि.		चन्द्र उदय अस्त (घं. मि. घं. मि.)	
09	र	1 11 23 11 22	पूफा 07 04 09 38	धृ 23 57 16 24	कौ 11 23 11 22	28 52	06 49 18 19	17 15 28	कं.15।10	10 15 27 53	00/13	19 33 07 38	
10	चं	2 04 38 08 39	उफा 02 09 07 39 / हस्त 56 57 29 34	शू 15 24 12 57	गर 04 38 08 39	28 56	06 48 18 20	18 16 M1	कन्या	10 16 28 07	12	20 37 08 15	भ. 19।11 से 29।47 तक
00	चं	3 57 34 29 49	0 00 00 00 00	0 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षयः
11	मं	4 50 39 27 02	चि 51 52 27 32	ग 06 42 09 27 / वृ 58 05 30 01	बव 24 06 16 25	29 00	06 47 18 20	19 17 02	तु.16।32	10 17 28 19	10	21 42 08 51	गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.)
12	बु	5 44 08 24 25	स्वा 47 12 25 38	ध्रु 49 52 26 42	कौ 17 21 13 42	29 04	06 46 18 21	20 18 03	तुला	10 18 28 29	08	22 48 09 28	A ज्योतिर्लिंग पूजा, पंचक प्रा. 09।21, कुम्भे बुधः 12।36
13	गु	6 38 14 22 02	वि 43 09 24 00	व्या 42 10 23 36	गर 11 07 11 11	29 09	06 45 18 22	21 19 04	वृ.18।23	10 19 28 38	07	23 54 10 08	भ. 21।59 से, पूभायां सूर्यः 18।01, धनिष्ठायां गुरुः 25।53
14	शु	7 33 06 19 58	अ 39 52 22 40	ह 35 06 20 46	वि 05 35 08 57	29 13	06 43 18 22	22 20 05	वृश्चिक	10 20 28 45	05	24 00 10 52	भ. 08।54 तक, मासिक कालाष्टमी व्रत, गंडमूल प्रा. 22।37
15	श	8 28 48 18 14	ज्ये 37 26 21 41	व 28 42 18 11	बा 00 52 07 03	29 17	06 42 18 23	23 21 06	ध.21।41	10 21 28 51	04	01 01 11 40	श्री सीताष्टमी, हुल्लाष्टमी
16	र	9 25 23 16 50	मू 35 51 21 02	सि 23 01 15 54	गर 25 23 16 50	29 21	06 41 18 23	24 22 07	धनु	10 22 28 55	02	02 05 12 34	भ. 28।13 से, गंडमूल स. 20।59, समर्थ गुरु रामदास जयंती
17	चं	10 22 49 15 48	पूषा 35 07 20 43	व्य 18 01 13 52	वि 22 49 15 48	29 26	06 40 18 24	25 23 08	म.26।41	10 23 28 58	09	03 06 13 32	भ. 15।45 तक, दयानन्द सरस्वती ज., विश्व महिला दिवस
18	मं	11 21 05 15 05	उषा 35 12 20 44	वरि 13 41 12 07	बा 21 05 15 05	29 30	06 39 18 25	26 24 09	मकर	10 24 28 59	59/59	04 01 14 33	विजया एकादशी व्रत
19	बु	12 20 13 14 43	श्र 36 08 21 05	परि 10 01 10 38	तै 20 13 14 43	29 34	06 38 18 25	27 25 10	मकर	10 25 28 58	57	04 50 15 34	प्रदोष व्रत (कृ.)
20	गु	13 20 15 14 43	ध 37 57 21 48	शि 07 03 09 26	व 20 15 14 43	29 39	06 37 18 26	28 26 11	कुं.09।24	10 26 28 55	55	05 33 16 35	भ. 14।40 से 26।48 तक, श्री महाशिवरात्री व्रत, चतुर्दश A
21	शु	14 21 15 15 06	शत 40 44 22 54	सि 04 50 08 32	श 21 15 15 06	29 43	06 36 18 26	29 27 12	कुम्भ	10 27 28 51	53	06 10 17 33	वैद्यनाथ जयंती
22	श	30 23 18 15 54	पूभा 44 35 24 24	सा 03 24 07 56	ना 23 18 15 54	29 47	06 35 18 27	30 28 13	मी.17।59	10 28 28 45	52	06 44 18 29	देवपितृकार्य अमा., शिव खप्पर पूजन

फाल्गुन कृ. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 6 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	07	01	09	09	10	09	01	07	00	10	09
21	20	06	24	23	16	14	21	21	13	26	02
28	38	55	13	35	24	50	19	19	40	17	00
51	40	40	19	29	21	00	27	27	08	54	09
60	836	34	59	13	74	06	00	00	02	02	01
05	24	53	05	26	55	12	08	08	24	16	25
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
–	–	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ
पू.भा. 1	ज्येष्ठा 2	कृति. 4	धनि. 1	धनि. 1	शत. 3	श्रवण 2	रोहि. 4	ज्येष्ठा 2	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 2

12 | बु.गु.प्लू.श. 10 | 11 | 1 ह. | 9 | सू.शु. ने. | 8 चं.के. | 2 मं.रा. | 5 | 3 | 7 | 4 | 6

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा रविवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र से प्रारंभ होकर शनिवारीय अमावस्या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र तदनुसार दिनांक 28 फरवरी से 13 मार्च 2021 तक रहेगा। पक्ष में महाशिवरात्रि होना सामाजिक उत्थान बावत् आध्यात्मिक संस्थाएं काम करेंगी। पांच रविवार युत मास में **'यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग स्यात्तदास्ते च महद्भयं॥'** जनता तथा शासन में परस्पर मतभेद बढ़ेंगे। सत्ता परिवर्तन होगा। अफवाहों का बाजार गरम रहेगा। रोग अशान्ति तथा भय व्याप्त होगा। तेज हवाएं चलेंगी। किसी स्थान पर वर्षा होगी। कृषि उत्पादन प्रभावित होगा। सोना, चांदी, अनाज, रुई, अलसी, तिलहन में तेजी। बिनौला खल, गर्म मसालों में मंदी का योग। घास, तृण, गेहूं, चना, जौ, गल्ला, खांड, शक्कर, गुड़, मिश्री, बादाम, किशमिश सभी के भाव घट-बढ़ में रहेंगे। मोटर यान, मशीनें, ट्रेक्टर, कारें तथा मोटर साईकिलों के भावों में मंदी का योग। वायु वेग के साथ बादल चाल। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखंड में उपद्रव योग तथा भूकम्प जैसी घटनाएं। हिमालय के क्षेत्रों में ओलावृष्टि। उत्तर भारत में शीत लहर का प्रकाप बन सकता है। विश्व का ख्याति प्राप्त नेता का हनन या देहावसान। रेलयान दुर्घटनाओं से जनता दुखी होगी। लोकसभा में अशोभनीय कृत्यों का योग। मामला उजागर। **फाल्गुन माह बहे पुरवाई। तब सरसों के माहू खाई॥** अर्थात् पूर्व की हवा से खड़ी फसलों को नुकसान हो सकता है। सरसों आदि में चेंपा लग सकता है।

फाल्गुन कृ. 30 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 मार्च

12 | गु.प्लू.श. 10 | 11 ने. | 1 ह. | 9 | सू.चं. बु.शु. | 8 के. | 2 मं.रा. | 5 | 3 | 7 | 4 | 6

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	10	01	10	09	10	09	01	07	00	10	09
28	23	11	02	25	25	15	20	20	13	26	02
28	28	01	04	08	08	32	57	57	57	33	09
45	29	08	22	20	26	14	12	12	48	50	34
59	754	35	74	13	74	05	12	12	02	02	01
53	59	15	42	04	49	51	43	43	39	16	16
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
–	–	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ
पू.भा. 3	पू.भा. 2	रोहि. 1	धनि. 3	धनि. 1	पू.भा. 2	श्रवण 2	रोहि. 4	ज्येष्ठा 2	भरणी 1	पू.भा. 2	उ.षा. 2

फाल्गुन शुक्ल पक्षः -25

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 14 से 28 मार्च सन् 2021 ई., रा. मिति 23 फाल्गुन से 7 चैत्र तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण-उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घ प)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	संदर्भ
फा. 23	र	1 26 30 17 09	उभा 49 31 26 22	शुभ 02 50 07 42	बव 26 30 17 09	29 51	06 33 18 28	01 29 14	मीन	10 29 28 37	59/50	07 15 09 23	चन्द्रदर्शन मु. 30, मीन संक्रांति मु. 45, गंडमूल प्रा. 26।19, A
24	चं	2 30 51 18 53	रे 55 34 28 46	शु 03 10 07 48	कौ 30 51 18 53	29 56	06 32 18 28	02 साव. 01 15	मे.28।46	11 00 28 27	48	07 45 20 17	फुलेरा दूज, रामकृष्ण परमहंस ज., पंचक स. 28।43, B
25	मं	3 36 17 21 02	अ 60 00 - -	ब्र 04 21 08 16	तै 03 28 07 54	30 00	06 31 18 29	03 02 16	मेष	11 01 28 15	45	08 14 21 09	पं. लेखराम वीर तृतीया, मीने शुक्र: 27।03
26	बु	4 42 35 23 32	अ 02 38 07 33	ऐं 06 17 09 01	व 09 22 10 15	30 04	06 30 18 29	04 03 17	मेष	11 02 28 01	43	08 44 22 02	भ. 10।12 से 23।29 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (शु.), C
27	गु	5 49 19 26 13	भ 10 21 10 37	वै 08 44 09 59	बव 15 57 12 52	30 09	06 29 18 30	05 04 18	वृ.17।24	11 03 27 45	41	09 16 22 56	महर्षि याज्ञवल्क जयंती A मीने सूर्य: 18।05
28	शु	6 55 59 28 51	कृ 18 17 13 47	वि 11 24 11 01	कौ 22 44 15 33	30 13	06 28 18 30	06 05 19	वृष	11 04 27 26	39	09 51 23 50	गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल) B सावान मु. मास 8
29	श	7 60 00 - -	रो 25 54 16 48	प्री 13 51 11 59	गर 29 07 18 05	30 17	06 27 18 31	07 06 20	मि.30।11	11 05 27 06	36	10 31 24 00	तिथि वृद्धिः, सायन मेष संक्रांति
30	र	7 01 59 07 13	मृ 32 34 19 27	आ 15 39 12 41	व 01 59 07 13	30 22	06 25 18 32	08 07 21	मिथुन	11 06 26 43	34	11 15 00 45	भ. 07।10 से 20।10 तक
चैत्र 01	चं	8 06 38 09 03	आ 37 45 21 30	सौ 16 23 12 58	बव 06 38 09 03	30 26	06 24 18 32	09 08 22	मिथुन	11 07 26 17	32	12 04 01 39	मासिक दुर्गाष्टमी, विश्वजल दि., होलाष्टक प्रा., दादुदयाल ज.
02	मं	9 09 28 10 10	पुन 41 02 22 48	शो 15 42 12 40	कौ 09 28 10 10	30 30	06 23 18 33	10 09 23	क.16।33	11 08 25 49	30	13 00 02 32	आनन्द नवमी D एकादशी व्रत
03	बु	10 10 12 10 27	पु 42 12 23 15	अति 13 23 11 43	गर 10 12 10 27	30 35	06 22 18 33	11 10 24	कर्क	11 09 25 19	27	13 59 03 22	भ. 22।12 से, गंडमूल 23।12 से, नंदगांव होली
04	गु	11 08 44 09 51	आ 41 17 22 51	सु 09 21 10 05	वि 08 44 09 51	30 39	06 21 18 34	12 11 25	सिं.22।51	11 10 24 47	25	15 02 04 08	भ. 09।48 तक, मे. खाटूश्याम प्रा. (राज.), आमलकी D
05	शु	12 05 12 08 24	म 38 26 21 42	धृ 03 40 07 48 / शू 56 29 28 55	बा 05 12 08 24	30 43	06 20 18 34	13 12 26	सिंह	11 11 24 13	23	16 07 04 51	प्रदोष व्रत (शु.), मेला खाटूश्याम स. (राज.), गंडमूल E
00	शु	13 59 48 30 15	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षय: E स. 21।39, महाद्वादशी, गोविन्द द्वादशी
06	श	14 52 59 27 30	पूफा 34 00 19 54	गं 48 08 25 34	गर 26 34 16 56	30 48	06 18 18 35	14 13 27	कं.25।23	11 12 23 36	21	17 12 05 31	भ. 27।27 से,
07	र	15 45 09 24 21	उफा 28 23 17 38	वृ 38 55 21 51	वि 19 12 13 58	30 52	06 17 18 36	15 14 28	कन्या	11 13 22 57	19	18 18 06 08	भ. 13।55 तक, होलिका दहन, होलाष्टक पूर्ति, मन्वादि 15, F

C गंडमूल स. 07।31, उभायां सूर्य: 26।23 F पूर्णिमा व्रत, चैतन्य महाप्रभु जयंती, श्री सत्यनारायण पूजा

फाल्गुन शु. 8 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 22 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	02	01	10	09	11	09	01	07	00	10	09
07	11	16	14	27	06	16	20	20	14	26	02
26	46	20	22	03	21	22	28	28	22	54	19
17	04	04	44	32	13	39	35	35	51	13	58
59	735	35	88	12	74	05	01	01	02	02	01
33	22	37	55	30	40	20	22	22	55	15	02
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (22 मार्च): 1 ह.; 2 मं. रा.; 3 चं.; 4; 5; 6; 7; 8 के.; 9; 10 श.गु.प्लू.; 11 बु.ने.; 12 सू.शु.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा रविवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र चन्द्रदर्शन मु. 30 से प्रारंभ होकर फाल्गुन पूर्णिमा रविवार उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र होलिका दहन तदनुसार दिनांक 14 से 28 मार्च 2021 तक चलेगा। पक्ष में विश्व प्रसिद्ध श्री खाटू श्यामजी का मेला का आनन्द रहेगा। पक्ष में भुवन भास्कर मीन राशि में प्रवेश फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा, ता. 14 मार्च 2021 से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रक्रिया में उछाल आयेगा। अग्निकाडों से हानि होगी। आतंकवादियों पर नियन्त्रण होगा। खाद्य पदार्थों की कमी होगी। सेना के उच्चाधिकारियों में असंतोष बनेगा। "मीन राशि गते भानो सर्वधान्य महर्घता। लवणा तिलं च महर्घ सम जायते।।" रविवारी 45 मुहूर्ति संक्रांति में शुभाशुभ के सामान्य फल होंगे। राजनेताओं में विग्रह-विवाद बढ़ेंगे। तापमान बढ़ेगा। तेज हवायें चलेंगी। आंधियों का प्रकोप होगा। रुई, घी गुड़, खांड आदि रसकसों, कुसुभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओं में तेजी बनेगी। धान्यों में गिरावट आयेगी। इस पक्ष की संक्रांति से सभी वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। सरकारी काम काज में तीव्रता बनेगी। स्टॉक वस्तुओं का लाभ प्राप्त होगा। रसादि पदार्थ, धान, गुड़, दही, दूध, घी, शक्कर, जीरा, तारामीरा, सरसों, सतावर, कमलगट्टा, उड़द, चना, गेहूं, जौ, चावल, फल, सब्जी में तेजी का अच्छा योग। तिथियों की घटाबढ़ी का फल अच्छा है-जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिकै महंगाई हट जाय।। पक्ष में वायु वेग सहित भारत में कहीं-कहीं तेज बारिश होगी। आगामी श्रावण माह में वर्षा का इंतजार रहेगा। हिमालयी क्षेत्रों में ओलावृष्टि, आकाश से तारा टूटने का क्रम चलेगा। राजतंत्र में लोक सभा, राज्य सभा के नेताओं में मुठभेड़ से जनता आश्चर्य करेगी। "फाल्गुन सुदी पंचमी पाला जब घर बीज। बैशाख सुदी एक में बरसे जल अजीज।। होली जलत समीर तो गगन जाय बिन रोक। युद्ध होवे संसार में दुःख पावै सब लोग।।"

फाल्गुन शु. 15 रवि प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 28 मार्च

कुण्डली (28 मार्च): 1 ह.; 2 मं. रा.; 3; 4; 5; 6 चं.; 7; 8 के.; 9; 10 श.गु.प्लू.; 11 बु.ने.; 12 सू.शु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	05	01	10	09	11	09	01	07	00	10	09
13	02	19	23	28	13	16	20	20	14	27	02
22	31	54	40	17	48	53	09	09	40	07	25
57	24	16	45	15	54	30	31	31	48	35	44
59	883	35	97	12	74	04	11	11	03	02	00
20	41	47	11	03	33	56	21	21	04	12	153
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 3	[illegible] 2	[illegible] 2	[illegible] 4	[illegible] 3	[illegible] 3	[illegible] 1	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 2

चैत्र कृष्ण पक्षः -26

श्री सं. 2077 शाके 1942

ता. 29 मार्च से 12 अप्रै. 2021 ई., रा. मिति 8 से 22 चैत्र तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि स्टैं.टा. (ति घ प घं मि)	नक्षत्र स्टैं.टा. (न घ प घं मि)	योग स्टैं.टा. (यो घ प घं मि)	करण स्टैं.टा. (क घ प घं मि)	दिनमान (घ प)	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त (उदय घं मि, अस्त घं मि)	दिनांक (प्र. मु. अं.)	चन्द्र राशि प्रवेश (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. (रा. अं. क. वि.)	[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली (उदय घं मि, अस्त घं मि)	
चैत्र 08	चं	1 36 43 20 58	ह 22 01 15 05	ध्रु 29 10 17 56	बा 11 01 10 40	30 56	06 16 18 36	16 15 29	तु.25।45	11 14 22 16	59/17	19 25 06 45	छारेंडी, होली (धुलेण्डी), वसन्त प्रतिपदा, गणगौरी A
09	मं	2 28 08 17 30	चि 15 23 12 24	व्या 19 14 13 56	तै 02 27 07 14	31 00	06 15 18 37	17 16 30	तुला	11 15 21 33	15	20 32 07 23	भ. 27।46 से, संत तुकाराम ज.
10	बु	3 19 49 14 09	स्वा 08 55 09 48	ह 09 27 10 01	वि 19 49 14 09	31 05	06 14 18 37	18 17 31	वृ.25।58	11 16 20 48	13	21 41 08 03	भ. 14।06 तक, गणेश चतुर्थी व्रत (कृ.), आशा 4 व्रत B
11	गु	4 12 06 11 03	वि 02 59 07 24 / अनु 57 53 29 22	वज्र 00 08 06 16 / सि 51 29 26 48	बा 12 06 11 03	31 09	06 13 18 38	19 18 A1	वृश्चिक	11 17 20 02	11	22 50 08 46	मूर्ख दिवस, गंडमूल प्रा. 29।19 A पूजनारंभ (राज.)
12	शु	5 05 18 08 19	ज्ये 53 57 27 46	व्य 43 46 23 42	तै 05 18 08 19	31 13	06 12 18 38	20 19 02	ध.27।46	11 18 19 13	09	23 57 09 34	भ. 29।59 से, अन्तराष्ट्रीय बाल दि., रंग 5, श्री जयंती, C
00	शु	6 59 36 30 02	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00 00 00 00	00 00	00 00 00 00	00 00 00	000	00 00 00 00	00	00 00 00 00	तिथि क्षय: B (राज.), रेवत्यां सूर्य: 13।17, मीने बुध: 24।46
13	श	7 55 14 28 16	मू 51 17 26 41	वरि 37 05 21 00	वि 27 16 17 05	31 17	06 10 18 39	21 20 03	धनु	11 19 18 23	07	24 00 10 27	भ. 17।02 तक, गंडमूल स. 26।38, शीतला पूजा (बासौड़ा)
14	र	8 52 14 27 03	पूषा 49 58 26 08	परि 31 29 18 45	बा 23 35 15 35	31 22	06 09 18 39	22 21 04	धनु	11 20 17 31	06	01 01 11 25	मासिक कालाष्टमी व्रत, शीतला अष्टमी पूजन
15	चं	9 50 34 26 22	उषा 49 58 26 07	शि 26 58 16 55	तै 21 15 14 38	31 26	06 08 18 40	23 22 05	म.08।05	11 21 16 37	04	01 59 12 26	कुम्भे गुरु: 24।13 C एकनाथ 6 व्रत, गुड फ्राइडे
16	मं	10 50 13 26 12	श्रव 51 15 26 37	सि 23 31 15 31	व 20 16 14 13	31 30	06 07 18 41	24 23 06	मकर	11 22 15 41	02	02 49 13 28	भ. 14।11 से 26।10 तक
17	बु	11 51 05 26 32	ध 53 44 27 35	सा 21 03 14 31	बव 20 32 14 19	31 34	06 06 18 41	25 24 07	कु.15।03	11 23 14 44	00	03 33 14 28	पापमोचिनी एकादशी व्रत, पंचक प्रा. 15।00
18	गु	12 53 05 27 19	शत 57 18 29 00	शुभ 19 30 13 53	कौ 21 58 14 52	31 38	06 05 18 42	26 25 08	कुम्भ	11 24 13 44	58/59	04 12 15 26	त्रिस्पर्श महाद्वादशी D मन्वादि 30, चान्द्र संवत्सर 2077 पूर्ण
19	शु	13 56 08 28 31	पूभा 60 00 - -	शु 18 48 13 35	गर 24 30 15 52	31 43	06 04 18 42	27 26 09	मी.24।19	11 25 12 43	57	04 46 16 23	भ. 28।28 से, प्रदोष व्रत, रंग 13, अश्वि. मेषे शुक्र: 30।32
20	श	14 60 00 - -	पूभा 01 55 06 49	ब्र 18 54 13 36	वि 28 03 17 16	31 47	06 03 18 43	28 27 10	मीन	11 26 11 41	55	05 17 17 17	तिथि वृद्धि:, भ. 17।13 तक
21	र	14 00 12 06 06	उभा 07 26 09 00	ऐं 19 43 13 55	श 00 12 06 06	31 51	06 01 18 43	29 28 11	मीन	11 27 10 36	53	05 47 18 10	गंडमूल प्रा. 08।57, पितृकार्य अमा.
22	चं	30 05 08 08 03	रेव 13 49 11 32	वै 21 12 14 29	ना 05 08 08 03	31 55	06 00 18 44	30 29 12	मे.11।32	11 28 09 29	51	06 16 19 03	पंचक स. 11।29, गंडमूल स. 29।30, देवकार्य अमा., D

चैत्र कृ. 8 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 4 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	08	01	11	09	11	09	01	07	00	10	09
20	14	24	05	29	22	17	19	19	15	27	02
17	56	05	34	39	30	26	47	47	02	22	31
31	57	25	27	42	25	24	16	16	46	46	14
59	824	35	106	11	74	04	00	00	03	02	00
07	55	58	56	29	27	27	34	34	13	08	41
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
–	–	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
रेवती 2	पू.फा. 1	मृग. 1	उ.भा. 1	धनि. 2	रेवती 2	श्रवण 3	रोहि. 3	ज्येष्ठा 1	भरणी 1	पू.भा. 3	उ.षा. 2

1 ह., ने.11, 10 गु.श. प्लू., 2 मं. रा., 12 सू. बु.शु., 9 चं., 3, 6, 4, 8 के., 5, 7

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा सोमवार हस्त नक्षत्र वासंती प्रतिपदा से प्रारंभ होकर सोमवारीय अमावस्या रेवती नक्षत्र तक तदनुसार दिनांक 29 मार्च से 12 अप्रैल 2021 तक रहेगा। सोमवारी अमावस्या रेवती नक्षत्र युक्त सुभिक्ष कारक योग बनता है। आरोग्य वर्षा का शुभ योग भी। वर्षा का प्रबल उदय धान्य की उत्पत्ति और प्रजा सुख हो। माह में पांच सोमवार होने से शुभदायक फल रहेगा। **सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धि स्यात् सुखं भवति सर्वदा।** पांच सोमवार के कारण धन-धान्य सस्ता तथा प्रजा में खुशी की लहर रहेगी। व्यापारी भी खुश रहेगा। पांच मंगलवार **से यत्र मासे महिसूनोर्जायन्ते पंचवासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** पांच मंगल होने से युद्ध, झगड़ा-फसाद, लोग रक्त से सने रहेंगे। किसी देश-प्रदेश की सरकारें जायेंगी। राजा, मुख्यमंत्री या केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में शोक की लहर छा जायेगी। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिकें, महंगाई हट जाय॥** वस्तुओ के भाव में मंदी की चाल चलेगी। जिससे महंगाई कम हो जायेगी। रस, घृत, किराना की वस्तुओं में तेजी बनेगी। कांगनी, रुई, अलसी, चांदी, सोना, तांबा, अरहर, तेल, गुड़, तिलों में तेजी। अनाजो के भाव अस्थिरता वाले होंगे। गेहूं, चावल, चना में स्थिरता रहेगी। ऋतु परिवर्तन का योग, रोगकारक वातावरण। तापमान में बढ़ोतरी। पश्चिमी देशों में प्राकृतिक आपदा प्रकोप जैसा वातावरण तथा तीर्थाटनों में भी आपदा योग बनेगा। चैत्र वदी

चैत्र कृ. 30 चन्द्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 12 अप्रैल

शु.ह.1, गु.ने.11, 10 प्लू. श., 2 मं.रा., 12 सू.बु. चं., 9, 3, 6, 4, 8 के., 5, 7

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	11	01	11	10	00	09	01	07	00	10	09
28	26	28	20	01	02	17	19	19	15	27	02
09	58	53	35	08	25	59	21	21	28	39	35
29	56	59	32	38	28	33	50	50	59	25	50
58	720	36	118	10	74	03	08	08	03	02	00
52	50	10	28	43	19	49	12	12	20	01	27
–	–	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
रेवती 4	रेवती 4	मृग. 2	रेवती 2	धनि. 3	अश्वि. 1	श्रवण 3	रोहि. 3	ज्येष्ठा 1	भरणी 1	पू.भा. 3	उ.षा. 2

ज्योतिष शास्त्र में भौगोलिक महत्व

एक सामान्य अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में खगोल ज्ञान के साथ भौगोलिक जानकारी परमावश्यक है। ग्रहों का देशान्तरीय भेद से उदयास्त, ग्रहणादि का स्थानीय दृश्य काल एवं उसका मान तथा पृथ्वी पर दिखाई देने वाली खगोलीय चमत्कृति का सूक्ष्म समय काल जानने के लिये अक्षांश रेखांशादि भेदिक परिवर्तन समय हेतु भौगोलिक ज्ञान का विशेष महत्व होता है। उत्तर दक्षिण गोलार्द्ध, भूमध्य रेखा, कर्क मकर वृत्त, अक्षांश व रेखांशादि की जानकारी आवश्यक है जिसका सामान्य परिचय दिया जा रहा है।

अक्षांश व उसका अभिप्राय:- पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा "भू मध्य रेखा" कहलाती है। यहां पर अक्षांश (0) शून्य होता है। इसके उत्तर विभाग को "उत्तर गोल" व दक्षिणी विभाग को "दक्षिण गोल" कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर विभाग (उत्तर गोल) में ९० एवं दक्षिण विभाग (दक्षिण गोल) में भी ९० अक्षांश होते हैं।

यह "श्री आर्य भट्ट पंचांगम्" दिल्ली के स्थानीय समय काल हेतु आधारित किया गया है। भौगोलिक स्थित्यानुसार दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर है। भू मध्य रेखा से उत्तर गोल में दिल्ली नगर २८ व २९ अक्षांश के बीच में है। प्रत्येक अक्षांश को ६० भाग में विभाजित किया गया है जिसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर स्थित है।

एक अक्षांश की दूरी ७५ मील होती है। पृथ्वी पर किसी भी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अण्डाकार वस्तु को लंबाई में अर्थात् उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान से काटेंगे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित भाग पर आयेगा। इसलिए पृथ्वी के इसी मध्य भाग को भू मध्य रेखा कहा जाता है। भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर है इससे दक्षिण में ९० अक्षांश है जो दक्षिणी अक्षांश होते हैं। और इसी प्रकार भू मध्य रेखा (0) शून्य से उत्तर में ९० अक्षांश उत्तरी अक्षांश कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा अथवा घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है और घूमते हुए एक अण्डाकार गोल परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते हुए वह अपने केन्द्र स्थान की ओर थोड़ा झुका हुआ रहता है। इसी तरह पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमती है और उसी बदले झुकाव के कारण ही सूर्य "उत्तरायण" तथा "दक्षिणायन" होता प्रतीत होता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया गया है परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में आधार हीन अधर में ही घूमती है।

ता. २१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात प्रथम राशि में प्रवेश करता है उस समय पृथ्वी का भू मध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है जहां रवि की क्रांति शून्य होती है। पृथ्वी पर उस समय दिन रात बराबर होते हैं। इस दिन के बाद से सूर्य उत्तर गोल में चलता है और रवि की उत्तर क्रांति प्रति दिन बढ़ती है। ता. २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है अर्थात् सायन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और रवि क्रांति अपनी चरम सीमा २३अंश हो जाती है। आकाशी क्रांति पथ के साथ पृथ्वी का क्रांति पथ २३.५ अंश का कोण होता है। उस समय दिन का मान अधिक व रात्री का मान न्यून होता है। विश्व का मानचित्र देखें कि भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर भारत से दक्षिण में लम्बी दूरी पर दूर समुन्द्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब इस रेखा पर आता है तो भारत का मध्य भाग सूर्य के सीधे प्रभाव में होने से वहां पर अधिकतम गर्मी की ऋतु का पूर्ण आभास होता है। ता. २१ जून को सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन हो जाता है। इसे ही "दक्षिणायन" कहते हैं। जो ता. २१ सितम्बर तक दक्षिणावृत्ति से पुन: भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर पहुंच जाता है तथा उसकी उत्तर क्रांति भी क्रमश: कम होकर शून्य हो जाती है और दिन रात बराबर होते हैं। इसके बाद सूर्य दक्षिणावृत्ति से ही चलता है परन्तु ता. २१ सितम्बर तक तो सूर्य पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में ही होता है तत्पश्चात दक्षिण गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से लम्बी दूरी पर होने से यहां शरद ऋतु का आरंभ हो जाता है।

सूर्य निरन्तर दक्षिणायन रहकर दक्षिणी गोलार्द्ध में अग्रसर होता है। जो ता. २१ दिसम्बर को मकर रेखा पर पहुंच जाता है तथा सूर्य की दक्षिण क्रांति अपनी चरम सीमा पर होती है। ता. २१-२२ दिसम्बर को दिन का मान छोटा व रात्री का मान बड़ा होता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) भारत से बहुत दूर हिन्द महासागर के उपर से दक्षिणी अमेरिका के मध्य भाग, दक्षिणी अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है तो उस समय इन सभी देशो में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूरी होने के कारण यहां मौसम अत्यधिक ठण्डा होता है। ता. २१ दिसम्बर के बाद से सूर्य उत्तर की ओर चलनारंभ होता है। इसे ही "उत्तरायण" कहते हैं।

(**नोट:-** सूर्य आकाश में स्थिर है परंतु पृथ्वी की गति में क्रांति के परिवर्तन होने पर वह इस प्रकार परिवर्तन करता प्रतीत होता है तो प्रचलित बोल चाल तथा लिखने की भाषा में सूर्य चल रहा है यही कहा जाता है।)

ता. २१-२२ दिसंबर से सूर्य उत्तरावृत्ति से पुन: ता. २१ मार्च को दक्षिणी गोलार्द्ध की यात्रा करते हुए भू मध्य रेखा (शून्य अक्षांश) पर आता है। इस दिन रवि की दक्षिण क्रांति भी शून्य होती है। इस दिन सूर्य उत्तरावृत्ति से उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है।

अत: सूर्य की स्थिति ता. २१ मार्च से २१ सितंबर तक उत्तर गोल में और ता. २१ सितम्बर से ता. २१ मार्च तक दक्षिण गोल में होती है। ता. २१ दिसंबर से ता. २१ जून तक सूर्य उत्तरायण एवं ता. २१ जून से ता. २१ दिसंबर तक दक्षिणायन होता है।

सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूर्व पश्चिम क्षितिज पर सूर्योदय-सूर्यास्त देखकर अथवा ऊपर आकाश में सूर्य भ्रमण पर ध्यान देकर या घर में आने वाली धूप की किरणों के बदलते कोण देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायन होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रति दिन जो अंतर आता है उसे चरांतर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रांति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरांतर सारणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए है। और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरांतर सारणी पृष्ठ संख्या ९६ तथा रवि क्रांति सारणी इस पंचांग के पृष्ठ संख्या ९५ पर दी हुई है।

रेखांश व उसकी उपयोगिता- जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अक्षांशों में विभाजित किया गया है। उसी प्रकार इसको पूर्व-पश्चिम ३६० रेखांशों में विभाजित किया गया है। जिस प्रकार उत्तर व दक्षिण का विभाजन करने के लिए भू मध्य रेखा को (0) शून्य अक्षांश माना गया है। उसी प्रकार पूर्व व पश्चिम का विभाजन करने के लिए मध्यमान होना आवश्यक है और इसके लिए कोई भी रेखा को (0) शून्य रेखांश माना जा सकता है। पहले कभी भारत के उज्जैन नगर को शून्य रेखांश के लिए सम्मान प्राप्त था परन्तु वर्तमान में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला के कारण लंदन के पास ग्रीनविच को यह महत्व दिया गया है। ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे (0) शून्य रेखांश मान कर पूर्व के रेखांशों के पूर्व रेखांश व पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है।

पृथ्वी की परिधि भू मध्य रेखा पर २९४०० मील है। अत: भू मध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी ७० मील होती है। पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात ३६० रेखांश २४ घण्टे में सूर्य के सामने से गुजरते हैं। तदनुसार एक रेखांश अंतर चार मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। उदाहरणार्थ माना कि दिल्ली में सूर्योदय ६।३० बजे हुआ है और दिल्ली का रेखांश ७७।१३ पूर्व है तो ७८।१३ पूर्व रेखांश पर स्थित नगर का सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा अथवा पूर्व रेखांश ७६।१३ हो तो ४ मिनट दिल्ली के बाद होगा। इसी प्रकार प्रति रेखांश में ४ मिनट कम अथवा अधिक रेखांशानुसार होगा। यदि रेखांश कम होंगे तो सूर्योदय बाद में तथा रेखांश अधिक होने पर पहले होगा।

प्राचीन काल में प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण धूप घड़ियों ,जल घड़ियों अथवा शंकु छायादि उपकरणों की सहायता से मध्यान्ह और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे।

सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाइम (मानक समय) रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टे आगे था और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितंबर १९१७ से लागू कर दिया गया परंतु बंगाल प्रांत और आस-पास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रांतों ने सितंबर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाइम को व्यवहार में लाना आरंभ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितंबर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में (जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे) समय १ घण्टा बढ़ा दिया गया था अर्थात ग्रीनविच समय से ६.३० घण्टा आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टा आगे है और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो काम-काज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से संपादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है। उसका समय उतने ही अंतर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अंतर होता है। अत: १५ रेखांश पर १ घण्टे का अंतर हुआ। जो ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टे के अंतर पर निर्धारित है। हौलेण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, वेल्जियम, हंगरी, यूगोस्लाविया, डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराईल, सूडान, वल्गेरिया आदि देशों का समय २ घण्टे आगे है। ये देश २ घण्टे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, ईथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घण्टे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४.३० घण्टे तथा पाकिस्तान ५ घण्टे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का सम५ ग्रीनविच से ६ घण्टे तथा वर्मा ६.३० घण्टे आगे है। थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घण्टे के क्षेत्र में हैं। चीन, हौंगकोंग, फिलिपिन्स ८ घण्टे तथा कोरिया व जापान ९ घण्टे के अंतर पर है। आस्ट्रेलिया १० घण्टे और न्यूजीलैण्ड १२ घण्टे के अंतर पर है। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है। उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टोरंटो, ओटावा, वॉस्टन आदि नगर ५ घण्टे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घण्टे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लॉसएन्जिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घण्टे कम है। किसी भी एटलस में दुनियां का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमाएं लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घण्टे के समय क्षेत्र में रखा गया है। और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगला देश को ६ घण्टे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५.३० घण्टा समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि १ रेखांश पर ४ मिनट का अंतर आता है तो ५.३० घण्टे का अंतर ८२।३० रेखांश पर ही आता है। भारत में ८२।३० रेखांश इलाहाबाद, अयोध्या के आस-पास उत्तर से दक्षिण काकीनाड़ा, मच्छलीपटनम् आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है परंतु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है। तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश "अक्षांशादि सारणी" से ज्ञात कर लिए जाते हैं तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है। जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है (कुछ आचार्य ७७।१२, कुछ ७७।१४ भी मानते हैं) यह रेखांश ८२।३० से ५।१७ कम हैं। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से २१ मिनट ८ सैकेण्ड दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से कम होगा। यदि किसी

८५।१३ है जो ८२।३० से २।४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय १० मिनट ५२ सैकेण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारणी इस पंचांग में पृष्ठ ९७ पर दी गई है। इसमें मुख्य-मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अंतर तथा दिल्ली के समय से देशांतर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांश आदि सारणी में यह नाम नहीं हैं। मानचित्र में यह धौलपुर और ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर हैं अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है यह स्थान मानचित्र में धौलपुर व ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सेन्टीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नाप कर उनके अक्षांश रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ है वह इस प्रकार है।

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्राय: १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न

मिनट के हिसाब से २१ मिनट ८ सैकेण्ड दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से कम होगा। यदि किसी

लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अत: तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन एवं उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्नका समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक केअक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है। घं.मि.

सारिणी से प्राप्त १५ जु. को वृश्चि. समाप्त — १७।१४

देशान्तर ऋण लेने से धन किया (१३।४८ मि. आधे से अधिक होने से १४ लिये) — +०।१४

मध्यम लग्न समाप्त — =१७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने १७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति — = १७।२८

दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान +- — —०।१७

अत: नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।११

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सै. एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान कोगुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारंभ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

अ/लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

सन्\राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२००० फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००० फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४ फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१
२००९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२ फप	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

पंचांग में दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल की तालिका प्रति मासिक दी गई है। उनमें पृथ्वी की अयनगति वश प्रति वर्ष परिवर्तन होता है। इसलिए लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल जानने के लिए वार्षिक संस्कार देकर शुद्ध करें लें। अत: वार्षिक लग्नों में संस्कारार्थ तालिका दी जा रही है।

जिन वर्षों में तिथ्याधिक वर्ष हों अर्थात् २९ दिनों का फरवरी मास होता है। (यह प्रति चार से आता है।) उन वर्षों की तालिका में दो बार पंक्तियां दी गई। जिसके सन् के आगे फ.प. लगाया गया है। इसका अभिप्राय है कि १ जनवरी से २८ फरवरी तक इस पंक्ति के संस्कारों को काम में लें तथा उसी सन् को लिखकर आगे फ.बा. लगाया गया है। इन संस्कारों का उपयोग १ मार्च से ३१ दिसम्बर तक करें।

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८ १५	८ ५३ १०	१० २८ १५	१२ २३ ३७	१४ ३८ ०८	१६ ५८ २७	१९ १५ ४६	२१ ३२ ०३	२३ ५१ ३१	२ १४ ०५	४ १८ १५	६ ०० ४३
२	७ २४ १९	८ ४९ १४	१० २४ २०	१२ १९ ४१	१४ ३४ १२	१६ ५४ ३१	१९ ११ ५०	२१ २८ ०७	२३ ४७ ३५	२ १० ०९	४ १४ १९	५ ५६ ४७
३	७ २० २३	८ ४५ १८	१० २० २४	१२ १५ ४५	१४ ३० १६	१६ ५० ३६	१९ ०७ ५५	२१ २४ १२	२३ ४३ ४०	२ ०६ १३	४ १० २३	५ ५२ ५२
४	७ १६ २७	८ ४१ २३	१० १६ २८	१२ ११ ४९	१४ २६ २०	१६ ४६ ४०	१९ ०३ ५९	२१ २० १६	२३ ३९ ४४	२ ०२ १७	४ ०६ २७	५ ४८ ५६
५	७ १२ ३२	८ ३७ २७	१० १२ ३२	१२ ०७ ५४	१४ २२ २४	१६ ४२ ४४	१९ ०० ०३	२१ १६ २०	२३ ३५ ४८	१ ५८ २१	४ ०२ ३१	५ ४५ ००
६	७ ०८ ३६	८ ३३ ३१	१० ०८ ३६	१२ ०३ ५८	१४ १८ २८	१६ ३८ ४८	१८ ५६ ०७	२१ १२ २४	२३ ३१ ५२	१ ५४ २५	३ ५८ ३६	५ ४१ ०४
७	७ ०४ ४०	८ २९ ३५	१० ०४ ४०	१२ ०० ०२	१४ १४ ३२	१६ ३४ ५२	१८ ५२ ११	२१ ०८ २८	२३ २७ ५६	१ ५० २९	३ ५४ ४०	५ ३७ ०८
८	७ ०० ४४	८ २५ ३९	१० ०० ४४	११ ५६ ०६	१४ १० ३६	१६ ३० ५६	१८ ४८ १५	२१ ०४ ३२	२३ २४ ००	१ ४६ ३४	३ ५० ४४	५ ३३ १२
९	६ ५६ ४८	८ २१ ४३	९ ५६ ४८	११ ५२ १०	१४ ०६ ४०	१६ २७ ००	१८ ४४ १९	२१ ०० ३६	२३ २० ०४	१ ४२ ३८	३ ४६ ४८	५ २९ १६
१०	६ ५२ ५२	८ १७ ४७	९ ५२ ५२	११ ४८ १४	१४ ०२ ४४	१६ २३ ०४	१८ ४० २३	२० ५६ ४०	२३ १६ ०८	१ ३८ ४२	३ ४२ ५२	५ २५ २०
११	६ ४८ ५६	८ १३ ५१	९ ४८ ५६	११ ४४ १८	१३ ५८ ४९	१६ १९ ०८	१८ ३६ २७	२० ५२ ४४	२३ १२ १२	१ ३४ ४६	३ ३८ ५६	५ २१ २४
१२	६ ४५ ००	८ ०९ ५५	९ ४५ ०१	११ ४० २२	१३ ५४ ५३	१६ १५ १२	१८ ३२ ३१	२० ४८ ४८	२३ ०८ १६	१ ३० ५०	३ ३५ ००	५ १७ २८
१३	६ ४१ ०४	८ ०५ ५९	९ ४१ ०५	११ ३६ २६	१३ ५० ५७	१६ ११ १७	१८ २८ ३६	२० ४४ ५३	२३ ०४ २१	१ २६ ५४	३ ३१ ०४	५ १३ ३२
१४	६ ३७ ०८	८ ०२ ०४	९ ३७ ०९	११ ३२ ३०	१३ ४७ ०१	१६ ०७ २१	१८ २४ ४०	२० ४० ५७	२३ ०० २५	१ २२ ५८	३ २७ ०८	५ ०९ ३७
१५	६ ३३ १२	७ ५८ ०८	९ ३३ १३	११ २८ ३५	१३ ४३ ०५	१६ ०३ २५	१८ २० ४४	२० ३७ ०१	२२ ५६ २९	१ १९ ०२	३ २३ १२	५ ०५ ४१
१६	६ २९ १७	७ ५४ १२	९ २९ १७	११ २४ ३९	१३ ३९ ०९	१५ ५९ २९	१८ १६ ४८	२० ३३ ०५	२२ ५२ ३३	१ १५ ०६	३ १९ १७	५ ०१ ४५
१७	६ २५ २१	७ ५० १६	९ २५ २१	११ २० ४३	१३ ३५ १३	१५ ५५ ३३	१८ १२ ५२	२० २९ ०९	२२ ४८ ३७	१ ११ १०	३ १५ २१	४ ५७ ४९
१८	६ २१ २५	७ ४६ २०	९ २१ २५	११ १६ ४७	१३ ३१ १७	१५ ५१ ३७	१८ ०८ ५६	२० २५ १३	२२ ४४ ४१	१ ०७ १५	३ ११ २५	४ ५३ ५३
१९	६ १७ २९	७ ४२ २४	९ १७ २९	११ १२ ५१	१३ २७ २१	१५ ४७ ४१	१८ ०५ ००	२० २१ १७	२२ ४० ४५	१ ०३ १९	३ ०७ २९	४ ४९ ५७
२०	६ १३ ३३	७ ३८ २८	९ १३ ३३	११ ०८ ५५	१३ २३ २५	१५ ४३ ४५	१८ ०१ ०४	२० १७ २१	२२ ३६ ४९	० ५९ २३	३ ०३ ३३	४ ४६ ०१
२१	६ ०९ ३७	७ ३४ ३२	९ ०९ ३७	११ ०४ ५९	१३ १९ ३०	१५ ३९ ४९	१७ ५७ ०८	२० १३ २५	२२ ३२ ५३	० ५५ २७	२ ५९ ३७	४ ४२ ०५
२२	६ ०५ ४१	७ ३० ३६	९ ०५ ४२	११ ०१ ०३	१३ १५ ३४	१५ ३५ ५३	१७ ५३ १२	२० ०९ २९	२२ २८ ५७	० ५१ ३१	२ ५५ ४१	४ ३८ ०९
२३	६ ०१ ४५	७ २६ ४०	९ ०१ ४६	१० ५७ ०७	१३ ११ ३८	१५ ३१ ५८	१७ ४९ १७	२० ०५ ३४	२२ २५ ०२	० ४७ ३५	२ ५१ ४५	४ ३४ १३
२४	५ ५७ ४९	७ २२ ४४	८ ५७ ५०	१० ५३ ११	१३ ०७ ४२	१५ २८ ०२	१७ ४५ २१	२० ०१ ३८	२२ २१ ०६	० ४३ ३९	२ ४७ ४९	४ ३० १८
२५	५ ५३ ५३	७ १८ ४९	८ ५३ ५४	१० ४९ १६	१३ ०३ ४६	१५ २४ ०६	१७ ४१ २५	१९ ५७ ४२	२२ १७ १०	० ३९ ४३	२ ४३ ५३	४ २६ २२
२६	५ ४९ ५७	७ १४ ५३	८ ४९ ५८	१० ४५ २०	१२ ५९ ५०	१५ २० १०	१७ ३७ २९	१९ ५३ ४६	२२ १३ १४	० ३५ ४७	२ ३९ ५७	४ २२ २६
२७	५ ४६ ०२	७ १० ५७	८ ४६ ०२	१० ४१ २४	१२ ५५ ५४	१५ १६ १४	१७ ३३ ३३	१९ ४९ ५०	२२ ०९ १८	० ३१ ५१	२ ३६ ०२	४ १८ ३०
२८	५ ४२ ०६	७ ०७ ०१	८ ४२ ०६	१० ३७ २८	१२ ५१ ५८	१५ १२ १८	१७ २९ ३७	१९ ४५ ५४	२२ ०५ २२	० २७ ५५	२ ३२ ०६	४ १४ ३४
२९	५ ३८ १०	७ ०३ ०५	८ ३८ १०	१० ३३ ३२	१२ ४८ ०२	१५ ०८ २२	१७ २५ ४१	१९ ४१ ५८	२२ ०१ २६	० २० ०४	२ २८ १०	४ १० ३८
३०	५ ३४ १४	६ ५९ ०९	८ ३४ १४	१० २९ ३६	१२ ४४ ०६	१५ ०४ २६	१७ २१ ०५	१९ ३८ ०२	२१ ५७ ३०	० १६ ०८	२ २४ १४	४ ०६ ४२

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५१ १७	८ २६ २३	१० २१ ४४	१२ ३६ १५	१४ ५६ ३४	१७ १३ ५३	१९ ३० १०	२१ ४९ ३८	० ०८ १६	२ १६ २२	३ ५८ ५०	५ २६ २२
२	६ ४७ २१	८ २२ २७	१० १७ ४८	१२ ३२ १९	१४ ५२ ३९	१७ ०९ ५८	१९ २६ १५	२१ ४५ ४३	० ०४ २०	२ १२ २६	३ ५४ ५४	५ २२ २६
३	६ ४३ २५	८ १८ ३१	१० १३ ५२	१२ २८ २३	१४ ४८ ४३	१७ ०६ ०२	१९ २२ १९	२१ ४१ ४७	० ०० २४	२ ०८ ३०	३ ५० ५९	५ १८ ३०
४	६ ३९ ३०	८ १४ ३५	१० ०९ ५७	१२ २४ २७	१४ ४४ ४७	१७ ०२ ०६	१९ १८ २३	२१ ३७ ५१	२३ ५६ २८	२ ०४ ३४	३ ४७ ०३	५ १४ ३४
५	६ ३५ ३४	८ १० ३९	१० ०६ ०१	१२ २० ३१	१४ ४० ५१	१६ ५८ १०	१९ १४ २७	२१ ३३ ५५	२३ ५२ ३२	२ ०० ३८	३ ४३ ०७	५ १० ३८
६	६ ३१ ३८	८ ०६ ४३	१० ०२ ०५	१२ १६ ३५	१४ ३६ ५५	१६ ५४ १४	१९ १० ३१	२१ २९ ५९	२३ ४८ ३६	१ ५६ ४३	३ ३९ ११	५ ०६ ४३
७	६ २७ ४२	८ ०२ ४७	९ ५८ ०९	१२ १२ ३९	१४ ३२ ५९	१६ ५० १८	१९ ०६ ३५	२१ २६ ०३	२३ ४४ ४१	१ ५२ ४७	३ ३५ १५	५ ०२ ४७
८	६ २३ ४६	७ ५८ ५१	९ ५४ १३	१२ ०८ ४३	१४ २९ ०३	१६ ४६ २२	१९ ०२ ३९	२१ २२ ०७	२३ ४० ४५	१ ४८ ५१	३ ३१ १९	४ ५८ ५१
९	६ १९ ५०	७ ५४ ५५	९ ५० १७	१२ ०४ ४७	१४ २५ ०७	१६ ४२ २६	१८ ५८ ४३	२१ १८ ११	२३ ३६ ४९	१ ४४ ५५	३ २७ २३	४ ५४ ५५
१०	६ १५ ५४	७ ५० ५९	९ ४६ २१	१२ ०० ५२	१४ २१ ११	१६ ३८ ३०	१८ ५४ ४७	२१ १४ १५	२३ ३२ ५३	१ ४० ५९	३ २३ २७	४ ५० ५९
११	६ ११ ५८	७ ४७ ०३	९ ४२ २५	११ ५६ ५६	१४ १७ १५	१६ ३४ ३४	१८ ५० ५१	२१ १० १९	२३ २८ ५७	१ ३७ ०३	३ १९ ३१	४ ४७ ०३
१२	६ ०८ ०२	७ ४३ ०८	९ ३८ २९	११ ५३ ००	१४ १३ २०	१६ ३० ३९	१८ ४६ ५६	२१ ०६ २४	२३ २५ ०१	१ ३३ ०७	३ १५ ३५	४ ४३ ०७
१३	६ ०४ ०६	७ ३९ १२	९ ३४ ३३	११ ४९ ०४	१४ ०९ २४	१६ २६ ४३	१८ ४३ ००	२१ ०२ २८	२३ २१ ०५	१ २९ ११	३ ११ ३९	४ ३९ ११
१४	६ ०० ११	७ ३५ १६	९ ३० ३८	११ ४५ ०८	१४ ०५ २८	१६ २२ ४७	१८ ३९ ०४	२० ५८ ३२	२३ १७ ०९	१ २५ १५	३ ०७ ४४	४ ३५ १५
१५	५ ५६ १५	७ ३१ २०	९ २६ ४२	११ ४१ १२	१४ ०१ ३२	१६ १८ ५१	१८ ३५ ०८	२० ५४ ३६	२३ १३ १३	१ २१ १९	३ ०३ ४८	४ ३१ १९
१६	५ ५२ १९	७ २७ २४	९ २२ ४६	११ ३७ १६	१३ ५७ ३६	१६ १४ ५५	१८ ३१ १२	२० ५० ४०	२३ ०९ १७	१ १७ २४	२ ५९ ५२	४ २७ २४
१७	५ ४८ २३	७ २३ २८	९ १८ ५०	११ ३३ २०	१३ ५३ ४०	१६ १० ५९	१८ २७ १६	२० ४६ ४४	२३ ०५ २२	१ १३ २८	२ ५५ ५६	४ २३ २८
१८	५ ४४ २७	७ १९ ३२	९ १४ ५४	११ २९ २४	१३ ४९ ४४	१६ ०७ ०३	१८ २३ २०	२० ४२ ४८	२३ ०१ २६	१ ०९ ३२	२ ५२ ००	४ १९ ३२
१९	५ ४० ३१	७ १५ ३६	९ १० ५८	११ २५ २८	१३ ४५ ४८	१६ ०३ ०७	१८ १९ २४	२० ३८ ५२	२२ ५७ ३०	१ ०५ ३६	२ ४८ ०४	४ १५ ३६
२०	५ ३६ ३५	७ ११ ४०	९ ०७ ०२	११ २१ ३३	१३ ४१ ५२	१५ ५९ ११	१८ १५ २८	२० ३४ ५६	२२ ५३ ३४	१ ०१ ४०	२ ४४ ०८	४ ११ ४०
२१	५ ३२ ३९	७ ०७ ४४	९ ०३ ०६	११ १७ ३७	१३ ३७ ५६	१५ ५५ १५	१८ ११ ३२	२० ३१ ००	२२ ४९ ३८	० ५७ ४४	२ ४० १२	४ ०७ ४४
२२	५ २८ ४३	७ ०३ ४९	८ ५९ १०	११ १३ ४१	१३ ३४ ०१	१५ ५१ २०	१८ ०७ ३७	२० २७ ०४	२२ ४५ ४२	० ५३ ४८	२ ३६ १६	४ ०३ ४८
२३	५ २४ ४७	६ ५९ ५३	८ ५५ १४	११ ०९ ४५	१३ ३० ०५	१५ ४७ २४	१८ ०३ ४१	२० २३ ०९	२२ ४१ ४६	० ४९ ५२	२ ३२ २०	३ ५९ ५२
२४	५ २० ५१	६ ५५ ५७	८ ५१ १८	११ ०५ ४९	१३ २६ ०९	१५ ४३ २८	१७ ५९ ४५	२० १९ १३	२२ ३७ ५०	० ४५ ५६	२ २८ २५	३ ५५ ५६
२५	५ १६ ५६	६ ५२ ०१	८ ४७ २३	११ ०१ ५३	१३ २२ १३	१५ ३९ ३२	१७ ५५ ४९	२० १५ १७	२२ ३३ ५४	० ४२ ००	२ २४ २९	३ ५२ ००
२६	५ १३ ००	६ ४८ ०५	८ ४३ २७	१० ५७ ५७	१३ १८ १७	१५ ३५ ३६	१७ ५१ ५३	२० ११ २१	२२ २९ ५८	० ३८ ०५	२ २० ३३	३ ४८ ०४
२७	५ ०९ ०४	६ ४४ ०९	८ ३९ ३१	१० ५४ ०१	१३ १४ २१	१५ ३१ ४०	१७ ४७ ५७	२० ०७ २५	२२ २६ ०३	० ३४ ०९	२ १६ ३७	३ ४४ ०९
२८	५ ०५ ०८	६ ४० १३	८ ३५ ३५	१० ५० ०५	१३ १० २५	१५ २७ ४४	१७ ४४ ०१	२० ०३ २९	२२ २२ ०७	० ३० १३	२ १२ ४१	३ ४० १३
२९	५ ०१ १२	६ ३६ १७	८ ३१ ३९	१० ४६ ०९	१३ ०६ २९	१५ २३ ४८	१७ ४० ०५	१९ ५९ ३३	२२ १८ ११	० २६ १७	२ ०८ ४५	३ ३६ १७

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २८ २५	८ २३ ४७	१० ३८ १८	१२ ५८ ३८	१५ १५ ५७	१७ ३२ १३	१९ ५१ ४१	२२ १० १९	० १४ २९	२ ०० ५३	३ २८ २५	४ ५३ २०
२	६ २४ ३०	८ १९ ५१	१० ३४ २२	१२ ५४ ४२	१५ १२ ०१	१७ २८ १८	१९ ४७ ४६	२२ ०६ २३	० १० ३३	१ ५६ ५७	३ २४ २९	४ ४९ २४
३	६ २० ३४	८ १५ ५५	१० ३० २६	१२ ५० ४६	१५ ०८ ०५	१७ २४ २२	१९ ४३ ५०	२२ ०२ २७	० ०६ ३७	१ ५३ ०१	३ २० ३३	४ ४५ २८
४	६ १६ ३८	८ १२ ००	१० २६ ३०	१२ ४६ ५०	१५ ०४ ०९	१७ २० २६	१९ ३९ ५४	२१ ५८ ३१	० ०२ ४१	१ ४९ ०६	३ १६ ३७	४ ४१ ३२
५	६ १२ ४२	८ ०८ ०४	१० २२ ३४	१२ ४२ ५४	१५ ०० १३	१७ १६ ३०	१९ ३५ ५८	२१ ५४ ३५	२३ ५८ ४६	१ ४५ १०	३ १२ ४१	४ ३७ ३७
६	६ ०८ ४६	८ ०४ ०८	१० १८ ३८	१२ ३८ ५८	१४ ५६ १७	१७ १२ ३४	१९ ३२ ०२	२१ ५० ३९	२३ ५४ ५०	१ ४१ १४	३ ०८ ४५	४ ३३ ४१
७	६ ०४ ५०	८ ०० १२	१० १४ ४२	१२ ३५ ०२	१४ ५२ २१	१७ ०८ ३८	१९ २८ ०६	२१ ४६ ४४	२३ ५० ५४	१ ३७ १८	३ ०४ ५०	४ २९ ४५
८	६ ०० ५४	७ ५६ १६	१० १० ४६	१२ ३१ ०६	१४ ४८ २५	१७ ०४ ४२	१९ २४ १०	२१ ४२ ४८	२३ ४६ ५८	१ ३३ २२	३ ०० ५४	४ २५ ४९
९	५ ५६ ५८	७ ५२ २०	१० ०६ ५०	१२ २७ १०	१४ ४४ २९	१७ ०० ४६	१९ २० १४	२१ ३८ ५२	२३ ४३ ०२	१ २९ २६	२ ५६ ५८	४ २१ ५३
१०	५ ५३ ०२	७ ४८ २४	१० ०२ ५४	१२ २३ १४	१४ ४० ३३	१६ ५६ ५०	१९ १६ १८	२१ ३४ ५६	२३ ३९ ०६	१ २५ ३०	२ ५३ ०२	४ १७ ५७
११	५ ४९ ०६	७ ४४ २८	९ ५८ ५९	१२ १९ १९	१४ ३६ ३८	१६ ५२ ५४	१९ १२ २२	२१ ३१ ००	२३ ३५ १०	१ २१ ३४	२ ४९ ०६	४ १४ ०१
१२	५ ४५ ११	७ ४० ३२	९ ५५ ०३	१२ १५ २३	१४ ३२ ४२	१६ ४८ ५९	१९ ०८ २७	२१ २७ ०४	२३ ३१ १४	१ १७ ३८	२ ४५ १०	४ १० ०५
१३	५ ४१ १५	७ ३६ ३६	९ ५१ ०७	१२ ११ २७	१४ २८ ४६	१६ ४५ ०३	१९ ०४ ३१	२१ २३ ०८	२३ २७ १८	१ १३ ४२	२ ४१ १४	४ ०६ ०९
१४	५ ३७ १९	७ ३२ ४१	९ ४७ ११	१२ ०७ ३१	१४ २४ ५०	१६ ४१ ०७	१९ ०० ३५	२१ १९ १२	२३ २३ २२	१ ०९ ४७	२ ३७ १८	४ ०२ १३
१५	५ ३३ २३	७ २८ ४५	९ ४३ १५	१२ ०३ ३५	१४ २० ५४	१६ ३७ ११	१८ ५६ ३९	२१ १५ १६	२३ १९ २७	१ ०५ ५१	२ ३३ २२	३ ५८ १८
१६	५ २९ २७	७ २४ ४९	९ ३९ १९	११ ५९ ३९	१४ १६ ५८	१६ ३३ १५	१८ ५२ ४३	२१ ११ २०	२३ १५ ३१	१ ०१ ५५	२ २९ २६	३ ५४ २२
१७	५ २५ ३१	७ २० ५३	९ ३५ २३	११ ५५ ४३	१४ १३ ०२	१६ २९ १९	१८ ४८ ४७	२१ ०७ २५	२३ ११ ३५	० ५७ ५९	२ २५ ३१	३ ५० २६
१८	५ २१ ३५	७ १६ ५७	९ ३१ २७	११ ५१ ४७	१४ ०९ ०६	१६ २५ २३	१८ ४४ ५१	२१ ०३ २९	२३ ०७ ३९	० ५४ ०३	२ २१ ३५	३ ४६ ३०
१९	५ १७ ३९	७ १३ ०१	९ २७ ३२	११ ४७ ५१	१४ ०५ १०	१६ २१ २७	१८ ४० ५५	२० ५९ ३३	२३ ०३ ४३	० ५० ०७	२ १७ ३९	३ ४२ ३४
२०	५ १३ ४३	७ ०९ ०५	९ २३ ३६	११ ४३ ५५	१४ ०१ १४	१६ १७ ३१	१८ ३६ ५९	२० ५५ ३७	२२ ५९ ४७	० ४६ ११	२ १३ ४३	३ ३८ ३८
२१	५ ०९ ४७	७ ०५ ०९	९ १९ ४०	११ ४० ००	१३ ५७ १९	१६ १३ ३५	१८ ३३ ०३	२० ५१ ४१	२२ ५५ ५१	० ४२ १५	२ ०९ ४७	३ ३४ ४२
२२	५ ०५ ५२	७ ०१ १३	९ १५ ४४	११ ३६ ०४	१३ ५३ २३	१६ ०९ ४०	१८ २९ ०८	२० ४७ ४५	२२ ५१ ५५	० ३८ १९	२ ०५ ५१	३ ३० ४६
२३	५ ०१ ५६	६ ५७ १७	९ ११ ४८	११ ३२ ०८	१३ ४९ २७	१६ ०५ ४४	१८ २५ १२	२० ४३ ४९	२२ ४७ ५९	० ३४ २३	२ ०१ ५५	३ २६ ५०
२४	४ ५८ ००	६ ५३ २२	९ ०७ ५२	११ २८ १२	१३ ४५ ३१	१६ ०१ ४८	१८ २१ १६	२० ३९ ५३	२२ ४४ ०३	० ३० २७	१ ५७ ५९	३ २२ ५४
२५	४ ५४ ०४	६ ४९ २६	९ ०३ ५६	११ २४ १६	१३ ४१ ३५	१५ ५७ ५२	१८ १७ २०	२० ३५ ५७	२२ ४० ०८	० २६ ३२	१ ५४ ०३	३ १८ ५९
२६	४ ५० ०८	६ ४५ ३०	९ ०० ००	११ २० २०	१३ ३७ ३९	१५ ५३ ५६	१८ १३ २४	२० ३२ ०२	२२ ३६ १२	० २२ ३६	१ ५० ०७	३ १५ ०३
२७	४ ४६ १२	६ ४१ ३४	८ ५६ ०४	११ १६ २४	१३ ३३ ४३	१५ ५० ००	१८ ०९ २८	२० २८ ०६	२२ ३२ १६	० १४ ४४	१ ४६ १२	३ ११ ०७
२८	४ ४२ १६	६ ३७ ३८	८ ५२ ०८	११ १२ २८	१३ २९ ४७	१५ ४६ ०४	१८ ०५ ३२	२० २४ १०	२२ २८ २०	० १० ४८	१ ४२ १६	३ ०७ ११
२९	४ ३८ २०	६ ३३ ४२	८ ४८ १३	११ ०८ ३२	१३ २५ ५१	१५ ४२ ०८	१८ ०१ ३६	२० २० १४	२२ २४ २४	० ०६ ५२	१ ३८ २०	३ ०३ १५
३०	४ ३४ २४	६ २९ ४६	८ ४४ १७	११ ०४ ३६	१३ २१ ५५	१५ ३८ १२	१७ ५७ ४०	२० १६ १८	२२ २० २८	० ०२ ५६	१ ३४ २४	२ ५९ १९
३१	४ ३० २८	६ २५ ५०	८ ४० २१	११ ०० ४१	१३ १८ ००	१५ ३४ १७	१७ ५३ ४५	२० १२ २२	२२ १६ ३२	२३ ५९ ००	१ ३० २८	२ ५५ २३

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ २१ ५४	८ ३६ ३५	१० ५६ ४५	१३ १४ ०४	१५ ३० २१	१७ ४९ ४९	२० ०८ २६	२२ १२ ३६	२३ ५५ ०४	१ २६ ३२	२ ५१ २७	४ २६ ३३
२	६ १७ ५८	८ ३२ २९	१० ५२ ४९	१३ १० ०८	१५ २६ २५	१७ ४५ ५३	२० ०४ ३०	२२ ०८ ४०	२३ ५१ ०८	१ २२ ३६	२ ४७ ३१	४ २२ ३७
३	६ १४ ०३	८ २८ ३३	१० ४८ ५३	१३ ०६ १२	१५ २२ २९	१७ ४१ ५७	२० ०० ३४	२२ ०४ ४४	२३ ४७ १३	१ १८ ४०	२ ४३ ३५	४ १८ ४१
४	६ १० ०७	८ २४ ३७	१० ४४ ५७	१३ ०२ १६	१५ १८ ३३	१७ ३८ ०१	१९ ५६ ३८	२२ ०० ४९	२३ ४३ १७	१ १४ ४४	२ ३९ ४०	४ १४ ४५
५	६ ०६ ११	८ २० ४१	१० ४१ ०१	१२ ५८ २०	१५ १४ ३७	१७ ३४ ०५	१९ ५२ ४३	२१ ५६ ५३	२३ ३९ २१	१ १० ४८	२ ३५ ४४	४ १० ४९
६	६ ०२ १५	८ १६ ४५	१० ३७ ०५	१२ ५४ २४	१५ १० ४१	१७ ३० ०९	१९ ४८ ४७	२१ ५२ ५७	२३ ३५ २५	१ ०६ ५३	२ ३१ ४८	४ ०६ ५३
७	५ ५८ १९	८ १२ ४९	१० ३३ ०९	१२ ५० २८	१५ ०६ ४५	१७ २६ १३	१९ ४४ ५१	२१ ४९ ०१	२३ ३१ २९	१ ०२ ५७	२ २७ ५२	४ ०२ ५७
८	५ ५४ २३	८ ०८ ५४	१० २९ १३	१२ ४६ ३२	१५ ०२ ४९	१७ २२ १७	१९ ४० ५५	२१ ४५ ०५	२३ २७ ३३	० ५९ ०१	२ २३ ५६	३ ५९ ०१
९	५ ५० २७	८ ०४ ५८	१० २५ १८	१२ ४२ ३७	१४ ५८ ५४	१७ १८ २१	१९ ३६ ५९	२१ ४१ ०९	२३ २३ ३७	० ५५ ०५	२ २० ००	३ ५५ ०५
१०	५ ४६ ३१	८ ०१ ०२	१० २१ २२	१२ ३८ ४१	१४ ५४ ५८	१७ १४ २६	१९ ३३ ०३	२१ ३७ १३	२३ १९ ४१	० ५१ ०९	२ १६ ०४	३ ५१ ०९
११	५ ४२ ३५	७ ५७ ०६	१० १७ २६	१२ ३४ ४५	१४ ५१ ०२	१७ १० ३०	१९ २९ ०७	२१ ३३ १७	२३ १५ ४५	० ४७ १३	२ १२ ०८	३ ४७ १४
१२	५ ३८ ४०	७ ५३ १०	१० १३ ३०	१२ ३० ४९	१४ ४७ ०६	१७ ०६ ३४	१९ २५ ११	२१ २९ २१	२३ ११ ४९	० ४३ १७	२ ०८ १२	३ ४३ १८
१३	५ ३४ ४४	७ ४९ १४	१० ०९ ३४	१२ २६ ५३	१४ ४३ १०	१७ ०२ ३८	१९ २१ १५	२१ २५ २६	२३ ०७ ५४	० ३९ २१	२ ०४ १६	३ ३९ २२
१४	५ ३० ४८	७ ४५ १८	१० ०५ ३८	१२ २२ ५७	१४ ३९ १४	१६ ५८ ४२	१९ १७ २०	२१ २१ ३०	२३ ०३ ५८	० ३५ २५	२ ०० २१	३ ३५ २६
१५	५ २६ ५२	७ ४१ २२	१० ०१ ४२	१२ १९ ०१	१४ ३५ १८	१६ ५४ ४६	१९ १३ २४	२१ १७ ३४	२३ ०० ०२	० ३१ २९	१ ५६ २५	३ ३१ ३०
१६	५ २२ ५६	७ ३७ २६	९ ५७ ४६	१२ १५ ०५	१४ ३१ २२	१६ ५० ५०	१९ ०९ २८	२१ १३ ३८	२२ ५६ ०६	० २७ ३४	१ ५२ २९	३ २७ ३४
१७	५ १९ ००	७ ३३ ३१	९ ५३ ५०	१२ ११ ०९	१४ २७ २६	१६ ४६ ५४	१९ ०५ ३२	२१ ०९ ४२	२२ ५२ १०	० २३ ३८	१ ४८ ३३	३ २३ ३८
१८	५ १५ ०४	७ २९ ३५	९ ४९ ५४	१२ ०७ १३	१४ २३ ३०	१६ ४२ ५८	१९ ०१ ३६	२१ ०५ ४६	२२ ४८ १४	० १५ ४६	१ ४४ ३७	३ १९ ४२
१९	५ ११ ०८	७ २५ ३९	९ ४५ ५९	१२ ०३ १८	१४ १९ ३५	१६ ३९ ०३	१८ ५७ ४०	२१ ०१ ५०	२२ ४४ १८	० ११ ५०	१ ४० ४१	३ १५ ४६
२०	५ ०७ १२	७ २१ ४३	९ ४२ ०३	११ ५९ २२	१४ १५ ३९	१६ ३५ ०७	१८ ५३ ४४	२० ५७ ५४	२२ ४० २२	० ०७ ५४	१ ३६ ४५	३ ११ ५१
२१	५ ०३ १६	७ १७ ४७	९ ३८ ०७	११ ५५ २६	१४ ११ ४३	१६ ३१ ११	१८ ४९ ४८	२० ५३ ५८	२२ ३६ २६	० ०३ ५८	१ ३२ ४९	३ ०७ ५५
२२	४ ५९ २१	७ १३ ५१	९ ३४ ११	११ ५१ ३०	१४ ०७ ४७	१६ २७ १५	१८ ४५ ५२	२० ५० ०२	२२ ३२ ३१	० ०० ०२	१ २८ ५३	३ ०३ ५९
२३	४ ५५ २५	७ ०९ ५५	९ ३० १५	११ ४७ ३४	१४ ०३ ५१	१६ २३ १९	१८ ४१ ५६	२० ४६ ०७	२२ २८ ३५	२३ ५६ ०६	१ २४ ५७	३ ०० ०३
२४	४ ५१ २९	७ ०५ ५९	९ २६ १९	११ ४३ ३८	१३ ५९ ५५	१६ १९ २३	१८ ३८ ०१	२० ४२ ११	२२ २४ ३९	२३ ५२ १०	१ २१ ०२	२ ५६ ०७
२५	४ ४७ ३३	७ ०२ ०३	९ २२ २३	११ ३९ ४२	१३ ५५ ५९	१६ १५ २७	१८ ३४ ०५	२० ३८ १५	२२ २० ४३	२३ ४८ १४	१ १७ ०६	२ ५२ ११
२६	४ ४३ ३७	६ ५८ ०८	९ १८ २७	११ ३५ ४६	१३ ५२ ०३	१६ ११ ३१	१८ ३० ०९	२० ३४ १९	२२ १६ ४७	२३ ४४ १९	१ १३ १०	२ ४८ १५
२७	४ ३९ ४१	६ ५४ १२	९ १४ ३१	११ ३१ ५०	१३ ४८ ०७	१६ ०७ ३५	१८ २६ १३	२० ३० २३	२२ १२ ५१	२३ ४० २३	१ ०९ १४	२ ४४ १९
२८	४ ३५ ४५	६ ५० १६	९ १० ३६	११ २७ ५५	१३ ४४ १२	१६ ०३ ३९	१८ २२ १७	२० २६ २७	२२ ०८ ५५	२३ ३६ २७	१ ०५ १८	२ ४० २३
२९	४ ३१ ४९	६ ४६ २०	९ ०६ ४०	११ २३ ५९	१३ ४० १६	१५ ५९ ४४	१८ १८ २१	२० २२ ३१	२२ ०४ ५९	२३ ३२ ३१	१ ०१ २२	२ ३६ २७
३०	४ २७ ५३	६ ४२ २४	९ ०२ ४४	११ २० ०३	१३ ३६ २०	१५ ५५ ४८	१८ १४ २५	२० १८ ३५	२२ ०१ ०३	२३ २८ ३५	० ५७ २६	२ ३२ ३२

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३८ २८	८ ५८ ४८	११ १६ ०७	१३ ३२ २४	१५ ५१ ५२	१८ १० २९	२० १४ ३९	२१ ५७ ०७	२३ २४ ३९	० ५३ ३०	२ २८ ३६	४ २३ ५७
२	६ ३४ ३२	८ ५४ ५२	११ १२ ११	१३ २८ २८	१५ ४७ ५६	१८ ०६ ३३	२० १० ४३	२१ ५३ ११	२३ २० ४३	० ४९ ३४	२ २४ ४०	४ [illegible] ०२
३	६ ३० ३६	८ ५० ५६	११ ०८ १५	१३ २४ ३२	१५ ४४ ००	१८ ०२ ३८	२० ०६ ४८	२१ ४९ १६	२३ १६ ४७	० ४५ ३८	२ २० ४४	४ १६ ०६
४	६ २६ ४०	८ ४७ ००	११ ०४ १९	१३ २० ३६	१५ ४० ०४	१७ ५८ ४२	२० ०२ ५२	२१ ४५ २०	२३ १२ ५१	० ४१ ४३	२ १६ ४८	४ १२ १०
५	६ २२ ४४	८ ४३ ०४	११ ०० २३	१३ १६ ४०	१५ ३६ ०८	१७ ५४ ४६	१९ ५८ ५६	२१ ४१ २४	२३ ०८ ५६	० ३७ ४७	२ १२ ५२	४ ०८ १४
६	६ १८ ४९	८ ३९ ०८	१० ५६ २७	१३ १२ ४४	१५ ३२ १२	१७ ५० ५०	१९ ५५ ००	२१ ३७ २८	२३ ०५ ००	० ३३ ५१	२ ०८ ५६	४ ०४ १८
७	६ १४ ५३	८ ३५ १२	१० ५२ ३१	१३ ०८ ४८	१५ २८ १६	१७ ४६ ५४	१९ ५१ ०४	२१ ३३ ३२	२३ ०१ ०४	० २९ ५५	२ ०५ ००	४ ०० २२
८	६ १० ५७	८ ३१ १७	१० ४८ ३६	१३ ०४ ५३	१५ २४ २१	१७ ४२ ५८	१९ ४७ ०८	२१ २९ ३६	२२ ५७ ०८	० २५ ५९	२ ०१ ०४	३ ५६ २६
९	६ ०७ ०१	८ २७ २१	१० ४४ ४०	१३ ०० ५७	१५ २० २५	१७ ३९ ०२	१९ ४३ १२	२१ २५ ४०	२२ ५३ १२	० २२ ०३	१ ५७ ०८	३ ५२ ३०
१०	६ ०३ ०५	८ २३ २५	१० ४० ४४	१२ ५७ ०१	१५ १६ २९	१७ ३५ ०६	१९ ३९ १६	२१ २१ ४४	२२ ४९ १६	० १४ ११	१ ५३ १३	३ ४८ ३४
११	५ ५९ ०९	८ १९ २९	१० ३६ ४८	१२ ५३ ०५	१५ १२ ३३	१७ ३१ १०	१९ ३५ २०	२१ १७ ४८	२२ ४५ २०	० १० १५	१ ४९ १७	३ ४४ ३९
१२	५ ५५ १३	८ १५ ३३	१० ३२ ५२	१२ ४९ ०९	१५ ०८ ३७	१७ २७ १४	१९ ३१ २४	२१ १३ ५२	२२ ४१ २४	० ०६ १९	१ ४५ २१	३ ४० ४३
१३	५ ५१ १७	८ ११ ३७	१० २८ ५६	१२ ४५ १३	१५ ०४ ४१	१७ २३ १९	१९ २७ २९	२१ ०९ ५७	२२ ३७ २८	० ०२ २४	१ ४१ २५	३ ३६ ४७
१४	५ ४७ २१	८ ०७ ४१	१० २५ ००	१२ ४१ १७	१५ ०० ४५	१७ १९ २३	१९ २३ ३३	२१ ०६ ०१	२२ ३३ ३२	२३ ५८ २८	१ ३७ २९	३ ३२ ५१
१५	५ ४३ २६	८ ०३ ४५	१० २१ ०४	१२ ३७ २१	१४ ५६ ४९	१७ १५ २७	१९ १९ ३७	२१ ०२ ०५	२२ २९ ३६	२३ ५४ ३२	१ ३३ ३३	३ २८ ५५
१६	५ ३९ ३०	७ ५९ ४९	१० १७ ०८	१२ ३३ २५	१४ ५२ ५३	१७ ११ ३१	१९ १५ ४१	२० ५८ ०९	२२ २५ ४१	२३ ५० ३६	१ २९ ३७	३ २४ ५९
१७	५ ३५ ३४	७ ५५ ५४	१० १३ १२	१२ २९ २९	१४ ४८ ५७	१७ ०७ ३५	१९ ११ ४५	२० ५४ १३	२२ २१ ४५	२३ ४६ ४०	१ २५ ४१	३ २१ ०३
१८	५ ३१ ३८	७ ५१ ५८	१० ०९ १७	१२ २५ ३४	१४ ४५ ०२	१७ ०३ ३९	१९ ०७ ४९	२० ५० १७	२२ १७ ४९	२३ ४२ ४४	१ २१ ४५	३ १७ ०७
१९	५ २७ ४२	७ ४८ ०२	१० ०५ २१	१२ २१ ३८	१४ ४१ ०६	१६ ५९ ४३	१९ ०३ ५३	२० ४६ २१	२२ १३ ५३	२३ ३८ ४८	१ १७ ४९	३ १३ ११
२०	५ २३ ४६	७ ४४ ०६	१० ०१ २५	१२ १७ ४२	१४ ३७ १०	१६ ५५ ४७	१८ ५९ ५७	२० ४२ २५	२२ ०९ ५७	२३ ३४ ५२	१ १३ ५४	३ ०९ १५
२१	५ १९ ५०	७ ४० १०	९ ५७ २९	१२ १३ ४६	१४ ३३ १४	१६ ५१ ५१	१८ ५६ ०१	२० ३८ २९	२२ ०६ ०१	२३ ३० ५६	१ ०९ ५८	३ ०५ २०
२२	५ १५ ५४	७ ३६ १४	९ ५३ ३३	१२ ०९ ५०	१४ २९ १८	१६ ४७ ५५	१८ ५२ ०६	२० ३४ ३४	२२ ०२ ०५	२३ २७ ००	१ ०६ ०२	३ ०१ २४
२३	५ ११ ५८	७ ३२ १८	९ ४९ ३७	१२ ०५ ५४	१४ २५ २२	१६ ४४ ००	१८ ४८ १०	२० ३० ३८	२१ ५८ ०९	२३ २३ ०५	१ ०२ ०६	२ ५७ २८
२४	५ ०८ ०२	७ २८ २२	९ ४५ ४१	१२ ०१ ५८	१४ २१ २६	१६ ४० ०४	१८ ४४ १४	२० २६ ४२	२१ ५४ १३	२३ १९ ०९	० ५८ १०	२ ५३ ३२
२५	५ ०४ ०७	७ २४ २६	९ ४१ ४५	११ ५८ ०२	१४ १७ ३०	१६ ३६ ०८	१८ ४० १८	२० २२ ४६	२१ ५० १७	२३ १५ १३	० ५४ १४	२ ४९ ३६
२६	५ ०० ११	७ २० ३०	९ ३७ ४९	११ ५४ ०६	१४ १३ ३४	१६ ३२ १२	१८ ३६ २२	२० १८ ५०	२१ ४६ २२	२३ ११ १७	० ५० १८	२ ४५ ४०
२७	४ ५६ १५	७ १६ ३५	९ ३३ ५४	११ ५० ११	१४ ०९ ३९	१६ २८ १६	१८ ३२ २६	२० १४ ५४	२१ ४२ २६	२३ ०७ २१	० ४६ २२	२ ४१ ४४
२८	४ ५२ १९	७ १२ ३९	९ २९ ५८	११ ४६ १५	१४ ०५ ४३	१६ २४ २०	१८ २८ ३०	२० १० ५८	२१ ३८ ३०	२३ ०३ २५	० ४२ २६	२ ३७ ४८
२९	४ ४८ २३	७ ०८ ४३	९ २६ ०२	११ ४२ १९	१४ ०१ ४७	१६ २० २४	१८ २४ ३४	२० ०७ ०२	२१ ३४ ३४	२२ ५९ २९	० ३८ ३०	२ ३३ ५२
३०	४ [illegible] २७	७ ०४ ४७	९ २२ ०६	११ ३८ २३	१३ ५७ ५१	१६ १६ २८	१८ २० ३८	२० ०३ ०६	२१ ३० ३८	२२ ५५ ३३	० ३४ ३५	२ २९ ५७

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५६ ५५	९ १४ १४	११ ३० ३१	१३ ४९ ५९	१६ ०८ ३७	१८ १२ ४६	१९ ५५ १४	२१ २२ ४६	२२ ४७ ४१	० २६ ४३	२ २२ ०५	४ ३६ ३५
२	६ ५२ ५९	९ १० १८	११ २६ ३५	१३ ४६ ०३	१६ ०४ ४१	१८ ०८ ५१	१९ ५१ १९	२१ १८ ५०	२२ ४३ ४६	० २२ ४७	२ १८ ०९	४ ३२ ३९
३	६ ४९ ०३	९ ०६ २२	११ २२ ३९	१३ ४२ ०७	१६ ०० ४५	१८ ०४ ५५	१९ ४७ २३	२१ १४ ५४	२२ ३९ ५०	० १४ ५५	२ १४ १३	४ २८ ४३
४	६ ४५ ०७	९ ०२ २६	११ १८ ४३	१३ ३८ ११	१५ ५६ ४९	१८ ०० ५९	१९ ४३ २७	२१ १० ५८	२२ ३५ ५४	० १० ५९	२ १० १७	४ २४ ४८
५	६ ४१ १२	८ ५८ ३०	११ १४ ४७	१३ ३४ १५	१५ ५२ ५३	१७ ५७ ०३	१९ ३९ ३१	२१ ०७ ०३	२२ ३१ ५८	० ०७ ०३	२ ०६ २१	४ २० ५२
६	६ ३७ १६	८ ५४ ३५	११ १० ५२	१३ ३० २०	१५ ४८ ५७	१७ ५३ ०७	१९ ३५ ३५	२१ ०३ ०७	२२ २८ ०२	० ०३ ०७	२ ०२ २५	४ १६ ५६
७	६ ३३ २०	८ ५० ३९	११ ०६ ५६	१३ २६ २४	१५ ४५ ०१	१७ ४९ ११	१९ ३१ ३९	२० ५९ ११	२२ २४ ०६	२३ ५९ ११	१ ५८ २९	४ १३ ००
८	६ २९ २४	८ ४६ ४३	११ ०३ ००	१३ २२ २८	१५ ४१ ०५	१७ ४५ १५	१९ २७ ४३	२० ५५ १५	२२ २० १०	२३ ५५ १६	१ ५४ ३३	४ ०९ ०४
९	६ २५ २८	८ ४२ ४७	१० ५९ ०४	१३ १८ ३२	१५ ३७ ०९	१७ ४१ १९	१९ २३ ४७	२० ५१ १९	२२ १६ १४	२३ ५१ २०	१ ५० ३७	४ ०५ ०८
१०	६ २१ ३२	८ ३८ ५१	१० ५५ ०८	१३ १४ ३६	१५ ३३ १३	१७ ३७ २३	१९ १९ ५१	२० ४७ २३	२२ १२ १८	२३ ४७ २४	१ ४६ ४२	४ ०१ १२
११	६ १७ ३६	८ ३४ ५५	१० ५१ १२	१३ १० ४०	१५ २९ १७	१७ ३३ २७	१९ १५ ५५	२० ४३ २७	२२ ०८ २२	२३ ४३ २८	१ ४२ ४६	३ ५७ १६
१२	६ १३ ४०	८ ३० ५९	१० ४७ १६	१३ ०६ ४४	१५ २५ २२	१७ २९ ३२	१९ १२ ००	२० ३९ ३१	२२ ०४ २६	२३ ३९ ३२	१ ३८ ५०	३ ५३ २०
१३	६ ०९ ४४	८ २७ ०३	१० ४३ २०	१३ ०२ ४८	१५ २१ २६	१७ २५ ३६	१९ ०८ ०४	२० ३५ ३५	२२ ०० ३१	२३ ३५ ३६	१ ३४ ५४	३ ४९ २४
१४	६ ०५ ४८	८ २३ ०७	१० ३९ २४	१२ ५८ ५२	१५ १७ ३०	१७ २१ ४०	१९ ०४ ०८	२० ३१ ३९	२१ ५६ ३५	२३ ३१ ४०	१ ३० ५८	३ ४५ २९
१५	६ ०१ ५३	८ १९ ११	१० ३५ २८	१२ ५४ ५६	१५ १३ ३४	१७ १७ ४४	१९ ०० १२	२० २७ ४४	२१ ५२ ३९	२३ २७ ४४	१ २७ ०२	३ ४१ ३३
१६	५ ५७ ५७	८ १५ १६	१० ३१ ३३	१२ ५१ ०१	१५ ०९ ३८	१७ १३ ४८	१८ ५६ १६	२० २३ ४८	२१ ४८ ४३	२३ २३ ४८	१ २३ ०६	३ ३७ ३७
१७	५ ५४ ०१	८ ११ २०	१० २७ ३७	१२ ४७ ०५	१५ ०५ ४२	१७ ०९ ५२	१८ ५२ २०	२० १९ ५२	२१ ४४ ४७	२३ १९ ५२	१ १९ १०	३ ३३ ४१
१८	५ ५० ०५	८ ०७ २४	१० २३ ४१	१२ ४३ ०९	१५ ०१ ४६	१७ ०५ ५६	१८ ४८ २४	२० १५ ५६	२१ ४० ५१	२३ १५ ५७	१ १५ १४	३ २९ ४५
१९	५ ४६ ०९	८ ०३ २८	१० १९ ४५	१२ ३९ १३	१४ ५७ ५०	१७ ०२ ००	१८ ४४ २८	२० १२ ००	२१ ३६ ५५	२३ १२ ०१	१ ११ १९	३ २५ ४९
२०	५ ४२ १३	७ ५९ ३२	१० १५ ४९	१२ ३५ १७	१४ ५३ ५४	१६ ५८ ०४	१८ ४० ३२	२० ०८ ०४	२१ ३२ ५९	२३ ०८ ०५	१ ०७ २३	३ २१ ५३
२१	५ ३८ १७	७ ५५ ३६	१० ११ ५३	१२ ३१ २१	१४ ४९ ५९	१६ ५४ ०८	१८ ३६ ३६	२० ०४ ०८	२१ २९ ०३	२३ ०४ ०९	१ ०३ २७	३ १७ ५७
२२	५ ३४ २१	७ ५१ ४०	१० ०७ ५७	१२ २७ २५	१४ ४६ ०३	१६ ५० १३	१८ ३२ ४१	२० ०० १२	२१ २५ ०७	२३ ०० १३	० ५९ ३१	३ १४ ०१
२३	५ ३० २५	७ ४७ ४४	१० ०४ ०१	१२ २३ २९	१४ ४२ ०७	१६ ४६ १७	१८ २८ ४५	१९ ५६ १६	२१ २१ १२	२२ ५६ १७	० ५५ ३५	३ १० ०६
२४	५ २६ २९	७ ४३ ४८	१० ०० ०५	१२ १९ ३३	१४ ३८ ११	१६ ४२ २१	१८ २४ ४९	१९ ५२ २०	२१ १७ १६	२२ ५२ २१	० ५१ ३९	३ ०६ १०
२५	५ २२ ३४	७ ३९ ५२	९ ५६ ०९	१२ १५ ३७	१४ ३४ १५	१६ ३८ २५	१८ २० ५३	१९ ४८ २४	२१ १३ २०	२२ ४८ २५	० ४७ ४३	३ ०२ १४
२६	५ १८ ३८	७ ३५ ५७	९ ५२ १४	१२ ११ ४२	१४ ३० १९	१६ ३४ २९	१८ १६ ५७	१९ ४४ २९	२१ ०९ २४	२२ ४४ २९	० ४३ ४७	२ ५८ १८
२७	५ १४ ४२	७ ३२ ०१	९ ४८ १८	१२ ०७ ४६	१४ २६ २३	१६ ३० ३३	१८ १३ ०१	१९ ४० ३३	२१ ०५ २८	२२ ४० ३३	० ३९ ५१	२ ५४ २२
२८	५ १० ४६	७ २८ ०५	९ ४४ २२	१२ ०३ ५०	१४ २२ २७	१६ २६ ३७	१८ ०९ ०५	१९ ३६ ३७	२१ ०१ ३२	२२ ३६ ३७	० ३४ ५५	२ ५० २६
२९	५ ०६ ५०	७ २४ ०९	९ ४० २६	११ ५९ ५४	१४ १८ ३१	१६ २२ ४१	१८ ०५ ०९	१९ ३२ ४१	२० ५७ ३६	२२ ३२ ४२	० ३२ ००	२ ४६ ३०
३०	५ ०२ ५४	७ २० १३	९ ३६ ३०	११ ५५ ५८	१४ १४ ३५	१६ १८ [illegible]	१८ ०१ १३	१९ २८ [illegible]	२० ५३ ४०	२२ २८ [illegible]	० २८ [illegible]	२ ४२ ३४

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२ २१	९ २८ ३८	११ ४८ ०६	१४ ०६ ४४	१६ १० ५४	१७ ५३ २२	१९ २० ५३	२० ४५ ४८	२२ २० ५४	० १६ १६	२ ३४ ४२	४ ५५ ०२
२	७ ०८ २५	९ २४ ४२	११ ४४ १०	१४ ०२ ४८	१६ ०६ ५८	१७ ४९ २६	१९ १६ ५७	२० ४१ ५३	२२ १६ ५८	० १२ २०	२ ३० ४७	४ ५१ ०६
३	७ ०४ २९	९ २० ४६	११ ४० १४	१३ ५८ ५२	१६ ०३ ०२	१७ ४५ ३०	१९ १३ ०१	२० ३७ ५७	२२ १३ ०२	० ०८ २४	२ २६ ५१	४ ४७ १०
४	७ ०० ३३	९ १६ ५०	११ ३६ १८	१३ ५४ ५६	१५ ५९ ०६	१७ ४१ ३४	१९ ०९ ०५	२० ३४ ०१	२२ ०९ ०६	० ०४ २८	२ २२ ५५	४ ४३ १५
५	६ ५६ ३८	९ १२ ५५	११ ३२ २३	१३ ५१ ००	१५ ५५ १०	१७ ३७ ३८	१९ ०५ १०	२० ३० ०५	२२ ०५ १०	० ०० ३२	२ १८ ५९	४ ३९ १९
६	६ ५२ ४२	९ ०८ ५९	११ २८ २७	१३ ४७ ०४	१५ ५१ १४	१७ ३३ ४२	१९ ०१ १४	२० २६ ०९	२२ ०१ १४	२३ ५६ ३६	२ १५ ०३	४ ३५ २३
७	६ ४८ ४६	९ ०५ ०३	११ २४ ३१	१३ ४३ ०८	१५ ४७ १८	१७ २९ ४६	१८ ५७ १८	२० २२ १३	२१ ५७ १८	२३ ५२ ४०	२ ११ ०७	४ ३१ २७
८	६ ४४ ५०	९ ०१ ०७	११ २० ३५	१३ ३९ १२	१५ ४३ २२	१७ २५ ५०	१८ ५३ २२	२० १८ १७	२१ ५३ २३	२३ ४८ ४५	२ ०७ ११	४ २७ ३१
९	६ ४० ५४	८ ५७ ११	११ १६ ३९	१३ ३५ १६	१५ ३९ २६	१७ २१ ५४	१८ ४९ २६	२० १४ २१	२१ ४९ २७	२३ ४४ ४९	२ ०३ १५	४ २३ ३५
१०	६ ३६ ५८	८ ५३ १५	११ १२ ४३	१३ ३१ २१	१५ ३५ ३०	१७ १७ ५८	१८ ४५ ३०	२० १० २५	२१ ४५ ३१	२३ ४० ५३	१ ५९ १९	४ १९ ३९
११	६ ३३ ०२	८ ४९ १९	११ ०८ ४७	१३ २७ २५	१५ ३१ ३५	१७ १४ ०२	१८ ४१ ३४	२० ०६ २९	२१ ४१ ३५	२३ ३६ ५७	१ ५५ २३	४ १५ ४३
१२	६ २९ ०६	८ ४५ २३	११ ०४ ५१	१३ २३ २९	१५ २७ ३९	१७ १० ०७	१८ ३७ ३८	२० ०२ ३३	२१ ३७ ३९	२३ ३३ ०१	१ ५१ २८	४ ११ ४७
१३	६ २५ १०	८ ४१ २७	११ ०० ५५	१३ १९ ३३	१५ २३ ४३	१७ ०६ ११	१८ ३३ ४२	१९ ५८ ३८	२१ ३३ ४३	२३ २९ ०५	१ ४७ ३२	४ ०७ ५१
१४	६ २१ १४	८ ३७ ३१	१० ५६ ५९	१३ १५ ३७	१५ १९ ४७	१७ ०२ १५	१८ २९ ४६	१९ ५४ ४२	२१ २९ ४७	२३ २५ ०९	१ ४३ ३६	४ ०३ ५६
१५	६ १७ १९	८ ३३ ३६	१० ५३ ०४	१३ ११ ४२	१५ १५ ५१	१६ ५८ १९	१८ २५ ५१	१९ ५० ४६	२१ २५ ५१	२३ २१ १३	१ ३९ ४०	३ ६० ००
१६	६ १३ २३	८ २९ ४०	१० ४९ ०८	१३ ०७ ४५	१५ ११ ५५	१६ ५४ २३	१८ २१ ५५	१९ ४६ ५०	२१ २१ ५५	२३ १७ १७	१ ३५ ४४	३ ५६ ०४
१७	६ ०९ २७	८ २५ ४४	१० ४५ १२	१३ ०३ ४९	१५ ०७ ५९	१६ ५० २७	१८ १७ ५९	१९ ४२ ५४	२१ १७ ५९	२३ १३ २१	१ ३१ ४८	३ ५२ ०८
१८	६ ०५ ३१	८ २१ ४८	१० ४१ १६	१२ ५९ ५३	१५ ०४ ०३	१६ ४६ ३१	१८ १४ ०३	१९ ३८ ५८	२१ १४ ०४	२३ ०९ २६	१ २७ ५२	३ ४८ १२
१९	६ ०१ ३५	८ १७ ५२	१० ३७ २०	१२ ५५ ५७	१५ ०० ०७	१६ ४२ ३५	१८ १० ०७	१९ ३५ ०२	२१ १० ०८	२३ ०५ ३०	१ २३ ५६	३ ४४ १६
२०	५ ५७ ३९	८ १३ ५६	१० ३३ २४	१२ ५२ ०१	१४ ५६ ११	१६ ३८ ३९	१८ ०६ ११	१९ ३१ ०६	२१ ०६ १२	२३ ०१ ३४	१ २० ००	३ ४० २०
२१	५ ५३ ४३	८ १० ००	१० २९ २८	१२ ४८ ०६	१४ ५२ १६	१६ ३४ ४३	१८ ०२ १५	१९ २७ १०	२१ ०२ १६	२२ ५७ ३८	१ १६ ०४	३ ३६ २४
२२	५ ४९ ४७	८ ०६ ०४	१० २५ ३२	१२ ४४ १०	१४ ४८ २०	१६ ३० ४८	१७ ५८ १९	१९ २३ १४	२० ५८ २०	२२ ५३ ४२	१ १२ ०८	३ ३२ २८
२३	५ ४५ ५१	८ ०२ ०८	१० २१ ३६	१२ ४० १४	१४ ४४ २४	१६ २६ ५२	१७ ५४ २३	१९ १९ १९	२० ५४ २४	२२ ४९ ४६	१ ०८ १३	३ २८ ३२
२४	५ ४१ ५५	७ ५८ १२	१० १७ ४०	१२ ३६ १८	१४ ४० २८	१६ २२ ५६	१७ ५० २७	१९ १५ २३	२० ५० २८	२२ ४५ ५०	१ ०४ १७	३ २४ ३७
२५	५ ३८ ००	७ ५४ १७	१० १३ ४५	१२ ३२ २२	१४ ३६ ३२	१६ १९ ००	१७ ४६ ३१	१९ ११ २७	२० ४६ ३२	२२ ४१ ५४	१ ०० २१	३ २० ४१
२६	५ ३४ ०४	७ ५० २१	१० ०९ ४९	१२ २८ २६	१४ ३२ ३६	१६ १५ ०४	१७ ४२ ३६	१९ ०७ ३१	२० ४२ ३६	२२ ३७ ५८	० ५६ २५	३ १६ ४५
२७	५ ३० ०८	७ ४६ २५	१० ०५ ५३	१२ २४ ३०	१४ २८ ४०	१६ ११ ०८	१७ ३८ ४०	१९ ०३ ३५	२० ३८ ४०	२२ ३४ ०२	० ५२ २९	३ १२ ४९
२८	५ २६ १२	७ ४२ २९	१० ०१ ५७	१२ २० ३४	१४ २४ ४४	१६ ०७ १२	१७ ३४ ४४	१८ ५९ ३९	२० ३४ ४५	२२ ३० ०७	० ४८ ३३	३ ०८ ५३
२९	५ २२ १६	७ ३८ ३३	९ ५८ ०१	१२ १६ ३८	१४ २० ४८	१६ ०३ १६	१७ ३० ४८	१८ ५५ ४३	२० ३० ४९	२२ २६ ११	० ४४ ३७	३ ०४ ५७
३०	५ १८ २०	७ ३४ ३७	९ ५४ ०५	१२ १२ ४३	१४ १६ ५२	१५ ५९ २०	१७ २६ ५२	१८ ५१ ४७	२० २६ ५३	२२ २२ १५	० ४० ४१	३ ०१ ०१

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३० ४१	९ ५० ०९	१२ ०८ ४७	१४ १२ ५७	१५ ५५ २४	१७ २२ ५६	१८ ४७ ५१	२० २२ ५७	२२ १८ १९	० ३६ ४५	२ ५७ ०५	५ १४ २४
२	७ २६ ४५	९ ४६ १३	१२ ०४ ५१	१४ ०९ ०१	१५ ५१ २८	१७ १९ ००	१८ ४३ ५५	२० १९ ०१	२२ १४ २३	० ३२ ४९	२ ५३ ०९	५ १० २८
३	७ २२ ४९	९ ४२ १७	१२ ०० ५५	१४ ०५ ०५	१५ ४७ ३३	१७ १५ ०४	१८ ३९ ५९	२० १५ ०५	२२ १० २७	० २८ ५४	२ ४९ १३	५ ०६ ३२
४	७ १८ ५३	९ ३८ २१	११ ५६ ५९	१४ ०१ ०९	१५ ४३ ३७	१७ ११ ०८	१८ ३६ ०४	२० ११ ०९	२२ ०६ ३१	० २४ ५८	२ ४५ १७	५ ०२ ३६
५	७ १४ ५८	९ ३४ २६	११ ५३ ०३	१३ ५७ १३	१५ ३९ ४१	१७ ०७ १२	१८ ३२ ०८	२० ०७ १३	२२ ०२ ३५	० १७ ०६	२ ४१ २२	४ ५८ ४१
६	७ ११ ०२	९ ३० ३०	११ ४९ ०७	१३ ५३ १७	१५ ३५ ४५	१७ ०३ १७	१८ २८ १२	२० ०३ १७	२१ ५८ ३९	० १३ १०	२ ३७ २६	४ ५४ ४५
७	७ ०७ ०६	९ २६ ३४	११ ४५ ११	१३ ४९ २१	१५ ३१ ४९	१६ ५९ २१	१८ २४ १६	१९ ५९ २१	२१ ५४ ४३	० ०९ १४	२ ३३ ३०	४ ५० ४९
८	७ ०३ १०	९ २२ ३८	११ ४१ १५	१३ ४५ २५	१५ २७ ५३	१६ ५५ २५	१८ २० २०	१९ ५५ २५	२१ ५० ४८	० ०५ १८	२ २९ ३४	४ ४६ ५३
९	६ ५९ १४	९ १८ ४२	११ ३७ १९	१३ ४१ २९	१५ २३ ५७	१६ ५१ २९	१८ १६ २४	१९ ५१ ३०	२१ ४६ ५२	० ०१ २२	२ २५ ३८	४ ४२ ५७
१०	६ ५५ १८	९ १४ ४६	११ ३३ २४	१३ ३७ ३३	१५ २० ०१	१६ ४७ ३३	१८ १२ २८	१९ ४७ ३४	२१ ४२ ५६	२३ ५७ २६	२ २१ ४२	४ ३९ ०१
११	६ ५१ २२	९ १० ५०	११ २९ २८	१३ ३३ ३७	१५ १६ ०५	१६ ४३ ३७	१८ ०८ ३२	१९ ४३ ३८	२१ ३९ ००	२३ ५३ ३०	२ १७ ४६	४ ३५ ०५
१२	६ ४७ २६	९ ०६ ५४	११ २५ ३२	१३ २९ ४२	१५ १२ ०९	१६ ३९ ४१	१८ ०४ ३६	१९ ३९ ४२	२१ ३५ ०४	२३ ४९ ३५	२ १३ ५०	४ ३१ ०९
१३	६ ४३ ३०	९ ०२ ५८	११ २१ ३६	१३ २५ ४६	१५ ०८ १४	१६ ३५ ४५	१८ ०० ४०	१९ ३५ ४६	२१ ३१ ०८	२३ ४५ ३९	२ ०९ ५४	४ २७ १३
१४	६ ३९ ३४	८ ५९ ०२	११ १७ ४०	१३ २१ ५०	१५ ०४ १८	१६ ३१ ४९	१७ ५६ ४५	१९ ३१ ५०	२१ २७ १२	२३ ४१ ४३	२ ०५ ५९	४ २३ १७
१५	६ ३५ ३९	८ ५५ ०७	११ १३ ४४	१३ १७ ५४	१५ ०० २२	१६ २७ ५३	१७ ५२ ४९	१९ २७ ५४	२१ २३ १६	२३ ३७ ४७	२ ०२ ०३	४ १९ २२
१६	६ ३१ ४३	८ ५१ ११	११ ०९ ४८	१३ १३ ५८	१४ ५६ २६	१६ २३ ५७	१७ ४८ ५३	१९ २३ ५८	२१ १९ २०	२३ ३३ ५१	१ ५८ ०७	४ १५ २६
१७	६ २७ ४७	८ ४७ १५	११ ०५ ५२	१३ १० ०२	१४ ५२ ३०	१६ २० ०२	१७ ४४ ५७	१९ २० ०२	२१ १५ २४	२३ २९ ५५	१ ५४ ११	४ ११ ३०
१८	६ २३ ५१	८ ४३ १९	११ ०१ ५६	१३ ०६ ०६	१४ ४८ ३४	१६ १६ ०६	१७ ४१ ०१	१९ १६ ०६	२१ ११ २९	२३ २५ ५९	१ ५० १५	४ ०७ ३४
१९	६ १९ ५५	८ ३९ २३	१० ५८ ००	१३ ०२ १०	१४ ४४ ३८	१६ १२ १०	१७ ३७ ०५	१९ १२ ११	२१ ०७ ३३	२३ २२ ०३	१ ४६ १९	४ ०३ ३८
२०	६ १५ ५९	८ ३५ २७	१० ५४ ०४	१२ ५८ १४	१४ ४० ४२	१६ ०८ १४	१७ ३३ ०९	१९ ०८ १५	२१ ०३ ३७	२३ १८ ०७	१ ४२ २३	३ ५९ ४२
२१	६ १२ ०३	८ ३१ ३१	१० ५० ०९	१२ ५४ १८	१४ ३६ ४६	१६ ०४ १८	१७ २९ १३	१९ ०४ १९	२० ५९ ४१	२३ १४ ११	१ ३८ २७	३ ५५ ४६
२२	६ ०८ ०७	८ २७ ३५	१० ४६ १३	१२ ५० २३	१४ ३२ ५०	१६ ०० २२	१७ २५ १७	१९ ०० २३	२० ५५ ४५	२३ १० १६	१ ३४ ३१	३ ५१ ५०
२३	६ ०४ ११	८ २३ ३९	१० ४२ १७	१२ ४६ २७	१४ २८ ५५	१५ ५६ २६	१७ २१ २१	१८ ५६ २७	२० ५१ ४९	२३ ०६ २०	१ ३० ३५	३ ४७ ५४
२४	६ ०० १५	८ १९ ४३	१० ३८ २१	१२ ४२ ३१	१४ २४ ५९	१५ ५२ ३०	१७ १७ २६	१८ ५२ ३१	२० ४७ ५३	२३ ०२ २४	१ २६ ४०	३ ४३ ५८
२५	५ ५६ २०	८ १५ ४८	१० ३४ २५	१२ ३८ ३५	१४ २१ ०३	१५ ४८ ३४	१७ १३ ३०	१८ ४८ ३५	२० ४३ ५७	२२ ५८ २८	१ २२ ४४	३ ४० ०३
२६	५ ५२ २४	८ ११ ५२	१० ३० २९	१२ ३४ ३९	१४ १७ ०७	१५ ४४ ३८	१७ ०९ ३४	१८ ४४ ३९	२० ४० ०१	२२ ५४ ३२	१ १८ ४८	३ ३६ ०७
२७	५ ४८ २८	८ ०७ ५६	१० २६ ३३	१२ ३० ४३	१४ १३ ११	१५ ४० ४३	१७ ०५ ३८	१८ ४० ४३	२० ३६ ०५	२२ ५० ३६	१ १४ ५२	३ ३२ ११
२८	५ ४४ ३२	८ ०४ ००	१० २२ ३७	१२ २६ ४७	१४ ०९ १५	१५ ३६ ४७	१७ ०१ ४२	१८ ३६ ४७	२० ३२ १०	२२ ४६ ४०	१ १० ५६	३ २८ १५
२९	५ ४० ३६	८ ०० ०४	१० १८ ४१	१२ २२ ५१	१४ ०५ १९	१५ ३२ ५१	१६ ५७ ४६	१८ ३२ ५२	२० २८ १४	२२ ४२ ४४	१ ०७ ००	३ २४ १९
३०	५ ३६ ४०	७ ५६ ०८	१० १४ ४५	१२ १८ ५५	१४ ०१ २३	१५ २८ ५५	१६ ५३ ५०	१८ २८ ५६	२० २४ १८	२२ ३८ ४८	१ ०३ ०४	३ २० २३
३१	५ ३२ ४४	७ ५२ १२	१० १० ५०	१२ १४ ५९	१३ ५७ २७	१५ २४ ५९	१६ ४९ ५४	१८ २५ ००	२० २० २२	२२ ३४ ५२	० ५९ ०८	३ १६ २७

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४८ १६	१० ०६ ५४	१२ ११ ०४	१३ ५३ ३१	१५ २१ ०३	१६ ४५ ५८	१८ २१ ०४	२० १६ २६	२२ ३० ५७	० ५५ १२	३ १२ ३१	५ २८ ४८
२	७ ४४ २०	१० ०२ ५८	१२ ०७ ०८	१३ ४९ ३५	१५ १७ ०७	१६ ४२ ०२	१८ १७ ०८	२० १२ ३०	२२ २७ ०१	० ५१ १६	३ ०८ ३५	५ २४ ५२
३	७ ४० २४	९ ५९ ०२	१२ ०३ १२	१३ ४५ ४०	१५ १३ ११	१६ ३८ ०६	१८ १३ १२	२० ०८ ३४	२२ २३ ०५	० ४७ २१	३ ०४ ३९	५ २० ५६
४	७ ३६ २९	९ ५५ ०६	११ ५९ १६	१३ ४२ ४४	१५ ०९ १५	१६ ३४ ११	१८ ०९ १६	२० ०४ ३८	२२ १९ ०९	० ४३ २५	३ ०० ४४	५ १७ ०१
५	७ ३२ ३३	९ ५१ १०	११ ५५ २०	१३ ३७ ४८	१५ ०५ १९	१६ ३० १५	१८ ०५ २०	२० ०० ४२	२२ १५ १३	० ३९ २९	२ ५६ ४८	५ १३ ०५
६	७ २८ ३७	९ ४७ १४	११ ५१ २४	१३ ३३ ५२	१५ ०१ २४	१६ २६ १९	१८ ०१ २४	१९ ५६ ४६	२२ ११ १७	० ३५ ३३	२ ५२ ५२	५ ०९ ०९
७	७ २४ ४१	९ ४३ १८	११ ४७ २८	१३ २९ ५६	१४ ५७ २८	१६ २२ २३	१७ ५७ २८	१९ ५२ ५१	२२ ०७ २१	० ३१ ३७	२ ४८ ५६	५ ०५ १३
८	७ २० ४५	९ ३९ २२	११ ४३ ३२	१३ २६ ००	१४ ५३ ३२	१६ १८ २७	१७ ५३ ३३	१९ ४८ ५५	२२ ०३ २५	० २७ ४१	२ ४५ ००	५ ०१ १७
९	७ १६ ४९	९ ३५ २७	११ ३९ ३६	१३ २२ ०४	१४ ४९ ३६	१६ १४ ३१	१७ ४९ ३७	१९ ४४ ५९	२१ ५९ २९	० २३ ४५	२ ४१ ०४	४ ५७ २१
१०	७ १२ ५३	९ ३१ ३१	११ ३५ ४०	१३ १८ ०८	१४ ४५ ४०	१६ १० ३५	१७ ४५ ४१	१९ ४१ ०३	२१ ५५ ३४	० १५ ५३	२ ३७ ०८	४ ५३ २५
११	७ ०८ ५७	९ २७ ३५	११ ३१ ४५	१३ १४ १२	१४ ४१ ४४	१६ ०६ ३९	१७ ४१ ४५	१९ ३७ ०७	२१ ५१ ३८	० ११ ५७	२ ३३ १२	४ ४९ २९
१२	७ ०५ ०१	९ २३ ३९	११ २७ ४९	१३ १० १६	१४ ३७ ४८	१६ ०२ ४३	१७ ३७ ४९	१९ ३३ ११	२१ ४७ ४२	० ०८ ०२	२ २९ १६	४ ४५ ३३
१३	७ ०१ ०५	९ १९ ४३	११ २३ ५३	१३ ०६ २१	१४ ३३ ५२	१५ ५८ ४७	१७ ३३ ५३	१९ २९ १५	२१ ४३ ४६	० ०४ ०६	२ २५ २०	४ ४१ ३७
१४	६ ५७ १०	९ १५ ४७	११ १९ ५७	१३ ०२ २५	१४ २९ ५६	१५ ५४ ५२	१७ २९ ५७	१९ २५ १९	२१ ३९ ५०	० ०० १०	२ २१ २५	४ ३७ ४२
१५	६ ५३ १४	९ ११ ५१	११ १६ ०१	१२ ५८ २९	१४ २६ ००	१५ ५० ५६	१७ २६ ०१	१९ २१ २३	२१ ३५ ५४	२३ ५६ १४	२ १७ २९	४ ३३ ४६
१६	६ ४९ १८	९ ०७ ५५	११ १२ ०५	१२ ५४ ३३	१४ २२ ०५	१५ ४७ ००	१७ २२ ०५	१९ १७ २७	२१ ३१ ५८	२३ ५२ १८	२ १३ ३३	४ २९ ५०
१७	६ ४५ २२	९ ०३ ५९	११ ०८ ०९	१२ ५० ३७	१४ १८ ०९	१५ ४३ ०४	१७ १८ ०९	१९ १३ ३२	२१ २८ ०२	२३ ४८ २२	२ ०९ ३७	४ २५ ५४
१८	६ ४१ २६	९ ०० ०३	११ ०४ १३	१२ ४६ ४१	१४ १४ १३	१५ ३९ ०८	१७ १४ १४	१९ ०९ ३६	२१ २४ ०६	२३ ४४ २६	२ ०५ ४१	४ २१ ५८
१९	६ ३७ ३०	८ ५६ ०८	११ ०० १७	१२ ४२ ४५	१४ १० १७	१५ ३५ १२	१७ १० १८	१९ ०५ ४०	२१ २० १०	२३ ४० ३०	२ ०१ ४५	४ १८ ०२
२०	६ ३३ ३४	८ ५२ १२	१० ५६ २१	१२ ३८ ४९	१४ ०६ २१	१५ ३१ १६	१७ ०६ २२	१९ ०१ ४४	२१ १६ १४	२३ ३६ ३४	१ ५७ ४९	४ १४ ०६
२१	६ २९ ३८	८ ४८ १६	१० ५२ २६	१२ ३४ ५३	१४ ०२ २५	१५ २७ २०	१७ ०२ २६	१८ ५७ ४८	२१ १२ १९	२३ ३२ ३९	१ ५३ ५३	४ १० १०
२२	६ २५ ४२	८ ४४ २०	१० ४८ ३०	१२ ३० ५७	१३ ५८ २९	१५ २३ २४	१६ ५८ ३०	१८ ५३ ५२	२१ ०८ २३	२३ २८ ४३	१ ४९ ५७	४ ०६ १४
२३	६ २१ ४७	८ ४० २४	१० ४४ ३४	१२ २७ ०२	१३ ५४ ३३	१५ १९ २८	१६ ५४ ३४	१८ ४९ ५६	२१ ०४ २७	२३ २४ ४७	१ ४६ ०२	४ ०२ १९
२४	६ १७ ५१	८ ३६ २८	१० ४० ३८	१२ २३ ०६	१३ ५० ३७	१५ १५ ३३	१६ ५० ३८	१८ ४६ ००	२१ ०० ३१	२३ २० ५१	१ ४२ ०६	३ ५८ २३
२५	६ १३ ५५	८ ३२ ३२	१० ३६ ४२	१२ १९ १०	१३ ४६ ४१	१५ ११ ३७	१६ ४६ ४२	१८ ४२ ०४	२० ५६ ३५	२३ १६ ५५	१ ३८ १०	३ ५४ २७
२६	६ ०९ ५९	८ २८ ३६	१० ३२ ४६	१२ १५ १४	१३ ४२ ४५	१५ ०७ ४१	१६ ४२ ४६	१८ ३८ ०८	२० ५२ ३९	२३ १२ ५९	१ ३४ १४	३ ५० ३१
२७	६ ०६ ०३	८ २४ ४०	१० २८ ५०	१२ ११ १८	१३ ३८ ५०	१५ ०३ ४५	१६ ३८ ५०	१८ ३४ १३	२० ४८ ४३	२३ ०९ ०३	१ ३० १८	३ ४६ ३५
२८	६ ०२ ०७	८ २० ४४	१० २४ ५४	१२ ०७ २२	१३ ३४ ५४	१४ ५९ ४९	१६ ३४ ५५	१८ ३० १७	२० ४४ ४७	२३ ०५ ०७	१ २६ २२	३ ४२ ३९
२९	५ ५८ ११	८ १६ ४९	१० २० ५८	१२ ०३ २६	१३ ३० ५८	१४ ५५ ५३	१६ ३० ५९	१८ २६ २१	२० ४० ५१	२३ ०१ ११	१ २२ २६	३ ३८ ४३

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०८ ५७	१० १३ ०७	११ ५५ ३४	१३ २३ ०६	१४ ४८ ०१	१६ २३ ०७	१८ १८ २९	२० ३३ ००	२२ ५३ २०	१ १४ ३४	३ ३० ५१	५ ५० १९
२	८ ०५ ०१	१० ०९ ११	११ ५१ ३८	१३ १९ १०	१४ ४४ ०५	१६ १९ ११	१८ १४ ३३	२० २९ ०४	२२ ४९ २४	१ १० ३८	३ २६ ५५	५ ४६ २३
३	८ ०१ ०५	१० ०५ १५	११ ४७ ४३	१३ १५ १४	१४ ४० ०९	१६ १५ १५	१८ १० ३७	२० २५ ०८	२२ ४५ २८	१ ०६ ४३	३ २३ ००	५ ४२ २८
४	७ ५७ ०९	१० ०१ १९	११ ४३ ४७	१३ ११ १८	१४ ३६ १४	१६ ११ १९	१८ ०६ ४१	२० २१ १२	२२ ४१ ३२	१ ०२ ४७	३ १९ ०४	५ ३८ ३२
५	७ ५३ १३	९ ५७ २३	११ ३९ ५१	१३ ०७ २२	१४ ३२ १८	१६ ०७ २३	१८ ०२ ४५	२० १७ १६	२२ ३७ ३६	० ५८ ५१	३ १५ ०८	५ ३४ ३६
६	७ ४९ १७	९ ५३ २७	११ ३५ ५५	१३ ०३ २६	१४ २८ २२	१६ ०३ २७	१७ ५८ ५०	२० १३ २०	२२ ३३ ४०	० ५४ ५५	३ ११ १२	५ ३० ४०
७	७ ४५ २१	९ ४९ ३१	११ ३१ ५९	१२ ५९ ३१	१४ २४ २६	१५ ५९ ३१	१७ ५४ ५४	२० ०९ २४	२२ २९ ४४	० ५० ५९	३ ०७ १६	५ २६ ४४
८	७ ४१ २६	९ ४५ ३५	११ २८ ०३	१२ ५५ ३५	१४ २० ३०	१५ ५५ ३६	१७ ५० ५८	२० ०५ २८	२२ २५ ४८	० ४७ ०३	३ ०३ २०	५ २२ ४८
९	७ ३७ ३०	९ ४१ ३९	११ २४ ०७	१२ ५१ ३९	१४ १६ ३४	१५ ५१ ४०	१७ ४७ ०२	२० ०१ ३३	२२ २१ ५२	० ४३ ०७	२ ५९ २४	५ १८ ५२
१०	७ ३३ ३४	९ ३७ ४४	११ २० ११	१२ ४७ ४३	१४ १२ ३८	१५ ४७ ४४	१७ ४३ ०६	१९ ५७ ३७	२२ १७ ५६	० ३९ ११	२ ५५ २८	५ १४ ५६
११	७ २९ ३८	९ ३३ ४८	११ १६ १५	१२ ४३ ४७	१४ ०८ ४२	१५ ४३ ४८	१७ ३९ १०	१९ ५३ ४१	२२ १४ ०१	० ३५ १५	२ ५१ ३२	५ ११ ००
१२	७ २५ ४२	९ २९ ५२	११ १२ १९	१२ ३९ ५१	१४ ०४ ४६	१५ ३९ ५२	१७ ३५ १४	१९ ४९ ४५	२२ १० ०५	० ३१ २०	२ ४७ ३७	५ ०७ ०५
१३	७ २१ ४६	९ २५ ५६	११ ०८ २४	१२ ३५ ५५	१४ ०० ५०	१५ ३५ ५६	१७ ३१ १८	१९ ४५ ४९	२२ ०६ ०९	० २७ २४	२ ४३ ४१	५ ०३ ०९
१४	७ १७ ५०	९ २२ ००	११ ०४ २८	१२ ३१ ५९	१३ ५६ ५५	१५ ३२ ००	१७ २७ २२	१९ ४१ ५३	२२ ०२ १३	० २३ २८	२ ३९ ४५	४ ५९ १३
१५	७ १३ ५४	९ १८ ०४	११ ०० ३२	१२ २८ ०३	१३ ५२ ५९	१५ २८ ०४	१७ २३ २६	१९ ३७ ५७	२१ ५८ १७	० १५ ३६	२ ३५ ४९	४ ५५ १७
१६	७ ०९ ५८	९ १४ ०८	१० ५६ ३६	१२ २४ ०८	१३ ४९ ०३	१५ २४ ०८	१७ १९ ३१	१९ ३४ ०१	२१ ५४ २१	० ११ ४०	२ ३१ ५३	४ ५१ २१
१७	७ ०६ ०२	९ १० १२	१० ५२ ४०	१२ २० १२	१३ ४५ ०७	१५ २० १२	१७ १५ ३५	१९ ३० ०५	२१ ५० २५	० ०७ ४४	२ २७ ५७	४ ४७ २५
१८	७ ०२ ०७	९ ०६ १६	१० ४८ ४४	१२ १६ १६	१३ ४१ ११	१५ १६ १७	१७ ११ ३९	१९ २६ १०	२१ ४६ २९	० ०३ ४८	२ २४ ०१	४ ४३ २९
१९	६ ५८ ११	९ ०२ २०	१० ४४ ४८	१२ १२ २०	१३ ३७ १५	१५ १२ २१	१७ ०७ ४३	१९ २२ १४	२१ ४२ ३३	२३ ५९ ५२	२ २० ०५	४ ३९ ३३
२०	६ ५४ १५	८ ५८ २५	१० ४० ५२	१२ ०८ २४	१३ ३३ १९	१५ ०८ २५	१७ ०३ ४७	१९ १८ १८	२१ ३८ ३८	२३ ५५ ५६	२ १६ ०९	४ ३५ ३७
२१	६ ५० १९	८ ५४ २९	१० ३६ ५६	१२ ०४ २८	१३ २९ २३	१५ ०४ २९	१६ ५९ ५१	१९ १४ २२	२१ ३४ ४२	२३ ५२ ०१	२ १२ १३	४ ३१ ४२
२२	६ ४६ २३	८ ५० ३३	१० ३३ ०१	१२ ०० ३२	१३ २५ २७	१५ ०० ३३	१६ ५५ ५५	१९ १० २६	२१ ३० ४६	२३ ४८ ०५	२ ०८ १८	४ २७ ४६
२३	६ ४२ २७	८ ४६ ३७	१० २९ ०५	११ ५६ ३६	१३ २१ ३१	१४ ५६ ३७	१६ ५१ ५९	१९ ०६ ३०	२१ २६ ५०	२३ ४४ ०९	२ ०४ २२	४ २३ ५०
२४	६ ३८ ३१	८ ४२ ४१	१० २५ ०९	११ ५२ ४०	१३ १७ ३६	१४ ५२ ४१	१६ ४८ ०३	१९ ०२ ३४	२१ २२ ५४	२३ ४० १३	२ ०० २६	४ १९ ५४
२५	६ ३४ ३५	८ ३८ ४५	१० २१ १३	११ ४८ ४४	१३ १३ ४०	१४ ४८ ४५	१६ ४४ ०८	१८ ५८ ३८	२१ १८ ५८	२३ ३६ १७	१ ५६ ३०	४ १५ ५८
२६	६ ३० ३९	८ ३४ ४९	१० १७ १७	११ ४४ ४८	१३ ०९ ४४	१४ ४४ ४९	१६ ४० १२	१८ ५४ ४२	२१ १५ ०२	२३ ३२ २१	१ ५२ ३४	४ १२ ०२
२७	६ २६ ४४	८ ३० ५३	१० १३ २१	११ ४० ५३	१३ ०५ ४८	१४ ४० ५३	१६ ३६ १६	१८ ५० ४६	२१ ११ ०६	२३ २८ २५	१ ४८ ३८	४ ०८ ०६
२८	६ २२ ४८	८ २६ ५७	१० ०९ २५	११ ३६ ५७	१३ ०१ ५२	१४ ३६ ५८	१६ ३२ २०	१८ ४६ ५१	२१ ०७ १०	२३ २४ २९	१ ४४ ४२	४ ०४ १०
२९	६ १८ ५२	८ २३ ०१	१० ०५ २९	११ ३३ ०१	१२ ५७ ५६	१४ ३३ ०२	१६ २८ २४	१८ ४२ ५५	२१ ०३ १४	२३ २० ३३	१ ४० ४६	४ ०० १४
३०	६ १४ ५६	८ १९ ०६	१० ०१ ३३	११ २९ ०५	१२ ५४ ००	१४ २९ ०६	१६ २४ २८	१८ ३८ ५९	२० ५९ १९	२३ १६ ३८	१ ३६ ५०	३ ५६ १८

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ १० १३	९ ५२ ४१	११ २० १३	१२ ४५ ०८	१४ २० १४	१६ १५ ३५	१८ ३० ०५	२० ५० २५	२३ ०७ ४४	१ २७ ५७	३ ४७ २५	६ ०६ ०३
२	८ ०६ १७	९ ४८ ४६	११ १६ १७	१२ ४१ १३	१४ १६ १८	१६ ११ ३९	१८ २६ १०	२० ४६ २९	२३ ०३ ४८	१ २४ ०१	३ ४३ २९	६ ०२ ०७
३	८ ०२ २१	९ ४४ ५०	११ १२ २२	१२ ३७ १७	१४ १२ २२	१६ ०७ ४३	१८ २२ १४	२० ४२ ३४	२२ ५९ ५३	१ २० ०५	३ ३९ ३३	५ ५८ ११
४	७ ५८ २५	९ ४० ५४	११ ०८ २६	१२ ३३ २१	१४ ०८ २६	१६ ०३ ४७	१८ १८ १८	२० ३८ ३८	२२ ५५ ५७	१ १६ १०	३ ३५ ३७	५ ५४ १५
५	७ ५४ ३०	९ ३६ ५८	११ ०४ ३०	१२ २९ २५	१४ ०४ ३०	१५ ५९ ५२	१८ १४ २२	२० ३४ ४२	२२ ५२ ०१	१ १२ १४	३ ३१ ४२	५ ५० १९
६	७ ५० ३४	९ ३३ ०२	११ ०० ३४	१२ २५ २९	१४ ०० ३४	१५ ५५ ५६	१८ १० २६	२० ३० ४६	२२ ४८ ०५	१ ०८ १८	३ २७ ४६	५ ४६ २३
७	७ ४६ ३८	९ २९ ०६	१० ५६ ३८	१२ २१ ३३	१३ ५६ ३८	१५ ५२ ००	१८ ०६ ३०	२० २६ ५०	२२ ४४ ०९	१ ०४ २२	३ २३ ५०	५ ४२ २७
८	७ ४२ ४२	९ २५ १०	१० ५२ ४२	१२ १७ ३७	१३ ५२ ४२	१५ ४८ ०४	१८ ०२ ३४	२० २२ ५४	२२ ४० १३	१ ०० २६	३ १९ ५४	५ ३८ ३२
९	७ ३८ ४६	९ २१ १४	१० ४८ ४६	१२ १३ ४१	१३ ४८ ४६	१५ ४४ ०८	१७ ५८ ३८	२० १८ ५८	२२ ३६ १७	० ५६ ३०	३ १५ ५८	५ ३४ ३६
१०	७ ३४ ५०	९ १७ १८	१० ४४ ५०	१२ ०९ ४५	१३ ४४ ५१	१५ ४० १२	१७ ५४ ४२	२० १५ ०२	२२ ३२ २१	० ५२ ३४	३ ११ ०२	५ ३० ४०
११	७ ३० ५४	९ १३ २३	१० ४० ५४	१२ ०५ ५०	१३ ४० ५५	१५ ३६ १६	१७ ५० ४७	२० ११ ०६	२२ २८ २५	० ४८ ३८	३ ०८ ०६	५ २६ ४४
१२	७ २६ ५८	९ ०९ २७	१० ३६ ५८	१२ ०१ ५४	१३ ३६ ५९	१५ ३२ २०	१७ ४६ ५१	२० ०७ १०	२२ २४ ३०	० ४४ ४२	३ ०४ १०	५ २२ ४८
१३	७ २३ ०२	९ ०५ ३१	१० ३३ ०३	११ ५७ ५८	१३ ३३ ०३	१५ २८ २४	१७ ४२ ५५	२० ०३ १५	२२ २० ३४	० ४० ४७	३ ०० १४	५ १८ ५२
१४	७ १९ ०६	९ ०१ ३५	१० २९ ०७	११ ५४ ०२	१३ २९ ०७	१५ २४ २९	१७ ३८ ५९	१९ ५९ १९	२२ १६ ३८	० ३६ ५१	२ ५६ १९	५ १४ ५६
१५	७ १५ ११	८ ५७ ३९	१० २५ ११	११ ५० ०६	१३ २५ ११	१५ २० ३३	१७ ३५ ०३	१९ ५५ २३	२२ १२ ४२	० ३२ ५५	२ ५२ २३	५ ११ ००
१६	७ ११ १५	८ ५३ ४३	१० २१ १५	११ ४६ १०	१३ २१ १५	१५ १६ ३७	१७ ३१ ०७	१९ ५१ २७	२२ ०८ ४६	० २८ ५९	२ ४८ २७	५ ०७ ०४
१७	७ ०७ १९	८ ४९ ४७	१० १७ १९	११ ४२ १४	१३ १७ १९	१५ १२ ४१	१७ २७ ११	१९ ४७ ३१	२२ ०४ ५०	० २१ ०७	२ ४४ ३१	५ ०३ ०८
१८	७ ०३ २३	८ ४५ ५१	१० १३ २३	११ ३८ १८	१३ १३ २३	१५ ०८ ४५	१७ २३ १५	१९ ४३ ३५	२२ ०० ५४	० १७ ११	२ ४० ३५	४ ५९ १३
१९	६ ५९ २७	८ ४१ ५५	१० ०९ २७	११ ३४ २२	१३ ०९ २७	१५ ०४ ४९	१७ १९ १९	१९ ३९ ३९	२१ ५६ ५८	० १३ १५	२ ३६ ३९	४ ५५ १७
२०	६ ५५ ३१	८ ३७ ५९	१० ०५ ३१	११ ३० २६	१३ ०५ ३२	१५ ०० ५३	१७ १५ २४	१९ ३५ ४३	२१ ५३ ०२	० ०९ १९	२ ३२ ४३	४ ५१ २१
२१	६ ५१ ३५	८ ३४ ०३	१० ०१ ३५	११ २६ ३०	१३ ०१ ३६	१४ ५६ ५७	१७ ११ २८	१९ ३१ ४७	२१ ४९ ०६	० ०५ २३	२ २८ ४७	४ ४७ २५
२२	६ ४७ ३९	८ ३० ०८	९ ५७ ३९	११ २२ ३५	१२ ५७ ४०	१४ ५३ ०१	१७ ०७ ३२	१९ २७ ५२	२१ ४५ ११	० ०१ २८	२ २४ ५१	४ ४३ २९
२३	६ ४३ ४३	८ २६ १२	९ ५३ ४४	११ १८ ३९	१२ ५३ ४४	१४ ४९ ०५	१७ ०३ ३६	१९ २३ ५६	२१ ४१ १५	२३ ५७ ३२	२ २० ५५	४ ३९ ३३
२४	६ ३९ ४७	८ २२ १६	९ ४९ ४८	११ १४ ४३	१२ ४९ ४८	१४ ४५ १०	१६ ५९ ४०	१९ २० ००	२१ ३७ १९	२३ ५३ ३६	२ १७ ००	४ ३५ ३७
२५	६ ३५ ५२	८ १८ २०	९ ४५ ५२	११ १० ४७	१२ ४५ ५२	१४ ४१ १४	१६ ५५ ४४	१९ १६ ०४	२१ ३३ २३	२३ ४९ ४०	२ १३ ०४	४ ३१ ४१
२६	६ ३१ ५६	८ १४ २४	९ ४१ ५६	११ ०६ ५१	१२ ४१ ५६	१४ ३७ १८	१६ ५१ ४८	१९ १२ ०८	२१ २९ २७	२३ ४५ ४४	२ ०९ ०८	४ २७ ४५
२७	६ २८ ००	८ १० २८	९ ३८ ००	११ ०२ ५५	१२ ३८ ००	१४ ३३ २२	१६ ४७ ५२	१९ ०८ १२	२१ २५ ३१	२३ ४१ ४८	२ ०५ १२	४ २३ ४९
२८	६ २४ ०४	८ ०६ ३२	९ ३४ ०४	१० ५८ ५९	१२ ३४ ०४	१४ २९ २६	१६ ४३ ५६	१९ ०४ १६	२१ २१ ३५	२३ ३७ ५२	२ ०१ १६	४ १९ ५४
२९	६ २० ०८	८ ०२ ३६	९ ३० ०८	१० ५५ ०३	१२ ३० ०८	१४ २५ ३०	१६ ४० ००	१९ ०० २०	२१ १७ ३९	२३ ३३ ५६	१ ५७ २०	४ १५ ५८
३०	६ १६ १२	७ ५८ ४०	९ २६ १२	१० ५१ ०७	१२ २६ १३	१४ २१ ३४	१६ ३६ ०५	१८ ५६ २४	२१ १३ ४३	२३ ३० ००	१ ५३ २४	४ १२ ०२
३१	६ १२ १६	७ ५४ ४४	९ २२ १६	१० ४७ ११	१२ २२ १७	१४ १७ ३८	१६ ३२ ०९	१८ ५२ २८	२१ ०९ ४७	२३ २६ ०४	१ ४९ २८	४ ०८ ०६

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५० ४९	९ १८ २०	१० ४३ १६	१२ १८ २१	१४ १३ ४२	१६ २८ १३	१८ ४८ ३३	२१ ०५ ५२	२३ २२ ०९	१ ४५ ३२	४ ०४ १०	६ ०८ २०
२	७ ४६ ५३	९ १४ २४	१० ३९ २०	१२ १४ २५	१४ ०९ ४६	१६ २४ १७	१८ ४४ ३७	२१ ०१ ५६	२३ १८ १३	१ ४१ ३६	४ ०० १४	६ ०४ २४
३	७ ४२ ५७	९ १० २९	१० ३५ २४	१२ १० २९	१४ ०५ ५१	१६ २० २१	१८ ४० ४१	२० ५८ ००	२३ १४ १७	१ ३७ ४१	३ ५६ १८	६ ०० २८
४	७ ३९ ०१	९ ०६ ३३	१० ३१ २८	१२ ०६ ३३	१४ ०१ ५५	१६ १६ २५	१८ ३६ ४५	२० ५४ ०४	२३ १० २१	१ ३३ ४५	३ ५२ २२	५ ५६ ३३
५	७ ३५ ०५	९ ०२ ३७	१० २७ ३२	१२ ०२ ३७	१३ ५७ ५९	१६ १२ २९	१८ ३२ ४९	२० ५० ०८	२३ ०६ २५	१ २९ ४९	३ ४८ २६	५ ५२ ३७
६	७ ३१ ०९	८ ५८ ४१	१० २३ ३६	११ ५८ ४१	१३ ५४ ०३	१६ ०८ ३३	१८ २८ ५३	२० ४६ १२	२३ ०२ २९	१ २५ ५३	३ ४४ ३१	५ ४८ ४१
७	७ २७ १३	८ ५४ ४५	१० १९ ४०	११ ५४ ४५	१३ ५० ०७	१६ ०४ ३७	१८ २४ ५७	२० ४२ १६	२२ ५८ ३३	१ २१ ५७	३ ४० ३५	५ ४४ ४५
८	७ २३ १७	८ ५० ४९	१० १५ ४४	११ ५० ४९	१३ ४६ ११	१६ ०० ४१	१८ २१ ०१	२० ३८ २०	२२ ५४ ३७	१ १८ ०१	३ ३६ ३९	५ ४० ४९
९	७ १९ २१	८ ४६ ५३	१० ११ ४८	११ ४६ ५४	१३ ४२ १५	१५ ५६ ४६	१८ १७ ०५	२० ३४ २४	२२ ५० ४१	१ १४ ०५	३ ३२ ४३	५ ३६ ५३
१०	७ १५ २५	८ ४२ ५७	१० ०७ ५२	११ ४२ ५८	१३ ३८ १९	१५ ५२ ५०	१८ १३ ०९	२० ३० २९	२२ ४६ ४५	१ १० ०९	३ २८ ४७	५ ३२ ५७
११	७ ११ ३०	८ ३९ ०१	१० ०३ ५७	११ ३९ ०२	१३ ३४ २३	१५ ४८ ५४	१८ ०९ १४	२० २६ ३३	२२ ४२ ५०	१ ०६ १३	३ २४ ५१	५ २९ ०१
१२	७ ०७ ३४	८ ३५ ०५	१० ०० ०१	११ ३५ ०६	१३ ३० २७	१५ ४४ ५८	१८ ०५ १८	२० २२ ३७	२२ ३८ ५४	१ ०२ १८	३ २० ५५	५ २५ ०५
१३	७ ०३ ३८	८ ३१ १०	९ ५६ ०५	११ ३१ १०	१३ २६ ३२	१५ ४१ ०२	१८ ०१ २२	२० १८ ४१	२२ ३४ ५८	० ५८ २२	३ १६ ५९	५ २१ ०९
१४	६ ५९ ४२	८ २७ १४	९ ५२ ०९	११ २७ १४	१३ २२ ३६	१५ ३७ ०६	१७ ५७ २६	२० १४ ४५	२२ ३१ ०२	० ५४ २६	३ १३ ०३	५ १७ १४
१५	६ ५५ ४६	८ २३ १८	९ ४८ १३	११ २३ १८	१३ १८ ४०	१५ ३३ १०	१७ ५३ ३०	२० १० ४९	२२ २७ ०६	० ५० ३०	३ ०९ ०७	५ १३ १८
१६	६ ५१ ५०	८ १९ २२	९ ४४ १७	११ १९ २२	१३ १४ ४४	१५ २९ १४	१७ ४९ ३४	२० ०६ ५३	२२ २३ १०	० ४६ ३४	३ ०५ ११	५ ०९ २२
१७	६ ४७ ५४	८ १५ २६	९ ४० २१	११ १५ २६	१३ १० ४८	१५ २५ १८	१७ ४५ ३८	२० ०२ ५७	२२ १९ १४	० ४२ ३८	३ ०१ १६	५ ०५ २६
१८	६ ४३ ५८	८ ११ ३०	९ ३६ २५	११ ११ ३०	१३ ०६ ५२	१५ २१ २२	१७ ४१ ४२	१९ ५९ ०१	२२ १५ १८	० ३८ ४२	२ ५७ २०	५ ०१ ३०
१९	६ ४० ०२	८ ०७ ३४	९ ३२ २९	११ ०७ ३४	१३ ०२ ५६	१५ १७ २७	१७ ३७ ४६	१९ ५५ ०५	२२ ११ २२	० ३४ ४६	२ ५३ २४	४ ५७ ३४
२०	६ ३६ ०६	८ ०३ ३८	९ २८ ३३	११ ०३ ३९	१२ ५९ ००	१५ १३ ३१	१७ ३३ ५१	१९ ५१ १०	२२ ०७ २६	० ३० ५०	२ ४९ २८	४ ५३ ३८
२१	६ ३२ ११	७ ५९ ४२	९ २४ ३८	१० ५९ ४३	१२ ५५ ०४	१५ ०९ ३५	१७ २९ ५५	१९ ४७ १४	२२ ०३ ३१	० २६ ५४	२ ४५ ३२	४ ४९ ४२
२२	६ २८ १५	७ ५५ ४६	९ २० ४२	१० ५५ ४७	१२ ५१ ०८	१५ ०५ ३९	१७ २५ ५९	१९ ४३ १८	२१ ५९ ३५	० १९ ०३	२ ४१ ३६	४ ४५ ४६
२३	६ २४ १९	७ ५१ ५१	९ १६ ४६	१० ५१ ५१	१२ ४७ १३	१५ ०१ ४३	१७ २२ ०३	१९ ३९ २२	२१ ५५ ३९	० १५ ०७	२ ३७ ४०	४ ४१ ५०
२४	६ २० २३	७ ४७ ५५	९ १२ ५०	१० ४७ ५५	१२ ४३ १७	१४ ५७ ४७	१७ १८ ०७	१९ ३५ २६	२१ ५१ ४३	० ११ ११	२ ३३ ४४	४ ३७ ५५
२५	६ १६ २७	७ ४३ ५९	९ ०८ ५४	१० ४३ ५९	१२ ३९ २१	१४ ५३ ५१	१७ १४ ११	१९ ३१ ३०	२१ ४७ ४७	० ०७ १५	२ २९ ४८	४ ३३ ५९
२६	६ १२ ३१	७ ४० ०३	९ ०४ ५८	१० ४० ०३	१२ ३५ २५	१४ ४९ ५५	१७ १० १५	१९ २७ ३४	२१ ४३ ५१	० ०३ १९	२ २५ ५२	४ ३० ०३
२७	६ ०८ ३५	७ ३६ ०७	९ ०१ ०२	१० ३६ ०७	१२ ३१ २९	१४ ४५ ५९	१७ ०६ १९	१९ २३ ३८	२१ ३९ ५५	२३ ५९ २३	२ २१ ५७	४ २६ ०७
२८	६ ०४ ३९	७ ३२ ११	८ ५७ ०६	१० ३२ ११	१२ २७ ३३	१४ ४२ ०३	१७ ०२ २३	१९ १९ ४२	२१ ३५ ५९	२३ ५५ २७	२ १८ ०१	४ २२ ११

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

	मि. से.	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर		१।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय

	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	+०।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६।२४।४८
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६।११।२७

सूर्यास्त

	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	—०।११।१२
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६।०२।२४
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५।४९।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११।१२ × ५=५५।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अत: यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	— ०।५६
दिनमान नागपुर	२९।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६०।००
दिनमान	— २९।०४
रात्रिमान	३०।५६

उदाहरण २—मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८।५२, रवि क्रांति २३।२६ उत्तर, वेलांतर + १।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+००।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+००।३४
अक्षांश १३।०५ एवं रवि क्रांति २३।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय

	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	— ०।२३।१२
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ०।०८।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५।४५।४०
वेलांतर	+ ०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५।४६।५४

सूर्यास्त

	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	+०।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ०।०८।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६।३२।०४
वेलांतर	+ ०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६।३३।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३।१२×५=११५।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	+०१।५६
दिनमान मद्रास	३१।५६

रात्रिमान—

अहोरात्र	६०।००
दिनमान	— ३१।५६
रात्रिमान	२८।०४

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	२५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२)	२५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	,,
		६	०९	,,
	६.९ को ढाई से गुना किया	६	०९	
		३	०४	३०
	इष्टकाल घटी फल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	१० सितम्बर को जन्म समय मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।	२०	४५	भा.स्टै.टा.
(२)	१० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	,,
	शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
		१४	४०	
		७	२०	३०
(३)	इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	,,
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५ शेष	
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण मे यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८१	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	३६	१३	५०	२७	५	४७	२९	१३	०	४९	४१	३७	३६	४०	४९	३	२०	४८	२०	५८	४९	४७	५५	२४

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	११	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३५	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२५	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११५	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११७	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११५	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	२२	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०५	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
६६	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४
	५९	०	२	९	२०	३७	१	३६	२२	१९	३३	४	५६	१३	५७	३२	२८	२८	३६	१९	२५	३४	४४	४०

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	.० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द.० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	०· ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २९	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ५२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६.५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	—०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३ ११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय वेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण— दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अत: यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट — यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन											चरान्तर सारिणी										क्रांति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण								
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में— अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	26 ।48	82 ।14	—1 ।04	+20 ।00	इटावा	यू.पी.	26 ।47	79 ।02	—13 ।52	+7 ।12	किस्तबाड़	जम्मू	33 ।12	75 ।48	—26 ।48	—5 ।44
अक्कलकोट	बम्बई	17 ।33	76 ।12	—25 ।12	—3 ।52	इम्फाल	मणिपुर	24 ।54	93 ।54	+45 ।36	+66 ।40	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	27 ।10	75 ।22	—28 ।32	—7 ।28
अम्बाला	हरियाणा	30 ।22	76 ।46	—22 ।56	—1 ।52	इडुंकी	केरल	9 ।51	77 ।14	—21 ।04	0 ।00	कोच्चि	केरल	10 ।00	76 ।15	—25 ।00	—3 ।56
आकोला	महाराष्ट्र	20 ।42	77 ।02	—21 ।52	—0 ।48	इटानगर	अरु.प्रदेश	26 ।54	93 ।37	+44 ।24	+65 ।32	कोलगंगा	बिहार	25 ।16	87 ।16	+19 ।04	+40 ।08
अजमेर	राजस्थान	26 ।27	74 ।40	—31 ।20	—10 ।16	ईगतपुरी	महाराष्ट्र	19 ।41	73 ।35	—35 ।40	—14 ।36	कोहिमा	नागालैंड	25 ।41	94 ।0	+46 ।00	+67 ।04
अमृतसर	पंजाब	31 ।38	74 ।53	—30 ।28	—9 ।24	इटारसी	म.प्रदेश	22 ।37	77 ।46	—18 ।56	+2 ।8	केलांग	हिमाचल	32 ।47	77 ।4	—21 ।36	—0 ।40
अहमदाबाद	गुजरात	23 ।02	72 ।37	—39 ।32	—18 ।28	इलाहाबाद	यू.पी.	25 ।28	81 ।52	—2 ।34	+18 ।32	कोटा	राजस्थान	25 ।11	75 ।50	—26 ।40	—5 ।36
अलीगढ़	यू.पी.	27 ।54	78 ।05	—17 ।40	+3 ।24	उन्नाव	उ. प्र.	26 ।33	80 ।30	—8 ।00	+13 ।04	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	16 ।41	74 ।13	—33 ।08	—12 ।05
अहमदनगर	महाराष्ट्र	19 ।05	74 ।44	—31 ।04	—10 ।00	उतरौला	उ. प्र.	27 ।19	82 ।28	—0 ।08	+20 ।56	कुशलगढ़	राजस्थान	23 ।08	74 ।27	—32 ।12	—11 ।08
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	25 ।58	76 ।06	—25 ।36	—4 ।32	ऊधमपुर	जम्मू	32 ।55	72 ।07	—29 ।32	—8 ।28	कूचबिहार	राजस्थान	26 ।20	89 ।25	+27 ।40	+48 ।44
अलीबाग	बम्बई	18 ।38	72 ।50	—38 ।40	—17 ।36	उज्जैन	म. प्रदेश	23 ।11	75 ।44	—27 ।04	—6 ।00	कृष्णा	कर्नाटक	16 ।25	77 ।19	—20 ।44	+0 ।20
अलवर	राजस्थान	27 ।34	76 ।38	—23 ।28	—2 ।24	उदय मण्डलम	तमिलनाडू	11 ।17	76 ।44	—23 ।04	—2 ।00	खम्भम	आं. प्र.	17 ।15	80 ।11	—9 ।16	+11 ।48
अखनूर	कश्मीर	32 ।54	74 ।35	—31 ।40	—10 ।36	उदयपुर	राजस्थान	24 ।35	73 ।42	—35 ।12	—14 ।08	खण्डवा	म.प्र.	21 ।50	76 ।20	—24 ।40	—3 ।36
अनूपशहर	यू.पी.	28 ।21	78 ।23	—16 ।27	+4 ।36	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	18 ।08	76 ।05	—25 ।40	—4 ।36	खेडब्रह्मा	गुजरात	24 ।03	73 ।4	—37 ।36	—16 ।40
अल्मोड़ा	उत्तराखंड	29 ।37	79 ।40	—11 ।20	+9 ।44	अचलपुर	महाराष्ट्र	21 ।18	77 ।33	—19 ।48	+1 ।16	गयाजी	बिहार	24 ।48	85 ।1	+10 ।04	+31 ।08
अमेठी	यू.पी.	26 ।08	81 ।48	—2 ।48	+18 ।16	एटा	उ. प्र.	27 ।35	78 ।41	—15 ।16	+5 ।48	ग्वालियर	म.प्र.	26 ।14	78 ।10	—17 ।20	+3 ।44
आसनसोल	प. बंगाल	23 ।42	87 ।20	—20 ।40	+40 ।24	कच्छ भुज	गुजरात	23 ।15	69 ।40	—51 ।20	—30 ।16	गंगापुर	राजस्थान	26 ।29	76 ।44	—23 ।04	—2 ।00
अनूपगढ़	राजस्थान	29 ।10	73 ।13	—37 ।08	—16 ।04	कन्नौज	उ. प्र.	27 ।02	79 ।58	—10 ।08	+10 ।56	गाजीपुर	उ. प्र.	25 ।26	83 ।35	+4 ।20	+25 ।24
अकबरपुर	यू.पी.	26 ।26	82 ।33	+0 ।12	+21 ।16	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	10 ।17	72 ।21	—40 ।36	—19 ।32	गान्तोक	सिक्किम	27 ।20	88 ।25	+24 ।20	+45 ।24
अमरेली	गुजरात	21 ।36	71 ।14	—45 ।04	—24 ।00	कलकत्ता	प. बंगाल	22 ।35	88 ।24	+23 ।36	+44 ।40	गंगानगर	राजस्थान	29 ।52	73 ।51	—34 ।36	—13 ।32
अगरतला	त्रिपुरा	23 ।50	91 ।23	+35 ।32	+56 ।36	कपूरथला	पंजाब	31 ।22	75 ।12	—28 ।32	—7 ।28	गोंडा	उ. प्र.	27 ।10	81 ।58	—2 ।12	+18 ।52
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	14 ।41	77 ।37	—19 ।32	+1 ।32	करनाल	हरियाणा	29 ।42	77 ।02	—21 ।52	—0 ।48	गोरखपुर	उ. प्र.	26 ।46	83 ।26	—3 ।32	+24 ।36
आईजोल	मिजोरम	23 ।45	92 ।45	+41 ।00	+62 ।04	कन्याकुमारी	तमिलनाडू	8 ।04	77 ।36	—19 ।36	+1 ।28	गोआ	गोआ	25 ।15	73 ।47	—34 ।52	—13 ।48
आहवा	गुजरात	20 ।47	73 ।42	—35 ।12	—14 ।08	कल्पाद	हिमाचल	31 ।41	79 ।10	—13 ।20	+7 ।44	गुवाहाटी	असम	26 ।11	91 ।45	+37 ।00	+58 ।04
आगरा	यू.पी.	27 ।11	78 ।02	—17 ।52	+3 ।12	करीमनगर	आं. प्र.	18 ।28	79 ।06	—13 ।36	+7 ।28	गुरदासपुर	पंजाब	32 ।03	75 ।27	—28 ।12	—7 ।08
आबू	राजस्थान	24 ।36	72 ।44	—39 ।04	—18 ।00	कानपुर	उ. प्र.	26 ।27	80 ।21	—8 ।36	+12 ।28	गुना	म. प्र.	24 ।40	77 ।30	—20 ।00	—1 ।04
आजमगढ़	यू.पी.	26 ।6	83 ।12	+2 ।48	+23 ।52	काठमाण्डो	नेपाल	27 ।42	85 ।17	+11 ।08	+32 ।12	घाटमशर	उ. प्र.	26 ।08	80 ।11	—9 ।16	+11 ।48
आरा	बिहार	25 ।36	84 ।42	+8 ।48	+29 ।52	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	32 ।09	76 ।18	—24 ।48	—3 ।44	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	30 ।40	76 ।52	—22 ।32	—1 ।28
ओरंगाबाद	बिहार	24 ।44	84 ।23	+7 ।32	+28 ।36	काशी	उ. प्र.	25 ।20	83 ।00	—2 ।00	+23 ।04	चन्दौसी	उ. प्र.	28 ।27	78 ।47	—14 ।52	+6 ।12
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	19 ।52	75 ।19	—28 ।44	—7 ।40	कांचिपुरम	तमिलनाडू	12 ।51	79 ।53	—10 ।28	+10 ।36	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	19 ।56	79 ।17	—12 ।52	+8 ।12
ओंगोलु	आंध्र प्र.	15 ।31	80 ।06	—9 ।36	+11 ।28	कार्गिल	जम्मू-का.	30 ।30	76 ।13	—25 ।08	—4 ।04	चिलास	जम्मू	35 ।36	74 ।7	—33 ।32	—12 ।28
इन्दौर	म.प्रदेश	22 ।43	75 ।52	—26 ।28	—5 ।28	किसनगढ़	राजस्थान	27 ।52	70 ।34	—47 ।44	—26 ।40	चीलो	राजस्थान	27 ।23	73 ।16	—36 ।56	—15 ।52

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	13 19	75 47	—26 52	—5 48
चित्रकूट	उ. प्र.	25 12	80 54	—6 24	+14 40
चितौड़गढ	राजस्थान	24 54	74 42	—31 12	—10 08
छपरा	बिहार	25 47	84 47	+9 08	+30 12
छत्तरपुर	म.प्र.	24 55	79 36	—11 36	+9 28
छिबरा मऊ	उ. प्र.	27 10	79 29	—12 04	+9 00
छबराटोंक	राजस्थान	24 40	76 51	—22 36	—1 32
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	19 46	85 50	+13 20	+34 24
जबलपुर	म. प्र.	23 10	79 58	—10 08	+10 56
जयपुर	राजस्थान	26 55	75 50	—26 40	—5 40
जलपाईगुड़ी	बंगाल	26 32	88 44	+24 56	+46 00
जम्मू	जम्मू का.	32 44	74 54	—30 24	—9 20
जसवन्तनगर	उ. प्र.	26 51	78 55	—14 20	+6 44
जनकपुर	म. प्र.	23 42	81 51	—2 36	—18 28
जामनगर	गुजरात	22 27	70 5	—49 40	—28 36
जालौर	राजस्थान	25 35	72 44	—39 04	—18 00
जूनागढ़	गुजरात	21 32	70 27	—48 12	—27 08
जोधपुर	राजस्थान	26 19	73 4	—37 44	—16 40
जौनपुर	उ. प्र.	25 43	82 43	+0 52	+21 56
जींद	हरियाणा	29 19	76 23	—24 28	—3 24
जैसलमेर	राजस्थान	26 54	70 57	—46 12	—25 08
जालन्धर	पंजाब	31 19	75 35	—27 40	—6 36
जाफराबाद	सौराष्ट्र	20 52	71 21	—44 36	—32 32
झांसी	उ. प्र.	25 26	78 34	—15 44	+5 20
झालावाड़	राजस्थान	24 36	76 9	—25 24	—4 20
झुंझुनू	राजस्थान	28 07	75 25	—28 20	—7 16
टोंक	राजस्थान	26 11	75 50	—26 40	—5 36
टेरू	जम्मू	36 14	72 42	—39 12	—18 08
टनकपुर	उ. प्र.	29 09	80 10	—9 20	+11 44
टाटानगर	बिहार	24 46	86 13	+14 52	+35 56
टेहरी	उत्तराखंड	30 23	78 30	—16 00	+5 04
टूंडला जं.	उ. प्र.	27 13	78 13	—17 08	+3 56
डायमण्ड	पं. बंगाल	22 11	84 12	+6 48	+27 52
डिब्रूगढ़	असम	27 29	94 56	+49 44	+70 48

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
डोंग	राजस्थान	27 28	77 20	—20 40	+0 24
डेराबाबा	पंजाब	32 02	75 04	—29 44	—8 40
ढाका	बंग्लादेश	23 43	90 25	+31 40	+52 44
तलागंग	तलांगंगा	32 56	72 28	—40 08	—19 04
तराई	बंगाल	26 40	88 30	+24 00	+45 04
तेजु	अ. प्रदेश	27 54	96 14	+54 56	+76 00
तंजाबूर	तमिल.	10 51	79 21	—12 36	+8 28
तिरूवन्तपुरम्	केरल	8 44	77 20	—20 40	+0 24
शिलांग	मेघालय	25 31	90 15	+31 00	+52 04
थानेश्वर	पंजाब	29 58	76 56	—22 16	—1 12
दतिया	म. प्र.	25 39	78 27	—16 12	+4 52
दरभंगा	बिहार	26 10	85 55	+13 40	+34 44
दार्जलिंग	प. बंगाल	27 03	88 17	+23 08	+44 12
हिसपुर	असम	26 20	92 10	+38 40	+59 44
दिण्डुक्कल	तमिलनाडू	10 13	78 05	—17 40	+3 24
दिल्ली	राजधानी	28 38	77 14	—21 04	—0 00
द्वारका	गुजरात	22 16	68 57	—54 12	—33 08
देहरादून	उत्तराखंड	30 19	78 04	—17 44	+3 20
देशनोक	राजस्थान	27 54	73 16	—36 56	—15 52
देवगढ़	उड़ीसा	21 32	84 45	+9 00	+30 04
धर्मशाला	हिमाचल	32 16	76 23	—24 28	—3 24
धर्मपुरी	तमिलनाडू	12 08	78 11	—17 16	+3 48
धारवाढ़	कर्नाटक	15 28	75 02	—29 52	—8 48
धार	म. प्र.	22 36	75 12	—29 12	—8 08
धौलपुर	राजस्थान	26 42	77 53	—18 28	+2 36
धौलागिर	नेपाल	29 11	83 00	—21 00	—23 04
धांग्रंधा	सौराष्ट्र	22 59	71 30	—44 00	—22 56
नवलगढ़	राजस्थान	27 51	75 12	—29 12	—8 08
नसीराबाद	राजस्थान	26 18	74 46	—30 56	—9 52
नड़ियाद	गुजरात	22 41	72 52	—38 32	—17 28
नाथद्वारा	राजस्थान	24 56	73 48	—34 48	—13 44
नाभा	पंजाब	30 22	76 10	—25 20	—4 16
नागपुर	महाराष्ट्र	21 09	79 6	—13 36	+7 28
नासिक	महाराष्ट्र	21 00	73 47	—34 52	—13 48

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
नागकोविंल	तमिलनाडू	8 07	77 47	—18 52	+ 2 12
नीमच	म. प्र.	24 28	74 51	—30 36	—9 32
नैनीताल	उत्तराखंड	29 25	79 27	—12 12	+8 52
नेपालगंज	नेपालगंज	28 03	81 37	—3 32	+17 32
नीलगिरी	उड़ीसा	21 27	86 47	+17 08	+38 12
पटना	बिहार	25 37	85 13	+10 52	+31 56
पठानकोट	पंजाब	32 18	75 42	—27 12	—6 08
पटियाला	पंजाब	30 22	76 25	—24 20	—3 16
परलकोट	म. प्र.	19 45	80 46	—6 56	+14 8
पणजी	गोआ	15 41	73 10	—37 20	—16 16
पालनपुर	गुजरात	24 11	72 27	—40 12	— 19 08
पाण्डिचेरी	तमिलनाडू	11 56	79 48	—10 48	+10 16
पानीपत	हरियाणा	29 27	76 59	—22 04	—1 00
प्रयागराज	उ. प्र.	25 25	81 53	—2 28	+18 36
पूना	महाराष्ट्र	18 31	73 52	—34 32	—13 28
पोर्टब्लेयर	अन्दमान	11 44	92 41	40 44	+61 48
पुष्करजी	राजस्थान	26 28	74 33	—31 48	—10 44
पेशाबर	प. पाकि.	34 01	71 36	—43 36	—22 32
पोरबन्दर	गुजरात	21 38	69 36	—51 36	—30 32
फतेहपुर	उ. प्र.	27 06	77 40	—19 20	+1 44
फरीदकोट	पंजाब	30 40	74 45	—31 00	—9 56
फर्रुखाबाद	उ. प्र.	27 03	79 37	—11 32	+9 32
फतेहपुर	राजस्थान	27 52	75 02	—29 52	—8 48
फुलेरा	राजस्थान	26 52	75 16	—28 56	—7 52
फीरोजपुर	पंजाब	30 57	74 36	—31 36	—10 32
फैजाबाद	उ. प्र.	26 47	82 08	—1 28	+19 36
फीरोजबाद	उ. प्र.	27 09	78 24	—16 24	+4 40
फूलपुर	उ.प्र.	25 32	82 17	—1 32	+19 32
फाजिलका	पंजाब	30 25	74 03	—33 48	—12 44
फतेहगढ़	उ. प्र.	27 23	79 35	—11 40	+9 24
बक्सर	बिहार	25 34	83 59	+5 56	+27 00
बद्रीनाथ	उत्तराखंड	30 44	79 30	—12 00	+9 04
वरंगल	आं. प्र.	18 04	79 53	—10 28	+10 36
बड़ौदा	गुजरात	22 18	73 12	—37 12	—16 08

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	18।55	72।50	—38।40	—17।36	भुवनेश्वर	उड़ीसा	20।54	85।52	+13।28	+34।32	रोपड़	(पंजा.)	30।57	76।30	—24।00	→2।56
बरेली	उ.प्र.	28।22	79।24	—12।24	+8।40	भूसावल	महाराष्ट्र	21।12	75।47	—26।52	—5।48	लखनऊ	(उ. प्र.)	26।51	80।59	—6।14	+15।00
बद्रीनाथ	उत्तराखंड	30।44	79।30	—12।00	+9।04	भूटान	भूटान	27।30	90।00	+30।00	+51।04	ललितपुर	(उ. प्र.)	24।41	78।24	—16।24	+4।400
बर्द्धमान	पं. बंगाल	23।25	87।54	+21।36	+42।40	भुजकच्छ	गुजरात	23।15	69।41	—51।16	—30।12	लुधियाना	पंजाब	30।35	75।53	—26।28	—5।24
बहराइच	उ. प्र.	27।34	81।37	—3।32	+17।32	मथुरा	उ. प्र.	27।28	77।41	—19।16	+1।48	शाहजहांमपुर	उ. प्र.	27।54	79।57	—10।12	+10।52
बस्ती	उ.प्र.	26।48	82।46	+1।04	+22।08	चेन्नई	तमिलनाडू	13।05	80।17	—8।52	+12।12	शिलांग	(मेघा.)	25।34	91।45	+37।36	+58।40
व्यावर	राजस्थान	26।07	73।54	—34।24	—13।20	मणीपुर	मणीपुर	24।20	93।58	—45।52	—66।56	शिवपुरी	(म. प्र.)	25।30	78।04	—13।44	+3।20
वाराणसी	उ. प्र.	25।20	83।00	+2।00	+23।04	मण्डी	हि. प्र.	31।43	76।58	—22।08	—1।04	राजापुर	(म. प्र.)	23।24	76।14	—25।04	—4।00
बासवाड़ा	राजस्थान	23।33	78।26	—16।16	+4।48	मल्लपुरम	केरल	11।04	76।04	—25।44	—4।40	शेरकिला	(काश्मी.)	36।07	73।53	—34।28	—13।24
बाराबंकी	उ. प्र.	26।56	81।10	—5।20	+15।44	मालेगांव	महाराष्ट्र	20।31	74।30	—32।00	—10।56	श्रीनगर	(काश्म.)	34।06	74।51	—30।36	—9।32
बालू घाट	प. दिजाज	25।14	88।47	+25।08	+46।12	मुरादाबाद	उ. प्र.	28।50	78।50	—14।40	+6।24	शिमला	(हिमा.)	31।06	77।10	—21।20	—0।16
बाँदा	उ. प्र.	25।28	80।21	—8।36	+12।28	मुगेर	बिहार	25।23	86।30	+16।00	+37।04	संतालपु	(गु.)	23।47	70।28	—48।08	—27।04
बांदीकुई	राजस्थान	27।26	76।24	—24।24	—3।20	मुजफरपुर	बिहार	26।07	85।27	+11।48	+32।52	सातारा	(महा.)	17।47	73।54	—34।24	—13।20
बूंदी	राजस्थान	25।27	75।40	—27।20	—6।16	फुजफ्फराबाद	कश्मीर	34।33	73।27	—36।12	—15।08	सागर	(म. प्र.)	23।50	78।45	—15।00	+6।04
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	27।56	96।10	+54।40	+75।44	मेघालय	शिलंग	25।57	82।00	+38।00	+59।04	सरदारशहर	(राज.)	28।27	74।30	—32।00	—10।56
बंगलौर	कर्नाटक	12।58	77।35	—19।40	+1।24	मैसूर	कर्नाटक	12।29	76।20	—26।20	—2।16	सवाईमाधोपुर	(राज.)	25।59	76।24	—24।24	—3।20
बैतूल	म. प्र.	21।51	77।56	—18।16	+2।48	मेरठ	उ. प्र.	29।01	77।45	—19।00	+2।04	सहारनपुर	(उ. प्र.)	29।59	77।23	—20।28	+0।36
बेलगांव	कर्नाटक	15।55	74।31	—31।56	—10।52	मिर्जापुर	उ. प्र.	25।10	82।37	+0।28	+21।32	सोमनाथ	(गुज.)	21।01	70।26	—48।16	—27।22
बुलन्दशहर	उ. प्र.	28।24	77।52	—18।03	+2।32	मेडतासिटी	राजस्थान	26।39	74।03	—33।48	—12।44	सोलापुर	(महा.)	17।40	75।48	—30।48	—5।44
बिलासपुर	हिमाचल	31।19	76।50	—22।40	—2।36	यानामा	आं. प्रदेश	16।46	82।13	—1।08	+19।56	सोलन	(हिमा.)	30।55	77।09	—21।24	—0।20
बिलासपुर	म. प्र.	22।05	82।10	—1।20	+19।44	यासिन	केरल	36।21	73।19	—36।48	—12।44	सूरत	(गुज.)	21।12	72।50	—38।40	—17।36
बिजनौर	उ. प्र.	29।23	78।11	—17।16	+3।48	यवतमाल	महाराष्ट्र	20।24	78।08	—17।28	+3।36	सिकन्दराबाद	आ. प्र.	17।27	78।33	—15।48	+5।16
बिहार शरीफ	बिहार	25।11	85।32	+12।08	+33।12	यादगीर	कर्नाटक	16।47	77।08	—17।28	+ 3।36	सिरोही	(राज.)	24।56	72।50	—38।40	—17।36
बीकानेर	राजस्थान	28।01	73।19	—26।44	—15।40	रतलाम	म. प्र.	23।19	75।03	—29।48	—8।44	सीकर	(राज.)	27।51	75।14	—29।04	—8।00
बीजापुर	कर्नाटक	16।50	75।42	—27।12	—6।08	रत्नागिरी	महाराष्ट्र	16।59	73।19	—36।44	—15।40	सीतापुर	(उ. प्र.)	27।36	80।40	—7।20	+13।44
बादर	कर्नाटक	18।10	77।47	—18।52	+2।12	राजकोट	गुजरात	22।18	70।50	—46।40	—25।26	हरिद्वार	उत्तराखंड	29।58	78।13	—17।08	+3।56
बीरमगढ़	गुजरात	23।00	72।02	—41।52	—20।48	राजचूर	(कर्ना.)	16।12	77।21	—20।36	+0।28	हरदोई	(उ. प्र.)	27।23	80।10	—9।20	+11।44
बोगरा	बंगलादेश	24।51	89।24	+27।26	+48।40	राजमपेट	(आ. प्र.)	14।12	79।34	—11।44	+9।20	हथुवा	बिहार	26।12	84।05	+6।20	+27।44
भरतपुर	राजस्थान	27।15	77।30	—20।00	+1।04	रामपुर	(यू.पी.)	28।47	79।02	—13।52	+7।12	होशंगाबाद	(म. प्र.)	22।46	77।45	—19।0	+2।04
भंडारा	महाराष्ट्र	21।10	79।40	—11।20	+9।44	रामेश्वर	(तमिल.)	9।17	79।34	—11।34	+9।20	हजारीबाग	झारखंड	24।00	85।23	+11।32	—32।27
भरुच	गुजरात	21।41	73।00	—38।00	—16।56	रायबरेली	(उ. प्र.)	26।14	81।13	—5।08	+15।56	हाजीपुर	बिहार	25।35	83।11	+2।44	—23।48
भटिन्डा	पंजाब	30।11	74।57	—30।12	—9।08	राजमंड्रि	(आ. प्र.)	17।05	81।48	—2।48	+18।16	होशियारपुर	(पंजा.)	31।32	75।55	—26।20	—5।16
भदोही	उ. प्र.	25।24	82।34	+0।16	+21।20	रायपुर	छत्तीसगढ़	21।15	81।38	—3।28	+17।36	हौशंगाबाद	(म. प्र.)	22।46	77।43	—19।08	+1।56
भोपाल	म. प्र.	23।16	77।23	—20।28	+0।36	राजगढ़	(म. प्र.)	24।00	76।44	—23।04	—2।00	हैदराबाद	(आन्ध्र)	17।27	78।30	—16।00	+5।04
भीलवाड़ा	राजस्थान	24।21	74।40	—31।20	—10।16	राजगढ़	(राज.)	27।40	76।24	—24।24	—3।20	हिसार	हरियाणा	29।14	75।44	—27।04	—6।00
भिवानी	हरियाणा	28।48	76।08	—25।28	—4।24	राजनन्द गांव	म.प्र.	21।15	81।05	—5।40	+15।15	हैद्राबाद	पाकिस्तान	25।23	68।22	—56।32	—35।28
भावनगर	गुजरात	21।44	42।10	—42।20	—20।16	रोहतक	हरियाणा	28।54	76।38	—23।28	—2।24	हिंगाटा	(उडी.)	20।22	85।12	+10।48	+31।52

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।८	—१।३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	"०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।० द.	१४६।२७पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	"०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।१०।४	"०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१९।४	"०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१३।४	"०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।२८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	"०।३०
फिर्जीदीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	"१।८
पेइचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	"०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	"०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	"०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।२६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	"०।१७
बेंगकांक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	"०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	"०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	—५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	"०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	"०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+११।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	"०।८
काडो	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+०।२१।१२	"०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	— २१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।८	+०।५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	"०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	"०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	—२।८।५२	"०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	"०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।८।५६	"०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	"०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	"०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।०	"०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	"०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	"०।२८
जेरूसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।८।८	"०।२८
काहिरा	मिस्र	३०।१उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	"०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	—२।५७।०	"०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+४।०	" २।०	" ३।३०	—३।१२।५६	"०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।२३।४८	"०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	—२६।४०	" २।०	" ३।३०	—३।३५।३६	"०।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+ १।०	— ४।३०	—३।४६।२८	+०।३८
बुढ़ापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+१६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।३६	"०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	—६।२४	" १।०	" ४।३०	"४।१५।२०	"०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	—७।०	" १।०	" ४।३०	"४।१५।५६	"०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	—१०।४	" १।०	" ४।३०	"४।१९।०	"०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	—३१।३६	+ १।०	" ४।३०	"४।४०।३२	"०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	—३५।२४	" १।०	" ४।३०	"४।४४।२०	"०।४९
ब्रू सेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+ १।०	— ४।३०	"४।५१।३२	"०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	—५०।४०	+ १।०	" ४।३०	"४।५९।३६	"०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	—०।०	+ ०।०	" ५।३०	"५।८।५६	"०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	—०।२०	— ०।०	" ५।३०	"५।९।१६	"०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	—७५।०	+ १।०	" ४।३०	"५।२३।५६	"०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२प.	—८१।२८	+ १।०	" ४।३०	"५।३०।२४	"०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	—३६।४०	— ०।०	" ५।३०	"५।४५।३६	"१।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।०	" ५।०	" १०।३०	"९।२७।५६	"१।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+४।०	" ५।०	" १०।३०	"१०।४।५६	"१।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	—२।४४	" ५।०	" १०।३०	"१०।११।४०	"१।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	—८।०	" ५।०	" १०।०	"१०।२६।५६	"१।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	—३७।८	" ६।०	" ११।३०	"११।४६।४	"१।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी बच्चो का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को देशी (धूप घड़ी) टाईम में [illegible]

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला.३
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४
३०		४६		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४		१५		१६		१७		१८		१९		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३	२४
सितं. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		११	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	१२
२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०	२५
दिसं. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१	२६

उत्तर अक्षांश	१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सितं. ४		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५६		३३	१८
२७		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिसं. २		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४			
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	३५	५	३२	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४
७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८
१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३
१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७
२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१
३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६
फर. ६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०
१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३
१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७
२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०
मार्च २		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३
८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६
१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४
अप्रै. २		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६
८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९
१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१
२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४
२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६
मई १		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९
७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२
१३		२५		२८		२३		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४
१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७
२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०
३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३
जून ६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६
१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८
१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०
२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९		१४		५१

उत्तर	अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७				अक्षांश २८				अक्षांश २९			
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	१८	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४
७		४७		२६		४९		२४		५१		२२		५३		२०		५५		१८
१३		४७		३१		४९		२९		५१		२७		५३		२५		५५		२३
१९		४७		३५		४८		३३		५०		३२		५२		३०		५४		२८
२५		४५		४०		४७		३८		४९		३६		५०		३५		५२		३३
३१		४३		४४		४५		४३		४६		४१		४८		३९		५०		३८
फर. ६		४०		४८		४२		४७		४३		४६		४४		४४		४६		४३
१२		३७		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४२		४८
१८		३२		५६		३३		५५		३४		५४		३५		५३		३६		५२
२४		२८	६	०		२८		५९		२९		५८		३०		५७		३१		५६
मार्च २		२२		३		२३	६	२		२३	६	२		२४	६	१		२५	६	०
८		१७		६		१७		५		१७		५		१८		५		१८		४
१४		११		८		११		८		११		८		११		८		११		८
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१५	५	५७		१५
अप्रै. २		५१		१७		५१		१७		५०		१८		५०		१८		४९		१९
८		४५		१९		४४		२०		४४		२१		४३		२१		४२		२२
१४		३९		२२		३८		२३		३७		२४		३७		२५		३६		२५
२०		३४		२५		३३		२६		३१		२७		३०		२८		२९		२९
२६		२८		२८		२७		२९		२६		३०		२५		३१		२३		३३
मई १		२५		३०		२३		३१		२२		३३		२०		३४		१९		३६
७		२०		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		३९
१३		१७		३६		१५		३८		१३		४०		१२		४१		१०		४३
१९		१४		३९		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७
२५		१२		४२		१०		४४		८		४६		६		४८		४		५०
३१		१०		४५		८		४७		६		४९		४		५१		२		५४
जून ६		१०		४८		७		५०		५		५२		३		५४		१		५७
१२		१०		५०		७		५२		५		५४		३		५७		१		५९
१८		१०		५२		८		५४		६		५६		३		५९		१	७	१
२४		१२		५३		९		५५		७		५८		५	७	०		२		२

उत्तर	अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		अक्षांश
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	जुला. ३
७		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	९
१३		५७		२१		५९		१९		१		११		४		१४		६		१२	१५
१९		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२
२५		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८
३१		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	अग.४
फर. ६		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०
१२		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६
१८		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२
२४		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९
मार्च २		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	सितं. ४
८		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०
१४		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२
२६	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८
अप्रै. २		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	अक्टू.६
८		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	११
१४		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७
२०		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३
२६		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९
मई १		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	नवं. ३
७		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९
१३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	१५
१९		४		४९		२		५१		०		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०
२५		२		५२	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६
३१		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	दिसं. २
जून ६	४	५९		५९		५६	७	१		५४		४		५१		६		४९		९	७
१२		५८	७	१		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३
१८		५९		३		५६		६		५४		८		५१		११		४८		१४	१९
२४	५	०		५		५७		७		५५		१०		५२		१२		५०		१५	२४

उत्तर अक्षांश | अक्षांश २० | अक्षांश २१ | अक्षांश २२ | अक्षांश २३ | अक्षांश २४ | अक्षांश २५ | अक्षांश २६ | अक्षांश २७ | अक्षांश २८ | अक्षांश २९ | अक्षांश ३० | अक्षांश ३१ | अक्षांश ३२ | अक्षांश ३३ | अक्षांश ३४ | दक्षिण अक्षांश

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जुला.६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३१	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू.३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै.५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस.२	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१५	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के न ीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) सूर्योदय—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

१२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)	६	००	००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११ —६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के [illegible] दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) इष्टकाल—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) सूर्य स्पष्ट—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) लग्न सारिणी—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३।१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला	घं.	मि.	सै.
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३।२७ + १६।०८= २९।३५

उपरोक्त २९।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चोथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११।३७ से १३।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९।३५ तक (२९।३५ — २९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ [illegible] कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक [illegible]त)

(अजना, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि न[illegible])

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मिर्जापुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, आजमगढ़, झांसी, [illegible] आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८		११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जींद, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३[illegible]

[illegible] अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अ[illegible])

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

[illegible] अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	(१) मेष			(२) वृषभ			(३) मिथुन			(४) कर्क			(५) सिंह			(६) कन्या		
	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य
	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	जलचर	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर	वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३				रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५				आर्द्रा-६				पुनर्वसु-७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	इ	ऊ	अे	ओ	वा	वी	वु	वे	वो	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही
वर्ग	सिंह	:	:	मृग	:	:	:	:	गरुड़	:	:	:	:	मृग	:	:	:	:	मार्जार	:	:	:	:	सिंह	मार्जार	:	मेष	:
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	राक्षस	पूर्व	अंत्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव	पूर्व	मध्य	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मार्जार	देव	मध्य	आद्य
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु			अयन
	उत्तर			उत्तर			वसंत			उत्तर			उत्तर			ग्रीष्म			उत्तर			उत्तर			ग्रीष्म			दक्षिण
योग	विष्कुंभ				प्रीति			आयुष्मान				सौभाग्य				शोभन				अतिगंड				सुकर्मा				धृति

नक्षत्र	पुष्य-८				आश्लेषा-९				मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२				हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	हू	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	:	:	:	श्वान	:	:	:	:	उंदर	:	:	:	उंदर	श्वान	:	:	:	:	उंदर	:	:	मेष	श्वान	:	उंदर	:
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु		
			उत्तर			वर्षा			दक्षिण			उत्तर			वर्षा			दक्षिण			उत्तर			शरद		
योग				शूल			गंड				वृद्धि				ध्रुव				व्याघात				हर्षण			

चन्द्र राशि	(७) तुला			(८) वृश्चिक			(९) धनु			(१०) मकर			(११) कुंभ			(१२) मीन		
	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य
	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	कीट	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत	वैश्य	भूमि	चत/जल	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६				अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८				मूल-१९				पू.षा.-२०			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा
वर्ग	मृग	:	:	:	:	सर्प	:	:	:	:	:	:	:	:	:	मृग	:	:	:	:	उंदर	:	:	सर्प	उंदर	श्वान
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मध्य	मध्य	महिष	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अंत्य	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु	
	दक्षिण			दक्षिण			शरद			दक्षिण			दक्षिण			हेमंत			दक्षिण			दक्षिण			हेमंत	
योग	[illegible]																									

नक्षत्र	उ.षा.-२१				श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३				शत.-२४				पू.भा.-२५				उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	झा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	उंदर	:	सिंह	:	मार्जार	:	:	:	:	:	:	:	:	मेष	:	:	:	:	सर्प	:	:	मेष	सिंह	सर्प	:	:	सिंह	:
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	नकुल	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य	सिंह	राक्षस	अंत्य	मध्य	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य	आद्य	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य		अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु			अयन			गोल			ऋतु		
		उत्तर			दक्षिण			शिशिर			उत्तर			दक्षिण			शिशिर			उत्तर			दक्षिण			[illegible]		
योग	[illegible]																											

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

षड्वर्ग फलादेश

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।१२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अत: सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

षट् वर्ग सारिणी चक्र

रा.	चक्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मे	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कं.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	[illegible]
६ तु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२

अथ जन्म समय आदि विचार

चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भोंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जानना चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान—सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भूजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५ ... नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, वदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, सुत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरष्टि योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे—चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष—चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा चक्रम्

कुहू जन्म फल—अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्य:
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रम:	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानि:	मातृ हानि:	पितृ हानि:	अल्पायु:

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभाग:
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानि:	धन हानि:	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलाबल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दा	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में घट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ ह

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३,४ ९,१०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रयम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिजिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेनआवः सुवेध्न्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविधवः॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षो साख्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐअदितिद्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नमः॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेपु। यदीदयच्छ्वत्र सत्रृतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नमः॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः॥ ॐसर्प्पेभ्यो नमः॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरम्ये नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्न्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृवैनः स्याम॥ ॐभगाय नमः॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐदेवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्लकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्यायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वात्जूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नमः॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नम:॥	१० सहस्त्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखा: (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्मिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्र:)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशथ्ठसत्॥ ॐ मित्रायनम:॥	१० सहस्त्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ध्ठ हवे हवे सुहवथ्ठशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रथ्ठस्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्र:॥ ॐ इन्द्राय नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षस:)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥	५ सहस्त्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यथ्ठसुव॥ ॐ अदभ्यो नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवा: शृणुतेमथ्ठहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णु:)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नेप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसव:)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुण:)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नम:॥	१० सहस्त्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, धृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ध्ठ सी निननवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	बात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नम:॥	५ सहस्त्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि [illegible]	अश्वत्थ मूलम	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्र [illegible] छायापात्र

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हडफूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी बिहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोथ, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली(गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोश्रृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), धृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवेद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कडुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिदृव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ष्ठ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धुम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक [illegible] सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन-मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर	चर	चर
चर	स्थिर	द्विस्वभाव
स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तोनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण—**जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमर्क्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रज्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

(८) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्‌भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्राय: शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। ... इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रसन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

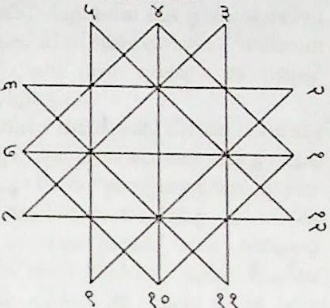
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—



मुद्दा दशा

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर

त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। यह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कलत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	....	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	....	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	[illegible]	३६	४२	[illegible]

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	......
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक	सम	तिर्यक	अधो	अधो	अधो

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्पवूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २९, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथाा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे-लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ [illegible] ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जूलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे [illegible] ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। [illegible]

१७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण ... अगस्त ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४,२६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ... प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के ... होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के ... ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता से

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२\times९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वक्ष	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४
	०	६	९	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३८	४१	४५	४८	५	५६	५९	३	७	१०
गति	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वक्ष	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३७	४०	४४	४८	५१	५५	५९	३	६	११	१४	१७	२१	२५
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वक्ष	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	२९	३३	३६	४०	४४	४८	१२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४०
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वक्ष	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८
	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	२	६
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वक्ष	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	११	१५	१९	२३	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५४	५८	०	७	११	१६	२०	२४	२९	३३
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वक्ष	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१
	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	५९	४
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वक्ष	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२
	८	१३	१७	२२	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	३९
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वक्ष	६२	६२	६२	६२	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६४	६४
	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१	१५	२०
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वक्ष	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६६
	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	३	८	१३	१८	२४	२९	३४	४०	४५	५२	५६	१	७
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वक्ष	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६८	+
	१२	१८	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५९	५	११	१८	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	+
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	+
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	+

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि- (१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण- यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३°।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	२४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३२

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३२	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अत: प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत: किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अत: केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है; तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अत: केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दु:ख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दु:ख मिलता है।

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफ़ेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति के लिए** भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानांतर	भयं	श्री:	मानभंग	दैत्य	विजय:	मार्ग:गमन	पीड़ा:	सुकृ नाश	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोग:	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सोख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौम:	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोक:	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ:	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख:	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भी:	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोष:	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु:	हानि:	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:खं	वैरं	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र:	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यग्र:
भौम:	प्रणा:	धननाश	जय:	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	वाह.लाभ	पुत्र: प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोक:
शुक्र:	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भी:	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनि:	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्रपीड़ा	जय:	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्म हानि	विजय:	सुलाभं	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभ:	शोक:
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभ:	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म: १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीड़ित:	अपुत्र:	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतित:
बुध:	विद्वान्	धनी	दुर्जन:	सुखी	मंत्री	दु:शील	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्म हानि	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दु:खार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौम:	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दु:खार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१ ॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३½	½	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति, कला, विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	×	×
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	३-६-१०-११ / १२-९-१०-५	३-६-१०-११ / १२-९-१०-५

टिप्पणी— चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

बुध

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत

ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

शुक्र

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत

पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

चंद्र

१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

गुरु

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन

उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००

रवि

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण

मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

मंगल

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कण्हेर
९. वृषभ

द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

केतु

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र

वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

शनि

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र

प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००

राहु

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अभ्रक

नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कष्णवर्ण जप १८०००

ग्रहाः	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थ प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवै नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बु	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह
प्रहर	१	४	३	१	१	१
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक

राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिंवेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकंसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

शुभ है। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन	श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा	अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले.	रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग.	रेव.,अनु., अश्वि.,पुन. पुष्य	रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव.	श्रवण रोहिणी स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

विविध मुहूर्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तान्नोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है ''शिर की मांग'' लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि— **''प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा''** तथा **''पुंसवनवत्''** कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने के मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। *मन्त्र*—**ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसृति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलत: दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में ''प्राणो वै अन्नम'' अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु.. हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन.

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मू., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मृ., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

४. वेध—पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र—विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल—विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह—विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्लक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य—जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि—जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार—लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भठिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)—रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना—आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष—दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु—जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु—जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु—जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार—जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।७वें हो।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 155
नेष्ट रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

नेष्ट रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र— जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र— जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न— हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम् में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त— विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २,४,६,८,१०वें आदि दिनों में या ५,७,९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १,३,५,७,९,११वें मास में, १,३,५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है।५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त— विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ— कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४,८,१२वें कोई ग्रह न हो ती नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त— व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण,. देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १,४,९,१४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्र्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण—** वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य—** राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा—** वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक-पृथक लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि—** राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री—** राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण—** राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट—** वर की राशि से कन्या की राशि २,१२,६,८,५,९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी—** अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम्, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अभिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों को नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधिरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

↓ कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १.३.४.०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १.४	१९॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले. ४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा. ४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा. १	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा. ३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह. ४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तथा नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। जिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखें हैं।

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वे द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२७॥ +२	२१॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	११॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	११॥ १	११ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहां (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

ताराबल–बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिष	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

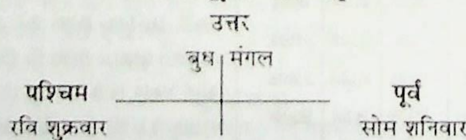
यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावे बांये राहु योगिनी पूठ।
सन्मुख लेवे चन्द्रमा लावे लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

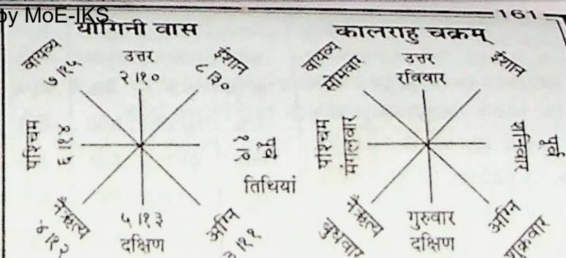


दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास—शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास   कालराहु चक्रम्



दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार—यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इससे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	दूध	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पू.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रर्यपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

विडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥ दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान। नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है। टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कपाटि मुहूर्ता:

स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ घट्याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	नैष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पचिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

वाणिज्य कर्म—अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त—अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना—आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना—४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त—अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम्—अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध वृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभंलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल. श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र, वारेषु २. ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्दा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गोऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे हणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद्द शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्याष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालर्विभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्पणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ले च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभंत्रि.। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना—स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त—चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त—तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना—उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त—विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त—अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन, हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु. रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. मं. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु. भु. चं. गु.	अश्विन, रहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र. गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु. प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू. चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मुल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं. बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू. मं. गु. शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू. मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषधि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु.गु.शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआ व ट्यूबेल	शुभ	बु. गु. शु. चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु. गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु.गु.श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. बु. गु. शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. मं. गु. शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. चं. बु.गु.शु.	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र. बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अत: मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम:— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी बार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

करागे वसते लक्ष्मी: कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गौविन्द: प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गौविन्द का निवास है अत: प्रात: काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

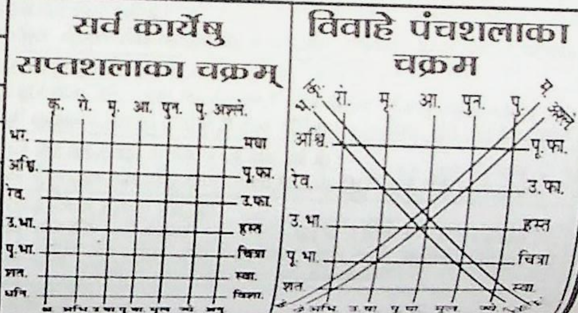
मंगल की होरा— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।



गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रात: यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२— जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार



प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दु:ख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी— यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग— यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग— यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी— मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग— यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डॉक्टर होने का योग— यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत ... विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठिका उंगली की ओर झुकी हो ... **शराबी होने का योग**— चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिलः-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें श्रृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं —

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्र्य कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्राय: व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दु:ख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दु:ख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृषिट न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकदमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा—प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोंनो तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हों तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वोच्ची, मित्रोच्ची, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

तेजी मंदी जानने का सुगम प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा
अश्विनी	१७
भरणी	५
कृत्तिका	३२
रोहिणी	१४
मृगशिर	४
आर्द्रा	१३
पुनर्वसु	२८
पुष्य	३६
अश्लेषा	३६
मघा	१५
पूर्वाफाल्गुनी	३
उत्तराफाल्गुनी	३१
हस्त	१८
चित्रा	२५
स्वाति	१४
विशाखा	२४
अनुराधा	२९
ज्येष्ठा	३७
मूल	१८
पूर्वाषाढ़	७३
उत्तराषाढ़	३०
श्रवण	२५
धनिष्ठा	२३
शतभिषा	२४
पूर्वाभाद्रपद	९
उत्तराभाद्रपद	४१
रेवती	२८

योग	ध्रुवा
विष्कुम्भ	१३
प्रीति	१२
आयुष्मान	४७
सौभाग्य	५९
शोभन	३६
अतिगंड	४७
सुकर्मा	१८
धृति	४४
शूल	१३
गंड	२५
वृद्धि	१७
ध्रुव	२२
व्याघात	२५
हर्षण	२५
वज्र	१४
सिद्धि	२२
व्यतीपात	१३
वरीयान	३९
परिधि	१५
शिव	१३
सिद्धि	१९
साध्य	१२
शुभ	२५
शुक्ल	२२
ब्रह्महू	१३
ऐन्द्र	२७
वैधृति	२६

वस्तु	ध्रुवा
धान्य	७७
कनक	१००
ज्वार	१३३
मूंग	४१
चणा	३५
झोना	७५
तोरी	७७
तेल	३९
घृत	९९
खाण्ड	९९
गुड़	४७
शक्कर	१०१
कपास	१२९
रुई	४४
कांस्य	३७
वस्त्र	१०९
स्वर्ण	९६
हल्दी	७३
चंदन	१८७
चांदी	८१
मिर्च	६८
पित्तल	९९
जौ	५०७
कस्तू.	१३४

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००
राशि	**ध्रुवा**
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४
तिथि	**ध्रुवा**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कम्बल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बैल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जमींकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले. रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यतः सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छः मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
वर्षा गिरती देखना	[illegible]

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगडे, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सापों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
वर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेंडिया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल त्यागना	व्यय बढ़े
[illegible]	[illegible]

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसनता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
कैंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दुःख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दुःख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

वर्षा ज्ञान

वर्षा ज्ञान सारणी

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान मनन करना चाहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण आरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:—१. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए। पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुंई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्पास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।

१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. वर्ष आप के लिए चुनौतियों भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।

७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।

३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बामार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।

११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ होगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।

६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विश्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु न[illegible]
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. [illegible]
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. [illegible]
९. कर्ज [illegible] से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआ बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआ बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कुआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

मंत्रों द्वारा कामना सिद्धि प्रयोग

पुत्र प्राप्ति के लिये:- "ऊँ ह्रां ह्रीं हूं पुत्र करू स्वाहा" इस द्वादशक्षर मंत्र का आम के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र मन से जो एक वर्ष तक निरंतर जप करता है, उसको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा भगवान शंकर जी ने कहा है।

पत्नी की प्राप्ति के लिए:- पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलाद्भवाम्॥ (दुर्गा सप्तसती) इस मंत्र का सवा लाख जप स्वयं करने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति (विवाह) हो जाता है और 'पत्नी मनोरमां देहि.' इस मंत्र के सम्पुट से दुर्गा के 100 पाठ अर्थात् शतचण्डी कराने से शीघ्र विवाह हो जाता है। स देवि नित्यं परितप्यमानस्त्वामेव सीतेत्यभिभाषमाणः। दृढव्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कृतप्रयत्नः॥ (बाल्मीकीय रामायण, सुदंरकांड 36/46) इस यंत्र का सवा लाख जप करने और इसी मंत्र के सम्पुटित बाल्मीकीय रामायण के सुदंर कांड का कम से कम 1 पाठ स्वयं अथवा ब्राह्मण से कराने पर शीघ्र विवाह हो जाता है।

वर प्राप्ति के लिये:- हे, गौरि! शकड़रार्धाग्ङि! तथा त्वं शड़करप्रियाता। तथा मां कुरु कल्याणि! कान्त कान्तां सुदुर्लभाम्॥ भगवती पार्वतीजी का पूजन करके उपर्युक्त मंत्र का प्रतिदिन 5 माला जप करने से शीघ्र पति (वर की) की प्राप्ति हो जाती है। पार्वती जी का पूजन कर जो कन्या श्री रामचरित मानस के बालकाण्ड के 234 दोहे के बाद 'जय जय गिरिराज किशोरी' से 'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे' यहां तक 236 दोहों का प्रतिदिन श्रद्धा विश्वास पूर्वक पाठ करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है। **कात्यायनि महामाये महायोगिनीधीश्वरी। नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥** (श्री मद्भागवत 10/ 22/ 4) कात्यायनि देवी अथवा पार्वती देवी की फोटो सामने रखकर जो कन्या उसका पूजन कर उपर्युक्त मंत्र की 1 माला जप प्रतिदिन करती है, उसका विवाह शीघ्र हो जाता है। **ऊँ देवेन्द्रामणि नमस्तुभ्यं देवन्द्रप्रियभामिनी। विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे॥** उपर्युक्त मंत्र का 108 बार कन्या को जप करना चाहिए। जप करने की विधि यह है कि तुलसी के पौधे का पूजन करके उसके सामने तुलसी की माला पर 108 बार जप पूर्ण होने पर तुलसी के पौधे की 12 बार परिक्रमा करनी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा में दुग्ध और जल से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हुए 'ऊँ देवेंद्राणि नमस्तुभ्यम्' मंत्र को भी पढ़ना चाहिए। कन्या को चाहिए कि वह अपने दाहिनी हाथ में दूध और बांए हाथ में जल से अर्घ्य दें। दूध और जल से अर्घ्य एक साथ ही 12 बार देना चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त विधि से जप और सूर्य को अर्घ्य प्रदान करती है, उसको बहुत शीघ्र वर की प्राप्ति हो जाती है। **ऊँ शं शंकराय सकल जन्मर्जितपापविध्वंसनाय। पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरू कुरू स्वाहा॥** उपर्युक्त मंत्र का जप तीन माला तुलसी की माला पर करने से कन्या का विवाह शीघ्र हो जाता है। जप की विधि यह है कि भगवान् शंकर और अन्न पूर्णा की फोटो सामने रखकर उसका प्रतिदिन पूजन करके धूप बत्ती जलाकर जप करे। जप जहां किया जाय, वहां मिट्टी के गमले में अथवा टीन में केले के स्तंभ को रखकर उसको मौजी (नाला) से 9 अथवा 11 बार लपेट कर उस केले के वृक्ष की पूजा प्रतिदिन करनी चाहिए और जप के बाद केले के स्तंभ की 4 बार अथवा 9 बार परिक्रमा करनी चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त अनुष्ठान नित्य करती है उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

ज्वर से मुक्त होने के लिए:- ऊँ भस्मायुधाय विद्महे एकदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो ज्वरः प्रचोदयात॥ इस मंत्र की उत्पत्ति संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान् से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है। दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्टैव कालानलसन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥ (श्रीमद्भागवद् गीता 11/25) इस मंत्र का उत्पत्ति संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए:- ऊँ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा। इस मंत्र से बाल्मीकीय रामायण के सुदंरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिए। अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर 'ऊँ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम। भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते।' इस मंत्र का पाठ करना चाहिए। 'ऊँ श्रीं श्रियै नमः मह्यं श्रियं देहि देहि दापय दापय स्वाहा।' इससे बाल्मीकि रामायण के सुदंरकांड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिए। **विधिः-** इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीपावली की रात्रि को दीपक जलाने के बाद करना चाहिए। 8 दिनों तक प्रतिदिन सात सर्ग का और 9 वें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिन में पाठ पूरा करना चाहिए। अथवा प्रतिदिन सात, पांच, तीन या एक सर्ग का पाठ करके अड़सठ दिनों में सुन्दरकाण्ड का 7, 3 अथवा 1 पाठ पूर्ण करना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति और वृद्धि होती है।

भूत प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए:- स्थाने हृषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनु च। रक्षांसि भतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा॥ (गीता 11/36) इस मंत्र का सवा लाख जप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मंत्र काम करता है। भूत-प्रेत आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गंगाजल लेकर अथवा कूप का जल लेकर 7 बार उपर्युक्त मंत्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को फिरा (घुमा) दें। फिर उस जल में से थोड़ा सा रोगी को पिला देना चाहिए। बा हुआ जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी की भूत-प्रेत बाधा शांत न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार प्रातः और सायंकाल इस प्रयोग को करना चाहिए।

मस्तक पीड़ा की निवृत्ति के लिए :- ऊँ नमो आदेश गुरु को बाल में कपाल, कपाल में भेजी, भेजी में कीड़ा करे पीड़ा, सोने का शाला का रूप का हथोड़ा, ईश्चर गढ़े गौरिया तोड़े इनका श्राप श्री महादेव तोड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वर वाचा। अपने बाएं हाथ में 7 बार थोडी-थोड़ी पवित्र राख (भस्म) को लेकर दाहिने हाथ से ढककर उपर्युक्त मंत्र को 7 बार पढ़कर दर्द वाले मस्तक पर लगाने से दर्द दूर हो जाता है।

मित्रता के लिए:- ऊँ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोभ्यहम। अभिवादी भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः॥1॥ ऐकतत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथधियाम्। निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद में ॥2॥ उपर्युक्त दोनों मंत्रों से अलग-अलग पायस (खीर) में घृत डालकर हवन करने से शत्रुता हटकर मित्रता हो जाती है। यह अनुष्ठान कम से कम 61 दिन का है।

शत्रुता कराने के लिए:- ऊँ महाभैरवाय श्मशान- अमुको- विद्वेषं कुरु फट्। इस मंत्र का 41 दिन तक 108 बार जप करने से प्रेमियों का प्रेम हटकर परस्पर शत्रुता हो जाती है। मंत्र में जिन जगहों पर अमुक-अमुक शब्द लिखा है, उस स्थान पर प्रेमियों का नाम लिखना चाहिए जिसकी शत्रुता करानी हो।

शूल निवृत्ति के लिए:- ऊँ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भवः। परमे वृक्षऽआयुधं कृत्तिंवसानऽआचार पिनाकं बिभ्रदागहि॥ (शुक्ल यजुर्वेद 16/51) इस मंत्र का पाठ अथवा जाप करने से मनुष्य के दर्द दूर हो जाते हैं।

सुख से प्रसव होने के लिए:- ऊँ मुक्तापाशा विपाशश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्तसर्वभयाद गर्भ एहिहि मारीच स्वाहा॥ इस मंत्र द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

स्वाहा॥ इस मंत्र द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

पति को वश में करने के लिए:- ॐ नमो महायक्षिणि पतिं में वश्यं कुरू कुरू स्वाहा। इस मंत्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन 108 बार जप करके सिद्ध कर लें। पश्चात् 31 दिन 108 बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

जलती अग्नि शीतल हो:- ॐ नमो कोरा करावा जल सा भरिया, ले गौरा के सिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥ इस मंत्र को ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें। **विधि:-** कुंए के सन्निकट से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार मंत्र पढ़कर अग्नि की ओर फैंके।

नजर झाड़ने का मंत्र:- गुरुर चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फुंकारे उड़ाय, माटी शलिकेर पांव देख टुकरियाजय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मंत्र को झाड़ने का विधान है।

सर्प विषनाशक मंत्र औषधि:- गरुड़ास्य मंत्र ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरेवक्षी। सोम गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरेवक्षी। सोम आत्माछन्दास्यंकानि यजूंविषनाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञयज्ञियम्पुच्छन्धिष्ठायाऽशम्या सपुर्णोसि गरुश्रमन्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॐ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्गा से झाड़े का विधान है। दधि मधु नवनीता, पीप्पली श्रृंगवेरं, मीरचर्मपि कृटो प्रतिहंन्सा सुकेशी। यदि दसति सरोषो, तक्षको वासुकी वा, यमस दनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणम्॥ गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाएगा।

चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र:- ॐ ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मयै नमः।

स्थायी धनस्थिति मंत्र:- ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

प्रसव समये जल मंत्र:- आकाश टले पवन राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े। **विधि:-** ताजा शुद्ध जल को सात बार मंत्र पढ़कर परोसने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

मृत्युंजय मंत्र:- ॐ हौ ॐ जूं सः भूर्भव स्वः त्र्यम्बकं यजामहे [illegible] स्वरो जूं सः हों ॐ। पुराणोक्तमृत्युंजय मंत्र- मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शवाय महादेवाय ते नमः।

धनधान्य पूर्ण कर अन्नपूर्णा मंत्र:- ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहां क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ। इस मंत्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। दो लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। दो लक्ष का पुरश्चरण क्षेत्र के भीतर यंत्र या ताबीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

सर्वसिद्धि हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मंत्र:- ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, उखरस, पला, पीपल, शैर की लकड़ी से हवन एक लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के लिए अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिए।

बिच्छु झाड़ने का मंत्र:- ॐ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना। आदित्यरथ वेगेन विष्णुबाणबलेन च तार्क्ष्य पक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष॥ **विधि:** राई से उतारना।

आंख झाड़ने का मंत्र:- शर्यातिंच संकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनौ। संध्ययो: स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति॥ मंत्र पढ़कर जल से धुलवायें।

ज्वर झाड़ना:- 1. ॐ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुय स्वाहा। इस मंत्र को सात बार पढ़कर झाड़ें तो ज्वर न रहे। 2. ॐ नमों अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।२

अन्तर तिजारा चौथिया का मंत्र:- ॐ लंकायाम तीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशोदश॥ से पीपल के पत्ते पर लिखकर डोर से बांध देवे।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र:- यः स्मरेततुलसी सीता रामं सौमित्रिणा सह। कार्य कृत्वा रिपूंजित्वा क्षेमेणायाति वै नरः॥ थोड़ा सा दही खाकर यात्रा आरंभ करें और चंदन तिलक से सदा पूर्ण रहें।

बीमारी दूर भगाने के लिए:- गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दें तो बीमारी नहीं होगी। मंत्र:- अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजयः। कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडीव कृष्णसारथिः। एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्र प्रजायते।

झाड़ फूंक शाबर मंत्र -सिरपीड़ा दूर करने के लिए:- लंका में बैठ के माथ हिलावै हनुमंत। सो देखिके राक्षसगण पराय [illegible] सीता देवी अशोकवन में। देखि हनुमान को आनंद मन में॥ गई उर विषाद देवी सिथर दरशाय। 'अमुक' के नहीं कछू पीर नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई॥ सिर के पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर को हाथ से पकड़कर मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ें। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले लें।

आधासीसी दूर करने के लिए:- 1. बन में ब्याई कच्चे वनफल खाय। हाँक मारी हनुमंत ने इस पिंड से आधा सीसी उतर जाय॥ 2. ॐ नमों वन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद-कूद शाखानरी, कच्चे वनफल खाय॥ आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमान जी, आधासीसी जाय॥ किसी एक मंत्र का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़ें।

नेत्र रोग शमन करने के लिए:- ॐ नमों वने बिआई बानरी जहां-हजां हनुमंत आँखि पीड़ा कषवरी गिहिया थनै लाई चरिउ जाइ। भस्मन्तन गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्चरोवाचा॥ आंख पर हाथ फेरते हुए सात बार मंत्र पढ़कर मंत्र फूंके। व्यथा मिट जाएगी॥

कर्णमूल पीड़ा दूर करने के लिये:- वनरा गांठि वावरी तो डांटे हनुमान कंठ। बिलारी बाघी थनैजी कर्णमूल सम जाइ॥ श्री रामचन्द्र की बानी पानी पथ होई जाइ॥ विभूति से सात बार झाड़ने से कर्णरोग नष्ट होता है।

बिच्छू का विष झाड़ने के लिए:- 1. पर्वत ऊपर सुरही गाइ। कारी गाइ की चमरी पूछी तेकरे गोबरे बिछी बिआइ। बिछी तोरे कर अठारह जाति। छ कारी छ पीअरी छ भूमाधारी छ रत्नपवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरू का बिछी हाड-हाड पोर-पोर ते। कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेव की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनील टेहरी शंडार बन छाइ उतरहिं बीडी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की। 2. ॐ हरमर्कटमर्कटाय स्वाहा॥ मंगलवार को एक लाख जप तथा दशांश हवन करने से सिद्धि होती है।

अंड वृद्धि रोग दूर करने के लिए:- ॐ नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत ओई करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर-हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड-अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ बाजं गर्भ हि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर॥ मंत्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोश को हल्के हाथ से मलें तथा अभिमंत्रित जल पिलायें तो अण्डवृद्धि शांत हो जाती है। मिट्टी दे। आंगन और बरामदों में सिर्फ उड़द के दाने ही बिखेरना चाहिए। मात्र इतनी ही क्रिया से ग्रह दोष सदा के लिए दूर हो जाता है।

यंत्र-मंत्र-तंत्र एक साधना एवं सफलता

विश्वासम् फलमदायकम्। श्रद्धारूपेण कर्म साधनम्॥ गुरुत्व गुरु ग्राह्य मंत्रम्। आज्ञानुसारेण साधना सफलम्॥

साधक को आवश्यकतानुसार अपने जीवन में तंत्र साहित्य का प्रयोग मंत्र-यंत्र के रूप में करना हो तो भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। हां उसमें अपने भाव समर्पित होना नितान्त आवश्यक है। तंत्र में शक्ति का योगदान, मंत्र में गुरु का योगदान तथा यंत्र में बुद्धि सरस्वती का योगदान प्राप्त करके अपना कदम रखा जाय या शाबर तंत्र की सामान्य प्रक्रिया को भी यदि अपनाया जाय तो कोई भी यंत्र-मंत्र-तंत्र में विफलता का आना संभव नहीं है। अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जरूरत है साधना के नियमों-उपनियमों एवं सीमांकन की। शिव+शक्ति=साधना का आधार। इसीलिए **सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्** की उक्ति चरितार्थ होती है।

आईये जन हिताय-सुरक्षाय-लाभाय कुछ सरल यंत्रों एवं मंत्रों की जानकारी सर्व कल्याण की भावना से परीक्षित यंत्रों की जानकारी आप भी प्रयोग करके देखें। तथा अपनी मंजिल प्राप्त होने पर हमें जरूर संकेत डाक द्वारा/फोन द्वारा बतायें। जिससे विश्वास, श्रद्धा भावना एवं कर्म का सटीक प्रमाण मिल सके। स्वयं करें, फिर लिखें। अनुभव की पाठशाला में जीवन पर्यन्त पढ़ना पड़ता है। यंत्र इस प्रकार है:-

मनोकामना पूर्ण करने के लिए-विधि- इस यंत्र को हल्दी के रस से कागज पर या भोजपत्र के ऊपर लिखें तथा इस यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिख दें। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार के दिन जला दें। इस तरह सात रविवार तक प्रयोग करने से तथा साथ ही मंत्र का नित्य हल्दी की माला से जप करें तो शीघ्र ही मनोरथ पूर्ण होगा। मंत्र-ॐ ह्रीं ह्रां सः॥ सूर्य का पूजन भी करें। अवश्य ही लाभ होगा। प्रत्येक मनोरथ की पूर्ति अलग-अलग करें।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

गर्भ धारण के लिए यंत्र-विधि- इस ताबीज (यंत्र) को भोजपत्र के ऊपर केसर से रविवार को लिखकर स्त्री के गले में शुभ समय में बांधे तो गर्भ धारण होगा। रजस्वला समय को त्यागना है। तथा गौरी शंकर की पूजा स्त्री २१ दिन तक करें। अवश्य लाभ होगा।

३४२	३४९	२	७
६	३	३४६	३४०
३४८	२४३	८	१
४	५	३४४	३४४

व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को केसर की स्याही से नदी का जल डालकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर शुक्रवार के दिन २१००० यंत्र लिखकर (२४ घंटों में) फिर २१००० आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाने पर यह यंत्र सिद्ध होगा। तब इस सिद्ध यंत्र को भोजपत्र या चांदी में या सोने की पतरी पर लगायें तो दिन-प्रतिदिन लाभ होगा।

५०	४७	२	७
६	३	५२	५२
५६	५१	८	५१
४	५	५२	५५

प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर रविपुष्य / गुरुपुष्य / सर्वार्थ सिद्धि योग में शुभ की होरा में केसर की स्याही से अनार की कलम से लिखें। तथा अपने पास रखें तो लाभ होगा। ॐ गुरु मंत्र जपें।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

बूरी नजर दूर करने का यंत्र-विधि- हल्दी के द्वारा पीले रंग से रंगे सूती कपड़े पर यंत्र लिखकर पोटली सी बनाकर अजवायन डालकर काले धागे से बच्चे के गले में बांधने से बुरी नजर दूर होती है। अथवा इस यंत्र को बुधवार के दिन हल्दी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधने से नजर दोष का निवारण होता है।

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
६३	७	१४०	९
२०	१३४	९	[illegible]

विद्या प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को सरस्वती मंत्र से सिद्ध करके अपनी भुजा पर बांधे तो लाभ होगा। यंत्र केसर से भोजपत्र के ऊपर गुरु पुष्य, रवि हस्त बसंत पंचमी को तैयार करें। अनार की कलम से तथा ५१ दिन तक सरस्वती उपासना करें, लाभ होगा।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

भाग्योन्नतिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन भोजपत्र पर केशर से 625 यंत्र लिखें। जितने दिनों में संख्या दस हजार पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यंत्रों को लिख-लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करते रहें, तो भाग्य की उन्नति होती है। एवं कामनाएं पूर्ण होती है।

९ ५ ६ ८ ४

भाग्योन्नति

परीक्षा में सफलताः- परीक्षा आरंभ होने से 15 दिन पूर्व इस यंत्र को केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। सोलहवें दिन एक यंत्र को यथा विधि पूजकर ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा गले में धारण कर लें और परीक्षा देने जायें तो उसमें सफलता मिलती है।

२	१	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

परीक्षा में सफलता

बंधन मुक्तिः- इस यंत्र को रविवार के दिन कागज या भोजपत्र के ऊपर चंदन से लिखकर एक जंगली कबूतर के गले में बांधकर कबूतर को छोड़ दें। इस यंत्र में जिस स्थान पर कैदी का नाम लिखा है, वहां 'कैदी के नाम' का तथा जहां 'मां का नाम' लिखा है वहां कैदी की मां का नाम लिखना चाहिए। बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

या हाफ़ज	३३३	३३८	३३१
या हाफ़ज	३२२	३३४	३३६
९९	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम मां का नाम	९९	या हाफ़ज	या हाफ़ज

बंधन मुक्ति

कारावास मुक्तिः- इस चक्र को पुए के ऊपर घी से लिखकर बीच में देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जो जेल में पड़ा हो। गंध, पुष्प आदि से यंत्र वाले पुए का पूजन करके, वह पुआ उस कैदी व्यक्ति को खिला दें। इस यंत्र के प्रभाव से वह कैदी व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही कैद से छूट जाता है। यह भी बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

ह्रीं
ह्रीं देवदत्त ह्रीं
ह्रीं

कारावास मुक्ति

गये हुए व्यक्ति का लौटनाः- घर से लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, भाई, बहिन, सेवक अथवा अन्य व्यक्ति रूठकर या किसी भी कारण से चुपचाप बाहर चला गया हो और न आ रहा हो तो उसे वापिस बुलाने के लिए इस यंत्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर चंदन से लिखकर चरखे पर बांध दें और कुंवारी कन्या के हाथ से उल्टा चरख चलवाकर सूत कतवायें तो गया हुआ व्यक्ति वापिस लौट आता है।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गये हुए व्यक्ति को लौटाना

क्रोध शमनः- इस यंत्र को लोहे के कांटे से गोरोचन द्वारा ताड़ पत्र पर सोमवार के दिन लिखें। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए जिसका क्रोध शांत करना हो फिर यंत्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर 7 दिन तक पूजन करें। अंत में ब्राह्मण को भोजन करावें। इसके प्रभाव से शत्रु मित्र अथवा अन्य व्यक्ति का क्रोध दूर हो जाता है।

देवदत्त

क्रोध शमन

विद्या प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखें और उन यंत्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दें। 15 दिन तक इसी प्रकार निरंतर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यंत्र ताबीज में भरकर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

विद्या प्राप्ति

आजीविका प्राप्तिः- इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से

सोमवार के दिन से लिखना आरंभ

स्थानांतरणः- इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन

१२
६ १० ४
१०
९ ३ ८
१

आजीविका प्राप्ति

आजीविका प्राप्तिः- इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें। जब 5 हजार लिखे जा चुके हों तो उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से आजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का यंत्रः-

८	१	६
३	५	७
४	९	२

भागे व्यक्ति को बुलाना

खोए या भागे हुए व्यक्ति के पहने हुए, बिना धुले हुए वस्त्र पर गुरु से इस यंत्र को बनायें और पत्थर की सिर के नीचे दबा कर रख दें। व्यक्ति के वापस आने तक रोज सांयकाल इसके ऊपर दीप जलाकर रखें। ऐसा करने से व्यक्ति आ जाता है। शीघ्र न लौटे तो पत्थर को कोड़े से मारें। इस तरह वह व्यक्ति जीवित होगा तो लौट आवेगा। नहीं तो समाचार तो मिल ही जाएगा।

राजदण्ड से मुक्तिः- इस यंत्र को कपूर कुंकुम से एक बड़े भोजपत्र पर लिखकर बीच में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। फिर यंत्र का गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, गिलोह के ताबीज में भरकर कंठ अथवा भुजा में धारण करें तो इसके प्रभाव से राजदण्ड अथवा बंदन (कैद भय से) दूर हो जाता है। यदि किसी ने किसी को जबरदस्ती रोक रखा हो तो छुटकारा मिल जाता है।

देवदत्त

राजदण्ड से मुक्ति

ठं.	ठं.	ठं.	ठं.
ठं.	ठं.	ठं.	ठं.
ठं.	ठं.	ठं.	ठं.
ठं.	ठं.	ठं.	ठं.

शत्रु विजय

शत्रु विजयः- इस यंत्र को शमशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र पर लिखकर उसे धूप, दीप दें। तत्पश्चात् उस वस्त्र को जमीन में गाड़ दें या किसी नदी में बहा दें तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु देश छोड़कर चला जाता है अथवा क्षमा मांगकर शत्रुता छोड़ देता है।

खोई हुई वस्तु का मिलनाः- इस यंत्र को कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर बकरे की हड्डी से पृथ्वी पर 108 बार लिखें। तत्पश्चात भगवान् शिव का यथाविधि पूजन करें तो इसके प्रभाव से खोई वस्तु मिल जाती है। इस यंत्र को मंगलवार या शनिवार के दिन लिखना चाहिए।

हुं.	हुं.	हुं.	हुं.
इं.	इं.	इं.	इं.
जं.	जं.	जं.	जं.
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

खोई हुई वस्तु का मिलना

पुत्री का विवाहः- इस यंत्र को सोमवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से लिखें। जब तक पांच हजार यंत्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर, धूप दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्दपूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

पुत्री का विवाह

③			②
	७	८	
	९	४	
①			⑥

पारिवारिक सुख

पारिवारिक सुखः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना प्रारंभ करें। यंत्र को भोजपत्र पर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब 5000 की संख्या पूरी हो जाय तब से यंत्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दें। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

यश प्राप्तिः- इस यंत्र को रविवार के दिन प्रातःकाल 5 बजे से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र भोजपत्र पर केशर या गोरोचन से लिखें। जब 2400 यंत्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दें तो इसके प्रभाव से यश और संतान की प्राप्ति होती है।

०	५	६
	१	६
	८	७
२		३

यश प्राप्ति

दं.	दं.	दं.	दं.
बं.	बं.	बं.	बं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

सम्मान प्राप्ति

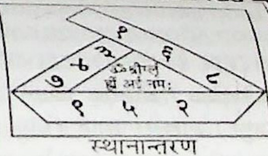
सम्मान प्राप्तिः- यंत्र को केसर अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर सवा लाख की संख्या में लिखें। लिखने का प्रारंभ शुक्ल पक्ष के गुरुवार अथवा पूर्णिमा के दिन करना चाहिए। निश्चित संख्या में लेखन कार्य पूरा हो जाने पर यंत्र लेखक को सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। यंत्र लिखते समय धूप दीप भी जलानी चाहिए।

६	११	३
४	७	९
१०	२	८

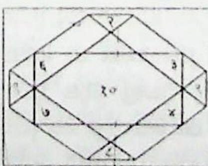
संतान सुख

संतान सुखः- इस यंत्र को रविवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र लिखें। जब 2500 यंत्र पूरे हो जायें, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से संतान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई संतान सुधर जाती है।

स्थानांतरणः- इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना आरंभ करें। सफेद कागज या भोजपत्र पर केशर से यंत्र लिखने चाहिए। जब 2400 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो साधक व्यक्ति का स्थानांतरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।



स्थानान्तरण



आत्म रक्षा

आत्म रक्षाः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर यथाविधि धूप दीप आदि से पूजा कर त्रिलोहर के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा कंठ में धारण करें तो आत्म रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति को कहीं भय नहीं होता।

धन प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 125 यंत्र लिखें, जब 5000 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दें तथा एक यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा में धारण करें, तो धन की प्राप्ति होती है।

		१	
४	७	९	
		३	
	८	१०	२
	५		

धन प्राप्ति

लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.

शत्रु विनाश

शत्रु विनाश :- शत्रु का उच्चाटन करने तथा शत्रु से छुटकारा पाने के लिए इस यंत्र को लोहे की कलम से तांबे के यंत्र (ताम्र पत्र) पर लिखकर गंध पुष्पादि से पूजन करें तथा जिस शत्रु का विनाश करना हो, उसका ध्यान करें तो यंत्र के प्रभाव से शत्रु का उच्चाटन होता है। वह उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है तथा शत्रुता करने का कभी नाम भी नहीं लेता।

सर्वकामना सिद्ध, इक्कीसा यंत्रः- इस इक्कीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से लिखकर भुजा में बांधे। इससे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण होकर सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। ❖

४	१२	५
८	७	६
९	२	१०

इक्कीसा यंत्र

रमल अरबी ज्योतिष से देखें—राहु जिसके आगे सूर्य भी पानी भरता है

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक संसार का हर व्यक्ति नौ ग्रहों से परिचित है। वह इन्हीं नौ ग्रहों से शुभ-अशुभ स्थिति में प्रभावित भी रहता है। एक व्यक्ति के दो भाग हैं। एक सिर व दूसरा हिस्सा का धड़ है। सिर वाले का नाम राहु है। दूसरे वाले धड़ का नाम केतु है। यह दोनों ग्रह एक ही समय उत्पन्न हुए हैं। यह दोनों ग्रह सूर्य व चन्द्रमा ग्रह को प्रबल शत्रु मानते हैं। तभी उन्हें ग्रहण लगाते हैं। परन्तु रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में आकाशीय ज्योतिष पिण्ड न मानकर पृथ्वी के ऊपरी तथा दक्षिणी ध्रुव की छाया के अन्तर पर वक्री होकर चलते हैं। तथा इनको एक राशि में कम से कम 18 वर्ष का समय भ्रमण करने में लगता है। इस ग्रह का अपना कोई स्थान नहीं है और न ही इनकी कोई अपनी राशि है। फिर भी रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के विभिन्न विद्वानों का मत है कि कन्या राशि पर इनका पूर्ण आधिपत्य है।

कन्या राशि की शकल (आकृति) जमात आती है। जिसमें किसी प्रकार का कोई बिन्दु नहीं होता है। यह शकल जागृत अवस्था में नहीं है, साथ ही रात्रिकालीन मृतक शकल है। यह वृष राशि में ऊंच का स्थान रखती है। वृष राशि पर शकल (आकृति) अतवे दाखिल है। यह शुभ दाखिल जीवित शकल है साथ ही धनाढ्य शकल को कायम रखती है। कुछ विद्वान् इसको मिथुन राशि के 15 तक उच्चस्थ मानते हैं। कर्क राशि तथा कुम्भ राशि में यह मूल त्रिकोणत्य होता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के अनुसार रमलाचार्य के सम्मुख होने पर इस बावत् इस प्रश्न का जवाब प्राप्त होता है। जातक के द्वारा पासा जिसे अरबी भाषा में **"कुरा"** कहते हैं। एक शुद्ध पवित्र स्थान पर एक निर्धारित स्थान पर डलवाए जाते हैं। यदि प्रश्नकर्ता विद्वान् रमलाचार्य के सम्मुख न हो तो एक नवीन शोध विधि **"प्रश्न-फार्म"** के द्वारा भी अमुक कार्य को सम्पादित किया जाता है। इस विद्या में जातक के नाम, माता-पिता का नाम, घड़ी, वार, तिथि, जन्म कुण्डली की जरूरत नहीं होती है। प्रस्तार के किस घर में राहु ग्रह विराजमान है। वहां के बलावल और दृष्टि, नजर-ए-मिकारना को देखकर व अन्य बात भी रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र की गणना कर की जाती है। भविष्य काल के मार्गदर्शन मय समाधान इस प्रश्न वास्ते और अन्य प्रश्न वास्ते भी इसी प्रकार से आता है। इससे प्राप्त फलादेश व समाधान काफी स्थिति में सटीक और अचूक होता है।

राहु ग्रह बहुत ही बलावल ग्रह माना गया है। वृष राशि तथा तुला राशि में इसे योग कारक माना गया है। स्वामी नक्षत्र और शतभिषा नक्षत्र में ये शुभ कारक होता है। इसे प्रस्तार के 10 वें घर में जो केन्द्र के अधीनस्थ है, बलावल माना गया है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र और प्राचीन भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों में केवल 7 ग्रह ही माने गये हैं। उसमें राहु व केतु ग्रह का कहीं पर कोई आधिकारिक स्थान नहीं है। ज्योतिषियों ने इनका अध्ययन व अनुसंधान करने के बाद इनके शुभ-अशुभ प्रभाव का विश्लेषण किया है। यह परिणाम शत-प्रतिशत सत्य साबित हुआ है। राहु व केतु ग्रह दोनों की शकलें दिनकालीन अशुभ है। राहु ग्रह का अधिकार पैरों पर माना गया है। इसके द्वारा पाप कमी, मानसिक चिन्ता, शत्रुता, दुर्भाग्यता, दरिद्रता, शोकाकुल इत्यादि दुर्गुणों का भी विचार किया गया है। इसे रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में काल पुरुष के दुःख व घोर परेशानी की संज्ञा दी गयी है। प्रस्तार के 12 वें घर में तथा जिस घर में यह विराजमान होता है। उस घर का यह बलावल दृष्टि-कुदृष्टि तथा अन्य बातों की बारीकी से अध्ययन व खोज का फलादेश की जानकारी शुभ-अशुभ स्थिति में साथ बलावल की स्थिति व अन्य स्थिति में भी निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा रहा है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार में राहु ग्रह द्वारा मस्तक रोगी, कामी व अन्य सम्पत्ति नीच कर्मरत बनाता है। द्वितीय घर में होने पर याचक दिल-दिमाग का स्वच्छ ताजगी के होते हैं। चतुर्थ घर में होने पर प्रत्येक कार्य व बात को सन्तोषी होकर भी दुखी होता है। साथ ही स्वभाव का क्रूर, चालाक भी होता है। प्रथम घर में राहु होने पर पेट का रोगी होता है। छठे घर में होने पर उक्त ग्रह का दर्द कमर का होता है। सप्तम घर में राहु होने पर दाम्पत्य जीवन में अन्तिम चरण तक टकराव तथा हार्दिक स्नेह का न होना भी पाया जाता है। इस बावत् शारीरिक-मानसिक-आर्थिक स्थिति में गिरावट का होना दिखाई देता है। अष्ठम में राहु ग्रह के होने पर वायु प्रकोप द्वारा उत्पन्न रोग होते हैं। ग्यारहवें घर में राहु के होने पर जातक अल्प सन्तति होता है तथा अन्तिम बारह वें घर पर अविवेकी, कामी, चिन्तातुर तथा अत्याधिक खर्चीलापन का होना भी पाया जाता है। इसी प्रकार से अन्य घरों की बावत् भी इसी प्रकार से जानकारी हो सकती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के द्वारा जिस जातक को राहु ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही हो, उससे वह बराबर कष्ट भुगत रहा हो तो जातक को नग गोमेद की अगुंठी (रिंग) रमल शास्त्र के मुताविक शुभ-मुहूर्त्त में गणना कराकर पहनना चाहिए। या रमल सिद्ध यन्त्र धारण करना चाहिए अथवा जप करवाना चाहिए।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र द्वारा जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि अति प्राचीन ग्रन्थों में केवल सात ग्रह ही माने गये हैं। सूर्य ग्रह को राजा का पद आधिकारिक प्राप्त है। राहु ग्रह का कहीं कोई किसी स्थिति में नामो-निशान नहीं है। मगर ग्रहण के समय सूर्य को भी ग्रस्त करने से नहीं मानता है। यानी कि यह ग्रह पूर्णतः काफी बलवान है। जिसके आगे सूर्य भी पानी भरता है।

कु० गीतिका रानी (पुत्री)
डॉ० नरेन्द्र कुमार "भैया" रमलाचार्य
रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान (रजि.)
3, महल खास, किला, भरतपुर (राजस्थान)
8386981718, 9414268172, (05644) 223216
Website : www.ramalarabicastrology.com
E-mail : narendrabhaiya9@gmail.com

रमल अरबी ज्योतिष से देखें—ग्रहों के रोग व उपाय

रमल अरबी ज्योतिष से देखें—ग्रहों के रोग व उपाय

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक मानव शरीर के बाहरी भीतरी अंगों में शारीरिक क्रियाओं पर भिन्न नौ राशियों का प्रभाव जीवन भर रहता है। जातक के खून की गर्दिश के मुताबिक समयानुसार रोग कम-अधिक, बराबर बढ़तमय, बराबर कम और समाप्ति की ओर अग्रसर रहते हैं।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में नौ ग्रह को इस कार्य के वास्ते अधिष्ठाता रूप से मानव शरीर पर विभाजन किया गया है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्रानुसार 9 ग्रहों को 16 शकलों (आकृतियों) पर विभाजन किया गया है। जो क्रमशः निम्न प्रकार से हैं।

सूर्य ग्रह (शम्स)-सिर, ललाट, नेत्रों को प्रतिनिधित्व करता है। **चन्द्रमा ग्रह** (कमर)-मुंह, मन, चेहरा को प्रदर्शित करता है। **मंगल ग्रह** (जैनख)-गला, कण्ठ को दर्शाता है। **बुध ग्रह** (मुश्तरी) और **गुरु ग्रह** (मरीख)-वाणी व विवेक को दर्शाता है। **शुक्र ग्रह** (जोहरा)-यौनांग व यौन से सम्बन्धित की जानकारी प्रदान करता है। **शनि ग्रह** (रास) व **राहु ग्रह** (अतारू) और **केतु ग्रह** (जुहल)-पेट से सम्बन्धित रोग व चर्म रोग पर आधिपत्य स्थापित किये रहते हैं।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में शारीरिक व मानसिक रोग हैं या अन्य स्थिति के जानने के वास्ते प्रस्तार (जायचा) बनाया गया है। प्रश्नकर्ता के हाथ पर पासा जिसे अरबी भाषा में **"कुरा"** कहते हैं। इनको एक शुद्ध पवित्र स्थान पर डलवाए जाते हैं। उन पासों के मुताबिक बारीकी से गणितिय विधि द्वारा फलादेश मय समाधान के प्राप्त होता है। यह सारी स्थिति विद्वान् रमलाचार्य के समक्ष होने पर होती है। यदि प्रश्नकर्ता विद्वान् रमलाचार्य के समक्ष नहीं हो तो एक नवीन शोध विधि **"प्रश्न-फार्म"** के द्वारा भी अमुक कार्य को सम्पादित किया जा सकता है। इन दोनों की कार्य प्रणाली अलग-अलग जरूर होती है, मगर आगे फलादेश मय समाधान के एक ही आता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता की जन्म पत्रिका की जरूरत नहीं होती है। जातक का नाम, माता-पिता का नाम, तिथि, वार, दिन, घड़ी और तो और पंचांग की आवश्यकता कदापि नहीं होती है। जातक की सारी कार्य प्रणाली इस प्रश्न के बावत् व अन्य प्रश्नों के मार्गदर्शन समाधान हेतु पासे से किए जाते हैं।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र से अमुक प्रश्न के मार्गदर्शन समाधान के वास्ते जातक इस नियत से मन और विचारों से शुद्ध होकर भावनात्मक स्थिति में प्रश्न करें। रमल शास्त्र द्वारा बनाए गए प्रस्तार के अनुसार यदि छठे घर में कोई भी **सिंह ग्रह** की शकल हो तो जातक को हृदय रोग, मानसिक विकार से सम्बन्धित रोग का होना पाया जाता है। यदि प्रस्तार में बलावल के मुताबिक कमजोर व **"नजर-ए-मिकराना"** की दृष्टि हो तो नेत्र रोग, सिर-दर्द, पीलिया, नियमित बुखार का आना होता है। यदि **चन्द्रमा ग्रह** की शकल हो तो ब्याज, तरीक इनमें से कोई भी यह कर्क राशि की अधिष्ठाता शकल है। जो कि जातक को मन का कारक व जल प्रकोप की बीमारी, मन की उचाटता, उदासीनता, हिस्टीरिया, मुंह का कैंसर, मूत्र रोग, पांव से उंगली तक का दर्द व अन्य बीमारियां होती हैं।

यदि **मंगल ग्रह** की शकल हो जो कि हुमरा, नकी इनमें से कोई हो मेष राशि व वृश्चिक राशि का अधिष्ठाता शकल है। जो प्रश्नकर्ता तमोगुणी, मेष राशि से रक्त से सम्बन्धित रोग, रक्त विकार, उदर रोग, फोड़ा-फुन्सी, आन्तरिक व बाहरी शरीर में चोट, बवासीर, मूत्र थैली के रोग, गर्भपात, टांनसिल (गले से रक्त का गिरना) यह सारी स्थिति शकल के शुभ-अशुभ के मुताबिक फल प्रदान करती है।

यदि **बुध ग्रह** की शकल जमात, इज्जतमा में से हो जो कि क्रमशः कन्या, मिथुन राशि से सम्बन्धित है। जो प्रश्नकर्ता को कब्ज, मूर्छा, मानसिक पागलपन, आमाशय का रोग, प्रेत आत्मा का साया (नजर) यानी कि जादू-टोना, मिर्गी, चिन्ताग्रस्त रहने से रोग, दर्द गुर्दा, क्षय रोग, यह सारी स्थिति बलावल व दृष्टि के अनुसार देखे जाते हैं यदि **गुरु ग्रह** की शकल हो जिसकी आकृति लहियान, नुस्तुल दाखिल में हो जो कि क्रमशः धनु, मीन राशि से सम्बन्धित है। जो प्रश्नकर्ता को पित्त के कारण रोग, जलन, प्यास से शरीर का टूटना, दांत दर्द, वायु रोग, गुप्त रोग, कम्पन (वाय), गर्भवती स्त्री होने के कारण रोग अन्य रोग बलावल व राशि के अनुसार दर्शाती है। यदि **शुक्र ग्रह** की शकल जिसकी राशि तुला बुध है। जो प्रश्नकर्ता को बेहोशी का रोग, जुकाम रोग, पेट दर्द, दिमाग की सूजन, दस्त, धन की चिन्ता, पेशाब में रेता, निमोनिया रोग, आकृति के मुनकलिब, दाखिल शकल के अनुसार प्रदर्शित कराती है। यदि **शनि ग्रह** की शकल हो जिसकी राशि कुम्भ, मकर है। जो कि प्रश्नकर्ता को रक्त विकार, शरीर का सूखना, पेट व नाभी में दर्द, खून से सम्बन्धित रोग, जलन्दर, जिगर, कब्ज के रोग, दर्द हड्डियों व अन्य सारी स्थिति की जानकारी शकल के स्वभाव दृष्टि-कुदृष्टि के द्वारा की जाती है। यदि **राहु ग्रह** की शकल हो जिसकी राशि कुम्भ है। यदि **केतु ग्रह** की शकल जिसकी राशि मकर है। जो पेट से सम्बन्धित रोग को इंगित बारीकी से गणित कर व "नजर-ए-तरबीर" से बराबर जानकारी की जाती है।

यदि प्रस्तार के छठे घर में मुनकलिब शकल हो व सभी बलावल के मुताबिक उच्च स्तर में हो तो जातक को किसी प्रकार का रोग नहीं होना पाया जाता है। मात्र एक शंका ही होती है कि हमें या किसी अन्य व्यक्ति को रोग है।

जातक को दिनों-दिन परेशानियों के वास्ते प्रयोग करना चाहिए। जिस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) हो उसका रत्न धारण करना चाहिए। या **रमल सिद्ध यन्त्र** विधि-विधान से शुभ-मुहूर्त में धारण करना चाहिए। जिससे कि वांछित लाभ व शान्ति की प्राप्ति हो सके।

डॉ० नरेन्द्र कुमार "भैया" रमलाचार्य
रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान (रजि.)
3, महल खास, किला, भरतपुर (राजस्थान)
8386981718, 9414268172, (05644) 223216
Website : www.ramalarabicastrology.com
E-mail : narendrabhaiya9@gmail.com

रमल अरबी ज्योतिष से जानें–मूल नक्षत्र क्या है? समाधान कब?

भारतीय आध्यात्मिक धार्मिक आस्था में विश्वास रखने वाले परिवार में नवजात शिशु के जन्म (आगमन) पर बड़े उत्साह से मन व परिवार में साथ ही निकटतम व्यक्तियों के हृदय में प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ती है। नवजात सन्तान के जन्म के साथ ही परिवारजनों को उसके भविष्य एवं भाग्य की जानकारी करने के वास्ते **रमल** (अरबी ज्योतिष) शास्त्र अथवा अन्य ज्योतिष शास्त्र के जानकार विद्वान् के पास जन्म पत्रिका निर्माण करवाने और भविष्य जानने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसी स्थिति में यदि विद्वान् रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र या अन्य ज्योतिषाचार्य के मुताबिक फल कहें कि नवजात शिशु का जन्म "मूल नक्षत्र" में हुआ हो तो परिवारजनों के सभी सदस्यों के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर के साथ-साथ चिन्ता युक्त मुख मुद्रा भी हो जाती है। साथ ही अनिष्ट की आशंका से बचने का हर सम्भव उपाय (समाधान) जानना चाहते हैं। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में ये सारी स्थिति बिना जन्म कुण्डली के यानी कि प्रश्नकर्ता द्वारा पासा जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं, डलवाकर की जाती है। ये स्थिति प्रश्नकर्ता जब रमलाचार्य के सम्मुख होता है। यदि प्रश्नकर्ता सम्मुख नहीं हो तो **"प्रश्न-फार्म"** के माध्यम से भी प्रश्नकर्ता का जवाब मय समाधान के दिया जा सकता है। ये प्रक्रिया रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा नवीन शोध कर प्राप्त की गयी है। इस प्रश्न वास्ते नवजात् जातक के माता-पिता या किसी निकटतम व्यक्ति के द्वारा होती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र में 27 नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण माने गये हैं। इनमें से ज्येष्ठ, मूल, अश्लेषा, मघा और रेवती के मूल नक्षत्र कहलाते हैं तथा पांच नक्षत्र धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्र, उत्तराभाद्रपद, रेवती यह पंचक नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में किसी प्रकार का भारतीय ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक समाज में कोई शुभ कार्य करना पूर्णत: वर्जित माना गया है। मूल नक्षत्र के प्रथम तीन ज्येष्ठ, रेवती, अश्लेषा में से रेवती नक्षत्र पंचकों का आखिरी नक्षत्र होता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक इन छ: नक्षत्रों का विभाजन शकलों (आकृतियों) पर निम्न प्रकार से किया गया है।

नाम नक्षत्र	शकल	नाम नक्षत्र	शकल
1. ज्येष्ठा		2. रेवती	
3. अश्लेषा		4. मघा	
5. मूल		6. अश्विनी	

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जब किसी नवजात् शिशु का जन्म इन मूल नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में होता है तो मूल नक्षत्र की शान्ति होना प्राचीन ग्रन्थों के मुताबिक अति आवश्यक है। इनके लिए विधि-विधान से रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मार्ग दर्शन के अन्तर्गत मूल नक्षत्र में ही करायी जाती है। क्योंकि रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष के अनुसार इन नक्षत्रों में जन्मा नवजात शिशु माता-पिता के साथ ही परिवार पर शारीरिक-मानसिक- आर्थिक व पारिवारिक स्थिति के मुताबिक भारी यानी कि परेशानीमय होता है। वहीं कारण है कि माता-पिता को कम से कम मूल नक्षत्र शान्ति के समय पूजा स्थल पर एक साथ बैठना चाहिए। अन्यथा अन्य जो उस बालक का अधिष्ठाता व्यक्ति हो, को बैठना चाहिए।

मूल शान्ति के लिए नवजात् शिशु का वही नक्षत्र जो 27 वें दिन बाद आता है। मूल शान्ति के दिन कार्य में लिया जाता है। जिसमें उसका जन्म हुआ हो, वह उसका जन्म नक्षत्र कहलाता है। वैसे तो नौवें बाद भी मूल नक्षत्र आता है जो एक जोड़े के रूप में आता है। जैसा कि रेवती नक्षत्र के अगले दिन अश्विनी नक्षत्र आता है। ये दोनों ही मूल नक्षत्र हैं। अत: जब कभी 27 दिन के मूल हों तो किसी अच्छे विद्वान् कर्मकाण्डी द्वारा यह कार्य सम्पन्न कराना चाहिए। वैसे मूल 27 दिन के उपरान्त ही कराना अति श्रेष्ठ रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार माना गया है। पुत्र रत्न प्राप्ति होने पर अधिकांशत: कुआं (कूप) पूजन एवं मूल नक्षत्र की शान्ति का कार्य 27 दिन के उपरान्त भी एक साथ किया जा सकता है। इस प्रकार से प्राचीन ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से विवेचना पूर्ण उल्लेख है।

मूल नक्षत्र में जन्में नवजात शिशु की बड़ी आयु (वय) होने पर क्रोध की स्थिति अधिक होती है। तथा वे क्रोध में उल्टा-सीधा, अच्छा-बुरा सब कुछ जानते या नहीं जानते बोल देते हैं व करते हैं। ऐसी स्थिति में बस यही कहा जाता है कि शिशु के मूल चढ़ रहे हैं। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि बुध ग्रह केतू ग्रह द्वारा यह मूल नक्षत्र के अधिष्ठित ग्रह होते हैं। अत: इस ग्रह से सम्बन्धित समस्त गुण यानी कि क्रोध का बोल वाला, झूठ बोलना, तनाव, आपसी फूट, गलत आचरण करना अथवा करवाना तथा गलत आचरण करने वाले व्यक्ति के पास उठना-बैठना ये सारी स्थिति स्वत: ही जन्मजात् उत्पन्न हो जाती है। केतू ग्रह की भी यही स्थिति है। जो मंगल ग्रह का होता है। जो उक्त समस्त बातों से ताल्लुकात रखता है तथा इस मूल नक्षत्र की वजह से यह सारी स्थिति जीवन भर रहती है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक बारीकी से प्रस्तार (जायचा) को अध्ययन करने पर मालूम होता है कि मूल नक्षत्र में जन्में जातक या तो सबसे बड़े और अच्छे पद पर पदासीन, ख्याति वाले, धनाढ्य, अच्छी मानसिकता रखने वाले, बड़े व्यक्तियों में उठने बैठने वाले होते हैं। अथवा सबसे छोटी स्थिति यानी कि निम्न स्तर के होते हैं। निम्न सोच की वैचारिक के होते हैं। यह मध्यम श्रेणी के कदापि नहीं होते हैं एवं अन्य जानकारी भी बराबर प्राप्त होती है। साथ ही मूल नक्षत्र का प्रभाव परिवारजनों व बहन-भाईयों पर भी पड़ता है। इसके अतिरिक्त दैनिक जीवन की क्रियाकलापों पर समयानुसार बराबर शुभ व अशुभ दिखाई देता है।

डॉ० नरेन्द्र कुमार "भैया" रमलाचार्य
रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान (रजि.)
3, महल खास, किला, भरतपुर (राजस्थान)
8386981718, 9414268172, (05644) 223216
Website : www.ramalarabicastrology.com
E-mail : narendrabhaiya9@gmail.com

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

लेखक:—
डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

यज्ञ का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के कल्याणार्थ है। यही एक ऐसी परम्परा भारतवर्ष में विद्यमान है जो अनेक संस्कृतियों के उत्थान-पतन के बाद आज भी दृष्टिगोचर है।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि अभिमंत्रित जड़ी-बूटियों को यज्ञ के द्वारा वायु में मिलाकर यज्ञ के आसपास उपस्थित व्यक्तियों पर व्यापक प्रभावशाली सिद्ध होती हैं। क्योंकि ठोस से अधिक प्रभावशाली द्रव पदार्थ तथा द्रव पदार्थ से अधिक प्रभावशाली वाष्प होती है। वाष्पीकृत नस्य पदार्थ ठोस और तरल औषधि के अपेक्षा अति शीघ्र प्रभाव दिखाते हैं। यज्ञ का विज्ञान भी ऐसे ही शीघ्र प्रभाव दिखाता है। श्वांस के सहारे रोग निवारक एवं प्राणदाता औषधियों को शरीर के रोम-रोम में पहुंचाने का कार्य अग्निहोत्र (यज्ञ) द्वारा शीघ्र एवं कुशलता से हो जाता है। वनौषधियों की वाष्पीकृत स्थिति, फेफड़ों से होती हुई मस्तिष्क तक पहुंचकर शरीर में प्रभाव दिखाना शुरू कर देती है। एक मिनट में हृदय 70-80 बार धड़कन करके लगभग 7500 मि.लि. वायु को अन्दर ले जाकर, कार्बन डाई आक्साईड बाहर फेंकता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है वाष्पीकृत धूम्र को सम्पूर्ण शरीर के रक्त में कितनी जल्दी प्रवेश कराया जा सकता है इससे आध्यात्मिक लाभ के अलावा व्यक्ति पर मानसिक प्रभाव तुरन्त पड़ने लगता है।

इस प्रकार शरीर बहुत से तत्वों को ग्रहण करने लगता है तथा विजातीय पदार्थों को शरीर से पसीने द्वारा बाहर निकाल देता है। वायु परिवर्तन के साथ यज्ञ में विभिन्न प्रकार की रंगीन किरणें भी निकलती हैं। जितने रंग हमें दिखाई देते हैं उनमें प्रधान तीन रंग हैं–1. पीला, 2. लाल, 3. नीला। यज्ञ करने वालों को सबसे श्रेष्ठ पीली किरणें हैं। रंगों में नाइट्रोजन, कार्बन, आक्सीजन, बेरियम, कैल्शियम, स्ट्रोंशियम, कैडमियम, कोबाल्ट, मैंगनीज, टिटेनियम, एल्यूमिनियम, क्रोमियम, लोहा, निकिल, तांबा और जस्ता पाया जाता है। जिन्हें आंखों द्वारा ग्रहण करके शरीर को इससे कई प्रकार से विद्युत किरणें मिलती हैं। जो शरीर से पहुंचकर सुषुम्ना नाड़ी पर प्रभाव दिखाती हैं। वहां से शरीर में स्थित षट्चक्रों में पहुंचकर मानसिक उत्तेजनाओं को शांति पहुंचाती हैं। इसमें कई प्रकार की निगेटिव, पोजेटिव एवं न्यूट्रल विद्युत ऊर्जा भी प्राप्त होती है। इस प्रकार से यज्ञ अकार्बनिक यौगिकों को कार्बनिक ठोस यौगिकों में बदलने का कार्य भी करते हैं। यज्ञ की अग्नि से वायु गर्म हो जाती है। गर्म वायु होने से वह स्थान खाली हो जाता है। फिर रिक्त स्थान पर ठण्डी वायु आनी शुरू हो जाती है। जिस कारण यज्ञीय स्थान पर वायु परिवर्तन होता है तथा नये वातावरण का कारण बनता है। वातावरण में आर्द्रता आती है।

वायुमण्डल के कुछ सूक्ष्म कीटाणु अधिक गर्मी करने से मरते हैं। कुछ शीतलता से समाप्त होते हैं। जब हम यज्ञ करते हैं तो यज्ञ की उष्मा से उत्पन्न तापक्रम से हमारे सूक्ष्म कीटाणु मरने लगते हैं। शेष यज्ञ की भस्म को जल में प्रवाहित कर स्नान करते हैं तो शीतलता से नष्ट होने लगते हैं। स्नान के बाद शरीर में स्फूर्ति और आनन्द की अनुभूति होती है। यही यज्ञ की आनन्द दायक क्रिया है।

यज्ञ के लाभ

पृथ्वी का विषय ही गंध है जिसको हम नाक द्वारा घ्राण शक्ति से जान पाते हैं। पृथ्वी वायु के गंधों का शोषण करके वायु को निर्गन्ध किया करती है। पृथ्वी पर स्थित प्राणी स्वस्थ वायु को सदा खींचते रहते हैं। सुगन्धित वायु कुछ मीलों पर चलने के बाद स्वयं बिना गंध की हो जाती है।

सुगन्धित वायु भारयुक्त होने के कारण पृथ्वी पर रहती है। लेकिन जब वायु गंधहीन हो जाती है तो आकाश की ओर बढ़ती है। अतः यज्ञ की गंधयुक्त वायु पृथ्वी, उसका वाष्प व अन्य तेज आदि गुण स्वयं ग्रहण कर निर्गन्ध वायु आकाश की ओर भेज देती है। इसके बदले में पृथ्वी अन्न आदि पदार्थ पुनः उत्पन्न करती है। गंध का प्रभाव बहुत दिनों तक रहता है। यज्ञ के द्वारा उत्पन्न गंध पृथ्वी बहुत दिनों तक ग्रहण करती है।

हवन सामग्री से धुयें के अणु वातावरण में व्याप्त होते हैं। वायुमण्डल से यह धूम्र पोजेटिव चार्ज होते हैं। पोजेटिव चार्ज के धूम्र अणु वायुमण्डल में नमी को सोख लेते हैं फिर इनके आसपास बादल के खण्ड बन जाते हैं जिनसे वर्षा का कारण बनता है। न्यूटन के सिद्धांत के अनुसार शक्ति का प्रयोग चाहे किसी द्रव्य या पदार्थ पर किया जाये, वह द्रव्य या पदार्थ भी उतने वेग के साथ शक्ति को अपने पूर्व स्थानों को लौटा देता है। इस कारण यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री का गैसें बनकर पुनः जल बन जाता है। पुनः जल के रूप में विभिन्न पदार्थों में मिलता है। थोड़ी सी सामग्री को दूर तक बैठे व्यक्ति तक गंध के द्वारा प्रभावित करते हैं जैसे मिर्च जलने पर करती है।

यज्ञ से उत्पन्न कार्बन व इसकी गैसें उतनी ही लाभकारी हैं जितनी सोडा वाटर में कार्बन डाई आक्साइड एवं होमियोपैथी में कार्बन वैज, ग्रेफाइट्स आदि। आयुर्वेद में भस्मों का प्रयोग महंगी चिकित्सा में करते हैं। भस्म भी जलाने के बाद प्राप्त होती है।

जिस स्थान पर यज्ञ होता है उस स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों के नकारात्मक विचार नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् अविश्वास समाप्त होकर मन में पूर्णता आती है। कार्य में उत्साह प्राप्त हो, धन का आगमन शुरू हो जाता है।

किसी भी पदार्थ का नाश नहीं होता, केवल रूप बदल जाता है। हवन सामग्री को अग्नि में जलाने से सामग्री के परमाणु सूक्ष्म हो जाते हैं जो कि वायुमण्डल में फैलकर फेफड़ों तथा शरीर के रोग में पहुंचकर यथास्थान लाभ पहुचाते हैं।

यज्ञ की समिधायें और सामग्री

चिकित्सा दृष्टि से हर रोग की कुछ न कुछ विशेष हवन सामग्री है। लेकिन हवन के द्रव्य हैं उनमें गो घृत के हवन द्वारा बने हुए सुगन्धित वायुमण्डल का आयतन सबसे अधिक है। गो घृत के बाद शक्कर का है। इसके बाद कपूर, गुग्गल, राल, देवदार, चन्दन, अगर, खस, नागरमोथा, पान, सुपारी, नारियल, छुआरा, जटामांसी, गोरोचन, केशर, कस्तूरी, सुगन्धवाला, लौंग, इलायची, तेजपत्र, कपूर कचरी, मखाना, कमलगट्टा, किशमिश, जौ, चावल, तिल आदि हैं। यज्ञ की अग्नि से जल, जल से पृथ्वी तत्व बनकर अभीष्ट की प्राप्ति होती है। अलग-अलग प्रकार की जड़ी-बूटी के मिश्रण से विभिन्न प्रकार की चिकित्सा की जा सकती है। समिधाओं में आम, गूलर, बेल, पीपल, पाखड़ आम, कदम्ब, तुलसी, आंवला, आक, शमी, चिचिड़ा, कुश, खस आदि प्रत्येक व्यक्ति के रोग और क्षमता अनुसार ली जाती है।

यज्ञ की विधि सरल है। यज्ञ एक पिरामिड आकार के अग्निपत्र में (तांबे का) अग्नि स्थापन कर उपरोक्त प्रकार की लकड़ी (समिधाओं) से उपरोक्त सामग्री या कुछ सामग्री से गोघृत से यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ का समय सूर्यास्त और सूर्योदय का अधिक श्रेष्ठ रहता है। इसका तुरंत प्रभाव यह होता है कि उड़नशील द्रव्य वातावरण में मिलकर सीलन दूर कर रोगों के वायरस को नष्ट कर देते हैं। यह एक प्रकार की एन्टी वायटिक चिकित्सा भी है।

हवन कुण्ड की रचनायें नाप, तोल, आहुतियों की संख्या और यज्ञ में बैठने वाले व्यक्तियों के अनुसार करनी चाहिए। मनचाहा गड्ढा खोदकर हवन सामग्री की भट्टी जलाते रहना बुद्धिमता नहीं है। जिस प्रकार आग्नेय शस्त्र एक नापतोल से

बनाये जाते हैं, उसी प्रकार से हवन कुण्ड का भी निर्माण कार्य किया जाता है। श्रेष्ठ कर्म का फल श्रेष्ठ अवश्य ही मिलता है। भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है।

विशेष रोगों की विशेष हवन सामग्री

शीत ज्वर–पटोल पत्र, नागर मोथा, कुटकी, नीम की छाल, गिलोय, कुडे की छाल, करंजा, नीम के पुष्प। **उष्ण ज्वर**–इन्द्र जौ, पटोल पत्र, नीम की गुठली, नेत्र वाला, त्रायमाण, काला जीरा, चौलाई की जड़, बड़ी इलायची। **खांसी**–मुलहटी, पान, हल्दी, अनार, कटेरी, बहेड़ा, अंजीर की छाल। **रक्त अर्श**–हरड़, अमलतास, घृतकुमारी, बेल, मुनक्का, मुलहटी, सनाय, ईशबगोल, ढाक। **दस्त**–सफेद जीरा, दालचीनी, अजमोद, बेलगिरी, चित्रक, अतीस, सोंठ, चव्य। **अपच**–तालीस पत्र, तेजपात, पोदीना की जड़, हरड़, अमलतास की छाल, नाग केशर, काला जीरा, सफेद जीरा। **वमन**–वाय विडंग, पीपल, पीपला मूल, ढाक के बीज, निशोथ, नीबू की जड़, आम की गुठली, प्रियंगु। **अर्श**–नाग केशर, धमासा, दारू हल्दी, नीम की गुठली का गूदा, मूली के बीज, जावित्री, कमल केशर, गूलर के फल। **उष्णता की अधिकता**–धनियां, कासनी, सौंफ, बनफसा, गुलाब के फूल, आंवला, खस, पोस्त के बीज। **जिगर या तिल्ली**–राई, पीपरा मूल, पुनर्नवा, करेले की जड़, मकोय, सेमर के फूल, जामुन की छाल, अपामार्ग। **चेचक**–मेहंदी की जड़, नीम की छाल, हल्दी, कलोंजी, जावित्री, बांस की लकड़ी, खैर की छाल। **जुकाम**–दूब, पोस्त, कासनी, अंजीर, सोंफ, उन्नाव, बहेड़े की गुठली का गूदा, धनियां। **प्रमेह**–तालमखाना, मूसली सफेद, गोखरू बड़ा, कोंच के बीज, सुपारी, बबूल के बीजों का गूदा, शतावर, इलायची छोटी। **प्रदर**–कमलगट्टा, गूलर के फूल, अशोक की दाल, लोध्र, कमल, केशर, मांजूफल, सुगन्धवाला, अर्जुन की दाल। **वात व्याधि**–ग्वार पाठे की जड़, रास्ना, बालछड़, सहजन की छाल, मेंथी के बीज, पुनर्नवा, तेज पत्र। **मन्दबुद्धि**–शतावरी, ब्राह्मी, ब्रह्मादंडी, गोरख मुण्डी, शंखपुष्पी, मंडूकपर्णी, बच, माल कांगनी। **विष निवारण**–वन तुलसी के बीज, अपामार्ग, इन्द्रायण की जड़, करंजा की गिरी, दारू हल्दी, चौलाई के पत्ते, बिनौले की गिरी, लाल चन्दन। **रक्त विकार**–धमासा, सारवा, कुडे की छाल, अड़ूसा, सरफोंका मंजीठ, कुटकी, रास्ना। **चर्म रोग**–शीतल चीनी, चोप चीनी, नीम के फूल, चमेली के पत्ते, दारू हल्दी, कपूर, मेंथी के बीज। **मस्तिष्क रोग**–बेर की गुठली का गूदा, मौलसिरी की छाल, पीपल की कोंपलें, इमली के बीजों का गूदा, काकजंघा, बरगद के फल, खिरैटी, गिलोय। **बच्चों की अस्वस्थता**–अतीस, काकड़ा सिंगी, नागरमोथा, पीपल छोटी, धनियां, धाय के फूल, मुलहटी। **गर्भ पुष्टि**–सोंफ, कासनी, धनियां, गुलाब के फूल, खस, पोस्त के बीज, दाख, इन्द्र जौ। **क्षय**–मकोय, जीवन्ती, जटामांसी, गिलोय, जावित्री, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, आंवला।

ऊपर की पंक्तियों में कुछ किस्मों के रोगों की हवन करने योग्य औषधियों के अष्टवर्ग लिखे हुए हैं। यह सभी प्रायः समान मात्रा में लेनी चाहिए। इनमें से कोई वस्तु न मिले तो दूसरी औषधियां अधिक मात्रा में लेकर उसकी पूर्ति की जा सकती है। कोई वस्तु अधिक महंगी हो और उतना खर्च करने की सामर्थ्य न हो तो उसे कम लेकर उसके स्थान पर दूसरी औषधियां बढ़ा देनी चाहिए।

हवन के अंत में समीप रखे हुए जलपात्र में कुश, दुर्वा या पुष्प डुबो-डुबो कर गायत्री मंत्र, मृत्युंजय मंत्र पढ़ते हुए रोगी पर उस जल का मार्जन करें। यज्ञ की भस्म रोगी के मस्तक, हृदय, कण्ठ, पेट नाभि तथा दोनों भुजाओं से लगावें। घृत पात्र में जो घृत बच जावे उसमें से कुछ बूंद लेकर रोगी के मस्तक तथा हृदय पर लगावें।

इन सरल प्रयोगों को अनेक बार प्रयोग करके देखा गया है। साधारण औषधि चिकित्सा की अपेक्षा इनका लाभ अधिक ही रहा है। इस पद्धति को अपनाकर लोग रोगियों को अधिक लाभ पहुंचा सकते हैं और रोगी भी आत्मिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार के लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं।

लेखक – डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल
चक्रपाणि हर्बल रिसर्च फाउन्डेशन
श्रीधाम, हुसैनी बाजार, चन्दौसी-202412
मो.-9412140444

भारतीय ज्योतिष में चमत्कारिक रत्न विज्ञान

लेखक:–
वरुण चक्रपाणि

मनुष्य किसी न किसी रूप से सदैव अपनी प्रगति के लिए लालायित रहता है। जिसके लिए वह ईश्वर उपासना, दान, यज्ञ, फकीरों की दुआ, महात्मा तथा ज्योतिष का भी आश्रय लेता है। ज्योतिष कई विधियों द्वारा भविष्य निर्माण में सहायक है, उनमें से एक **रत्न धारण** है। भाग्य परिवर्तन में शीघ्र ही अपना शुभाशुभ प्रभाव प्रकट करता है क्योंकि **रत्न** में पृथ्वी के अन्दर लाखों वर्षों तक पड़े रहने से उसमें पृथ्वी का चुम्बकत्व तथा तेज तत्व आ जाता है। पृथ्वी के जिस क्षेत्र में जिस ग्रह का असर अधिक रहता है उस क्षेत्र के आसपास उस ग्रह से संबंधित रत्न असली एवं अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। जिसका असर मानव पर अधिक पड़ता है। पृथ्वी ग्रहों के संयोग से अपने अन्दर रत्न का निर्माण करती है इसीलिए इसे **रत्नगर्भा** कहते हैं।

रत्न शब्द बहुत ही महानतम् शब्दों में से एक शब्द है। इसका एक विशिष्ट अर्थ **श्रेष्ठत्व** भी है। इसी कारण से किसी विशेष व्यक्ति को विशेष कार्य के लिए रत्न शब्द से युक्त उपाधि से विभूषित करते हैं। प्राचीन भारत में सोना, चांदी आदि मूल्यवान धातुओं, हाथी, घोड़ा आदि पशुओं तथा सर्व साधारण को सरलता से उपलब्ध न होने वाली वस्तुओं की गणना भी **रत्नों** के अंतर्गत ही की जाती है। परन्तु प्राचीन काल से ही रत्न शब्द का अर्थ भू-गर्भ अथवा समुद्रतल से प्राप्त होने वाले हीरा, मोती, माणिक्य आदि हैं। आधुनिक काल में मूल्यवान धातुओं तथा अन्य वस्तुओं को रत्न की परिभाषा से अलग किया जा चुका है। अतः अब यह शब्द केवल **जवाहरात** के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। इन रत्नों की उत्पत्ति-प्राप्ति कई प्रकार से होती है। ये रत्न नदियों, पर्वतों, खदानों, वनस्पतियों तथा समुद्र आदि द्वारा प्राप्त होते हैं। जैसे नीलम व पुखराज हिमालय की खानों में पाये जाते हैं। हीरा, पन्ना, गोमेद समतल जमीनों की खानों से प्राप्त होते हैं। मूंगा, मोती, समुद्र से प्राप्त होते हैं। लहसुनिया, माणिक्य नदियों से प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार समस्त उपरत्न भी नदियों, समुद्र, खानों तथा पर्वतों से पाये जाते हैं।

पुराणों में रत्नों की उत्पत्ति के बारे में अनेक कथायें पायी जाती हैं। अग्निपुराण के अनुसार जब महाबली दैत्य वृत्रासुर ने देवलोक पर आक्रमण किया तब भगवान श्री विष्णु की सलाह पर देवराज इन्द्र ने महर्षि दधीचि से उनकी हड्डियों का दान मांगा। महर्षि के सहमत हो जाने पर उनकी हड्डियों द्वारा इन्द्र ने वज्र नामक अस्त्र का निर्माण किया। उस अस्त्र के द्वारा वृत्रासुर का संहार हुआ। अस्त्र निर्माण के समय महर्षि दधीचि की हड्डियों को जो सूक्ष्म खण्ड पृथ्वी पर गिरे उनसे हीरे तथा अन्य रत्नों की खानें बन गयीं। एक अन्य कथा के अनुसार समुद्र मंथन के समय जब अमृत का कलश प्रकट हुआ तो दैत्य लोग उस अमृत को घर लेकर भाग गये। यह देखकर देवताओं ने उनका पीछा किया। इस छीना-झपटी में अमृत की कुछ बूंदे छलक कर पृथ्वी पर गिर पड़ीं, जो कालान्तर में विविध रत्नों के रूपों में परिवर्तित हो गये। इस प्रकार अमृत बूंदों द्वारा ही विभिन्न रत्नों की उत्पत्ति हुई।

तीसरी कथा राजा बलि की है। जब दैत्यराज बलि [illegible] वंपधारी श्री विष्णु ने साढ़े तीन पग पृथ्वी का दान मांगा और दैत्यराज ने इसे देना स्वीकार कर लिया था। तब श्री विष्णु ने विराट स्वरूप धारण कर तीन पगों में तीनों लोकों को नाप लिया था और शेष आधे पग में इन्होंने दैत्यराज के शरीर को नापा था। उस समय **वामन भगवान** के श्री चरण का स्पर्श होते ही राजा बलि का सम्पूर्ण शरीर रत्नमय हो गया। तब देवराज इन्द्र ने दैत्यराज बलि के उस रत्नमय शरीर के ऊपर अपने वज्र द्वारा प्रहार किया। जिससे वह खण्ड-खण्ड हो गया और उससे विभिन्न प्रकार के रत्न प्रकट हुए। तत्पश्चात् भगवान शंकर ने उन रत्नों को अपने चार त्रिशूलों पर स्थापित करके, सर्वप्रथम उनमें नवग्रह एवं द्वादश राशियों का प्रभुत्व स्थापित किया। तत्पश्चात् उन्हें पृथ्वी पर चार दिशाओं में गिरा दिया। जिसके फलस्वरूप विभिन्न रत्नों की खानें उत्पन्न हुईं। राजा बलि के शरीर अंग-प्रत्यंगों से 84 प्रकार के मणिरत्नों की उत्पत्ति बताई है।

प्राचीन काल से ही उपरोक्त कथायें प्रचलित हैं किन्तु रत्नों के आधुनिक इतिहास के अनुसार रत्न मुख्यत: खनिज पदार्थ हैं प्रकृति द्वारा विभिन्न प्रकार के रासायनिक तत्वों के सम्मिश्रण द्वारा इनका जन्म होता है। रत्न खनिजों में मुख्यत: निम्न तत्व होते हैं–कार्बन, एल्मोनियम, बेरियम, बेलियम, कैल्शियम, तांबा, हाइड्रोजन, लोहा, फॉस्फोरस, मैंगनीज, गंधक, पोटैशियम, सोडियम, टिन, जिर्कोनियम तथा जस्ता इत्यादि। खनिज रत्नों के अलावा जैविक तथा वानस्पतिक रत्न भी पाये जाते हैं। मोती-मूंगा जैविक रत्न हैं। तृणमणि तथा जेट की गणना वानस्पतिक रत्नों में की जाती है। खनिज रत्नों की खानें होती हैं। जैविक रत्नों का प्राप्ति स्थल समुद्र है तथा वानस्पतिक रत्न वन तथा पर्वतों से प्राप्त किये जाते हैं। कृत्रिम रत्नों का निर्माण कार्य भी प्राचीन [illegible] कृत्रिम रत्नों का निर्माण कर लिया गया है। जिन्हें पहचानने में बड़े-बड़े जौहरी तक धोखा खा जाते हैं। मैंने अपने निरन्तर अनुसंधान से रत्न ज्योतिष के कुछ सूत्र खोज किये हैं। इन्हें भी आजमाइश करें।

रत्न का कार्य सम्बन्धित ग्रह की शक्ति की बढ़ोत्तरी करना ही है। अर्थात् रत्न कभी भी शक्ति कम नहीं करता। अत: रत्न पहनने से पहले कुछ ज्योतिष के सिद्धांत भी ध्यान में रखें-

सिद्धान्त

1. रत्न के विरोध रत्न को कभी नहीं पहनना चाहिए। बल्कि मित्र रत्न यदि आवश्यक हो तो लिया जा सकता है।

ग्रह	रत्न	शत्रु रत्न	समग्रह	मित्र ग्रह
1. सूर्य	माणिक	शुक्र-शनि	बुध	चं.,मं.,गु.
2. चन्द्र	मोती	राहु	मं.,गु.,शु.,श.	सूर्य-गुरु
3. मंगल	मूंगा	बुध-शुक्र	--	सू.,चं.,गु.
4. बुध	पन्ना	चन्द्र	गुरु, शनि	सू.,शु.,के.
5. गुरु	पुखराज	बुध-शुक्र	शनि	सू.,चं.,मं.
6. शुक्र	हीरा	चन्द्र-सूर्य	मं.,गु.,श.	बुध-शनि
7. शनि	नीलम	सूर्य,चं.,मं.	--	बुध-शुक्र
8. राहु	गोमेद	सूर्य,चं.,मं.,गु.	--	बुध-शनि
9. केतु	लहसुनिया	सूर्य,चं.,मंगल	--	शु.,गु.,श.

2. जन्म कुण्डली में वक्री और मार्गी ग्रह भी देखना चाहिए क्योंकि पापी वक्री ग्रह की शांति जरूरी है।

3. जन्म कुण्डली में उदय-अस्त भी देखना चाहिए क्योंकि अस्त ग्रह से संबंधित नग पहनने से ग्रह की शक्ति बढ़ती है।

4. कुण्डली में ग्रह की दृष्टि, दशा और अन्तर्दशा भी ध्यान रखना चाहिए।

5. कुण्डली में ग्रहों के अंश भी देखना चाहिए।

6. यदि पुरुष अपने बांये हाथ में नग पहनेगा तो उसकी स्त्री को लाभ मिलेगा। ठीक इसके विपरीत स्त्री दायें हाथ में नग धारण करेगी तो उसके पुरुष को लाभ मिलेगा।

7. हाथ की प्रत्यंक उंगली क्रमश: तर्जनी-गुरु, मध्यमा-शनि, अनामिका-सूर्य, कनिष्ठा-बुध का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे हीरा यदि लाभकर हो तो उसे तर्जनी में पहन लिया जाये तो शुक्र उच्च का होकर लाभ ज्यादा करेगा।

8. निम्नलिखित क्रम से प्रत्येक ग्रह एक-दूसरे का बल नष्ट करता है-सूर्य का बल शनि से, शनि का बल मंगल से, मंगल का बल बुध से, गुरु का बल शुक्र से, शुक्र का बल चन्द्र से, बुध का बल गुरु से, चन्द्र का बल मंगल से नष्ट होता है।

9. निम्नलिखित क्रम से ग्रह एक-दूसरे से अधिक बलवान माने जाते हैं-शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र, चन्द्र से भौम, सूर्य से शनि, केतु सबका बल कम करता है।

10. निम्न प्रकार ग्रहों का दोष शामक होता है-राहु का दोष बुध से, मंगल-बुध-राहु-शुक्र-शनि का दोष गुरु से, राहु तथा बुध का दोष शनि से, मंगल-बुध, गुरु-शुक्र, शनि, राहु का दोष चन्द्रमा से, बुध-शनि एवं राहु का दोष मंगल से, मंगल-बुध-शनि-राहु का दोष शुक्र से होता है। राहु-बुध, शनि, शुक्र-गुरु-मंगल एवं चन्द्र का दोष सूर्य से होता है। उत्तरायण का सूर्य सब दोषों का शमन करता है।

11. मुख्य नौ रत्न होते हैं-मोती, माणिक, पुखराज, मूंगा, पन्ना, नीलम, गोमेद, लहसुनिया, हीरा।

लेखक - वरुण चक्रपाणि
चन्दौसी ग्रीन, मकान नं. 2, ग्राम-देवरखेड़ा
चन्दौसी-202412 मो.-9927311629

सूर्य पुत्र शनि और साढ़े साती

लेखक:–
डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

सौर मण्डल में सबसे बड़ा और रहस्यवादी ग्रह है। इसकी पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी है। इसका बारह राशि में भ्रमण 29 वर्ष 5 मास 17 दिन है। शनि को सूर्य पुत्र कहा जाता है। यह सूर्य की छाया से उत्पन्न है। शनि का पूरा नाम शनैश्चर अर्थात् शनै: शनै: चलने वाला ग्रह है।

पुराणों में शनि की आकृति, वृद्ध पुरुष, तीक्ष्ण, दीर्घ, आलसी, वायु प्रधान, नपुंसक, पापी, तम गुण प्रधान है। शनि का वाहन गिद्ध तथा वार शनि है। स्वाद कसैला, प्रिय धातु लोहा है। राज्य में दूत, सेवक, शरीर में प्रभाव घुटनों से पिण्डली तक विशेष रूप से दांया कान, कानून, शिल्प, दर्शन, तंत्र-मंत्र-यंत्र, यांत्रिक विद्या का कारक है। विचारणीय विषय-आयु, जीवन, मृत्यु का कारण, दु:ख व विपत्ति है। ऊसर भूमि में स्थित है। काले रंग प्रधान, स्नायु संस्थान में सबसे अधिक प्रभावी मकर व कुंभ राशि का स्वामी, मृत्यु का देवता, कूड़ा घर में रहने वाला जुआरी, ठग, शराबी, कानून, दर्शन, यवन, विद्या में रुचि होती है। शनि ब्रह्मज्ञान का भी कारक है जिससे दूसरे मनुष्य के आंतरिक मनोभावों का दूर से ज्ञान हो जाता है। सूर्य से पराजित होता है। राहु, बुध इसके दोष को शमन करते हैं। शनि का स्वभाव है-सीमा का निर्धारण करना। जब मनुष्य अतिचारी, कामी या असमाजिक होता है तो अनुशासन में लाना तथा दण्ड देना इसका कार्य है। भूतकाल में किये कर्म का फल वर्तमान में देता है। शनि दु:ख, कष्ट, बाधायें, झंझट, दरिद्रता देता है। धूप का कष्ट, रेगिस्तान का कष्ट, झुर्रियां पड़ना इत्यादि है। कृषक, मजदूर, न्याय विभाग के भी स्वामी हैं।

किसी भी स्थान को शुष्क और स्वादहीन कर देना शनि का गुण है। इसी कारण रेगिस्तान, धनहीन, बलहीन, गतिहीन करना, एकान्त वासी, दुष्कर्मी ही इसकी प्रमुखता है। 36 व 42 वर्ष में विशेष प्रभावी है। उस समय दशा तथा अंतर्दशा अनुकूल हो तो सर्वाधिक उन्नति होती है। गोचर में शनि अशुभ हो तो सभी ग्रह अशुभ फल देते हैं। गुरु का शुभ फल भी अशुभ शनि नष्ट कर देता है। यदि शनि शुभ हो बाकी ग्रह अशुभ हों तो अशुभ फल होता है। राहु, गुरु, शनि तीनों गोचर में शुभ हो तभी शुभ फल मिलता है। शनि 3, 6, 10, 11 भाव में सर्वोत्तम होते हैं। 1, 2, 5, 7, 9 भाव में अरिष्ट कारक। 4, 8, 12 में महाअरिष्ट कारक होते हैं। शुक्ल पक्ष की रात्रि में शनि की वक्रता में जन्म हो तो प्रत्येक राशि में शनि बली होता है। सूर्य से 15 डिग्री तक स्थित होने पर सर्वाधिक बली है। शनि की तुला उच्च राशि, मेष निम्न राशि तथा मकर कुम्भ स्वराशि है। शनि अपने घर से तृतीय को पहली दृष्टि सप्तम को पूर्ण दृष्टि तथा दशम को तीसरी दृष्टि से देखता है। वास्तु पुरुष, विश्व में अध्यात्म की महान विभूतियां, साधु-संत इनकी कृपा से बनते हैं। वस्त्रहीन दिगम्बर भैरव इनका सर्वोच्च रूप है। समय एवं काल के निर्माता हैं। अत: काल के ब्रह्मा यही हैं।

शनि से 70 प्रतिशत अधिसंख्यक पीड़ित रहते हैं। कारण पत्रिका में मकर व कुंभ राशि का मालिक तो है ही, इसके अलावा जहां पर बैठा होता है, वहां से 3-7-10 दृष्टि भी होती है। इस प्रकार कुल मिलाकर 6 घरों में प्रभावी रहता है। गोचर में शनि जब-जब भ्रमण करेगा तो शत्रु की राशि में पीड़ा और अधिक देगा। **स्थान हानि करो जीवः स्थान वृद्धि करो शनिः।** शनि स्थान की वृद्धि करता है। गुरु स्थान की हानि करता है। अत: शनि की सभी दृष्टियां हानिकर ही हैं। जिस घर में शनि उच्च का है तो उसी घर के संबंधित अंग पर अच्छा प्रभाव डालेगा। लेकिन नीच शनि है तो उस घर से संबंधित अंग का नाश करता है। अगर शनि वक्री है तो दुगुना बल आ जाता है। लेकिन जिस भाव में वक्री है तो उसका नाश कर देता है। शनि का बुध के साथ संबंध होने पर बेईमानी अवश्य करता है। अष्टम में जब गोचर में शनि आता है तो वृद्ध महिला या पुरुष से धन अवश्य मिलता है। भाग्योदय में शनि बाधक है।

शनि का कलयुग में जुआरी, ठग आदि होने के कारण अधिक प्रभाव है। चपरासी, भिखारी, साधु, क्लर्क, मजदूर, जेलर, सुपरिन्टेन्डेन्ट व राज्य अधिकारी को शुभ फल करता है। शनि एक राशि पर अढ़ाई वर्ष रहता है। राशि परिवर्तन के 6 मास के पूर्व ही आगे आने वाली राशि का फल देना शुरू हो जाता है। शनि की सूर्य-राहु-भौम से युति तथा अष्टमेश से संबंध होने पर मारकेश बन जाता है। शनि की व्ययेश में स्थित होने पर नीलम कदापि न पहनें। शनि 12वें भाव में अपनी दशा-अंतर्दशा में करोड़पति बनाकर दिवालिया तथा पागलपन अवश्य देता है। चतुर्थ का शनि हमेशा पुराने मकान में रहता है। वह कभी नया मकान बनाने की सोच भी नहीं सकता। चतुर्थ का शनि, शनि-शुक्र की दशा-अंतर्दशा में किसी अन्य महिला से धन दिलाता है। उसी प्रकार दशम का शनि को जुड़ी हुई सम्पदा प्राप्त होती है। या राजा या अन्य कोई पद प्राप्त होता है। पंचम का शनि, श्रद्धा रहित, संतान कष्ट से उत्पन्न, यांत्रिकी शिक्षा, पाश्चात्य शिक्षा प्रेमी, दिवालिया योग होता है। षष्टम् के शनि के चोर, शत्रु, सरकार कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। जमीन, पशु-पक्षी आदि धन होता है। सप्तम् का शनि का मन चंचल, स्त्री झगड़ालू, स्वयं व्यभिचारी होता है। 40 वर्ष में उसका भाग्योदय होता है। अष्टम् का शनि का सज्जन व्यक्ति से दूर रहकर धन नाश करता है। घाव, भूख, बुखार से मृत्यु होती है। इसकी संतान धूर्त होती है। नवम् का शनि सन्यासी योग बनाता है। शरीर का अंग क्षत-विक्षत रहता है। दूसरों को कष्ट देने में आनन्द आता है।

शनि प्रधान व्यक्ति अपने मातृपक्ष के आनुवंशिक लक्षणों के अत्याधिक निकट होते हैं। उनकी मुखाकृति, प्रकृति, स्वभाव व रंग व रुचियां आदि मातृपक्ष से मिलती-जुलती हैं। भाग्य रेखा का स्थान भी शनिक्षेत्र है। इसलिये भौतिक उन्नति, धन प्राप्ति, वैभव एवं भाग्योदय आदि शनि क्षेत्र के विषय हैं।

शनि का सबसे बड़ा कार्य है कि पाप वृति से कष्ट दिलाकर फिर कष्ट से तप कराता है। पुन: उसे साधु बनाता है। ऐसा ही शनि-चन्द्र, शनि-रवि, शनि-शुक्र विशेष योग बनाते हैं। शनि और चन्द्र की युति अपने आप में उपलब्धि है।

शनि-चन्द्र विशेष युति

जब शनि को चन्द्र या चन्द्र को शनि देखता है या लग्न में शनि-चन्द्र हो तो जातक को महान तपस्वी या उच्च कोटि का संत बना देते हैं। शनि तप कारक चन्द्र मन का कारक है। शनि की दृष्टि चन्द्र पर हो तो उच्च कुल की महिला से इश्क होता है। शनि-शुक्र पक्षाघात का कारक है। यदि एक साथ हों तो परस्त्री या परपुरुष से जान-पहचान अवश्य हो जाती है।

शनि से सम्बन्धित हस्त रेखायें

हाथ की कलाई से मध्यमा उंगली के पास तक जाने वाली रेखा भाग्य रेखा कहलाती है। तर्जनी और मध्यमा को मिलाने वाला वलय कहलाता है। जो विकृत यौन का प्रतीक है। हाथ की दशों उंगली में चक्र होना राज्य में सर्वोच्च पद का प्रतीक है। लेकिन दश शंख होना फकीर, घुमक्कड़ साधु होता है। जबकि पैर में चक्र होने वाला भी साधु होता है। त्याग प्रवृत्ति शनि की महान देन है।

प्रत्येक भाव में शनि का फल

प्रथम भाव में शनि तांत्रिक बनाता है। शारीरिक कष्ट, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में अनबन, पत्नी पक्ष से भी अनबन कराता है। द्वितीय भाव में धन लाभ अधिक, जन्म स्थान का विछोह, लाभ के श्रोत कम करना तथा वैराग्यवान। तृतीय भाव में पैतृक सम्पत्तिहीन, नास्तिक, कंजूस, संतान को कष्ट कारक, यात्राओं से भय। चतुर्थ भाव में शनि बन्धन में रखता है। जल भय, शत्रु नाश, भाग्यहीन, कारोबार का नाश, पुराना घर, चिन्ताग्रस्त, स्वास्थ्य में गिरावट करके मनोबल गिराता है। हृदय रोग तथा हीन भावना युक्त जीवन में नीरसता रहती है। पंचम भाव में संतान रोगी या अपंग, बड़े भाई या मित्रों से लड़ाई, पत्नी से अनबन, लाभ कम, दिवालिया योग भी रहता है। षष्टम् भाव में रोगी आजीवन रहता है। असाध्य बीमारी, वायु विकार, कंजूस, गलत कार्यों में रुचि। सप्तम् भाव में नास्तिक, पिता की सम्पत्ति से हीन, वृद्ध या बड़ी उम्र के साथी से विवाह, अनैतिक संबंध, माता से अनबन, हृदय रोग होते हैं। अष्टम् भाव में परिवार, संतान से अनबन, नौकरी छूटने का खतरा, दुर्घटना की आशा रहती है। नवम् भाव में प्राचीन ग्रन्थों के मंथन में रुचि। गुरु की राशि में होने से राज्याधिकारी, भाई-बहन से अनबन रहती है। दशम् भाव में जातक को शिखर तक पहुंचाता है। स्थावर सम्पत्ति का लाभ निश्चित होता है। 36वें वर्ष के बाद भाग्य में उलट-फेर अवश्य होती है। समय पर विद्या काम नहीं आती। एकादश भाव में संतान से अनबन, अवैध आय के स्त्रोत जो कि उस समय लोगों को मालूम नहीं पड़ते लेकिन बुध की दशा आते ही सब कृत कर्मों का भण्डाफोड़ हो जाता है। दुर्घटना की संभावना है। यहां नीच-उच्च ग्रह का कोई महत्व नहीं है। द्वादश भाव में यदि शनि की महादशा चल रही हो तो पहले तिहाई भाग में कष्ट, दूसरे तिहाई भाग में अत्याधिक ऐश्वर्य तथा धन लाभ, लेकिन शेष तिहाई वर्षों में जीवन का पराभव और ग्लानि ही मिलती है। गुरु केन्द्र में हो तो इतना खराब नहीं है।

शनि के साथ ग्रहों की स्थिति

शनि मंगल का संबंध हठी, चिड़चिड़ा, क्रोधी होता है। शनि के साथ मान-हानि, पतन, अर्थहानि, अस्थिरता देता है। स्त्री के साथ अनैतिक संबंधों का कारक है। जब किसी स्त्री की

चन्द्र की महादशा हो, लग्न में शनि-चन्द्र हो तो ... कराता है। साथ में मंगल की दृष्टि तो कामुक प्रदर्शन की चेष्टायें भी होती हैं। शनि-बुध के साथ चतुर, निडर तथा निर्लज्ज होता है। कामुकता में समाज की परवाह नहीं करता तथा बेईमानी भी करता है। शनि-सूर्य के साथ स्वार्थी, शंकालु हीन भावना से ग्रस्त अतिकामी छुपकर कुकर्म तथा पाप करता है। जिसके पाप कभी दृष्टिगोचर नहीं होते। शनि-रवि का अंतर तथा रवि-शनि का अंतर खराब होता है। शनि शुक्र के साथ बाधायें, ईर्ष्या, वियोग के साथ उच्च पद भी देता है। लेकिन काम संबंधों में इसका मस्तिष्क नयी उपज से अपनी काम वासनायें तृप्त करता है। शनि-गुरु के साथ उदासीन, खिन्न और आत्मघाती होता है। अपने कुलगुरु को भी बदल देता है। शनि-राहु-केतु आपस में मित्र हैं। अतः शनि की सभी प्रवृत्ति यहां पर बढ़ जाती है।

वक्री शनि का फल

जन्मस्थ वक्री शनि वाले जातक भाग्यवादी होते हैं। उनकी प्रत्येक क्रिया-कलाप किसी अदृश्य शक्ति से प्रभावित होते हैं। वे एकान्तवादी होकर अपने सहयोगी, मित्रों व साथियों से किनारा कर जाते हैं। जैसा दूसरों को दिखायी देते हैं वैसा उनका व्यक्तित्व नहीं होता है।

लग्न का वक्री शनि (धनु-मकर-कुंभ-मीन) राशि में हो तो राजा, गांव का मुखिया, राजतुल्य वैभव देता है। द्वितीय भाव का वक्री शनि परदेश तथा विदेश से धन कमाता है। तृतीय का वक्री शनि भाईयों को अशुभ होकर रहस्यमय शास्त्रों का ज्ञाता बनाता है। लेकिन कन्या-तुला का शनि आर्थिक हानिकारक है। चतुर्थ का वक्री शनि घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी नहीं निभा पाते। गृह-हीन, मातृहीन भी बनना पड़ता है। यदि शनि पीड़ित हो तो सन्यासी बन जाता है। शनि (तुला-मकर-कुंभ) का हो तो पूर्ण संचित सम्पत्ति प्राप्त होती है। पंचम का वक्री शनि प्रेम के मामले में स्वार्थी होते हैं। घर सफाई के प्रति लापरवाह होते हैं। परिवार, पत्नी व बच्चों के प्रति निरंकुश होते हैं। षष्टम् का शनि यदि मेष राशि का हो तो शत्रु नीच रहते हैं। उच्च राशि तुला में शत्रु नाश तथा अन्य राशि में शत्रुहीन होता है। साथ में निर्बल शनि दीर्घकालीन रोग कारक है। सप्तम का वक्री शनि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में की गई भागीदारी में असफल रहता है। विवाह, व्यापार छोटी सी बात पर विच्छेद हो जाता है। वक्री शनि स्त्री वियोग, शनि (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) राशि में अनेक विवाह या यौन संबंध कराता है। स्त्री की पत्रिका में यह होता है। शनि अष्टम् भाव में ज्योतिष, दैवज्ञ, दार्शनिक एवं वक्ता होते हैं। लेकिन साथ में अपनी दुष्टतावश तांत्रिक, भूत, विद्या, काला जादू से धन कमाने में शक्ति खर्च करते हैं। नवम् का वक्री शनि उत्तराधिकार में प्राप्त पुरानी सम्पत्ति की मरम्मत कराता है। धार्मिक, आर्थिक समस्याओं से घिरा व्यक्ति धन-जायदाद के प्रति लापरवाह भी रहता है। दशम् का वक्री शनि अपने पद का दुरुपयोग करने में नहीं हिचकिचाते हैं। बलवान शनि कानूनची, श्रेष्ठ वकील, न्यायाधीश व बेरिस्टर होते हैं। मित्र राशि का शनि मुखिया, मंत्री, मजिस्ट्रेट भी बनाता है। एकादश का वक्री शनि चापलूसों व निम्न स्तर के व्यक्तियों से सम्पर्क रखता है। द्वादश का वक्री शनि निर्दयी, आलसी, अंगहीन, निर्धन होता है। अतः यहां व्यक्ति को अध्यात्मिक चेतना मजबूत बनाना चाहिए। परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी निर्वाह करना चाहिए।

शनि की साढ़े-साती

जब जन्म पत्रिका में दी गई राशि के 12वें भाव में गोचर (आकाश की ग्रहदशा) में आता है तो साढ़े-साती शुरू हो जाती है। फिर गोचर का शनि जन्म की चन्द्र राशि तथा चन्द्रमा से द्वितीय भाव में गोचर में शनि की स्थिति बनी रहने तक प्रत्येक राशि में ढाई वर्ष अर्थात् तीन भाव में साढ़े सात वर्ष रहती है।

शनि मानसिक परेशानी उत्पन्न कर बुद्धि का हरण करता है। पुनः दुर्बुद्धि प्रदान कर सब काम बिगाड़ देता है। शनि की खराब साढ़े साती का सबसे पहला कार्य है-वाहन नष्ट करना। शनि कामदेव को जागृत कर चरित्र भ्रष्ट भी करता है। पूजा-पाठ में बिल्कुल मन नहीं लगता।

साढ़े साती अनेक प्रकार के कष्ट, क्लेश, कार्यों में असफलता, प्रवास, संतान को कष्ट, सुख-सम्पत्ति का नाश, अशांति, शारीरिक कष्ट एवं दुर्बलता होती है। साढ़े साती में सर्वप्रथम वाहन नष्ट होने शुरू हो जाते हैं।

दीर्घायु व्यक्ति के जीवन में तीन बार साढ़ेसाती आती है। पहली साढ़ेसाती अत्यंत कष्टकारी, दूसरी कम कष्टकारी एवं तीसरी मृत्युदायक सी होती है। साढ़ेसाती हमेशा कष्टकारक नहीं रहती। कभी-कभी राजयोग बनाकर राजपदों पर आसीन कर देती है। परिवाद में एक साथ साढ़ेसाती आना सामाजिक व राजनैतिक पतन का कारक है। चौथी साढ़ेसाती किसी को नहीं आती है।

शनि प्रायः दमा, दंतरोग, क्षय, जोड़ों में दर्द, मृत्यु, दुर्घटना, कलह, दरिद्रता, जेल, वियोग, दुर्बलता, राज्य का पदच्युत, विपत्ति, चोरी, अभाव, हड्डी से संबंधित बीमारी देता है। शक्तिशाली शरीर का स्वामी भी पांव व घुटने दुर्बल होते हैं। पेट, गुर्दे तथा मज्जा तन्तु दुर्बल रहते हैं। पांव में मोंच, उदर विकार, रक्त अल्पता, खुजली, गैस बनना, बहरा होना, पागलपन, गंजापन, स्नायु विकार, अल्सर, भगन्दर, फालिस व लकवा, कुष्ठ, लंगड़ापन तथा गला रोग का कारक है। अतः शराब, तम्बाकू, नशीले पदार्थ, जुआ, वेश्यावृत्ति से दूर रहना चाहिए। क्योंकि शनि को खराब कार्य करने की शुरुआत यहीं से होती है। शनि का वाहन गीध होने के कारण कब्रिस्तान, खंडहर, गुफा, कोयला, दुर्गन्ध स्थान, पहाड़, खान, जंगल है। शनि का संबंध योग में सहस्त्रार चक्र से भी है। इसी कारण योगी की मृत्यु यहां पर होने की संभावना रहती है।

लग्नेश शनि 6, 8, 12 में, चन्द्र शनि या मंगल शनि की युति हो तो क्षय रोग होता है। शनि का संबंध प्रथम, सप्तम भाव व शुक्र के होने पर हरनिया रोग होता है। शनि का प्रथम भाव से संबंध तथा सप्तम से बुध शनि का संबंध मधुमेह कारक है। शनि के प्रथम भाव का संबंध दशम भाव से होने पर हृदय रोग होता है। शनि का प्रथम भाव से संबंध या लग्नेश (6, 8, 12) में हो सप्तम का शुक्र और मंगल से संबंध हो तो गुदा रोग, बवासीर होती है। प्रथम भाव का सप्तम भाव से शनि चन्द्र का संबंध जलोदर बनाता है। प्रथम भाव का अष्टम भाव से संबंध के साथ शनि मंगल का संबंध कैंसर को जन्म देता है।

उपाय

हनुमान की उपासना, शनि मंत्रों की उपासना से शनि का शमन होता है। सूर्य उपासना भी प्रभावशाली रहती है। शनि का रत्न नीलम है। सोने की खान से निकलने वाला रत्न लाजवर्त उपरत्न है। सफलता के मुकाबले कोई सफलता नहीं। सफलता चाहे किसी भी तरह से प्राप्त की गई हो परन्तु सफलता की उपलब्धि सारे अवगुणों को ढक देती है। शनि प्रधान व्यक्ति ऐसा सोचते हैं।

लेखक : डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल
चक्रपाणि हर्बल रिसर्च फाउन्डेशन
चन्दौसी ग्रीन, मकान नं. 2, ग्राम-देवर खेड़ा
चन्दौसी-202412 मो. 9412140444

विभिन्न राशियों पर केतु के गोचर का प्रभाव

मेष राशि–जनवरी से जुलाई तक स्वभाव में उग्रता रहेगी। शेयर सट्टे में हानि होगी। किसी से धोखा मिलेगा। कोर्ट-कचहरी के कार्यो तथा वाद-विवाद में हानि होगी। विपरीत परिणाम मिलेंगे। मिथ्या भाषण की प्रवृति रहेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। इसके बाद अगस्त तथा सितम्बर में विवादों का अन्त होगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। अक्टूबर से वर्ष के अन्त तक कठिनाईयों में घिरेंगे। मन चिंता तथा भयग्रस्त रहेगा। चोट लगने की आशंका रहेगी। आंख में पीड़ा होगी। विदेश यात्रा का योग बनेगा। स्थान परिवर्तन होगा। किसी बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी।

वृष राशि–जनवरी से मई तक दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग रहेगा। विदेश यात्रा का योग बनेगा। आर्थिक स्थिति असंतोषजनक रहेगी। मन अस्थिर रहेगा। रोग पीड़ित होंगे। जून से अगस्त तक की अवधि में कठिनाईयां समाप्त होंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। रोग मुक्त होंगे। सितम्बर में चिंतायें बढ़ेंगी। चोट लगने की आशंका रहेगी। अक्टूबर में कार्य सम्पादन में उत्साह रहेगा। वैवाहिक जीवन का सुख रहेगा। नवम्बर-दिसम्बर में व्यर्थ भ्रमण होगा। मन में उदासीनता छाई रहेगी। व्यर्थ समय नष्ट करने की प्रवृति रहेगी। इसके बाद मार्च तक की अवधि महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें समाप्त होंगी।

मिथुन राशि–जनवरी से सितम्बर तक कठिनाईयां बनेंगी। महिलाओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। वैवाहिक सुख में कमी आयेगी। किसी दुष्ट प्रवृति के मनुष्य से सम्पर्क होगा। अविवाहितों के विजातीय प्रेम सम्बन्धों की समाप्ति तथा विवश होकर विवाह करने में होगी। पानी से भय रहेगा। निकट सम्बन्धियों में किसी का असामयिक अवसान होगा। व्यर्थ भ्रमण होगा। कार्यों में उदासीनता रहेगी। व्यर्थ बातों में समय नष्ट करेंगे। अक्टूबर से मार्च तक की अवधि में आर्थिक सुधार होगा। विरोधी परास्त होंगे। बातचीत में कुशलता आयेगी। यश-प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। तथापि अन्यों द्वारा गलत समझे जाने के कारण मानसिक तनाव बनेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। ऋण मुक्त होंगे। प्रेम सम्बन्धों में उदासीन रहेंगे। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

कर्क राशि–जनवरी से अगस्त तक आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। विभिन्न मार्गो से धन लाभ मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। बौद्धिकता का विकास होगा। उदर रोग होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। ऋण मुक्त होंगे। प्रेम सम्बन्धों में उदासीनता आयेगी। अध्यात्म की ओर झुकाव होगा। सितम्बर से जनवरी 21 तक कार्य पद्धति में सुधार होगा। संतान के प्रति चिंता रहेगी। भाग्योदय में कमी रहेगी। महिलाओं में प्रजनन अंगों सम्बन्धी रोग की आशंका रहेगी। जन्म कुंडली में रोग भाव बिगड़ा होने से पेट की किसी बीमारी अथवा अल्सर का योग रहेगा। फरवरी से वर्ष के अन्त तक स्वास्थ्य में सुधार रहेगा। सन्तान सुख मिलेगा।

सिंह राशि–जन. से सितम्बर तक भाग्योन्नति में बाधा आयेगी। कार्य पद्धति में सुधार होगा। जन्म कुंडली में संतान भाव दूषित होने पर सन्तान कष्ट रहेगा। अक्तूबर से मार्च तक मन अकारण चिन्ताग्रस्त रहेगा। शेयर, सट्टे तथा भूमि-भवन के कार्यों में हानि होगी। अग्निकांड अथवा दुर्घटना होने का योग रहेगा। सर दर्द अथवा किसी अन्य असाध्य रोग से पीड़ित होंगे। जन्म कुण्डली का रोग स्थान बिगड़ा होने पर हृदय रोग की आशंका रहेगी। मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न होगी।

कन्या राशि–जनवरी से सितम्बर तक अग्निकांड अथवा दुर्घटना होने का योग रहेगा। भूमि-भवन की हानि होगी। मन चिन्ताग्रस्त रहेगा। सर दर्द अथवा असाध्य रोग से पीड़ित होंगे। जन्म कुंडली का रोग स्थान बिगड़ा होने पर हृदय रोग की आशंका रहेगी। तेज नष्ट होगा। मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न होगी। अक्टूबर से राजयोग का फल मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक उन्नति होगी। आय के कई स्त्रोत बनेंगे। धनागमन बढ़ेगा। यश-प्रतिष्ठा मिलेगी। चुनौतीपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। त्वचा अथवा यौनिक रोग से कष्ट होगा।

तुला राशि–जनवरी से सितम्बर तक राजयोग का फल मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक उन्नति होगी। कई माध्यमों से धन लाभ होगा। यश मिलेगा। साहसिक कार्यों में प्रवृति बनेगी। अक्टूबर से विग्रह-विवाद बढ़ेंगे। खान-पान बिगड़ेगा। मुंह में छाले अथवा किसी अन्य रोग से कष्ट होगा। मानसिक चिंतायें रहेंगी। धन हानि होने से आर्थिक स्थिति खराब होगी।

वृश्चिक राशि–किसी रोग से पीड़ित होंगे। धन हानि होने से आर्थिक स्थिति खराब होगी। चिंतायें बढ़ेंगी। व्यर्थ विवाद बढ़ेंगे। अक्टूबर से मन चिंताग्रस्त रहेगा। रोगों से कष्ट होगा। सहोदरों से विवाद होंगे। अग्निकांड से हानि होगी। धार्मिक विचार बलवती होंगे। आकस्मिक रूप से धन लाभ मिलेगा। आंख में चोट लगने की सम्भावना बनेगी।

धनु राशि–सहोदरों से विवाद होंगे। अग्निकांड से हानि होगी। आकस्मिक धन लाभ मिलेगा। आंख में चोट लगने की सम्भावना बनेगी। दिसम्बर से आर्थिक हानि के साथ-साथ व्यय बढ़ेगा। सगे-सम्बन्धियों में रोगों से कष्ट रहेगा। एक्सीडेन्ट्स का योग बनेगा। वाहन हानि होगी अथवा वाहनों की उपलब्धता में कमी रहेगी। आंखों में पीड़ा होगी। सगे-सम्बन्धियों के कारण परिवार में मन-मुटाव होंगे। आत्म विश्लेषण तथा स्वयं को स्थापित करने की प्रवृति बनेगी। विचारों में सात्विकता बनेगी।

मकर राशि–जनवरी से मन भ्रमित रहेगा। आर्थिक हानि होगी। सामान्य से अधिक व्यय होगा। विचारों में आध्यात्मिकता का समावेश होगा। परिवार में मन-मुटाव होंगे। कृषि माध्यमों से लाभ मिलेगा। उद्योगों में सफलता मिलेगी। वैभव की वस्तुओं का संग्रह करेंगे। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पदोन्नति का योग बनेगा। सरकारी कार्यों में लाभ होगा। आर्थिक उन्नति होगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों से विरोध रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। बड़े भाई अथवा बहन का स्वास्थ्य गिरेगा।

कुंभ राशि–वैभव की वस्तुओं का संग्रह होगा। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पदोन्नति का योग बनेगा। सरकारी कार्यों से लाभ होगा। आर्थिक उन्नति होगी। विरोधी परास्त होंगे। अक्टूबर से आर्थिक लाभ होगा परन्तु शेयर मार्केट में काम करने की प्रवृति से हानि उठायेंगे। अग्निकांड अथवा विद्युत के कारण हानि होगी। तीर्थ यात्रायें होंगी। किसी धार्मिक संस्थान अथवा कार्यक्रम की अध्यक्षता मिलेगी।

मीन राशि–आर्थिक लाभ होगा परन्तु शेयर मार्केट में काम करने की प्रवृति से हानि उठायेंगे। तीर्थ यात्रायें होंगी। किसी धार्मिक संस्थान अथवा कार्यक्रम की अध्यक्षता मिलेगी। अक्टूबर से मार्च 2021 के अन्त तक स्वभाव में उग्रता रहेगी। किसी से धोखा मिलेगा। कोर्ट-कचहरी वाद-विवाद में हानि होगी। विपरीत परिणाम मिलेंगे। मिथ्या भाषण की प्रवृति रहेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। जीवन के प्रति नजरिया बदलेगा।

लाभ-खर्च कोष्ठक वि. सं. 2077

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
व्यय	5	11	11	5	2	11	11	5	8	11	11	8

आय-व्यय देखने की विधि–अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें 1 घटा दें, शेष को 8 से भाग करने पर यदि अंक 1 शेष बचे तो लाभ, 2-सुख, 3-चिन्ता, 4-रोग, 5-अपयश, 6-सम्मान, 7-विजय, 8 या 0 बचें तो हानि योग हैं। यह फल सारांश रूप में माना जाता है।

भवन की प्राप्ति होगी। आँखों तथा उदर सम्बन्धी रोगों से कष्ट रहेगा। कष्ट निवारण के लिये हनुमदोपासना करें। **शुभ दिवस**-2, 5, 7, 10, 12, 21, 26, 31 हैं। **अशुभ दिवस**-01, 03, 06, 08, 14, 16, 18, 23, 28 हैं।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

वृष



स्वामी-शुक्र नग-हीरा शुभ

अप्रैल 2019–धनागम में वृद्धि होगी। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नये भवन की प्राप्ति होगी। विद्याध्यास में सफलता मिलेगी। प्राध्यापक तथा वकीलों के लिये समय उत्तम रहेगा। सफल यात्रायें होंगी। सूर्य, मंगल के अरिष्ट गोचर से निर्बलता तथा थकान से कार्यों पर सुचारु रूप से ध्यान नहीं दे पायेंगे। कार्यभार में परिवर्तन होगा। व्यर्थ के विवादों में फसेंगे। शिक्षा में विघ्न रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये हनुमदोपासना करें। **शुभ दिवस**-08, 20, 25, 29 हैं। **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 10, 12, 15, 17, 22, 27 हैं। **मई**–प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनागम बढ़ेगा। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। नेत्र विकार के अतिरिक्त स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विदेश अथवा सुदूर स्थान की लाभकारी यात्रायें होंगी। शिक्षा में प्रगति होगी। कार्य सम्पादन में अवांछित मार्ग अपनाने से असफलता मिलेगी। पिता अथवा भाई के स्वास्थ्य में गिरावट रहेगी। धार्मिक कार्यों से विरक्ति होगी। **शुभ दिवस**- 06, 17, 22, 27 हैं। **अशुभ दिवस**-02, 04, 08, 10, 12, 14, 19, 24, 29, 31 हैं। **जून**–कार्यों में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होगी। स्थाई सम्पत्ति प्राप्त होगी। मुकद्दमों में सफलता मिलेगी। सहोदरों से लाभ प्राप्त करेंगे। सूर्य तथा शनि का अरिष्ट गोचर सर दर्द एवं नेत्र पीड़ा देगा। निम्न स्तरीय व्यक्तियों से मेल मिलाप बढ़ेगा। निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा होगा। व्यर्थ यात्रायें होंगी। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। मन में असंतोष रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें। **शुभ दिवस**-02, 13, 18, 29 हैं। **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 11, 16, 21, 23, 25, 27 हैं। **जुलाई**–भूमि-भवन के कार्यों से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। सहोदरों से लाभ होगा। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नये भवन की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। महिलावर्ग से हानि होगी। धन हानि का योग रहेगा। विरोधी पक्ष प्रबल होगा। मन में प्रसन्नता का अभाव रहेगा। बन्धन तथा आरोपों का भय बनेगा। **शुभ दिवस**-10, 15, 26 तथा **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 08, 13, 18, 20, 22, 24, 29, 31 हैं। **अगस्त**–मास का ग्रह गोचर आपके अनुकूल नहीं है। सभी ग्रह विपरीत फल कर रहे हैं। दाम्पत्य सुख में बाधा आयेगी। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। सुख शांति का अभाव रहेगा। व्यय अधिक रहेगा। यात्राओं में असुविधा होगी। मन व्यथित रहेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में अरुचि रहेगी। सहयोगियों के कारण अवरोधों में वृद्धि होगी। पिता अथवा भाई के जीवन को संकट रहेगा। स्वयं नेत्र विकार से पीड़ित होंगे। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह पूजन करें। **शुभ दिवस**- 04, 07, 17, 23, **अशुभ दिवस**-02, 09, 12, 14, 19, 21, 25, 27, 29 हैं। **सितंबर**–परिश्रम तथा साहस में वृद्धि होगी। वाणी में सरलता तथा स्पष्टता रहेगी। हानियों से बचाव होगा। पद-प्रतिष्ठा में उन्नति होगी। व्यय की अधिकता। मन प्रसन्न रहेगा। धार्मिक कार्यों में समय देंगे। बुध के अरिष्ट गोचर से आकस्मिक रुप से किसी झगड़े-झंझट में फसेंगे। योजनाओं के अनुरूप कार्य करने में अवरोध बनेंगे। भ्रम की स्थिति बनेगी। सन्तान रोग ग्रस्त होगी। यात्राओं में दुर्घटना का भय रहेगा। बुध के मंत्रों का जप करने से अरिष्ट फलों का निराकरण होगा। **शुभ दिवस**- 01, 03, 08, 13, 30 तथा **अशुभ दिवस**-06, 11, 15, 17, 19, 21, 23, 26, 28 हैं। **अक्टूबर**–स्वभाव की नम्रता से अवरोधों को दमन करने में सफलता मिलेगी। वाणी में सरलता तथा स्पष्टता से राजकीय सहयोग रहेगा। सफल यात्रायें होंगी। भाग्योन्नति होगी। कष्टों एवं पीड़ा से छुटकारा मिलेगा। धन-धान्य का लाभ मिलेगा। सुख-समृद्धि रहेगी। प्रशासनिक सहयोग मिलने से मानसिक शांति बनेगी। महामृत्युंजय मंत्र-जप करने से अरिष्ट निवारण होगा। **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 10, 13, 15, 17, 19, 21, 23, 25, 28, 30 हैं। **नवंबर**–परिवारजनों एवं मित्रों का सहयोग मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति। कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। व्यवसायिक बाधायें समाप्त होंगी। यात्राओं में लाभ। रोग मुक्त होंगे। धन प्राप्ति का योग। वाद-विवादों में समझोतों के लिये विवश होना पड़ेगा। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ न मिलने से मन चिंताग्रस्त रहेगा। विभागीय परीक्षाओं में असफलता। अहंकारवश निर्णय लेने से हानि होगी। अरिष्ट निवारण के लिये दुर्गासप्तशती का पाठ करें। **शुभ दिवस**-29, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 09, 11, 13, 15, 17, 19, 21, 24, 26 हैं। **दिसंबर**–परिश्रम के उपरान्त भी अपेक्षित सफलता के अभाव में मन खिन्न होगा। आर्थिक कठिनाईयां बनी रहेंगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य में गिरावट। किसी वस्तु की चोरी अथवा हानि होगी। महिलाओं के साथ व्यवहार में सावधानी अपेक्षित रहेगी। शासन-प्रशासन के साथ कार्य सम्पादन में धैर्य पूर्वक काम लें। राजकीय दंड का भुगतान करना पड़ेगा। व्यय बढ़ेगा। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। अरिष्ट निवारण के लिए पंचमुखी हनुमत् कवच का पाठ करें। **शुभ दिवस**-04, 10, 12, 21, 26, 31, **अशुभ दिवस**-01, 06, 08, 14, 17, 19, 24, 29 हैं। **जनवरी 2021**–मास के प्रथम तीन सप्ताहों में शनि देव की कृपा से आर्थिक लाभ मिलेगा। राजकीय अथवा प्रशासनिक कार्यों में सफलता। उन्नति का अवसर प्राप्त होगा। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। दाम्पत्य जीवन में बाधा। व्यय बढ़ेगा। महिलाओं के कारण कष्ट की स्थिति बनेगी। अरिष्ट निवारण के लिये आदित्य हृदय स्तोत्र तथा दुर्गासप्तशती का पाठ करें। **शुभ दिवस**-01, 11, 17, 26, 29, **अशुभ दिवस**- 04, 06, 09, 13, 15, 19, 21, 24, 31 हैं। **फरवरी**–राजकीय सहयोग रहेगा। शासन-सत्ता से लाभ मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लाभदायक यात्रायें होंगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पारिवारिक जीवन का सुख मिलेगा। दुर्घटना से बचाव होगा। भाग्योन्नति-पदोन्नति का सुख रहेगा। विरोधी बढ़ेंगे। धार्मिक कार्यों से विरक्ति होगी। अरिष्ट निवारण के लिये पीपल के वृक्ष पर जल अर्पित करें। **शुभ दिवस**-03, 13, 23, 25, **अशुभ दिवस**-05, 07, 09, 11, 15, 18, 20, 28। **मार्च**–व्यवसायिक सफलता मिलेगी। सामाजिक कार्यों में समय देंगे। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव में प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। पदोन्नति होगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। सफल यात्रायें होंगी। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। **शुभ दिवस**-01, 06, 12, 21, 23, 28, **अशुभ दिवस**-03, 08, 10, 14, 16, 18, 26, 31 हैं।

मिथुन-क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन



स्वामी-बुध नग-पन्ना शुभ

अप्रैल 2019–मास के प्रथम पक्ष में मंगल, गुरु, शनि तथा राहु का गोचर कष्टकारी रहेगा। अग्निकांड से नुकसान होगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। स्थान परिवर्तन निरस्त होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। आर्थिक उन्नति होगी। सन्तान सुख मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अहंकार के वशीभूत होकर निर्णय लेने से बचें। **शुभ दिवस**-04, 22, 27, **अशुभ दिवस**-02, 06, 08, 10, 12, 15, 17, 20, 25, 29 हैं। **मई**–मास का ग्रह गोचर आपके अनुकूल नहीं है। अहंकारवश उचित निर्णय लेने में बाधा रहेगी। वाणी में कठोरता

पृष्ठ 37 का शेष

विभिन्न राशियों पर केतु के गोचर का प्रभाव

मेष राशि–जनवरी से जुलाई तक स्वभाव में उग्रता रहेगी। शेयर सट्टे में हानि होगी। किसी से धोखा मिलेगा। कोर्ट-कचहरी के कार्यों तथा वाद-विवाद में हानि होगी। विपरीत परिणाम मिलेंगे। मिथ्या भाषण की प्रवृति रहेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। इसके बाद अगस्त तथा सितम्बर में विवादों का अन्त होगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। अक्टूबर से वर्ष के अन्त तक कठिनाईयों में घिरेंगे। मन चिंता तथा भयग्रस्त रहेगा। चोट लगने की आशंका रहेगी। आंख में पीड़ा होगी। विदेश यात्रा का योग बनेगा। स्थान परिवर्तन होगा। किसी बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी।

वृष राशि–जनवरी से मई तक दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग रहेगा। विदेश यात्रा का योग बनेगा। आर्थिक स्थिति असंतोषजनक रहेगी। मन अस्थिर रहेगा। रोग पीड़ित होंगे। जून से अगस्त तक की अवधि में कठिनाईयां समाप्त होंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। रोग मुक्त होंगे। सितम्बर में चिंतायें बढ़ेंगी। चोट लगने की आशंका रहेगी। अक्टूबर में कार्य सम्पादन में उत्साह रहेगा। वैवाहिक जीवन का सुख रहेगा। नवम्बर-दिसम्बर में व्यर्थ भ्रमण होगा। मन में उदासीनता छाई रहेगी। व्यर्थ समय नष्ट करने की प्रवृति रहेगी। इसके बाद मार्च तक की अवधि महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें समाप्त होंगी।

मिथुन राशि–जनवरी से सितम्बर तक कठिनाईयां बनेंगी। महिलाओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। वैवाहिक सुख में कमी आयेगी। किसी दुष्ट प्रवृति के मनुष्य से सम्पर्क होगा। अविवाहितों के विजातीय प्रेम सम्बन्धों की समाप्ति तथा विवश होकर विवाह करने में होगी। पानी से भय रहेगा। निकट सम्बन्धियों में किसी का असामयिक अवसान होगा। व्यर्थ भ्रमण होगा। कार्यों में उदासीनता रहेगी। व्यर्थ बातों में समय नष्ट करेंगे। अक्टूबर से मार्च तक की अवधि में आर्थिक सुधार होगा। विरोधी परास्त होंगे। बातचीत में कुशलता आयेगी। यश-प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। तथापि अन्यों द्वारा गलत समझे जाने के कारण मानसिक तनाव बनेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। ऋण मुक्त होंगे। प्रेम सम्बन्धों में उदासीन रहेंगे। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

कर्क राशि–जनवरी से अगस्त तक आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। विभिन्न मार्गो से धन लाभ मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। बौद्धिकता का विकास होगा। उदर रोग होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। ऋण मुक्त होंगे। प्रेम सम्बन्धों में उदासीनता आयेगी। अध्यात्म की ओर झुकाव होगा। सितम्बर से जनवरी 21 तक कार्य पद्धति में सुधार होगा। संतान के प्रति चिंता रहेगी। भाग्योदय में कमी रहेगी। महिलाओं में प्रजनन अंगों सम्बन्धी रोग की आशंका रहेगी। जन्म कुंडली में रोग भाव बिगड़ा होने से पेट की किसी बीमारी अथवा अल्सर का योग रहेगा। फरवरी से वर्ष के अन्त तक स्वास्थ्य में सुधार रहेगा। सन्तान सुख मिलेगा।

सिंह राशि–जन. से सितम्बर तक भाग्योन्नति में बाधा आयेगी। कार्य पद्धति में सुधार होगा। जन्म कुंडली में संतान भाव दूषित होने पर सन्तान कष्ट रहेगा। अक्तूबर से मार्च तक मन अकारण चिन्ताग्रस्त रहेगा। शेयर, सट्टे तथा भूमि-भवन के कार्यों में हानि होगी। अग्निकांड अथवा दुर्घटना होने का योग रहेगा। सर दर्द अथवा किसी अन्य असाध्य रोग से पीड़ित होंगे। जन्म कुण्डली का रोग स्थान बिगड़ा होने पर हृदय रोग की आशंका रहेगी। मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न होगी।

कन्या राशि–जनवरी से सितम्बर तक अग्निकांड अथवा दुर्घटना होने का योग रहेगा। भूमि-भवन की हानि होगी। मन चिन्ताग्रस्त रहेगा। सर दर्द अथवा असाध्य रोग से पीड़ित होंगे। जन्म कुंडली का रोग स्थान बिगड़ा होने पर हृदय रोग की आशंका रहेगी। तेज नष्ट होगा। मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न होगी। अक्टूबर से राजयोग का फल मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक उन्नति होगी। आय के कई स्त्रोत बनेंगे। धनागमन बढ़ेगा। यश-प्रतिष्ठा मिलेगी। चुनौतीपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। त्वचा अथवा यौनिक रोग से कष्ट होगा।

तुला राशि–जनवरी से सितम्बर तक राजयोग का फल मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक उन्नति होगी। कई माध्यमों से धन लाभ होगा। यश मिलेगा। साहसिक कार्यों में प्रवृति बनेगी। अक्टूबर से विग्रह-विवाद बढ़ेंगे। खान-पान बिगड़ेगा। मुंह में छाले अथवा किसी अन्य रोग से कष्ट होगा। मानसिक चिंतायें रहेंगी। धन हानि होने से आर्थिक स्थिति खराब होगी।

वृश्चिक राशि–किसी रोग से पीड़ित होंगे। धन हानि होने से आर्थिक स्थिति खराब होगी। चिंतायें बढ़ेंगी। व्यर्थ विवाद बढ़ेंगे। अक्टूबर से मन चिंताग्रस्त रहेगा। रोगों से कष्ट होगा। सहोदरों से विवाद होंगे। अग्निकांड से हानि होगी। धार्मिक विचार बलवती होंगे। आकस्मिक रूप से धन लाभ मिलेगा। आंख में चोट लगने की सम्भावना बनेगी।

धनु राशि–सहोदरों से विवाद होंगे। अग्निकांड से हानि होगी। आकस्मिक धन लाभ मिलेगा। आंख में चोट लगने की सम्भावना बनेगी। दिसम्बर से आर्थिक हानि के साथ-साथ व्यय बढ़ेगा। सगे-सम्बन्धियों में रोगों से कष्ट रहेगा। एक्सीडेन्ट्स का योग बनेगा। वाहन हानि होगी अथवा वाहनों की उपलब्धता में कमी रहेगी। आंखों में पीड़ा होगी। सगे-सम्बन्धियों के कारण परिवार में मन-मुटाव होंगे। आत्म विश्लेषण तथा स्वयं को स्थापित करने की प्रवृति बनेगी। विचारों में सात्विकता बनेगी।

मकर राशि–जनवरी से मन भ्रमित रहेगा। आर्थिक हानि होगी। सामान्य से अधिक व्यय होगा। विचारों में आध्यात्मिकता का समावेश होगा। परिवार में मन-मुटाव होंगे। कृषि माध्यमों से लाभ मिलेगा। उद्योगों में सफलता मिलेगी। वैभव की वस्तुओं का संग्रह करेंगे। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पदोन्नति का योग बनेगा। सरकारी कार्यों में लाभ होगा। आर्थिक उन्नति होगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों से विरोध रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। बड़े भाई अथवा बहन का स्वास्थ्य गिरेगा।

कुंभ राशि–वैभव की वस्तुओं का संग्रह होगा। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पदोन्नति का योग बनेगा। सरकारी कार्यों से लाभ होगा। आर्थिक उन्नति होगी। विरोधी परास्त होंगे। अक्टूबर से आर्थिक लाभ होगा परन्तु शेयर मार्केट में काम करने की प्रवृति से हानि उठायेंगे। अग्निकांड अथवा विद्युत के कारण हानि होगी। तीर्थ यात्रायें होंगी। किसी धार्मिक संस्थान अथवा कार्यक्रम की अध्यक्षता मिलेगी।

मीन राशि–आर्थिक लाभ होगा परन्तु शेयर मार्केट में काम करने की प्रवृति से हानि उठायेंगे। तीर्थ यात्रायें होंगी। किसी धार्मिक संस्थान अथवा कार्यक्रम की अध्यक्षता मिलेगी। अक्टूबर से मार्च 2021 के अन्त तक स्वभाव में उग्रता रहेगी। किसी से धोखा मिलेगा। कोर्ट-कचहरी वाद-विवाद में हानि होगी। विपरीत परिणाम मिलेंगे। मिथ्या भाषण की प्रवृति रहेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। जीवन के प्रति नजरिया बदलेगा।

लाभ-खर्च कोष्ठक वि. सं. 2077

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
व्यय	5	11	11	5	2	11	11	5	8	11	11	8

आय-व्यय देखने की विधि–अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें 1 घटा दें, शेष को 8 से भाग करने पर यदि अंक 1 शेष बचे तो लाभ, 2-सुख, 3-चिन्ता, 4-रोग, 5-अपयश, 6-सम्मान, 7-विजय, 8 या 0 बचें तो हानि योग हैं। यह फल सारांश रूप में माना जाता है।

भवन की प्राप्ति होगी। आंखों तथा उदर सम्बन्धी रोगों से कष्ट रहेगा। कष्ट निवारण के लिये हनुमदोपासना करें। **शुभ दिवस**-2, 5, 7, 10, 12, 21, 26, 31 हैं। **अशुभ दिवस**-01, 03, 06, 08, 14, 16, 18, 23, 28 हैं।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

वृष



स्वामी-शुक्र नग-हीरा शुभ

अप्रैल 2019—धनागम में वृद्धि होगी। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नये भवन की प्राप्ति होगी। विद्याभ्यास में सफलता मिलेगी। प्राध्यापक तथा वकीलों के लिये समय उत्तम रहेगा। सफल यात्रायें होंगी। सूर्य, मंगल के अरिष्ट गोचर से निर्बलता तथा थकान से कार्यों पर सुचारु रूप से ध्यान नहीं दे पायेंगे। कार्यभार में परिवर्तन होगा। व्यर्थ के विवादों में फसेंगे। शिक्षा में विघ्न रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये हनुमदोपासना करें। **शुभ दिवस**-08, 20, 25, 29 हैं। **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 10, 12, 15, 17, 22, 27 हैं। **मई**—प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनागम बढ़ेगा। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। नेत्र विकार के अतिरिक्त स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विदेश अथवा सुदूर स्थान की लाभकारी यात्रायें होंगी। शिक्षा में प्रगति होगी। कार्य सम्पादन में अवांछित मार्ग अपनाने से असफलता मिलेगी। पिता अथवा भाई के स्वास्थ्य में गिरावट रहेगी। धार्मिक कार्यों से विरक्ति होगी। **शुभ दिवस**- 06, 17, 22, 27 हैं। **अशुभ दिवस**-02, 04, 08, 10, 12, 14, 19, 24, 29, 31 हैं। **जून**—कार्यों में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होगी। स्थाई सम्पत्ति प्राप्त होगी। मुकद्दमों में सफलता मिलेगी। सहोदरों से लाभ प्राप्त करेंगे। सूर्य तथा शनि का अरिष्ट गोचर सर दर्द एवं नेत्र पीड़ा देगा। निम्न स्तरीय व्यक्तियों से मेल मिलाप बढ़ेगा। निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा होगा। व्यर्थ यात्रायें होंगी। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। मन में असंतोष रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें। **शुभ दिवस**-02, 13, 18, 29 हैं। **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 11, 16, 21, 23, 25, 27 हैं। **जुलाई**—भूमि-भवन के कार्यों से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। सहोदरों से लाभ होगा। दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नये भवन की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। महिलावर्ग से हानि होगी। धन हानि का योग रहेगा। विरोधी पक्ष प्रबल होगा। मन में प्रसन्नता का अभाव रहेगा। बन्धन तथा आरोपों का भय बनेगा। **शुभ दिवस**-10, 15, 26 तथा **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 08, 13, 18, 20, 22, 24, 29, 31 हैं। **अगस्त**—मास का ग्रह गोचर आपके अनुकूल नहीं है। सभी ग्रह विपरीत फल कर रहे हैं। दाम्पत्य सुख में बाधा आयेगी। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। सुख शांति का अभाव रहेगा। व्यय अधिक रहेगा। यात्राओं में असुविधा होगी। मन व्यथित रहेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में अरुचि रहेगी। सहयोगियों के कारण अवरोधों में वृद्धि होगी। पिता अथवा भाई के जीवन को संकट रहेगा। स्वयं नेत्र विकार से पीड़ित होंगे। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह पूजन करें। **शुभ दिवस**- 04, 07, 17, 23, **अशुभ दिवस**-02, 09, 12, 14, 19, 21, 25, 27, 29 हैं। **सितंबर**—परिश्रम तथा साहस में वृद्धि होगी। वाणी में सरलता तथा स्पष्टता रहेगी। हानियों से बचाव होगा। पद-प्रतिष्ठा में उन्नति होगी। व्यय की अधिकता। मन प्रसन्न रहेगा। धार्मिक कार्यों में समय देंगे। बुध के अरिष्ट गोचर से आकस्मिक रुप से किसी झगड़े-झंझट में फसेंगे। योजनाओं के अनुरूप कार्य करने में अवरोध बनेंगे। भ्रम की स्थिति बनेगी। सन्तान रोग ग्रस्त होगी। यात्राओं में दुर्घटना का भय रहेगा। बुध के मंत्रों का जप करने से अरिष्ट फलों का निराकरण होगा। **शुभ दिवस**- 01, 03, 08, 13, 30 तथा **अशुभ दिवस**-06, 11, 15, 17, 19, 21, 23, 26, 28 हैं। **अक्टूबर**—स्वभाव की नम्रता से अवरोधों को दमन करने में सफलता मिलेगी। वाणी में सरलता तथा स्पष्टता से राजकीय सहयोग रहेगा। सफल यात्रायें होंगी। भाग्योन्नति होगी। कष्टों एवं पीड़ा से छुटकरा मिलेगा। धन-धान्य का लाभ मिलेगा। सुख-समृद्धि रहेगी। प्रशासनिक सहयोग मिलने से मानसिक शांति बनेगी। महामृत्युंजय मंत्र-जप करने से अरिष्ट निवारण होगा। **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 10, 13, 15, 17, 19, 21, 23, 25, 28, 30 हैं। **नवंबर**—परिवारजनों एवं मित्रों का सहयोग मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति। कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। व्यवसायिक बाधायें समाप्त होंगी। यात्राओं में लाभ। रोग मुक्त होंगे। धन प्राप्ति का योग। वाद-विवादों में समझोतों के लिये विवश होना पड़ेगा। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ न मिलने से मन चिंताग्रस्त रहेगा। विभागीय परीक्षाओं में असफलता। अहंकारवश निर्णय लेने से हानि होगी। अरिष्ट निवारण के लिये दुर्गासप्तशती का पाठ करें। **शुभ दिवस**-29, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 09, 11, 13, 15, 17, 19, 21, 24, 26 हैं। **दिसंबर**—परिश्रम के उपरान्त भी अपेक्षित सफलता के अभाव में मन खिन्न होगा। आर्थिक कठिनाईयां बनी रहेंगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य में गिरावट। किसी वस्तु की चोरी अथवा हानि होगी। महिलाओं के साथ व्यवहार में सावधानी अपेक्षित रहेगी। शासन-प्रशासन के साथ कार्य सम्पादन में धैर्य पूर्वक काम लें। राजकीय दंड का भुगतान करना पढ़ेगा। व्यय बढ़ेगा। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। अरिष्ट निवारण के लिए पंचमुखी हनुमत् कवच का पाठ करें। **शुभ दिवस**-04, 10, 12, 21, 26, 31, **अशुभ दिवस**-01, 06, 08, 14, 17, 19, 24, 29 हैं। **जनवरी 2021**—मास के प्रथम तीन सप्ताहों में शनि देव की कृपा से आर्थिक लाभ मिलेगा। राजकीय अथवा प्रशासनिक कार्यों में सफलता। उन्नति का अवसर प्राप्त होगा। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। दाम्पत्य जीवन में बाधा। व्यय बढ़ेगा। महिलाओं के कारण कष्ट की स्थिति बनेगी। अरिष्ट निवारण के लिये आदित्य हृदय स्तोत्र तथा दुर्गासप्तशती का पाठ करें। **शुभ दिवस**-01, 11, 17, 26, 29, **अशुभ दिवस**- 04, 06, 09, 13, 15, 19, 21, 24, 31 हैं। **फरवरी**—राजकीय सहयोग रहेगा। शासन-सत्ता से लाभ मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लाभदायक यात्रायें होंगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पारिवारिक जीवन का सुख मिलेगा। दुर्घटना से बचाव होगा। भाग्योन्नति-पदोन्नति का सुख रहेगा। विरोधी बढ़ेंगे। धार्मिक कार्यों से विरक्ति होगी। अरिष्ट निवारण के लिये पीपल के वृक्ष पर जल अर्पित करें। **शुभ दिवस**-03, 13, 23, 25, **अशुभ दिवस**-05, 07, 09, 11, 15, 18, 20, 28। **मार्च**—व्यवसायिक सफलता मिलेगी। सामाजिक कार्यों में समय देंगे। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव में प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। पदोन्नति होगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। सफल यात्रायें होंगी। असत्य भाषण की प्रवृति बनेगी। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। **शुभ दिवस**-01, 06, 12, 21, 23, 28, **अशुभ दिवस**-03, 08, 10, 14, 16, 18, 26, 31 हैं।

मिथुन-क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन



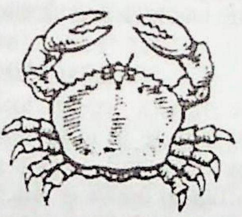
स्वामी-बुध नग-पन्ना शुभ

अप्रैल 2019—मास के प्रथम पक्ष में मंगल, गुरु, शनि तथा राहु का गोचर कष्टकारी रहेगा। अग्निकांड से नुकसान होगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। स्थान परिवर्तन निरस्त होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। आर्थिक उन्नति होगी। सन्तान सुख मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अहंकार के वशीभूत होकर निर्णय लेने से बचें। **शुभ दिवस**-04, 22, 27, **अशुभ दिवस**-02, 06, 08, 10, 12, 15, 17, 20, 25, 29 हैं। **मई**—मास का ग्रह गोचर आपके अनुकूल नहीं है। अहंकारवश उचित निर्णय लेने में बाधा रहेगी। वाणी में कठोरता

आयेगी। अभद्र भाषा का अधिक प्रयोग करेंगे। स्थान परिवर्तन होगा। मन शोकग्रस्त रहेगा। रोग पीड़ित होने से शरीर की कांति नष्ट होगी। राजकीय भय रहेगा। यात्राओं में थकावट एवं कष्ट रहेगा। आर्थिक स्थिति से असंतोष रहेगा। शिक्षा में विघ्न रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें। **शुभ दिवस**- 08, 19, 24, 29, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 06, 10, 12, 14, 17, 22, 27, 31 **जून**–पारिवारिक सुख मिलेगा। आर्थिक उन्नति होगी। गुरु तथा शनि के अरिष्ट गोचर से व्यसनों तथा दुष्ट व्यक्तियों से मित्रता के कारण परेशानियां उत्पन्न होंगी। वाणी में कठोरता आयेगी। चोरी, अग्निकांड से नुकसान होगा। सन्तान को घर से दूर रहना होगा। अहंकारवश उचित निर्णय लेने में बाधा रहेगी। अरिष्ट निवारण के लिये गुरु के मंत्रों का जप करें तथा गौसेवा करें तथा शनिवार के दिन शनि प्रीत्यर्थ दान दें। **शुभ दिवस**-04, 16, 21, 25 तथा **अशुभ दिवस**-02, 06, 08, 11, 13, 18, 23, 27, 29 हैं। **जुलाई**–कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। स्थानान्तर निरस्त होगा। मान हानि का भय रहेगा। धन हानि के प्रति सावधान रहें। वाणी में कठोरता आयेगी। स्वभाव की कठोरता से मुक्ति पाने का प्रयास करें। यात्राओं में थकावट एवं कष्ट रहेगा। मन शोकग्रस्त होगा। सन्तान को घर से दूर रहना होगा। जीवन अव्यवस्थित बनेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। आलस्य में वृद्धि होगी। **शुभ दिवस**-01, 13, 18, 22, 29। **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 10, 15, 20, 24, 26, 31। **अगस्त**–धन-धान्यादि का लाभ मिलेगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाक्चातुर्य से लाभ मिलेगा। परिवार तथा सन्तान सुख में कमी रहेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में असफलता। व्यापार में अवनति होगी। वैवाहिक कार्यों में विलम्ब होगा। अहंकार को त्याग कर धैर्य पूर्वक कार्य करने पर सफलता अवश्य प्राप्त होगी। शनि के जप तथा दान करने से अरिष्ट फलों में न्यूनता आयेगी। **शुभ दिवस**-09, 14, 25, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 12, 17, 19, 21, 23, 27, 29। **सितंबर**–मान-सम्मान मिलेगा। बुद्धि चातुर्य से कार्यों में सफलता मिलेगी। विवाह आदि उत्सव सम्पन्न होंगे। किसी शुभ कार्य के लिये यात्रा होगी। परिवार सुख रहते हुए भी मन चिन्तित रहेगा। किसी वस्तु की चोरी अथवा हानि होगी। मनोरंजन, गायन, वादन, शिक्षा तथा अध्ययन में अरुचि रहेगी। अहंकार वश किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। **शुभ दिवस**-06, 11, 21, 30, **अशुभ दिवस**-01, 03, 08, 13, 15, 17, 19, 23, 26, 28 हैं। **अक्टूबर**–योजनाबद्ध रीति, परिश्रम तथा साहस से कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्रों के सहयोग से विरोधी परास्त होंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। भाग्योदय का सुख मिलेगा। कार्यक्षेत्र में उलझनें रहेंगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। झगड़े झंझट से बचाव होगा। वार्ताओं में सफलता मिलेगी। विवाह आदि उत्सवों का आंनद मिलेगा। स्पैकुलेशन तथा इन्वेस्टमेन्ट में हानि होगी। सन्तान को घर से दूर रहना होगा। यात्राओं में दुर्घटना से बचाव होगा। **शुभ दिवस**-08, 13, 28, **अशुभ दिवस**-03, 05, 10, 15, 17, 19, 21, 23, 25, 30 हैं। **नवंबर**–आय के नये मार्ग बनेंगे। सन्तान तथा परिवार से प्रीती रहेगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग बनेगा। भोग विलास की वस्तुओं में रुचि होगी। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। लेखन तथा संगीत, वाद्य कला में ख्याति प्राप्त होगी। किसी शुभ कार्य के लिये यात्रा होगी। पारिवारिक उत्सवों में व्यस्तता रहेगी। सूर्य का गोचर मान, पद-प्रतिष्ठा में कमी करेगा। **शुभ दिवस**-09, 24, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 11, 13, 15, 17, 19, 21, 26, 29 हैं। **दिसंबर**–भूमि-भवन सम्बन्ध कार्य सम्पन्न होंगे। कोर्ट-कचहरी के मामलों में इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सहोदरों से लाभ प्राप्त करेंगे। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। विरोधी परास्त होंगे। सहयोगियों तथा साझेदारों से मनमुटाव रहेगा। थका देने वाली यात्राओं मे सावधानी रखें। स्पैकुलेशन तथा इन्वेस्टमेन्ट अभी स्थगित रखें। **शुभ दिवस**-06, 12, 21, 29, **अशुभ दिवस**-01, 04, 08, 10, 14, 17, 19, 24, 26, 31। **जनवरी 2021**–राजकर्मियों से असहयोग के उपरान्त भी शासकीय मान सम्मान मिलेगा। विवाहादि किसी उत्सव में भाग लेंगे। दाम्पत्य जीवन तथा सन्तान सुख रहेगा। शुभ कार्यों के लिये यात्रा होगी। बहुमूल्य धातुओं का लाभ। शेयर सट्टा अथवा गेम्बलिंग से हानि होगी। विदेश यात्रा का योग। स्थानान्तरण का योग भी। कई यात्रायें कष्ट पूर्ण होंगी अथवा निरस्त होंगी। अरिष्ट निवारण के लिये लक्ष्मीसूक्त का पाठ करें। **शुभ दिवस**-09, 13, 19, **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 11, 15, 17, 21, 24, 26, 29, 31 हैं। **फरवरी**–मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा समाप्त होगी। आर्थिक उन्नति का योग। महिलाओं के माध्यम से लाभ। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट। नेत्र तथा उदर रोगों से पीड़ा होगी। आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। स्पैकुलेशन तथा इन्वेस्टमेन्ट में हानि। प्रमोशन में व्यवधान। राजकीय अथवा प्रशासनिक कारणों से भय। अरिष्ट निवारण के लिये शनि चालीसा का पाठ करें। **शुभ दिवस**- 05, 09, 15, **अशुभ दिवस**-3, 07, 11, 13, 18, 20, 23, 25, 28। **मार्च**– प्रतिष्ठित कार्यों में सफलता के लिये अधिक प्रयासों की आवश्यकता रहेगी। स्थान परिवर्तन होगा। मास का ग्रह गोचर अनुकूल न होने से कार्यों में व्यय अधिक होगा। ऋण चुकाने में कठिनाईयां। प्रेम सम्बन्धों में असफलता। दाम्पत्य जीवन में असंतोष बनेगा। **शुभ दिवस**-03, 14, 23, 26, 31, **अशुभ दिवस**-01, 06, 08, 10, 12, 16, 18, 21, 28 हैं।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो

कर्क



स्वामी-चन्द्र नग-मोती शुभ

अप्रैल 2020–व्यय में कमी आयेगी। स्वजनों का सहयोग मिलेगा। जीवन साथी से सुख सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अवरोधों के उपरान्त भी शासकीय लाभ मिलेगा। विवाह, स्नेह सम्बन्धों, साझेदारी, दीवानी मामलों तथा प्रवास के लिये समय अनुकूल है। दाम्पत्य जीवन तथा सन्तान सुख रहेगा। शेयर सट्टा अथवा गेम्बलिंग से दूर रहें। शुभ फलों में वृद्धि के लिये सूर्योपासना करें। **शुभ दिवस**-02, 12, 15, 22, 29, **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 10, 17, 20, 25, 27। **मई**–आर्थिक लाभ होगा। मिथ्या अपवादों का निराकरण होगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी परन्तु मान-सम्मान के प्रति सचेत रहें। मानसिक शांति मिलेगी। घर में किसी आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। प्रशासकीय सहयोग से स्थानान्तरण निरस्त होगा। शुभ कार्य के लिये यात्राओं में बाधा आयेगी। सन्तान से कष्ट रहेगा। बुध तथा राहु के अरिष्ट गोचर से व्यर्थ के वाद-विवादों में फसेंगे। विरोधी प्रबल होंगे। शिक्षा में विघ्न आयेगा। **शुभ दिवस**-10, 19, 27, 31, **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 08, 12, 14, 17, 22, 24, 29। **जून**–आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। स्थानान्तरण निरस्त होगा परन्तु कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। बंधु-बांधवों से विग्रह विवाद होंगे। बड़े भाई को कष्ट होगा। सूर्य तथा मंगल के अरिष्ट गोचर से कार्यों पर सुचारु रूप से ध्यान नहीं दे पायेंगे। पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव। व्यवसाय में कठिन परिस्थितियां बनेंगी। आंखों तथा उदर सम्बन्धी रोगों से कष्ट रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये पंचमुखी हनुमत्कवच के नित्य प्रति ग्यारह पाठ करें। **शुभ दिवस**-06, 16, 23, **अशुभ दिवस**-02, 04, 08, 11, 13, 18, 21, 25, 27, 29 हैं। **जुलाई**–मानसिक शांति मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्थानान्तरण निरस्त होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। स्वास्थ्य बिगड़ेगा। थकावट, नेत्र रोग, रक्तचाप अथवा हृदय रोग का भय। मानसिक व्यथा रहेगी। मान-सम्मान में कमी। कार्यों में बाधायें आयेंगी। निरर्थक यात्राओं से कष्ट रहेगा। किसी पारिवारिक समारोह-उत्सव को निरस्त करने का कष्ट होगा। अरिष्ट निवारण के लिये सूर्य मंत्र 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः' का नियमित जप करें। शुभ

दिवस-04, 06, 13, 20, 31, अशुभ दिवस-01, 08, 10, 15, 18, 22, 24, 26, 29 हैं। अगस्त–नये मित्र बनेंगे। धन तथा भोग-विलास के साधनों की प्राप्ति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्थानान्तरण निरस्त होगा। चोट लगने का भय रहेगा। किसी वस्तु की चोरी अथवा खोने का भय रहेगा। सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। अभद्र भाषा तथा अप्रिय शब्दों का प्रयोग करने से झगड़े-झंझट बढ़ेंगे। निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा मिलने का योग बनेगा। स्वभाव की कठोरता से हानि होगी। अरिष्ट निवारण के लिये सूर्य मंत्रों का जप करें तथा दान दें। **शुभ दिवस**- 02, 17, 21, 27, 29, **अशुभ दिवस**-04, 07, 09, 12, 14, 19, 23, 25। **सितंबर**–व्यापार में उन्नति होगी। परिश्रम तथा साहस से कार्यों में सफलता। अपव्यय पर नियन्त्रण। आकस्मिक हानि से बचाव होगा। सुख एवं धन की प्राप्ति। विरोधी पराजित होंगे। मन भोग विलास की ओर आकर्षित होगा। अविवाहितों के लिये विवाह का योग। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता। मन सात्विक विचारों तथा सत्यता की ओर अग्रसर होगा। सज्जनों तथा उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बनेंगे। किसी नये स्थान पर कार्यभार सम्भालने का अवसर प्राप्त होगा। **शुभ दिवस**-08, 13, 17, 26, **अशुभ दिवस**- 01, 03, 06, 11, 15, 19, 21, 23, 28, 30 हैं। **अक्टूबर**–दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। पद, प्रतिष्ठा, मान सम्मान में वृद्धि होगी। प्रशासकीय लाभ मिलेगा। सहकर्मियों का सहयोग प्राप्त होगा। मनोरंजन, गायन, वादन, शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बहुमूल्य वस्तुयें क्रय करेंगे। भू-सम्पत्ति सम्बन्धी विघ्न बाधाएँ समाप्त होंगी। स्थानान्तरण निरस्त होगा। अन्य यात्राओं से लाभ होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। **शुभ दिवस**-03, 23, 30, **अशुभ दिवस**-05, 08, 10, 13, 15, 17, 19, 21, 25, 28। **नवंबर**–इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक लाभ मिलेगा। सुख, वैभव तथा ऐश्वर्य प्राप्त होगा। दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। जीवन साथी, मित्रों तथा परिवारजनों का सहयोग रहेगा। सफलता साथ देगी। शरीर तथा मन प्रफुल्लित रहेगा। योजनाबद्ध कार्यों से सफलता मिलेगी। विवादों से छुटकारा मिलेगा। भय प्रभाव से व्यय बढ़ेगा। चित्त चंचल एवं चलायमान रहेगा। भ्रम की स्थिति उत्पन्न होगी। प्रशासनिक अधिकारियों के साथ विवाद से बचकर रहें तो लाभ होगा। **शुभ दिवस**-19, 26, 29, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 09, 11, 13, 15, 17, 21, 24 हैं। **दिसंबर**–अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। आय के नये मार्ग बनेंगे। विभिन्न स्त्रोतों से आय के कारण आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। विरोधी परास्त होंगे। मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। पारिवारिक सुख मिलेगा। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। शिक्षा तथा विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। लेखन तथा संगीत, वाद्य कला में ख्याति प्राप्त होगी। जंक फूड आदि से बच कर रहें तो स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्थानान्तरण, विदेश अथवा सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। **शुभ दिवस**-17, 24, **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 08, 10, 12, 14, 19, 21, 26, 29, 31। **जनवरी 2021**–आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। परिवार एवं दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। मतभेदों का सम्मानजनक समाधान मिलेगा। स्वास्थ्य में सुधार। मन तथा शरीर ऊर्जान्वित रहेंगे। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ होगा। मन प्रसन्न रहेगा। प्रशासनिक कारणों से मान, पद-प्रतिष्ठा की हानि होगी। सन्तान को किसी रोग से पीड़ा होगी। शिक्षा में बाधा। अरिष्ट निवारण के लिये गौ माता की सेवा करें तथा राहु मंत्र का जप करें। **शुभ दिवस**-04, 15, 31, **अशुभ दिवस**-01, 06, 09, 11, 13, 17, 19, 21, 24, 26, 29। **फरवरी**–कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। बहुमूल्य धातुओं का लाभ होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। विरोधियों पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होंगे। मान-प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। प्रशासकीय कारणों से संकट में पड़ेंगे। राजकीय दंड का भुगतान करना होगा। खांसी आदि कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। अरिष्ट निवारण के लिये लक्ष्मी सूक्त का नियमित पाठ करें। **शुभ दिवस**-11, 18, 28, **अशुभ दिवस**- 03, 05, 07, 09, 13, 15, 20, 23, 25 हैं। **मार्च**–आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में वृद्धि होगी। कार्य सम्पन्न करने के लिये किए गये प्रयत्नों में सफलता प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। वरिष्ठों, मित्रों तथा सहोदरों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यय में कमी आयेगी। सुखोपभोग में समय व्यतीत होगा। जीवन साथी तथा सन्तान से सुख सहयोग मिलेगा। स्थानान्तरण निरस्त होगा। विदेश यात्रा का योग बनेगा। पारिवारिक समारोह-उत्सव निरस्त होगा। कार्यों में अनपेक्षित बाधाएँ आयेंगी। **शुभ दिवस**-06, 10, 16, 26, **अशुभ दिवस**-01, 03 08, 12, 14, 18, 21, 23, 28, 31 हैं।

सिंह–टा, टी, टू, टे, मा, मी, मू, मे, मो

सिंह



स्वामी-सूर्य नग-माणिक शुभ

अप्रैल 2020–बहुमूल्य धातुओं का लाभ होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। विवादों का अन्त होगा। घरेलू वातावरण में सौहार्द्रता रहेगी। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। किसी प्रियजन से सम्पर्क होगा। भूमि भवन का लाभ मिलेगा। किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति होगी। यात्राओं तथा व्यवसाय में अपेक्षित लाभ की न्यूनता। विदेश यात्रा का योग। **शुभ दिवस**-17, 25, **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 08, 10, 12, 15, 20, 22, 27, 29। **मई**– प्रचुर मात्रा में लाभ के मध्य अपव्यय बढ़ेगा। जीवन साथी, सन्तान तथा पारिवारिक सदस्यों का सहयोग मिलेगा। विग्रह-विवादों की स्थिति समाप्त होगी तथापि अत्याधिक वाक्‌चातुर्य से बचकर रहें। भूमि भवन का लाभ। डायजेशन सम्बन्धी रोगों से छुटकारा। आकस्मिक हानि से बचेंगे। सामाजिक कार्यों में समय व्यर्थ करेंगे। सन्तान के विषय में चिंता बनेगी। अनिष्ट का भय। बुध कृत अरिष्ट निवारण के लिये हरिद्रा गणेश की आराधना करें। **शुभ दिवस**- 14, 22, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 06, 08, 10, 12, 17, 19, 24, 27, 29, 31 हैं। **जून**–पद, प्रतिष्ठा, मान सम्मान में वृद्धि होगी। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। धन लाभ होगा। किसी आध्यात्मिक अथवा पारिवारिक मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। आकस्मिक हानि से बचाव होगा। भूमि भवन का लाभ मिलेगा। मंगल के अरिष्ट गोचर से बड़े भाई को कष्ट होगा। कार्यों में बाधाएं आयेंगी। ऋण चुकता करने में कठिनाईयां रहेंगी। अरिष्ट निवारण के लिये मंगल मंत्र का जप करें। **शुभ दिवस**-11, 18, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 06, 08, 13, 16, 21, 23, 25, 27, 29। **जुलाई**–जीवन साथी, सन्तान तथा पारिवारिक सदस्यों का सहयोग मिलेगा। शासन-सत्ता का सहयोग रहेगा तथा लाभ मिलेगा। रोगों से छुटकारा। यात्राओं में सफलता मिलेगी। कार्य स्थल पर, रोजी रोजगार में सन्तुष्टि। भूमि भवन का लाभ होगा। बड़े भाई को कष्ट होगा। धारदार वस्तु से चोट लगेगी। तेज ज्वर से पीड़ा होगी। पारिवारिक जीवन में बाधा आयेगी। स्थान परिवर्तन होगा। अरिष्ट निवारण के लिये मंगल प्रीत्यर्थ मंगल मंत्र का जप करें। **शुभ दिवस**-15, 26, **अशुभ दिवस**- 01, 04, 06, 08, 10, 13, 18, 20, 22, 24, 29, 31। **अगस्त**–आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार तथा दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। भूमि-भवन का लाभ होगा। थकावट, नेत्र रोग, रक्तचाप अथवा हृदय रोग का भय बनेगा। सम्बन्धियों से विवाद की स्थिति बनेगी। पद हानि का भय रहेगा। शिक्षा में विघ्न रहेगा। अरिष्ट निवारण के लिये गणेश मंत्र का जप करें। **शुभ दिवस**-12, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 07, 09, 14, 17, 19, 21, 23, 25, 27, 29 हैं। **सितंबर**–धन तथा भोग- विलास के साधनों की प्राप्ति होगी। कार्यों में अड़चनों के मध्य आर्थिक लाभ होगा। वस्त्रों अथवा सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। चोट लगने का भय रहेगा। वस्तु की चोरी अथवा हानि होगी। सूर्य तथा बुध के गोचर से शुभ फलों में न्यूनता आयेगी। शिक्षा की धीमी प्रगति से असंतोष होगा। परिवार तथा सन्तान सुख में न्यूनता रहेगी। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों से मतभेद होंगे। मन चिंतित रहेगा। **शुभ दिवस**-01, 15, 28, **अशुभ दिवस**-03, 06, 08, 11, 13, 17, 19, 21, 26, 30। **अक्टूबर**–नये स्थान पर कार्यभार

सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। पारिवारिक उलझनें समाप्त होंगी। मन भोग विलास की ओर आकर्षित होगा। अविवाहितों के लिये विवाह का योग। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता। मन सात्विक विचारों तथा सत्यता की ओर अग्रसर होगा। व्यापार में उन्नति। भूमि भवन का लाभ। शिक्षा तथा अध्ययन से अरुचि होगी। गुरु तथा शुक्र के अरिष्ट गोचर से शुभ फलों में कुछ न्यूनता रहेगी। पिता के विचारों से तालमेल में कठिनाई रहेगी। **शुभ दिवस**-17, **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 10, 13, 15, 19, 21, 23, 25, 28, 30। **नवंबर**–शनि देव की कृपा से भूमि भवन का लाभ मिलेगा। परिश्रम तथा साहस का उचित परिणाम न मिलने से असंतोष रहेगा। आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। धनागम में कठिनाईयां उत्पन्न होंगी। पारिवारिक विवाद के कारण सुख शांति का अभाव रहेगा। भू-सम्पत्ति के मामलों में विघ्न बाधाऐं आयेंगी। जीवन साथी से मतभेद होंगे। रोगों का प्रकोप होगा। भूमि-भवन के कार्यों में असफलता तथा स्थाई सम्पत्ति की हानि होगी। भाग्योदय में रुकावट। धार्मिक कार्यों में अरुचि रहेगी। **शुभ दिवस**- 02, 13, 29, **अशुभ दिवस**-04, 07, 09, 11, 15, 17, 19, 21, 24, 26 हैं। **दिसंबर**–आर्थिक लाभ मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। सुख, वैभव तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। सामान्य जनों से सम्पर्क तथा प्रेम बढ़ेगा। मित्रों तथा परिवारजनो का सहयोग मिलने से सफलता साथ देगी। भूमि-भवन सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। आत्मविश्वास से व्यक्तित्व में प्रखरता आयेगी। यात्राओं में दुर्घटना से बचाव होगा। शरीर तथा मन प्रफुल्लित रहेगा। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओ में असफलता मिलेगी। **शुभ दिवस**-06, 10, 26, **अशुभ दिवस**-01, 04, 08, 12, 14, 17, 19, 21, 24, 29, 31। **जनवरी 2021**–आर्थिक स्थिति दृढ़ होगी। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी। पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। शिक्षा में प्रगति होगी। शासक वर्ग से लाभ होगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। स्थान परिवर्तन का योग बनता है। व्यर्थ के विवाद होंगे। यात्राओं में दुर्घटना का भय रहेगा। **शुभ दिवसः** 03, 07, 25, 28, **अशुभ दिवस**-04, 08, 09, 11, 13, 15, 17, 19, 21, 24। **फरवरी**–सन्तान सुख तथा शासक वर्ग से लाभ होगा। परिवार तथा दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। सुखोपभोग की सामग्री तथा भूमि भवन का लाभ मिलेगा। विग्रह तथा झंझटों का वातावरण समाप्त होगा। शिक्षा में सफलता मिलेगी। बड़े भाई को किसी अनिष्ट का भय रहेगा। यात्राओं में कष्ट रहेगा। भूमि-भवन क्रय का योग बनता है। अरिष्ट निवाण के लिये सूर्य को अर्घ्य समर्पित करें। **शुभ दिवस**- 03, 05, 18, **अशुभ दिवस**-07, 09, 11, 13, 15, 20, 23, 27 हैं। **मार्च**–आय के नवीन साधन बनेंगे। बहुमूल्य धातुओं का लाभ होगा। कार्यो में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। भूमि भवन का लाभ मिलेगा। आनन्दोत्सव होंगे। अधिकारियों की कृपा प्राप्त करेंगे। ग्रह गोचर से बड़े भाई को कष्ट होगा। प्रशासकीय कारणों से संकट में पड़ेंगे। राजकीय दंड का भय रहेगा। सूर्य प्रीत्यर्थ दान तथा मंत्र जप करें। **शुभ दिवस**-01, 21, 28, **अशुभ दिवस**-03, 06, 08, 10, 12, 14, 16, 18, 23, 26, 31 हैं।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या



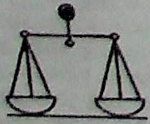
स्वामी-बुध **नग-पन्ना** **शुभ**

अप्रैल 2020–आर्थिक उन्नति होगी। अनुचित इच्छाओं तथा आकांक्षाओं से बच कर रहेंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि बनेगी। मान-प्रतिष्ठा, गौरव बढ़ेगा। सन्तान सुख मिलेगा। पाचन सम्बन्धी रोग समाप्त होंगे। शासक वर्ग से लाभ होगा। विद्यार्थियों को अपेक्षित सफलता मिलेगी। व्यय बढ़ेगा। सूर्य के गोचर से सन्तान के लिये मन में चिंता रहेगी। किसी के साथ दुर्व्यवहार न करें। पिता अथवा पितृतुल्य व्यक्तियों की सेवा करें। **शुभ दिवस**- 02, 10, 27, 29, **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 12, 15, 17, 20, 22, 25। **मई**–सफलता से मन प्रसन्न [illegible] धनागम बढ़ेगा। परिवारजनो के साथ आनन्द रहेगा। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। शासक वर्ग से लाभ मिलेगा। व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति होगी। बहुमूल्य धातुओं का लाभ होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। प्रियजनों से सम्पर्क होगा। यात्राओं से लाभ होगा। पिता अथवा पितृतुल्य व्यक्तियों से मतभेद होंगे। **शुभ दिवस**-08, 17, 24, **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 10, 12, 14, 19, 22, 27, 29, 31 हैं। **जून**–व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति होगी। वरिष्ठों एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। धन लाभ तथा स्वास्थ्य सुख रहेगा। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। मंगल के अरिष्ट गोचर से सुखोपभोग में कमी आयेगी। व्यय बढ़ेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। पाचन तंत्र बिगड़ेगा। **शुभ दिवस**-04, 13, 21, 23, **अशुभ दिवस**-02, 06, 08, 11, 16, 18, 25, 27, 29। **जुलाई**–पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति। स्वास्थ्य लाभ होगा। पद-प्रतिष्ठा का सुख रहेगा। सन्तान सुख मिलेगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। घर में किसी आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। सात्विकता में वृद्धि होगी। रोगों से छुटकारा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट। स्वजनों को मानसिक तथा शारीरिक कष्ट होगा। भाई से विग्रह तथा सन्तान से वैचारिक मतभेद। नेत्र तथा उदर रोगों से पीड़ा होगी। **शुभ दिवस**-01, 10, 18, 20, **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 13, 15, 22, 24, 26, 29, 31। **अगस्त**–पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। कार्य स्थल पर सन्तुष्टि पूर्वक कार्य करने का अवसर मिलेगा। व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति होगी। स्वास्थ्य लाभ होगा। आय बढ़ेगी। पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। यात्राओं में सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग रहेगा। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। बुध तथा शुक्र का गोचर मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा का कारण बनेगा। शरीर में निर्बलता आयेगी। धन हानि की स्थिति बनेगी। **शुभ दिवस**-07, 14, 17, 25, **अशुभ दिवस**-02, 04, 09, 12, 19, 21, 23, 27, 29 हैं। **सितंबर**–आर्थिक स्थिति मजबूत [illegible] दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। शारीरिक पीड़ा, कष्ट एवं मानसिक व्यथा समाप्त होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। सज्जनों, मित्रों तथा सम्बन्धियों का सहयोग मिलेगा। लाभकारी यात्रायें होंगी। राहु के गोचर में पिता अथवा पितृतुल्य व्यक्तियों से मतभेद होंगें। पद-प्रतिष्ठा की हानि होगी। **शुभ दिवस**-11, 13, **अशुभ दिवस**- 01, 03, 06, 08, 15, 17, 19, 21, 23, 26, 28, 30 हैं। **अक्टूबर**–धन-धान्यादि का लाभ होगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाक्चातुर्य से लाभ मिलेगा। विद्या में प्रगति होगी। स्वभाव में नम्रता तथा समर्पण का भाव रहेगा। मानसिक तनाव समाप्त होकर सभी प्रकार के आनन्द मिलेंगे। अविवाहितों के लिये विवाह का योग है। सफेद वस्तुओं के व्यापार से हानि। विदेश में भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे। **शुभ दिवस**-10, 19, 28, **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 13, 15, 17, 21, 23, 25, 30। **नवंबर**–आय में वृद्धि होगी। व्यवसायिक उन्नति होगी। रोग मुक्त होंगे। सुख तथा आनन्द का वातावरण बनेगा। प्रशासकीय लाभ मिलेगा। पुत्र तथा मित्रों के माध्यम से धन लाभ होगा। अपने सद्व्यवहार से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। मूल्यवान वस्तुयें प्राप्त होंगी। शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। जन्म स्थान से दूर स्थान पर अथवा विदेश में भाग्योदय होगा। **शुभ दिवस**-07, 15, 24, **अशुभ दिवस**-02, 04, 09, 11, 13, 17, 19, 21, 26, 29 हैं। **दिसंबर**–व्यवसाय तथा नौकरी में उन्नति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भूमि-भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्च पदस्थ व्यक्तियों, विद्वत्जनों तथा भद्रपुरुषों से मित्रता होगी। पारिवारिक जीवन का सुख मिलेगा। प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें। स्थान परिवर्तन होगा। चोट लगने का भय रहेगा। विदेश में भाग्योदय होने का योग है। **शुभ दिवस**-01, 04, 12, 21, 29, 31, **अशुभ दिवस**-06, 08, 10, 14, 17, 19, 24, 26। **जनवरी 2021**–स्वास्थ्य में सुधार होगा। कार्यों में सफलता से मन उत्साहित रहेगा। पद, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। धातुओं के

व्यापार से लाभ होगा। भू-सम्पत्ति के मामलों में विघ्न बाधाएं आयेंगी। प्रेम प्रकरण में असफलता मिलेगी। स्थान परिवर्तन योग बनता है। **शुभ दिवसः** *05, 07, 13, 18,* **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 11, 15, 17, 21, 24, 26। **फरवरी**–आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। ऐश्वर्य तथा दैनिक उपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। भूमि-भवन-वाहन प्राप्ति का योग। शिक्षा में प्रगति होगी। प्रशासनिक सहयोग से लाभ की प्राप्ति होगी। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। सहयोगी विश्वासघात कर सकता है। महिलाओं के प्रति व्यवहार में सावधानी रखें। **शुभ दिवस**-03, 09, 13, 17, **अशुभ दिवस**-01, 10, 15, 18, 20, 23, 28। **मार्च**–सुखोपभोग तथा विलासिता की सामग्री में वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख सहयोग मिलेगा। अध्ययन-अध्यापन में रुचि रहेगी। ललित कलाओं में ख्याति। सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। नौकरी पेशा वर्ग की प्रगति होगी। पिता अथवा पितृतुल्य व्यक्तियों से मतभेद होंगे। यात्राओं में कष्ट रहेगा। उदर विकार तथा कब्ज आदि से पीड़ित होंगे। अरिष्ट निवारण हेतु गौ की सेवा करें। **शुभ दिवस**- 07, 14, 29, **अशुभ दिवस**- 01, 06, 08, 10, 12, 16, 18, 21, 23, 26, 28 है।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला



स्वामी-शुक्र नग-हीरा शुभ

अप्रैल 2020–आर्थिक स्थिति में सुधार। ऐश्वर्य पूर्ण वस्तुओं के संग्रह का योग। भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पत्ति सम्बन्धी समस्यायें समाप्त होंगी। माता को कष्टों से छुटकारा मिलेगा। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। बुध के अरिष्ट गोचर के परिणाम स्वरूप झगड़े-झंझट में फसेंगे। यात्राओं में कष्ट रहेगा। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में अवरोध बनेंगे। मन चिंताग्रस्त होगा। विदेश में भाग्योदय का योग। अरिष्ट निवारण के लिये हरिद्रा गणेश की पूजा करें। **शुभ दिवस**-02, 08, 12, 20, 29, **अशुभ दिवस**- 04, 06, 10, 15, 17, 22, 25, 27। **मई**–पद प्रतिष्ठा के साथ आर्थिक लाभ मिलेगा। किसी अति निकट तथा विश्वासी सहयोगी से लाभ मिलेगा। अनुचित इच्छाओ तथा आकांक्षाओं से बच कर रहें। सामाजिक कार्यों में रुचि बनेगी। सन्तान सुख मिलेगा। झंझटों का वातावरण समाप्त होगा। मानसिक शांति रहेगी। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। बुध के अरिष्ट गोचर में अनिष्ट निवारण के लिये हरिद्रा गणेश की आराधना करें। **शुभ दिवस**-02, 10, 27, 29, **अशुभ दिवस**- 04, 06, 08, 12, 14, 17, 19, 22, 24, 31। **जून**–रोगों से छुटकारा मिलेगा। कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। मान-प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में वृद्धि का लाभ मिलेगा। सूर्य का अरिष्ट गोचर शुभ फलों में बाधक रहेगा, मिथ्या अपवाद तथा अपमान का कारण बनेगा। महत्वाकांक्षी कार्यों में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। अरिष्ट निवारण तथा सूर्य की प्रसन्नता के लिये सूर्य को शहद मिश्रित जल अर्पित करें। **शुभ दिवस**-06, 23, 29, **अशुभ दिवस**-02, 04, 08, 11, 13, 16, 18, 21, 25, 27 हैं। **जुलाई**–प्रभावशाली एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। आय के नवीन साधनों से धनागमन उत्तम रहेगा। बहुमूल्य धातुओं का लाभ होगा। रोगों से छुटकारा। मान-प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। शनि प्रभाव से स्थान परिवर्तन होगा। दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन में वियोग होगा। विदेश में भाग्योदय होने का योग है। शनि के जप तथा दान से लाभ होगा। **शुभ दिवस**- 04, 10, 20, 26, 31, **अशुभ दिवस**- 01, 06, 08, 13, 15, 18, 22, 24, 29 हैं। **अगस्त**–बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। भाईयों से स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्रायें करेंगे। वाक्‌चातुर्य से किसी पद की प्राप्ति होगी। व्यवसायिक सफलता मिलेगी। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। खानपान बिगड़ेगा। किसी के दुर्व्यवहार से कष्ट होगा। मन अशान्त रहेगा। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्य स्थगित होगा। **शुभ दिवस**- 07, 09, 17, 19, 23, **अशुभ दिवस**-02, 04, 12, 14, 21, 25, 27, 29। **सितंबर**–रोजी रोजगार में प्रगति होगी। पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। परिवार के मतभेद समाप्त होंगे। सफल यात्रायें होंगी। पद प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। सम्मानजनक स्थिति सृजित होगी। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। स्थान परिवर्तन का योग है। विदेश में भाग्योदय होगा। **शुभ दिवस**-03, 06, 13, 15, 19, 23, 30, **अशुभ दिवस**-01, 08, 11, 17, 21, 26, 28। **अक्टूबर**–नया कार्य-व्यवसाय प्रारम्भ करने की दिशा में अग्रसर होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। लाभकारी यात्रायें होंगी। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। शारीरिक कष्ट एवं रोगों से छुटकारा मिलेगा। झगड़े-झंझटों से छुटकारा मिलेगा। 23 अक्तूबर के बाद स्थिति में परिवर्तन होगा। प्रेम सम्बन्धों में असफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति कठिन बनेगी। दुर्गाजी की आराधना से कष्टों का निवारण होगा। **शुभ दिवस**-10, 17, 28, **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 13, 15, 19, 21, 23, 25, 30 हैं। **नवंबर**–पीड़ा तथा कष्टों का निवारण होकर संकट दूर होंगे। मानसिक तनाव समाप्त होगा। विचारों में सात्विकता का समावेश होगा। व्यवसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। निकटस्थ व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा। किसी बहुमूल्य वस्तु के खोने अथवा चोरी से कष्ट होगा। सुखोपभोग में कमी आयेगी। विवाह योग में बाधा रहेगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ न मिलने का असंतोष बनेगा। **शुभ दिवस**-13, 17, 24, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 09, 11, 15, 19, 21, 26, 29। **दिसंबर**–सुख तथा आनन्द का वातावरण बनेगा। सज्जनों तथा उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बनेंगे। मित्रों के मध्य मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पुत्र तथा मित्रों के माध्यम से धन लाभ होगा। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। पारिवारिक उलझनें समाप्त होंगी। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में अरुचि रहेगी। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। **शुभ दिवस**-10, 21, 31 **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 08, 12, 14, 17, 19, 24, 26, 29। **जनवरी 2021**–कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भूमि-भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। स्थाई सम्पत्ति की वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। स्थान परिवर्तन का योग है। अरिष्ट निवारण के लिये शनि मंत्रों का जप करें। **शुभ दिवस**-05, 11, 17, 21, 30 **अशुभ दिवस**-01, 06, 09, 14, 19, 24, 26, 29 हैं। **फरवरी**–तार्किक क्षमता का लाभ मिलेगा। वाद-विवाद तथा कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। सन्तान सुख रहेगा। दाम्पत्य जीवन में आनन्द रहेगा। विदेश यात्रा का सफल योग बनेगा। धातुओं से लाभ होगा। पद, प्रतिष्ठा, प्रभाव तथा आर्थिक सम्बन्धों में उन्नति होगी। पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्तियों के लिये कष्टप्रद रहेगा। यात्राओं में दुर्घटना का भय बनेगा। **शुभ दिवस**-09, 19, 21, 27, **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 10, 13, 17, 20, 23, 25। **मार्च**–पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। ऐश्वर्य तथा दैनिक उपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। अधिक परिश्रम करना होगा। विदेश में भाग्योदय होने का योग रहेगा। शरीर में शिथिलता आयेगी। विरोधी मुखर होंगे। **शुभ दिवस**-05, 08, 16, 24, 25, **अशुभ दिवस**-03, 11, 12, 14, 19, 22, 28, 31।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वृश्चिक



स्वामी-मंगल नग-मूंगा शुभ

अप्रैल 2020–उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। पारिवारिक सुख की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ मिलेगा। सन्तान सुख रहेगा। दुर्घटना से बचाव

होगा। रोजी रोजगार में प्रगति होगी। मंगल के अरिष्ट गोचर से परिश्रम के अनुरूप परिणाम मिलने में बाधा रहेगी। आत्मविश्वास डगमगायेगा। धातुओं के व्यापार में किसी बहुमूल्य धातु के कारण हानि होगी। शैक्षणिक कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। **शुभ दिवस**-04, 06, 15, 22. **अशुभ दिवस**-02, 08, 10, 12, 17, 20, 25, 27, 29 हैं। **मई**–रोजी रोजगार में प्रगति होगी। शारीरिक कष्ट एवं रोगों से छुटकारा मिलेगा। पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पति सम्बन्धी समस्यायें समाप्त होंगी। सूर्य तथा बुध के अरिष्ट गोचर में मित्रों के साथ मनमुटाव तथा वैचारिक मतभेद रहेंगे। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। अनिष्ट निवारण के लिये सूर्य मंत्रो का जप करें। बुधवार के दिन हरी वस्तुओं का दान करें। **शुभ दिवस**-02, 08, 12, 19, 29, 31 **अशुभ दिवस**-04, 06, 10, 14, 17, 22, 24, 27। **जून**–परिश्रम के अनुकूल कार्यों में सफलता मिलेगी। रोजी रोजगार में प्रगति होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। आर्थिक उन्नति। सामाजिक कार्यों में रुचि बनेगी। मान-प्रतिष्ठा, गौरव बढ़ेगा। सन्तान सुख मिलेगा। दुर्घटना से बचाव होगा। शनि के अरिष्ट गोचर से शुभ फलों में न्यूनता रहेगी। धन-हानि होगी। पद-प्रतिष्ठा प्रभावित होगी। नौकरी में व्यवधान। शनि प्रीत्यर्थ शनि मंत्रो का जप करें। **शुभ दिवस**-04, 08, 16, 25, 27. **अशुभ दिवस**-02, 06, 11, 13, 18, 21, 23, 29। **जुलाई**–आर्थिक उन्नति होगी। पाचन सम्बन्धी कष्ट समाप्त होंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि बनेगी। विग्रह तथा झंझटों का वातावरण समाप्त होगा। रोजी रोजगार में प्रगति होगी। स्थान लाभ होगा। पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। दुर्घटना से बचाव होगा। 16 जुलाई से अपवादों से सामना होगा। प्रतिष्ठा का आभामंडल क्षीण होगा। आय में कमी आयेगी। मन अशांत तथा भयग्रस्त रहेगा। **शुभ दिवस**-06, 22, 24, **अशुभ दिवस**-01, 04, 08, 10, 13, 15, 18, 20, 26, 29, 31 हैं। **अगस्त**–आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक रहेगी। कष्ट मुक्त होंगे। स्वास्थ्य

सुख रहेगा। सुखोपभोग तथा विलासिता की सामग्री में वृद्धि होगी। सुख समृद्धि बढ़ेगी। शिक्षा में रुचि रहेगी। सज्जनों के माध्यम से लाभ होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। दुर्घटना से बचाव होगा। अनुचित कार्यों से मन हटेगा। बुध के अरिष्ट गोचर से मिथ्या आरोपों का भय रहेगा। कार्यों में अवरोध बनेंगे। **शुभ दिवस**-02, 19, 25, 29, **अशुभ दिवस**-04, 07, 09, 12, 14, 17, 21, 23, 27 हैं। **सितंबर**–पद-प्रतिष्ठा तथा समाज में प्रभाव बढ़ेगा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। दानधर्म में रुचि रहेगी। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होंगी। वरिष्ठों के अनुग्रह तथा शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। घर में किसी आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। शुभ कार्यों में प्रवृति रहेगी। दुर्घटना से बचाव होगा। **शुभ दिवस**-06, 15, 21, **अशुभ दिवस**-01, 03, 08, 11, 13, 17, 19, 23, 26, 28, 30। **अक्टूबर**–आर्थिक उन्नति का योग होने से धनागम उत्तम रहेगा। पद-प्रतिष्ठा तथा ख्याति में वृद्धि होगी। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। यात्राओं में सफलता मिलेगी। महिलाओं के माध्यम से लाभ होगा। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। 23 अक्तूबर के पश्चात् व्यर्थ वाद-विवादों में लिप्त रहेंगे। दाम्पत्य जीवन में असंतोष रहेगा। **शुभ दिवस**-03, 05, 15, 23, **अशुभ दिवस**-08, 10, 13, 17, 19, 21, 25, 28, 30। **नवंबर**–पारिवारिक सुख मिलेगा। सम्बन्धों में सुधार होगा। सज्जनों, मित्रों तथा सम्बन्धियों का सहयोग मिलेगा। आर्थिक तथा व्यवसायिक उन्नति होगी। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। लाभकारी यात्रायें होंगी। वैभवी वस्तुओं तथा साधनों की प्राप्ति होगी। चोट लगने का भय रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलो में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। पद प्रतिष्ठा तथा ख्याति में वृद्धि होगी। **शुभ दिवस**-02, 11, 19, 29. **अशुभ दिवस**-04, 07, 09, 13, 15, 17, 21, 24, 26। **दिसंबर**–व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी। आमोद-प्रमोद तथा विलासिता के साधन प्राप्त होंगे। विरोधी पराजित होंगे। अविवाहितों के विवाह का योग रहेगा। निकटस्थ व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा। [illegible] मिलेगी। किसी नये [illegible]

पहले सभी पहलुओं पर विचार कर लें। कोर्ट-कचहरी के मामलो में सफलता दूर रहेगी। **शुभ दिवस**-08, 17, 19, 26, **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 10, 12, 14, 21, 24, 29, 31। **जनवरी 2021**–मानसिक तनाव समाप्त होगा। परीक्षाओं में सफलता। स्थान परिवर्तन का योग है। निकटस्थ व्यक्तियों का सहयोग। मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रोगों से मुक्ति। सन्तान सुख रहेगा। आर्थिक उन्नति होगी। उन्नति के अवसरों में बाधायें आयेंगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। अपव्यय तथा धन हानि के प्रति सावधान रहें। **शुभ दिवस**-04, 09, 15, 19, 24, **अशुभ दिवस**-01, 06, 11, 13, 17, 21, 26, 29, 31। **फरवरी**–आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। भोग विलास की वस्तुओं में रुचि होगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। अनुचित कार्यों से मन हटेगा। दुर्घटना से बचाव होगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। विद्या में यश प्राप्त होगा। सहयोगियों के कारण अवरोध बनेंगे। **शुभ दिवस**- 02, 09, 11, 20, 22, **अशुभ दिवस**-03, 05, 07, 13, 15, 18, 23, 25, 28। **मार्च**–समाज में प्रभाव बढ़ेगा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। व्यापार व्यवसाय में लाभ मिलेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। पूर्वार्जित भूमि-भवन का विस्तार होगा। ऋण मुक्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। वाद-विवाद में समझौतों के लिये विवश होना पड़ेगा। जीवनसाथी को कष्ट होगा। मन किसी के प्रति आसक्त होगा। **शुभ दिवस**-08, 14, 18, 28, **अशुभ दिवस**- 01, 03, 06, 10, 12, 16, 21, 23, 26, 31।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

धनु



स्वामी-गुरु नग-पुखराज शुभ

[illegible] 2020 [illegible] परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होगा। कार्यों में

सफलता मिलेगी। नये मित्र तथा सहयोगी प्राप्त होंगे। डायजेशन सम्बन्धित रोगों से मुक्ति मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति को गिरवी रखने का योग बनेगा। पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। कोर्ट कचहरी के मामलो में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। यात्राओं में दुर्घटना का भय बनेगा। अरिष्ट निवारण के लिये गुरु मंत्रों का जप करें। **शुभ दिवस**-12, 17, 27, **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 08, 10, 15, 20, 22, 25, 29 हैं। **मई**–व्यर्थ वाद-विवादों से छुटकारा मिलेगा। स्वजनों से मधुर सम्बन्ध रहेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। मास के तीसरे सप्ताह से कार्यों में सफलता मिलेगी। सुख-समृद्धि बढ़ेगी। धन-धान्य का लाभ मिलेगा। प्रशासनिक सहयोग प्राप्त होगा। मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मानसिक शांति बनेगी। शनि के अरिष्ट गोचर से सुख, पद-प्रतिष्ठा की हानि होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट आयेगी। उन्नति के अवसरों में बाधायें मिलेंगी। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। सन्तान के प्रति चिंता बढ़ेगी। अरिष्ट निवारण के लिये शनि स्तोत्र का नियमित पाठ करें। **शुभ दिवस**-14, 22, 24, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 06, 08, 10, 12, 17, 19, 27, 29, 31। **जून**–आर्थिक उन्नति होगी। सन्तान सुख रहेगा। परिवारजनों एवं मित्रों का सहयोग मिलेगा। जीवन साथी का सुख सहयोग रहेगा। यात्राओं में लाभ मिलेगा। धन तथा मान प्राप्ति का सुख रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पत्ति सम्बन्धी समस्यायें अर्जित होंगी। माता को कष्टों से छुटकारा मिलेगा। गुरु के अरिष्ट गोचर से शुभ फलों में न्यूनता अनुभव होने पर गुरु प्रीत्यर्थ पीली वस्तुओं को दान करें। **शुभ दिवस**- 06, 11, 18, 21, **अशुभ दिवस**-02, 04, 08, 13, 16, 23, 25, 27, 29 हैं। **जुलाई**–पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। ऐश्वर्य तथा दैनिक उपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। विरोधियों से झगड़ा होगा। उच्च रक्तचाप, ज्वर, खांसी आदि कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। दाम्पत्य जीवन में बाधा आयेगी। व्यय बढ़ेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट आयेगी।

धार्मिक कार्यों तथा दानधर्म के कार्यों से मन में अरुचि रहेगी। **शुभ दिवस**-04, 08, 15, 31, **अशुभ दिवस**- 01, 06, 10, 13, 18, 20, 22, 24, 26, 29। **अगस्त**–आर्थिक कठिनाईया समाप्त होंगी। आजीविका से परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। सन्तान सुख बाधित होगा। मन में चिंता बढ़ेगी। आय में कमी रहेगी। विरोधी मुखर होंगे। आत्मविश्वास गिरेगा। व्यर्थ वाद-विवादों में लिप्त होंगे। यात्राओं में कष्ट होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। अरिष्ट निवारण के लिये नवग्रह पूजन करें। **शुभ दिवस**- 04, 12, 23, **अशुभ दिवस**-02, 07, 09, 14, 17, 19, 21, 25, 27। **सितंबर**–मान सम्मान बढ़ेगा। आत्म विश्वास बढ़ेगा। कार्यस्थल पर सहयोग प्राप्त होगा। शासन से सहयोग मिलेगा। किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति होगी। विरोध समाप्त होगा। सुखोपभोग तथा विलासिता की सामग्री में वृद्धि होगी। शिक्षा में रुचि रहेगी। यात्राओं में कष्ट होगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। दाम्पत्य जीवन में मतभेद पनपेंगे। अरिष्ट निवारण के लिये आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें तथा सूर्य को दान दें। **शुभ दिवस**-01, 19, 28, **अशुभ दिवस**-03, 06, 08, 11, 13, 15, 17, 21, 23, 26, 30 हैं। **अक्टूबर**–बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होंगी। अपेक्षा से अधिक चिरस्थाई लाभ प्राप्त करेंगे। शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। मित्रों से लाभ मिलेगा। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्रायें करेंगे। पद, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान में वृद्धि होगी। घर में किसी आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। सात्विकता में वृद्धि होगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। शुभ फलों में कुछ न्यूनता शनि के गोचर से होगी। शनि मंत्रों के जप से लाभ मिलेगा। **शुभ दिवस**-05, 08, 21, **अशुभ दिवस**-03, 10, 13, 15, 17, 19, 23, 25, 28, 30। **नवंबर**–यात्राओं में सफलता मिलेगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यस्थल पर सहयोग प्राप्त होगा। सन्तुष्टि पूर्वक कार्य करने का अवसर मिलेगा। उन्नति का योग बनेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। आत्म विश्वास बढ़ेगा। किसी प्रिय वस्तु का लाभ मिलेगा। व्यर्थ के विरोध समाप्त होंगे। प्रेम सम्बन्धों में असफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन में असंतोष बनेगा। कार्यों में सफलता संदिग्ध रहेगी। शिक्षा में विघ्न रहेगा। **शुभ दिवस**-02, 04, 17, 29, **अशुभ दिवस**-07, 09, 11, 13, 15, 19, 21, 24, 26। **दिसंबर**–नये मित्र बनेंगे। धन तथा भोग-विलास के साधनों की प्राप्ति होगी। वस्त्रों अथवा सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। झगड़े-झंझट समाप्त होंगे। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मातृपक्ष से लाभ रहेगा। चोट लगने का भय रहेगा। किसी वस्तु की हानि होगी। निरर्थक यात्राओं में थकावट से कष्ट रहेगा। सन्तान के कारण कष्ट होगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। शिक्षा की प्रगति में बाधा आयेगी। **शुभ दिवस**-01, 08, 14, 19, 29, **अशुभ दिवस**-04, 06, 10, 12, 17, 21, 24, 26, 31, **जनवरी 2021**–आर्थिक उन्नति होगी। पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। लाभकारी यात्रायें होंगी। पारिवारिक सम्बन्धों में सुधार होगा। मित्रों तथा अधीनस्थों का सहयोग रहेगा। शासकीय सहायता प्राप्त करेंगे। शिक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आत्म विश्वास बढ़ेगा। मंगल का गोचर अरिष्ट कारक रहेगा। रक्तचाप से पीड़ित होंगे। कष्ट निवारण के लिये लाल वस्तुओं का दान दें। **शुभ दिवस**-01, 06, 17, 26, **अशुभ दिवस**-04, 09, 11, 13, 15, 19, 21, 24, 29, 31। **फरवरी**–दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। पारिवारिक सुख सौहार्द्र बढ़ेगा। आपरेशन अथवा चोट लगने का भय दूर होगा। कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। सफल यात्रायें होंगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सम्भालने का अवसर प्राप्त होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। **शुभ दिवस**-03, 05, 13, 18, 23, **अशुभ दिवस**-07, 09, 11, 15, 20, 25, 28। **मार्च**– कार्यों में सफलता मिलेगी। परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होंगे। स्वभाव में नम्रता तथा समर्पण का भाव रहेगा। राजकीय भय का निराकरण होगा। डायजेशन से सम्बन्धित रोगों से मुक्ति मिलेगी। शारीरिक दुर्बलता दूर होगी। भू-सम्पत्ति के मामलों में सावधानी पूर्वक कार्य करें। ग्रहों के अरिष्ट गोचर से सन्तान सुख में कमी रहेगी। स्वजनों से विरोध होगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। **शुभ दिवस**-03, 12, 21, 31 **अशुभ दिवस**-01, 06, 08, 10, 14, 16, 18, 23, 26, 28 हैं।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मकर



स्वामी-शनि नग-नीलम शुभ

अप्रैल 2020–दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। शुभ फलदायक यात्रायें होंगी। बन्धु-बान्धवों का सहयोग मिलेगा। स्थान तथा आर्थिक लाभ मिलेगा। मातृपक्ष से लाभ रहेगा। परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। वैवाहिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। गर्भधारण-सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। खानपान, भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पत्ति में सावधानी आवश्यक रहेगी। **शुभ दिवस**-02, 20, 29, **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 10, 12, 15, 17, 22, 25, 27। **मई**–प्रशासनिक सहयोग रहेगा। कार्यस्थल पर सहयोग प्राप्त होगा। किसी प्रिय वस्तु का लाभ मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी। धन-धान्य का लाभ मिलेगा। विरोधियों पर प्रभावी नियन्त्रण से स्थिति में सुधार होगा। मानसिक शांति बनेगी। मंगल के गोचर से वाणी में कठोरता आयेगी। दुष्ट व्यक्तियों का संग साथ प्रिय लगेगा। राजकीय भय होगा। पाचन तंत्र बिगड़ेगा। पित्तजनित व्याधियों से कष्ट रहेगा। जीवन साथी तथा संतान से अनबन रहेगी। शैक्षणिक कार्यों में अरुचि रहेगी। **शुभ दिवस**-17, 27, **अशुभ दिवस**-02, 04, 06, 08, 10, 12, 14, 19, 22, 24, 29, 31। **जून**–धनागम बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम का फल प्राप्त होगा। पद, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। प्रशासन से सहायता मिलेगी। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। धातुओं के व्यापार से लाभ होगा तथा किसी बहुमूल्य धातु की प्राप्ति होगी। आत्म विश्वास बढ़ेगा। स्थान लाभ होगा। मन ऐडवैन्चरस कार्यों की ओर आकर्षित होगा। मातृपक्ष से लाभ रहेगा। सूर्य के अरिष्ट गोचर से शुभ फलों में न्यूनता अनुभव होने पर सूर्य मंत्रों का जप करें। **शुभ दिवस**-13, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 06, 08, 11, 16, 18, 21, 23, 25, 27, 29 हैं। **जुलाई**–व्यवसायिक बाधायें समाप्त होंगी। कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मतभेद एवं विवाद समाप्त होंगे। जीवन साथी का सुख सहयोग रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। यात्राओं में लाभ मिलेगा। रोग समाप्त होंगे। परिश्रम के अनुरूप फल प्राप्त होगा। तार्किक क्षमता का लाभ मिलेगा। किसी बहुमूल्य धातु की प्राप्ति होगी। मान सम्मान बढ़ेगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। **शुभ दिवस**-10, 20, **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 08, 13, 15, 18, 22, 24, 26, 29, 31। **अगस्त**–आय में वृद्धि से आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। संचित धन की स्थिति संतोषजनक बनेगी। सभी प्रकार के सुख प्राप्त होंगे। पारिवारिक सदस्यों तथा मित्रों के साथ जीवन आनन्दमय रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार। प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सहयोग मिलेगा। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ। मातृपक्ष से लाभ रहेगा। स्वयं के किये गये गलत कार्यों का परिणाम मिलेगा। व्यय की अधिकता। लोन लेने की स्थिति बनेगी। सन्तान से अथवा सन्तान के कारण कष्ट होगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। **शुभ दिवस**-02, 07, 14, 29, **अशुभ दिवस**-04, 09, 12, 17, 19, 21, 23, 25, 27। **सितंबर**–आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होगा। रोग से छुटकारा मिलेगा। बहुमूल्य वस्तु की प्राप्ति का आनन्द रहेगा। स्थान परिवर्तन होने से परिवारजनों से अलग रहना होगा। विश्वासपात्रों से धोखा मिलेगा। कोर्ट कचहरी के चक्कर बढ़ेंगे। मुकदमेबाजी होगी। परन्तु सूर्य प्रभाव से अपवादों से छुटकारा मिलेगा। मानसिक शांति मिलेगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। यात्राओं से लाभ होगा। **शुभ दिवस**-03, 11, 13, **अशुभ दिवस**-01, 06, 08, 15, 17,

19, 21, 23, 26, 28, 30। **अक्टूबर**–व्यवसायिक सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। वरिष्ठों एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। सज्जनों के माध्यम से लाभ होगा। पदोन्नति होगी। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्रायें करेंगे। व्यय अधिक रहेगा। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। **शुभ दिवस**-19, **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 10, 13, 15, 17, 21, 23, 25, 28, 30। **नवंबर**–बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होंगी। शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्रायें करेंगे। मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा समाप्त होगी। स्वास्थ्य लाभ होगा। आर्थिक उन्नति का योग बनेगा। विरोध समाप्त होगा। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्य स्थगित होगा। पारिवारिक सुख शांति तथा मैत्रीपूर्ण वातावरण में अवरोध बनेंगे। वरिष्ठों से मतभेद होंगे। आवश्यकता से अधिक धन व्यय होगा। मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। स्थान परिवर्तन योग। **शुभ दिवस**-07, 15, **अशुभ दिवस**-02, 04, 09, 11, 13, 17, 19, 21, 24, 26, 29। **नवंबर**–पद प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। धनागमन बढ़ेगा। भाग्य, आय, धन तथा ऐश्चर्य की वृद्धि होगी। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य लाभ होगा। सतांन के प्रति चिंता बढ़ने से मानसिक व्यथा बनेगी। प्रेम सम्बन्धों में असफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों से मतभेद तथा मनमुटाव होगा। प्रशासनिक भय बनेगा। व्यय की अधिकता रहेगी। स्थान परिवर्तन होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। **शुभ दिवस**-04, 12, 31, **अशुभ दिवस**-01, 06, 08, 10, 14, 17, 19, 21, 24, 26, 29। **जनवरी 2021**–भूमि-भवन-वाहन का लाभ होगा। मित्रों व सहोदरों का सहयोग प्राप्त होगा। मुकद्दमों में विजय मिलेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। व्यय बढ़ेगा। नौकरीपेशा व स्वरोजगार कर रहे व्यक्तियों को रोजगार हानि का सामना करना पड़ेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलो में विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे। **शुभ दिवस**-09, 11, 13, 15, 24, **अशुभ दिवस**-01, 04, 06, 12, 17, 19, 21, 26, 29, 31। **फरवरी**–पद प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। धन लाभ होगा। विरोध समाप्त होगा। घर परिवार तथा सम्बन्धियों का सहयोग मिलेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेल मिलाप बढ़ेगा। मातृपक्ष से लाभ रहेगा। स्वास्थ्य लाभ होगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में निकटस्थ व्यक्तियों के साथ-साथ प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। स्थान परिवर्तन का योग बनेगा। मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। **शुभ दिवस**-05, 07, 20, 23, 25, **अशुभ दिवस**-03, 09, 11, 13, 15, 18, 21, 28। **मार्च**–मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सन्तान तथा मित्रों के माध्यम से धन लाभ होगा। विरोधी पराजित होंगे। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभालने का अवसर प्राप्त होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। शुभ फलदायक यात्रायें होंगी। मन ऐडवैन्चरस कार्यो की ओर आकर्षित होगा। किसी बहुमूल्य वस्तु के खोने का भय रहेगा। **शुभ दिवस**-03, 06, 18, 23, 25, **अशुभ दिवस**-01, 08, 10, 12, 14, 16, 21, 26, 28, 31 हैं।

कुम्भ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

कुम्भ



स्वामी-शनि नग-नीलम शुभ

अप्रैल 2020–शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। घर परिवार तथा सम्बन्धियों का सहयोग मिलेगा। झगड़े-झंझट समाप्त होंगे। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रोग मुक्त होंगे। मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। विरोधी पराजित होंगे। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। सतान के प्रति चिंता बढ़ेगी। मंगल के गोचर में व्यय की अधिकता रहेगी। नेत्र रोग से पीड़ित होंगे। **शुभ दिवस**-04, 10, 12, **अशुभ दिवस**-02, 06, 08, 15, 17, 20, 22, 25, 27, 29 हैं। **मई**–भाग्य, आय, धन तथा ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि होगी। माता अथवा मातृतुल्य महिलाओं के आशीर्वाद से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ। भूमि-भवन के कार्यो में सफलता। मानसिक तथा शारीरिक कष्ट समाप्त होगा। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में सफलता। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। गुरु के अरिष्ट गोचर से विश्वासपात्रों से धोखा मिलेगा। व्यवसायिक उन्नति में बाधा आयेगी। अरिष्ट निवारण के लिये गुरुवार के दिन गौ माता की सेवा करें तथा पीली वस्तुओं का दान दें। **शुभ दिवस**-02, 10, 29, **अशुभ दिवस**-04, 06, 08, 12, 14, 17, 19, 22, 24, 27, 31। **जून**–संतान के प्रति चिंता बढ़ेगी। कार्यकुशलता में कमी आयेगी। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। मानसिक व्यथा का योग। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। सूर्य तथा गुरु के गोचर से विश्वासपात्रों से धोखा मिलेगा। परिवारजनों से अलग रहने का योग। कोर्ट-कचहरी के चक्कर बढ़ेंगे। पित्तजनित व्याधियों से कष्ट रहेगा। यात्राओं में दुर्घटना, चोरी अथवा अग्निकांड का भय। लोन लेने की स्थिति बनेगी। **शुभ दिवस**-06, 16, 25, **अशुभ दिवस**-02, 04, 08, 11, 13, 18, 21, 23, 27, 29। **जुलाई**–कार्यकुशलता में कमी। भाग्य, आय, धन तथा ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि होगी। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। मानसिक व्यथा का योग रहेगा। संतान के प्रति चिंता रहेगी। सुख समृद्धि में बाधा। धन-धान्य की हानि होगी। कार्यो में असफलता। स्वास्थ्य खराब होगा। परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहीं होगा। विश्वासपात्रों से धोखा मिलेगा। मुकद्दमे बाजी होगी। मानसिक तनाव। **शुभ दिवस**-01, 04, 13, 22, 29 **अशुभ दिवस**-06, 08, 10, 15, 18, 20, 24, 26, 31। **अगस्त**–आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। मनोरंजनों में समय व्यतीत होगा। भोग विलास की वस्तुओं में रुचि होगी। परिवारजनों से मतभेद एवं विवाद होगा। सन्तान को किसी रोग से पीड़ा होगी। पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन में अरुचि रहेगी। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। **शुभ दिवस**-19, 25, 27, **अशुभ दिवस**- 02, 04, 07, 09, 12, 14, 17, 21, 23, 29। **सितंबर**–सभी कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। पद प्रतिष्ठा तथा धनागमन में वृद्धि होगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। विरोधी पक्ष पराजित होगा। सहयोगियों तथा साझेदारों का सहयोग मिलेगा। दाम्पत्य जीवन का आनन्द रहेगा। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। यात्राओं में सफलता। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। दूरस्थ स्थान की असुविधापूर्ण यात्रा होगी। **शुभ दिवस**-15, 21, 28, **अशुभ दिवस**-01, 03, 06, 08, 11, 13, 17, 19, 23, 26, 30। **अक्टूबर**–कार्यो में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। विरोधी पक्ष पराजित होगा। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। जीवनयापन सुगमतापूर्वक चलता रहेगा। परिश्रम के अनुरूप लाभ मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होंगी। प्रयत्नों में असफलता से निराशा तथा खिन्नता रहेगी। आत्मविश्वास गिरेगा। व्यय बढ़ेगा। अरिष्ट निवारण के लिये सूर्य प्रीत्यर्थ रविवार के दिन गेहूं तथा गुड़ का दान करें। **शुभ दिवस**-10, 19, 21, 25, **अशुभ दिवस**-03, 05, 08, 13, 15, 17, 23, 28, 30, **नवंबर**–किसी प्रतिष्ठित कार्य के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने का आनन्द रहेगा। व्यवसायिक सफलता मिलेगी। पदोन्नति होगी। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। धन लाभ मिलेगा। उत्तम स्वास्थ्य का सुख। भाग्योन्नति होगी। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ। सामाजिक शिक्षा में बाधा आयेगी। **शुभ दिवस**-07, 15, 17, 21, 26, **अशुभ दिवस**-02, 04, 09, 11, 13, 19, 24, 29 हैं। **दिसंबर**–कार्य में सफलता से मन उत्साहित रहेगा। परिश्रम का फल मिलेगा। घर में किसी आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव सम्पन्न होने से मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि। धातुओं के व्यापार से लाभ। रोगों से छुटकारा। धन लाभ होगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। विदेश जाने का योग। सन्तान के विषय में चिंता

बनेगी। घर परिवार से दूर रहना होगा। व्यय बढ़ेगा। जमीन जायदाद का साधारण लाभ होगा। **शुभ दिवस**-04, 06, 12, 14, 19, 31, **अशुभ दिवस**-01, 08, 10, 17, 21, 24, 26, 29। **जनवरी 2021**– किसी उच्च अधिकारी से लाभान्वित होंगे। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। यश, मान-सम्मान प्राप्त होगा। आय तथा अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। यात्राओं में सफलता मिलेगी। अविवाहितों के लिये विवाह योग बनेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक प्रसंग में भाग लेंगे। **शुभ दिवस**-07, 13, 21, **अशुभ दिवस**- 01, 03, 06, 09, 11, 15, 17, 19, 24, 26। **फरवरी**–पदोन्नति सम्बन्धी विवाद समाप्त होंगे। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। परीक्षाओं में सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। स्वास्थय उत्तम रहेगा। भूमि-भवन से लाभ मिलेगा। लाभकारी यात्रायें होंगी। व्यापारियों की व्यवसायिक प्रगति बाधित होगी। लोन लेने की स्थिति बनेगी। शासकीय दंड का योग रहेगा। **शुभ दिवस**-09, 18, **अशुभ दिवस**-03, 05, 07, 11, 13, 15, 20, 23, 25, 28। **मार्च**–मान-सम्मान में वृद्धि होगी। शासकीय सहायता प्राप्त करेंगे। आर्थिक कठिनाई अनुभव करेंगे। लोन लेने की स्थिति बनेगी। शेयर मार्केट तथा स्पैकुलेशन से लाभ मिलेगा। रोजी रोजगार तथा कार्यालय में उलझनें रहेंगी। सन्तान के कारण कष्ट। दाम्पत्य जीवन में मतभेद बनेंगे। विद्यार्थियों को सफलता के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। **शुभ दिवस**-05, 08, 16, 20, **अशुभ दिवस**-01, 03, 06, 10, 12, 14, 18, 21, 23, 26, 28, 31

मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन

स्वामी-गुरु **नग-पुखराज** **शुभ**

अप्रैल 2020–भूमि-भवन का लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। पदोन्नति सम्बन्धी वाद-विवाद समाप्त होंगे। मुकद्दमों में विजय प्राप्त होगी। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। धार्मिक विषयों में अभिरुचि रहेगी। विवाह होने का योग बनेगा। सन्तान सुख रहेगा। विद्याभ्यास में यश मिलेगा। परीक्षाओं में सफलता। विवेकशीलता बढ़ेगी। सूर्य के अरिष्ट गोचर से स्वभाव में कठोरता आयेगी। निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा मिलेगा। निम्न स्तरीय व्यक्तियों से मेल मिलाप बढ़ेगा। वाहनादि से कष्ट रहेगा। **शुभ दिवस**- 04, 06, 15, 20, **अशुभ दिवस**-02, 08, 10, 12, 17, 22, 25, 27, 29। **मई**–व्यय पर नियन्त्रण करने में सफलता मिलेगी। सन्तान के कार्यों से मान-सम्मान बढ़ेगा। नेत्र रोग तथा रक्त चाप से सम्बन्धित रोगों से छुटकारा मिलेगा। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। किसी उच्च पदस्थ व्यक्ति के माध्यम से लाभ होगा। प्रेमी युगलों के लिये समय अनुकूल नहीं है। जमीन जायदाद का साधारण लाभ होगा। वाहनादि से कष्ट रहेगा। सूर्योपासना से लाभ होगा। **शुभ दिवस**-02, 04, 10, 12, 17, 29, 31, **अशुभ दिवस**-06, 08, 14, 19, 22, 24, 27। **जून**–पद-प्रतिष्ठा तथा धनागमन में वृद्धि होगी। मन प्रसन्न रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। विरोधी पक्ष पराजित होगा। दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। वाहनादि से कष्ट रहेगा। व्यय बढ़ेगा। सूर्य के गोचर से यात्राओं में असुविधा होगी। सुख ऐश्वर्य में कमी तथा व्यसनों से लगाव रहेगा। भू-सम्पत्ति के मामलों में विघ्न बाधाएं आयेंगी। अरिष्ट निवारण के लिये सूर्योपासना करें। **शुभ दिवस**-06, 08, 13, **अशुभ दिवस**-02, 04, 11, 16, 18, 21, 23, 25, 27, 29 हैं। **जुलाई**–पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उच्च अधिकारी का सहयोग मिलेगा। विरोधी पक्ष पराजित होगा। मन प्रसन्न रहेगा। कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। अतिरिक्त अधिकार मिलेंगे। जमीन जायदाद का साधारण लाभ होगा। मातृ सुख में कमी रहेगी। भ्रम की स्थिति का निवारण होगा। शारीरिक तथा मानसिक शक्ति में दृढ़ता परिलक्षित होगी। यात्राओं में दुर्घटना से बचाव होगा परन्तु वाहनादि से कष्ट रहेगा। **शुभ दिवस**-06, 10, 24, **अशुभ दिवस**-01, 04, 08, 13, 15, 18, 20, 22, 26, 29, 31। **अगस्त**–शनि से बच के प्रभाव से आकस्मिक रूप से किसी झगड़े-झंझट से बचाव होगा। मानसिक तथा शारीरिक कष्ट समाप्त होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। जीवन साथी तथा संतान का सुख सहयोग मिलेगा। योजनाबद्ध कार्यों से सफलता की प्राप्ति होगी। जमीन जायदाद का साधारण लाभ मिलेगा। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में सफल रहेंगे। आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। स्वास्थ्य खराब होगा। प्रशासनिक कारणों से हानि होगी। मानसिक तनाव बढ़ेगा। स्वभाव की नम्रता से बाधाओं तथा अवरोधों को समाप्त करने में सफल रहेंगे। **शुभ दिवस**-02, 19, 27, **अशुभ दिवस**-04, 07, 09, 12, 14, 17, 21, 23, 25, 29।

सितंबर–किसी उच्च पदस्थ व्यक्ति से लाभ होगा। दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मान-सम्मान तथा अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। आय के नये मार्ग बनेंगे। विरोधी परास्त होंगे। सन्तान तथा परिवार से प्रीति रहेगी। भोग विलास की वस्तुओं में रुचि होगी। जमीन-जायदाद का साधारण लाभ होगा। वाहनादि से कष्ट तथा अपव्यय होगा। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। **शुभ दिवस**-17, 30, **अशुभ दिवस**-01, 03, 06, 08, 11, 13, 15, 19, 21, 23, 26, 28, **अक्टूबर**–परिश्रम के अनुकूल कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक कठिनाईया समाप्त होगी। उच्च अधिकारी की मध्यस्थता से शासन-प्रशासन का सहयोग मिलेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यय पर नियन्त्रण होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। अरिष्ट निवारण के लिये गौ सेवा करें। **शुभ दिवस**-13, 15, 28, **अशुभ दिवस**- 03, 05, 08, 10, 17, 19, 21, 23, 25, 30। **नवंबर**–उच्च पदस्थ व्यक्तियों का अनुग्रह रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आर्थिक लाभ मिलने से आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होगी। परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। वैभवी वस्तु की प्राप्ति का आनन्द रहेगा। भू-सम्पत्ति सम्बन्धी विवादों में हानि होगी। विरोधी से सफलता मिलेगी। **शुभ दिवस**-09, **अशुभ दिवस**-02, 04, 07, 11, 13, 15, 17, 19, 21, 24, 26, 29 हैं। **दिसंबर**–इच्छाओं की पूर्ति होगी। परिश्रम के अनुरूप परिणाम प्राप्त होंगे। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मित्रों से लाभ मिलेगा। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्रायें करेंगे। डायजेशन से सम्बन्धित रोगों से मुक्ति मिलेगी। राजकीय भय का निराकरण होगा। सामाजिक कार्यों में समय देंगे। **शुभ दिवस**-06, 17, 21, **अशुभ दिवस**-01, 04, 08, 10, 12, 14, 19, 24, 26, 29, 31 हैं। **जनवरी 2021**–प्रतिष्ठित कार्य के सम्पन्न होने का आनन्द रहेगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। पद-प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान में वृद्धि। रोगों से छुटकारा मिलेगा। मांगलिक उत्सवों से मन प्रसन्न रहेगा। भूमि-भवन-वाहन की प्राप्ति का योग बनता है। स्थान परिवर्तन का योग बनेगा। सन्तान के विषय में चिन्तित रहेंगे। अरिष्ट निवारण के लियें गोमाता की सेवा करें। **शुभ दिवस**-13, 15, 21, 24, 29, **अशुभ दिवस**- 01, 04, 06, 09, 11, 17, 19, 26, 31। **फरवरी**–मान सम्मान में बढ़ोतरी होगी। व्यापार में उन्नति होगी। दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मन भोग विलास की ओर आकर्षित होगा। अविवाहितों का विवाह का योग बनेगा। शिक्षा तथा यात्राओं में सफलता का योग बनेगा। जमीन-जायदाद का साधारण लाभ होगा। वाहनादि से कष्ट का योग बनता है। **शुभ दिवस**-09, 11, 20, 25, **अशुभ दिवस**-03, 05, 07, 13, 15, 18, 23, 28 हैं। **मार्च**–आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। प्रशासकीय लाभ मिलेगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। विरोधी परास्त होंगे। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। मनोरंजन, गायन, वादन, शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। शिक्षा में प्रगति होगी तथा परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। नेत्र रोग, रक्तचाप अथवा हृदय रोग का योग। वाहनादि से कष्ट रहेगा। **शुभ दिवस**-08, 10, 18, 23, **अशुभ दिवस**- 01, 03, 06, 12, 14, 16, 21, 26, 28, 31 हैं। ●

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—अप्रैल सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
अप्रै.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	अप्रै.
1	11:55	01:09	11:34	00:49	11:17	01:12	11:20	01:03	11:32	01:05	11:12	00:44	12:05	00:58	10:11	24:00	1
2	12:53	02:05	12:32	01:45	12:16	02:08	12:19	01:59	12:31	02:01	12:10	01:40	13:03	01:53	11:09	00:44	2
3	13:56	02:57	13:36	02:37	13:22	02:58	13:24	02:50	13:36	02:52	13:15	02:31	14:05	02:47	12:14	01:35	3
4	15:02	03:46	14:42	03:26	14:32	03:44	14:33	03:37	14:43	03:39	14:22	03:19	15:09	03:37	13:22	02:22	4
5	16:09	04:31	15:48	04:11	15:43	04:25	15:43	04:20	15:52	04:24	15:31	04:03	16:13	04:25	14:31	03:06	5
6	17:15	05:16	16:54	04:56	16:53	05:05	16:52	05:01	17:00	05:06	16:39	04:45	17:17	05:11	15:39	03:48	6
7	18:20	05:59	18:00	05:39	18:03	05:44	18:00	05:41	18:07	05:47	17:46	05:26	18:20	05:57	16:47	04:29	7
8	19:25	06:41	19:05	06:21	19:12	06:23	19:08	06:21	19:14	06:28	18:53	06:07	19:23	06:42	17:55	05:09	8
9	20:31	07:25	20:11	07:04	20:23	07:02	20:18	07:01	20:22	07:09	20:01	06:48	20:26	07:27	19:03	05:50	9
10	21:38	08:09	21:18	07:48	21:34	07:42	21:27	07:42	21:31	07:51	21:10	07:31	21:31	08:14	20:12	06:32	10
11	22:45	08:55	22:25	08:34	22:44	08:23	22:37	08:25	22:39	08:35	22:18	08:14	22:35	09:02	21:21	07:15	11
12	23:49	09:43	23:29	09:23	23:51	09:08	23:43	09:11	23:45	09:22	23:24	09:01	23:38	09:52	22:27	08:01	12
13	24:00	10:35	24:00	10:14	24:00	09:58	24:00	10:01	24:00	10:13	24:00	09:52	24:00	10:45	23:27	08:52	13
14	00:48	11:30	00:28	11:09	00:52	10:53	00:43	10:56	00:44	11:08	00:23	10:47	00:36	11:41	24:00	09:47	14
15	01:40	12:27	01:21	12:07	01:43	11:52	01:35	11:54	01:36	12:06	01:16	11:45	01:29	12:37	00:20	10:45	15
16	02:26	13:24	02:07	13:04	02:27	12:51	02:19	12:53	02:21	13:04	02:01	12:43	02:17	13:33	01:05	11:43	16
17	03:07	14:20	02:47	13:59	03:05	13:50	02:58	13:51	03:01	14:01	02:40	13:40	02:59	14:26	01:44	12:41	17
18	03:44	15:13	03:24	14:53	03:38	14:47	03:32	14:47	03:36	14:56	03:16	14:35	03:38	15:18	02:19	13:36	18
19	04:18	16:04	03:59	15:44	04:09	15:41	04:04	15:40	04:09	15:48	03:49	15:28	04:14	16:07	02:52	14:29	19
20	04:51	16:54	04:32	16:33	04:39	16:34	04:35	16:32	04:41	16:40	04:20	16:19	04:49	16:55	03:23	15:20	20
21	05:23	17:43	05:04	17:23	05:08	17:27	05:05	17:24	05:11	17:30	04:51	17:09	05:23	17:42	03:54	16:11	21
22	05:55	18:32	05:35	18:12	05:37	18:19	05:34	18:16	05:42	18:21	05:21	18:00	05:56	18:30	04:24	17:03	22
23	06:28	19:23	06:08	19:03	06:06	19:13	06:05	19:09	06:13	19:13	05:52	18:53	06:31	19:18	04:54	17:55	23
24	07:02	20:15	06:42	19:55	06:36	20:10	06:36	20:04	06:45	20:08	06:24	19:47	07:06	20:09	05:26	18:50	24
25	07:38	21:10	07:17	20:50	07:08	21:08	07:09	21:01	07:19	21:04	06:59	20:43	07:44	21:02	06:00	19:46	25
26	08:17	22:07	07:56	21:47	07:44	22:08	07:46	22:00	07:57	22:02	07:36	21:41	08:25	21:57	06:37	20:45	26
27	09:00	23:04	08:40	22:44	08:25	23:07	08:27	22:59	08:39	23:00	08:18	22:39	09:10	22:53	07:18	21:43	27
28	09:49	24:00	09:28	23:40	09:12	24:00	09:15	23:55	09:27	23:57	09:06	23:35	10:00	23:48	08:06	22:40	28
29	10:44	24:00	10:23	24:00	10:07	00:04	10:10	24:00	10:22	24:00	10:01	24:00	10:55	24:00	09:01	23:31	29
30	11:44	00:52	11:24	00:32	11:09	00:55	11:12	00:46	11:23	00:48	11:02	00:27	11:54	00:41	10:02	24:00	30

आर्यभट्ट पंचांगम्
भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—मई सन् 2020 ई.

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—मई सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
मई	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	मई
1	12:48	01:40	12:27	01:21	12:15	01:40	12:17	01:33	12:28	01:35	12:07	01:14	12:55	01:31	11:07	00:18	1
2	13:52	02:25	13:31	02:06	13:24	02:21	13:24	02:15	13:34	02:19	13:13	01:58	13:57	02:18	12:13	01:01	2
3	14:56	03:08	14:35	02:48	14:32	03:00	14:31	02:55	14:40	03:00	14:19	02:39	14:59	03:03	13:19	01:42	3
4	15:59	03:50	15:39	03:30	15:40	03:38	15:38	03:34	15:45	03:39	15:24	03:19	16:00	03:47	14:25	02:22	4
5	17:03	04:32	16:43	04:11	16:48	04:15	16:44	04:12	16:51	04:19	16:30	03:58	17:02	04:31	15:31	03:01	5
6	18:08	05:13	17:48	04:53	17:57	04:53	17:53	04:51	17:58	04:59	17:37	04:38	18:04	05:15	16:39	03:40	6
7	19:15	05:57	18:54	05:36	19:08	05:32	19:02	05:31	19:06	05:40	18:45	05:19	19:08	06:01	17:48	04:21	7
8	20:23	06:42	20:03	06:21	20:21	06:13	20:13	06:14	20:16	06:23	19:55	06:03	20:14	06:48	18:58	05:04	8
9	21:30	07:30	21:10	07:09	21:32	06:57	21:24	06:59	21:26	07:09	21:05	06:49	21:20	07:38	20:08	05:49	9
10	22:34	08:21	22:14	08:01	22:38	07:45	22:29	07:48	22:31	07:59	22:10	07:39	22:23	08:31	21:13	06:38	10
11	23:32	09:17	23:12	08:56	23:35	08:39	23:27	08:42	23:28	08:54	23:07	08:33	23:20	09:27	22:11	07:33	11
12	24:00	10:15	24:00	09:54	24:00	09:38	24:00	09:41	24:00	09:53	23:57	09:32	24:00	10:25	23:01	08:32	12
13	00:22	11:14	00:02	10:54	00:24	10:40	00:15	10:42	00:17	10:53	24:00	10:32	00:11	11:23	23:43	09:32	13
14	01:05	12:12	00:46	11:51	01:04	11:41	00:57	11:42	01:00	11:52	00:39	11:31	00:56	12:19	24:00	10:32	14
15	01:44	13:06	01:24	12:46	01:40	12:39	01:33	12:39	01:37	12:49	01:16	12:28	01:37	13:12	00:20	11:28	15
16	02:19	13:59	02:00	13:38	02:12	13:34	02:06	13:34	02:11	13:42	01:50	13:21	02:14	14:02	00:54	12:23	16
17	02:53	14:49	02:33	14:28	02:42	14:28	02:37	14:26	02:43	14:34	02:22	14:13	02:49	14:50	01:25	13:15	17
18	03:25	15:38	03:05	15:18	03:10	15:20	03:07	15:18	03:13	15:25	02:53	15:04	03:23	15:38	01:56	14:06	18
19	03:57	16:27	03:37	16:07	03:39	16:13	03:37	16:09	03:44	16:15	03:23	15:55	03:57	16:25	02:26	14:57	19
20	04:29	17:17	04:09	16:57	04:08	17:07	04:06	17:02	04:14	17:07	03:54	16:46	04:31	17:13	02:56	15:49	20
21	05:02	18:09	04:42	17:49	04:38	18:02	04:37	17:57	04:46	18:01	04:25	17:40	05:06	18:04	03:27	16:43	21
22	05:37	19:04	05:17	18:44	05:09	19:00	05:10	18:54	05:20	18:57	04:59	18:36	05:43	18:56	04:00	17:39	22
23	06:16	20:01	05:55	19:41	05:44	20:01	05:46	19:53	05:56	19:56	05:36	19:35	06:23	19:51	04:36	18:38	23
24	06:58	20:59	06:38	20:39	06:23	21:02	06:26	20:53	06:37	20:55	06:16	20:34	07:07	20:48	05:17	19:38	24
25	07:46	21:56	07:25	21:36	07:09	22:00	07:12	21:51	07:24	21:53	07:03	21:32	07:56	21:45	06:03	20:36	25
26	08:39	22:50	08:19	22:30	08:02	22:53	08:05	22:45	08:17	22:46	07:56	22:25	08:50	22:39	06:56	21:29	26
27	09:38	23:39	09:17	23:20	09:02	23:40	09:05	23:32	09:16	23:35	08:55	23:14	09:48	23:29	07:55	22:18	27
28	10:40	24:00	10:20	24:00	10:07	24:00	10:09	24:00	10:20	24:00	09:59	23:58	10:49	24:00	08:58	23:01	28
29	11:43	00:25	11:23	00:05	11:14	00:22	11:14	00:15	11:24	00:18	11:03	24:00	11:50	00:17	10:04	23:42	29
30	12:45	01:07	12:25	00:47	12:20	01:01	12:20	00:55	12:29	00:59	12:08	00:38	12:50	01:01	11:08	24:00	30
31	13:47	01:48	13:26	01:28	13:26	01:37	13:24	01:33	13:32	01:38	13:11	01:17	13:49	01:44	12:12	00:20	31

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—जून सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगड़		ता.
जून	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	जून
1	14:48	02:28	14:28	02:08	14:31	02:13	14:28	02:10	14:35	02:16	14:14	01:55	14:48	02:26	13:15	00:58	1
2	15:50	03:08	15:30	02:48	15:37	02:49	15:33	02:47	15:39	02:54	15:18	02:33	15:48	03:08	14:20	01:36	2
3	16:54	03:49	16:34	03:29	16:46	03:26	16:41	03:25	16:45	03:33	16:24	03:13	16:49	03:52	15:26	02:14	3
4	18:01	04:32	17:41	04:11	17:57	04:05	17:50	04:05	17:54	04:14	17:32	03:54	17:53	04:37	16:35	02:55	4
5	19:09	05:17	18:48	04:57	19:08	04:46	19:01	04:48	19:03	04:58	18:42	04:37	18:59	05:25	17:45	03:38	5
6	20:15	06:07	19:55	05:46	20:18	05:32	20:09	05:34	20:11	05:46	19:50	05:25	20:04	06:16	18:54	04:25	6
7	21:17	07:01	20:57	06:40	21:21	06:23	21:12	06:26	21:14	06:39	20:53	06:18	21:05	07:11	19:57	05:17	7
8	22:12	07:59	21:52	07:38	22:15	07:21	22:06	07:24	22:08	07:37	21:47	07:16	22:01	08:10	20:51	06:15	8
9	23:00	08:59	22:40	08:39	23:00	08:23	22:52	08:26	22:55	08:38	22:34	08:17	22:50	09:09	21:38	07:16	9
10	23:41	09:59	23:21	09:39	23:38	09:26	23:32	09:28	23:35	09:39	23:14	09:18	23:33	10:07	22:18	08:18	10
11	24:00	10:57	23:59	10:36	24:00	10:27	24:00	10:28	24:00	10:38	23:50	10:17	24:00	11:03	22:53	09:17	11
12	00:18	11:51	24:00	11:30	00:12	11:25	00:06	11:25	00:10	11:34	24:00	11:13	00:12	11:55	23:26	10:14	12
13	00:53	12:42	00:33	12:21	00:43	12:20	00:38	12:18	00:43	12:27	00:22	12:06	00:49	12:44	23:57	11:07	13
14	01:25	13:31	01:05	13:11	01:12	13:13	01:08	13:10	01:14	13:18	00:54	12:57	01:23	13:32	24:00	11:59	14
15	01:57	14:20	01:37	14:00	01:41	14:05	01:38	14:02	01:45	14:08	01:24	13:47	01:57	14:19	00:27	12:49	15
16	02:29	15:10	02:09	14:50	02:09	14:58	02:07	14:54	02:15	14:59	01:54	14:38	02:30	15:07	00:57	13:41	16
17	03:01	16:01	02:41	15:41	02:38	15:52	02:38	15:47	02:46	15:52	02:25	15:31	03:05	15:56	01:27	14:34	17
18	03:36	16:55	03:16	16:35	03:09	16:50	03:09	16:43	03:19	16:47	02:58	16:26	03:41	16:48	02:00	15:29	18
19	04:13	17:51	03:53	17:31	03:43	17:50	03:44	17:42	03:54	17:45	03:33	17:24	04:20	17:42	02:34	16:27	19
20	04:54	18:50	04:33	18:30	04:20	18:51	04:22	18:43	04:33	18:45	04:13	18:24	05:02	18:39	03:13	17:28	20
21	05:40	19:49	05:19	19:29	05:04	19:52	05:07	19:43	05:18	19:45	04:58	19:24	05:50	19:37	03:58	18:28	21
22	06:32	20:45	06:12	20:25	05:55	20:48	05:58	20:40	06:10	20:41	05:49	20:20	06:43	20:33	04:49	19:24	22
23	07:31	21:37	07:10	21:17	06:54	21:38	06:57	21:30	07:09	21:32	06:48	21:11	07:41	21:26	05:47	20:15	23
24	08:33	22:24	08:13	22:04	07:59	22:23	08:01	22:15	08:12	22:18	07:51	21:57	08:42	22:15	06:51	21:01	24
25	09:37	23:08	09:16	22:48	09:06	23:02	09:07	22:56	09:18	23:00	08:57	22:39	09:44	23:01	07:57	21:43	25
26	10:40	23:49	10:19	23:29	10:13	23:40	10:13	23:35	10:23	23:40	10:02	23:19	10:45	23:44	09:02	22:22	26
27	11:41	24:00	11:21	24:00	11:19	24:00	11:17	24:00	11:26	24:00	11:05	23:57	11:44	24:00	10:06	22:59	27
28	12:41	00:28	12:21	00:08	12:23	00:15	12:21	00:11	12:28	00:17	12:07	24:00	12:42	00:26	11:08	23:36	28
29	13:42	01:07	13:21	00:47	13:27	00:50	13:24	00:48	13:30	00:54	13:09	00:34	13:40	01:07	12:11	24:00	29
30	14:43	01:47	14:23	01:27	14:33	01:26	14:28	01:24	14:33	01:32	14:12	01:11	14:39	01:49	13:14	00:13	30

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—जुलाई सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
जुला.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	जुला.
1	15:46	02:28	15:26	02:07	15:40	02:02	15:34	02:02	15:38	02:11	15:17	01:50	15:40	02:32	14:20	00:52	1
2	16:52	03:11	16:32	02:51	16:50	02:41	16:43	02:42	16:46	02:52	16:25	02:32	16:43	03:17	15:28	01:32	2
3	17:58	03:57	17:38	03:37	18:00	03:24	17:51	03:26	17:54	03:37	17:32	03:16	17:48	04:06	16:36	02:16	3
4	19:02	04:48	18:42	04:27	19:05	04:11	18:57	04:14	18:58	04:26	18:37	04:05	18:50	04:58	17:41	03:05	4
5	20:00	05:44	19:40	05:23	20:03	05:06	19:55	05:09	19:56	05:21	19:35	05:00	19:48	05:55	18:39	04:00	5
6	20:51	06:43	20:31	06:23	20:53	06:06	20:44	06:09	20:46	06:21	20:26	06:00	20:40	06:54	19:30	05:00	6
7	21:35	07:44	21:16	07:24	21:34	07:10	21:27	07:12	21:30	07:24	21:09	07:03	21:27	07:53	20:13	06:02	7
8	22:15	08:44	21:55	08:23	22:10	08:13	22:04	08:14	22:08	08:25	21:47	08:04	22:08	08:51	20:51	07:04	8
9	22:51	09:40	22:31	09:20	22:43	09:13	22:38	09:13	22:42	09:23	22:21	09:02	22:46	09:45	21:25	08:02	9
10	23:25	10:33	23:05	10:13	23:13	10:10	23:09	10:09	23:14	10:17	22:54	09:56	23:22	10:36	21:57	08:57	10
11	23:57	11:24	23:37	11:03	23:42	11:04	23:38	11:02	23:45	11:09	23:24	10:49	23:56	11:25	22:27	09:50	11
12	24:00	12:13	24:00	11:53	24:00	11:56	24:00	11:54	24:00	12:00	23:54	11:39	24:00	12:12	22:57	10:41	12
13	00:28	13:02	00:08	12:42	00:10	12:49	00:08	12:45	00:15	12:51	24:00	12:30	00:29	13:00	23:27	11:32	13
14	01:00	13:52	00:40	13:32	00:39	13:42	00:38	13:37	00:45	13:42	00:25	13:21	01:03	13:48	23:58	12:24	14
15	01:34	14:44	01:13	14:24	01:09	14:38	01:08	14:32	01:17	14:36	00:57	14:15	01:38	14:38	24:00	13:18	15
16	02:09	15:39	01:49	15:19	01:40	15:36	01:41	15:29	01:51	15:32	01:30	15:11	02:15	15:31	00:32	14:15	16
17	02:48	16:37	02:28	16:17	02:16	16:37	02:18	16:29	02:28	16:32	02:08	16:10	02:56	16:27	01:08	15:14	17
18	03:32	17:36	03:11	17:16	02:56	17:39	02:59	17:30	03:10	17:32	02:50	17:11	03:41	17:25	01:50	16:14	18
19	04:22	18:34	04:01	18:14	03:44	18:38	03:48	18:29	04:00	18:30	03:39	18:09	04:32	18:22	02:38	17:13	19
20	05:18	19:29	04:58	19:09	04:41	19:31	04:44	19:23	04:56	19:25	04:35	19:04	05:29	19:18	03:35	18:08	20
21	06:21	20:19	06:00	19:59	05:45	20:19	05:48	20:11	06:00	20:14	05:39	19:53	06:31	20:09	04:38	18:57	21
22	07:26	21:05	07:06	20:45	06:54	21:01	06:56	20:55	07:06	20:58	06:45	20:37	07:34	20:58	05:45	19:41	22
23	08:31	21:48	08:11	21:28	08:03	21:40	08:04	21:35	08:13	21:39	07:52	21:18	08:37	21:43	06:52	20:22	23
24	09:35	22:29	09:14	22:09	09:11	22:17	09:10	22:13	09:19	22:18	08:58	21:58	09:38	22:26	07:58	21:01	24
25	10:36	23:09	10:16	22:49	10:16	22:53	10:14	22:50	10:22	22:56	10:01	22:35	10:37	23:08	09:02	21:38	25
26	11:37	23:48	11:16	23:28	11:21	23:28	11:18	23:26	11:24	23:34	11:03	23:13	11:36	23:49	10:05	22:15	26
27	12:37	24:00	12:17	24:00	12:26	24:00	12:22	24:00	12:27	24:00	12:06	23:51	12:34	24:00	11:08	22:53	27
28	13:39	00:28	13:19	00:08	13:32	00:04	13:26	00:03	13:31	00:12	13:10	24:00	13:34	00:31	12:12	23:32	28
29	14:43	01:09	14:23	00:49	14:40	00:41	14:33	00:42	14:36	00:51	14:15	00:31	14:35	01:15	13:18	24:00	29
30	15:48	01:54	15:27	01:33	15:48	01:21	15:40	01:23	15:43	01:34	15:21	01:13	15:38	02:01	14:25	00:14	30
31	16:51	02:41	16:31	02:21	16:54	02:06	16:45	02:09	16:47	02:20	16:26	01:59	16:40	02:51	15:30	00:59	31

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—अगस्त सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
अग.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	अग.
1	17:50	03:34	17:30	03:13	17:54	02:56	17:45	03:00	17:47	03:12	17:26	02:51	17:38	03:45	16:30	01:50	1
2	18:43	04:31	18:23	04:11	18:46	03:54	18:37	03:57	18:39	04:09	18:18	03:48	18:32	04:42	17:22	02:47	2
3	19:30	05:31	19:10	05:11	19:30	04:56	19:22	04:58	19:25	05:10	19:04	04:49	19:20	05:41	18:08	03:48	3
4	20:11	06:31	19:51	06:11	20:08	05:59	20:01	06:01	20:04	06:11	19:44	05:50	20:03	06:39	18:48	04:50	4
5	20:49	07:29	20:29	07:09	20:42	07:00	20:36	07:01	20:40	07:11	20:20	06:50	20:43	07:35	19:23	05:50	5
6	21:23	08:24	21:03	08:03	21:13	07:59	21:08	07:58	21:13	08:07	20:53	07:46	21:19	08:28	19:56	06:47	6
7	21:56	09:16	21:36	08:55	21:42	08:54	21:39	08:53	21:45	09:01	21:24	08:40	21:54	09:18	20:27	07:41	7
8	22:28	10:06	22:08	09:46	22:11	09:48	22:08	09:45	22:15	09:52	21:54	09:31	22:28	10:06	20:57	08:33	8
9	23:00	10:55	22:40	10:35	22:39	10:40	22:38	10:37	22:45	10:43	22:25	10:22	23:01	10:53	21:27	09:24	9
10	23:32	11:44	23:12	11:24	23:08	11:33	23:08	11:29	23:16	11:34	22:56	11:13	23:36	11:41	21:58	10:16	10
11	24:00	12:35	23:46	12:15	23:39	12:27	23:39	12:22	23:49	12:26	23:28	12:05	24:00	12:30	22:29	11:08	11
12	00:06	13:28	24:00	13:08	24:00	13:24	24:00	13:17	24:00	13:21	24:00	13:00	00:11	13:21	23:04	12:03	12
13	00:43	14:24	00:22	14:04	00:12	14:23	00:13	14:15	00:24	14:18	00:03	13:57	00:50	14:15	23:43	13:01	13
14	01:23	15:22	01:03	15:02	00:49	15:24	00:52	15:15	01:03	15:17	00:42	14:56	01:32	15:11	24:00	14:00	14
15	02:10	16:20	01:49	16:00	01:33	16:24	01:36	16:15	01:48	16:16	01:27	15:55	02:20	16:08	00:27	14:59	15
16	03:03	17:16	02:42	16:56	02:25	17:20	02:28	17:11	02:41	17:12	02:20	16:52	03:14	17:05	01:19	15:56	16
17	04:03	18:08	03:42	17:49	03:26	18:10	03:29	18:02	03:41	18:04	03:20	17:43	04:13	17:58	02:19	16:47	17
18	05:08	18:57	04:47	18:37	04:34	18:55	04:36	18:48	04:47	18:51	04:26	18:30	05:17	18:48	03:26	17:33	18
19	06:15	19:42	05:54	19:22	05:45	19:36	05:46	19:30	05:56	19:34	05:35	19:13	06:21	19:36	04:35	18:16	19
20	07:21	20:25	07:00	20:05	06:55	20:14	06:55	20:10	07:04	20:15	06:43	19:54	07:25	20:21	05:43	18:57	20
21	08:25	21:06	08:04	20:46	08:04	20:51	08:02	20:48	08:10	20:54	07:49	20:33	08:27	21:04	06:50	19:36	21
22	09:28	21:47	09:07	21:26	09:11	21:28	09:08	21:26	09:15	21:33	08:54	21:12	09:27	21:47	07:55	20:14	22
23	10:30	22:27	10:10	22:07	10:17	22:04	10:13	22:03	10:19	22:12	09:58	21:51	10:27	22:30	09:00	20:53	23
24	11:33	23:09	11:12	22:48	11:24	22:42	11:19	22:42	11:24	22:51	11:03	22:31	11:28	23:14	10:05	21:32	24
25	12:37	23:52	12:16	23:32	12:32	23:21	12:26	23:22	12:30	23:33	12:08	23:12	12:29	24:00	11:11	22:13	25
26	13:41	24:00	13:21	24:00	13:41	24:00	13:33	24:00	13:36	24:00	13:15	23:57	13:32	24:00	12:18	22:57	26
27	14:45	00:39	14:25	00:18	14:48	00:04	14:39	00:06	14:41	00:18	14:20	24:00	14:34	00:48	13:23	23:46	27
28	15:45	01:29	15:25	01:09	15:49	00:52	15:40	00:55	15:42	01:07	15:21	00:46	15:33	01:40	14:25	24:00	28
29	16:39	02:24	16:19	02:04	16:43	01:46	16:34	01:50	16:35	02:02	16:14	01:41	16:28	02:35	15:19	00:41	29
30	17:27	03:23	17:07	03:02	17:28	02:46	17:20	02:49	17:22	03:01	17:01	02:40	17:17	03:33	16:05	01:40	30
31	18:09	04:22	17:49	04:02	18:07	03:49	18:00	03:51	18:03	04:02	17:42	03:41	18:01	04:31	16:46	02:41	31

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—सितम्बर सन् 2020 ई.

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—सितम्बर सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
सितं.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	सितं.
1	18।47	05।20	18।27	05।00	18।42	04।50	18।36	04।51	18।40	05।02	18।19	04।41	18।41	05।27	17।23	03।41	1
2	19।22	06।16	19।03	05।55	19।13	05।49	19।08	05।49	19।13	05।59	18।53	05।38	19।18	06।21	17।56	04।38	2
3	19।56	07।09	19।36	06।48	19।43	06।46	19।39	06।45	19।45	06।53	19।24	06।32	19।53	07।11	18।27	05।33	3
4	20।28	07।59	20।08	07।39	20।12	07।40	20।09	07।38	20।15	07।45	19।55	07।24	20।27	08।00	18।58	06।26	4
5	21।00	08।49	20।40	08।29	20।40	08।33	20।38	08।30	20।46	08।36	20।25	08।16	21।01	08।48	19।28	07।18	5
6	21।32	09।38	21।12	09।18	21।09	09।26	21।08	09।22	21।16	09।27	20।56	09।06	21।35	09।35	19।58	08।09	6
7	22।05	10।28	21।45	10।08	21।39	10।19	21।39	10।14	21।48	10।19	21।27	09।58	22।09	10।24	20।29	09।01	7
8	22।40	11।20	22।19	11।00	22।10	11।15	22।11	11।09	22।21	11।12	22।00	10।52	22।46	11।13	21।02	09।55	8
9	23।18	12।14	22।57	11।54	22।45	12।12	22।47	12।05	22।58	12।08	22।37	11।47	23।26	12।06	21।38	10।50	9
10	24।00	13।10	23।40	12।50	23।24	13।12	23।27	13।04	23।39	13।06	23।18	12।45	24।00	13।00	22।18	11।48	10
11	00।01	14।08	24।00	13।48	24।00	14।11	24।00	14।02	24।00	14।04	24।00	13।43	00।11	13।56	23।06	12।47	11
12	00।49	15।04	00।29	14।44	00।11	15।08	00।15	14।59	00।27	15।00	00।06	14।39	01।00	14।52	24।00	13।43	12
13	01।45	15।57	01।24	15।37	01।07	16।00	01।11	15।51	01।23	15।53	01।02	15।32	01।56	15।45	00।01	14।36	13
14	02।47	16।46	02।26	16।26	02।11	16।46	02।14	16।38	02।26	16।40	02।05	16।20	02।57	16।36	01।04	15।24	14
15	03।53	17।32	03।32	17।12	03।20	17।28	03।22	17।21	03।33	17।25	03।12	17।04	04।01	17।24	02।11	16।07	15
16	04।59	18।15	04।39	17।55	04।31	18।07	04।32	18।02	04।41	18।06	04।20	17।46	05।05	18।10	03।20	16।49	16
17	06।05	18।58	05।44	18।38	05।42	18।45	05।41	18।41	05।49	18।47	05।28	18।26	06।08	18।55	04।29	17।29	17
18	07।10	19।39	06।49	19।19	06।51	19।22	06।49	19।20	06।56	19।27	06।35	19।06	07।10	19।39	05।36	18।08	18
19	08।14	20।21	07।54	20।01	08।00	20।00	07।56	19।59	08।02	20।06	07।41	19।46	08।12	20।23	06।43	18।48	19
20	09।19	21।04	08।59	20।43	09।09	20।38	09।04	20।38	09।09	20।47	08।48	20।26	09।15	21।08	07।50	19।28	20
21	10।25	21।48	10।05	21।27	10।19	21।18	10।13	21।19	10।17	21।29	09।56	21।08	10।18	21।55	08।59	20।09	21
22	11।32	22।34	11।12	22।14	11।31	22।00	11।23	22।03	11।26	22।14	11।05	21।53	11।23	22।43	10।08	20।53	22
23	12।38	23।25	12।18	23।04	12।40	22।48	12।32	22।51	12।34	23।03	12।13	22।42	12।27	23।35	11।16	21।42	23
24	13।41	24।00	13।21	23।59	13।45	23।41	13।36	23।44	13।37	23।57	13।16	23।36	13।29	24।00	12।20	22।35	24
25	14।37	00।19	14।17	24।00	14।41	24।00	14।32	24।00	14।34	24।00	14।13	24।00	14।25	00।30	13।17	23।33	25
26	15।26	01।17	15।07	00।57	15।29	00।40	15।20	00।43	15।22	00।55	15।01	00।34	15।16	01।28	14।06	24।00	26
27	16।10	02।17	15।50	01।56	16।09	01।42	16।02	01।44	16।04	01।56	15।43	01।35	16।01	02।26	14।48	00।34	27
28	16।48	03।15	16।29	02।54	16।44	02।44	16।38	02।45	16।41	02।56	16।21	02।35	16।41	03।22	15।24	01।35	28
29	17।24	04।11	17।04	03।50	17।16	03।43	17।11	03।43	17।15	03।53	16।55	03।32	17।19	04।16	15।58	02।33	29
30	17।57	05।04	17।37	04।43	17।46	04।40	17।42	04।39	17।47	04।48	17।26	04।27	17।54	05।07	16।30	03।28	30

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—अक्टूबर सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
अक्टू.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	अक्टू.
1	18:29	05:55	18:09	05:34	18:14	05:34	18:11	05:32	18:17	05:40	17:57	05:19	18:28	05:56	17:00	04:21	1
2	19:01	06:44	18:41	06:24	18:43	06:27	18:40	06:25	18:47	06:31	18:27	06:10	19:01	06:44	17:29	05:12	2
3	19:33	07:34	19:12	07:13	19:11	07:20	19:10	07:16	19:18	07:22	18:57	07:01	19:35	07:31	17:59	06:04	3
4	20:05	08:23	19:45	08:03	19:40	08:13	19:40	08:09	19:49	08:14	19:28	07:53	20:09	08:19	18:30	06:55	4
5	20:39	09:15	20:19	08:55	20:10	09:08	20:11	09:02	20:21	09:07	20:00	08:46	20:45	09:09	19:02	07:49	5
6	21:16	10:08	20:55	09:48	20:44	10:05	20:45	09:58	20:56	10:01	20:35	09:40	21:24	10:00	19:36	08:44	6
7	21:56	11:03	21:35	10:43	21:21	11:04	21:23	10:56	21:35	10:58	21:14	10:37	22:05	10:53	20:14	09:41	7
8	22:41	11:59	22:21	11:39	22:03	12:03	22:07	11:54	22:19	11:56	21:58	11:35	22:52	11:48	20:58	10:38	8
9	23:33	12:55	23:12	12:35	22:54	13:00	22:58	12:51	23:10	12:52	22:49	12:31	23:44	12:43	21:49	11:35	9
10	24:00	13:48	24:00	13:28	23:53	13:52	23:56	13:43	24:00	13:44	23:47	13:23	24:00	13:36	22:47	12:28	10
11	00:31	14:37	00:10	14:17	24:00	14:38	24:00	14:30	00:08	14:32	24:00	14:11	00:41	14:26	23:51	13:16	11
12	01:33	15:22	01:12	15:02	00:59	15:20	01:01	15:13	01:12	15:16	00:51	14:55	01:42	15:14	24:00	13:59	12
13	02:38	16:05	02:17	15:45	02:07	15:59	02:08	15:54	02:19	15:58	01:57	15:37	02:44	15:59	00:57	14:40	13
14	03:42	16:47	03:22	16:27	03:16	16:37	03:16	16:32	03:25	16:37	03:04	16:17	03:47	16:43	02:05	15:20	14
15	04:47	17:29	04:26	17:09	04:25	17:14	04:24	17:11	04:32	17:17	04:11	16:56	04:49	17:27	03:12	15:59	15
16	05:51	18:10	05:31	17:50	05:34	17:51	05:32	17:49	05:38	17:57	05:17	17:36	05:51	18:11	04:19	16:38	16
17	06:57	18:53	06:36	18:33	06:44	18:30	06:40	18:29	06:46	18:37	06:25	18:16	06:54	18:56	05:26	17:18	17
18	08:04	19:37	07:44	19:17	07:56	19:09	07:51	19:10	07:55	19:20	07:34	18:59	07:58	19:43	06:36	18:00	18
19	09:13	20:24	08:53	20:04	09:10	19:52	09:03	19:54	09:06	20:04	08:45	19:44	09:05	20:32	07:48	18:44	19
20	10:22	21:15	10:02	20:54	10:24	20:38	10:16	20:41	10:18	20:53	09:57	20:32	10:12	21:25	09:00	19:32	20
21	11:30	22:10	11:10	21:49	11:34	21:31	11:25	21:35	11:26	21:47	11:05	21:26	11:18	22:21	10:09	20:25	21
22	12:31	23:09	12:11	22:48	12:36	22:30	12:27	22:34	12:28	22:46	12:07	22:25	12:19	23:20	11:11	21:24	22
23	13:24	24:00	13:04	23:49	13:28	23:33	13:19	23:36	13:20	23:48	13:00	23:27	13:13	24:00	12:04	22:26	23
24	14:10	00:10	13:50	24:00	14:10	24:00	14:03	24:00	14:05	24:00	13:44	24:00	14:00	00:20	12:48	23:28	24
25	14:50	01:09	14:30	00:49	14:47	00:37	14:41	00:39	14:44	00:49	14:23	00:28	14:42	01:[illegible]8	13:27	24:00	25
26	15:26	02:06	15:07	01:46	15:20	01:37	15:14	01:38	15:18	01:48	14:58	01:27	15:21	02:12	14:01	00:27	26
27	16:00	03:00	15:40	02:40	15:50	02:35	15:45	02:35	15:50	02:43	15:30	02:23	15:56	03:04	14:33	01:23	27
28	16:32	03:51	16:12	03:31	16:18	03:30	16:15	03:28	16:21	03:36	16:00	03:15	16:30	03:53	15:03	02:17	28
29	17:03	04:41	16:43	04:21	16:46	04:23	16:44	04:20	16:50	04:27	16:30	04:07	17:03	04:41	15:33	03:08	29
30	17:35	05:30	17:15	05:10	17:14	05:15	17:12	05:12	17:20	05:18	17:00	04:57	17:36	05:28	16:02	03:59	30
31	18:07	06:19	17:47	05:59	17:43	06:08	17:42	06:04	17:51	06:09	17:30	05:48	18:10	06:16	16:32	04:51	31

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—नवम्बर सन् 2020 ई.

ता. नवं.	अहमदाबाद उदय	अहमदाबाद अस्त	भोपाल उदय	भोपाल अस्त	चड़ीगढ़ उदय	चड़ीगढ़ अस्त	दिल्ली उदय	दिल्ली अस्त	जयपुर उदय	जयपुर अस्त	लखनऊ उदय	लखनऊ अस्त	मुम्बई उदय	मुम्बई अस्त	डिब्रूगढ़ उदय	डिब्रूगढ़ अस्त	ता. नवं.
1	18:40	07:10	18:20	06:50	18:12	07:03	18:13	06:57	18:22	07:02	18:02	06:41	18:46	07:05	17:03	05:44	1
2	19:16	08:03	18:55	07:43	18:45	07:59	18:46	07:53	18:56	07:56	18:36	07:35	19:23	07:56	17:37	06:38	2
3	19:54	08:58	19:34	08:38	19:20	08:58	19:22	08:50	19:34	08:53	19:13	08:32	20:04	08:49	18:13	07:35	3
4	20:38	09:54	20:17	09:34	20:00	09:57	20:04	09:48	20:16	09:50	19:55	09:29	20:48	09:43	18:55	08:33	4
5	21:27	10:50	21:06	10:30	20:48	10:55	20:52	10:45	21:04	10:47	20:43	10:26	21:38	10:38	19:43	09:30	5
6	22:21	11:43	22:01	11:23	21:43	11:48	21:47	11:39	21:59	11:40	21:38	11:19	22:33	11:31	20:37	10:23	6
7	23:21	12:32	23:00	12:12	22:45	12:35	22:48	12:27	23:00	12:28	22:39	12:08	23:31	12:21	21:38	11:12	7
8	24:00	13:17	24:00	12:58	23:51	13:17	23:52	13:10	24:00	13:12	23:42	12:51	24:00	13:08	22:42	11:55	8
9	00:23	14:00	00:02	13:40	24:00	13:56	24:00	13:49	00:03	13:53	24:00	13:32	00:31	13:52	23:47	12:36	9
10	01:25	14:40	01:05	14:20	00:58	14:32	00:58	14:27	01:07	14:31	00:47	14:11	01:31	14:35	24:00	13:14	10
11	02:28	15:20	02:07	15:00	02:04	15:08	02:03	15:04	02:12	15:09	01:51	14:49	02:31	15:17	00:51	13:51	11
12	03:30	16:00	03:10	15:40	03:11	15:43	03:09	15:41	03:16	15:47	02:55	15:27	03:31	16:00	01:56	14:29	12
13	04:33	16:41	04:13	16:21	04:18	16:20	04:15	16:19	04:21	16:26	04:00	16:06	04:32	16:43	03:02	15:08	13
14	05:39	17:24	05:18	17:04	05:28	16:59	05:24	16:59	05:29	17:07	05:08	16:47	05:35	17:29	04:10	15:48	14
15	06:47	18:10	06:27	17:50	06:42	17:40	06:35	17:41	06:39	17:51	06:18	17:30	06:40	18:17	05:20	16:31	15
16	07:58	18:59	07:38	18:39	07:57	18:25	07:49	18:27	07:52	18:38	07:31	18:18	07:49	19:08	06:34	17:18	16
17	09:09	19:53	08:49	19:33	09:12	19:15	09:03	19:19	09:05	19:31	08:44	19:10	08:57	20:04	07:47	18:09	17
18	10:15	20:53	09:55	20:32	10:20	20:13	10:11	20:17	10:12	20:30	09:51	20:09	10:03	21:04	08:55	19:08	18
19	11:14	21:55	10:55	21:35	11:19	21:18	11:10	21:21	11:11	21:33	10:50	21:12	11:02	22:06	09:54	20:11	19
20	12:05	22:58	11:45	22:38	12:07	22:24	11:59	22:26	12:01	22:37	11:40	22:16	11:55	23:07	10:44	21:16	20
21	12:49	23:58	12:29	23:38	12:47	23:28	12:40	23:29	12:43	23:39	12:22	23:18	12:40	24:00	11:26	22:18	21
22	13:27	24:00	13:07	24:00	13:22	24:00	13:16	24:00	13:19	24:00	12:59	24:00	13:20	00:05	12:02	23:17	22
23	14:02	00:54	13:42	00:34	13:53	00:28	13:48	00:28	13:52	00:37	13:32	00:16	13:57	00:59	12:35	24:00	23
24	14:34	01:47	14:14	01:26	14:22	01:24	14:18	01:23	14:23	01:31	14:03	01:10	14:32	01:50	13:06	00:11	24
25	15:06	02:37	14:46	02:17	14:50	02:18	14:47	02:16	14:53	02:23	14:33	02:02	15:05	02:38	13:35	01:04	25
26	15:37	03:26	15:17	03:06	15:17	03:10	15:15	03:07	15:23	03:14	15:02	02:53	15:38	03:25	14:05	01:55	26
27	16:08	04:15	15:48	03:55	15:46	04:03	15:45	03:59	15:53	04:04	15:32	03:43	16:11	04:12	14:34	02:46	27
28	16:41	05:05	16:21	04:45	16:15	04:57	16:15	04:51	16:24	04:56	16:03	04:35	16:46	05:00	15:05	03:38	28
29	17:16	05:57	16:56	05:37	16:46	05:52	16:47	05:46	16:57	05:50	16:37	05:29	17:23	05:51	15:38	04:32	29
30	17:54	06:52	17:33	06:32	17:20	06:50	17:22	06:43	17:33	06:46	17:13	06:25	18:02	06:43	16:13	05:28	30

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—दिसम्बर सन् 2020 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
दिसं.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	दिसं.
1	18:36	07:48	18:15	07:28	17:59	07:50	18:02	07:42	18:14	07:44	17:53	07:23	18:46	07:38	16:53	06:27	1
2	19:23	08:45	19:03	08:25	18:45	08:49	18:48	08:40	19:00	08:42	18:40	08:21	19:34	08:33	17:39	07:25	2
3	20:16	09:40	19:56	09:20	19:38	09:45	19:41	09:36	19:54	09:37	19:33	09:16	20:28	09:27	18:32	08:20	3
4	21:15	10:30	20:54	10:10	20:38	10:34	20:41	10:25	20:53	10:27	20:32	10:06	21:25	10:19	19:31	09:10	4
5	22:16	11:16	21:55	10:57	21:42	11:17	21:44	11:09	21:55	11:12	21:34	10:51	22:24	11:06	20:34	09:55	5
6	23:17	11:59	22:56	11:39	22:48	11:56	22:48	11:49	22:58	11:53	22:37	11:32	23:23	11:51	21:37	10:36	6
7	24:00	12:39	23:57	12:19	23:52	12:32	23:52	12:27	24:00	12:31	23:40	12:10	24:00	12:33	22:40	11:13	7
8	00:17	13:17	24:00	12:58	24:00	13:07	24:00	13:02	00:01	13:07	24:00	12:47	00:21	13:14	23:43	11:50	8
9	01:17	13:56	00:57	13:36	00:56	13:41	00:55	13:38	01:03	13:44	00:42	13:23	01:19	13:54	24:00	12:26	9
10	02:18	14:35	01:57	14:14	02:01	14:15	01:58	14:13	02:05	14:21	01:44	14:00	02:17	14:35	00:45	13:02	10
11	03:20	15:15	02:59	14:55	03:07	14:52	03:03	14:51	03:09	14:59	02:48	14:39	03:17	15:18	01:50	13:40	11
12	04:24	15:58	04:04	15:38	04:17	15:30	04:11	15:31	04:16	15:40	03:54	15:19	04:19	16:04	02:57	14:20	12
13	05:33	16:44	05:12	16:24	05:29	16:12	05:23	16:14	05:26	16:24	05:05	16:04	05:25	16:53	04:07	15:04	13
14	06:43	17:36	06:23	17:15	06:44	16:59	06:36	17:02	06:39	17:14	06:17	16:53	06:33	17:46	05:20	15:53	14
15	07:53	18:32	07:33	18:12	07:57	17:53	07:48	17:57	07:50	18:09	07:28	17:49	07:41	18:44	06:32	16:48	15
16	08:57	19:35	08:37	19:14	09:02	18:56	08:53	19:00	08:54	19:12	08:33	18:51	08:45	19:46	07:37	17:50	16
17	09:53	20:40	09:33	20:19	09:56	20:04	09:48	20:06	09:49	20:18	09:28	19:57	09:42	20:50	08:32	18:56	17
18	10:41	21:43	10:21	21:23	10:41	21:11	10:33	21:13	10:36	21:23	10:15	21:02	10:31	21:51	09:19	20:02	18
19	11:23	22:43	11:03	22:22	11:19	22:14	11:12	22:15	11:16	22:25	10:55	22:04	11:15	22:49	09:59	21:04	19
20	12:00	23:38	11:40	23:18	11:52	23:14	11:47	23:13	11:51	23:22	11:30	23:01	11:54	23:42	10:34	22:02	20
21	12:34	24:00	12:14	24:00	12:22	24:00	12:18	24:00	12:23	24:00	12:03	23:54	12:30	24:00	11:06	22:56	21
22	13:06	00:30	12:46	00:10	12:51	00:09	12:48	00:08	12:54	00:15	12:33	24:00	13:04	00:31	11:36	23:48	22
23	13:37	01:20	13:17	01:00	13:19	01:03	13:17	01:00	13:24	01:07	13:03	00:46	13:38	01:19	12:06	24:00	23
24	14:09	02:09	13:49	01:49	13:47	01:55	13:46	01:52	13:54	01:58	13:33	01:37	14:11	02:07	12:35	00:39	24
25	14:41	02:59	14:21	02:39	14:16	02:49	14:16	02:44	14:24	02:49	14:04	02:28	14:45	02:55	13:06	01:31	25
26	15:15	03:50	14:55	03:30	14:46	03:43	14:47	03:38	14:57	03:42	14:36	03:21	15:21	03:44	13:37	02:24	26
27	15:51	04:44	15:31	04:23	15:19	04:41	15:21	04:34	15:32	04:37	15:11	04:16	15:59	04:36	14:12	03:19	27
28	16:32	05:40	16:12	05:20	15:57	05:40	15:59	05:32	16:11	05:35	15:50	05:14	16:42	05:30	14:50	04:17	28
29	17:18	06:37	16:57	06:17	16:40	06:40	16:43	06:32	16:56	06:33	16:35	06:12	17:29	06:25	15:35	05:16	29
30	18:10	07:33	17:49	07:13	17:31	07:38	17:35	07:29	17:47	07:30	17:26	07:09	18:21	07:21	16:26	06:13	30
31	19:08	08:26	18:47	08:06	18:30	08:31	18:34	08:22	18:46	08:23	18:25	08:02	19:19	08:14	17:24	07:06	31

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—जनवरी सन् 2021 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
जन.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	जन.
1	20।09	09।15	19।49	08।55	19।35	09।17	19।37	09।08	19।48	09।10	19।27	08।49	20।18	09।04	18।27	07।54	1
2	21।11	09।59	20।51	09।39	20।41	09।57	20।42	09।50	20।52	09।53	20।31	09।32	21।18	09।50	19।31	08।36	2
3	22।12	10।40	21।52	10।20	21।46	10।34	21।46	10।28	21।55	10।32	21।34	10।11	22।17	10।33	20।35	09।15	3
4	23।12	11।19	22।52	10।59	22।50	11।09	22।49	11।04	22।57	11।09	22।36	10।49	23।14	11।14	21।37	09।52	4
5	24।00	11।56	23।51	11।37	23।53	11।43	23।51	11।39	23।58	11।45	23।37	11।24	24।00	11।54	22।38	10।27	5
6	00।11	12।34	24।00	12।14	24।00	12।16	24।00	12।14	24।00	12।21	24।00	12।00	00।11	12।34	23।40	11।03	6
7	01।10	13।13	00।50	12।53	00।57	12।51	00।53	12।50	00।59	12।58	00।38	12।37	01।08	13।15	24।00	11।39	7
8	02।12	13।53	01।52	13।33	02।02	13।27	01।57	13।27	02।02	13।36	01।41	13।15	02।07	13।58	00।43	12।17	8
9	03।16	14।36	02।56	14।16	03।11	14।06	03।05	14।07	03।09	14।17	02।48	13।57	03।09	14।43	01।50	12।57	9
10	04।24	15।24	04।04	15।03	04।23	14।49	04।16	14।51	04।18	15।03	03।57	14।42	04।15	15।33	03।00	13।42	10
11	05।32	16।16	05।12	15।56	05।36	15।38	05।27	15।42	05।29	15।54	05।07	15।33	05।21	16।27	04।11	14।33	11
12	06।38	17।15	06।18	16।55	06।44	16।36	06।34	16।40	06।36	16।52	06।14	16।31	06।26	17।27	05।18	15।31	12
13	07।38	18।19	07।18	17।58	07।42	17।42	07।33	17।45	07।35	17।57	07।14	17।36	07।26	18।30	06।18	16।35	13
14	08।30	19।24	08।10	19।03	08।31	18।50	08।23	18।52	08।25	19।03	08।04	18।42	08।19	19।33	07।08	17।42	14
15	09।14	20।27	08।55	20।06	09।12	19।56	09।05	19।57	09।08	20।08	08।48	19।47	09।06	20।33	07।52	18।47	15
16	09।54	21।25	09।34	21।04	09।48	20।59	09।42	20।59	09।46	21।08	09।26	20।47	09।48	21।29	08।29	19।48	16
17	10।30	22।19	10।10	21।59	10।20	21।57	10।16	21।56	10।21	22।04	10।00	21।43	10।26	22।22	09।03	20।44	17
18	11।04	23।11	10।44	22।50	10।50	22।52	10।47	22।50	10।52	22।57	10।32	22।36	11।01	23।11	09।35	21।38	18
19	11।36	24।00	11।16	23।40	11।19	23।46	11।16	23।42	11।23	23।49	11।02	23।28	11।35	23।59	10।05	22।30	19
20	12।07	00।01	11।47	24।00	11।47	24।00	11।45	24।00	11।53	24।00	11।32	24।00	12।09	24।00	10।35	23।21	20
21	12।39	00।50	12।19	00।30	12।15	00।39	12।15	00।35	12।23	00।40	12।03	00।19	12।43	00।47	11।05	24।00	21
22	13।12	01।41	12।52	01।21	12।45	01।33	12।45	01।28	12।55	01।32	12।34	01।11	13।17	01।36	11।36	00।14	22
23	13।48	02।33	13।27	02।13	13।17	02।29	13।18	02।23	13।28	02।26	13।08	02।05	13।55	02।26	12।09	01।08	23
24	14।26	03।28	14।06	03।08	13।52	03।27	13।54	03।20	14।06	03।23	13।45	03।02	14।35	03।19	12।45	02।05	24
25	15।10	04।25	14।49	04।05	14।33	04।28	14।36	04।19	14।48	04।21	14।27	04।00	15।20	04।14	13।27	03।04	25
26	16।00	05।22	15।39	05।02	15।21	05।27	15।25	05।18	15।37	05।19	15।16	04।58	16।11	05।10	14।16	04।02	26
27	16।56	06।17	16।35	05।57	16।18	06।22	16।21	06।13	16।34	06।14	16।13	05।53	17।07	06।05	15।12	04।57	27
28	17।58	07।08	17।37	06।48	17।22	07।11	17।25	07।03	17।36	07।04	17।15	06।43	18।07	06।57	16।15	05।48	28
29	19।01	07।55	18।41	07।35	18।29	07।55	18।31	07।47	18।41	07।50	18।20	07।29	19।09	07।45	17।20	06।33	29
30	20।04	08।38	19।44	08।18	19।37	08।34	19।37	08।27	19।47	08।31	19।25	08।10	20।10	08।31	18।26	07।14	30
31	21।06	09।18	20।45	08।58	20।42	09।10	20।42	09।05	20।50	09।09	20।29	08।49	21।09	09।13	19।30	07।52	31

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—फरवरी सन् 2021 ई.

ता.	अहमदाबाद		भोपाल		चड़ीगढ़		दिल्ली		जयपुर		लखनऊ		मुम्बई		डिब्रूगढ़		ता.
फर.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	फर.
1	22:06	09:57	21:46	09:37	21:47	09:45	21:45	09:41	21:52	09:46	21:31	09:26	22:07	09:55	20:32	08:29	1
2	23:06	10:35	22:45	10:15	22:51	10:19	22:47	10:16	22:54	10:23	22:33	10:02	23:04	10:35	21:34	09:05	2
3	24:00	11:14	23:46	10:54	23:55	10:53	23:51	10:51	23:56	10:59	23:35	10:38	24:00	11:15	22:37	09:41	3
4	00:06	11:53	24:00	11:33	24:00	11:28	24:00	11:28	24:00	11:37	24:00	11:16	00:02	11:57	23:42	10:17	4
5	01:09	12:34	00:49	12:14	01:02	12:05	00:57	12:06	01:01	12:16	00:40	11:55	01:03	12:41	24:00	10:56	5
6	02:14	13:19	01:54	12:59	02:12	12:46	02:05	12:48	02:08	12:59	01:47	12:38	02:05	13:28	00:50	11:38	6
7	03:21	14:08	03:01	13:48	04:31	14:24	03:14	13:34	03:16	13:46	02:55	13:26	03:10	14:19	01:58	12:25	7
8	04:26	15:03	04:06	14:43	05:32	15:25	04:22	14:28	02:02	13:36	04:02	14:20	04:14	15:15	03:06	13:19	8
9	05:27	16:04	05:07	15:43	03:23	13:31	05:23	15:29	03:09	14:17	05:03	15:20	05:14	16:15	04:07	14:20	9
10	06:20	17:08	06:00	16:47	06:23	16:32	06:15	16:35	06:16	16:46	05:56	16:25	06:09	17:18	05:00	15:25	10
11	07:07	18:11	06:47	17:50	07:07	17:39	06:59	17:41	07:02	17:51	06:41	17:30	06:58	18:19	05:45	16:30	11
12	07:48	19:11	07:29	18:50	07:44	18:43	07:38	18:44	07:41	18:53	07:21	18:32	07:41	19:16	06:24	17:33	12
13	08:26	20:07	08:06	19:47	08:18	19:43	08:13	19:43	08:17	19:51	07:56	19:30	08:21	20:10	07:00	18:31	13
14	09:00	21:00	08:41	20:40	08:49	20:40	08:45	20:38	08:50	20:46	08:29	20:25	08:57	21:02	07:33	19:27	14
15	09:33	21:51	09:13	21:31	09:18	21:35	09:15	21:32	09:21	21:39	09:01	21:18	09:32	21:51	08:03	20:20	15
16	10:05	22:41	09:45	22:21	09:46	22:29	09:44	22:25	09:51	22:30	09:31	22:10	10:06	22:39	08:33	21:12	16
17	10:37	23:32	10:17	23:12	10:15	23:23	10:14	23:18	10:22	23:22	10:01	23:02	10:40	23:27	09:03	22:04	17
18	11:09	24:00	10:49	24:00	10:44	24:00	10:44	24:00	10:53	24:00	10:32	23:55	11:14	24:00	09:34	22:58	18 19
19	11:44	00:23	11:23	00:03	11:14	00:18	11:15	00:12	11:25	00:16	11:04	24:00	11:50	00:17	10:06	23:53	20
20	12:20	01:17	12:00	00:57	11:47	01:15	11:49	01:08	12:00	01:11	11:40	00:50	12:29	01:08	10:40	24:00	21
21	13:01	02:13	12:41	01:53	12:25	02:14	12:28	02:06	12:40	02:08	12:19	01:47	13:11	02:02	11:19	00:51	22
22	13:48	03:09	13:27	02:49	13:09	03:13	13:13	03:04	13:25	03:06	13:04	02:45	13:59	02:58	12:04	01:49	23
23	14:41	04:05	14:20	03:45	14:02	04:10	14:06	04:01	14:18	04:02	13:57	03:41	14:52	03:53	12:57	02:45	24
24	15:40	04:57	15:20	04:38	15:03	05:02	15:06	04:53	15:18	04:54	14:57	04:33	15:51	04:46	13:57	03:37	25
25	16:44	05:46	16:23	05:26	16:10	05:47	16:12	05:39	16:23	05:41	16:02	05:20	16:53	05:35	15:02	04:25	26
26	17:48	06:31	17:28	06:11	17:19	06:28	17:20	06:21	17:30	06:24	17:09	06:04	17:55	06:22	16:09	05:07	27
27	18:52	07:13	18:32	06:53	18:27	07:06	18:27	07:01	18:35	07:05	18:14	06:44	18:56	07:07	17:15	05:47	28
28	19:55	07:53	19:34	07:33	19:34	07:42	19:32	07:38	19:40	07:43	19:19	07:22	19:56	07:50	18:20	06:26	29

28 19।55 07।53 19।34 07।33 19।34 07।42 19।32 07।38 19।40 07।43 19।19 07।22 19।56 07।50 18।20 06।26 29

भारत के प्रमुख शहरों के चन्द्रोदयास्त—मार्च सन् 2021 ई.

ता. मार्च	अहमदाबाद उदय	अहमदाबाद अस्त	भोपाल उदय	भोपाल अस्त	चड़ीगढ़ उदय	चड़ीगढ़ अस्त	दिल्ली उदय	दिल्ली अस्त	जयपुर उदय	जयपुर अस्त	लखनऊ उदय	लखनऊ अस्त	मुम्बई उदय	मुम्बई अस्त	डिब्रूगढ़ उदय	डिब्रूगढ़ अस्त	ता. मार्च
1	20।56	08।33	20।36	08।13	20।40	08।18	20।37	08।14	20।44	08।21	20।23	08।00	20।56	08।31	19।24	07।03	1
2	21।58	09।12	21।38	08।52	21।46	08।53	21।42	08।51	21।48	08।58	21।26	08।37	21।55	09।13	20।28	07।40	2
3	23।02	09।52	22।41	09।32	22।54	09।28	22।49	09।28	22।53	09।36	22।32	09।15	22।56	09।55	21।34.	08।17	3
4	24।00	10।33	23।47	10।13	24।00	10।05	23।57	10।06	24।00	10।15	23।39	09।55	23।59	10।39	22।42	08।56	4
5	00।07	11।17	24।00	10।57	00।04	10।45	24।00	10।47	00।00	10।57	24।00	10।37	24।00	11।25	23।51	09।37	5
6	01।14	12।05	00।54	11।44	01।15	11।28	01।07	11।31	01।09	11।43	00।48	11।22	01।04	12।15	24।00	10।22	6
7	02।20	12।57	02।00	12।37	02।24	12।18	02।15	12।22	02।16	12।35	01।55	12।14	02।08	13।09	00।59	11।13	7
8	03।21	13।56	03।01	13।35	03।27	13।16	03।17	13।20	03।18	13।33	02।57	13।12	03।09	14।07	02।01	12।11	8
9	04।16	14।58	03।56	14।37	04।20	14।21	04।11	14।24	04।13	14।36	03।52	14।15	04।04	15।08	02।56	13।14	9
10	05।04	16।00	04।44	15।40	05।05	15।27	04।57	15।29	04।59	15।40	04।38	15।19	04।54	16।09	03।43	14।19	10
11	05।46	17।01	05।26	16।40	05।43	16।31	05।37	16।32	05।40	16।42	05।19	16।21	05।38	17।07	04।23	15।21	11
12	06।24	17।58	06।04	17।37	06।17	17।32	06।12	17।32	06।16	17।41	05।55	17।20	06।18	18।02	04।59	16।21	12
13	06।59	18।52	06।39	18।31	06।49	18।30	06।44	18।29	06।49	18।37	06।29	18।16	06।55	18।54	05।32	17।17	13
14	07।32	19।43	07।12	19।23	07।18	19।25	07।15	19।23	07।21	19।30	07।00	19।09	07।30	19।43	06।03	18।11	14
15	08।04	20।34	07।44	20।14	07।47	20।20	07।44	20।16	07।51	20।22	07।31	20।01	08।04	20।32	06।33	19।03	15
16	08।36	21।24	08।16	21।04	08।15	21।14	08।14	21।09	08।21	21।14	08।01	20।53	08।38	21।20	07।03	19।56	16
17	09।08	22।15	08।48	21।55	08।44	22।09	08।43	22।03	08।52	22।07	08।31	21।46	09।12	22।10	07।33	20।49	17
18	09।41	23।08	09।21	22।48	09।13	23।05	09।14	22।58	09।23	23।02	09।03	22।41	09।47	23।00	08।04	21।44	18
19	10।17	24।00	09।56	23।43	09।45	24।00	09।47	23।56	09।57	23।58	09।36	23।37	10।24	23।53	08।37	22।40	19
20	10।55	00।03	10।35	24।00	10।20	00।03	10।22	24।00	10।34	24।00	10।13	24।00	11।05	24।00	09।14	23।38	20
21	11।38	00।59	11।18	00।39	11।00	01।02	11।04	00।54	11।16	00।55	10।55	00।34	11।49	00।47	09।55	24।00	21
22	12।28	01।54	12।07	01।34	11।48	01।59	11।52	01।50	12।04	01।51	11।44	01।30	12।39	01।42	10।43	00।34	22
23	13।23	02।47	13।03	02।27	12।45	02।52	12।48	02।43	13।01	02।44	12।40	02।23	13।35	02।34	11।39	01।27	23
24	14।24	03।36	14।03	03।16	13।48	03।39	13।51	03।30	14।03	03।32	13।42	03।11	14।34	03।24	12।41	02।15	24
25	15।28	04।21	15।07	04।01	14।56	04।21	14।57	04।13	15।08	04।16	14।47	03।55	15।35	04।12	13।47	02।59	25
26	16।32	05।04	16।11	04।44	16।04	04।59	16।05	04।53	16।14	04।57	15।53	04।36	16।37	04।57	14।53	03।40	26
27	17।35	05।45	17।15	05।25	17।12	05।36	17।11	05।31	17।20	05।36	16।59	05।15	17।38	05।40	15।59	04।18	27
28	18।38	06।25	18।18	06।05	18।20	06।12	18।17	06।08	18।25	06।14	18।04	05।53	18।39	06।22	17।05	04।56	28
29	19।42	07।05	19।21	06।45	19।28	06।47	19।24	06।45	19।30	06।52	19।09	06।31	19।40	07।05	18।11	05।33	29
30	20।47	07।45	20।26	07।25	20।37	07।24	20।32	07।22	20।37	07।30	20।16	07।10	20।42	07।48	19।18	06।11	30
31	21।54	08।27	21।34	08।07	21।49	08।01	21।43	08।01	21।17	08।10	21।25	07।50	21।47	08।32	20।28	06।51	31

शर क्रांति—अप्रैल सन् 2020 ई.

ता. अप्रै.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता. अप्रै.
	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	
1	04 38 14	00 19 56	23 36 22	-00 58 14	-20 55 14	-02 08 48	-07 46 39	-00 03 53	-21 18 01	03 35 25	23 05 52	-00 03 37	-20 03 45	1
2	05 01 19	01 27 42	23 26 39	-00 59 29	-20 47 13	-02 13 17	-07 20 12	-00 04 01	-21 16 50	03 39 40	23 22 42	-00 03 42	-20 03 02	2
3	05 24 19	02 32 53	21 55 23	-01 00 42	-20 39 02	-02 17 16	-06 52 27	-00 04 08	-21 15 40	03 43 52	23 39 03	-00 03 47	-20 02 20	3
4	05 47 13	03 31 19	19 02 22	-01 01 55	-20 30 42	-02 20 45	-06 23 24	-00 04 15	-21 14 31	03 47 58	23 54 53	-00 03 52	-20 01 40	4
5	06 10 02	04 18 23	14 54 24	-01 03 08	-20 22 11	-02 23 44	-05 53 05	-00 04 23	-21 13 24	03 52 00	24 10 13	-00 03 57	-20 01 00	5
6	06 32 43	04 49 30	09 45 15	-01 04 22	-20 13 30	-02 26 13	-05 21 32	-00 04 30	-21 12 18	03 55 56	24 25 02	-00 04 02	-20 00 21	6
7	06 55 18	05 00 59	03 54 39	-01 05 36	-20 04 39	-02 28 12	-04 48 46	-00 04 38	-21 11 13	03 59 47	24 39 20	-00 04 07	-19 59 43	7
8	07 17 46	04 50 58	-02 13 25	-01 06 51	-19 55 39	-02 29 41	-04 14 50	-00 04 46	-21 10 10	04 03 32	24 53 08	-00 04 12	-19 59 06	8
9	07 40 06	04 20 05	-08 12 56	-01 08 06	-19 46 30	-02 30 40	-03 39 44	-00 04 53	-21 09 08	04 07 11	25 06 24	-00 04 18	-19 58 31	9
10	08 02 19	03 31 24	-13 38 23	-01 09 21	-19 37 10	-02 31 08	-03 03 30	-00 05 01	-21 08 08	04 10 43	25 19 09	-00 04 23	-19 57 56	10
11	08 24 24	02 29 42	-18 07 29	-01 10 37	-19 27 42	-02 31 07	-02 26 09	-00 05 09	-21 07 09	04 14 09	25 31 23	-00 04 28	-19 57 23	11
12	08 46 20	01 20 25	-21 23 35	-01 11 53	-19 18 05	-02 30 35	-01 47 43	-00 05 16	-21 06 12	04 17 27	25 43 05	-00 04 33	-19 56 51	12
13	09 08 07	00 08 41	-23 17 29	-01 13 10	-19 08 18	-02 29 33	-01 08 14	-00 05 24	-21 05 16	04 20 38	25 54 16	-00 04 38	-19 56 20	13
14	09 29 46	-01 01 07	-23 47 51	-01 14 27	-18 58 23	-02 28 00	-00 27 43	-00 05 32	-21 04 22	04 23 41	26 04 56	-00 04 43	-19 55 50	14
15	09 51 15	-02 05 43	-23 00 10	-01 15 44	-18 48 19	-02 25 57	00 13 47	-00 05 40	-21 03 29	04 26 36	26 15 04	-00 04 48	-19 55 21	15
16	10 12 34	-03 02 34	-21 04 30	-01 17 02	-18 38 06	-02 23 23	00 56 17	-00 05 48	-21 02 38	04 29 22	26 24 41	-00 04 54	-19 54 53	16
17	10 33 44	-03 49 50	-18 12 56	-01 18 21	-18 27 45	-02 20 18	01 39 43	-00 05 56	-21 01 49	04 31 58	26 33 47	-00 04 59	-19 54 27	17
18	10 54 43	-04 26 09	-14 37 37	-01 19 39	-18 17 16	-02 16 43	02 24 03	-00 06 04	-21 01 02	04 34 26	26 42 21	-00 05 04	-19 54 02	18
19	11 15 31	-04 50 28	-10 29 48	-01 20 58	-18 06 39	-02 12 37	03 09 15	-00 06 12	-21 00 16	04 36 43	26 50 24	-00 05 09	-19 53 38	19
20	11 36 09	-05 02 05	-05 59 39	-01 22 18	-17 55 54	-02 08 01	03 55 17	-00 06 21	-20 59 33	04 38 51	26 57 55	-00 05 15	-19 53 15	20
21	11 56 35	-05 00 36	-01 16 39	-01 23 38	-17 45 00	-02 02 55	04 42 06	-00 06 29	-20 58 51	04 40 47	27 04 56	-00 05 20	-19 52 54	21
22	12 16 49	-04 46 02	03 29 58	-01 24 58	-17 34 00	-01 57 18	05 29 39	-00 06 37	-20 58 11	04 42 [illegible]2	27 11 25	-00 05 25	-19 52 34	22
23	12 36 51	-04 18 51	08 10 44	-01 26 19	-17 22 52	-01 51 12	06 17 52	-00 06 46	-20 57 33	04 44 04	27 17 24	-00 05 30	-19 52 15	23
24	12 56 40	-03 40 01	12 35 24	-01 27 40	-17 11 36	-01 44 37	07 06 42	-00 06 54	-20 56 57	04 45 25	27 22 51	-00 05 36	-19 51 57	24
25	13 16 17	-02 50 57	16 32 50	-01 29 01	-17 00 13	-01 37 33	07 56 04	-00 07 02	-20 56 23	04 46 32	27 27 47	-00 05 41	-19 51 41	25
26	13 35 40	-01 53 30	19 51 01	-01 30 23	-16 48 44	-01 30 02	08 45 54	-00 07 11	-20 55 50	04 47 26	27 32 13	-00 05 47	-19 51 26	26
27	13 54 51	-00 49 55	22 17 33	-01 31 45	-16 37 07	-01 22 03	09 36 06	-00 07 20	-20 55 20	04 48 06	27 36 07	-00 05 52	-19 51 12	27
28	14 13 47	00 17 13	23 40 42	-01 33 07	-16 25 24	-01 13 39	10 26 35	-00 07 28	-20 54 52	04 48 30	27 39 30	-00 05 57	-19 50 59	28
29	14 32 29	01 24 56	23 51 04	-01 34 30	-16 13 34	-01 04 50	11 17 13	-00 07 37	-20 54 26	04 48 39	27 42 23	-00 06 03	-19 50 48	29
30	14 50 56	02 29 55	22 43 09	01 35 53	16 01 38	00 55 39	12 07 53	00 07 45	20 54 02	04 48 32	27 44 45	-00 06 08	-19 50 38	30

शर क्रांति—मई सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
मई	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	मई
1	15109109	03128129	20116150	-01137116	-15149136	-00146106	12158126	-00107154	-20153140	04148108	27146135	-00106114	-19150130	1
2	15127107	04116143	16137131	-01138140	-15137127	-00136116	13148144	-00108103	-20153121	04147125	27147154	-00106119	-19150123	2
3	15144149	04150141	11155150	-01140104	-15125112	-00126110	14138136	-00108112	-20153103	04146124	27148142	-00106125	-19150117	3
4	16102115	05106152	06126153	-01141128	-15112152	-00115151	15127151	-00108121	-20152148	04145104	27148158	-00106130	-19150112	4
5	16119126	05102150	00129141	-01142153	-15100126	-00105123	16116119	-00108130	-20152134	04143123	27148142	-00106136	-19150109	5
6	16136120	04137156	-05133131	-01144118	-14147154	00105109	17103146	-00108139	-20152123	04141120	27147153	-00106141	-19150107	6
7	16152158	03153142	-11118115	-01145143	-14135117	00115144	17150101	-00108148	-20152115	04138156	27146132	-00106147	-19150106	7
8	17109118	02153150	-16119144	-01147109	-14122135	00126117	18134151	-00108157	-20152108	04136108	27144138	-00106152	-19150107	8
9	17125122	01143129	-20115154	-01148135	-14109147	00136142	19118105	-00109106	-20152103	04132156	27142110	-00106158	-19150109	9
10	17141108	00128120	-22150146	-01150101	-13156155	00146156	19159130	-00109115	-20152101	04129119	27139107	-00107103	-19150112	10
11	17156136	-00146116	-23157110	-01151127	-13143158	00156154	20138155	-00109124	-20152101	04125116	27135130	-00107109	-19150117	11
12	18111146	-01156101	-23137124	-01152154	-13130156	01106131	21116111	-00109134	-20152103	04120147	27131116	-00107115	-19150123	12
13	18126138	-02157141	-22101111	-01154121	-13117150	01115143	21151110	-00109143	20152108	04115149	27126127	-00107120	-19150130	13
14	18141112	-03149103	-19122110	-01155148	-13104140	01124126	22123143	-00109152	-20152114	04110123	27120159	-00107126	-19150138	14
15	18155126	-04128139	-15154140	-01157116	-12151126	01132137	22153147	-00110102	-20152123	04104128	27114153	-00107132	-19150148	15
16	19109122	-04155137	-11151139	-01158144	-12138108	01140112	23121117	-00110111	-20152135	03158102	27108108	-00107137	-19151100	16
17	19122158	-05109126	-07124113	-02100112	-12124146	01147108	23146112	-00110121	-20152148	03151106	27100143	-00107143	-19151112	17
18	19136114	-05109151	-02141159	-02101140	-12111121	01153124	24108130	-00110130	-20153104	03143139	26152137	-00107149	-19151126	18
19	19149110	-04156157	02106113	-02103108	-11157153	01158156	24128112	-00110140	-20153122	03135140	26143148	-00107154	-19151141	19
20	20101146	-04131109	06151132	-02104137	-11144122	02103143	24145121	-00110149	-20153142	03127109	26134117	-00108100	-19151158	20
21	20114102	-03153115	11124116	-02106106	-11130148	02107143	24159159	-00110159	-20154105	03118107	26124102	-00108106	-19152115	21
22	20125157	-03104129	15133129	-02107135	-11117111	02110156	25112111	-00111109	-20154130	03108133	26113104	-00108112	-19152134	22
23	20137131	-02106137	19106149	-02109104	-11103132	02113121	25122101	-00111118	-20154157	02158127	26101121	-00108117	-19152155	23
24	20148143	-01101154	21150159	-02110134	-10149150	02114157	25129135	-00111128	-20155126	02147152	25148154	-00108123	-19153116	24
25	20159134	00106155	23133104	-02112104	-10136107	02115144	25134158	-00111138	-20155157	02136146	25135143	-00108129	-19153139	25
26	21110103	01116139	24102133	-02113133	-10122121	02115140	25138115	-00111148	-20156131	02125112	25121149	-00108135	-19154103	26
27	21120111	02123145	23113129	-02115103	-10108134	02114147	25139134	-00111157	-20157107	02113112	25107112	-00108141	-19154128	27
28	21129156	03124129	21105153	-02116133	-09154145	02113105	25139101	-00112107	-20157145	02100146	24151155	-00108146	-19154155	28
29	21139118	04115105	17145145	-02118104	-09140155	02110132	25136142	-00112117	-20158124	01147156	24135159	-00108152	-19155123	29
30	21148118	04151157	13123150	-02119134	-09127104	02107110	25132144	-00112127	-20159106	01134146	24119127	-00108158	-19155151	30
31	21156156	05112102	08114113	-02121105	-09113111	02102158	25127112	-00112137	-20159150	01121118	24102121	-00109104	-19156122	31

शर क्रांति—जून सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
जून	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	जून
1	22।05।10	05।13।08	02।33।18	-02।22।35	-08।59।18	01।57।56	25।20।14	-00।12।47	-21।00।36	01।07।35	23।44।46	-00।09।10	-19।56।53	1
2	22।13।01	04।54।16	-03।20।23	-02।24।06	-08।45।23	01।52।06	25।11।55	-00।12।57	-21।01।24	00।53।39	23।26।46	-00।09।16	-19।57।25	2
3	22।20।29	04।16।10	-09।06।21	-02।25।37	-08।31।28	01।45।28	25।02।22	-00।13।07	-21।02।14	00।39।34	23।08।24	-00।09।21	-19।57।59	3
4	22।27।33	03।21।16	-14।22।22	-02।27।08	-08।17।33	01।38।01	24।51।41	-00।13।17	-21।03।06	00।25।24	22।49।45	-00।09।27	-19।58।33	4
5	22।34।14	02।13।40	-18।46।02	-02।28।39	-08।03।37	01।29।46	24।39।58	-00।13।27	-21।04।00	00।11।11	22।30।56	-00।09।33	-19।59।09	5
6	22।40।31	00।58।31	-21।57।35	-02।30।10	-07।49।41	01।20।44	24।27।20	-00।13।37	-21।04।55	-00।03।00	22।12।02	-00।09।39	-19।59।46	6
7	22।46।25	-00।18।43	-23।43।32	-02।31।41	-07।35।45	01।10।56	24।13।51	-00।13।47	-21।05।53	-00।17।07	21।53।07	-00।09।45	-20।00।23	7
8	22।51।54	-01।33।02	-23।59।44	-02।33।12	-07।21।50	01।00।23	23।59।37	-00।13।57	-21।06।52	-00।31।06	21।34।19	-00।09।51	-20।01।02	8
9	22।56।59	-02।40।15	-22।51।46	-02।34।43	-07।07।55	00।49।06	23।44।46	-00।14।06	-21।07।53	-00।44।54	21।15।42	-00।09।57	-20।01।42	9
10	23।01।40	-03।37।23	-20।32।12	-02।36।14	-06।54।00	00।37।05	23।29।21	-00।14।16	-21।08।55	-00।58।28	20।57।22	-00।10।02	-20।02।23	10
11	23।05।57	-04।22।24	-17।16।38	-02।37।45	-06।40।06	00।24।24	23।13।29	-00।14।26	-21।09।59	-01।11।46	20।39।25	-00।10।08	-20।03।05	11
12	23।09।49	-04।54।11	-13।20।15	-02।39।16	-06।26।14	00।11।03	22।57।15	-00।14।36	-21।11।05	-01।24।44	20।21।55	-00।10।14	-20।03।47	12
13	23।13।17	-05।12।12	-08।56।12	-02।40।48	-06।12।22	-00।02।55	22।40।45	-00।14।46	-21।12।12	-01।37।21	20।04।58	-00।10।20	-20।04।31	13
14	23।16।20	-05।16।22	-04।15।20	-02।42।19	-05।58।32	-00।17।27	22।24।04	-00।14।56	-21।13।21	-01।49।34	19।48।37	-00।10।26	-20।05।16	14
15	23।18।59	-05।06।54	00।33।10	-02।43।50	-05।44।44	-00।32।31	22।07।19	-00।15।06	-21।14।31	-02।01।22	19।32।57	-00।10।32	-20।06।01	15
16	23।21।13	-04।44।15	05।20।50	-02।45।21	-05।30।58	-00।48।03	21।50।33	-00।15।16	-21।15।42	-02।12।44	19।18।00	-00।10।38	-20।06।48	16
17	23।23।02	-04।09।13	09।58।52	-02।46।53	-05।17।14	-01।03।58	21।33।53	-00।15।26	-21।16।55	-02।23।38	19।03।50	-00।10।43	-20।07।35	17
18	23।24।27	-03।22।50	14।17।18	-02।48।24	-05।03।32	-01।20।12	21।17।23	-00।15।36	-21।18।09	-02।34।04	18।50।28	-00।10।49	-20।08।23	18
19	23।25।26	-02।26।37	18।04।27	-02।49।55	-04।49।53	-01।36।40	21।01।10	-00।15।46	-21।19।24	-02।44।00	18।37।57	-00।10।55	-20।09।12	19
20	23।26।01	-01।22।33	21।06।55	-02।51।26	-04।36।16	-01।53।14	20।45।19	-00।15।56	-21।20।40	-02।53।27	18।26।18	-00।11।01	-20।10।01	20
21	23।26।11	-00।13।13	23।10।36	-02।52।57	-04।22।42	-02।09।49	20।29।55	-00।16।06	-21।21।58	-03।02।25	18।15।32	-00।11।07	-20।10।52	21
22	23।25।57	00।58।10	24।02।44	-02।54।28	-04।09।12	-02।26।17	20।15।03	-00।16।16	-21।23।16	-03।10।53	18।05।40	-00।11।12	-20।11।43	22
23	23।25।17	02।07।54	23।34।52	-02।55।58	-03।55।45	-02।42।30	20।00।49	-00।16।25	-21।24।36	-03।18।52	17।56।40	-00।11।18	-20।12।35	23
24	23।24।13	03।11।55	21।45।12	-02।57।29	-03।42।21	-02।58।19	19।47।17	-00।16।35	-21।25।56	-03।26।21	17।48।34	-00।11।24	-20।13।27	24
25	23।22।44	04।06।05	18।39।19	-02।58।59	-03।29।01	-03।13।36	19।34।33	-00।16।45	-21।27।17	-03।33।22	17।41।21	-00।11।30	-20।14।20	25
26	23।20।50	04।46।42	14।28।52	-03।00।29	-03।15।45	-03।28।13	19।22।41	-00।16।54	-21।28।39	-03।39।55	17।34।59	-00।11।36	-20।15।14	26
27	23।18।32	05।10।43	09।29।13	-03।02।00	-03।02।32	-03।41।59	19।11।47	-00।17।04	-21।30।02	-03।46।00	17।29।29	-00।11।41	-20।16।08	27
28	23।15।49	05।16।09	03।57।28	-03।03।29	-02।49।24	-03।54।46	19।01।54	-00।17।14	-21।31।25	-03।51।38	17।24।47	-00।11।47	-20।17।03	28
29	23।12।41	05।02।15	-01।48।33	-03।04।59	-02।36।20	-04।06।27	18।53।08	-00।17।23	-21।32।49	-03।56।50	17।20।55	-00।11।53	-20।17।59	29
30	23।09।10	04।29।40	-07।30।25	-03।06।28	-02।23।21	-04।16।53	18।45।30	00।17।33	-21।34।13	-04।01।36	17।17।48	-00।11।59	-20।18।54	30

शर क्रान्ति—जुलाई सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
जुला.	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	जुला.
1	23।05।13	03।40।26	-12।48।58	-03।07।58	-02।10।26	-04।25।59	18।39।06	-00।17।42	-21।35।37	-04।05।58	17।15।27	-00।12।04	-20।19।51	1
2	23।00।53	02।37।51	-17।24।30	-03।09।26	-01।57।36	-04।33।37	18।33।58	-00।17।51	-21।37।02	-04।09।56	17।13।48	-00।12।10	-20।20।48	2
3	22।56।09	01।26।13	-20।58।03	-03।10।55	-01।44।50	-04।39।46	18।30।07	-00।18।01	-21।38।28	-04।13।31	17।12।51	-00।12।16	-20।21।45	3
4	22।51।01	00।10।22	-23।14।05	-03।12।24	-01।32।10	-04।44।20	18।27।35	-00।18।10	-21।39।53	-04।16।43	17।12।33	-00।12।21	-20।22।42	4
5	22।45।28	-01।04।48	-24।03।41	-03।13।52	-01।19।35	-04।47।20	18।26।24	-00।18।19	-21।41।19	-04।19।34	17।12।52	-00।12।27	-20।23।40	5
6	22।39।33	-02।14।53	-23।26।52	-03।15।19	-01।07।06	-04।48।45	18।26।31	-00।18।28	-21।42।44	-04।22।04	17।13।47	-00।12।33	-20।24।38	6
7	22।33।13	-03।16।14	-21।32।11	-03।16।47	-00।54।42	-04।48।35	18।27।58	-00।18।37	-21।44।10	-04।24।14	17।15।15	-00।12।38	-20।25।37	7
8	22।26।31	-04।06।11	-18।33।47	-03।18।14	-00।42।24	-04।46।55	18।30।41	-00।18।46	-21।45।36	-04।26।06	17।17।13	-00।12।44	-20।26।36	8
9	22।19।25	-04।43।01	-14।47।36	-03।19।41	-00।30।12	-04।43।46	18।34।39	-00।18।55	-21।47।02	-04।27।38	17।19।41	-00।12।49	-20।27।35	9
10	22।11।55	-05।05।54	-10।28।35	-03।21।07	-00।18।06	-04।39।12	18।39।48	-00।19।04	-21।48।27	-04।28।53	17।22।35	-00।12।55	-20।28।34	10
11	22।04।03	-05।14।36	-05।49।27	-03।22।33	-00।06।06	-04।33।20	18।46।03	-00।19।13	-21।49।52	-04।29।51	17।25।54	-00।13।00	-20।29।33	11
12	21।55।49	-05।09।24	-01।00।44	-03।23।59	00।05।46	-04।26।13	18।53।19	-00।19।21	-21।51।17	-04।30।33	17।29।36	-00।13।06	-20।30।33	12
13	21।47।11	-04।50।53	03।48।33	-03।25।24	00।17।32	-04।17।59	19।01।32	-00।19।30	-21।52।42	-04।31।00	17।33।39	-00।13।11	-20।31।32	13
14	21।38।11	-04।19।55	08।30।00	-03।26।49	00।29।10	-04।08।41	19।10।34	-00।19।39	-21।54।06	-04।31।11	17।38।01	-00।13।17	-20।32।32	14
15	21।28।49	-03।37।32	12।54।40	-03।28।14	00।40।42	-03।58।27	19।20।19	-00।19।47	-21।55।30	-04।31।08	17।42।39	-00।13।22	-20।33।32	15
16	21।19।06	-02।45।03	16।52।16	-03।29।38	00।52।06	-03।47।23	19।30।39	-00।19।55	-21।56।54	-04।30।51	17।47।33	-00।13।28	-20।34।32	16
17	21।09।00	-01।44।06	20।10।36	-03।31।01	01।03।22	-03।35।33	19।41।26	-00।20।04	-21।58।17	-04।30।21	17।52।39	-00।13।33	-20।35।31	17
18	20।58।33	-00।36।53	22।35।49	-03।32।24	01।14।31	-03।23।04	19।52।32	-00।20।12	-21।59।39	-04।29।38	17।57।57	-00।13।38	-20।36।31	18
19	20।47।44	00।33।47	23।53।47	-03।33।47	01।25।31	-03।10।01	20।03।48	-00।20।20	-22।01।00	-04।28।43	18।03।25	-00।13।44	-20।37।31	19
20	20।36।35	01।44।26	23।52।53	-03।35।09	01।36।23	-02।56।30	20।15।04	-00।20।28	-22।02।21	-04।27।36	18।09।00	-00।13।49	-20।38।31	20
21	20।25।04	02।50।53	22।27।20	-03।36।30	01।47।07	-02।42।35	20।26।11	-00।20।36	-22।03।41	-04।26।18	18।14।42	-00।13।54	-20।39।30	21
22	20।13।13	03।48।41	19।39।29	-03।37।51	01।57।42	-02।28।22	20।36।59	-00।20।43	-22।05।00	-04।24।49	18।20।28	-00।14।00	-20।40।29	22
23	20।01।02	04।33।30	15।39।43	-03।39।11	02।08।08	-02।13।55	20।47।17	-00।20।51	-22।06।19	-04।23।10	18।26।18	-00।14।05	--20।41।29	23
24	19।48।31	05।01।50	10।44।22	-03।40।30	02।18।26	-01।59।18	20।56।54	-00।20।59	-22।07।36	-04।21।21	18।32।09	00।14।10	-20।42।28	24
25	19।35।40	05।11।21	05।12।39	-03।41।49	02।28।34	-01।44।38	21।05।39	-00।21।06	-22।08।53	-04।19।22	18।38।00	-00।14।15	-20।43।26	25
26	19।22।30	05।01।22	-00।35।28	-03।43।06	02।38।33	-01।29।58	21।13।20	-00।21।14	-22।10।08	-04।17।14	18।43।50	-00।14।20	-20।44।25	26
27	19।09।00	04।32।42	-06।20।28	-03।44।24	02।48।23	-01।15।22	21।19।47	-00।21।21	-22।11।22	-04।14।57	18।49।37	-00।14।25	-20।45।23	27
28	18।55।12	03।47।34	-11।43।31	-03।45।40	02।58।04	-01।00।55	21।24।47	-00।21।28	-22।12।36	-04।12।32	18।55।20	00।14।31	-20।46।21	28
29	18।41।05	02।49।14	-16।26।28	-03।46।55	03।07।35	-00।46।42	21।28।10	-00।21।35	-22।13।48	-04।09।59	19।00।58	-00।14।36	-20।47।18	29
30	18।26।39	01।41।40	-20।12।22	-03।48।10	03।16।56	-00।32।47	21।29।43	-00।21।42	-22।14।59	-04।07।17	19।06।29	-00।14।41	-20।48।16	30
31	18।11।56	00।29।11	-22।46।42	-03।49।23	03।26।07	-00।19।14	21।29।17	00।21।49	-22।16।09	-04।04।29	19।11।53	00।14।46	-20।49।12	31

शर क्रांति—अगस्त सन् 2020 ई.

ता. अग.	सूर्य क्रांति	चन्द्र शर	चन्द्र क्रांति	मंगल शर	मंगल क्रांति	बुध शर	बुध क्रांति	गुरु शर	गुरु क्रांति	शुक्र शर	शुक्र क्रांति	शनि शर	शनि क्रांति	ता. अग.
1	17|56|55	-00|43|50	-23|59|41	-03|50|36	03|35|09	-00|06|07	21|26|41	-00|21|56	-22|17|17	-04|01|33	19|17|07	-00|14|50	-20|50|09	1
2	17|41|36	-01|53|18	-23|48|24	-03|51|47	03|44|00	00|06|28	21|21|46	-00|22|02	-22|18|24	-03|58|10	19|22|11	-00|14|55	-20|51|04	2
3	17|26|00	-02|55|35	-22|17|42	-03|52|58	03|52|42	00|18|29	21|14|26	-00|22|09	-22|19|30	-03|55|11	19|27|05	-00|15|00	-20|52|00	3
4	17|10|07	-03|47|44	-19|38|40	-03|54|08	04|01|12	00|29|52	21|04|33	-00|22|15	-22|20|35	-03|52|06	19|31|45	-00|15|05	-20|52|55	4
5	16|53|58	-04|27|38	-16|05|50	-03|55|16	04|09|33	00|40|34	20|52|03	-00|22|22	-22|21|39	-03|48|44	19|36|12	-00|15|10	-20|53|49	5
6	16|37|32	-04|53|58	-11|54|23	-03|56|23	04|17|42	00|50|30	20|36|54	-00|22|28	-22|22|41	-03|45|17	19|40|25	-00|15|15	-20|54|43	6
7	16|20|50	-05|06|14	-07|18|10	-03|57|30	04|25|40	00|59|40	20|19|06	-00|22|34	-22|23|41	-03|41|45	19|44|22	-00|15|19	-20|55|36	7
8	16|03|52	-05|04|31	-02|29|09	-03|58|34	04|33|28	01|08|01	19|58|39	-00|22|40	22|24|41	-03|38|07	19|48|03	-00|15|24	-20|56|29	8
9	15|46|39	-04|49|27	02|22|28	-03|59|38	04|41|04	01|15|32	19|35|38	-00|22|46	-22|25|38	-03|34|24	19|51|27	-00|15|29	-20|57|21	9
10	15|29|10	-04|22|00	07|07|40	-04|00|40	04|48|28	01|22|11	19|10|06	-00|22|52	-22|26|35	-03|30|37	19|54|32	-00|15|33	-20|58|13	10
11	15|11|27	-03|43|19	11|37|42	-04|01|41	04|55|41	01|27|59	18|42|12	-00|22|57	-22|27|30	-03|26|45	19|57|18	-00|15|38	-20|59|04	11
12	14|53|29	-02|54|47	15|43|15	-04|02|41	05|02|42	01|32|56	18|12|02	-00|23|03	-22|28|23	-03|22|49	19|59|43	-00|15|43	-20|59|54	12
13	14|35|16	-01|57|55	19|13|44	-04|03|39	05|09|31	01|37|02	17|39|46	-00|23|09	-22|29|15	-03|18|49	20|01|49	-00|15|47	-21|00|44	13
14	14|16|50	-00|54|33	21|56|52	-04|04|35	05|16|07	01|40|19	17|05|33	-00|23|14	-22|30|06	-03|14|45	20|03|32	-00|15|52	-21|01|32	14
15	13|58|10	00|13|01	23|39|13	-04|05|30	05|22|31	01|42|47	16|29|33	-00|23|19	-22|30|55	-03|10|38	20|04|54	-00|15|56	-21|02|21	15
16	13|39|16	01|21|53	24|07|54	-04|06|23	05|28|43	01|44|29	15|51|55	-00|23|24	-22|31|43	-03|06|28	20|05|52	-00|16|01	-21|03|08	16
17	13|20|10	02|28|22	23|13|35	-04|07|14	05|34|42	01|45|27	15|12|50	-00|23|30	-22|32|29	-03|02|14	20|06|27	-00|16|05	-21|03|55	17
18	13|00|50	03|28|08	20|53|30	-04|08|04	05|40|28	01|45|42	14|32|26	-00|23|34	-22|33|13	-02|57|57	20|06|38	-00|16|09	-21|04|41	18
19	12|41|19	04|16|33	17|13|27	-04|08|51	05|46|01	01|45|17	13|50|54	-00|23|39	-22|33|56	-02|53|38	20|06|24	-00|16|14	-21|05|26	19
20	12|21|35	04|49|20	12|27|14	-04|09|36	05|51|21	01|44|14	13|08|22	-00|23|44	-22|34|37	-02|49|16	20|05|44	-00|16|18	-21|06|10	20
21	12|01|39	05|03|18	06|54|23	-04|10|19	05|56|28	01|42|35	12|24|58	-00|23|49	-22|35|17	-02|44|52	20|04|39	-00|16|22	-21|06|53	21
22	11|41|33	04|57|02	00|57|16	-04|11|00	06|01|21	01|40|22	11|40|50	-00|23|53	-22|35|55	-02|40|25	20|03|08	-00|16|26	-21|07|36	22
23	11|21|15	04|31|10	-05|01|17	-04|11|38	06|06|01	01|37|37	10|56|05	-00|23|58	-22|36|32	-02|35|57	20|01|10	-00|16|31	-21|08|18	23
24	11|00|46	03|48|07	-10|39|34	-04|12|14	06|10|28	01|34|23	10|10|49	-00|24|02	-22|37|07	-02|31|27	19|58|44	-00|16|35	-21|08|59	24
25	10|40|07	02|51|34	-15|37|49	-04|12|47	06|14|42	01|30|41	09|25|09	-00|24|07	-22|37|40	-02|26|55	19|55|51	-00|16|39	-21|09|39	25
26	10|19|18	01|45|51	-19|38|52	-04|13|18	06|18|42	01|26|33	08|39|09	-00|24|11	-22|38|12	-02|22|22	19|52|30	-00|16|43	-21|10|18	26
27	09|58|20	00|35|23	-22|28|55	-04|13|45	06|22|29	01|22|01	07|52|56	-00|24|15	-22|38|42	-02|17|47	19|48|41	-00|16|47	-21|10|56	27
28	09|37|12	-00|35|37	-23|58|58	-04|14|10	06|26|02	01|17|07	07|06|33	00|24|19	-22|39|11	-02|13|12	19|44|23	-00|16|51	-21|11|33	28
29	09|15|55	-01|43|22	-24|06|04	-04|14|32	06|29|21	01|11|53	06|20|05	-00|24|23	-22|39|38	-02|08|35	19|39|36	-00|16|55	-21|12|09	29
30	08|54|29	-02|44|35	-22|53|56	-04|14|50	06|32|27	01|06|19	05|33|36	-00|24|27	-22|40|04	-02|03|58	19|34|20	-00|16|59	-21|12|45	30
31	08|32|54	-03|36|31	-20|31|50	-04|15|06	06|35|19	01|00|28	04|47|09	-00|24|31	-22|40|28	-01|59|20	19|28|35	-00|17|03	-21|13|19	31

आर्यभट्ट पंचांगम्

शर क्रांति—सितम्बर सन् 2020 ई.

शर क्रांति—सितम्बर सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
सितं.	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	सितं.
1	08111112	-04117103	-17112138	-04115117	06137157	00154121	04100148	-00124134	-22140150	-01154142	19122120	-00117107	-21113153	1
2	07149122	-04144142	-13110124	-04115125	06140121	00147159	03114135	-00124138	-22141111	-01150103	19115135	-00117110	-21114125	2
3	07127124	-04158139	-08138153	-04115130	06142132	00141124	02128133	-00124142	-22141130	-01145124	19108120	-00117114	-21114157	3
4	07105119	-04158146	-03150131	-04115131	06144128	00134136	01142145	-00124145	-22141148	-01140146	19100136	-00117118	-21115127	4
5	06143107	-04145132	01103137	-04115128	06146111	00127137	00157113	-00124149	-22142104	-01136107	18152121	-00117122	-21115157	5
6	06120148	-04119153	05153136	-04115120	06147139	00120129	00111159	-00124152	-22142118	-01131129	18143136	-00117126	-21116125	6
7	05158123	-03143107	10130106	-04115109	06148153	00113111	-00132153	-00124155	-22142131	-01126152	18134121	-00117129	-21116153	7
8	05135152	-02156145	14143147	-04114153	06149153	00105145	-01117124	-00124158	-22142143	-01122115	18124136	-00117133	-21117119	8
9	05113115	-02102128	18124146	-04114132	06150139	-00101147	-02101131	-00125101	-22142153	-01117139	18114120	-00117136	-21117145	9
10	04150133	-01102105	21122111	-04114107	06151111	-00109126	-02145111	-00125104	-22143101	-01113104	18103135	-00117140	-21118109	10
11	04127146	00102120	23124113	-04113136	06151129	-00117110	-03128124	-00125107	-22143108	-01108130	17152119	-00117144	-21118133	11
12	04104154	01108123	24118159	-04113101	06151133	-00124158	-04111107	-00125110	-22143113	-01103157	17140134	-00117147	-21118155	12
13	03141157	02113101	23156119	-04112121	06151122	-00132150	-04153118	-00125113	-22143117	-00159126	17128119	-00117151	-21119116	13
14	03118157	03112135	22110119	-04111135	06150158	-00140144	-05134156	-00125116	-22143119	-00154156	17115134	-00117154	-21119137	14
15	02155153	04102153	19101135	-04110143	06150121	-00148139	-06116100	-00125119	-22143119	-00150128	17102120	-00117157	-21119156	15
16	02132145	04139126	14138123	-04109146	06149130	-00156136	-06156127	-00125121	-22143118	-00146101	16148137	-00118101	-21120114	16
17	02109134	04158115	09116109	-04108143	06148126	-01104132	-07136116	-00125124	-22143116	-00141137	16134125	-00118104	-21120131	17
18	01146121	04156142	03115157	-04107133	06147109	-01112128	-08115125	-00125127	-22143111	-00137114	16119145	-00118108	-21120147	18
19	01123105	04134117	-02157150	-04106118	06145139	-01120122	-08153152	-00125129	-22143106	-00132154	16104136	-00118111	-21121102	19
20	00159148	03152152	-08159145	-04104156	06143158	-01128113	-09131135	-00125132	-22142158	-00128136	15148159	-00118114	-21121115	20
21	00136129	02156117	-14125133	-04103128	06142105	-01136101	-10108132	-00125134	-22142150	-00124120	15132155	-00118117	-21121128	21
22	00113108	01149130	-18154104	-04101153	06140100	-01143144	-10144142	-00125137	-22142139	-00120107	15116123	-00118121	-21121139	22
23	-00110112	00137143	-22109100	-04100112	06137145	-01151121	-11120100	-00125139	-22142127	-00115157	14159125	-00118124	-21121150	23
24	-00133134	-00134117	-24100127	-03158124	06135119	-01158152	-11154126	-00125141	-22142114	-00111149	14141159	-00118127	-21121159	24
25	-00156156	-01142131	-24125145	-03156129	06132144	-02106116	-12127157	-00125143	-22141159	-00107 '44	14124108	-00118130	-21122107	25
26	-01120117	-02143145	-23129113	-03154127	06129159	-02113130	-13100130	-00125146	-22141142	-00103 42	14105151	-00118133	-21122115	26
27	-01143139	-03135131	-21120138	-03152119	06127106	-02120135	-13132101	-00125148	-22141124	00100 15	13147108	-00118137	-21122121	27
28	-02106159	-04115158	-18112150	-03150104	06124105	-02127127	-14102128	-00125150	-22141104	00104111	13128101	-00118140	-21122125	28
29	-02130118	-04143147	-14119127	-03147141	06120156	-02134107	-14131148	-00125152	-22140143	00108103	13108129	-00118143	-21122129	29
30	-02153136	-04158112	-09153139	-03145112	06117141	-02140132	-14159155	-00125154	-22140120	00111152	12148133	-00118146	-21122132	30

शर क्रांति—अक्टूबर सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
अक्टू.	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	अक्टू.
1	-03|16|52	-04|58|57	-05|07|30	-03|42|37	06|14|19	-02|46|41	-15|26|46	-00|25|56	-22|39|56	00|15|38	12|28|13	-00|18|49	-21|22|33	1
2	-03|40|06	-04|46|21	-00|12|03	-03|39|55	06|10|51	-02|52|31	-15|52|16	-00|25|58	-22|39|30	00|19|19	12|07|30	-00|18|52	-21|22|34	2
3	-04|03|17	-04|21|13	04|42|25	-03|37|06	06|07|19	-02|58|00	-16|16|21	-00|26|00	-22|39|02	00|22|58	11|46|25	-00|18|55	-21|22|33	3
4	-04|26|25	-03|44|46	09|26|05	-03|34|10	06|03|43	-03|03|07	-16|38|53	-00|26|02	-22|38|33	00|26|32	11|24|58	-00|18|58	-21|22|31	4
5	-04|49|31	-02|58|38	13|49|03	-03|31|09	06|00|03	-03|07|47	-16|59|48	-00|26|04	-22|38|02	00|30|02	11|03|08	-00|19|01	-21|22|29	5
6	-05|12|32	-02|04|40	17|41|13	-03|28|01	05|56|20	-03|11|58	-17|18|57	-00|26|06	-22|37|30	00|33|29	10|40|58	-00|19|04	-21|22|25	6
7	-05|35|30	-01|04|51	20|51|55	-03|24|47	05|52|35	-03|15|37	-17|36|13	-00|26|08	-22|36|56	00|36|51	10|18|27	-00|19|07	-21|22|20	7
8	-05|58|24	-00|01|22	23|10|14	-03|21|27	05|48|50	-03|18|39	-17|51|27	-00|26|10	-22|36|21	00|40|10	09|55|37	-00|19|09	-21|22|13	8
9	-06|21|13	01|03|24	24|25|29	-03|18|02	05|45|04	-03|21|01	-18|04|29	-00|26|12	-22|35|44	00|43|24	09|32|26	-00|19|12	-21|22|06	9
10	-06|43|57	02|06|48	24|28|30	-03|14|31	05|41|18	-03|22|37	-18|15|08	-00|26|13	-22|35|05	00|46|34	09|08|58	-00|19|15	-21|21|58	10
11	-07|06|36	03|05|45	23|13|14	-03|10|55	05|37|34	-03|23|23	-18|23|13	-00|26|15	-22|34|25	00|49|40	08|45|10	-00|19|18	-21|21|48	11
12	-07|29|09	03|56|44	20|38|15	-03|07|14	05|33|53	-03|23|12	-18|28|31	-00|26|17	-22|33|43	00|52|41	08|21|06	-00|19|21	-21|21|37	12
13	-07|51|36	04|35|50	16|47|48	-03|03|29	05|30|14	-03|21|59	-18|30|46	-00|26|19	-22|33|00	00|55|38	07|56|44	-00|19|24	-21|21|26	13
14	-08|13|57	04|59|09	11|51|57	-02|59|39	05|26|40	-03|19|35	-18|29|45	-00|26|21	-22|32|15	00|58|30	07|32|06	-00|19|27	-21|21|13	14
15	-08|36|11	05|03|22	06|06|27	-02|55|45	05|23|11	-03|15|55	-18|25|11	-00|26|22	-22|31|28	01|01|17	07|07|13	-00|19|29	-21|20|59	15
16	-08|58|18	04|46|38	-00|07|51	-02|51|47	05|19|48	-03|10|51	-18|16|49	-00|26|24	-22|30|40	01|04|00	06|42|04	-00|19|32	-21|20|44	16
17	-09|20|17	04|09|15	-06|26|13	-02|47|47	05|16|32	-03|04|15	-18|04|23	-00|26|26	-22|29|50	01|06|39	06|16|41	-00|19|35	-21|20|27	17
18	-09|42|08	03|14|02	-12|21|40	-02|43|43	05|13|24	-02|56|02	-17|47|41	-00|26|28	-22|28|58	01|09|12	05|51|04	-00|19|38	-21|20|10	18
19	-10|03|50	02|05|50	-17|27|44	-02|39|36	05|10|24	-02|46|05	-17|26|33	-00|26|29	-22|28|05	01|11|41	05|25|14	-00|19|41	-21|19|52	19
20	-10|25|24	00|50|35	-21|21|49	-02|35|27	05|07|33	-02|34|21	-17|00|54	-00|26|31	-22|27|10	01|14|05	04|59|12	-00|19|43	-21|19|32	20
21	-10|46|48	-00|25|51	-23|48|34	-02|31|16	05|04|53	-02|20|49	-16|30|47	-00|26|33	-22|26|14	01|16|24	04|32|58	-00|19|46	-21|19|11	21
22	-11|08|03	-01|38|28	-24|42|12	-02|27|04	05|02|24	-02|05|33	-15|56|26	-00|26|34	-22|25|15	01|18|38	04|06|33	-00|19|49	-21|18|50	22
23	-11|29|07	-02|43|23	-24|06|32	-02|22|50	05|00|06	-01|48|38	-15|18|14	-00|26|36	-22|24|15	01|20|47	03|39|58	-00|19|51	-21|18|27	23
24	-11|50|01	-03|37|54	-22|12|36	-02|18|35	04|58|00	-01|30|18	-14|36|48	-00|26|38	-22|23|14	01|22|51	03|13|13	-00|19|54	-21|18|03	24
25	-12|10|45	-04|20|15	-19|15|03	-02|14|20	04|56|07	-01|10|48	-13|53|01	-00|26|40	-22|22|10	01|24|50	02|46|18	-00|19|57	-21|17|38	25
26	-12|31|16	-04|49|23	-15|29|03	-02|10|05	04|54|27	-00|50|30	-13|07|54	-00|26|41	-22|21|05	01|26|43	02|19|16	-00|20|00	-21|17|12	26
27	-12|51|37	-05|04|48	-11|08|24	-02|05|50	04|53|00	-00|29|48	-12|22|37	-00|26|43	-22|19|59	01|28|32	01|52|05	-00|20|02	-21|16|44	27
28	-13|11|45	-05|06|25	-06|25|12	-02|01|35	04|51|48	-00|09|10	-11|38|27	-00|26|45	-22|18|50	01|30|16	01|24|48	-00|20|05	-21|16|16	28
29	-13|31|40	-04|54|33	-01|30|04	-01|57|21	04|50|49	00|11|00	-10|56|37	-00|26|47	-22|17|40	01|31|54	00|57|24	-00|20|08	-21|15|47	29
30	-13|51|23	-04|29|55	03|27|07	-01|53|08	04|50|06	00|30|17	-10|18|14	-00|26|48	-22|16|28	01|33|28	00|29|55	-00|20|10	-21|15|16	30
31	-14|10|53	-03|53|40	08|16|43	-01|48|56	04|49|37	00|48|22	-09|44|16	-00|26|50	-22|15|15	01|34|56	00|02|20	-00|20|13	-21|14|45	31

शर क्रांति—नवम्बर सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
नवं.	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	नवं.
1	-14 30 09	-03 07 18	12 48 46	-01 44 46	04 49 23	01 04 57	-09 15 25	-00 26 52	-22 14 00	01 36 19	-00 25 18	-00 20 16	-21 14 12	1
2	-14 49 11	-02 12 41	16 52 41	-01 40 37	04 49 24	01 19 51	-08 52 11	-00 26 53	-22 12 43	01 37 37	-00 53 00	-00 20 19	-21 13 38	2
3	-15 07 59	-01 11 56	20 17 21	-01 36 30	04 49 41	01 32 58	-08 34 47	-00 26 55	-22 11 24	01 38 49	-01 20 45	-00 20 21	-21 13 04	3
4	-15 26 31	-00 07 24	22 51 26	-01 32 26	04 50 13	01 44 15	-08 23 16	-00 26 57	-22 10 03	01 39 56	-01 48 33	-00 20 24	-21 12 28	4
5	-15 44 49	00 58 20	24 24 15	-01 28 24	04 51 01	01 53 43	-08 17 27	-00 26 59	-22 08 41	01 40 59	-02 16 22	-00 20 27	-21 11 51	5
6	-16 02 51	02 02 36	24 47 09	-01 24 24	04 52 04	02 01 26	-08 17 05	-00 27 01	-22 07 17	01 41 56	-02 44 12	-00 20 29	-21 11 13	6
7	-16 20 38	03 02 25	23 54 43	-01 20 28	04 53 23	02 07 28	-08 21 44	-00 27 02	-22 05 51	01 42 47	-03 12 02	-00 20 32	-21 10 34	7
8	-16 38 07	03 54 37	21 46 00	-01 16 34	04 54 58	02 11 58	-08 30 59	-00 27 04	-22 04 24	01 43 34	-03 39 51	-00 20 35	-21 09 54	8
9	-16 55 20	04 35 54	18 24 37	-01 12 43	04 56 48	02 15 01	-08 44 22	-00 27 06	-22 02 54	01 44 15	-04 07 38	-00 20 37	-21 09 13	9
10	-17 12 16	05 02 55	13 58 31	-01 08 55	04 58 54	02 16 46	-09 01 22	-00 27 08	-22 01 23	01 44 52	-04 35 23	-00 20 40	-21 08 31	10
11	-17 28 55	05 12 37	08 39 31	-01 05 10	05 01 15	02 17 19	-09 21 31	-00 27 10	-21 59 50	01 45 23	-05 03 06	-00 20 43	-21 07 48	11
12	-17 45 15	05 02 42	02 43 16	-01 01 29	05 03 53	02 16 50	-09 44 23	-00 27 12	-21 58 16	01 45 49	-05 30 44	-00 20 45	-21 07 04	12
13	-18 01 17	04 32 19	-03 30 38	-00 57 51	05 06 45	02 15 23	-10 09 33	-00 27 14	-21 56 39	01 46 10	-05 58 18	-00 20 48	-21 06 18	13
14	-18 17 00	03 42 38	-09 38 35	-00 54 17	05 09 54	02 13 07	-10 36 36	-00 27 15	-21 55 01	01 46 26	-06 25 47	-00 20 51	-21 05 32	14
15	-18 32 24	02 37 02	-15 13 57	-00 50 46	05 13 17	02 10 06	-11 05 13	-00 27 17	-21 53 21	01 46 37	-06 53 09	-00 20 54	-21 04 45	15
16	-18 47 29	01 20 51	-19 49 47	-00 47 19	05 16 56	02 06 26	-11 35 04	-00 27 19	-21 51 39	01 46 43	-07 20 25	-00 20 56	-21 03 57	16
17	-19 02 13	00 00 19	-23 03 09	-00 43 55	05 20 50	02 02 11	-12 05 52	-00 27 21	-21 49 55	01 46 44	-07 47 33	-00 20 59	-21 03 07	17
18	-19 16 37	-01 18 21	-24 40 04	-00 40 35	05 24 58	01 57 28	-12 37 23	-00 27 23	-21 48 09	01 46 40	-08 14 32	-00 21 02	-21 02 17	18
19	-19 30 40	-02 30 02	-24 38 40	-00 37 19	05 29 21	01 52 18	-13 09 23	-00 27 25	-21 46 22	01 46 31	-08 41 22	-00 21 05	-21 01 25	19
20	-19 44 22	-03 30 57	-23 08 16	-00 34 06	05 33 59	01 46 46	-13 41 41	-00 27 27	-21 44 32	01 46 18	-09 08 02	-00 21 07	-21 00 33	20
21	-19 57 42	-04 18 46	-20 25 02	-00 30 57	05 38 51	01 40 55	-14 14 06	-00 27 30	-21 42 41	01 45 59	-09 34 32	-00 21 10	-20 59 40	21
22	-20 10 41	-04 52 17	-16 46 58	-00 27 52	05 43 56	01 34 48	-14 46 30	-00 27 32	-21 40 48	01 45 36	-10 00 50	-00 21 13	-20 58 45	22
23	-20 23 17	-05 11 06	-12 30 30	-00 24 51	05 49 16	01 28 27	-15 18 45	-00 27 34	-21 38 54	01 45 08	-10 26 55	-00 21 16	-20 57 50	23
24	-20 35 30	-05 15 23	-07 49 20	-00 21 53	05 54 48	01 21 54	-15 50 44	-00 27 36	-21 36 57	01 44 36	-10 52 48	-00 21 18	-20 56 54	24
25	-20 47 21	-05 05 42	-02 54 41	-00 18 59	06 00 34	01 15 13	-16 22 20	-00 27 38	-21 34 58	01 43 59	-11 18 26	-00 21 21	-20 55 57	25
26	-20 58 48	-04 42 54	02 03 52	-00 16 09	06 06 32	01 08 23	-16 53 29	-00 27 40	-21 32 58	01 43 17	-11 43 50	-00 21 24	-20 54 58	26
27	-21 09 52	-04 08 06	06 57 19	-00 13 22	06 12 42	01 01 28	-17 24 05	-00 27 43	-21 30 56	01 42 32	-12 08 58	-00 21 27	-20 53 59	27
28	-21 20 32	-03 22 43	11 36 21	-00 10 39	06 19 04	00 54 28	-17 54 04	-00 27 45	-21 28 52	01 41 41	-12 33 50	-00 21 30	-20 52 59	28
29	-21 30 47	-02 28 29	15 50 48	-00 07 59	06 25 38	00 47 25	-18 23 23	-00 27 47	-21 26 46	01 40 47	-12 58 25	-00 21 33	-20 51 58	29
30	-21 40 38	-01 27 25	19 29 22	-00 05 23	06 32 23	00 40 21	-18 51 58	-00 27 49	-21 24 39	01 39 48	-13 22 42	-00 21 35	-20 50 56	30

शर क्रांति–दिसम्बर सन् 2020 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
दिसं.	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	दिसं.
1	-21:50:05	-00:21:52	22:20:01	-00:02:50	06:39:20	00:33:15	-19:19:46	-00:27:52	-21:22:29	01:38:45	-13:46:41	-00:21:38	-20:49:53	1
2	-21:59:06	00:45:30	24:10:58	-00:00:20	06:46:27	00:26:10	-19:46:44	-00:27:54	-21:20:18	01:37:37	-14:10:20	-00:21:41	-20:48:50	2
3	-22:07:42	01:51:48	24:52:24	00:02:05	06:53:44	00:19:06	-20:12:50	-00:27:57	-21:18:05	01:36:26	-14:33:39	-00:21:44	-20:47:45	3
4	-22:15:52	02:53:51	24:18:21	00:04:27	07:01:11	00:12:04	-20:38:01	-00:27:59	-21:15:50	01:35:11	-14:56:37	-00:21:47	-20:46:39	4
5	-22:23:37	03:48:27	22:27:58	00:06:47	07:08:49	00:05:05	-21:02:15	-00:28:02	-21:13:33	01:33:52	-15:19:13	-00:21:50	-20:45:33	5
6	-22:30:55	04:32:25	19:25:38	00:09:03	07:16:35	-00:01:50	-21:25:30	-00:28:04	-21:11:15	01:32:29	-15:41:26	-00:21:53	-20:44:25	6
7	-22:37:47	05:02:45	15:19:58	00:11:16	07:24:32	-00:08:41	-21:47:44	-00:28:07	-21:08:54	01:31:03	-16:03:16	-00:21:56	-20:43:17	7
8	-22:44:13	05:16:50	10:22:33	00:13:26	07:32:37	-00:15:27	-22:08:56	-00:28:09	-21:06:32	01:29:32	-16:24:42	-00:21:59	-20:42:08	8
9	-22:50:11	05:12:43	04:47:09	00:15:33	07:40:50	-00:22:07	-22:29:02	-00:28:12	-21:04:08	01:27:59	-16:45:43	-00:22:02	-20:40:58	9
10	-22:55:43	04:49:25	-01:10:19	00:17:37	07:49:13	-00:28:41	-22:48:03	-00:28:15	-21:01:42	01:26:22	-17:06:18	-00:22:05	-20:39:47	10
11	-23:00:48	04:07:21	-07:11:17	00:19:38	07:57:43	-00:35:09	-23:05:56	-00:28:17	-20:59:14	01:24:41	-17:26:27	-00:22:08	-20:38:35	11
12	-23:05:25	03:08:33	-12:53:54	00:21:36	08:06:22	-00:41:28	-23:22:40	-00:28:20	-20:56:45	01:22:57	-17:46:08	-00:22:11	-20:37:23	12
13	-23:09:35	01:56:49	-17:53:38	00:23:31	08:15:09	-00:47:40	-23:38:13	-00:28:23	-20:54:14	01:21:10	-18:05:21	-00:22:14	-20:36:09	13
14	-23:13:18	00:37:25	-21:45:30	00:25:24	08:24:03	-00:53:43	-23:52:34	-00:28:26	-20:51:40	01:19:20	-18:24:05	-00:22:17	-20:34:55	14
15	-23:16:32	-00:43:38	-24:08:47	00:27:14	08:33:04	-00:59:36	-24:05:42	-00:28:28	-20:49:05	01:17:27	-18:42:20	-00:22:20	-20:33:40	15
16	-23:19:19	-02:00:30	-24:52:25	00:29:01	08:42:12	-01:05:20	-24:17:34	-00:28:31	-20:46:29	01:15:31	-19:00:04	-00:22:23	-20:32:24	16
17	-23:21:37	-03:08:12	-23:58:14	00:30:45	08:51:27	-01:10:54	-24:28:10	-00:28:34	-20:43:50	01:13:33	-19:17:18	-00:22:27	-20:31:07	17
18	-23:23:28	-04:03:12	-21:39:19	00:32:27	09:00:49	-01:16:17	-24:37:29	-00:28:37	-20:41:10	01:11:31	-19:33:59	-00:22:30	-20:29:50	18
19	-23:24:50	-04:43:24	-18:14:43	00:34:07	09:10:17	-01:21:28	-24:45:28	-00:28:40	-20:38:28	01:09:28	-19:50:08	-00:22:33	-20:28:31	19
20	-23:25:44	-05:08:01	-14:03:58	00:35:44	09:19:51	-01:26:27	-24:52:08	-00:28:43	-20:35:44	01:07:21	-20:05:44	-00:22:36	-20:27:12	20
21	-23:26:10	-05:17:09	-09:23:58	00:37:19	09:29:30	-01:31:13	-24:57:26	-00:28:46	-20:32:58	01:05:12	-20:20:46	-00:22:39	-20:25:52	21
22	-23:26:08	-05:11:32	-04:28:12	00:38:51	09:39:15	-01:35:46	-25:01:22	-00:28:49	-20:30:11	01:03:01	-20:35:13	-00:22:43	-20:24:32	22
23	-23:25:38	-04:52:13	00:32:39	00:40:21	09:49:05	-01:40:04	-25:03:54	-00:28:53	-20:27:22	01:00:48	-20:49:06	-00:22:46	-20:23:11	23
24	-23:24:39	-04:20:32	05:29:35	00:41:49	09:59:00	-01:44:08	-25:05:01	-00:28:56	-20:24:32	00:58:32	-21:02:22	-00:22:49	-20:21:49	24
25	-23:23:12	-03:37:57	10:13:59	00:43:15	10:09:00	-01:47:57	-25:04:42	-00:28:59	-20:21:39	00:56:15	-21:15:03	-00:22:53	-20:20:26	25
26	-23:21:17	-02:46:05	14:36:42	00:44:38	10:19:03	-01:51:29	-25:02:55	-00:29:02	-20:18:45	00:53:56	-21:27:06	-00:22:56	-20:19:03	26
27	-23:18:53	-01:46:46	18:27:23	00:45:59	10:29:11	-01:54:44	-24:59:41	-00:29:06	-20:15:49	00:51:35	-21:38:33	-00:22:59	-20:17:39	27
28	-23:16:02	-00:42:08	21:34:16	00:47:19	10:39:23	-01:57:41	-24:54:58	-00:29:09	-20:12:52	00:49:12	-21:49:21	-00:23:03	-20:16:14	28
29	-23:12:43	00:25:18	23:44:50	00:48:36	10:49:38	-02:00:20	-24:48:45	-00:29:13	-20:09:53	00:46:48	-21:59:30	-00:23:06	-20:14:48	29
30	-23:08:55	01:32:40	24:47:27	00:49:52	10:59:57	-02:02:39	-24:41:01	-00:29:16	-20:06:52	00:44:22	-22:09:01	-00:23:10	-20:13:22	30
31	-23:04:40	02:36:44	24:33:47	00:51:05	11:10:19	-02:04:37	-24:31:46	-00:29:20	20:03:50	00:41:56	-22:17:52	-00:23:13	-20:11:56	31

सन 2021 ई.

ता. जन.	सूर्य क्रांति	चन्द्र शर	चन्द्र क्रांति	मंगल शर	मंगल क्रांति	बुध शर	बुध क्रांति	गुरु शर	गुरु क्रांति	शुक्र शर	शुक्र क्रांति	शनि शर	शनि क्रांति	ता. जन.
1	-22159158	03133158	23100159	00152117	11120143	-02106113	-24120159	-00129123	-20100146	00139127	-22126104	-00123117	-20110128	1
2	-22154148	04120157	20112141	00153127	11131110	-02107126	-24108138	-00129127	-19157141	00136158	-22133135	-00123120	-20109100	2
3	-22149110	04154130	16118110	00154135	11141140	-02108116	-23154145	-00129131	-19154134	00134128	-22140126	-00123124	-20107132	3
4	-22143105	05112104	11130132	00155141	11152112	-02108140	-23139119	-00129134	-19151125	00131157	-22146135	-00123128	-20106103	4
5	-22136134	05111158	06104151	00156146	12102146	-02108137	-23122119	-00129138	-19148115	00129125	-22152104	-00123131	-20104133	5
6	-22129135	04153132	00117112	00157149	12113121	-02108106	-23103146	-00129142	-19145103	00126152	-22156150	-00123135	-20103103	6
7	-22122109	04117119	-05135125	00158150	12123159	-02107106	-22143140	-00129146	-19141150	00124119	-23100155	-00123139	-20101132	7
8	-22114118	03125105	-11114134	00159150	12134138	-02105135	-22122102	-00129150	-19138135	00121145	-23104118	-00123142	-20100101	8
9	-22106100	02119150	-16119157	01100148	12145118	-02103131	-21158153	-00129154	-19135119	00119112	-23106158	-00123146	-19158129	9
10	-21157115	01105143	-20129157	01101145	12155159	-02100152	-21134115	-00129158	-19132101	00116137	-23108156	-00123150	-19156156	10
11	-21148106	-00112118	-23123154	01102140	13106142	-01157138	-21108110	-00130102	-19128141	00114103	-23110112	-00123154	-19155124	11
12	-21138130	-01128157	-24146118	01103133	13117125	-01153144	-20140141	-00130106	-19125121	00111129	-23110144	-00123157	-19153150	12
13	-21128130	-02139110	-24131125	01104126	13128109	-01149111	-20111150	-00130110	-19121159	00108155	-23110134	-00124101	-19152116	13
14	-21118104	-03138142	-22145111	01105117	13138153	-01143156	-19141143	-00130115	-19118135	00106121	-23109141	-00124105	-19150142	14
15	-21107114	-04124129	-19142148	01106106	13149137	-01137156	-19110125	-00130119	-19115110	00103147	-23108106	-00124109	-19149107	15
16	-20156100	-04154150	-15143149	01106154	14100122	-01131110	-18138101	-00130123	-19111144	00101114	-23105148	-00124113	-19147132	16
17	-20144122	-05109115	-11107128	01107141	14111106	-01123135	-18104140	-00130128	-19108116	-00101118	-23102147	-00124117	-19145157	17
18	-20132120	-05108115	-06110109	01108127	14121150	-01115111	-17130131	-00130132	-19104147	-00103150	-22159103	-00124121	-19144121	18
19	-20119155	-04152158	-01105101	01109111	14132133	-01105155	-16155145	-00130137	-19101117	-00106122	-22154137	-00124125	-19142145	19
20	-20107107	-04124153	03157125	01109155	14143116	-00155145	-16120133	-00130141	-18157146	-00108152	-22149129	-00124129	-19141108	20
21	-19153156	-03145142	08148113	01110137	14153157	-00144141	-15145112	-00130146	-18154113	-00111122	-22143139	-00124133	-19139131	21
22	-19140123	-02157109	13118147	01111118	15104138	-00132142	-15109157	-00130151	-18150139	-00113151	-22137107	-00124138	-19137154	22
23	-19126128	-02101101	17119154	01111157	15115117	-00119149	-14135107	-00130155	-18147104	-00116118	-22129153	-00124142	-19136116	23
24	-19112112	-00159114	20141110	01112136	15125155	-00106102	-14101103	-00131100	-18143128	-00118145	-22121158	-00124146	-19134139	24
25	-18157135	00106100	23110151	01113114	15136131	00108136	-13128108	-00131105	-18139150	-00121110	-22113123	-00124150	-19133100	25
26	-18142137	01112113	24136148	01113150	15147104	00124102	-12156147	-00131110	-18136112	-00123133	-22104106	-00124155	-19131122	26
27	-18127118	02116122	24148129	01114126	15157136	00140111	-12127125	-00131115	-18132132	-00125155	-21154110	-00124159	-19129144	27
28	-18111140	03115100	23139138	01115101	16108106	00156156	-12100129	-00131120	-18128151	-00128116	-21143134	-00125103	-19128105	28
29	-17155142	04104126	21110124	01115134	16118133	01114109	-11136126	-00131125	-18125110	-00130135	-21132118	-00125108	-19126126	29
30	-17139124	04141103	17128101	01116107	16128158	01131136	-11115140	-00131130	-18121127	-00132152	-21120124	-00125112	-19124147	30
31	-17122148	05101149	12145133	01116138	16139120	01149106	-10158136	-00131136	-18117143	-00135107	-21107151	-00125117	-19123108	31

शर क्रांति—फरवरी सन् 2021 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
फर.	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	फर.
1	-17:05:53	05:04:43	07:19:44	01:17:09	16:49:38	02:06:23	-10:45:31	-00:31:41	-18:13:58	-00:37:20	-20:54:40	-00:25:21	-19:21:28	1
2	-16:48:40	04:49:06	01:29:01	01:17:39	16:59:54	02:23:08	-10:36:41	-00:31:46	-18:10:13	-00:39:31	-20:40:51	-00:25:26	-19:19:49	2
3	-16:31:10	04:15:45	-04:27:37	01:18:08	17:10:07	02:39:02	-10:32:14	-00:31:52	-18:06:26	-00:41:40	-20:26:26	-00:25:30	-19:18:09	3
4	-16:13:22	03:26:47	-10:11:07	01:18:36	17:20:17	02:53:45	-10:32:11	-00:31:57	-18:02:38	-00:43:47	-20:11:25	-00:25:35	-19:16:29	4
5	-15:55:17	02:25:22	-15:22:16	01:19:03	17:30:23	03:06:58	-10:36:26	-00:32:03	-17:58:50	-00:45:51	-19:55:47	-00:25:40	-19:14:49	5
6	-15:36:55	01:15:27	-19:41:52	01:19:30	17:40:25	03:18:21	-10:44:42	-00:32:09	-17:55:01	-00:47:53	-19:39:35	-00:25:44	-19:13:10	6
7	-15:18:18	00:01:28	-22:51:47	01:19:55	17:50:24	03:27:39	-10:56:39	-00:32:14	-17:51:10	-00:49:53	-19:22:48	-00:25:49	-19:11:30	7
8	-14:59:25	-01:12:00	-24:37:29	01:20:20	18:00:18	03:34:40	-11:11:46	-00:32:20	-17:47:20	-00:51:50	-19:05:27	-00:25:54	-19:09:50	8
9	-14:40:16	-02:20:35	-24:51:10	01:20:44	18:10:09	03:39:18	-11:29:30	-00:32:26	-17:43:28	-00:53:44	-18:47:33	-00:25:59	-19:08:10	9
10	-14:20:53	-03:20:17	-23:34:16	01:21:07	18:19:56	03:41:28	-11:49:16	-00:32:32	-17:39:36	-00:55:36	-18:29:06	-00:26:04	-19:06:30	10
11	-14:01:16	-04:07:53	-20:57:06	01:21:30	18:29:38	03:41:16	-12:10:26	-00:32:38	-17:35:42	-00:57:25	-18:10:07	-00:26:09	-19:04:50	11
12	-13:41:24	-04:41:10	-17:15:56	01:21:52	18:39:16	03:38:48	-12:32:26	-00:32:44	-17:31:49	-00:59:11	-17:50:37	-00:26:14	-19:03:10	12
13	-13:21:19	-04:59:02	-12:49:07	01:22:13	18:48:49	03:34:15	-12:54:42	-00:32:50	-17:27:54	-01:00:54	-17:30:37	-00:26:19	-19:01:31	13
14	-13:01:01	-05:01:24	-07:54:02	01:22:33	18:58:18	03:27:51	-13:16:47	-00:32:56	-17:23:59	-01:02:35	-17:10:06	-00:26:24	-18:59:51	14
15	-12:40:30	-04:49:06	-02:45:44	01:22:53	19:07:42	03:19:50	-13:38:17	-00:33:02	-17:20:04	-01:04:12	-16:49:07	-00:26:29	-18:58:12	15
16	-12:19:47	-04:23:36	02:23:17	01:23:12	19:17:01	03:10:29	-13:58:52	-00:33:09	-17:16:08	-01:05:46	-16:27:39	-00:26:34	-18:56:33	16
17	-11:58:52	-03:46:43	07:22:33	01:23:30	19:26:15	03:00:01	-14:18:17	-00:33:15	-17:12:11	-01:07:17	-16:05:44	-00:26:39	-18:54:54	17
18	-11:37:46	-03:00:24	12:02:46	01:23:48	19:35:23	02:48:41	-14:36:21	-00:33:21	-17:08:14	-01:08:45	-15:43:21	-00:26:44	-18:53:15	18
19	-11:16:29	-02:06:39	16:14:56	01:24:05	19:44:26	02:36:41	-14:52:55	-00:33:28	-17:04:17	-01:10:10	-15:20:33	-00:26:49	-18:51:36	19
20	-10:55:01	-01:07:26	19:49:37	01:24:22	19:53:23	02:24:13	-15:07:53	-00:33:35	-17:00:19	-01:11:32	-14:57:19	-00:26:55	-18:49:58	20
21	-10:33:24	-00:04:47	22:36:28	01:24:38	20:02:15	02:11:27	-15:21:12	-00:33:41	-16:56:21	-01:12:50	-14:33:41	-00:27:00	-18:48:20	21
22	-10:11:36	00:59:06	24:24:25	01:24:53	20:11:01	01:58:30	-15:32:49	-00:33:48	-16:52:23	-01:14:04	-14:09:38	-00:27:05	-18:46:42	22
23	-09:49:40	02:01:41	25:02:51	01:25:08	20:19:40	01:45:30	-15:42:44	-00:33:55	-16:48:24	-01:15:16	-13:45:12	-00:27:11	-18:45:04	23
24	-09:27:34	02:59:58	24:23:28	01:25:22	20:28:14	01:32:31	-15:50:55	-00:34:02	-16:44:25	-01:16:23	-13:20:24	-00:27:16	-18:43:27	24
25	-09:05:20	03:50:30	22:22:41	01:25:36	20:36:41	01:19:40	-15:57:24	-00:34:09	-16:40:26	-01:17:28	-12:55:14	-00:27:22	-18:41:50	25
26	-08:42:58	04:29:36	19:03:16	01:25:49	20:45:02	01:06:59	-16:02:11	-00:34:16	-16:36:27	-01:18:28	-12:29:44	-00:27:27	-18:40:14	26
27	-08:20:28	04:53:42	14:34:44	01:26:01	20:53:17	00:54:31	-16:05:17	-00:34:23	-16:32:27	-01:19:25	-12:03:53	-00:27:33	-18:38:38	27
28	-07:57:51	05:00:02	09:12:17	01:26:13	21:01:25	00:42:20	-16:06:43	-00:34:30	-16:28:28	-01:20:19	-11:37:42	-00:27:38	-18:37:02	28

शर क्रांति—मार्च सन् 2021 ई.

ता.	सूर्य	चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		ता.
मार्च	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	मार्च
1	-07 35 07	04 47 10	03 15 10	01 26 25	21 09 26	00 30 27	-16 06 32	-00 34 37	-16 24 28	-01 21 09	-11 11 13	-00 27 44	-18 35 27	1
2	-07 12 16	04 15 28	-02 55 07	01 26 36	21 17 20	00 18 53	-16 04 43	-00 34 45	-16 20 28	-01 21 55	-10 44 26	-00 27 50	-18 33 52	2
3	-06 49 19	03 27 09	-08 56 13	01 26 46	21 25 07	00 07 39	-16 01 20	-00 34 52	-16 16 28	-01 22 37	-10 17 22	-00 27 55	-18 32 18	3
4	-06 26 16	02 25 52	-14 26 06	01 26 56	21 32 48	-00 03 11	-15 56 22	-00 35 00	-16 12 29	-01 23 16	-09 50 01	-00 28 01	-18 30 44	4
5	-06 03 08	01 16 07	-19 03 59	01 27 06	21 40 21	-00 13 41	-15 49 52	-00 35 07	-16 08 29	-01 23 51	-09 22 24	-00 28 07	-18 29 10	5
6	-05 39 54	00 02 43	-22 31 41	01 27 15	21 47 47	-00 23 47	-15 41 51	-00 35 15	-16 04 29	-01 24 22	-08 54 32	-00 28 13	-18 27 38	6
7	-05 16 36	-01 09 42	-24 35 32	01 27 24	21 55 05	-00 33 30	-15 32 19	-00 35 23	-16 00 30	-01 24 49	-08 26 27	-00 28 19	-18 26 05	7
8	-04 53 14	-02 17 02	-25 08 34	01 27 32	22 02 16	-00 42 49	-15 21 19	-00 35 31	-15 56 30	-01 25 13	-07 58 07	-00 28 25	-18 24 34	8
9	-04 29 47	-03 15 44	-24 11 58	01 27 40	22 09 20	-00 51 44	-15 08 52	-00 35 39	-15 52 31	-01 25 32	-07 29 35	-00 28 31	-18 23 03	9
10	-04 06 17	-04 02 59	-21 54 38	01 27 47	22 16 16	-01 00 15	-14 54 59	-00 35 47	-15 48 32	-01 25 48	-07 00 51	-00 28 37	-18 21 32	10
11	-03 42 44	-04 36 43	-18 30 41	01 27 54	22 23 04	-01 08 22	-14 39 41	-00 35 55	-15 44 34	-01 26 00	-06 31 56	-00 28 43	-18 20 02	11
12	-03 19 09	-04 55 44	-14 16 33	01 28 00	22 29 44	-01 16 04	-14 22 59	-00 36 03	-15 40 35	-01 26 08	-06 02 50	-00 28 49	-18 18 33	12
13	-02 55 30	-04 59 38	-09 28 33	01 28 07	22 36 16	-01 23 21	-14 04 54	-00 36 11	-15 36 38	-01 26 13	-05 33 34	-00 28 55	-18 17 05	13
14	-02 31 50	-04 48 54	-04 21 41	01 28 12	22 42 40	-01 30 14	-13 45 27	-00 36 20	-15 32 40	-01 26 13	-05 04 10	-00 29 01	-18 15 37	14
15	-02 08 09	-04 24 41	00 50 52	01 28 17	22 48 56	-01 36 41	-13 24 39	-00 36 28	-15 28 43	-01 26 10	-04 34 37	-00 29 08	-18 14 10	15
16	-01 44 26	-03 48 41	05 57 33	01 28 22	22 55 04	-01 42 43	-13 02 32	-00 36 37	-15 24 47	-01 26 02	-04 04 57	-00 29 14	-18 12 44	16
17	-01 20 42	-03 02 57	10 47 56	01 28 27	23 01 04	-01 48 20	-12 39 06	-00 36 45	-15 20 51	-01 25 51	-03 35 10	-00 29 20	-18 11 18	17
18	-00 56 58	-02 09 40	15 12 14	01 28 31	23 06 55	-01 53 31	-12 14 22	-00 36 54	-15 16 55	-01 25 37	-03 05 17	-00 29 27	-18 09 54	18
19	-00 33 15	-01 11 01	19 00 48	01 28 35	23 12 37	-01 58 17	-11 48 20	-00 37 03	-15 13 01	-01 25 18	-02 35 18	-00 29 33	-18 08 30	19
20	-00 09 31	-00 09 09	22 03 49	01 28 38	23 18 11	-02 02 37	-11 21 03	-00 37 12	-15 09 07	-01 24 55	-02 05 16	-00 29 40	-18 07 07	20
21	00 14 11	00 53 42	24 11 14	01 28 41	23 23 37	-02 06 31	-10 52 30	-00 37 20	-15 05 13	-01 24 29	-01 35 09	-00 29 46	-18 05 45	21
22	00 37 52	01 55 16	25 13 24	01 28 44	23 28 53	-02 09 59	-10 22 43	-00 37 30	-15 01 21	-01 23 59	-01 04 59	-00 29 53	-18 04 24	22
23	01 01 32	02 52 59	25 02 14	01 28 47	23 34 01	-02 13 00	-09 51 42	-00 37 39	-14 57 29	-01 23 25	-00 34 47	-00 29 59	-18 03 03	23
24	01 25 11	03 43 54	23 32 52	01 28 49	23 38 59	-02 15 35	-09 19 28	-00 37 48	-14 53 38	-01 22 48	-00 04 33	-00 30 06	-18 01 44	24
25	01 48 47	04 24 46	20 44 58	01 28 50	23 43 49	-02 17 42	-08 46 02	-00 37 57	-14 49 48	-01 22 07	00 25 40	-00 30 13	-18 00 26	25
26	02 12 20	04 52 08	16 43 41	01 28 52	23 48 29	-02 19 23	-08 11 25	-00 38 07	-14 45 59	-01 21 22	00 55 55	-00 30 20	-17 59 08	26
27	02 35 51	05 02 48	11 39 41	01 28 53	23 53 00	-02 20 36	-07 35 37	-00 38 16	-14 42 11	-01 20 34	01 26 10	-00 30 26	-17 57 52	27
28	02 59 18	04 54 26	05 48 48	01 28 54	23 57 22	-02 21 21	-06 58 39	-00 38 26	-14 38 24	-01 19 41	01 56 23	-00 30 33	-17 56 36	28
29	03 22 42	04 26 12	-00 28 41	01 28 54	24 01 35	-02 21 38	-06 20 33	-00 38 36	-14 34 38	-01 18 46	02 26 34	-00 30 40	-17 55 22	29
30	03 46 03	03 39 26	-06 49 11	01 28 55	24 05 38	-02 21 27	-05 41 19	-00 38 45	-14 30 52	-01 17 47	02 56 42	-00 30 47	-17 54 09	30
31	04 09 18	02 37 28	-12 47 06	01 28 55	24 09 32	-02 20 48	-05 00 58	-00 38 55	-14 27 09	-01 16 44	03 26 48	-00 30 54	-17 52 56	31

व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर सन् 2020-2021

लेखक-
पी.सी. जैन पोरसा वाले

(नोट-व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी लेखक और प्रकाशक की किसी प्रकार से नहीं होगी। अत: स्व-विवेक से व्यापार करें।)

समय निवास वणिक घर, रोहिणी निवास सँधि से सम्वत् 2077 सन् 2020-2021 में वर्षा अच्छी होगी। 25 मार्च 2020 बुधवार को संवत् 2077 को नया संवत्सर शुरू होगा। गंगा दशहरा 1 जून 2020 बुधवार को है। 1 जुलाई 2020 बुधवारी देवशयनी एकादशी, 3 अगस्त 2020 श्रावण पूर्णिमा बुधवार, 2 आश्विन मास हैं। 26 अक्टूबर सोमवार विजयादशमी है। 14 नवंबर 2020 शनिवार को दीपावली है। 9 मार्च 2020 को होलिका दहन है।

1 जून से 9 जून 2020 तक शुक्र पश्चिम में अस्त है। 9 सितंबर से 15 नवंबर 2020 तक मंगल वक्री है। 12 मई से 29 सितंबर 2020 तक शनि ग्रह वक्री है। 28 मार्च 2021 रविवार को होलिका दहन है। अत: सन् 2020 में गुड़, शक्कर में तेजी। सरसों, बिनौला, चांदी, सोना, बड़ी इलायची, चना, अरहर, मूंग, लहसुन, चना, हल्दी में तेजी चल सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

चन्द्रमास में 5 वार होने से कृषि जिन्सों के बाजारों की तेजी-मंदी सन् 2020-21

11 जनवरी 2020 को माघ मास में 5 शनिवार होने से–23 फरवरी 2020 से 2 मार्च 2020 तक गुंवार में 550 रुपये की झड़पी मंदी चलने की संभावना है। 2 से 17 मार्च 2020 तक गुंवार में 275 की तेजी तो 17 से 28 मार्च 2020 तक गुंवार में 450 रुपये की मंदी चल सकती है। 28 मार्च से 19 अप्रैल 2020 तक गुंवार में 375 रुपये की तेजी तो 19 अप्रैल से 8 जून 2020 तक गुंवार में 175 की मंदी आ सकती है। 8 से 21 जून 2020 तक गुंवार में 350 रुपये की तेजी चल सकती है। 21 जून से 13 जुलाई 2020 तक गुंवार में 825 रुपये की झड़पी मंदी तो 13 जुलाई से 6 अगस्त 2020 तक गुंवार में 150 रुपये की तेजी चल सकती है। 6 से 13 अगस्त 2020 तक गुंवार में 225 रुपये की मंदी चलने की संभावना है।

10 फरवरी 2020 को फाल्गुन मास में 5 सोमवार होने से–26 जनवरी से 5 फरवरी 2020 तक धनियां में 610 रुपये की तेजी तो 5 से 25 फरवरी 2020 तक धनियां में 2550 की झड़पी मंदी चलने की संभावना है। 25 फरवरी से 3 मार्च 2020 तक धनियां में 810 रुपये की तेजी तो 3 से 23 मार्च 2020 तक धनियां में 2375 रुपये की झड़पी मंदी आ सकती है। 23 मार्च से 15 अप्रैल 2020 तक धनियां में 1175 रुपये की तेजी तो 15 से 22 अप्रैल 2020 तक धनिया में 1110 रुपये की मंदी चल सकती है। 22 अप्रैल से 5 मई 2020 तक धनियां में 1010 रुपये की तेजी तो 5 से 16 मई 2020 तक धनियां मे 650 रुपये की मंदी चल सकती है। 16 मई से 1 जून 2020 तक धनियां में 1425 रुपये की तेजी आने की संभावना है। 1 से 17 जून 2020 तक धनियां में 525 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 17 से 21 जून तक धनियां में 375 रुपये की तेजी चल सकती है।

10 मार्च 2020 को चैत्र मास में 5 मंगलवार होने से–23 दिसंबर 2019 से 3 जनवरी 2020 तक चना में 825 रुपये की तूफानी तेजी तो 3 से 21 जनवरी 2020 तक चना मे 1275 रुपये की धमाकेदार मंदी चलने की संभावना है। 21 जनवरी से 4 मार्च 2020 तक चना में 100 रुपये की तेजी तो 4 से 29 मार्च 2020 तक 375 रुपये की मंदी आ सकती है। 29 मार्च से 24 अप्रैल 2020 तक चना में 150 रुपये की तेजी तो 24 से 30 अप्रैल तक चना में 150 रुपये की मंदी आ सकती है। 30 अप्रैल से 10 मई 2020 तक चना, मूंग, उड़द में 425 रुपये की तेजी चल सकती है। 10 से 18 मई 2020 तक चना में 175 रुपये की मंदी तो 18 मई से 26 जून 2020 तक चना, मूग में 1550 की तेजी का तूफान आ सकता है। 26 जून से 14 अगस्त 2020 तक चना में 225 रुपये की मंदी तो 14 से 27 अगस्त 2020 तक चना में 1350 रुपये की तेजी का तूफान आ सकता है।

9 अप्रैल 2020 को वैशाख मास में 5 गुरुवार होने से–24 से 30 अप्रैल 2020 तक चना में 50 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 30 अप्रैल से 10 मई 2020 तक चना में 110 रुपये की तेजी आ सकती है।

8 मई 2020 को ज्येष्ठ मास में 5 शुक्रवार होने से–10 से 18 मई 2020 तक चना में 50 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 18 मई से 26 जून 2020 तक चना में 375 रुपये की तेजी का तूफान आ सकता है।

6 जून 2020 को आषाढ़ मास में 5 शनिवार होने से–6 से 30 जून 2020 तक धनियां में 650 रुपये की मंदी तो मूंग, उड़द में तेजी चलने की संभावना है। 30 जून से 11 जुलाई 2020 तक धनियां में 775 रुपये की तेजी तो 11 से 21 जुलाई 2020 तक धनियां में 910 रुपये की मंदी चल सकती है। 21 जुलाई से 3 अगस्त 2020 तक धनियां में 475 रुपयै की तेजी तो 3 से 9 अगस्त 2020 तक धनियां में 450 रुपये की मंदी आ सकती है। 9 से 23 अगस्त 2020 तक धनियां में 750 रुपये की तेजी चलने की संभावना है।

24 मार्च से 3 अप्रैल 2020 तक छोटी इलायची में 175 रुपये की झड़पी मंदी तो 3 से 10 अप्रैल 2020 तक छोटी इलायची में 75 रुपये की तेजी आने की संभावना है। 10 अप्रैल से 5 मई 2020 तक छोटी इलायची में 175 रुपये की झड़पी मंदी तो 5 से 20 मई 2020 तक छोटी इलायची में 275 रुपये की तेजी का तूफान आ सकता है। 20 से 28 मई 2020 तक छोटी इलायची में 50 रुपये की मंदी तो 28 मई से 2 जुलाई 2020 तक छोटी इलायची में 175 की तेजी आने की संभावना है। 2 से 14 जुलाई 2020 तक गुंवार, चना, उड़द में भारी तेजी तो छोटी इलायची में 75 रुपये की मंदी चल सकती है। 14 से 20 जुलाई 2020 तक छोटी इलायची में 50 रुपये की तेजी तो 20 से 30 जुलाई 2020 तक छोटी इलायची में 75 की मंदी आने की संभावना है। 30 जुलाई से 17 अगस्त 2020 तक छोटी इलायची में 110 रुपये की तेजी तो 17 से 25 अगस्त 2020 तक छोटी इलायची में 75 रुपये की मंदी आने की संभावना है। 25 अगस्त से 7 सितंबर 2020 तक छोटी इलायची में 50 रुपये की तेजी तो 7 से 14 सितंबर 2020 तक छोटी इलायची में 50 रुपये की मंदी आ सकती है।

6 जुलाई 2020 को श्रावण मास में 5 चन्द्रवार होने से–28 जुलाई से 25 अगस्त 2020 तक गुंवार, मूंग, उड़द, अरहर में 1275 रुपये की तेजी का तूफान तो 25 से 30 अगस्त तक 1315 रुपये की मंदी आने की संभावना है।

4 अगस्त 2020 को भाद्रपद में पांच मंगलवार होने से–10 से 24 जनवरी 2020 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी तो 24 जनवरी से 7 फरवरी 2020 तक गेहूं में 75 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 7 फरवरी से 8 मार्च 2020 तक गेहूं में 75 रुपये की मंदी तो 8 से 14 मार्च 2020 तक गेहूं में 25 रुपये की तेजी आ सकती है। 14 मार्च से 17 अप्रैल 2020 तक गेहूं में 175 रुपये की धमाकेदार मंदी आने की संभावना है। 17 से 24 अप्रैल 2020 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी तो 24 अप्रैल से 6 मई 2020 तक 50 रुपये की मंदी आ सकती है। 6 से 14 मई 2020 तक गेहूं में 225 रुपये की तेजी का उछाला तो 14 से 18 मई 2020 तक गेहूं में 200 रुपये की धमाकेदार मंदी आ सकती है। 11 जुलाई से 5 अक्टूबर 2020 के मध्य चांदी-सोना में भयंकर तेजी चलने की संभावना है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

3 सितम्बर 2020 प्र.आश्विन मास में पांच गुरुवार होने से–17 से 21 अगस्त 2020 तक गेहूं में 75 रुपये की मंदी तो 21 से 28 अगस्त 2020 तक गेहूं में 25 रुपये की तेजी आने की संभावना है। 28 अगस्त से 4 सितंबर 2020 तक गेहूं में 75 रुपये

की मंदी तो 4 से 17 सितंबर 2020 तक गेहूं में 150 रुपये की तेजी आने की संभावना है। 17 से 25 सितंबर 2020 तक गेहूं में 75 रुपये की मंदी आ सकती है। 25 सितंबर से 7 अक्टूबर 2020 तक गेहूं में 25 रुपये की मंदी चल सकती है।

14 से 27 अगस्त 2020 तक चना में 350 रुपये की तेजी का उछाला चल सकता है। 21 से 24 सितंबर 2020 तक जीरा में 725 रुपये की मंदी तो 24 से 28 सितंबर 2020 तक जीरा में 675 रुपये की तेजी आने की संभावना है। 28 सितंबर से 12 अक्टूबर 2020 तक जीरा में 2775 रुपये की धमाकेदार मंदी आने की संभावना है।

2 अक्टूबर 2020 को द्वितीय आश्विन मास में 5 शुक्रवार होने से–7 से 18 अक्टूबर 2020 तक गेहूं में 125 रुपये की तेजी तो 18 से 22 अक्टूबर 2020 तक गेहूं में 75 रुपये की मंदी आ सकती है। 22 से 28 अक्टूबर 2020 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी तो 28 अक्टूबर से 9 नवंबर 2020 तक गेहूं में 75 रुपये की मंदी आने की संभावना है।

12 से 15 अक्टूबर 2020 तक जीरा में 950 रुपये की तेजी तो 15 से 25 अक्टूबर 2020 तक जीरा में 1610 रुपये की झड़पी मंदी आ सकती है। 25 अक्टूबर से 15 नवंबर 2020 तक जीरा में 1275 रुपये की तेजी चलने की संभावना है।

1 नवंबर 2020 को कार्तिक मास में 5 रविवार होने से–9 से 16 नवंबर 2020 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी तो 16 से 23 नवंबर 2020 तक गेहूं में 50 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 23 से 30 नवंबर 2020 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी तो 30 नवंबर से 9 दिसंबर 2020 तक गेहूं, चना, अरहर, मूंग, उड़द, गुंवार में 515 रुपये की तेजी आने की संभावना है।

9 से 13 नवंबर 2020 तक हल्दी में 650 रुपये की तेजी तो 13 से 18 नवंबर 2020 तक हल्दी में 575 रुपये की मंदी चल सकती है। 18 नवंबर से 1 दिसंबर 2020 तक हल्दी में 750 रुपये की तेजी आ सकती है।

3 से 9 नवंबर 2020 तक जीरा में 1710 रुपये की झड़पी मंदी तो 9 से 15 नवंबर 2020 तक जीरा में 1025 रुपये की तेजी चल सकती है। 13 नवंबर से 13 दिसंबर 2020 तक जीरा में 2175 रुपये की धमाकेदार मंदी आने की संभावना है।

1 दिसंबर 2020 को अगहन मास में 5 मंगलवार होने से–9 से 30 दिसंबर 2020 तक गेहूं में 375 रुपये की तेजी तो 30 दिसंबर 2020 से 8 जनवरी 2021 तक गेहूं में 150 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 8 से 15 जनवरी 2021 तक गेहूं में 210 रुपये की तेजी तो 15 से 27 जनवरी 2021 तक गेहूं में 350 रुपये की मंदी आ सकती है। 27 जनवरी से 3 फरवरी 2021 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी चलने की संभावना है।

13 दिसंबर 2020 से 4 जनवरी 2021 तक जीरा में 2625 रुपये की तेजी का उछाला तो 4 से 12 जनवरी 2021 तक जीरा में 2525 रुपये की धमाकेदार मंदी चल सकती है। 12 से 25 जनवरी 2021 तक जीरा में 3275 रुपये की तेजी का तूफान तो 25 जनवरी से 2 फरवरी 2021 तक जीरा में 2210 रुपये की धमाकेदार मंदी आने की संभावना है। 2 से 12 फरवरी 2021 तक जीरा में 850 रुपये की तेजी तो 12 से 19 फरवरी 2021 तक जीरा में 1550 रुपये की झड़पी मंदी चल सकती है।

31 दिसम्बर 2020 को पौष मास में 5 गुरुवार होने से–24 से 29 सितंबर 2020 तक हल्दी में 350 रुपये की तेजी तो 29 सितंबर से 9 नवंबर 2020 तक हल्दी में 1925 रुपये की झड़पी मंदी आने की संभावना है। 1 से 21 दिसंबर 2020 तक हल्दी में 375 रुपये की मंदी आने की संभावना है। 21 दिसंबर 2020 से 12 जनवरी 2021 तक हल्दी में 225 रुपये की मंदी तो 12 जनवरी से 17 फरवरी 2021 तक हल्दी में 210 रुपये की तेजी चल सकती है।

9 से 30 दिसंबर 2020 तक गेहूं में 375 रुपये की तेजी तो 30 दिसंबर 2020 से 8 जनवरी 2021 तक गेहूं में 150 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 8 से 15 जनवरी 2021 तक गेहूं में 210 रुपये की तेजी तो 15 से 27 जनवरी 2021 तक गेहूं में 350 रुपये की मंदी आ सकती है। 27 जनवरी से 3 फरवरी 2021 तक गेहूं में 50 रुपये की तेजी चलने की संभावना है।

29 जनवरी 2021 को माघ मास में 5 शुक्रवार होने से–19 जनवरी से 5 फरवरी 2021 तक मूंगफली तैल, सोयाबीन तैल व गुंवार में अच्छी मंदी आ सकती है। 9 जनवरी से 21 अप्रैल 2021 के बीच चांदी, सोना, मूंग, उड़द, चना में तूफानी तेजी चल सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

28 फरवरी 2021 को फाल्गुन मास में 5 रविवार होने से–5 से 15 मार्च 2021 तक चना, अरहर, उड़द व मूंग में तेजी आ सकती है।

29 मार्च 2021 को चैत्र मास में 5 सोमवार होने से–25 मार्च से 15 अप्रैल 2021 तक सरसों में 375 रुपये की तेजी, गुंवार में 777 रुपये की तेजी, सोयाबीन तैल में 225 रुपये की तेजी, चना में 405 रुपये की तेजी, मूंग-उड़द व मोंठ में 375 रुपये की तेजी आ सकती है।

27 अप्रैल 2021 को वैशाख मास में 5 मंगलवार होने से–11 से 30 अप्रैल 2021 तक सोयाबीन तैल में भयंकर मंदी आ सकती है। 11 अप्रैल से 21 मई 2021 तक मूंग, उड़द, मोंठ में अच्छी तेजी आ सकती है। 21 अप्रैल से 11 जून 2021 तक गुंवार में 999 रुपये की मंदी आ सकती है। चांदी में 5575 रुपये की मंदी चल सकती है।

प्रस्तुत तेजी-मंदी लेख विभिन्न ग्रहों की विभिन्न पोजीशन बनने के कारण तेजी-मंदी कई विधियों में प्रस्तुत की गई है। जो विधि बाजार से सही मिल रही हो, उसी एक विधि का उपयोग करें। स्पष्ट तेजी-मंदी जानने के लिए मो. 8305930896, 8103254349 पर ग्राफीकल सदस्य बनने के लिए चर्चा करें।

(25-1-4) 23 अक्टूबर 2019 को चांदी-सोना के नीचे से नीचे भाव। 27 जनवरी 2020 को चांदी के नीचे से नीचे भाव। 6 मार्च, 7 अप्रैल 2020 को चांदी के ऊंचे से ऊंचे भाव। 27 अगस्त 2020 या 21 फरवरी 2021 को चांदी के नीचे से नीचे भाव। 25 अप्रैल 2020 को चांदी के ऊंचे भाव। 30 जून 2020 को चांदी के नीचे से नीचे भाव। 1 अगस्त 2021 को चांदी के ऊंचे से ऊंचे भाव।

व्यापार भविष्य फल सन् 2020 ई.

लेखक-
अनिल कुमार व्यास

जनवरी–यह मास पौष शुक्ल 6 बुधवार से प्रारंभ होकर माघ शुक्ल 6 शुक्रवार तक रहेगा। ता. 1 जनवरी 2020 नूतन वर्ष सभी व्यापारी भाईयों को शुभ मंगलमय हो। ता. 2 **पूर्वाषाढ़ायां बुधः** से बिनौला में तेजी। गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ग्वार, ज्वार में मंदी। सोना, चांदी में अच्छी मंदी रहेगी। रुई, घी के भाव मंदी का मान करेंगे। ता. 8 **कुंभे शुक्रः** से रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा सफेद रंग की वस्तुओं में मंदी को बल। रुई में तेजी रहेगी। ता. 9 **गुरोदयः पूर्वे** से अनाज में मंदी रहेगी। ता. 14 **मकर संक्रांति** से गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार, बाजरा, मक्का, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अनारदाना, ईमली, तेल, सरसों, तिल, अलसी, हल्दी, मजीठ, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा, कोयला, पत्थर में तेजी। सूत, कपास, बिनौला, सोना, चांदी, किराने की वस्तुओं में घटाबढ़ी। उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर, घी में आंशिक मंदी। नमक, मिर्च तेज होकर मंदी में रहें। चौपाये काले रंग के पशुओं में मंदी रहेगी। ता. 19 **ज्येष्ठायां भौमः** व **श्रवणे बुधः** से चांदी में 12 दिन में मंदी। रुई घटाबढ़ी में। अफीम तेज। गुड़, अलसी, चना, चावल 10 दिन में तेजी लें। ता. 27 **बुधोदयः** से भावों में तेजी बनेगी। ता. 30 **कुंभे बुधः** से अलसी, रुई में मंदी। चांदी मंदी लेकर तेजी में रहे। घी, तेल, रसीले पदार्थ, गुड़, खाण्ड, चीनी, शक्कर में तेजी। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, ग्वार के भाव सम रहें। ता. 27 जनवरी **तिथि वृद्धिः** से सोना, चांदी, रुई, चावल, गेहूं, जौ, सूत, सन, गुड़, जूट, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल के भावों मे तेजी को बल मिलेगा। ता. 31 रेवती नक्षत्र के अनुसार रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, जवाहरात में मंदी रहे।

पौष सुदी एक में जो होवे बुधवार। नफा अनन्ते सौ गुनी बरसत नहिं जलधार॥ माघ अन्धेरी सप्तमी मेह विजु दमकन्त। मास चार बरसै मत सोचै तू कन्त॥ माघ अमावस गर्भ मय जो केहि विचार। भादौ के पूना दिवस वर्षा पहर चार॥

फरवरी–यह मास माघ शुक्ला 7 शनिवार से प्रारंभ होकर फाल्गुन शुक्ल 5 शनिवार तक रहेगा। ता. 2 शनि उदय हो रहे हैं। जिससे तिल, तिलहन, सरसों तेल, रसीले फल व अनाज, उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर, मसूर, रुई, सूत, सोना, चांदी के भावों में तेजी का झटका। ता. 6 **धनिष्ठायां रविः** से 15 दिन में सोना, चांदी, मोती, मणि, जवाहरात आदि, मूंग, मसूर, गेहूं, अन्य अनाज, अलसी, रुई तेज। ता. 7 फरवरी धनु में मंगल के प्रवेश से चावल, धान्य के भावों में तेजी। 13 फरवरी **कुंभः संक्रांति** से कोयला, तांबा, तिलहन, अलसी, मूंगफली, शेयर, एल्युमिनियम, पाट, पटसन, जौ के भावों में तेजी। ता. 17 फरवरी **बुध वक्री** से अच्छी तेजी के बाद गिरावट का रुख रहेगा। खाण्ड, चीनी, गुड़, शक्कर के भावों में मंदी रहेगी। ता. 20 फरवरी मंदी रहेगी। ता. 28 **मेषे शुक्रः** से मंदी का रुख देखने को मिलेगा। शेयर मार्केट, आयरन, ईस्पात, सोना, चांदी में मंदी का प्रभाव रहेगा। आलू, तिलहन में तेजी बनेगी।

माघ सुदी सप्तमी बीजू बदरा देख। तौ अस्सु धन बरसत बत्ती दिन लौ पंख॥ माघ नौमी निर्मला बादल रेख न जोय। तौ सूखा भी सुखी है याहि में जल न होय॥

मार्च–यह मास फाल्गुन शुक्ल 6 रविवार से प्रारंभ होकर चैत्र शुक्ल 7 मंलवार तक रहेगा। ता. 3 मार्च को बुध उदय से मार्केट में अच्छी मंदी का रुख रहेगा। चांदी, गुड़, खाण्ड, चीनी, बूरा, शक्कर, गेहूं, जौ, चना के भावों में मंदी रहेगी। ता. 9 भावों में गिरावट रहेगी। लोहा, कांसा, तिल, गोला, जीरा, क्रूड आयल, जायफल, आलू के भावों में मंदी रहेगी। ता. 10 मार्च मार्गी बुध के रुख से भावों में तेजी-मंदी की चाल रहेगी। गुड़, चीनी, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, रांगा, आयरन के भावों में तेजी रहेगी। ता. 14 मार्च मीने संक्रांति तेजी देगी। सोना, चांदी, गेहूं, चना, मटर, अरहर, मोम, उड़द, मसूर, मोंठ, घी, रेशम के भावों में तेजी की लाईन बन तेजी चले। ता. 22 मार्च मकरे मंगल से घी, तिलहन में अच्छी तेजी। धान, रुई, ऊनी वस्त्र में तेजी रहेगी। ता. 28 वृषे शुक्रः से रुई, कपास में अच्छी मंदी। सोना, चांदी, कॉपर घटाबढ़ी में आकर तेजी ले। गेहूं, जौ, चना, ग्वार, ज्वार, मक्का, मोंठ के भावों में मंदी चलेगी।

सोमवारि होली का यह वायु विचार। उत्तर वायु चलै निपजत अन्न जु व सुधार॥ पूरब पवन पुहानी सब डोलें ऋषिवर बोले। पच्छिम पठन समा नाहीं होई॥

अप्रैल–यह मास चैत्र शुक्ल 8 बुधवार से आरंभ होकर वैशाख शुक्ल 7 गुरुवार तक रहेगा। ता. 5 श्रवणे भौमः से 20 दिनों में गेहूं के भावों में अच्छी तेजी। जौ, चना, तिल, अफीम, सोना, चांदी, धातुवाना वस्तुओं में भी तेजी। रुई, आलू घटाबढ़ी में रहें। ता. 7 मीने बुधः से रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी। सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद जितनी मंदी हो उतनी तेजी में आये। बिनौला तेज, अन्य में तेजी रहे। ता. 13 मेषे संक्रांति सोमवारी से कपास, सूत, कपड़ा, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी। ता. 23 गुरुवार अमावस्या अश्वनी नक्षत्र से रुई तेज। सोना, चांदी में घटाबढ़ी। गेहूं, जौ, चना, चावल में मंदी रहेगी। ता. 26 अक्षय तृतीया मृगशिरा के शुक्र से गेहूं, ग्वार, चना, जौ, ज्वार में 12 दिन में मंदी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहेगी। ता. 27 मृगशिरा नक्षत्र से रुई, सोना, चांदी, सरसों, मूंगफली में मंदी। शेयर्स मार्केट, गेहूं, जौ, चना, मटर, ग्वार, तुअर, लौंग, ईलायची, सुगन्धित पदार्थ, दलहन में रुख मिला-जुला रहे। तेजी के बाद मंदी का झटका रहे। व्यापार में विशेष तेजी-मंदी में वस्तु की जानकारी के लिये मासिक रिपोर्ट मंगाये या जानकारी मोबाईल पर प्राप्त करें।

पवन न होवे चहु दिश रहै सुनृप स्वठौर। चला-चली हुई रंकजन कोई न करह गौर॥ वैशाख बदी में बादल वा इस वार। मेघ घनौ बरसात में होय सुखी नर नार॥

मई–यह मास वैशाख शुक्ल 8 शुक्रवार से प्रारंभ होकर ज्येष्ठ शुक्ल 9 रविवार तक रहेगा। ता. 4 **कुंभे भौमः** से रुई, चांदी में घटाबढ़ी अधिक रहेगी। गेहूं, जौ, चना, गुड़, ग्वार में तेजी। गुड़, खाण्ड, सोना तेज। कपास, तांबा, घी, तेल, सुपारी, सरसों, गुड़, लवण, नारियल, उड़द, मूंग, मोंठ, आलू में तेजी रहेगी। ता. 9 **वृषे बुधः** से रुई में मंदी, बाद में तेजी। गेहूं, चावल, शेयर्स, आयरन, सोयाबीन, अजवायन, मेंथी, तुअर, मेंथा, पिपरमेन्ट में घटाबढ़ी रहेगी। तिल, तेल, अफीम, सरसों, सोयाबीन में तेजी। ता. 11 **शनि वक्रीः** से भावों में तेजी। धातुवाना, उड़द, मूंग, मसूर, चना, अरहर, मोंठ में तेजी रहेगी। गुड़, खाण्ड तेज। सरसों, तेल, तोरिया में भारी मंदी। ता. 14 मई संक्रांति गुड़, घी, रसीले पदार्थ, रुई, तिल, तेल, सरसों में तेजी। गेहूं, जौ, चना में मंदी। शुक्र वक्री से बाजार की चलती लाईन में परिवर्तन देगी। ता. 24 **मिथुन बुधः** 15 दिन में रुई, सोना, चांदी में मंदी। सरसों, सोयाबीन में घटाबढ़ी रहेगी। पशुओं के भावों में तेजी रहेगी। आलू में सुधार। ता. 30 शुक्रास्त होगा। ता. 9 जून को शुक्रोदय होगा, जिससे बिनौला, रुई, अलसी, अरण्डी, घी, तेल, मूंगफली, चांदी की लाईन में परिवर्तन होगा। बाजार रुख देखकर लाभ उठायें।

पांच शनि वैशाख में भंग देश ईशान। अग्निदाह ज्वर संचरे होय स्वजन अपमान॥ वैशाख बदी आठैं दिन बिजली गर्जन होय। सम्वत् अच्छा जानिये संशय करो न कोय॥

जून–यह मास ज्येष्ठ शुक्ल 10 सोमवार से प्रारंभ होकर आषाढ़ शुक्ल 10 मंगलवार तक चलेगा। मास का शुभारंभ शुभ समय गंगा दशहरा को होने से व्यापारियों को अच्छा लाभ देगा। माह में पांच शुक्रवार होने से गेहूं, जौ, चना, मटर, ग्वार व अन्य में मंदी का वातावरण रहेगा। ता. 9 शुक्रोदय से चौपाये पशुओं में

तेजी। ता. 14 संक्रांति से गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा के भावों ... बाजरा, मक्का के भाव ... रहेगी। ता. 3 ... अक्टूबर–यह मास प्रथम आश्विन शुक्ल 15 पूर्णिमा

तेजी। ता. 14 संक्रांति से गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा के भावों में तेजी। ता. 18 बुध वक्री चांदी में घटाबढ़ी से तेजी की लाईन चलेगी। रुई के भाव तेज होकर गिरें। शेयर्स मार्केट में तेजी रहेगी। घी, गुड़, चीनी, तिल तेल, बिनौला के भावों में 2 सप्ताह में अच्छी तेजी। ता. 21 सूर्यग्रहण एवं बुधास्त से रुई, सूत, पाट, सोना, चांदी के भावों में तेजी एवं बुधास्त से भावों में तेजी का झटका। जिसमें प्रथम पांच दिन तेजी, छः दिन मंदी, फिर सात दिन तेजी रहेगी। ता. 25 **मार्गी शुक्रः** से गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मसूर, आलू में तेजी सूत, सन, पाट, पटसन, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, आयरन, शेयर्स में तेजी का रुख रहेगा।

जेठ मास रवि तपै उष्ण चलत जग वाइ। तो जानों धन बहु परत धरती सकै नमइ॥ जेठ न होवे तप तभी माघ न होवे सीत। तो वरसा थोरी होवे घोरो अन्न सुमित॥

जुलाई–यह मास आषाढ़ शुक्ल 11 बुधवार से प्रारंभ होकर श्रावण शुक्ल 12 शुक्रवार तक रहेगा। इस मास में पांच सोमवार सुखद हैं। ता. 1 देवशयन बुधवार को करेंगे। सोना, चांदी, जिंक, शेयर्स में मंदी रहेगी। ता. 5 रविवार पूर्णिमा से भावों में तेजी की लाईन चलेगी। ता. 11 बुधोदय तिल, तेल, तिलहन, जौ, चना, मटर के भावों में तेजी। ता. 16 **कर्क संक्रांति** गेहूं, जौ, चना, मटर, तुअर, ग्वार, बाजरा, मक्का, मोंठ, रेशम में तेजी। पीली वस्तुओं के भावों में अच्छी तेजी बनेगी। धान में मंदी। चावल में मंदी। ता. 19 **पुष्ये रविः** तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सोना, चांदी में तेजी। रुई तेजी में आकर बाद में गिरे। ता. 20 सोमवती अमावस्या सभी प्रकार की जिन्सों में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 24 **मृगे शुक्रः** गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार में मंदी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहेगी। ता. 26 पुनर्वसु बुध चांदी में आठ दिन में मंदी। सूत, कपास, सन, ऊन में मंदी रहेगी। ता. 27 **तिथि क्षयः** अनाज, दलहन, तिलहन, शेयर्स बाजार में तेजी का रुख रहेगा। हैशियन, पाट, पटसन, लोहा, आयरन, दवा, जिंक, धातुवाना में तेजी रहेगी। घी, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, सूर्यमुखी में तेजी रहेगी।

आषाढ़ बदी एकम गाज बीज पुनि बाई। सावन भादव सूखत खेती मत न करई॥ आषाढ़ बादिल करै चल है उत्तर वाई। जो जाकौ कार्तिक थकै सावन में वरसाई॥

अगस्त–यह मास श्रावण शुक्ल पक्ष 13 शनिवार से आरंभ होकर भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार तक रहेगा। ता. 1 **शनि प्रदोष व कर्के बुधः** से रुई में करीब 15 रुपये की मंदी होगी। चांदी में घटाबढ़ी से तेजी तथा रसादि पदार्थ गुड़, दुग्ध, तेल, मूंगफली, सरसों, सुवर्ण वस्तुओं में पहले तेजी आकर बाद में मंदी की लाईन चलेगी। श्वेत वस्त्रों में मंदी। गेहूं, चना, जौ, बाजरा, मक्का के भाव मध्यम रहेगा। ता. 3 **रक्षा बंधन एवं पुष्ये बुधः** से 10 दिन में सोना, चांदी में मंदी। रुई घटाबढ़ में। माणिक, मोती, जवाहरात तथा ऊनी कपड़ों के भावों में तेजी। ता. 7 **बुधास्त पूर्वेः** से सोने के भाव में मंदी। जौ, चना, मटर में तेजी। उड़द, मूंग, मोंठ के भाव तेज। रुई, सूत, सन, पाट, बारदाना, शेयर्स सर्पमुखी चाल में बढ़ेंगे। ता. 15 **मेषे अश्विनी भौमः** से चलती मार्केट में परिवर्तन। अगर तेजी हो तो मंदी, मंदी हो तो तेजी होगी। ता 16 रवि सिंह संक्रांति से मूंग, मोंठ, उड़द, चना, चावल, आलू में तेजी। तुअर, धान की हानि। पहले तेजी बाद में मंदी हो। ता. 15 भौमवारी अमावस्या सभी वस्तुओं में मंदी का मान करायेगी। ता. 19 **तिथि क्षयः** से भावों में तेजी रहेगी। ता. 23 **पूभायां बुधः** से सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, मक्का में मंदी। रुई में घटाबढ़ी रहेगी। ता. 30 **पूफायां रविः** जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी वस्त्र, रुई, सूत में तेजी। चांदी घटाबढ़ी में रहे। ता. 31 **उफायां बुधः** एवं **कर्के शुक्रः** से उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, अरहर में तेजी। रुई घटाबढ़ी में मंदी ले। चांदी भी मंदी में। अलसी, अरण्डी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी। गेहूं, जौ, चना, मटर में मंदी।

सातवी सुदी इदं निर्मलौ आठवी बाहर होई। तो सावन माहि जानियो बरसा घनी सलोई॥ भादव सुदी पंचमी जो घन नाहीं बरसंत। तो निहचै इम जानियो जलधर हुआ अंत॥

सितम्बर–यह मास भाद्रपद शुक्ल 14 मंगलवार से प्रारंभ होकर प्रथम आश्विन शुक्ल 14 बुधवार तक रहेगा। अधिक मास दो आश्विन पक्ष पड़ने से सेना का प्रभुत्व बढ़ेगा। पांच गुरुवार होने से धान के भाव में मंदी रहेगी। ता. 2 **कन्यायां बुधः** से रुई, चांदी में मंदी। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, जीरा, खोपरा में तेजी। ता. 7 **बुधोदय** से चांदी, चावल, चना, धान, घी, तेल, बिनौला, अलसी, सरसों के भावों में तेजी। प्रमुख शेयरों में मंदी। ता. 10 **वक्री भौमः** से भाव सामान्य रहेंगे। ता. 13 **गुरु मार्गीः** से जलीय जन्तु एवं जलोत्पन्न वस्तुओं में मंदी। ता. 16 **कन्या संक्रांतिः** सभी प्रकार के वस्त्रों, घी, रुई, सूत, चांदी में मंदी। दूध देने वाले चौपायों में गाय सस्ती, ऊंटों में तेजी। पश्चिम भाग में कहीं संक्रांति के प्रारम्भ में तेजी दिखाई देगी। बाद में उस क्षेत्र में मंदी रहेगी। ता. 29 **शनि मार्गीः** से रुई में मंदी। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का के भाव में मंदी। विशेष जानकारी हेतु मासिक रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

भादव भरमी ऋषी जोर बादर छोटा मोघा होई। सर्व देश तो बरषा जाना लोग सुखी जग होई॥ पुरुष-पुरुष मिल तापन तिये सो नाहीं नेह। मिल नपुंसक पुंस सौ बरषा को अतिदेह॥

अक्टूबर–यह मास प्रथम आश्विन शुक्ल 15 पूर्णिमा गुरुवार से प्रारंभ होकर द्वितीय आश्विन शुक्ल 15 तक रहेगा। ता. 4 **मीने रेवत्यां भौमः** से सोना, रुई, काष्ठ (लकड़ी) निर्मित वस्तुओं में तेजी। चांदी में घटाबढ़ी। चौपाये पशुओं, गेहूं, चना, मूंग, मोंठ, जौ, ज्वार, बाजरा में मंदी। आलू में मंदी। चांदी में अच्छी तेजी। सोना में मंदी। रुई घटाबढ़ी में तेज। ता. 13 बुधास्त से अनाज के भावों में मंदी का योग। सोना, चांदी, शेयर्स के भावों में तेजी रहेगी। ता. 14 बुध वक्री से गेहूं, जौ, चना, ग्वार, मोंठ, मक्का, चावल में तेजी। लोहा, पीतल, तांबा, जस्ता, सोना, चांदी में तेजी रहेगी। ता. 17 अक्टूबर तुला संक्रांति गेहूं, जौ, चना, मक्का के भाव पहले स्थिर रहकर तेजी लें। घी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल तेज। रुई, कपास में तेजी के बाद मंदी का रुख। गाय, बकरी महंगी। तिल, तेल, अलसी, सरसों, पिपरमेन्ट, लोहा, ज्वार, मक्का, बाजरा, अन्य में तेजी रहेगी। चांदी में मंदी को बल। ता. 17 प्रतिपदा शनिवार से धान में मंदी रहेगी। ता. 20 उफायां शुक्रः से गेहूं, जौ, चना, मटर, मक्का, मोंठ, रुई में तेजी रहे। सोना, चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। ता. 27 चित्रायां बुधः से रुई, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी रहेगी। ता. 30 बुधोदय पूर्व वर्षा अधिक हो। धान में मंदी। रुई, वस्त्र में मंदी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, कांसा, लोहा के भावों में तेजी।

मघा पूरबा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुने। गज चित्रा अरु स्वाती ऋषि दश बनिता सहोई॥ मास असोजै मावसे तो होवै शनिवार। मध्य समा बखनिये तिसौ मास फलदार॥

नवंबर–यह मास कार्तिक कृष्ण 1 रविवार से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल 15 सोमवार तक रहेगा। इस माह में पांच रविवार अशुभ फलकारी हैं। ता. 4 **मार्गी भौमः** जो अनाज के भावों में समता को बल देंगे। ता. 11 स्वाती के बुध व चित्रा के शुक्र रुई में आठ दिन में मंदी आयेगी। सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना के भाव सम रहें। कपूर, चन्दन तेज। ता. 14 महालक्ष्मी पूजा भावों में तेजी का मान करायेगी। ता. 15 वृश्चिक संक्रांति गेहूं, जौ, चावल, तिल, तेल, सरसों, तांबा, लोहा, जस्ता, पीतल, रुई, नमक, हल्दी, मिर्च व सफेद वस्तुओं में तेजी। जूट, पाट, पटसन, ऊनी-सूती वस्त्र, गाय, भैंस में मंदी। गुड़, शक्कर, बूरा, चीनी घटाबढ़ी के बाद मंदी लें। ता. 19 अनुराधा रवि 14 दिन तें जौ, चना, धान, ऊन, सोना, चांदी, पारा, जस्ता, आयरन में तेजी। गेहूं, अलसी, मिर्च में तेजी के बाद मंदी। सोना, चांदी में मंदी रहे। ता. 22 स्वाती के शुक्र गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी। अन्न के भाव मंदी लें। ता. 28 वृश्चिके बुधः से घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी। सोना सम। अफीम, अनाज में मंदी। खाण्ड, कपास, बिनौला, अरण्डी, अलसी, सरसों, लाख, सोंठ, गुग्गल, मोंठ, हल्दी, जीरा, सुपारी के भाव तेज रहेंगे।

कार्तिक सुदी दुतिया दिनै चढ़त चन्द जौ लाल। पच्छिम दिशा बादल गरजै मोह मटत जग काल॥ गरम सहियो तिन समे को विघ्न न होवै कोई। तौ बरषा जलधर दूनौ कोई दुखिया ना होई॥

दिसंम्बर–यह मास मार्गशीर्ष कृष्णा 1 मंगलवार से आरंभ होकर पौष कृष्णा 1 गुरुवार तक रहेगा। ता. 2 ज्येष्ठा के रवि एवं विशाखा के शुक्र से 15 दिन में रुई, अनाज के भावों में मंदी। सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, अरण्डी, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी। रुई मंदी के बाद तेजी ले। ता. 8 ज्येष्ठा के बुध घी, गुड़, खाण्ड, चावल तेज। आलू में मंदी। सोना, चांदी, हैशियन, पाट, पटसन, तोरिया में तेजी। ता. 14 सोमवती अमावस्या सभी वस्तुओं में मंदी का झटका देगी। भावों में मंदी रहेगी। ता. 15 दिसंबर धनु संक्रांति घी, तेल, अलसी, सरसों, गेहूं, जौ, चावल, चना, रुई, सूत, कपास, चांदी, लाल रंग के वस्त्र, केशर तेज। अरहर, मूंग, मटर, चना में मंदी। सोना, तांबा, लोहा, हल्दी सम रहे। ता. 24 ज्येष्ठा के शुक्र से अनाज तेज। सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तिलहन, तेल, हींग में मंदी। ता. 25 पूषाढ़ के बुध से बिनौला में तेजी। अनाजों में मंदी। सोना, चांदी अच्छी मंदी ले। ता. 28 पूषाढ़ के रवि से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, चमड़ा, गुग्गल, सूती-ऊनी वस्त्र, चांदी में तेजी रहेगी।

मार्गशीर्ष बदी जू पंचमी घटा होत चहुं ओर। बरसत बरषा लातणे चार मास जल घोर॥ मृगशिरा में बिजली ख्विवै श्रवण जले रसोई। गयो काल बहुकाल कौ गर्म सम्पूर्ण तंई॥

विशेष-सन् 2020 का यह लेख ग्रहों की राशियों पर भ्रमण के फलानुसार लिखा गया है। जो कि 80% से 90% तक सत्य है। इस लेख को सूक्ष्म से लिखा गया है। विस्तृत से भविष्यफल भास्कर नामक पुस्तक में विस्तार से व हमारे यहां से प्रत्येक जिन्सों की तेजी-मंदी की दैनिक/मासिक/वार्षिक रिपोर्ट भी भेजी जाती है व स्टॉक करने, खरीदने, बेचने का समय का भी चांस मिलता है। मासिक रिपोर्ट 551/-, वार्षिक 5001/- व पुस्तक 551/-रुपये में राशियों का भविष्यफल 551/- में एक राशि का भविष्य. कालसर्प ग्रह शांति हेतु विद्वानों की भी व्यवस्था है व हमारे यहां राया (मथुरा) में भी यज्ञशाला की व्यवस्था है। उचित मार्गदर्शन हेतु सम्पर्क करें-

पं. अनिल कुमार व्यास, सुनील कुमार व्यास
निर्देशक–**डॉ. वसंत लाल व्यास** (ज्योतिष सम्राट)
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ (रजि.), राया (मथुरा), उ.प्र.
सम्पर्क सूत्र-09719822007, 09720686322

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव सन् 2020-21 ई.

लेखक-
अनिल कुमार व्यास

चैत्र–इस मास में 25 मार्च सन् 2020 ई. बुधवार को मीन राशि के अंतर्गत नवीन मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह 30 मुहूर्ती एवं उदय रेवती नक्षत्र में हो रहा है। मीन राशि के अंतर्गत होने से इसकी दक्षिण की नोंक ऊंची होगी। जिससे प्रत्येक वस्तु में तेजी आयेगी। बुधवार को बाजार का भाव प्रात: हो वही शनिवार से पहले-पहले एक बार पीछे आ जायेंगे। रुई में पहले मंदी, उसके बाद तेजी का रुख रहेगा। गेहूं, जौ, चना, बाजरा, अन्य अनाज के भावों में मंदी का रुख रहेगा। पहले छ: मास व्यापारिक भाव मंदी की चाल में रहेंगे। उसके बाद तेजी में आयेंगे। तिलहन में तेजी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, सौंठ, नारियल व अनाजों में तेजी रहेगी। सोना, चांदी में छ: मास तेजी के बाद मंदी का रुख रहेगा। यदि चन्द्रमा पर कुण्डल (मण्डल) सफेद हो तो वर्षा का योग बनता है। लाल रंग का हो तो वर्षा का अभाव रहे। एक कुण्डल निकट और एक कुण्डल दूर, ऐसे दो कुण्डल हों तो वर्षा अधिक होगी। सोना, चांदी, रुई, सूत, सूती वस्त्र, सन्, वारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खाण्ड के भावों में घटाबढ़ी से मंदी रहेगी।

वैशाख–24 अप्रैल 2020 ई. शुक्रवार को वैशाख मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती व वृष राशि एवं भरणी नक्षत्र के अंतर्गत हो रहा है। शृंग में चन्द्रदर्शन की दक्षिण नोंक ऊंची रहेगी। यह सभी वस्तुओं में तेजी लायेगी। चन्द्रमण्डल में भरणी नक्षत्र पर रात को कुण्डल (मण्डल) हो तो अन्न का संग्रह करें। आगे लाभ मिलेगा। शुक्रवार होने से सरसों, तिल, तेल-तिलहन, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र, ऊन में मंदी। रुई, सोना, चांदी, आयरन, जस्ता, तांबा, पीतल, कांसा में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी का रुख रहेगा। नक्षत्र के अनुसार मजीठ, नमक, कुमकुम, चन्दन तेज। गुड़, चीनी, शक्कर, जूट, हैशियन, शेयर, पाट, कपास के भाव गिरकर पुन: सुधार लेंगे। अलसी, सरसों, मूंगफली, अरण्ड, सोयाबीन, बिनौला, सींगदाना में तेजी।

ज्येष्ठ–24 मई 2020 रविवार को ज्येष्ठ मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती, मिथुन राशि व रोहिणी नक्षत्र के अंतर्गत हो रहा है। गेहूं, जौ, चना, रुई, कपास, सूत, सूती वस्त्रों में तेजी। भांग, अफीम आदि नशीले पदार्थों में तेजी रहेगी। बाजार एवरेज में मंदी की चाल में चलेगा। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी व घटाबढ़ी से मंदी को बल मिलेगा। अन्न में आंशिक मंदी रहेगी। लोहा, तांबा, पीतल, कांसा, सूर्यमुखी चाल में तेजी का मान करेंगे। अलसी, अरण्डी, सरसों, तिलहन, दलहन के भाव उतार-चढ़ाव के साथ तेजी की लाईन में बने रहेंगे। उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर, मसूर में मास के मध्य में तेजी रहेगी। विशेष मासिक चांस (रिपोर्ट) मंगाकर लाभ लें।

आषाढ़–ता. 22 जून 2020 ई. सोमवार को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रदर्शन होगा। यह 45 मुहूर्ती, मिथुन राशि एवं आर्द्रा नक्षत्र के अंतर्गत हो रहा है। अत: चन्द्र उदित समय इसका शृंग समान सींग वाला होगा। जिससे बाजार में तेजी का माहौल रहेगा। गुड़, खाण्ड, वस्त्र, रंग, रुई, सोना, चांदी, सूत के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। गेहूं, जौ, चना, चावल, अरहर, मूंग, मसूर, मोंठ, उड़द के भाव उठकर गिर जायेंगे। तांबा, गेरू, सोना, घी, तेल, तिलहन, चन्दन के भावों में उतार-चढ़ाव में तेजी। ज्वार, बाजरा, मक्का, मोंठ, मटर के भावों में सुधार।

श्रावण–ता. 22 जुलाई 2020 ई. बुधवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह 30 मुहूर्ती, सिंह राशि एवं आश्लेषा नक्षत्र के अंतर्गत हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन बुधवार को होने से सोना, चांदी, रुई, सूत, सूती वस्त्र, सन्, वारदाना, जूट आदि, गुड़, चीनी, शक्कर में मंदी देगा। गेहूं, जौ, चना, बाजरा आदि अनाज, घी में तेजी देगा। हल्दी, मिर्च, अजवायन, जीरा, कालीमिर्च, नमक, लालरंग, मेंथी, अन्य किराना की वस्तुओं, अन्न, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, जस्ता, लोहा में मंदी, खाण्ड सम रहेगी। चन्द्रमा के दोनों कोने (सींग) बराबर रहने से प्रत्येक वस्तुओं में उतार-चढ़ाव होकर तेजी बनी रहेगी। प्रत्येक जिन्स, रुई, सूत, रेशमी वस्त्र, सूत, धान, सरसों, तिल में तेजी रहेगी। सोना, चांदी, गुड़ के भावों में गिरावट। मास के मध्य में अनाज, शेयरों में घटाबढ़ी रहेगी।

भाद्रपद–ता. 20 अगस्त 2020 ई. गुरुवार को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती व कन्या राशि के अंतर्गत पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में हो रहा है। अत: उदित समय शृंग (नोंक) समान सींग वाली होगी। जिससे बाजार में तेजी का माहौल बना रहेगा। खाण्ड, रुई, सूत, सोना, चांदी, वस्त्र के भावों में उतार-चढ़ाव रहेगा। गेहूं, जौ, चावल, बाजरा, चना के भाव तेजी लेकर मंदी का मान करेंगे। सूती-रेशमी-ऊनी

वस्त्रों, सरसों, सोयाबीन, तिल, अरण्डी, घी के भावों में तेजी

वस्त्रों, सरसों, सोयाबीन, तिल, अरण्डी, घी के भावों में तेजी रहेगी। गेरू, तांबा, चन्दन, तिल में घटाबढ़ी से सुधार। मक्का, मटर, गुआर, अरहर, उड़द, मूंग, मोंठ में तेजी रहेगी। रसकस, लवण पदार्थ, शेयर्स मार्केट में घटाबढ़ी की अधिकता रहेगी। व्यापारी वर्ग मार्केट में चलने वाली हवा (तेजी-मंदी) से आश्चर्य चकित रहेगा।

प्र.आश्विन–ता. 18 सितंबर 2020 ई. शुक्रवार को प्रथम आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह 30 मुहूर्ती व कन्या राशि के अंतर्गत उ.फाल्गुनी नक्षत्र में हो रहा है। जो सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र व ऊन में मंदी करेगा। रुई, चांदी, सोना में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी को बल देगी। अफीम, गुड़, खाण्ड, कपास में तेजी रहेगी। चन्द्रदर्शन उदित समय शृंग (नोंक) बराबर सींग वाला होगा। जिससे प्रत्येक वस्तु में तेजी का मान होगा। अफीम, नशीली वस्तुओं में तेजी। सरसों, मूंगफली, खोपरा, सोयाबीन, तिल, तिलहन, दलहन, शेयर्स, आयरन में घटाबढ़ी में तेजी को बल मिलेगा। व्यापार में तेजी की चाल निकल सकती है।

द्वि.आश्विन–ता. 18 अक्टूबर 2020 ई. को द्वितीय आश्विन मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन रविवार को वृश्चिक राशि, स्वाती नक्षत्र को हो रहा है। यह 45 मुहूर्ती है। जिससे मार्केट में अच्छी तेजी का संकेत है। प्रायः अनाजों व वायदा व्यापार में उतार-चढ़ाव तो होगा, परन्तु भाव तेजी का ही मान करेंगे। लवण पदार्थ, क्षार वस्तु, तिल, तेल, सरसों, रुई, चांदी, सोना में तेजी। चना, गेहूं, जौ में मंदी रहेगी। शृंग (नोंक) उत्तर की ओर होगी। नोंक ऊंची से प्रत्येक व्यापार में मंदी का रुख बना रहेगा। सौंठ, पीपल, इलायची, दालचीनी, सींगदाना, अरण्डी के भावों में मंदी के बाद तेजी बनेगी।

कार्तिक–ता. 16 नवंबर 2020 ई. सोमवार को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह 15 मुहूर्ती व वृश्चिक राशि तथा अनुराधा नक्षत्र पर हो रहा है। जिससे अलसी, सरसों, मूंगफली, घी, तिल, तेल, तिलहन, सब्जी, सोयाबीन, सूर्यमुखी में तेजी रहेगी। शृंग (नोंक) ऊंची रहने से सोना, चांदी, स्टील, पीतल, तांबा, कांसा के भावों में तेजी बनी रहेगी। रुई, सूत, शेयर, पाट, बारदाना, जूट, हैशियन, प्याज, आलू, लहसुन के भाव टूटकर तेजी का मान करेंगे। शेयर के भावों में मंदी रहेगी। यह भाव इस मास स्थायी नहीं होंगे। उतार-चढ़ाव के कारण बाजार अलग रुख धारण कर परेशानी पैदा करेगा। व्यापारी बाजार चाल-समय देखकर सतर्कता से व्यापार करें एवं लाभ लें। शनिवारीय अमावस्या से तेल, तिलहन, लोहा में अच्छी तेजी का रुख बनेगा।

मार्गशीर्ष–ता. 16 दिसंबर 2020 ई. बुधवार को इस मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती व मकर राशि तथा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में हो रहा है। इसके दोनों शृंग (नोंक) बराबर होने से सोना, चांदी के भावों में तेजी बनेगी। रुई, शेयर, पाट, हैशियन, पटसन में सर्पमुखी चाल से तेजी को बल प्राप्त होगा। बुधवार में दर्शन होने से सोना, चांदी, रुई, सूत, वस्त्र, सन, बारदाना, जूट आदि, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मंदी। गेहूं, जौ, चना, घी में तेजी। पूर्वाषाढ़ में चन्द्रदर्शन होने से नमक, चावल, चांदी, कपास मंदी में रहेंगे। मक्का, मोंठ, बाजरा, ज्वार, ग्वार के भावों में मंदी। धनियां, सौंठ, मिर्च, सौंफ, अजवायन, हीरा-मोती के भावों में तेजी का मान रहेगा।

पौष–ता. 14 जनवरी 2021 ई. गुरुवार को इस मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती व मकर राशि, श्रवण नक्षत्र में हो रहा है। इसके दोनों शृंग (कोने) बराबर होने से सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी होकर बाद में भाव सम हो जायेंगे। चन्द्रदर्शन गुरुवार में होने से रुई, सूत, सूती वस्त्र, रेशमी-ऊनी वस्त्रों, घी, सरसों, तेल तेजी में रहेंगे। सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, कांसा के भाव में मंदी। खाण्ड, गुड़, चीनी, शक्कर के भावों में मंदी का रुख रहेगा। आयरन, मेडिसन, पैट्रो रसायन आदि सभी प्रमुख शेयरों में अधिक बिकवाली से भावों में मंदी को बल मिलेगा।

माघ–ता. 13 फरवरी 2021 ई. शनिवार को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती, कुंभ राशि, शतभिषा नक्षत्र पर हो रहा है। अतः सभी चुनिन्दा वस्तुओं, व्यापारिक जिन्सों में घटाबढ़ी होगी। चन्द्रदर्शन के समय दोनों सींग बराबर होने से भाव उतार-चढ़ाव की अधिकता के बाद स्थिरता में आ जायेंगे। रुई, सूत, सूती वस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली, आलू में अचछी तेजी का रुख रहेगा। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, ग्वार के भावों में तेजी रहेगी। तांबा, आयरन, पीतल, जिंक, क्रूड आयल, मेडिसन, रसायनिक पदार्थ के भावों में उतार-चढ़ाव में मान तेजी का करेंगे। इनसे जुड़े शेयर्स भी गिर कर तेजी में आयेंगे।

फाल्गुन–ता. 14 मार्च 2020 ई. रविवार को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 45 मुहूर्ती, मीन राशि व उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में हो रहा है। चन्द्रदर्शन के समय इसकी दक्षिण नोंक ऊंची होगी जो प्रत्येक वस्तुओं के भावों को तेजी प्रदान करेगी। रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली के भाव में तेजी। किसी-किसी वस्तु के भाव में अच्छी तेजी आयेगी। रविवार को चन्द्रदर्शन होने से एवरेज में मंदी को बल मिलेगा। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। अनाज में आंशिक मंदी रहेगी। रुई, लालमिर्च, सुपारी, गोला, धनिया, सौंठ, सोंठ, मजीठ, हल्दी में मंदी रहेगी। सरसों, गुड़, चीनी, चावल, शक्कर, दालवाना, मूंग, मसूर, मटर, मोंठ, अरहर में तेजी। केशर, कस्तूरी, गोरोलोचन, छुहारा, मुनक्का, बादाम, काजू, किशमिश के भावों में तेजी चलेगी।

विशेष

आप अपने शहर, गांव, प्रांत आदि में चन्द्रमा का उदय काल स्वयं देखें और लाभ लें। उदित काल में यदि चन्द्रमा के दोनों शृंग उच्च हों तो नाविकों को पीड़ा, समुद्री, प्राकृतिक प्रकोप का योग बनता है। यदि शृंग आधा उठा हो तो किसानों को कष्ट, फसलों में प्राकृतिक प्रकोप से नुकसान। भ्रष्टाचारी, चोरी, आतंकी, लूटमार, बलात्कार जैसी घटनाओं में वृद्धि हो सकती है। यदि उदित समय दक्षिणी शृंग उच्च हो तो पंजाब, हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर में प्राकृतिक प्रकोप, सैन्य प्रदर्शन, आंदोलन व पुलिस व्यवस्था पर सवाल उठ सकता है। उदित समय यदि दोनों शृंग समान हों तो सुभिक्ष, वर्षाकारी योग व यदि इसके दोनों शृंग दण्ड के समान ऊंचे हों तो वर्षा का अभाव, किसानों को कष्ट। यदि चन्द्रमा के दोनों शृंग नीचे की ओर हों तो पशुओं को कष्ट, प्राकृतिक प्रकोप से फसल में भारी हानि, पशुचारे का नाश। यदि चन्द्रमा के चारों ओर गोलाकार रेखा हो तो शासन दल में परेशानी, राष्ट्रपति शासन का योग बनता है, यदि उत्तरी शृंग उच्च हो तो प्रजा को सुख, शांति प्रदान हो। यदि चन्द्रमा शृंग रहित हो तो किसी बड़े व्यक्ति की मृत्यु, यदि चन्द्रमा छोटा हो तो दुर्भिक्ष, मध्यम फल प्रदायक, यदि चन्द्रमा का आकार विशाल हो तो फसल उत्तम, प्रजा में सुख, सौहार्द, उत्तम पैदावार, नवीन योजनाओं का शुभ आरंभ हो। यदि चन्द्रमा के चारों ओर सफेद रंग की गोलाकार आकृति हो तो वर्षा कारक और यदि एक कुण्डल पास में और दूसरा कुण्डल और हो तो दूर-दूर तक वर्षा। नोट–चन्द्रदर्शन व शृंगों निमित्त फल 1 महीने के अंदर ही होता है।

आप अपने व्यापार में लाभ हेतु ग्रहों की चाल पर आधारित प्रत्येक वस्तु, जिन्स की अलग-अलग मासिक रिपोर्ट मंगाकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जिसका सेवा शुल्क मासिक 400/-, छः मास 2400/-, एक वर्ष 4500/- एवं डाक खर्च 50/-निर्धारित है। प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी की जानकारी मोबाईल नं. 09720686322 पर भी ले सकते हैं समय शाम 7 बजे से 10 बजे रात्रि तक। स्पेशल मासिक रिपोर्ट एक वस्तु 500/-, एक वर्ष 6000/- एवं 600/- डाक खर्च पृथक लगेगा। एक बार रिपोर्ट मंगाकर लाभ अवश्य लें।

लेखक–पं. अनिल कुमार व्यास, सुनील कुमार व्यास
राया (मथुरा), उ.प्र.

सन् 2020 ई. में ग्रहों का शेयर्स मार्केट पर प्रभाव

जनवरी–ता. 1 नववर्ष शुभ मंगलमय, उन्नति-प्रगति कारक हो! ता. 2 भावों में घटाबढ़ी। ता. 6 भावों में तेजी रहेगी। ता. 10 भावों में अधिक बिकवाली से मंदी। ता. 14 भाव में तेजी। रसायन पैट्रो, केमिकल्स, आयरन प्रमुख शेयर्स तेजी लें। ता. 17 अष्टमी तिथि क्षय से भावों में तेजी। ता. 24 शुक्रवारी अमावस्या सभी में तेजी प्रदान करेगी। ता. 25 भावों में स्थिरता को बल प्रदान करेगा। ता. 27 भावों में मंदी। ता. 29-30 भाव तेजी का मान करे। ता. 31 में भावों में मंदी को बल।

फरवरी–ता. 3 भाव तेजी लेकर शाम को गिरे। ता. 9 भावों में दोपहर में घटाबढ़ी के बाद मंदी का रुख। ता. 12 भावों में तेजी को बल। ता. 19 बुधास्त से भावों में मंदी का प्रभुत्व। शेयरों में दोपहर बाद परिवर्तन। ता. 20 भावों में उतार-चढ़ाव रहे। ता. 23 बाजार उठकर गिरे। रुख देखकर कार्य करें। ता. 26 भाव सर्पमुखी चाल में रहें। ता. 28 भावों में अच्छी तेजी का रुख। प्रमुख शेयरों में भी तेजी रहेगी। विशेष जानकारी हेतु मासिक रिपोर्ट मंगायें।

मार्च–ता. 3 बुध उदय से भाव उठकर गिरें। ता. 5 भावों में तेजी रहे। ता. 8 में मंदा का दौर। ता. 9 भाव दोपहर तक उठापटक में रहकर तेजी ले। ता. 12 को मंदी। ता. 13 भाव में तेजी। ता. 15 भावों में अधिक तेजी। रुख देखकर कार्य करें। ता. 18 भाव मंदी का झटका ले। ता. 21 प्रमुख शेयरों में उछाल। ता. 23 घटाबढ़ी में भाव गिरे। ता. 25 मंदी में सुधार ले। ता. 30 चलती लाईन में सुधार। रुख देखकर कार्य करें।

अप्रैल–ता. 1 भावों में सुधार। ता. 6 आयरन, मेडिसिन, दवा के शेयरों में मंदी। ता. 9 प्रमुख शेयरों में उछाल। ता. 13 बुध अस्त से भावों में तेजी। प्रमुख शेयरों में तेजी को बल। ता. 13 चलती लाईन परिवर्तन करे। ता. 20 भावों में उछाल। ता. 21 मंदी में रहें। ता. 23 अक्षय तृतीया प्रमुख शेयरों में उछाल। ता. 27 भावों में गिरावट, दोपहर बाद तेजी। ता. 30 भाव में तेजी, दोपहर में घटाबढ़ी रहे।

मई–ता. 1 बाजार में बिकवाली से भाव में गिरावट। ता. 6 ऑटोमोबाईल, सिमेन्ट, रियल एस्टेट, साफ्टवेयर में तेजी। ता. 4 शनि अमावस्या आयरन शेयर्स में मंदी। ता. 12 भाव में उतार-चढ़ाव रहेगा। ता. 20 भाव में घटाबढ़ी से स्थिर। ता. 24 भावों में मंदी। ता. 27 भाव घटाबढ़ी में प्रमुख शेयरों में दबाव से चाल बदलेगी। ता. 30 भावों में उतार-चढ़ाव रहेगा। विशेष जानकारी हेतु मासिक रिपोर्ट मंगायें।

जून–ता. 1 भाव मंदी में खुलकर तेजी ले। ता. 5 भाव में तेजी। ता. 10 से 15 तक प्रमुख शेयरों में उतार-चढ़ाव में तेजी को बल। ता. 16 से 20 तक आयरन, सिमेन्ट वित्तीय शेयर्स, फार्मा, दवा, रसायन वित्तीय शेयरों में तेजी। ता. 21 से 23 भाव मंदी में रहें। ता. 24 से 25 भावों में तेजी। ता. 27 से 28 भावों में अस्थिरता। ता. 30 मंदी में खुलकर तेजी को बल।

जुलाई–ता. 1 को अमावस्या भाव गिरकर संभले। ता. 4 चन्द्रदर्शन प्रमुख शेयरों में उछाल। ता. 10 भाव उतार-चढ़ाव में मंदी ले। ता. 14 भावों में सुधार। ता. 17 भावों में सुधार, दोपहर बाद परिवर्तन। ता. 19 भावों में सुधार परन्तु घटाबढ़ी में रहे। ता. 20 में गिरावट। ता. 24 में तेजी। ता. 26 में भावों में अस्थिरता। रुख देखकर कार्य करें।

अगस्त–ता. 1 भाव खुलकर तेजी ले। ता. 5 में मंदी में सुधार ले। ता. 8 भावों में अच्छी तेजी का उछाल। रुख देखकर कार्य करें। ता. 15 भावों में घटाबढ़ी रहे। ता. 20 में प्रमुख शेयरों में तेजी। ता. 26 में भावों में अचानक चलती लाईन में परिवर्तन। संभलकर कार्य करें। ता. 27 भाव गिरकर सुधार करें। ता. 29 भावों में सुधार रहे।

सितम्बर–ता. 2 भावों में तेजी को बल। ता. 6 भावों में सुधार। ता. 11 भावों में मंदी का झटका। ता. 14 पूर्णिमा भावों में तेजी। ता. 17 भावों में गिरावट। ता. 20 तेजी, प्रमुख शेयरों में दोपहर बाद तेजी का झटका। ता. 22 सभी शेयरों में अचानक मंदी। ता. 24 मंदी। ता. 28 अमावस्या शेयरों में मंदी रहे। ता. 30 भावों में उतार-चढ़ाव रहेगा।

अक्टूबर–ता. 1 भाव मंदी में खुलकर तेजी ले। ता. 4 मंदी का अस्थाई झटका लगेगा। संभलकर कार्य करें। ता. 10 भावों में घटाबढ़ी में तेजी। ता. 15 भावों में मंदी, प्रमुख शेयरों में मंदी। ता. 18 भाव स्थिर रहें। ता. 20 भावों में तेजी। ता. 22 में मंदी। ता. 27 में भावों में उछाल परन्तु मंदी में बन्द। ता. 31 में भावों में तेजी रहेगी।

नवम्बर–ता. 1 भावों में मंदी का योग। ता. 5 भावों में गिरावट के बाद शाम को सुधार। ता. 10 भावों में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 15 भावों में तेजी। ता. 20 भावों में घटाबढ़ी, प्रमुख शेयरों में बदलाव से अस्थिरता। ता. 22 तिथि क्षय प्रमुख शेयरों में तेजी रहेगी। ता. 17 पुनर्वसु से भाव घटाबढ़ी में रहें। ता. 26 अमावस्या से भावों में सुधार, परन्तु मंदी को बल। ता. 30 भावों में उतार-चढ़ाव रहे।

दिसम्बर–ता. 2 भावों में घटाबढ़ी से तेजी को बल। ता. 5 भावों में उतार-चढ़ाव। ता. 10 भावों में घटाबढ़ी से मंदी को बल। प्रमुख शेयरों में गिरावट। ता. 16 धनु संक्रांति से प्रमुख शेयरों में मंदी को बल। ता. 20 भावों में घटाबढ़ी से तेजी को बल। ता. 22 भावों में नरमी रहेगी। ता. 30 भावों में घटाबढ़ी से गिरकर तेजी। रुख देखकर कार्य करें।

शेयर्स बाजार में तेजी के अचूक चांस

विशेष–विशेष तेजी योग–1. जिस दिन ऐन्द्र, व्यातिपात व वैधृति योग होता है उस दिन तेजी अवश्य होती है। 2. मेष, वृश्चिक, मकर, संक्रांति 15 मुहूर्ती हो तो तेजी। 3. यदि चन्द्रदर्शन को तेजी हो तो पूर्णिमा तक तेजी। 4. बुध वक्री हो तो तेजी। ये एक अचूक चांस हैं।

विशेष नोट–शेयर बाजार की यह जानकारी पूर्णत: ग्रहों की चाल के आधार पर है। जो 90% से 98% तक सत्य होती है। परन्तु शेयर बाजार में कुछ ऐसे अन्य ग्रह भी हैं जिनका असर इस मार्केट पर होता है। राजनीति परिवर्तन व अस्थिरता, मौसम के परिवर्तन का प्रभाव ज्योतिष गणना से अधिक होता है। एक विशेष ग्रह शेयर ब्रोकर (सटोरिया, शेयर दलाल) जो हर समय इस बाजार पर प्रभाव रखता है। अत: आप सभी पर दृष्टि रखें। व्यापार में लाभ के लिए वर्ष 2020 का भविष्यफल 551/- एक वर्ष के लिए 5100/-रुपये, स्पेशल रिपोर्ट एक माह 500/-रु.+ डाक खर्च 50/-रु. पृथक। मासिक रिपोर्ट एक मास 400/-रु.+ डाक खर्च पृथक लगेगा। रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें व सम्पर्क करें–09719822007, 09720686322। सेवा दोपहर 1.00 से 3.00 बजे तक, शाम 7.00 से 9.00 बजे तक।

लेखक–पं. अनिल कुमार व्यास, सुनील कुमार व्यास
(ज्योतिष विशेषज्ञ)
निर्देशक–डॉ. वसंत लाल व्यास (ज्योतिष सम्राट)
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ (रजि.),
राया (मथुरा), उ.प्र.

प्रमुख जिंस-धातुओं की दशा-दिशा-धारणा सन् 2020-21 ई.

लेखक- पं. टुनटुन शास्त्री

जनवरी–यह मास बुधवार पौष शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र व्यतिपात नाम योग, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। प्रारंभ में पंचक जारी रहेगा। मास के प्रारंभ में राहु मिथुन में, सूर्य-बुध-गुरु-शनि-केतु धनु में, शुक्र मकर में तथा मंगल वृश्चिक राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ से ता. 7 तक लहसुन, प्याज, सोंठ, दालचीनी, लौंग, ईलायची, धनियां, जीरा, हल्दी, गुड़, खांड, चीनी, चाय, कॉफी, रुई, कपास, कॉटन एवं मेवा में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 8 को शुक्र कुंभ राशि में प्रवेश करने से अचानक सिल्वर, जिंक, काजू, मखाना, पोस्ता, रुई, कपास, कॉटन, गुड़, खाण्ड, चीनी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है ता. 12 तक। ता. 13 को बुध मकर राशि में प्रवेश करने से तथा 14 को यह सूर्य के साथ युति होने से ता. 23 तक दूध पाउडर, घृत, डिब्बा बंद तेल-तेलवाना, अन्य तेल-तेलवाना, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, कॉटन, सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, ईमली में कुछ स्थिरता जबकि पाट-पटसन, बारदाना तथा कुछ अनाजों में मंदी की धारणा बन सकती है। किराने की प्रमुख जिन्सों में विशेषकर हल्दी, जीरा, धनियां, अजवायन, लौंग, ईलायची, कालीमिर्च, दालचीनी, केशर, सुपारी, हींग, गुग्गल में घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 24 को शनि मकर राशि में प्रवेश कर सूर्य-बुध के साथ प्रतियुति से अचानक सोना, चांदी, कॉपर, रुई, कपास, कॉटन, गेहूं, जौ, चना, तुअर, कुछ तेल-तेलवाना में तेजी बन सकती है। चतुष्पदों, पशुचारा में भी तेजी। ता. 30 को बुध कुंभ राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति होने से सिल्वर, रुई, कपास, कॉटन में घटबढ़ तथा घृत, तेलवाना, रसकस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, गमग्वार, मैंथोल, केशर में घटबढ़ पूर्ण सुधार हो सकती है। फिर भी बाजार की दशा-दिशा-धारणा देखकर ही काम करें।

फरवरी–यह मास शनिवार, माघ शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, अश्विनी नक्षत्र, शुभनाम योग, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मंगल वृश्चिक में, गुरु-केतु धनु में, सूर्य-बुध-शनि मकर में, बुध-शुक्र कुंभ में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 2 को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 6 तक अनाज, सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना, गुड़, खाण्ड में मदी तथा रुई, कपास, कॉटन, काजू, पोस्ता, मखाना, चावल, चीनी, सिल्वर में घटबढ़ पूर्ण सुधार संभावित है। जबकि किराना जिन्सों के साथ-साथ ग्वार, दलहन एवं सोना, कॉपर में खामोशी अथवा एक दायरें में घुमता-फिरता रह सकता है। ता. 7 को मंगल धनु में प्रवेश कर गुरु-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे गमग्वार, लालमिर्च, ईमली, सुपारी, गुड़, खाण्ड, किशमिश, छुआरा, रसकस पदार्थ, सोना, चांदी, फर्नीचर, पाट-पटसन, बारदाना, सरसों, सोयाबीन, दूध पाउडर, घृत, गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा में तेजी की धारणा बन सकती है। किराने की कुछ जिन्सों में भी तेजी संभावित है। ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश कर बुध के साथ युति होने से दूध पाउडर, घृत, काजू, पोस्ता, मखाना, तेल, लवण, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली आदि तेल-तेलवाना में तेजी तथा रुई, पाट, पटसन, अरण्ड, मैंथोल, दाल-दलहन तथा कुछ अनाज के साथ-साथ गुड़, शक्कर, चाय, किशमिश, छुआरा में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 17 को बुध वक्री होने से घृत, गुड़, खांड, चीनी, चाय, कॉफी में सुधार। जबकि गेहूं, जौ, चना, तुअर, गमग्वार, लालमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, लौंग, ईलायची, कालीमिर्च में कुछ अस्थिरता संभावित है। धातुओं में भी अस्थिरता संभावित है। ता. 28 को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने से मासान्त तक गेहूं, जौ, चना, तुअर, घृत में तेजी। जबकि सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं में विशेष तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। गुड़, खांड, पाट, पटसन, हल्दी, जीरा, धनियां, आमचूर, ग्वार में घटबढ़, तेल-तेलवाना में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है।

मार्च–यह मास रविवार, फाल्गुन शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, भरणी नक्षत्र, ऐन्द्र नाम योग, वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मंगल-गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, सूर्य-बुध कुंभ में, शुक्र मेष में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में बुध उदित अवस्था में चलने से सर्व अनाज, दूध, घृत में सुधार। रुई, कपास, कॉटन में घटाबढ़ी। सोना, कॉपर, ग्वार में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 10 को उदित अवस्था में बुध मार्गी हो जाने से रुई, कपास, कॉटन, सिल्वर में अस्थिर सुधार। गेहूं, जौ, चना, तुअर, ज्वार, बाजरा में सुधार। ऊनी-रेशमी वस्त्र, अलसी, अरण्ड, मैंथोल, गुड़, खाण्ड, चन्दन तथा सुगन्धित पदार्थों में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी में भी कुछ सुधार संभावित है। ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 21 तक कुछ तेल-तेलवाना, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, लौंग, ईलायची में सुधार तथा प्रत्येक जाति के अनाजों में घटबढ़ जबकि सिल्वर में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 22 को मंगल मकर राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति होने से रुई, कपास, कॉटन, गुड़, खाण्ड, चीनी, चाय, कॉफी, किशमिश, छुआरा, घृत, तेल-तेलवाना, ऊनी-रेशमी वस्त्रों में सुधार जबकि अनाजों में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च में तेजी की लम्बी लाईन भी बन सकती है। अतः मंगल के प्रवेश के पहले ही तेजी का सौदा अल्पकालीन निवेश के ख्याल से लाभकारी हो सकता है। ता. 28 को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, कॉटन, पोस्ता, मखाना, काजू, चावल, चीनी, दूध पाउडर, घृत में सामान्य से भारी मंदी की धारणा बन सकती है। जबकि सोना, चांदी आदि धातुओं में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 29 को गुरु मकर में प्रवेश कर मंगल-शनि के साथ प्रतियुति होने से मासान्त तक रुई, कपास, कॉटन में घटबढ़ जारी रहेगी। गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोंठ, उड़द आदि में एकाएक तेजी आने से संग्रह कर्ताओं को लाभ मिल सकता है। कपूर, चन्दन, केशर तथा तेल-तेलवाना, सोना, चांदी, कॉपर में तेजी बन सकती है।

अप्रैल–यह मास बुधवार चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, शोभन नाम योग, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य मीन राशि में, शुक्र वृष राशि में, मंगल-गुरु-शनि मकर राशि में तथा बुध कुंभ राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ से ता. 6 तक सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, लौंग, ईलायची, दालचीनी, ईमली, आमचूर में सुधार जारी रह सकता है। ता. 7 को बुध सूर्य के साथ युति होने से ता. 12 तक गुड़, खाण्ड, चीनी, रुई, कपास, कॉटन में कुछ मंदी जबकि सोना, चांदी, गमग्वार तथा किराना जिन्सों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 13 को सूर्य अपनी उच्च राशि मेष में प्रवेश करने से मैंथोल, अरण्डी, अलसी, सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना, सोना, चांदी, कॉपर, ईस्पात, मजीठ, मिर्च, नारीयल, सुपारी, हींग, कॉटन, वस्त्र, मेंथी, गमग्वार, लौंग, ईलायची तथा अनाजों में तेजी की धारणा बन सकती है। इसमें जो भी धारणा बनेगी, तेजी लाईन की धारणा बनेगी। ता. 24 को बुध-सूर्य की युति होने से ता. 30 तक महुआ, गमग्वार, ईमली, मेंथी, किशमिश, छुआरा, गेहूं, ज्वार, बाजरा, मसूर, उड़द, तुअर, चना, मूंग, मोंठ में तेजी जबकि दूध पाउडर, घृत, गुड़, खाण्ड, सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना में मंदी तथा सोना, कॉपर में घटबढ़। जबकि सिल्वर में व्यापक मंदी की धारणा बन सकती है।

मई–यह मास शुक्रवार, वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, गण्डनाम योग, सिंह राशि में प्रारंभ हो रहा है।

मासारंभ में सूर्य-बुध मेष में, शुक्र वृष में, मंगल-गुरु-शनि मकर में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, हल्दी, दालचीनी, जावित्री, किशमिश, छुआरा, अखरोट, बादाम, चिरौंजी, चाय, कॉफी एवं मकान मेंटेरियल में कुछ सुधार जारी रहेगा। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, कॉटन, सिल्वर, निकिल, काजू, मखाना, साबुदाना, घृत, दूध पाउडर, पोस्ता में घटाबढ़ी। गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोंठ, उड़द, मसूर, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों के साथ गुड़, खांड, किशमिश, छुआरा, सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, ईमली, मजीठ, लालमिर्च में सुधार संभावित है। ता. 9 को बुध शुक्र के साथ युति होने से रुई, कपास, कॉटन में घटबढ़ जारी रहेगी। जबकि गेहू, जौ, तुअर, मूंग, मोंठ, चावल, मटर, अफीम, भांग, सरसों, सोयाबीन, मैंथोल, अरण्डी, अन्य तेल-तेलवाना कुछ तेज हो सकते हैं। जबकि सर्राफा बाजार में खामोशी का वातावरण बना रह सकता है। ता. 11 को शनि वक्री होने से अचानक चलते रुखों में परिवर्तन से बाजार में नकारात्मक स्थितियां तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है। ता. 13 को शुक्र भी वक्री होने से रुई, सिल्वर, गुड़, खाण्ड में तेजी बन सकती है। ता. 14 को सूर्य वृष राशि में प्रवेश कर बुध-शुक्र के साथ प्रतियुति से ता. 23 तक सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, निकिल, इस्पात, सरिया, सिमेन्ट, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, चाय, कॉफी, रुई, कपास, कॉटन, बादाम, अखरोट, खोपरा, सुपारी तथा कुछ तेल-तेलवाना में तेजी। जबकि गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोंठ, उड़द, चावल में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। किराना जिन्सों में भी अस्थिरता। ता. 24 को बुध मिथुन राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति होने से मासान्त तक सोना, चांदी, कॉपर, रुई, कपास, कॉटन में मंदी। जबकि कुछ तेज-तेलवाना एवं किराना जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी।

जून–यह मास सोमवार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी तिथि, हस्त नक्षत्र सिद्धि नाम योग, कन्या राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-शुक्र वृष में, बुध-राहु मिथुन में, गुरु-शनि मकर में तथा मंगल कुंभ राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में हल्दी, जीरा, धनियां, सौंफ, दालचीनी, जावित्री, लौंग, ईलायची, गमग्वार, ईमली, आमचूर, बादाम, अखरोट तथा कुछ तेल-तेलवाना में अफवाहों पर आधारित अस्थिरता संभावित है। सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं में भी खामोशी की स्थिति बनी रह सकती है। ता. 14 को सूर्य-बुध राहु के साथ प्रतियुति से पाट, पटसन, बारदाना, ऊनी-रेशमी वस्त्र, रुई, कपास, सरसों, सोयाबीन, इस्पात, गुड़, खाण्ड, चीनी, घृत, मूंग, मोंठ, उड़द, तुअर, गेहू, जौ, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाजों में तेजी बन सकती है। सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, हल्दी, धनियां, जीरा में भी तेजी बन सकती है। ता. 18 को बुध वक्री होने से और इसी तारीख को मंगल मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 24 तक सोना, कॉपर, फर्नीचर से निर्मित वस्तुओं के साथ-साथ लालमिर्च, कालीमिर्च, गमग्वार, किशमिश, छुआरा, बादाम, अखरोट में तेजी बन सकती है। जबकि सिल्वर में घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 25 को शुक्र मार्गी होने से कुछ जिन्स धातुओं के रुखों में परिवर्तन भी हो सकता है। ता. 29 को गुरु उत्तराषाढ़ा नक्षत्र धनु राशि में प्रवेश कर केतु के साथ युति होने से मासान्त तक रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, शक्कर का उत्पादन ज्यादा होने से इसमें मंदी का संचार हो सकता है। सोना, चांदी, कॉपर में मंदी ।

जुलाई–यह मास बुधवार आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि, विशाखा नक्षत्र, सिद्धनाम योग, वृश्चिक राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-राहु मिथुन राशि में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र वृष राशि में भ्रमणशील रहेंगे। जिससे मासारंभ में रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन, बारदाना, गुड़, खांड, चीनी में व्यापक मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां में भी अस्थिरता संभावित है। ता. 12 को बुध उदित अवस्था में मार्गी हो जाने से रुई, कपास, कॉटन, सिल्वर में घटबढ़ पूर्ण सुधार संभावित है। जबकि गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोंठ में कुछ तेजी बन सकती है। जबकि रेशमी-ऊनी वस्त्र, कुछ तेल-तेलवाना, अरण्डी, मैंथोल, पामोलिन, गुड़, खाण्ड, चन्दन तथा सुगन्धित पदार्थों में मंदी बन सकती है। सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां में कुछ तेजी बन सकती है। ता. 16 को सूर्य जलीय राशि कर्क में प्रवेश करने से मासान्त तक रुई, कपास, कॉटन, बादाम, अखरोट, चिरौंजी, मुनक्का, छुआरा, काजू, पोस्ता, सुपारी, खोपरा, गुड़, खांड, चीनी, चाय, कॉफी, कुछ तेल-तेलवाना, सोना, चांदी आदि धातुओं में सुधार। जबकि अनाजों में मंदी की धारणा बन सकती है।

अगस्त–यह मास शनिवार श्रावण शुक्ल पक्ष त्रयोदशी तिथि, मूल नक्षत्र, धनु राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य कर्क में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में, बुध-शुक्र-राहु मिथुन राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 1 को शुक्र मिथुन में प्रवेश कर बुध-राहु के साथ प्रतियुति के बाद बुध कर्क राशि में प्रवेशकर सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे रुई, कपास, कॉटन, तेल-तेलवाना, दालवाना, गमग्वार में कुछ मंदी का संचार हो सकता है। जबकि धातुओं में घटबढ़ से धारणा मंदी की ओर रहेगी। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश, मंगल मेष राशि में प्रवेश तथा ता. 17 को बुध सूर्य की युति से सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। रुई, गुड़, खाण्ड, तेल-तेलवाना, गमग्वार, लालमिर्च, मजीठ तेज हों। किराना की अन्य जिन्सों में भी सुधार संभावित है। ता. 31 को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करने से अलसी, सरसों, घृत, गुड़, खाण्ड में तेजी तथा सिल्वर, गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोंठ, उड़द, हल्दी, जीरा, धनियां, लौंग, ईलायची में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है।

सितंबर–यह मास मंगलवार भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी, धनिष्ठा नक्षत्र, अतिगंड नाम योग, कुंभ राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-बुध सिंह में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मेष में, शुक्र कर्क राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 2 को बुध कन्या राशि में प्रवेश से रुई, सिल्वर, काजू, पोस्ता, मखाना, दूध पाउडर, घृत में मंदी। जबकि गेहूं, जौ, चना, तुअर, गुड़, खांड, हल्दी, जीरा, धनियां में कुछ सुधार संभावित है। ता. 10 को मंगल वक्री होने से सोना, कॉपर, चांदी, किशमिश, छुआरा, गमग्वार, लालमिर्च में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 13 को गुरु मार्गी होने से 3 दिन के अंदर रुई, कपास में मंदी होकर तेजी बन सकती है। सिल्वर में मंदी। चावल, अलसी, सरसों, सोयाबीन, गुड़, खाण्ड, सोना, कॉपर, ग्वार, लालमिर्च कुछ तेज हो सकते हैं। ता. 16 को सूर्य-बुध की युति से रुई, कपाय, खोपरा, सुपारी, तेल-तेलवाना, लालमिर्च, मजीठ, लौंग, मेंथी, गमग्वार तेज हो सकते हैं। सोना में अस्थिर सुधार जबकि सिल्वर में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 22 को बुध तुला में प्रवेश से रुई, कपास, कॉटन, गुड़, खांड, चीनी, सोना, अफीम, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, लौंग, ईलायची, मेंथी तथा अफीम में तेजी बन सकती है। सिल्वर, निकिल, सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना, मेंथोल, अरण्डी में मंदी। ता. 27 को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करने से सोना, कॉपर, ग्वार, लालमिर्च, मेंथी में विशेष तेजी। जबकि गेहूं, जौ, चना, मजीठ, घृत में सामान्य तेजी। सिल्वर में कुछ अस्थिरता संभावित है। हल्दी, जीरा, धनियां में घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 29 को शनि मार्गी होने से अचानक रुई में घटबढ़ तथा दो मास के अंदर समस्त तेल-तेलवाना, हींग, मिर्च, लहसुन, प्याज, अदरख, हल्दी तेज हो सकते हैं।

अक्टूबर–यह मास गुरुवार प्रथम आश्विन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा तिथि, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र, वृद्धि नाम योग, मीन राशि तथा पंचक प्रारंभ में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य कन्या में, बुध तुला में, गुरु धनु में, शनि मकर में, मंगल मेष में तथा शुक्र सिंह राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में सोना, कॉपर, सिल्वर, जिंक, निकिल में सुधार के साथ हल्दी, जीरा, धनियां, ईमली, ग्वार, डिब्बा बंद तेलों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 4 को

मंगल मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 13 तक सोना, कॉपर, पीतल, रुई, फर्नीचर में तेजी। सिल्वर में घटाबढ़ी। गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, उड़द, तुअर, चना में अस्थिर सुधार संभवित है। ता. 14 को बुध वक्री से अचानक चलते रुखों में परिवर्तन हो सकते हैं। दूध, घृत, गुड़, खांड, चीनी में कुछ तेजी बन सकती है। जबकि सर्व अनाजों में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता.17 को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। जिससे ता. 22 तक सोना, कॉपर में सामान्य तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। गेहूं, जौ, चना, तुअर, रक्त चन्दन, मजीठ, सुपारी, लालमिर्च, लौंग, मेंथी, गमग्वार में भी सुधार जबकि रुई, सिल्वर, काजू, पोस्ता, मखाना में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 23 को शुक्र कन्या राशि में प्रवेश करने से मासान्त तक काजू, पोस्ता, मखाना, चावल, चीनी, घृत, दूध पाउडर, सिल्वर में घटबढ़। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा, ऊनी वस्त्रों में सुधार संभावित है।

नवंबर—यह मास रविवार कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रतिपदा तिथि, भरणी नक्षत्र, व्याघात नाम योग, वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-बुध तुला में, गुरु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र कन्या राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में धातुओं में तेजी तथा किराना जिन्सों के साथ-साथ अनाजों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 4 को बुध उदित अवस्था में मार्गी होने से रुई, कपास, सिल्वर में घटबढ़। गेहूं, जौ, चना, तुअर आदि अनाजों में तेजी। गमग्वार, लालमिर्च, सोना में भी तेजी। जबकि तेल-तेलवाना, गुड़, खाण्ड तथा सुगन्धित जिन्सों में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 14 मंगल मार्गी होने से सिल्वर में तेजी। रुई, कपास, कॉटन में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 16 को सूर्य वृश्चिक में तथा शुक्र तुला में प्रवेश करने से सोना, चांदी, कॉपर, रुई, कपास, ऊनी वस्त्रों में तेजी तथा रक्त वर्ण की जिन्सों में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 20 को गुरु उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में प्रवेश करने से ता. 27 तक सोना, चांदी, कॉपर, कुछ तेल-तेलवाना तेज हो सकते हैं। ता. 28 को बुध-सूर्य केतु के साथ प्रतियुति से दूध, घृत, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, सूर्यमुखी आदि तेल-तेलवाना, रुई, सिल्वर, पोस्ता, मखाना, काजू, साबुदाना, ईसबगोल, चावल, चीनी, ऊनी-रेशमी वस्त्र तेज हो सकते हैं। जबकि सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, ईमली, आमचूर आदि में घटबढ़ जारी रह सकती है। अफीम, भांग, अन्य मादक पेय पदार्थों, महुआ में कुछ स्थिरता संभावित है।

दिसम्बर—यह मास मंगलवार मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा तिथि, रोहिणी नक्षत्र, सिद्ध नाम योग, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-बुध-केतु की प्रतियुति वृश्चिक में, गुरु-शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र स्वयं राशि तुला में भ्रमणशील रहेंगे। फलतः मासारंभ से ता. 9 तक सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, निकिल, कॉटन, चावल, गेहूं, जौ, चना, तुअर, उड़द, सरसों, सोयाबीन, अरण्ड, पामोलिन, मैंथोल, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड, किशमिश, छुआरा में अस्थिर सुधार। जबकि रुई, कपास, हल्दी, जीरा, धनियां, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 10 को शुक्र-सूर्य-बुध केतु के साथ चतुर्थ ग्रहीय योग बनाने से रुई, कपास, कॉटन, सिल्वर, अफीम, भांग में घटबढ़ पूर्ण सुधार। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा, मंडुआ, चना, तुअर आदि अनाजों में सुधार। जबकि कुछ तेल-तेलवाना एवं गुड़ में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 15 को सूर्य मूल नक्षत्र धनु में प्रवेश करने से रुई, कपास, कॉटन, तेल-तेलहन, डिब्बा बंद तेल, सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, हल्दी, जीरा, धनियां, लहसुन, प्याज, अदरख, ईलायची, लालमिर्च, कालीमिर्च में सुधार। जबकि अनाजों में कुछ मंदी बनी रह सकती है। ता. 17 को बुध सूर्य की युति से ऊनी-रेशमी वस्त्र, पाट, पटसन, बारदाना, हैशियन, रुई, कपास, सिल्वर, पोस्ता, काजू, मखाना, साबुदाना में कुछ मंदी बन सकती है। ता. 23 को मंगल मेष राशि में प्रवेश करने से प्रत्येक जाति के अनाजों में मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, चांदी आदि धातुएं, हीरा, जवाहरात, ऊन, रुई, कपास, पाट, पटसन, बारदाना, गुड़, किशमिश, छुआरा में तेजी की धारणा बन सकती है। यह धारणा मासान्त तक बनी रह सकती है।

जनवरी 2021—यह मास शुक्रवार पौष कृष्ण पक्ष द्वितीया तिथि, पुष्य नक्षत्र, वैधृति नाम योग, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में अनाजों में मंदी की धारणा बन सकती है। जबकि किराना जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 3 को शुक्र मूल नक्षत्र, धनु राशि में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति होने से गेहूं, जौ, चना, तुअर, उड़द, मटर, मसूर, ज्वार, बाजरा तथा सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुएं और वस्त्रों में तेजी बन सकती है। जबकि रुई, कपास, कॉटन, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, हल्दी में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 4 को बुध मकर राशि में प्रवेश कर गुरु-शनि के साथ प्रतियुति होने से सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं, रुई, कपास, कॉटन, गुड़, खाण्ड, घृत, कुछ तेल-तेलवाना तथा किराना जिन्सों में तेजी व अनाजों में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 14 को सूर्य चतुर्थग्रहीय योग बनाने से दूध, घृत, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, रुई में सुधार। अनाज एवं किराना जिन्सों में कुछ अस्थिरता बन सकती है। ता. 25 को बुध कुंभ राशि में प्रवेश से रुई, सिल्वर में मंदी होकर सुधार। घृत, तेल-तेलवाना, गुड़, खाण्ड में तेजी बन सकती है। ता. 27 को शुक्र-सूर्य-गुरु-शनि के साथ युति होने से मासांत तक गुड़, खांड, दूध, घृत, भांग, अफीम तथा गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोठ, हल्दी, जीरा, धनियां, गमग्वार तेज हो सकते हैं। रुई, सिल्वर में घटबढ़ जबकि सोना में कुछ स्थिरता बन सकती है।

फरवरी—यह मास सोमवार माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थ तिथि, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-गुरु-शुक्र-शनि मकर राशि में, बुध कुंभ में, मंगल मेष में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में सोना, चांदी, कॉपर, ईस्पात, सरिया, ऐंगल, सिमेन्ट, कालीमिर्च, लहसुन, अदरख, गमग्वार, ऊनी-रेशमी वस्त्र, दालचीनी, जावित्री, केशर, गुग्गल, चन्दन एवं सुगन्धित सामग्री में कुछ स्थिरता। ता. 4 को बुध धनिष्ठा नक्षत्र, मकर राशि में प्रवेश कर बुध-सूर्य-गुरु-शुक्र-शनि के साथ प्रतियुति होने से सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, निकिल, ईस्पात, सरिया, ऐंगल, सिमेन्ट, अन्य मकान निर्माण सामग्री, रुई, कपास, कॉटन तेज हो सकते हैं। जबकि किराना जिन्सों के साथ-साथ अनाज के भाव अस्थिर हो सकते हैं। ता. 12 को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रवेश करने से दूध, घृत, तेल-तेलवाना, लवण में सुधार। रुई, कपास, पाट, पटसन, बारदाना, हैशियन, अरण्ड, पामोलीन, मैंथोल, गेहूं, जौ, चना, तुअर, उड़द, मूंग, मोंठ, मडुआ, ज्वार, बाजरा, गमग्वार, ईमली, आमचूर, लालमिर्च, गुड़, खांड, चाय, कॉफी में कुछ मंदी की धारणा। ता. 20 को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रवेश से तथा शुक्र-सूर्य की युति से रुई, सिल्वर, पोस्ता, मखाना, साबुदाना, काजू, गुड़, खांड, चीनी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा तथा श्वेत जिन्स धातुओं में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 21 को मंगल कृतिका नक्षत्र, वृष राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति से लालवर्ण की जिन्स धातुओं, सर्व प्राकर के अनाज, रुई, कपास, कॉटन, कुसुम्भा, केशर, डिब्बा बंद तेल, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, निकिल आदि धातुओं में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां भी तेज हो सकते हैं।

मार्च—यह माह सोमवार फाल्गुन कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, शूलनाम योग, कन्या राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-शुक्र कुंभ राशि में, मंगल-राहु वृष में, बुध-गुरु-शनि मकर में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में ता. 7 तक सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, लौंग, मेंथी, ईमली, मजीठ, किशमिश, छुआरा, हल्दी, जीरा, धनियां में सुधार। ता. 8 से 10 तक रुई, कपास, कॉटन, पाट-पटसन, बारदाना, हैशियन, पोस्ता, मखाना, काजू, अखरोट, बादाम, चिरोंजी में सुधार। जबकि किराना जिन्सों के साथ-साथ अनाजों में कुछ अस्थिरता। ता. 11

को बुध धनिष्ठा नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे सिल्वर, जिंक, लैड, निकिल, ईस्पात, रुई, कपास, कॉटन में अस्थिर सुधार। घृत, तेल-तेलवाना, रसकस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, चीनी, चाय, कॉफी में कुछ सुधार। किराना जिन्सों के साथ-साथ अनाजों में समभाव। ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश से तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, चीनी, चाय, कॉफी, रुई, कपास, कॉटन, सोना, कॉपर, हल्दी, जीरा, धनियां, लौंग, ईलायची, जायफल, दालचीनी, केशर में सुधार। अनाजों में घटबढ़ तथा सिल्वर, निकिल, ईस्पात में अस्थिरता। ता. 16 को शुक्र सूर्य के साथ युति होने से अनाज, सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, चीनी, चाय, कॉफी में कुछ मंदी की धारणा। रुई में सुधार। सोना, कॉपर में घटबढ़ जबकि सिल्वर में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 31 को बुध-सूर्य-शुक्र के साथ प्रतियुति होने से रुई, कपास, कॉटन, गुड़, खांड, चीनी में कुछ मंदी। सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, ईमली, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनिया में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी आकर फिर बाद में उतनी ही मंदी बन सकती है। दूध पाउडर, घृत, केशर, अफीम, भांग, अन्य मादक पेय पदार्थों में कुछ स्थिरता संभावित है।

यदि आप चाहें तो प्रत्येक जिन्स धातुओं की तेजी-मंदी विस्तार से लिखित रिपोर्ट हमारे यहां से प्राप्त कर सकते हैं। जिसका सेवा शुल्क वार्षिक होते हैं। 2, 4, 6 माह की रिपोर्ट नहीं भेजी जाती। साधारण सेवा शुल्क 12 माह-20500/-, मध्यम-25500/-, स्पेशल 30500/-, सर्वोत्कृष्ट-35500/- रुपये निर्धारित है। रियायत दर कमोडिटी ट्रेडिंग व्यापार भविष्य उत्कृष्ट रिपोर्ट तथा शेयर्स बाजार दैनिक सर्व उत्कृष्ट रिपोर्ट संयुक्त रूप से 55500/- रुपये में प्राप्त की जा सकती है। लिखित रिपोर्ट सोना, चांदी, कॉपर, क्रूड आयल, तेल-तेलवाना, दालवाना, रुई, कपास, कॉटन, गमग्वार, किराना जिन्सों, गुड़, खांड आदि रिपोर्ट उपलब्ध है। जन्म पत्रिका, लैटर पैड पर 5100/- रुपये। जन्म पत्रिका निर्माण साधारण 5500/-रुपये, मध्यम 10500/-रुपये, स्पेशल 15500/-रुपये, सर्वोत्कृष्ट 21500/-रुपये निर्धारित है। किसी भी तेजी-मंदी की जानकारी के लिए सेम्पल या ट्रायल की अपेक्षा न करें। किसी भी जिन्स धातुओं में निवेश स्वयं विवेक से भी करें।

लेखक-आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरांव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)

शेयर्स बाजार समीक्षा सन् 2020-21 ई.

लेखक-
पं. टुनटुन शास्त्री

शेयर बाजार किसी राष्ट्र की आर्थिक हालात, दशा-दिशा-धारणा का संकेत है। तथा यह अर्थ व्यवस्था का आईना भी माना जाता है। ऐसे तो इस संवेदनशील बाजार में कब क्या हो जाय? यह संभावनाएं भविष्य के गर्भ में ही छुपी रहती हैं। फिर भी इस बाजार से संबंधित कुछ बातें विवेचित कर रहा हूं। गत् दिनों भारतीय रुपया मजबूत होकर 69 रु. प्रति डॉलर के स्तर पर आ गया है। विदेशी सस्थागत व प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का भारत के सौन्दर्य में आकर्षण बढ़ा है। अधिकांश अर्थशास्त्रियों व संबंधित जानकारों का भी अनुमान है कि स्थिर व गतिशील लोकतंत्र के प्रति विश्व का विश्वास निवेश व व्यापार को लेकर भी बढ़ेगा। गत् दिनों अमेरिका, चीन के बीच व्यापार युद्ध, अमेरिका मैक्सिको के बीच व्यावसायिक तनाव के शुरुआत से भी हालात् भारत के पक्ष में बन रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक तनाव बढ़ने के कारण सम्पूर्ण विश्व के पूंजी बाजारों में गिरावट हुई है। वर्ष 2018-19 की चौथी तिमाही की आर्थिक विकास दर घटकर 5 वर्ष के न्यूनतम 5.8 प्रतिशत के स्तर पर आ गयी है। बुनियादी ढांचागत् विकास औद्योगिक निर्माण क्षेत्र के साथ अंतर्राष्ट्रीय कारणों से निर्यात गतिशीलता भी कमजोर पड़ी है। लेकिन गत् दिनों चुनावों के परिणाम आने के बाद देश के सम्वेदी सूचकाक 40000 अंक के स्तर को पार कर गया था। भारत के लिए अच्छा संकेत एक ओर रुपये की मजबूती व स्थिरता है, तो दूसरी ओर खनिज तेल का 12 प्रतिशत गिरावट दर्ज करते हुए 62 डॉलर के स्तर को छु गया है। इससे आने वाली तिमाही के दौरान भारत सरकार व भारतीय कम्पनियों को महत्वपूर्ण लाभ होने की संभावना है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की दृष्टि से भी भारतीय बाजार अब भविष्य के निवेश व व्यवसाय की दृष्टि से अधिक आकर्षक महसूस होने लगा है। चौथी तिमाही से अर्थव्यवस्था के हालात् का आंकलन नहीं किया जा सकता। नई सरकार का आगमन व भारत के 130 करोड़ लोगों का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बुनियादी ढांचागत् विकास की व्यापक संभावना भारत की अर्थव्यवस्था के आकर्षण को और मजबूती प्रदान करती है। हालांकि बीते कुछ दिनों में अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के साथ विश्व के अनेक व्यापार प्रभावित हुए हैं। लेकिन भारत का बाजार आज भी सुरक्षित प्रतीत हो रहा है। जिससे निवेशक भारतीय बाजार में नई संभावनाएं तलाश रहे हैं। तमाम बातों के प्रति विदेशी निवेशक भारतीय बाजार की दशा-दिशा-धारणा को दूरदर्शी नजरों से देखते हुए विश्व के बाजारों के दशा-दिशा-धारणा एवं उनकी आर्थिक हालातों को देखते हुए फिलहाल भारतीय बाजार एक सुरक्षित एवं लाभकारी तथा दीर्घकालीक निवेश का सुरक्षित बाजार मानकर भारतीय बाजारों में निवेश का केन्द्र मान रहे हैं। ऐसे तो यह बाजार राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हालातों के साथ-साथ प्राकृतिक उत्पात, मानसून की हालात, सरकार के दिशा-निर्देश तथा अनुकूल-प्रतिकूल अफवाहें बाजार में कभी भी किसी समय बाजार की दिशा को परिवर्तित कर सकती हैं। गत दिनों विश्व बैंक में अपनी वर्ष 2019-20 के संदर्भ में की गई भविष्यवाणी में भारत द्वारा 7.50 प्रतिशत विकास दर अर्जित किये जाने की संभावना व्यक्त की गई। विश्व बैंक का यह भी कहना है कि मजबूत निवेश व निजी क्षेत्र के मजबूत उपभोग से देश की अर्थव्यवस्था को गतिशीलता प्राप्त होगी। इसे नई सरकार के लिये भी शुभ का संकेत कहा जा सकता है। विश्व बैंक की रिपोर्ट में वर्ष 2018 के दौरान चीन द्वारा 6.6 प्रतिशत व वर्ष 2019 में 6.2 प्रतिशत विकास दर अर्जित करने की संभावना व्यक्त की गई है। इसके बाद भारत विश्व के प्रमुख अर्थव्यवस्था में सर्वाधिक तेज गति से विकास करने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में अपना स्थान सुरक्षित करने में सफल हो सकता है। तथा वर्ष 2021 तक भारत की आर्थिक विकास दर चीन के मुकाबले निश्चित रूप से 1.50 प्रतिशत अधिक हो सकती है। यह तमाम बातें भारतीय शेयर बाजार के लिए 65 प्रतिशत अनुकूलता की श्रेणी में चलने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। अब इस बाजार से संबंधित इसकी दशा-दिशा-धारणा के संबंध में ग्रहीय गणना पर आधारित कुछ बातें विवेचित कर रहा हूं। जो कई वर्षों के गहन परीक्षण पर आधारित है। ऐसे इस संवेदनशील बाजार में कब क्या हो जाए, यह संभावनाएं तो भविष्य के गर्भ में ही छुपी रहती हैं।

जनवरी–मासारंभ में सूर्य-बुध-गुरु-शनि-केतु धनु राशि में, शुक्र मकर में, मंगल वृश्चिक में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 8 को शुक्र कुंभ राशि में स्थान परिवर्तन करेंगे। ता.13 को बुध मकर राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 14 को सूर्य बुध के साथ युति करेगा। ता. 24 को शनि बुध सूर्य के साथ प्रतियुति करेंगे। ता. 25 को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. 29 को शनि पूर्व में उदय होगा। मासारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलेंगे। तथा यह ता. 25 को उदित हो जायेंगे। जिससे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हालातों के चलते

शेयर बाजार में अफरा-तफरी का माहौल बना रहेगा। ता. 1 से 3 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयर्स में गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण बाजार में बिकवाली का पलड़ा भारी रहेगा। ता. 6 को घटबढ़। ता. 7 से 10 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो ऑटो मोबाईल, सिमेन्ट, ईस्पात, भारी इंजीनियरिंग, रियल स्टेट, पावर, विद्युत, गैस तथा पेट्रो-रसायन कंपनियों के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है। यदि ऐसा होता है तो ता. 13 से 17 तक उपरोक्त सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से सामान्य समर्थन संभावित है। ता. 20 से 24 तक बाजार में नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ मिडकैप, स्मॉलकैप श्रेणी के शेयरों में व्यापक घटबढ़ अधिक चल सकती है। जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी तथा धारणा जल्दी-जल्दी परिवर्तित होने से अधिकतर सौदे अहितकर हो सकते हैं। अतः जोखिम से बचें तो आपके लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। ता. 27 से 31 तक जहां साफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। तो अधिकतर ब्लूचिप सेक्टरों में अचानक अफवाह या अंतराष्ट्रीय हालातों के कारण इन सेक्टरों के शेयरों में बिकवाली होने से बाजार आंधी के आम की तरह गिर जायें तो आश्चर्य नहीं मानना चाहिए। कुल मिलाकर ता. 20 से 31 तक मंदी की लाईन भी बन सकती है। अतः दशा-दिशा देखकर काम करें।

फरवरी–मासारंभ में सूर्य-बुध-शनि मकर में, शुक्र कुंभ में, मंगल वृश्चिक में तथा गुरु-केतु धनु राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 2 को शुक्र मीन राशि में, ता. 7 को मंगल धनु राशि में प्रवेश कर गुरु-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 13 को सूर्य कुंभ में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता. 17 को बुध उदित अवस्था में वक्री होगा। ता. 19 को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. 28 को शुक्र अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में प्रवेश करेगा। फलतः ग्रहीय गणना पर आधारित माह की शुरुआत कुछ सकारात्मक दिशा में होना चाहिए। ता. 3 से 7 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो साफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कपनियों, वित्तीय संस्थाओं, ऑटो मोबाईल, सिमेन्ट, रियल इस्टेट, इस्पात, वाहन निर्माता कंपनियों के साथ-साथ धातुओं के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से शेयर बाजार में सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है। यदि ऐसा होता है तो ता. 10 से 14 तक उपरोक्त सेक्टरों के ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक तरीके से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। ता. 17 से 21 तक बाजार में व्यापक घटबढ़ जारी रहेगी। जिससे धारणा जल्दी-जल्दी बनती-बिगड़ती रहेगी। जिससे सौदा अहितकर हो सकते हैं। मेरे समझ से दैनिक कारोबार में जोखिम अधिक प्रतीत हो रहा है। वैसी हालात में तेजी की अपेक्षा मंदी का पलड़ा कुछ भारी महसूस हो रहा है। यदि ऐसा होता है तो अंतर्राष्ट्रीय हालातों तथा सरकार के दिशा-निर्देश के कारण ता. 24 से 28 तक तमाम सेक्टरों के शेयरों में अफवाहों पर आधारित बिकवाली बाजार की दशा-दिशा-धारणा अस्थिर बना सकती है। जिससे दैनिक गतिविधियों में बाजार की धारणा में अफरा-तफरी की स्थिति कुछ बाजारों में कुछ देर के लिए तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है।

मार्च–मासारंभ में सूर्य-बुध कुंभ में, शुक्र मेष में, मंगल-गुरु-केतु धनु में तथा शनि मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 2 को बुध पूर्व में उदय होगा। ता. 10 को उदित अवस्था में बुध मार्गी हो जायेगा। ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 22 को मंगल मकर राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। ता. 28 को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा। ता. 29 को गुरु शनि के साथ युति करेगा जिससे मासारंभ में स्थितियां सामान्य रहीं तो बाजार में सकारात्मक दिशा-दशा-धारणा तेजी के समर्थन में सहायक हो सकती है। ता. 2 से 6 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं, शुगर, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों मे बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है। जिससे शेयर बाजार के सूचकांक में व्यापक सुधार संभावित है। यदि ऐसा होता है तो ता. 9 से 13 तक ब्लूचिप उपरोक्त सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक तरीके से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। ता. 16 से 17 तक घटबढ़। ता. 18 से 20 तक गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण अचानक बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है। ऐसी स्थिति में इस समय बाजार की धारणा मंदी सूचक प्रतीत हो रही है। वैसी हालात् बनती है तो अचानक बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 23 से 24 तक व्यापक घटबढ़ परन्तु धारणा अस्थिर बनी रह सकती है। ता. 25 से 27 तक अंतर्राष्ट्रीय हालातों या सरकार के दिशा निर्देश के कारण अचानक ब्लूचिप विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बिकवाली से बाजार धड़ाम भी हो सकता है। ता. 30 से 31 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, साफ्टवेयर, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में अचानक लिवाली से सूचकांक में सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है।

अप्रैल–मासारंभ में सूर्य मीन में, शुक्र वृष में, मंगल-गुरु-शनि मकर में तथा बुध कुंभ राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मास के प्रारंभ में बुध उदित अवस्था में चलेंगे। ता. 7 को बुध सूर्य के साथ युति करेंगे। ता. 13 को सूर्य अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि में प्रवेश करेंगे। इसी तारीख को बुध पूर्व में अस्त होंगे। ता. 24 को बुध अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि में प्रवेश कर शत्रु मंगल की राशि में सूर्य के साथ युति करेंगे। जिससे मासारंभ में साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के शेयरों के साथ-साथ ईस्पात, सिमेन्ट, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में अधिक समर्थन मिलने की संभावना प्रतीत हो रही है। ता. 1 को व्यापक घटबढ़। ता. 2 से 3 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो उपरोक्त सेक्टरों में सामान्य समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा होता है तो ता. 6 से 10 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ मीडकैप, स्मालकैप श्रेणी के शेयरों में बारी-बारी से सामान्य समर्थन मिल सकता है। ता. 13 को सूर्य मित्र मंगल की राशि में प्रवेश करने से अचानक बाजार में गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण ता. 17 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में अग्रसर बिकवाली की स्थिति बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। जिससे शेयर बाजार के सूचकांक में गिरावट की स्थिति पैदा हो सकती है। ऐसे तो इस बाजार की धारणा अफवाहों पर आधारित होती है। अनुकूल अफवाह जहां बाजार में पलभर में तेजी की ओर बढ़ती है तो गलत अफवाहें मंदी की धारणा पलभर में तबाही का मंजर उत्पन्न कर देती है। ता. 20 से 24 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में अग्रसर दवाब की स्थिति बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। ता. 13 से 24 तक इसी तरह के हालात बने रहे तो मंदी की लम्बी लाईन भी बन सकती है। ता. 27 से 30 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो रियल इस्टेट, टेक्सटाईल्स, पावर, विद्युत, इस्पात, ऑटोमोबाईल, सिमेन्ट तथा भारी इंजीनियरिंग कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से कुछ समर्थन मिलने से सूचकांक में सुधार संभावित है।

मई–मासारंभ में सूर्य-बुध मेष में, शुक्र वृष में, चन्द्र-राहु मिथुन में, केतु धनु राशि में तथा मगल-गुरु-शनि मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 9 को बुध शुक्र के साथ युति करेगा। ता. 11 को शनि वक्री होगा। ता. 13 को शुक्र भी वक्री होगा। ता. 14 को सूर्य-बुध-शुक्र के साथ प्रतियुति करेगा। इसी तारीख को बुध पश्चिम में उदय व गुरु वक्री होगा। ता. 24 को बुध राहु के साथ युति करेगा। ता. 30 को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। मासारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलेंगे। जिससे मास के प्रारंभ में ता. 1 को व्यापक घटबढ़। ता. 4 से 8 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो ऑटोमोबाईल, सिमेन्ट, रियल ईस्टेट, शुगर, टेक्सटाईल्स, पावर तथा धातुओं के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 11 से 15 तक अंतर्राष्ट्रीय हालात्

या अन्य कारणों से नई-पुरानी अर्थव्यवस्था के साथ-साथ मीडकैप, स्मॉलकैप श्रेणी के शेयरों में रुक-रुककर बिकवाली बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। जिससे शेयर बाजार के सूचकांक में व्यापक गिरावट भी बन सकती है। अतः धारणा देखकर काम करें। ता. 18 से 21 तक व्यापक अस्थिरता की संभावना। ता. 11 से 21 तक बाजार में मंदी की लम्बी लाईन भी बन सकती है। जिससे बाजार में अधिकतर सौदे अहितकर हो सकते हैं। ता. 22 को सामान्य सुधार। ता. 25 से 29 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तिय संस्थाओं के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है।

जून—मासारंभ में सूर्य-शुक्र वृष में, बुध-राहु मिथुन में, गुरु-शनि मकर में, मंगल कुंभ में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 14 को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश कर राहु, बुध के साथ प्रतियुति करेंगे। ता. 18 को बुध उदित अवस्था में वक्री होगा। इसी तारीख को मंगल मीन राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 21 को बुध पश्चिम में अस्त हो जायेंगे। ता. 25 को शुक्र मार्गी होगा। ता. 29 को गुरु अपनी राशि धनु में प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा। फलतः मासारंभ में बाजार कुछ सकारात्मक दिशा में चलना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो ता. 1 से 5 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के साथ-साथ इस्पात, सिमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, पावर, पेट्रो-रसायन एवं टेक्सटाईल्स कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है। आगामी सप्ताह अफवाहों पर आधारित नकारात्मक स्थितियां बाजार में अस्थिरता उत्पन्न कर सकती हैं। जिससे ता. 8 से 9 तक घटबढ़। ता. 10 से 12 तक अचानक बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर भी सकते हैं। अतः दशा-दिशा-धारणा देखते हुए काम करें। ता. 15 से 17 तक बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति से सूचकांक में व्यापक गिरावट की स्थिति तवाही का मंजर उत्पन्न कर सकता है। ता. 18 से 19 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा होता है तो ता. 22 से 26 तक ईस्पात, सिमेन्ट, पावर, गैस, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में सामान्य से भारी समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा होता है तो ता. 19 से 23 तक ब्लूचिप उपरोक्त सेक्टरों के शेयरों में समर्थन मिल सकता है।

जुलाई—मासारंभ में सूर्य-बुध-राहु मिथुन में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र वृष राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में बुध वक्री अवस्था में अस्त चाल से चलेंगे। यह अस्त अवस्था में ही ता. 11 को पूर्व में उदय होंगे और उदित अवस्था में ही ता. 12 को मार्गी हो जायेंगे। ता. 16 को सूर्य कर्क राशि में विचरण करेंगे। जिससे मासारंभ में ता. 1 से 3 तक व्यापक घटबढ़ जारी रहेगी जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। यदि ऐसा होता है तो ता. 6 से 10 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बारी-बारी से बिकवाली बनने से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकते हैं। मेरे समझ से मास के प्रारंभ में अब तक विश्व के अधिकतर बाजारों में अफरा-तफरी की स्थिति तवाही का मंजर उत्पन्न करता रहेगा। ता. 13 से 15 तक भी स्थितियां बाजार की प्रतिकूल स्थिति में चल सकती हैं। ता. 16 से 17 तक सरकार के दिशा-निर्देश से अचानक विदेशी निवेशकों का समर्थन साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों के साथ-साथ ऑटोमोबाईल, भारी इंजीनियरिंग, ईस्पात, टेक्सटाईल्स कंपनियों के शेयरों में सामान्य समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा होता है तो ता. 20 से 24 तक उपरोक्त सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। ता. 27 से 31 तक ईस्पात, सिमेन्ट, विद्युत, पावर, पेट्रो रसायन, साफ्टवेयर, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में घटबढ़ पूर्ण सुधार जारी रह सकता है। फिर भी धारणा देखते हुए स्व-विवेक से काम करें।

अगस्त—मासारंभ में सूर्य-बुध की युति कर्क में, गुरु-केतु की युति धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा राहु-शुक्र मिथुन राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 1 को शुक्र मिथुन में, इसी तारीख को बुध सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 7 को बुध पूर्व में अस्त होगा। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा। इसी तारीख को मंगल अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में प्रवेश करेगा। ता. 17 को बुध सूर्य की राशि में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 31 को शुक्र शत्रु चन्द्रमा की राशि कर्क में प्रवेश करेगा। मासारंभ में बुध उदित अवस्था में मार्गी चाल से चलते हुए ता. 7 को अस्त हो जायेगा। फलतः ता. 3 से 7 तक गलत अफवाह, सरकार की दिशा-निर्देशों अथवा अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण बाजार खुलते ही ब्लूचिप विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बिकवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में भारी गिरावट प्रत्यक्षित हो सकती है। ता. 10 से 11 तक व्यापक घटबढ़। धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। ता. 12 से 14 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो इस्पात, सिमेन्ट, रियल इस्टेट, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में सामान्य समर्थन की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। यदि ऐसा होता है तो ता.17 से 21 तक उपरोक्त सेक्टरों के ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। ता. 24 से 28 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों के साथ-साथ मीडकैप, स्मॉलकैप श्रेणी के शेयरों में घटबढ़ पूर्ण सुधार संभावित है। ता. 31 को बाजार खुलते ही शुक्र के कारण बाजार में भारी बिकवाली की स्थिति से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। अतः सावधानी अपेक्षित है।

सितम्बर—मास में सूर्य-बुध की युति सिंह राशि में, गुरु-केतु की युति धनु राशि में, शनि मकर में, मंगल अपनी राशि मेष में तथा शुक्र शत्रु राशि कर्क में विचरण करेंगे। मासारंभ में बुध अस्त अवस्था में ता. 2 को कन्या राशि में, ता. 7 को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. 10 को मंगल वक्री होगा। ता. 13 को गुरु मार्गी होगा। ता. 16 को सूर्य बुध के साथ युति करेगा। ता. 22 को बुध तुला में प्रवेश करेगा। ता. 27 को शुक्र शत्रु सूर्य की राशि सिंह में प्रवेश करेगा। ता. 29 को शनि मार्गी होगा। फलतः मासारंभ में ग्रहीय चाल के अनुसार बाजार में व्यापक अस्थिरता संभावित है। अतः बाजार की दशा-दिशा-धारणा देखते हुए काम करना सफल व्यापार की कुंजी हो सकती है। ता. 1 से 4 तक गलत अफवाह या अन्य कारणों से साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बिकवाली से बाजार में व्यापक गिरावट की संभावना। ता. 7 को व्यापक घटबढ़। ता. 8 से 11 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो उपरोक्त सेक्टरों में समर्थन से सामान्य सुधार। यदि ऐसा होता है तो आगामी सप्ताह भी बाजार में सकारात्मक दिशा बननी चाहिए। ता. 14 से 18 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के साथ-साथ विद्युत, पावर, गैस, पेट्रो-रसायन तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन संभावित है। ता. 21 से 25 तक ईस्पात, सिमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, टेक्सटाईल्स, रियल इस्टेट, शुगर तथा ऑटोमोबाईल कंपनियों के शेयरों में व्यापक घटबढ़। धारणा अस्थिर स्थिति में चलने से पकड़ में नहीं आयेगी। यदि अस्थिरता की स्थिति गंभीर बनती है तो ता. 28 से 30 तक ब्लूचिप विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर जाय तो आश्चर्य नहीं मानना चाहिए।

अक्टूबर—मासारंभ में सूर्य कन्या में, बुध तुला में, गुरु धनु में, शनि मकर में, मंगल मेष में तथा शुक्र सिंह में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में बुध उदित अवस्था में चलते हुए ता. 13 को पश्चिम में अस्त हो जायेंगे। ता. 4 को मंगल रेवती नक्षत्र मीन राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 14 को बुध अस्त अवस्था में ही वक्री हो जायेंगे। ता. 17 को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेंगे। ता. 23 को शुक्र कन्या में प्रवेश करेंगे। ता. 30 को बुध पूर्व में उदय होगा। फलतः ग्रहीय गणना पर आधारित मास के प्रारंभ से ता. 2 तक व्यापक अस्थिरता संभावित है। ता. 5 को घटबढ़। ता. 6 से 9 तक दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, बैंक, ईस्पात, सिमेन्ट, पावर, गैस

तथा पेट्रो रसायन कंपनियों के शेयरों में सामान्य समर्थन मिल सकता है। फिर भी दशा-दिशा-धारणा देखकर काम करें। ता. 12 को घटबढ़। ता. 13 से 16 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो इस्पात, सिमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, टेक्सटाइल्स, ऑटोमोबाईल, रियल इस्टेट, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में बारी-बारी से सामान्य समर्थन मिल सकता है। फिर भी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हालातों का पूर्ण अवलोकन करते हुए स्व-विवेक से भी तेजी-मंदी का विचार करें। ता. 19 से 23 तक उपरोक्त सेक्टरों में व्यापक घटबढ़। ता. 26 से 30 तक भी अस्थिरता संभावित है। मेरे समझ से ता. 19 से 30 तक अस्थिरता की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। जिससे बाजार में अफवाहों पर आधारित अफरा-तफरी की स्थिति बाजार में तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है।

नवंबर–मासारंभ में बुध-सूर्य की युति तुला में, गुरु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र कन्या राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मास के प्रारंभ में बुध उदित अवस्था में ता. 4 को मार्गी हो जायेगा। ता. 14 को मंगल मार्गी हो जायेगा। ता. 16 को सूर्य केतु के साथ युति करेगा। इसी तारीख को शुक्र बुध के साथ युति करेगा। ता. 20 को गुरु मकर राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। ता. 28 को बुध-सूर्य केतु के साथ युति करेगा। ता. 30 को बुध पूर्व में अस्त हो जायेगा। फलतः मासारंभ में स्थितियां सामान्य रहीं तो ता. 2 से 6 तक दूर-संचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में समर्थन मिलने से सुधार संभावित है। यदि ऐसा होता है तो ता. 9 से 13 तक उपरोक्त सेक्टरों में बारी-बारी से समर्थन संभावित प्रतीत हो रहा है। ता. 16 से 20 तक ऑटोमोबाईल, सिमेन्ट, इस्पात, पावर, विद्युत तथा धातुओं के साथ-साथ फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में घटबढ़ पूर्ण अस्थिर सुधार संभावित है। ता.23 से 27 तक उपरोक्त सेक्टरों में व्यापक अस्थिरता बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न कर तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है। ता. 30 को सामान्य सुधार।

दिसम्बर–मासारंभ में सूर्य-बुध-केतु वृश्चिक में, गुरु-शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र तुला राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मास के प्रारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलेंगे। ता. 10 को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश कर चतुर्थ ग्रहीय योग बनायेंगे। ता. 15 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेंगे। ता.17 को बुध सूर्य की युति होगी। ता. 23 को मंगल अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। फलतः मासारंभ में ता. 1 से 4 तक इस्पात, सिमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित है। यदि ऐसा होता है तो ता. 7 से 11 तक उपरोक्त सेक्टरों में बारी-बारी से समर्थन संभावित है। ता. 14 से 18 तक गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण अचानक साफ्टवेयर, मीडिया तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में अचानक बिकवाली से सूचकांक में आश्चर्य जनक गिरावट दर्ज हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो ता. 21 से 25 तक उपरोक्त सेक्टरों में गिरावट संभावित है। ता. 28 से 31 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ मीडकैप, स्मॉलकैप श्रेणी के शेयरों में सामान्य समर्थन से कुछ सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है।

जनवरी 2021–मासारंभ में सूर्य-बुध धनु में, गुरु-शनि मकर में, मंगल मेष में तथा शुक्र-केतु वृश्चिक राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 3 को शुक्र धनु राशि में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 4 को बुध मकर राशि में प्रवेश कर गुरु-शनि के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 9 को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. 14 को सूर्य मकर राशि में प्रवेश कर बुध-गुरु-शनि के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 25 को बुध कुंभ राशि में प्रवेश करेगा। ता. 27 को शुक्र मकर राशि में प्रवेश कर चतुर्थ ग्रहीय योग बनायेगा। ता. 29 को बुध वक्री होगा। मासारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलते हुए ता. 9 को उदय होगा। फलतः ता. 1 को इस्पात, सिमेन्ट, पावर, विद्युत सेक्टरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। ता. 4 से 8 तक पावर, विद्युत, गैस, पेट्रो-रसायन, सिमेन्ट, इस्पात, टेक्सटाईल्स तथा शुगर कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से सामान्य समर्थन मिल सकता है। ता. 11 से 13 तक व्यापक घटबढ़। ता. 14 से 15 तक कुछ अप्रिय घटना चक्र अथवा सरकार के दिशा-निर्देशों के कारण बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकते हैं। ता. 18 से 19 तक घटबढ़। ता. 20 से 22 तक व्यापक अस्थिरता। ता. 25 से 29 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के साथ-साथ शुगर, पावर, विद्युत कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन संभावित है।

फरवरी–मासारंभ में सूर्य-गुरु-शुक्र-शनि की प्रतियुति मकर राशि में, बुध कुंभ में, मंगल मेष राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ में बुध उदित अवस्था में चलेंगे। तथा ता. 3 को वह पश्चिम में अस्त हो जायेंगे। ता. 4 को बुध मकर राशि में प्रवेश कर पंचग्रहीय योग बनायेगा। ता. 12 को सूर्य शत्रु शनि की राशि में प्रवेश करेगा। ता. 14 को बुध पूर्व में उदय होगा। ता. 20 को शुक्र सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 21 को बुध मार्गी हो जायेगा। फलतः मासारंभ में ता. 1 से 5 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो इस्पात, सिमेन्ट, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 8 से 10 तक घटबढ़। ता. 11 से 12 तक अचानक बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकते हैं। ता. 15 से 19 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ म्यूचुअल फंड अथवा मीडकैप, स्मालकैप श्रेणी के शेयरों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 22 से 26 तक ब्लूचिप, ऑटोमोबाईल, सिमेन्ट, इस्पात, शुगर, टेक्सटाईल्स कंपनियों के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है।

मार्च–मासारंभ में सूर्य-शुक्र कुंभ में, मंगल-राहु वृष में तथा शनि-बुध मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। फलतः मासारंभ में स्थितियां सामान्य रहीं तो ता. 1 से 5 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के साथ-साथ इस्पात, सिमेन्ट, रियल इस्टेट, पावर, विद्युत कंपनियों के शेयरों में घटबढ़ पूर्ण सुधार संभावित है। ता. 8 से 12 तक गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण बाजार में अचानक बिकवाली से अफरा-तफरी की स्थिति तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है। यदि ऐसा होता है तो ता. 15 से 17 तक व्यापक अस्थिरता संभावित है। ता. 18 से 19 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ मीडकैप, स्मालकैप श्रेणी के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। ता. 22 से 26 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो ऑटोमोबाईल, सिमेन्ट, इस्पात, वाहन, चाय, कॉफी, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है। ता. 29 से 31 तक उपरोक्त सेक्टरों में सुधार संभावित है। ऐसे तो इस संवेदनशील बाजार में कब क्या धारणा बन जाये, यह संभावनाएं भविष्य के गर्भ में ही छुपी होती हैं। अतः स्व-विवेक से भी विचार करें।

लेखक-**आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री**
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरांव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)
पिन-802218, मो.-09431486216, 09801873719
E-mail :tuntunshastri@gmail.com

प्रमुख जिन्स-धातुओं की तेजी-मंदी एवं दशा-दिशा-धारणा 2020 ई.

सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, निकिल, ईस्पात की तेजी-मंदी

जनवरी 2020—मासारंभ में सूर्य-बुध वृश्चिक राशि में तथा गुरु-शुक्र-शनि-केतु धनु राशि में भ्रमणशील रहने से मासारंभ से ता. 7 तक सोना, चांदी में अस्थिर सुधार जारी रहेगी। जबकि अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 8 को शुक्र कुंभ राशि में प्रवेश से ता. 12 तक निकिल, जिंक, ईस्पात एवं चांदी में अस्थिरता संभावित है। धारणा मंदी की ओर भी जा सकती है। जबकि सोना, कॉपर में खामोशी। ता. 13 को बुध मकर में तथा ता. 14 को सूर्य बुध के साथ युति होने से ता. 23 तक लगभग सभी धातुओं में सामान्य सुधार संभावित है। ता. 24 को शनि-सूर्य-बुध के साथ प्रतियुति से सामान्य से भारी सुधार संभावित है। यह धारणा ता. 28 तक चल सकती है। ता. 29 को घटबढ़। ता. 30 को बुध कुंभ राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति होने से ता. 31 तक सभी धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी।

फरवरी—मासारंभ में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 2 को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 6 तक सिल्वर, निकिल, जिंक में अस्थिर सुधार। जबकि सोना, कॉपर में घटबढ़ जारी। ता. 7 को मंगल धनु राशि में प्रवेश कर केतु गुरु के साथ प्रतियुति होने से ता. 12 तक सभी धातुओं में सुधार। यदि ऐसा होता है तो सामान्य से भारी तेजी की धारणा बन सकती है। जो एक चांस भी हो सकता है। ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश कर बुध के साथ युति होने से ता. 16 तक सिल्वर, निकिल, जिंक में मंदी की धारणा। जबकि सोना, कॉपर में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 17 को बुध वक्री होने से ता. 27 तक अचानक रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 28 को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने से मासान्त तक सभी धातुओं में भड़कती तेजी बन सकती है।

मार्च—मासारंभ से ता. 9 तक सभी धातुओं में दैनिक कारोबार में अग्रसर तेजी का पलड़ा भारी महसूस हो रहा है। ता. 10 को बुध मार्गी होने से सिल्वर, निकिल, जिंक में घटबढ़। जबकि सोना, कॉपर में सुधार संभावित है। ता. 14 से 21 तक सोना, कॉपर में सुधार। अन्य धातुओं में कुछ मंदी की धारणा। ता. 22 को मंगल मकर राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति होने से ता. 27 तक सभी धातुओं में स्थिर सुधार संभावित है। ता. 28 को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करने से अस्थिर सुधार जबकि ता. 29 को गुरु मंगल शनि के साथ प्रतियुति से मासांत तक सामान्य तेजी की धारणा बन सकती है।

अप्रैल—मासारंभ में दैनिक कारोबार के अंतर्गत् सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं में घटबढ़ पूर्ण सुधार ता. 6 तक जारी रहेगी। ता. 7 को बुध मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 12 तक घटबढ़ चलकर गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण बाजार में बिकवाली के दबाव के कारण मंदी की धारणा भी बन सकती है। ता. 13 को सूर्य अपनी उच्च राशि मेष में प्रवेश करने से बाजार में धीरे-धीरे सुधार की स्थिति बनती है। तो ता. 23 तक अच्छा सुधार भी हो सकता है। ता. 24 को बुध मेष राशि में प्रवेश करने से ता. 30 तक अचानक गलत अफवाह या कच्चे तेल की अस्थिरता अथवा सरकार के दिशा-निर्देश के कारण सभी धातुओं में मंदी की लम्बी लाईन भी बन सकती है।

मई—मासारंभ से ता. 3 तक अस्थिरता संभावित है। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में प्रवेश करने से सोना, कॉपर में अस्थिर सुधार जबकि अन्य धातुओं में अस्थिरता संभावित है। ता. 9 को बुध वृष राशि में प्रवेश करने से सभी धातुओं में समभाव या खामोशी बनी रह सकती है। ता. 11 को शनि वक्री होने से बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति दैनिक कारोबार में अस्थिरता उत्पन्न कर सकती है। यदि ऐसा होता है तो ता. 13 तक सावधानी अपेक्षित है। ता. 14 को सूर्य वृष राशि में प्रवेश करने से तथा गुरु वक्री होने से ता. 23 तक बाजार में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 27 को बुध मिथुन राशि में प्रवेश करने से धातुओं के बाजार में अस्थिरता लम्बी लाईन में चल सकती है।

जून—मासारंभ से ता. 13 तक धातुओं के बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति तबाही का मंजर उत्पन्न करता रहेगा। यदि ऐसा होता है तो ता. 13 तक बाजार में अस्थिरता संभावित है। ता. 14 को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करने से कुछ सुधार संभावित है। परन्तु ता. 18 को बुध वक्री होने से पुनः रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 18 को मंगल मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 19 से 24 तक सोना, कॉपर में कुछ सुधार। जबकि अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 25 को शुक्र मार्गी होने से सभी धातुओं में सामान्य सुधार की स्थिति बनती है। तो ता. 28 तक सुधार जारी रह सकता है। ता. 29 को गुरु अपनी राशि धनु में प्रवेश से ता. 30 तक अचानक मंदी की धारणा।

जुलाई—मास के प्रारंभ में सूर्य-बुध-राहु मिथुन राशि में तथा गुरु-केतु की युति धनु राशि में होने से ता. 11 तक सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं में गलत अफवाह के कारण मंदी की लम्बी लाईन बन सकती है। ता. 12 को बुध मार्गी होने से सोना, कॉपर में सुधार जबकि अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 16 को सूर्य जलीय राशि मित्र चन्द्रमा की राशि कर्क में प्रवेश करने से ता. 31 तक सोना, चांदी आदि धातुओं में अस्थिर सुधार की लम्बी लाईन बन सकती है।

अगस्त—मासारंभ में शुक्र राहु के साथ, बुध सूर्य के साथ युति होने से ता. 15 तक व्यापक घटबढ़। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी आदि धातुओं में सुधार संभावित है। यदि ऐसा होता है तो धातुओं में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। अतः दैनिक कारोबार में सब कुछ सामान्य रहा तो तेजी का पलड़ा भारी रहना चाहिए। जो एक अचूक चांस भी हो सकता है। फिर भी दशा-दिशा-धारणा देखकर काम करें।

सितंबर—मासारंभ में अचानक कुछ अस्थिरता संभावित है। मास के प्रारंभ में बुध कन्या राशि में प्रवेश करने से ता. 9 तक सोना, कॉपर में घटबढ़। अन्य धातुओं में व्यापक मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 10 को मंगल वक्री होने से पुनः अनुकूल अफवाह से अचानक सभी धातुओं में सुधार संभावित है। ता. 13 को गुरु मार्गी होने से सिल्वर में अस्थिरता संभावित है। जबकि अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 16 को सूर्य-बुध की युति होने से ता. 21 तक सिल्वर में अस्थिरता जबकि अन्य धातुओं में समभाव बना रह सकता है। ता. 22 को बुध तुला में प्रवेश करने से ता. 26 तक सोना, कॉपर में सुधार। अन्य धातुओं में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 27 को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करने से ता. 30 तक सोना, कॉपर में सुधार जबकि अन्य धातुओं में अस्थिरता संभावित है।

अक्टूबर—मासारंभ में ता. 3 तक व्यापक घटबढ़। ता. 4 को मंगल मीन राशि में प्रवेश करने से ता. 13 तक सोना, कॉपर में सुधार जबकि अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 14 को बुध वक्री होने से ता. 16 तक चलते रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 17 को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश करने से ता. 22 तक सोना, कॉपर में सुधार। अन्य धातुओं में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 23 को शुक्र कन्या में प्रवेश करने से ता. 31 तक सिल्वर में अस्थिर सुधार जबकि अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। अतः सावधानी से काम करें।

नवम्बर—मासारंभ में सूर्य-बुध की युति से ता. 3 तक सभी धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 4 को बुध मार्गी होने से ता. 13 तक सोना, कॉपर में सुधार। अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 14 को मंगल मार्गी होने से सिल्वर में सुधार। अन्य धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 16 को सूर्य वृश्चिक में तथा शुक्र तुला राशि में प्रवेश करने से ता. 19 तक घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 20 को गुरु मकर राशि में प्रवेश करने से ता. 27 तक कुछ सुधार संभावित है। ता. 28 को बुध-सूर्य की युति होने

से ता. 31 तक सिल्वर में सुधार जबकि अन्य धातुओं में खामोशी बनी रह सकती है। अतः धारणा देखकर काम करें।

दिसम्बर–मासारंभ में सूर्य-बुध-केतु की प्रतियुति वृश्चिक राशि में होने से ता. 9 तक सभी धातुओं में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 10 को शुक्र वृश्चिक राशि में प्रवेश कर चतुर्थ ग्रहीय योग से ता. 14 तक कुछ घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 15 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करने से धातुओं में सुधार। ता. 17 को बुध-सूर्य की युति होने से सिल्वर में मंदी। अन्य धातुओं में घटबढ़। ता. 23 को मंगल मेष राशि में प्रवेश से ता. 31 तक सुधार।

गेहूं, जौ, चना, तुअर, मूंग, मोंठ, उड़द, मसूर, लालमिर्च, मेंथी, हींग, ग्वार की तेजी-मंदी

जनवरी 2020–मासारंभ में सूर्य-बुध-गुरु-शनि-केतु की प्रतियुति धनु राशि में होने से ता. 1 से 10 तक उपरोक्त जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 11 से 23 तक सभी जिन्सों में सुधार संभावित है। ता. 24 से 31 तक सुधार की लम्बी लाईन बन सकती है। हालांकि गमग्वार, लालमिर्च में अस्थिर सुधार।

फरवरी–मासारंभ में सूर्य-शनि मकर में, गुरु-केतु धनु में भ्रमणशील रहेंगे। फलतः मासारंभ से ता. 5 तक सभी जिन्सों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 6 से 18 तक सभी जिन्सों में सुधार की लम्बी लाईन भी बन सकती है। ता. 19 से 29 तक कुछ जिन्सों में अस्थिर सुधार संभावित है। इस माह में गमग्वार, लालमिर्च, मेंथी में स्थिरता की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है।

मार्च–इस मासारंभ में बुध-सूर्य-कुंभ में, शुक्र मेष में, मंगल-गुरु-केतु की प्रतियुति धनु राशि में होने से मास के प्रारंभ में ता. 3 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 4 से 16 तक अधिकांश जिन्सों में सुधार संभावित है। ता. 17 से 30 तक कुछ जिन्सों में सुधार संभावित है। ता. 31 को व्यापक सुधार संभावित है।

अप्रैल–मासारंभ में मंगल-गुरु-शनि मकर राशि में, बुध मीन में विचरण से मासारंभ से ता. 12 तक सुधार संभावित है। ता. 13 से 26 तक सुधार। ता. 27 से 30 तक अस्थिर सुधार। ता. 24 को बुध मेष राशि में प्रवेश करने से अस्थिरता की धारणा।

मई–मासारंभ में सूर्य-बुध मेष में, मंगल-गुरु-शनि मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। जिससे मासारंभ से ता. 10 तक उपरोक्त जिन्सों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 11 से 23 तक सामान्य सुधार की संभावना। परन्तु ग्वार, लालमिर्च, मेंथी में अस्थिरता भी संभावित है। ता. 24 से 31 तक गेहूं, जौ, चना, तुवर, ज्वार, बाजरा, मिर्च, ग्वार तेज हो सकते हैं।

जून–मासारंभ में सूर्य वृष राशि में, राहु-बुध मिथुन में तथा गुरु-शनि मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ से ता. 6 तक उपरोक्त जिन्सों में सुधार संभावित है। ता. 7 से 20 तक ग्वार, लालमिर्च, मेंथी छोड़कर सभी जिन्सों में सामान्य सुधार संभावित है। ता. 21 से 30 तक सभी जिन्सों में सामान्य सुधार संभावित है।

जुलाई–मासारंभ में सूर्य-बुध-राहु मिथुन में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में तथा मंगल मीन राशि में विचरण करने से मासारंभ से ता. 4 तक अच्छा सुधार संभावित है। ता. 5 से 18 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 19 से 31 तक सभी जिन्सों में सामान्य सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है।

अगस्त–मासारंभ में सूर्य-बुध कर्क राशि में, शुक्र-राहु मिथुन में तथा गुरु-केतु धनु राशि में भ्रमणशील रहेंगे। जिससे मासारंभ से ता. 15 तक सभी जिन्सों में सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है। ता. 16 से 29 तक गमग्वार, मेंथी, लालमिर्च, लौंग, दालचीनी, जावित्री, जायफल, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा में सुधार संभावित है। ता. 30 से 31 तक कुछ सुधार संभावित है।

सितम्बर–मासारंभ में सूर्य-बुध की युति सिंह राशि में, गुरु-केतु धनु राशि में, शनि मकर में, मंगल मेष में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 2 को बुध कन्या में प्रवेश करने से मासारंभ से ता. 12 तक सभी जिन्सों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 13 से 25 तक कुछ जिन्सों में सुधार। जबकि कुछ जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 26 से 30 तक गेहूं, जौ में सुधार। अन्य जिन्सों में समभाव। गमग्वार, मेंथी, लालमिर्च में खामोशी रह सकती है।

अक्टूबर–मासारंभ में सूर्य कन्या में, बुध तुला में, गुरु धनु में, शनि मकर में, मंगल मेष में तथा शुक्र सिंह राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ से ता. 6 तक कुछ जिन्सों को छोड़कर सभी जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 10 से 22 तक सभी जिन्सों में सुधार संभावित है। विशेषकर गमग्वार, ग्वार सीड, लालमिर्च, ईमली, मेंथी में तेजी की लंबी लाईन भी बन सकती है। ता. 23 से 31 तक गमग्वार, लालमिर्च, मेंथी, ईमली में सुधार जबकि अन्य जिन्सों में अस्थिरता संभावित है।

नवम्बर–मासारंभ में सूर्य-बुध की युति तुला में, गुरु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र कन्या राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 4 को बुध तथा ता. 14 को मंगल मार्गी होंगे। ता. 16 को सूर्य वृश्चिक में व शुक्र तुला में, ता. 20 को गुरु मकर राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। ता. 28 को बुध-सूर्य-केतु के साथ प्रतियुति से मासारंभ में ता. 5 तक गमग्वार, लालमिर्च, मेंथी, ईमली में सुधार। जबकि अन्य जिन्सों में समभाव। ता. 6 से 18 तक सभी जिन्सों में सामान्य सुधार। ता. 19 से 30 तक सभी जिन्सों में व्यापक घटबढ़।

दिसम्बर–मासारंभ में सूर्य-बुध-केतु की प्रतियुति वृश्चिक राशि में, गुरु-शनि की युति मकर राशि में, मंगल मीन में, शुक्र तुला में विचरण से मासारंभ से ता. 14 तक कुछ सुधार संभावित है। ता. 15 से 27 तक अचानक मंदी की लम्बी लाईन बन सकती है। ता. 28 से 31 तक खामोशी बनी रह सकती है।

रुई, कपास, पाट-पटसन, पोस्ता, काजू, मखाना, चावल, दूध, घृत में तेजी-मंदी

जनवरी–मासारंभ में सूर्य-बुध-गुरु-शनि-केतु की प्रतियुति धनु में तथा मंगल वृश्चिक राशि में भ्रमणशील रहेंगे। फलतः मासारंभ में ता. 10 तक उपरोक्त जिन्सों में अस्थिर सुधार। ता. 11 से 23 तक सामान्य सुधार। ता. 24 से 31 तक अच्छा सुधार।

फरवरी–मासारंभ में सूर्य-शनि की युति मकर में तथा गुरु-केतु की युति धनु राशि में होने से मासारंभ से ता. 5 तक अच्छा सुधार संभावित है। ता. 6 से 18 तक रुई, कपास, कॉटन में सुधार। अन्य जिन्सों में घटबढ़ जारी। ता. 19 से मासान्त तक सामान्य सुधार परन्तु यह सुधार घटबढ़ के मध्य हो सकता है।

मार्च–मासारंभ में सूर्य-बुध की युति कुंभ में, शुक्र मेष में, मंगल-गुरु-केतु धनु राशि में प्रतियुति होने से मासारंभ से ता. 3 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 4 से 16 तक सुधार संभावित है। ता. 17 से 30 तक चावल छोड़कर सभी जिन्सों में अस्थिरता। ता. 31 को रुई, चावल में सुधार। अन्य जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी।

अप्रैल–मासारंभ में सूर्य मीन राशि में, शुक्र वृष में, मंगल-गुरु-शनि मकर में तथा बुध कुंभ राशि में भ्रमणशील रहते हुए ता. 7 को मीन राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 13 को सूर्य मेष में, ता. 24 को बुध-सूर्य की युति होगी। मासारंभ से ता. 12 तक रुई, चावल में सुधार। अन्य जिन्सों में घटबढ़। ता. 13 से 26 तक सभी जिन्सों में घटबढ़ धारणा अस्थिर हो सकती है। ता. 27 से 30 तक सभी जिन्सों में अस्थिरता संभावित है।

मई–मासारंभ में सूर्य-बुध मेष में, शुक्र वृष में, मंगल-गुरु-शनि मकर राशि में भ्रमणशील होते हुए ता. 4 को मंगल कुंभ में, ता. 9 को बुध वृष में विचरण करेंगे। फलतः मासारंभ से ता. 10 तक कुछ सुधार संभावित है। ता. 11 से 23 तक सुधार संभावित है। ता. 24 से 31 तक अस्थिर सुधार संभावित है।

जून–मासारंभ में सूर्य-शुक्र वृष राशि में, बुध-राहु मिथुन में, गुरु-शनि मकर में तथा मंगल कुंभ राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ से ता. 6 तक अस्थिर सुधार। ता. 7 से 20 तक अच्छा सुधार संभावित है। ता. 21 से 30 तक सुधार संभावित है।

जुलाई–मासारंभ में सूर्य-बुध-राहु मिथुन में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मीन में तथा शुक्र वृष राशि में भ्रमणशील रहेंगे। फलतः मासारंभ से ता. 4 तक सुधार। ता. 5 से 18 तक अच्छा सुधार। ता. 19 से 31 तक घटबढ़ पूर्ण अस्थिरता।

अगस्त–मासारंभ में शुक्र मिथुन राशि में, बुध कर्क में, ता. 16 को सूर्य सिंह में, इसी तारीख को मंगल मेष में, ता. 17 को बुध-सूर्य की युति, ता. 31 को शुक्र कर्क राशि में भ्रमणशील रहेंगे। जिससे मासारंभ में ता. 15 तक कुछ सुधार। ता. 16 से 29 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 30 से 31 तक अस्थिर सुधार।

सितंबर–मासारंभ में सूर्य-बुध सिंह में, गुरु-केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मेष में तथा शुक्र कर्क राशि में भ्रमणशील रहेंगे। मासारंभ से ता. 12 तक कुछ जिन्सों में सुधार। ता. 13 से 25 तक व्यापक सुधार संभावित है। ता. 26 से 30 तक अस्थिर सुधार संभावित है। दशा-दिशा-धारणा देखकर काम करें।

अक्टूबर–मासारंभ से ता. 9 तक कपास, कॉटन, पाट, पटसन में सुधार संभावित है। ता. 10 से 22 तक घटबढ़ पूर्ण सुधार। ता. 23 से 31 तक अच्छा सुधार संभावित है।

नवंबर–मासारंभ से ता. 5 तक सुधार। ता. 6 से 18 तक अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 19 से 30 तक समभाव या खामोशी बनी रह सकती है। अतः सावधानी अपेक्षित है।

दिसंबर–मासारंभ से ता. 14 तक कॉटन, चावल में सुधार। अन्य जिन्सों में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 15 से 27 तक घटबढ़ पूर्ण, धारणा अस्थिर हो सकती है। अतः सावधानी से काम करें। ता. 28 से 31 तक घटबढ़ जारी रह सकती है।

सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, मैंथोल, अरण्डी, पामोलीन, तिल अन्य तेलवाना तेजी-मंदी

जनवरी–मासारंभ से ता. 10 तक सुधार संभावित है। ता. 11 से 23 तक कुछ तेलों में सुधार तो कुछ तेलों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 24 से 31 तक समभाव बना रहेगा। **फरवरी**–मासारंभ से ता. 5 तक खामोशी रहेगी। ता. 6 से 18 तक अस्थिरता। ता. 19 से 29 तक कुछ तेलों में सुधार संभावित है। **मार्च**–माह में ता. 1 से 3 तक घटबढ़। ता. 4 से 16 तक कुछ सुधार संभावित है। ता. 17 से 30 तक कुछ तेलों में सुधार। ता. 31 को अलसी, सरसों, सोयाबीन, अरण्डी, मूंगफली आदि तेलों में सुधार संभावित है। मैंथोल में घटबढ़। **अप्रैल**–मासारंभ से ता. 12 तक कुछ तेल-तेलवाना में अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 13 से 26 तक सामान्य सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है। ता. 27 से 30 तक तेल-तेलवाना में घटबढ़ जारी रहेगी। जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। **मई**–मासारंभ में ता. 3 तक घटबढ़। ता. 4 से 10 तक कुछ तेलों में सुधार संभावित है। ता. 11 से 23 तक कुछ तेलों में सुधार। ता. 24 से 31 तक डिब्बा बंद तेल, अन्य तेल-तेलवाना में अस्थिर सुधार संभावित है। **जून**–मासारंभ से ता. 6 तक घटबढ़ पूर्ण सुधार। ता. 7 से 20 तक समभाव अन्यथा खामोशी रह सकती है। ता. 21 से 30 तक मैंथोल, पामोलीन, अलसी, अरण्ड में कुछ सुधार। अन्य तेल-तेलवाना में अस्थिरता संभावित है। **जुलाई**–मासारंभ में ता. 4 तक मैंथोल, अरण्डी में सुधार। अन्य तेल-तेलवाना में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 5 से 18 तक कुछ तेलों में सुधार। ता. 19 से 31 तक अस्थिर सुधार। **अगस्त**–मासारंभ से ता. 15 तक सुधार संभावित है। ता. 16 से 29 तक कुछ तेल-तेलवाना में सुधार की लम्बी लाईन बन सकती है। ता. 30 से 31 तक सुधार संभव है। **सितंबर**–माह में ता. 1 से 12 तक डिब्बा बंद तेलों में सुधार। ता. 13 से 25 तक सुधार संभावित है। ता. 26 से 30 तक खामोशी बनी रह सकती है। **अक्टूबर**–मासारंभ से ता. 9 तक अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 10 से 22 तक समभाव अथवा खामोशी बनी रह सकती है। ता. 23 से 31 तक कुछ तेलों में सुधार संभावित है। मैंथोल, अरंडी, पामोलिन में घटबढ़ जारी रहेगी। **नवंबर**–मासारंभ से ता. 5 तक सरसों, सोयाबीन में सुधार संभावित है। ता. 6 से 18 तक लगभग सभी तेलों में सुधार। ता. 19 से 30 तक समभाव। **दिसंबर**–मासारंभ से ता. 14 तक तेलों में सुधार। ता. 15 से 27 तक व्यापक घटबढ़, धारणा अस्थिर भी हो सकती है। ता. 28 से 31 तक तेलों में अच्छा सुधार। उपर्युक्त फलाफल ग्रहीय गणना पर आधारित है। इसमें कभी-कभी जोखिम भी हो सकता है। अतः स्व-विवेक से काम करें।

हल्दी, जीरा, धनियां, सौंफ, दालचीनी, ईलायची, जावित्री, अजवायन तेजी-मंदी

जनवरी 2020–ता. 1 से 10 तक सुधार। ता. 11 से 23 तक घटबढ़ जारी रहेगी। जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। ता. 24 से 31 तक सामान्य सुधार संभावित है। **फरवरी**–मासारंभ से ता. 5 तक सामान्य सुधार संभावित है। ता. 6 से 18 तक अस्थिर सुधार। ता. 19 से 29 तक अच्छा सुधार। फिर भी धारणा देखकर काम करें। **मार्च**–मासारंभ से ता. 16 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 17 से 30 तक घटबढ़ धारणा अस्थिर हो सकती है। ता. 31 को कुछ सुधार। **अप्रैल**–मासारंभ से ता. 12 तक अस्थिर सुधार संभावित है। ता. 13 से 26 तक सामान्य सुधार। ता. 27 से 30 तक घटबढ़ जारी रहेगी। धारणा दिशाहीन भी हो सकती है। **मई**–ता. 1 से 10 तक अस्थिरता। ता. 11 से 23 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 24 से 31 तक सुधार संभावित है। यदि सुधार होता है तो अच्छा सुधार भी हो सकता है। **जून**–ता. 1 से 6 तक सुधार जारी रहेगा। ता. 7 से 20 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 21 से 30 तक घटबढ़ जारी। जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। **जुलाई**–मासारंभ से ता. 4 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 5 से 18 तक सुधार। ता. 19 से 31 तक अच्छा सुधार संभावित है। **अगस्त**–ता. 1 से 15 तक सुधार। ता. 16 से 29 तक सुधार जारी रहेगा। ता. 30 से 31 तक अच्छा सुधार संभव है। इस माह में तेजी की लम्बी लाईन भी बन सकती है। **सितंबर**–मासारंभ से ता. 12 तक सुधार। ता. 13 से 25 तक घटबढ़। ता. 26 से 30 तक व्यापक सुधार संभावित है। **अक्टूबर**–मासारंभ से ता. 9 तक सुधार। ता. 10 से 22 तक घटबढ़। ता. 23 से 31 तक सुधार संभावित है। **नवंबर**–मासारंभ से ता. 5 तक सुधार। ता. 6 से 18 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 19 से 30 तक व्यापक घटबढ़, धारणा अस्थिर भी हो सकती है। **दिसंबर**–मासारंभ से ता. 14 तक सामान्य सुधार। ता. 15 से 27 तक घटबढ़, धारणा अस्थिर भी हो सकती है। ता. 28 से 31 तक सुधार संभावित है।

गुड़, खाण्ड, चीनी, चाय, कॉफी, किशमिश, छुआरा, बादाम, अखरोट की तेजी-मंदी

जनवरी 2020–मासारंभ से ता. 10 तक कुछ सुधार। ता. 11 से 23 तक सुधार। ता. 24 से 31 तक घटबढ़। **फरवरी**–ता. 1 से 5 तक अस्थिर सुधार। ता. 6 से 18 तक खामोशी। ता. 19 से 29 तक सुधार। **मार्च**–ता. 1 से 16 तक कुछ सुधार। ता. 17 से 30 तक अच्छा सुधार। ता. 31 को समभाव बना रह सकता है। **अप्रैल**–मासारंभ से 12 तक समभाव। ता. 13 से 26 तक समभाव। ता. 27 से 30 तक कुछ सुधार। **मई**–मासारंभ से ता. 10 तक अस्थिर सुधार। ता. 11 से 23 तक खामोशी। ता. 24 से 31 तक सुधार संभावित है। **जून**–मासारंभ से ता. 6 तक सुधार। ता. 7 से 20 तक समभाव। ता. 21 से 30 तक घटबढ़। **जुलाई**–ता. 1 से 4 तक घटबढ़। ता. 5 से 18 तक सुधार। ता. 19 से 31 तक अच्छा सुधार। **अगस्त**–मासारंभ से ता. 15 तक सुधार। ता. 16 से 29 तक समभाव। ता. 30 से 31 तक कुछ सुधार। **सितंबर**–मासारंभ से ता. 12 तक सुधार। ता. 13 से 25 तक समभाव। ता. 26 से 30 तक सुधार। **अक्टूबर**–मासारंभ से ता. 9 तक सुधार। ता. 10 से 22 तक सुधार। ता. 23 से 31 तक अस्थिर सुधार। **नवंबर**–मासारंभ से 5 तक सुधार। ता. 6 से 18 तक अस्थिर सुधार। ता. 19 से 30 तक समभाव। **दिसंबर**–मासारंभ से ता. 14 तक कुछ सुधार। ता. 15 से 27 तक खामोशी। ता. 28 से 31 तक अस्थिर सुधार संभावित है।

लेखक-प्रख्यात ज्योतिषाचार्य पं. टुनटुन शास्त्री
व्यापार भविष्य कमोडिटी ट्रेडिंग एवं शेयर्स बाजार समीक्षक
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरांव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)
पिन-802218, मो.-09431486216, 09801873719
E-mail :tuntunshastri@gmail.com

व्यापारिक भविष्यफल प्रकाश सन् 2020 ई.

लेखक:
राम अवतार गुप्ता

जनवरी–2020

तेजी की प्रमुख तारीखें–7, 8, 10, 14, 16, 17, 20, 23 जनवरी। **मंदी की प्रमुख तारीखें**–1, 2, 3, 6, 13, 21, 27, 30, 31 जनवरी हैं।

पौष शुक्ल पक्ष–(27 दिसंबर से 10 जनवरी तक) पक्ष में सोना, चांदी में भारी घटाबढ़ी तो रुई, कपास, कालीमिर्च में प्रथम अच्छा मंदा आकर तेज तो शेयर्स मार्केट में प्रायः मंदी रहकर कहीं जोरदार मंदी का वातावरण बन सकता है। ता. 1 जनवरी बुधवार को सन् 2020 ई. का शुभारंभ होने से पठन-पाठन प्रणाली (शिक्षा) के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन होंगे। प्रथम 6-7 मास के अंदर मुनक्का, किशमिश, छुआरा, अंजीर, संतरा में अच्छा मंदा तो गुड़, गेहूं भी सस्ता बिक सकता है। ता. 4 जनवरी सुदी 9 शनिवारी–**पौषी नोमी शनैश्चर का यदि जुरे समाज। आर्द्रायां रवि तक संग्रह करो अनाज॥** यह योग आर्द्रा सूर्य (21 जून तक) अनाज स्टॉक करने की राय देता है। सुदी एकादशी कृतिका युक्त होने से लालवर्ण की वस्तुओं का स्टॉक मंदी में करके आषाढ़-श्रावण तक बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. 8 जनवरी **कुंभे शुक्र** सुभिक्ष कारक है। सफेद वर्ण की वस्तुओं में मंदी का प्रभाव पड़ेगा।

माघ कृष्ण पक्ष–बदी एकम् शनिवारी–**माघ मास की प्रतिपदा शनिवारी सुख सार। देश सुखी उत्तम उपज, आनंदित नर-नार॥** प्रजा में सुख-शांति यह योग अपार अनाज पैदा होगा, ऐसी सूचना देता है। अतः आगे फसल पर अच्छा मंदा चल सकता है। परन्तु अभी माघ मास में अनाजों में अच्छी तेजी की आशा है। अतः स्टॉक बेचना चाहिए। इसके अलावा मास में गुड़, गेहूं, चावल, मूंग, मोठ, चना, कपास, रुई, घी, बाजरा, खल, बिनौला, तिलहन, तेल आदि में भी अच्छी तेजी आने की संभावना रहेगी। ता. 14 जनवरी मंगलवारी मकर संक्रांति लालवर्ण एवं पीले वर्ण की वस्तुओं में तेजी करेगी। सोना, चांदी में घटवढ़। इस संक्रांति मास में गुंवार, हल्दी, ईमली आदि भी तेज होंगे। ता. 19 जनवरी बदी 10 रविवारी घी तेज करेगी। 3 दिन के अंदर सोना, चांदी, रुई में भारी मंदी के झटके तो यहां राहु मकर के नवांस में होने से 2 मास में रुई, कपास में भारी तेजी की संभावना रहेगी। ता. 24 जनवरी शुक्रवारी अमावस एक सप्ताह के अंदर चना में अच्छी तेजी के झटके लायेगी। सूर्य-बुध-शनि का राशि योग–**शनि सूरज बुध साथ जब इक राशि इक सेज। जौ, गेहूं, चावल, चना, जुवार, बाजरा तेज॥** उपरोक्त वस्तुओं में मास के अंत तक तेजी अथवा अच्छी तेजी का वातावरण बन सकता है। इस दौरान रुई, कपास में अच्छी तेजी तो सोना, चांदी धातुएं, उड़द, मूंग, गुवार, अरहर, दालें भी तेज होंगी।

माघ सुदी पक्ष–(25 जनवरी से 9 फरवरी तक)–पक्ष में तीन शनिवार से रुई, कपास, कालीमिर्च में भारी तेजी-मंदी दोनों चल सकती है। तीज की वृद्धि से घी, दालें मंदी होंगी। ता. 30 जनवरी बसंत पंचमी गुरुवारी से 2 दिन में सोना, चांदी में भारी मंदी। तो 2 मास के अंदर गुवार आदि सावणी फसल के मालों में भारी उतार-चढ़ाव रहेगा। रु देखकर काम करें।

फरवरी–2020

तेजी की प्रमुख तारीखें–4, 8, 14, 18, 19, 21, 25, 28 फर.। **मंदी की प्रमुख ता.**–6, 7, 10, 11, 12, 13, 17, 27 हैं।

ता. 1 फर. सुदी 7 शनिवारी–**माघ सुदी सातै पड़े शनि रवि चन्द्रवार। विग्रह भय दुर्भिक्ष से दुख पावै संसार॥** दुर्भिक्षकारी योग बनता है। व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। ता. 3 फरवरी **शते बुध** एक सप्ताह के अंदर सोना, चांदी में अच्छी मंदी के झटके तो रुई, बिनौला मंदे। अनाज, दालें, घी, तेल तेज होंगे। ता. 5 फर. **उभायां शुक्र** सफेद वर्ण की वस्तुएं, चावल, मोती, कपूर, नमक, खाण्ड, चांदी आदि में गिरावट लायेगा। तो मूल पदार्थ आलू, प्याज आदि तेज करेगा। ता. 7 फर. **धनु मंगल** घी, कपास, गुड़, सोना, चांदी, तांबा, गुवार, बाजरा, सरसों, नारियल, सर्व अनाजों में तेजी कारक तथा मास के अंत तक कहीं भी अच्छी तेजी का वातावरण भी बना सकता है। यहां शनि से एक राशि पीछे मंगल चलेगा। जब तक वर्षा न हो बाजारों में तेजी परन्तु वर्षा होगी तो मंदी का रुख हो जायेगा।

फाल्गुन मास–मास में पांच सोमवार होने से अकल्पित तूफानी चाल से मास में भयंकर तेजी-मंदी चलेगी। जो कि व्यापारियों को निहाल अथवा मालामाल कर देगा। अतः बहुत ही सावधानी से व्यापार करना ठीक रहेगा। जिन वस्तुओं में फाल्गुन मास में विशेष मंदी चले, खरीदें। उन वस्तुओं में आगे चैत्र मास में विशेष तेजी प्रायः आया करती है। ता. 10 फरवरी बदी एकम् सोमवारी से एक सप्ताह के अंदर तिलहन, दालें, अनाज, धातुएं, घी, तेल, लालवर्ण की वस्तुओं में अच्छी मंदी तो शेयर्स मार्केट में मंदी का धमाका हो सकता है। ता. 13 फर. गुरुवारी कुंभ संक्रांति भी उपरोक्त समर्थक है। बदी 6 चित्रा युक्त **"षष्ठी फागुन बदी में चित्रा करे सुभिक्ष"**। सुभिक्ष एवं मंदी कारक है। यहां अथवा तीसरे मास प्रमुख वस्तुओं में घोर मंदा लायेगी। ता. 19 फर. **पू.षा. 4 गुरु**–मिर्च, सौंफ, जीरा, किराना मंदा तो अन्य वस्तुएं घटवढ़ से कुछ तेज होंगी। मासांत में बुधास्त सोना, चांदी में मंदा लाकर तेज करेगा।

फाल्गुन सुदी पक्ष–(ता. 24 जनवरी सक 9 मार्च तक) सुदी एकम् सोमवारी शतभिषा नक्षत्र युक्त तथा त्रयोदशी शनिवारी से पक्ष में गेहूं आदि सर्व अनाज, चना, अरहर आदि दालें, तिलहन, तेल, गुड़, चीनी में तेजी चलने की संभावना रहेगी। सोना, चांदी में घटाबढ़ी अधिक रहेगी। ता. 26 फर. से 2 दिन में सोना, चांदी, लहसुन में जोरदार मंदी के झटके, तो गुड़, चीनी में तेजी की लहर चल सकती है। तथा आगे 15 दिन के अंदर सोना, चांदी में खास तेजी तो अन्य सर्व प्रमुख वस्तुएं, अनाज, चावल, दालें, तेल, घी, तिलहन, खल, बिनौला, चना आदि तेज रहेंगे।

मार्च–2020

तेजी की प्रमुख तारीखें–5, 6, 17, 18, 19, 20, 24, 25, 30, 31 मार्च। **मंदी की प्रमुख तारीखें**–2, 3, 4, 9, 27, मार्च हैं।

ता. 2 मार्च सुदी 7 सोमवारी गुड़, चीनी में अच्छी तेजी लाती है। मंदी में मौका देखकर स्टॉक करके आषाढ़-श्रावण में बेचने से लाभ। कृतिका युक्त होने से भादव बदी पक्ष में एक सप्ताह के अंदर सोना, चांदी, रुई, तांबा, गुवार, मटर, तिल, तेल, कालीमिर्च, गेहूं, अनाजों में भारी मंदी का वातावरण बन सकता है। परन्तु सुदी 8 मंगलवारी लालवर्ण की वस्तुओं, गुड़, चीनी, चना, लालमिर्च, रुई में अच्छी तेजी के झटके भी ला सकती है। अष्टमी रोहिणी युक्त है–**कुंभ मीन के अन्तरे अष्टमी रोहिणी होय। भारी से भारी तेजी अन्न में होय॥** इसका प्रभाव वृष संक्रांति काल में एक महीने के अंदर होता है। ता. 7 मार्च उ.षा. पर गुरु का प्रवेश होगा। इस नक्षत्र में गुरु रहते हुये गुड़, चीनी, घी, खल, बिनौला, हल्दी आदि में घटवढ़ से जोरदार तेजी लायेगा। मोटे अनाजों में मंदी की लम्बी लाईन चल सकती है। नक्षत्रों में शनि गुरु का ऐसा योग जुलाई तक तथा नवंबर से मार्च 2021 तक है। जिससे व्यापारिक वस्तुओं की कीमतों में जोरदार

तेजी-मंदी होती है। ता. 9 मार्च होलिका दहन सोमवारी पूनम पू. फा. युक्त है। अत्यंत सुभिक्षकारी योग है। **पू.फा. फागुन पूर्णिमा पूर्ण पूरण सुभिक्ष।** अत: आगे अनाज, दालों, तिलहन पदार्थ, प्रमुख वस्तुओं में अच्छा मंदा आवे, आश्चर्य नहीं।

चैत्र कृष्ण पक्ष–(10 से 24 मार्च तक)–पक्ष या मास में आलू, प्याज, सब्जियां, तिलहन, दालें, गुवार, सावणी फसल का माल, घी आदि में तेजी अथवा अच्छी तेजी तो बदी पक्ष में चांदी में अच्छी घटबढ़ से अच्छी मंदी तो सोना तेज रह सकता है। ता. 14 मार्च शनि दृष्ट मीन की संक्रांति शनिवारी से प्रमुख वस्तुओं में हींग, जीरा, सोंठ, किराना, लालवर्ण की वस्तुएं तेज तो चांदी, ईलायची, लौंग, दालें, सब्जियों में मंदी तो अनाज का स्टॉक खाली कर लेना चाहिए। ता. 22 मार्च मकर राशि में शनि मंगल का योग–**कर्क मीन कन्या मकर जब शनि मंगल वास। युद्ध निकलता भूमि पर अरु धन-धान्य विनाश॥** एक सवा महीने के अंदर एक बार प्रमुख सर्व वस्तुओं, सोना, चांदी आदि में कहीं अच्छी तेजी का वातावरण बन सकता है।

चैत्र सुदी पक्ष–(25 मार्च से 8 अप्रैल तक)–नव संवत् 2077 वि. का शुभारंभ होगा। संवत् का राजा बुध तथा मंत्री चन्द्रदेव होने से व्यापार में भारी घटाबढ़ी चलेगी। पक्ष में तीन बुधवार–**पड़वा आठै पूर्णिमा जो बुधवारी आय। सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥** अत: पक्ष में सभी खाद्य वस्तुओं में तेजी परन्तु सोना, चांदी में प्रथम भारी मंदा आकर पक्ष के अंत में अच्छी तेजी संभव।

अप्रैल 2020

तेजी की प्रमुख तारीखें–2, 3, 7, 9, 14, 15, 16, 24, 28, 29, 30 अप्रैल। **मंदी की प्रमुख ता.**–1, 13, 21, 27 हैं।

ता. 5 अप्रैल **श्रवणे भौम:–श्रवण नखत पर जब कभी हो कोई ग्रह क्रूर। अन्न भाव महंगा रहे, गेहूं तेज जरूर॥** अनाज तेज होंगे। सोना, चांदी, गुड़, चीनी में अच्छी तेजी संभव। रुई, चावल में भारी घटाबढ़ी दो सप्ताह के अंदर चलेगी।

वैशाख मास–पांच गुरुवार से मास में उपज की वस्तुएं मंदी रहेंगी। स्टॉक करना चाहिए। आश्विन मास तक विशेष लाभ की आशा रहेगी। अधिक जानकारी के लिए सुपर स्पेशल चांस मंगाकर पढ़ें। ता. 13 अप्रैल मेष की संक्रांति लालवर्ण की वस्तुएं, तिलहन, हल्दी, गुवार, मूल पदार्थ आदि तेज तो अरहर, मूंग, मटर आदि मंदा करेगी। ता. 18 अप्रैल रेवती बुध एक सप्ताह में चांदी में भारी मंदी तो तिलहन, घी, गुड़, दालों में मंदा तो लालवर्ण की वस्तुएं, लालमिर्च आदि में तेजी कारक है।

वैशाख शुक्ल पक्ष–(24 अप्रैल से 7 मई तक)–सुदी एकम् भरणी युक्त है। गुड़, चीनी, घास-चारा मंदा करेगी। तम्बाकू में विशेष मंदा। स्टॉक करके तीन मास में बेचने से उत्तम लाभ तो हल्दी चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ। ता. 28 अप्रैल सुदी 5 मंगलवारी पांच दिन के अंदर कभी भी सोना, चांदी, जीरा, हल्दी, रुई, प्रमुख शेयर्स, कालीमिर्च आदि में जोरदार तेजी के झटके तो अनाज, तिलहन, दालों, खल, बिनौला में भी पक्ष के अंत तक अच्छी तेजी ला सकती है।

मई–2020

तेजी की प्रमुख तारीखें–1, 12, 13, 18, 19, 29, 30 मई। **मंदी की प्रमुख तारीखें**–4, 8, 11, 14, 21, 22, 23 मई।

ता. 1 मई भरणी बुध एक सप्ताह में धातुऐं, रुई, कालीमिर्च, तिलहन, दालें, अनाज, हल्दी में गिरावट लायेगा। ता. 4 मई **कुंभे भौम:** 15 दिन के अंदर चांदी, रुई में भारी घटाबढ़ी तो अनाज, गुड़, चीनी, सोना, चना, गुवार, भूमि-मकान-प्लॉट, तांबा में भारी तेजी ला सकता है। ता. 7 मई पूनम स्वाती युक्त चना में अच्छी तेजी के झटके तो 3-4 मासों में गुड़, खाण्ड, चीनी में भारी तेजी का वातावरण बना सकता है। कहीं मंदी में स्टॉक करें।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष–(8 से 22 मई तक)–बदी एकम् शुक्रवारी–**जेठ बदी प्रतिपदा को सोम शुक्र गुरुवार। वर्षा हो अत्यंत ही उत्तम पैदावार॥** आगे वर्षा काल में महान वर्षा करेगी। तथा श्रेष्ठ उपज की सूचना देती है। ता. 11 मई शनि वक्री से खाद्य तेलों, क्रूड आयल, तिलहन, दालें, अनाज तेज होगा। तथा एक मास के अंदर घटबढ़ से भारी तेजी भी। ता. 14 मई वृष संक्रांति गुड़, चीनी, खल, बिनौला, सरसों, गुवार, लालमिर्च, लालवर्ण की वस्तुएं तेज तो सफेद रंग की वस्तुएं, रुई, चावल, चांदी आदि में मंदी कारक है। पंचकों में रुई, कपस, कालीमिर्च आदि में भारी तेजी का वातावरण बन सकता है। तो बाद में जोरदार मंदी भी आयेगी। बदी 10 रविवारी–**जेठ बदी की दशमी जो शनि रवि मंगल होय। पानी पड़ै न धरा पर बिरलो जीवे कोय॥** दुर्भिक्षकारी योग है। प्रमुख बाजारों में तेजी का संचार होगा। बदी 12 रेवती युक्त चांदी में अच्छी मंदी के झटके तो खाद्य पदार्थ तेज तो प्राकृतिक प्रकोप, तूफान आदि से नुकशान की आशंका है। ज्येष्ठ की अमावस्या शुक्रवारी है। कभी-कभी 5-6 मासों में खाद्य वस्तुओं के मूल्य को आधा तक कर देती है। अत: सावधानी से काम करें। तेजी में स्टॉक बेचते रहें।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष–(23 मई से 5 जून तक)–सुदी पक्ष में रुई, कालीमिर्च में अच्छी मंदी की आशंका है। गुवार में रोज-रोज की घटाबढ़ी चलेगी। ता. 30 मई शुक्रास्त पश्चिम तथा 9 जून को उदय होगा। **अस्त उदय सप्ताह में अगर शुक्र हो जाय। भ्रान्त अशान्त प्रजा रहे दुख नितान्त अधिकाय॥** ज्येष्ठ में अस्त होने से महावर्षा कारक। आषाढ़ में अनाजों में भारी तेजी। रुई, कालीमिर्च, सोना, चांदी आदि में तेजी कारक।

जून–2020

तेजी की प्रमुख ता.–1, 9, 10, 11, 12, 16, 22, 23, 30 जून। **मंदी की प्रमुख ता.**–5, 6, 15, 18, 19, 26 जून।

ता. 5 जून शुक्रवारी पूनम सुदी 14 का क्षय तेजी कारक है। **पड़वा पाचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे तेजी हो जब छीन॥** अनाज, चना में अच्छी तेजी के झटके तो चावल, सोना, चांदी में अच्छी मंदी कारक है। दक्षिण पूर्वी हिन्द में मानसून चालू होगा।

आषाढ़ मास–मास में 5 शनि-रविवार हैं। **पांच शनैश्चर साढ़ में माघ पांच रविवार। फागुन मंगल पांच हों नासै सब संसार॥** मास में व्यापक जन-धन की हानि की आशंका। बदी 2 रविवारी रुई में अच्छी तेजी के झटके एक सप्ताह के अंदर लायेगी। तो बाद में पक्ष के अंत तक भारी मंदी की आशंका। बदी पक्ष में कहीं शेयर्स मार्केट में जोरदार मंदी का धमाका संभव। ता. 9 जून बदी 4 मंगलवारी व 7 शुक्रवारी से पक्ष में सोना, चांदी, दालें, अनाज तेज करेगी। ता. 14 जून बदी 9 रविवारी अकाल सूचक है। मिथुन की संक्रांति मूल पदार्थ आलू आदि, गुड़, रस पदार्थ, अनाज, तिलहन, हल्दी, गुवार आदि में एक मास के अंदर भारी तेजी का वातावरण घटबढ़ से बना देगी। संक्रांति खर्पर योग युक्त रिक्ता तिथि में होने से अच्छी तेजी समर्थक है। अत: मास में अच्छी तेजी का वातावरण बना सकती है। ता. 15 जून को सोना, चांदी में अच्छी मंदी के झटके तो अनाज, मूल पदार्थ, तिलहन तेज रहेगा। ता. 20 जून बदी 14 शनि रोहिणी युक्त है। **आषाढ़ बदी चौदश दिना होय रोहिणी योग। कर्फ्यू अरु कन्ट्रोल से दुख पावै सब लोग॥** किसी क्षेत्र में उपद्रव, दंगे भड़क उठें जिससे कर्फ्यू आदि से जनता परेशान रहे। यह योग वर्षा की कमी, अकाल दुर्भिक्षकारी तेजी कारक है। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। ता. 21 जून रविवारी मावस चना खरीदने की राय देती है। आगे तेजी आयेगी। आज सूर्यग्रहण होने से अनाज, मूल पदार्थ तेज। कुछ भी माल खरीदो जो मंदे स्तर पर हो। उनमें आगे दो-तीन मासों में अच्छी तेजी। ता. 29 जून भड्डली नवमी सुभिक्षकारी है। कार्तिक मास मंदा रहे। धनु राशि में गुरु-दो मास के अंदर रुई में जोरदार मंदी तो अनाज के व्यापार से लाभ। धातुओं, हल्दी, चावलों में अच्छी तेजी कारक।

जुलाई—2020

तेजी की प्रमुख ता.—1, 6, 7, 11, 16, 21, 22, 25, 27, 28 जुलाई। **मंदी की प्रमुख ता.**—2, 3, 9, 13, 15, 23, 29, 30 जुलाई।

ता. 2 जुलाई से 2 दिन के अंदर सोना, चांदी, रुई, कालीमिर्च, चावल, चना, गेहूं, उड़द आदि दालें, तिलहन पदार्थों में अच्छी मंदी के झटके संभव। रविवारी पूनम इन्हीं वस्तुओं में एक सप्ताह के अंदर अच्छी तेजी के झटके लायेगी तो यहां पुनर्वसु सूर्य व उ.षा. पर शनि चल रहा है। **पू.षा., उ.षा. शनैश्चर पुनर्वसो पर आदित्य। भय भासै नाहे जलद त्रासे रैयत नित्य॥** 13 दिन तक वर्षा नहीं हो तो प्रजा त्रास से भयभीत तथा प्रमुख वस्तुओं में तेजी का संचार होगा।

श्रावण मास—मास में 5 सोमवार से सोना, चांदी, गुड़, चीनी में घोर तेजी आकर अच्छी मंदी तथा अन्य सर्व प्रमुख वस्तुओं में मास में ऐसी खतरनाक तेजी-मंदी चलेगी कि व्यापारियों को संभलना मुश्किल होगा। व्यापारी हैरान-परेशान रहेंगे। ता. 6 जुलाई बदी एकम् वैधृति योग से तिलहन, अनाजादि, दालों का संग्रह से सिंह संक्रांति काल के अंत में बेचने से लाभ होगा। श्रावण बदी 3 को पंचक लगेंगे। यह योग अतिवर्षा कारी है। वैसे भी पंचकों में वर्षा होना फसलों के लिए भी अच्छी होती हैं। यदि पंचकों में वर्षा न हो तो समय अच्छा नहीं होता। **श्रावण बदी तीज में पंचक लगे जो आन। जल उपद्रव रुके नहीं कष्ट होय महान॥** ता. 11 जुलाई 6 शनिवारी गेहूं, अनाज स्टॉक की राय देती है। आगे कार्तिक से फाल्गुन तक उत्तम लाभ। ता. 16 जुलाई कर्क संक्रांति प्रवेश से आगे भादव में वर्षा की कमी रहे। यहां सूर्य शनि आमने-सामने है तथा शनि उ.षा. पर चल रहा है। **उ.षा. पर शनि देव हो शनि से सप्तम सूर। वर्षा नासै मूल से प्रजा पीड़ा से भरपूर॥** वर्षा की कमी रहे। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी का संचार हो। ता. 20 जुलाई श्रावण की सोमवती मावस व्यापारियों के हक में अच्छी नहीं होती। लाभ होते-होते हानि हो जाती है। **सोमवती तीनऊ बुरी सावन कातिक माह। गुण करती अवगुण करे सुन लो तुम यों साह॥**

ता. 26 जुलाई पुनर्वसु बुध एक सप्ताह के अंदर रुई, खल, बिनौला, गुवार, सोना, चांदी, तिल तेलों में अचानक कहीं अच्छी मंदी संभव। अनाज, दालें तेज। सुदी 7 सोमवारी पक्ष में गुड़, चीनी में अच्छी तेजी लायेगी। तो अष्टमी का क्षय आगे कार्तिक मास में किसी राज्य का मंत्रीमण्डल भंग करेगा। **शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि का नाश। छत्र भंग का योग है** आगे कार्तिक मास॥ अष्टमी का क्षय दुर्भिक्षकारी है। अनाज, दालें तेज तो रुई, कपास, कालीमिर्च में तीन सप्ताह के अंदर जोरदार मंदी संभव है।

अगस्त—2020

तेजी की प्रमुख ता.—7, 8, 12, 17, 18 अगस्त। **मंदी की प्रमुख ता.**—3, 4, 6, 10, 24, 25, 26, 27 अगस्त हैं।

ता. 3 अग. सोमवारी पूनम श्रवण युक्त है—**पूनम को श्रवण रहे सुख सुभिक्ष सर्वत्र।** महाश्रेष्ठ। आगे उत्तम उपज का परिचायक है। ध्यान रखिए। पुष्ये बुध एक सप्ताह के अंदर संसद में कोई कानून आने से सोना, चांदी में अच्छा मंदा। अन्य मंदी वस्तुएं खरीदना उचित।

भाद्रपद मास—मास में गुड़, चीनी तेज रहे। बदी पक्ष में किराना, अनाज, दालें, तेलों, धातुओं में प्रथम मंदा तथा रुई, शेयर्स मार्केट में प्रथम भारी मंदा आकर तेज होकर पक्ष के अंत तक भारी तेजी आयेगी। सुदी पक्ष में उपरोक्त वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी चलेगी। ता. 6 अग. बुध अतिचारी चलेगा। 15 दिन के अंदर खल-बिनौला, हल्दी, गुड़, रुई, सोना, चांदी में प्रथम मंदा आकर अच्छी तेजी की आशा रहेगी। ता. 16 अग. सिंह संक्रांति चांदी में अच्छी तेजी तो अनाज तेज करेगी। तथा मेष मंगल प्रवेश शनि से केन्द्र स्थान में होने से मंदी की लाईन में अचानक भारी तेजी। महीना-बीस दिन सोना, चांदी, लालवर्ण की वस्तुएं, मूल पदार्थ आलू, प्याज, धनियां, हल्दी, गुड़, रुई में जोरदार उतार-चढ़ाव रहेगा। सावधानी से काम करें। ता. 20 अग. प्रतिपदा का क्षय तथा पंचमी रविवारी से पक्ष में रुई, सूत में अच्छी तेजी तो सोना, चांदी, धातुओं में प्रथम तेजी आकर अच्छी मंदी की आशंका। ता. 26-27 अग. को अच्छी मंदी की संभावना रहेगी। ता. 31 अग. उ.फा. बुध एक सप्ताह के अंदर सोना, चांदी, रुई, कालीमिर्च में मंदी तो उड़द, मूंग, अरहर में तेजी रहेगी।

सितंबर—2020

तेजी की प्रमुख ता.—1, 14, 15, 21, 22, 26 सितंबर। **मंदी की प्रमुख ता.**—4, 7, 8, 11, 18, 23, 25, 28 सितंबर।

प्रथम आश्विन मास—मास में सरकार द्वारा चोर बाजारी की रुकावट, छापामारी से व्यापारियों में हड़कम्प। बदी 5 को बुधोदय से **आश्विन में बुध का उदय महंगी बिकै कपास।** अतः रुई, कपास तेज रहेगा। बदी पक्ष में घी, देशी घी में अच्छी तेजी संभव होगी। ता 10 सितंबर मंगल वक्री होगा। अपने वक्र काल 13 नवंबर तक सभी वस्तुओं में खतरनाक तेजी-मंदी की चाल देगी। 5 दिन पूर्व से सोना, चांदी में अच्छी तेजी के साथ यहां अच्छी मंदी भी तो खल, बिनौला, तेल, तिलहन, गुड़, चीनी, प्रमुख किराना बाजारों में अच्छी तेजी का वातावरण बना देगा। ता. 13 सितंबर गुरु मार्गी अनाज, दालें तेज तो रुई में अच्छी मंदी करेगा। यहां से शनि-मंगल दोनों साथ-साथ वक्री चलेंगे। **मीन मेष वृष सिंह धनु मकर राशि मंगल शनि वक्र। रोग युद्ध विग्रह भय व्याधि चले धान्य पशु नाशक चक्र॥ जब तक मार्गी चाल न होवे तब तक मनुज रहे बेहाल। एक साथ ही शनि मंगल की रहती तब तक वक्री चाल॥** उपरोक्त उपद्रव दुर्घटना कारक है। तथा प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी का संचार होगा। 15 दिन गेहूं, चना, तेज रहे। गुरुवारी मावस वर्षाकारी है। दालें, सोना, चांदी घटबढ़ से मंदा होगा। ता. 20 सित. सुदी 4 का क्षय पक्ष में दालें, घी, तेलों में अच्छी तेजी संभव। तो चौथ रविवारी-**आश्विन शुक्ला चतुर्थी को यदि आवे रविवार। घी बेचो अन्न संग्रहो आगे लाभ विचार॥** ता. 27 सित. **सिंहे शुक्र** सोना, तांबा, चना, गेहूं, अनाज, घी, लालवर्ण की वस्तुएं तेज करेगा। **सिंह शुक्र जब होय भवानी। चालै पवन ना वर्षे पानी॥** वर्षा में कमी करेगा। ता. 29 सित. को शनि मार्गी होगा। तीन दिन के अंदर चालू रुख पलट जायेगा। रुई, शेयर्स, कालीमिर्च में भारी मंदी तो तिलहन, दालें, आलू, प्याज, लालमिर्च तेज करेगा।

अक्टूबर—2020

तेजी की प्रमुख ता.—6, 12, 13, 14, 16, 28, 29 अक्टूबर। **मंदी की प्रमुख ता.**—2, 5, 7, 8, 9, 19, 21, 22, 26 अक्टूबर हैं।

द्वितीय आश्विन मास—मास में 5 शुक्रवार तथा 5 शनिवार हैं। तथा दोनों पक्षों की एकादशी मंगलवारी है। अतः मास में खल, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे। तथा एवरेज तौर पर सर्व प्रमुख वस्तुओं में भारी घटावढ़ी रहेगी। तेज वस्तुएं बेचें। ता. 7 अक्टू. रोहिणी व व्यतिपात योग से एक सप्ताह के अंदर रुई, कालीमिर्च, प्रमुख शेयर्स, सर्व धातुएं, गुंवार, मटर, तिल, तेल, नारियल, रेशम, उड़द आदि में जबरदस्त मंदी आ सकती है। ता. 9 अक्टू. पू.फा. शुक्र 15 दिन के अंदर वर्षा कारक एवं मंदी समर्थक है। दवाईयां तेज होंगी। ता. 13 अक्टू. बुधास्त पश्चिमे सोना, चांदी, रुई में मंदी कारक। परन्तु सूर्य-मंगल अपोजिशन में होने से अमावस्या तक तेजी भी रह सकती है। तथा सप्ताह 10 दिन में लालवर्ण की वस्तुओं में अच्छी तेजी ला सकती है। ता. 16 अक्टू. शुक्रवारी मावस हस्त नक्षत्र युक्त होने से दुर्भिक्ष, फसलों को नुकसान। चांदी, शेयर्स में तेजी के झटके तो गेहूं, चना

में अच्छी तेजी कारक है। ता. 17 अक्टू. सुदी एकम् शनिवारी-**आश्विन शुक्ला प्रतिपदा जो शनिवारी होय। अन्न बेचिये क्योंकि फिर भारी मंदी होय॥** तुला की संक्रांति शनिवारी लाल वर्ण, काले वर्ण, पीले वर्ण की वस्तुओं में अच्छी तेजी कारक। तो धान, कपास, रुई में मंदी कारक। सुदी पक्ष में तीन शनिवार से खाद्य पदार्थ, रुई, कालीमिर्च आदि में अच्छी मंदी चलेगी। ता. 23 अक्टू. कन्या शुक्र से फसलों को व्यापक नुकसान। तीन सप्ताह के अंदर चावलों में अच्छी तेजी कारक तो चांदी, गुड़ में अच्छी मंदी। यहां मंगल-शुक्र का अपोजिशन योग से एक मास के अंदर गुंवार, जीरा, तिलहन, दालों में अच्छा मंदा चल सकता है। ता. 31 अक्टू. पूनम अश्विनी युक्त से सप्ताह-10 दिन में तिलहन, तेलों, सरसों, अरहर, दालों में धमाकेदार मंदी आ सकती है।

नवंबर—2020

तेजी की प्रमुख ता.—5, 10, 11, 12, 17, 18, 24, 25, 26 नवंबर। **मंदी की प्रमुख ता.**—2, 9, 16, 23, 27, 30 नवंबर।

कार्तिक मास—बदी पक्ष में तिथि वृद्धि होकर तिथि क्षय तथा सुदी पक्ष में तिथि क्षय होकर पक्ष में ही तिथि वृद्धि होने से मास में प्रमुख वस्तुओं में काफी हलचल रहेगी। अतः सावधानी से काम करें। सुपर स्पेशल रिपोर्ट मंगाने के लिये सम्पर्क करें-9416110996। ता. 5 नवं. बदी पंचमी आर्द्रा युक्त है-**कार्तिक कृष्णा पंचमी को आर्द्रा आ जाये। कम वर्षा हो घास तृण चारा तेज बिकाय॥** यह योग मास में पशु आहार तेज करेगा। ता. 7 नवं. छट की वृद्धि रुई में शीघ्र तेजी ला सकती है। तथा अनाज तेल के बीजों को तेज करेगी। मंदी में खरीदो। ता. 11 नवं. चित्रा शुक्र से रुई में भारी घटाबढ़ी। सोना, चांदी, शेयर्स, गेहूं, जौ, चना, गुड़, कालीमिर्च में मंदी तो दालों में तेजी। ता. 14 नवं. शनिवार 14:20 बजे उपरांत अमावस्या शुभ दीपावली को स्वाती नक्षत्र एवं आयुष्मान योग का संयोग रहेगा। **कार्तिक मावस के दिना स्वाती नखत विचार। गिरे कहीं भूकम्प से पर्वत या मीनार॥ स्वाती में दीपक जलै, विशाखा खेले गाय। धना गयन्दा रण चढ़ै, उपजी खाख नसाय॥** दुर्भिक्षकारी योग है। प्रमुख वस्तुओं में भयंकर तेजी दुयोढ़े-दुगुने तक आ सकती है। ता. 20 नवं. मकर राशि में गुरु का प्रवेश होकर शनि के साथ राशि योग बनायेगा। **समसप्तक शनि गुरु रहे अथवा हो इकटोर। प्रजा नाश अरु अन्न में महंगाई का जोर॥** तीन मास गेहूं, चना आदि में तेजी कारक। रुई, कपास में भारी तेजी अथवा भारी मंदी चलेगी। ता. 21 नवंबर सुदी 7 शनिवारी-**कार्तिक शुक्ला सप्तमी जो शनिवारी आव। चावल, चांदी, रुई, सूत, सन, पटसन महंगा भाव॥** सफेद वर्ण की वस्तुएं तेज होंगी। तथा दो-तीन मास में अच्छी तेजी का वातवरण बना सकती है। ता. 30 नवं. सोमवारी पूनम बुधास्त पूर्व 5 दिन सोना, चांदी में अच्छी तेजी। परन्तु अनुराधा का बुध अच्छी मंदी भी करता है। अतः घटवढ़ रहेगी। खल-बिनौला, मूंग, मोठ में भारी मंदी ला सकता है।

दिसंबर—2020

तेजी की प्रमुख ता.—2, 11, 12, 18, 22, 24, 25, 29 दिसंबर। **मंदी की प्रमुख ता.**—1, 4, 7, 14, 15, 23 दिसंबर।

मार्गशीर्ष मास—मास में 5 मंगलवार तथा बुधवार हैं। जिससे युद्ध, हत्यायें, मंत्री मण्डल परिवर्तन, किसी देश का पतन संभव है। बदी पक्ष में खल, बिनौला, तिलहन, तेलों में अच्छी तेजी की आशा तो अनाज मंदा। लालवर्ण की वस्तुएं तेज रहें। सुदी पक्ष में सर्व वस्तुएं तेज। अच्छी तेजी रह सकती है। मास में किसी नामी सटोरिया का दिवाला निकल सकता है। ता. 3 दिसंबर बदी तीज आर्द्रा युक्त है-स्टॉक खाली करने की राय देता है। **मंगसिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आय। राजा प्रजा सुखी रहे मंदा धान्य बिकाय॥**

ता. 6 दिसं बदी छट रविवारी तथा दशमी गुरुवारी रुई में प्रथम दो-तीन दिन मंदा रहकर फिर पक्ष के अंत तक अच्छी तेजी तो घी तेज होगा। ता. 8 दिसंबर ज्येष्ठा बुध एक सप्ताह-10 दिन में घी, गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल, मूंग, मोंठ, आलू, प्याज, हरी सब्जियां, मूंगफली आदि में घटवढ़ से भारी तेजी ला सकता है। तो नौमी बुधवारी वर्षा में कमी से आगे सूखा पड़े। ता. 12 दिसं बदी 12 का क्षय-**मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाय। कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाय॥**

ता. 14 दिसं. सोमवती मावस मंदी कारक है। तीन दिन के अंदर सर्व प्रमुख वस्तुओं, सोना, चांदी, अनाज, तिलहन, किराना, दालों, रुई, कपास, कालीमिर्च आदि में कहीं भी अच्छा मंदा लायेगी। ता. 15 दिसंबर धनु संक्रांति मंगलवारी खर्पर योग युक्त है-**शनिवारी संक्रांति फिर दूजी हो रविवार। तीजी मंगलवार को खर्पर योग विचार॥** दुर्भिक्षकारी है। अरहर, मटर, मूंग में मंदी कारक तो लालवर्ण की वस्तुएं, गुड़, लालमिर्च आदि, सोना, चांदी, अनाज, चना, गुंवार, मक्का, सरसों, चावल आदि में तेजी कारक है। सुदी 2 बुधवारी पक्ष में घी, रुई, तिलहन पदार्थों में अच्छी तेजी तथा आलू, प्याज, मूल पदार्थ भी अच्छे तेज होंगे।

ता. 20 दिसं सुदी 6 रविवारी तथा दशमी गुरुवारी भी पक्ष में उपरोक्त समर्थक है। रुई में और अधिक तेजी आ सकती है। ता. 23 दिसंबर सुदी 9 बुधवारी-**मंगसिर नोमी रेवती बुधवारी दुर्भिक्ष।** दुर्भिक्षकारी है। उ.षा. 4 गुरु एवं मेष का मंगल एक मास के अंदर खल, बिनौला, घी, सोना, चांदी, तांबा, हल्दी, धनियां, मूल पदार्थ आलू आदि, लाल वर्ण की वस्तुएं चना, गुड़, मसूर आदि में तेजी तथा बीच-बीच में अच्छी तेजी का वातवरण भी बना सकता है। ता. 25 दिसं. पू.षा. बुध-एक सप्ताह के अंदर अनाज मंदा तो सोना, चांदी में घटवढ़ से अच्छी मंदी कारक। ता. 30 दिसंबर बुधवारी पूनम-रुई, कपास, तिलहन पदार्थ, दालों में तेजी के झटके तो अलसी में विशेष तेजी कारक है।

आवश्यक सूचना

नोट—यह लेख ग्रहों की विभिन्न पोजीशनों को आधार बनाकर लिखा गया है। होना न होना ईश्वराधीन है। लाभ-हानि में हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। यह लेख सूक्ष्म रूप से लिखा है। सम्पूर्ण डिटेल जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तक मंगाकर लाभ उठाएं।

भविष्यफल प्रकाश सन् 2020 ई.

पुस्तक में गुंवार, गेहूं, चना, जौ, मक्का, उड़द, बारदाना, पाट, जूट, मूंग, मटर, अरहर, मिर्च, इलायची, आजवायन आदि किराना सामान, शेयर्स आदि के दैनिक लाईनें, माल खरीदने-बेचने की तारीखें, स्टॉक करने का मासिक विश्लेषण, लाभकारी चांस लिखे गये हैं। कार्यालय द्वारा सभी प्रमुख व्यापारी वस्तुओं के सुपर स्पेशल चांस बनाये जाते हैं। एक प्रति का मूल्य 325/-रु. व डाकखर्च 25/-रुपया अलग से, 350/-रुपये का मनीआर्डर भेजकर मंगवा सकते हैं। पुस्तक का पंचवर्षीय शुल्क 1300/-रुपये है। कार्यालय द्वारा उपरोक्त सभी वस्तुओं की एक वर्ष की फीस 3500/-रुपये मात्र है। 6 मास 1800/-रुपये मात्र है। सोना, चांदी, इन्दौर तेल, वायदा दैनिक टाईम सहित बनाई जाती है। एक मास की फीस 1000/-रुपये है। तथा छः माह 5000/-रुपये मात्र है। एक वर्ष की फीस 10000/-रुपये है। तथा शेयर्स मार्केट प्रतिदिन टाईम सहित रिपोर्ट बनाई जाती है। एक मास की फीस 900/-रुपये तथा 6 मास की फीस 4500/-रुपये तथा एक वर्ष की फीस 9000/-रुपये मात्र है। मंगाकर लाभ उठायें। विशेष अधिक जानकारी के लिये नीचे दिये गये पते पर सम्पर्क करें। हमारा पता:-

लेखक: **श्री रामावतार गुप्ता "व्यापार भूषण"**
राव उमराव सिंह मार्किट, आर्य समाज रोड,
नई सब्जी मण्डी, पोस्ट-रेवाड़ी (हरियाणा)-123401
Mob+Whatsapp: 9416110996, 7400300094

व्यापारिक भविष्य फल वर्ष 2020-2021

गणित कर्ता एवं भविष्यवक्ता:-
प्रवीन कुमार जैन, डॉ. उमा जैन

गत् अनेक वर्षों से ज्योतिष जगत की सर्वश्रेष्ठ जन्त्री-पंचाग **'श्रीबापू गांधी राष्ट्रीय पंचांग'** में प्रकाशित हमारा कमोडिटी बाजार का ग्रह गोचर आधारित आंकलन सर्वथा सत्य होकर पूर्वाचार्यों के सिंद्धातों की सत्यता एवं सफलता को प्रतिष्ठित कर रहा है। वास्तव में तो हमारा प्रयास मात्र ज्योतिष की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करना भर रहा। इस वर्ष इन्हीं पृष्ठों के माध्यम से हम कमोडिटी बाजार की वर्ष 2020-21 की संभावित गतिविधियों का आंकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। यह आंकलन पूर्णतया वैदिक ज्योतिष पर आधारित है। हमें वैदिक ज्योतिष पर पूर्ण आस्था एवं विश्वास है। इस माध्यम से सदैव ही अत्यन्त सटीक परिणाम हमें प्राप्त हुए हैं।

ई. सन् 2020 का शुभारम्भ बुधवारी पौष शुक्ल षष्ठी से हुआ है। वर्ष 2020 में गुरु तथा शनि का राशि परिवर्तन मकर में तथा राहु का वृष राशि में हुआ है। मंगल, गुरु तथा शनि अस्त नहीं होंगे। 06 अप्रैल 2021 में गुरु का प्रवेश कुंभ राशि में होगा।

चैत्र मास-मास पांच मंगलवार तथा पांच बुधवार युक्त है। मास में-पांच मंगलवार युत होने से-**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** पश्चिमी देशों में भारी रक्तपात, आंतकवाद की घटनायें घटित होंगी। लाल वस्तुओं तथा धान्यों में तेजी आयेगी। पांच बुधवार होने से **बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तम सुभिक्षं च प्रजायेत॥** वर्षा में घटबढ़ रहेगी। उत्तम कृषि होगी। धान्यादि के भाव सम रहेगा।

25 मार्च-शुक्र कृतिका में 05।28 पर-रुई, सूत, कपास, सन, बिनौला, तिल, सरसों, तेल, चांदी, सोना, तांबा, पीतल में मंदा आयेगा। अन्न तथा भूसा का उत्पादन अच्छा होगा। **28 मार्च**-शुक्र वृष में 15।38 पर- सोना में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा। चावल, घी, शेयर्स में गिरावट के बाद तेजी बनेगी। जौ, गेहूं, चना, मटर आदि अनाज तेज रहेंगे। **31 मार्च**-बुध पू.षा. में 07।58 पर-चांदी में घटबढ़ चलेगी। गुड़, खांड, रुई, धान्य एवं चावलों के भावों में समता रहेगी।

अप्रैल-06 अप्रैल मंगल श्रवण में 00।00 पर-धान्य उत्पादन कम होगा। तिल, तैल, गेहूं, जौ, चना, तांबा, पीतल, जस्ता, सोना, चांदी, अफीम में तेजी बनेगी। सोना, चांदी में साधारण तेजी बनेगी। रुई में घटबढ़ रहेगी। **07 अप्रैल**-बुध मीन में 14।23 पर-उत्तम वर्षा से पशु आहारों की उपज अच्छी रहेगी। रुई, कपास, बिनोला में तेजी बनेगी। सोना, चांदी तेज होकर मंदे होंगे। मादक पदार्थों, गेहूं, चना, गुड़, शक्कर, घी, तैल, मूंगफली अरण्डा, बिनौला तथा रुई में मंदा आयेगा। **08 अप्रैल**- शुक्र रोहिणी में 16।01 पर-श्रीफल, सरसों, सूत, सन, खारी, मुनक्का तथा सुपारी में मंदा आयेगा। चांदी, रुई में तेजी आयेगी।

बैशाख मास-पांच गुरुवार होने से-**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते॥ विग्रह पश्चिमी देशे खड्ग युद्धञ्च जायते॥** पश्चिमी देशों में विग्रह होंगे। सशस्त्र युद्ध का योग बनेगा। व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। रुख मंदे का रहेगा। रसकस की हानि से रसादि में तेजी चलेगी। **09 अप्रैल**-बुध उ.षा. में 19।23 पर-पशुओं में रोगों का प्रकोप समाप्त होगा। चांदी में घटबढ़ चलेगी। गुड़, खांड, रुई, धान्य एवं चावलों के भावों में समता रहेगी।

13 अप्रैल-सूर्य मेष में 20।23 पर-सभी प्रकार के कपास, सूत, कपड़ा, गुड़, घी तैल, चांदी, चन्दन, कुसुंभा, मजीठ तथा लाल रंगों की वस्तुओं तथा किराना में तेजी बनेगी। धान्यों में कहीं तेज तो कहीं मंदा रहेगा। नारियल, सुपारी आदि फल, रुई आदि तौल से बिकने वाली वस्तुयें, गुड़, खांड, तिल तैल आदि में तेजी रहेगी। सभी प्रकार की धातुओं तथा रसकसों का उत्पादन बढ़ेगा। बाजार मूल्यों में गिरावट रहेगी। **15 अप्रैल**-बुधास्त पूर्व में रात्रि 23।53 पर-अन्न तथा धान्यों में मंदा रहेगा। **17 अप्रैल**-बुध रेवती में 21।43 पर-चांदी, गुड़, खांड, घी, तैल, सरसों, तिल तथा तिलहनों में मंदा आयेगा। लाल मिर्च, लौंग, मजीठ, लाल चन्दन तथा लाल रंग की वस्तुओं, गेहूं, गेरू, कुंकुम, कपूर, केसर में तेजी बनेगी।

25 अप्रैल-बुध मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में 02।35 पर, मंगल धनिष्ठा में 04।53 पर-चौपायों, तांबा, लोहा, पीतल, जस्ता, सोना, चांदी, मूंगा तथा बहुमूल्य रत्नों में तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मोंठ, मूंग आदि कृषि उत्पादों में तेजी आयेगी। मोती, तिल, तैल, तिलहन तथा अलसी में मंदा आकर तेजी बनेगी। गुड़, खांड, शक्कर, रसकस, तेल, तिल, सरसों, घी, रुई, सूत, सन, कपास में गिरावट आयेगी। व्यापारी वर्ग सुखी रहेगा। **27 अप्रैल**-शुक्र मृगशिरा में 16।53 पर-चना, धान, भूसा में मंदा आयेगा।

01 मई-बुध भरणी में 16।02 पर-अन्न में घटाबढ़ी चलेगी, रुख तेजी का रहेगा। **04 मई**-मंगल कुंभ में 20।40 पर-सभी प्रकार के अन्न, रस, फल, गुड़, शक्कर, खांड में तेजी आयेगी। चांदी तथा रुई में घटबढ़ चलेगी। **05 मई**-मंगलवारी बैशाख सुदी त्रयोदशी में चन्दन, पान, खांड तथा सेंधा नमक में तेजी आयेगी। **07 मई**- बुध कृतिका में 20।51 पर-रुई तथा धान्यों में तेजी बनेगी। चांदी में गिरावट आयेगी।

ज्येष्ठ मास-पांच शुक्रवार युत मास में **शुक्रस्य पंचवारास्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्ष च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** प्रजा में कुशल क्षेम रहेगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी। रुख मंदे का रहेगा। रसकसों में भी मंदे का प्रभाव रहेगा।

08 मई-शुक्रवारी ज्येष्ठ बदी प्रतिपदा से उत्तम वर्षा होगी। **09 मई**-बुध वृष में 09।47 पर-रुई में मंदा आकर 15 दिनों बाद तेजी बनेगी। गेहूं, चना, जौ, तैल, तिल, सूत, कपास, मटर में तेजी बनेगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। **11 मई**-शनि वक्री 09।39 पर-मणि, मोती, रत्न तथा सोना चांदी में मंदा चलेगा। लौंग, सुपारी, नारियल, तिल, तैल आदि के भाव में घटाबढ़ी रहेगी। घोड़ा, अफीम, नील, नीला थोथा, पंतग, हल्दी, जीरा, धनियां, मेथी, द्राक्ष, खजूर, घी, गेहूं, मूंग, ज्वार, प्रोमेसरी नोट में तेजी आयेगी। गुरु तथा शनि दोनों ग्रहों के वक्री होने से 09 मास तक गेहूं, तिल, तैल में तेजी रहेगी।

13 मई-शुक्र वक्री वृष राशि में 12।15 पर-धान्यों में मंदा रहेगा। चांदी, रुई, शक्कर, घी तथा तैल में तेजी आयेगी। बुधोदय पश्चिम में मध्यान्ह 13।24 पर-अतिवर्षा का योग रहेगा। **14 मई**-बुध रोहिणी में 02।54 पर, मंगल शतभिषा में 14।00 पर, सूर्य वृष में 17।16 पर, गुरु वक्री मकर में 20।02 पर, गुरुवारी संक्रांति तथा अमावस्या से बना **खप्पर योग** कष्ट कारक है। दूध उत्पादन उत्तम रहेगा। मांग बढ़ने से सोना तेजी में होगा। चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। गेहूं, चना, मादक पदार्थों, रुई, कपड़ा, घी, चांदी, चन्दन तथा अन्य श्वेत वस्तुओं में तेजी रहेगी। तिल, रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, तैल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी के बाद मंदे का रुख बनेगा। धान्यों के भावों में कहीं तेज तो कहीं मंदा रहेगा। अरहर, सन, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों में गिरावट आयेगी।

21 मई-बुध मृगशिरा में 00।34 पर-कृषि उत्तम होगी। गेहूं, चना, तिल, उड़द, अलसी, बिनोला, तैलों में घटाबढ़ी के बाद मंदा होगा। रुई में तेजी बनेगी। **22 मई**-ज्येष्ठ मास की अमावस्या में वर्षा होने से चौमासे में अनावृष्टि अथवा अल्पवृष्टि का योग। 05 जून 2020 की ज्येष्ठी पूर्णिमा में आकाश घटा-बादल से रहित रहा तो चौमासे में अच्छी वर्षा होगी। **24 मई**-बुध

मिथुन में 23।54 पर–रुई, चांदी, सोना, सरसों में मंदा आकर घटाबढ़ी चलेगी। सरसों एवं तरे में घटबढ़ रहेगी। तैल, तिल, अरण्डी में साधारण तेजी रहेगी। चना, मूंग, मोठ, भारवाहक पशुओं तथा वाहनों में गिरावट आयेगी। अन्य पशुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। **28 मई**–शुक्र रोहिणी (व) में 12।34 पर–नारियल, द्राक्ष, सुपारी, सोना, चांदी में तेजी आयेगी। **29 मई**– बुध आर्द्रा में 14।00 पर–रुई, सूत, कपड़ा, सन, जूट, चांदी में मंदा रहेगा। गेहूं, जौ, चना, तिल, तैल, उड़द, मूंग, मोठ के भावों में तेजी आने के बाद गिरावट आयेगी। **31 मई**–शुक्रास्त प्रात: 05।12 पर–व्यापारिक वस्तुओं में तेजी आकर मंदा होगा। सोना, चांदी में तेजी रहेगी। घी, तैल, रेशम में गिरावट रहेगी।

03 जून–मंगल पू.भा. में 09।40 पर–रुई, सूत, कपड़ा, अरण्डी, अलसी, सरसों, तिल, तैल, कपास, वायविडंग, नमक, गुड़, खांड, शक्कर, नारियल, सुपारी, मूंगफली, सोना, चांदी तथा तांबा में तेजी चलेगी।

आषाढ़ मास–06 जून से प्रारम्भ-पांच शनिवार तथा रविवार युत मास में **शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान देशं भंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।** तथा **यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग स्यात्तदास्ते च महद्भयं।।** के अनुसार भूकम्पों तथा अग्निकांडों से जन-धन की हानि होगी। अराजकता तथा अशान्ति बढ़ेगी। प्रत्येक वस्तु में तेजी बनेगी।

08 जून–शुक्रोदय रात्रि 23।44 पर–अन्न में तेजी बनेगी। **14 जून**– बुध पुनर्वसु में 08।56 पर, सूर्य मिथुन में 23।54 पर–रुई, सूत, कपास, सन, चांदी मंदा आयेगा। रविवारी संक्रांति तथा अमावस्या से कष्टकारी **खप्पर योग** बना है। रसकस, जौ, चना, ज्वार बाजरा आदि की पैदावार उत्तम रहेगी। गेहूं, घी, तैल, कुसुंभा में मंदा आयेगा। कपास, रुई, सूत, कपड़ा सन, रेशम, तिल, तैल, चांदी चन्दन में तेजी रहेगी। **18 जून**–वक्री बुध 10।29 पर, मंगल मीन में 18 जून 20।14 पर–रुई में तेजी आकर मंदा होगा। सूत में घटबढ़ चलेगी। सोना, काष्ठ, ईख, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तैल, सरसों, अलसी, अरण्डी, बिनौला अन्य तिलहनों, कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं, पशु आहार तथा पशुओं में तेजी बनेगी। चांदी में घटबढ़ चलेगी। धान्य, शाक, सब्जियों तथा हरी वस्तुओं में मंदा आयेगा। आर्थिक स्थिति चिंताजनक रहेगी। **19 जून**–वक्री शनि उ.षा. (व) में 05।28 पर–अनावृष्टि से हानि होगी। अन्न तेज होंगे।

21 जून–वक्री बुधास्त पश्चिम में प्रात: 06।25 पर–रुई में तेजी आयेगी। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ, पटसन तथा शेयरों में गिरावट आयेगी। **22 जून**–बुध आर्द्रा (व) में 13।48 पर–बाढ़ का प्रकोप रहेगा। भाद्रपद मास में महंगाई बढ़ेगी। **24 जून**–मंगल उ.भाद्रपद में 04।10 पर–वर्षा में कमी से धान्यों, रुई, चांदी, सोना, चना, जौ, चना, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं में तेजी रहेगी। सुगन्धित पदार्थों–चन्दन, कपूर, गेहूं में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। **25 जून**–शुक्र मार्गी वृष राशि में 12।18 पर–मोती, सोना, चांदी, करेन्सी में साधारण गिरावट आयेगी। शक्कर, चावल, घी में एक मास के बाद तेजी बनेगी। **26 जून**–यदि आषाढ़ सुदी पंचमी में पछुवा हवा चली अथवा वर्षा हुई या इन्द्रधनुष दिखाई पड़ा तो अन्न तथा तृण कार्तिक मास में बेचने से लाभ। **30 जून**–आषाढ़ मास में स्वाति नक्षत्र के दिन वर्षा होने पर अन्न बहुत पैदा होगा तथा चौमास खूब बरसेगा। वक्री गुरु धनु में 05।22 पर–वर्षा काल में वर्षा ठीक होगी। गेहूं में मंदा आयेगा। मदिरा तथा अन्य मादक पदार्थ, तिल तथा गुड़ में तेजी रहेगी।

श्रावण मास–06 जुलाई से प्रारम्भ पांच सोमवार युत श्रावण मास में–**सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवति हि। धन धान्य समृद्धिः स्यात् सुखम् भवति सर्वदा।।** अच्छी वर्षा होगी। कृषि उत्पादन अच्छा रहेगा। व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी घटाबढ़ी के साथ मंदे का रुख प्रबल रहेगा। धन-धान्य वृद्धि होगी। उद्योग बढ़ेंगें। कृषि उत्पादन अच्छा होगा। **11 जुलाई**–बुधोदय पूर्व में प्रात: 10।07 पर–अनावृष्टि से महंगाई बढ़ेगी। अन्न तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी आयेगी।

बुध मार्गी 12 जुला. 13।56 पर–रुई में घटाबढ़ी चलकर तेजी बनेगी। रेशम, चंदन, कपूर, अफीम तथा अनाज तेज रहेंगे। गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, सरसों, अलसी, मूंग, मोठ, चना, भारवाहक पशुओं में मंदा आयेगा। **16 जुलाई**–सूर्य कर्क में 10।47 पर–व्यापारिक वस्तुओं, कपड़ा, चांदी, चन्दन में तेजी बनेगी। धान्यादि के भावों में घटबढ़ रहेगी। रसकस तथा पशु आहारों के भाव अनुमानित रहेंगे। **17 जुला.**–मंगल रेवती में 03।33 पर–अनुमानों के विपरीत कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। रुई में घटाबढ़ी से तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना, मोठ, मूंग, ज्वार, बाजरा में गिरावट आयेगी। सोना में गिरावट तथा चांदी में अच्छी तेजी का योग है। **23 जुलाई**–शुक्र मृगशिरा 20।02 पर–चना, धान, भूसा मंदा होगा। **26 जुलाई**– बुध पुनर्वसु में 10।43 पर–रुई, सूत, कपास, सन, चांदी में मंदा रहेगा। **26 जुला.**–गुरु पूर्वाषाढ़ (व) में 15।14 पर–रुई तथा सभी धातुओं एवं अनाजों में तेजी आयेगी।

अगस्त–01 अग. शुक्र मिथुन में 05।10 पर–अरहर, ग्वार, रुई, बारदाना, मूंगफली, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों, अरण्डी, पटसन, बारदाना, तिल, तैल, अरण्डी, सरसों में मंदा चलेगा। चांदी घटबढ़ में रहेगी। जौ, गेहूं, चना में सामान्य तेजी आयेगी। खाण्ड, घी में घटाबढ़ी चलेगी। गुड़ तेज होकर मंदा होगा। **02 अगस्त**–बुध कर्क में 03।33 पर–रुई, कपड़ा में मंदा आयेगा। चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। चावल, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में कुछ मंदा रहेगा। जलवाहनों, मादक पदार्थों, सरसों, मूंगफली, तैल, तिल, गुड़, दही तथा रसकस तेज रहेंगे। **03 अगस्त**–प्रात: 07।19 से पूर्णिमा के श्रवण नक्षत्र के योग से यदि वर्षा हुई तो सुभिक्ष रहेगा। अन्न का उत्पादन उत्तम होगा। सभी सुखी रहेंगे।

भाद्रपद मास–04 अगस्त से प्रारम्भ पांच मंगलवार तथा पांच बुधवार युत भाद्रपद मास में–पांच मंगलवार होने से–**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्।।** तथा पांच बुधवार होने से–**बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तम सुभिक्ष च प्रजायेत।।**' पश्चिमी देशों में भारी रक्तपात, आंतकवाद की घटनायें घटित होगी। जनता में विक्षोभ तथा आपसी वैमनस्य बढ़ेगा। लाल वस्तुओं तथा धान्यों में तेजी आयेगी। वर्षा में घटबढ़ रहेगी। कृषि उत्तम रहेगी। धान्यादि भाव सम रहेंगे।

04 अग.–बुध पुष्य में 00।30 पर–अन्न, सोना, चांदी, मोती, मूंगा आदि बहुमूल्य पत्थरों तथा सूत, कपड़ा के मूल्यों में गिरावट आयेगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद गिरावट रहेगी। **05 अग.**–भाद्रपद द्वितीया में वर्षा से सभी व्यापारिक वस्तुओं में लाभ होगा। **06 अग.**–शनि उ.षाढ़ (व)- 07।05 पर–सभी प्रकार से हानि होगी। **08 अग.**–बुधास्त पूर्व में मध्यान्ह 15।13 पर, शुक्र आर्द्रा में 17।59 पर–अनावृष्टि से जनहानि होगी। गेहूं, मकई में तेजी आयेगी। चांदी रुई में मंदा आयेगा। **10 अग.**–बुध आश्लेषा में 19।50 पर–अच्छी वर्षा से कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। भूसे वाले धान्यों के उत्पादन में वृद्धि होगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली, मूंग, उड़द में तेजी आयेगी। **16 अगस्त**–सूर्य सिंह में 19।11 पर, मंगल मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में 18।28 पर–कपड़ा, चांदी, चन्दन, सभी प्रकार के धान्यों, रसकसों, तिल, तैल, हल्दी में तेजी आयेगी। मूंग, उड़द, चना, चावल आदि भूसे वाले धान्यों में तेजी आकर मंदा होगा। गेहूं, जौ, चना, अरहर, मटर, ज्वार, बाजरा, घी, कुसुंभा में गिरावट रहेगी। गुड़, शक्कर, खांड में घटाबढ़ी के बाद मंदा रहेगा। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, मूंगा, मक्का में साधारण तेजी बनेगी।

17 अगस्त–बुध सिंह राशि मघा नक्षत्र में 08।28 पर–धान्यों के मूल्य स्थिर होंगे। इमली, आंवला आदि खट्टे पदार्थों, औषधीय वनस्पतियों, देवदारु, सोना, तांबा, पीतल, खाण्ड, रुई, कपूर, सूत, कपड़ा में तेजी आयेगी। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर,

सरसों, ऊन में मंदा बनेगा। पटसन, शेयर्स में मंदा आकर तेजी बनेगी। वर्षा में कमी से धान्य हानि की आशंका तथापि धान्यों के मूल्य स्थिर रहेंगे। **24 अगस्त**–बुध पू.फा. में 04।01 पर–सभी प्रकार के अन्न एवं अन्न पदार्थों, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में गिरावट आयेगी। **31 अग.**–बुध उ.फा. में 13।09 पर–उड़द, मोठ, अरहर, मसूर एवं मूंग का उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होकर साधारण तेजी बनेगी। चांदी में गिरावट रहेगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद गिरावट आयेगी।

सितम्बर–ता. 01 शुक्र कर्क में 02।04 पर–कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। सभी प्रकार के रसकस, गुड़, खांड, शक्कर, घी, तैल, सूत, सन, बारदाना, गोला में तेजी बनेगी। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। जौं, गेहूं, चना में गिरावट के बाद तेजी आयेगी। चांदी में गिरावट रहेगी। आज की वर्षा से गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में मंदा आयेगा। ता. **02 सितं.**- बुध कन्या में 12।02 पर–अगले छः मास तक सोना, चन्दन, सुपारी, नारियल, शहद एवं उत्तम क्वालिटी की खाण्ड में तेजी के रुख के बाद गिरावट आयेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ, चना में तेजी बनेगी। चांदी, रुई में गिरावट रहेगी।

आश्विन (शुद्ध मास)-- ता. 03 सितम्बर से प्रारम्भ आश्विन मास पांच गुरुवार युत होने से–**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते॥ विग्रह पश्चिमी देशे खड्ग युद्धच जायते॥** पश्चिमी देशों में विग्रह होंगे। सशस्त्र युद्ध का योग बनेगा। व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। रुख मंदे का रहेगा। रसकस की हानि से रसादि में तेजी चलेगी।

04 सितं.–शुक्र पुष्य में 04।49 पर, बुधोदय पश्चिम में सायं 16।13 पर–सुवृष्टि से अन्न, रुई तथा कपड़ा, रुई, सोना, लाख चपड़ा, गुड़ में मंदा चलेगा। **08 सितं**–बुध हस्त में 15।50 पर–अच्छी वर्षा से कृषि उत्पादन अच्छा रहेगा। सभी प्रकार के अन्न पदार्थों में गिरावट आयेगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। **10 सितं.**–मंगल वक्री मेष राशि में रात्रि 03।52 पर-- रुई, अलसी, चावल, गोला, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी। **13 सितं.**–गुरु मार्गी धनु राशि में 06।11 पर–तिल, तैल, घी तथा अनाजों में तेजी रहेंगी। पूर्वी देशों में अनाज मंदा रहेगा।

16 सितं.–शुक्र आश्लेषा में 07।45 पर, सूर्य कन्या में 19।07 पर, बुधवारी संक्रांति तथा अमावस्या से बने **खप्पर योग** से मास कष्टपूर्ण रहेगा। सामान्य वर्षा से कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। गेहूं, जौ, चना, ज्वार बाजरा आदि की पैदावार सन्तोषजनक रहेगी। भावों में कहीं तेज तो कहीं मंदा रहेगा। घी, तूअर, मोठ, चावल, चना, धान, भूसा में मंदा होगा। कपड़ा, चांदी, चन्दन, रसकस, नारियल, मजीठ, कुसुंभा, तिल, सरसों, अरण्ड में तेजी बनेगी। **17 सितं**–बुध चित्रा में 16।43 पर–अन्न तेज होंगे। रुई तथा चांदी में घटाबढ़ी से तेजी बनेगी।

आश्विन (अधिक मास)–ता. 18 सितम्बर से प्रारम्भ मास पांच शनिवार युत होने से–**शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान देशं भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥** भूकम्पों तथा अग्निकांडों से जन-धन की हानि होगी। उत्तरी पूर्वी देशों में विग्रह होंगे। कृषि की हानि होगी। महंगाई बढ़ने से प्रत्येक वस्तु में तेजी बनेगी। **22 सितंबर**–बुध तुला में 16।52 पर–सोना, रुई, गेहूं, जौ, चना, गुड़, घी, शक्कर, खाण्ड, अफीम, बारदाना, गोला, अलसी तथा आयुर्वेदिक औषधियों में तेजी आयेगी। चांदी, सरसों, अलसी, मूंगफली, बिनौला, मिर्च में मंदा रहेगा। **23 सितं**–राहु वृष में 10।43 पर–गुड़, खांड, सुगन्धित वस्तुओं, कुंकुम, तिल, तैल, सरसों तथा तिलहनों व किराने की वस्तुओं में 06 मास के अन्दर तेजी बनेगी। अगले वर्ष तक रुई, कपास के भाव बढ़ेंगे।

28 सितंबर–शुक्र सिंह राशि मघा नक्षत्र में 01।02 पर, बुध स्वाति में 06।25 पर–धान्य, सोना, तांबा, पीतल, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा [illegible], लाल चन्दन, लाल मिर्च, लाल रंग के अन्य सभी पदार्थ, तेल, तिल, मूंगफली, सरसों, ग्वार, केसर, कस्तूरी, रसकस, घी, रसादि पदार्थ तथा चौपायों में तेजी आयेगी। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। कपड़ा, चावल, सूत, सन में मंदा आयेगा। पशुओं में तेजी बनेगी। **29 सितं**–शनि मार्गी 10।41 पर–अन्न तथा रुई में मंदा बनेगा। मादक पदार्थों में 10 दिन में मंदा आयेगा। 02 मास में हींग, मिर्च, सरसों तथा तेल में तेजी आयेगी। सभी व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी।

अक्तूबर–ता. 09 शुक्र पू.फा. 11।18 पर–धान्य, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में मंदा होगा। **14 अक्टू.**–वक्री बुधास्त रात्रि 04।42 पर, बुध वक्री 06।35 पर–किराने की वस्तुओं में तेजी बनेगी। रुई में तेजी आकर मंदा होगा। ईख, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तैल, सरसों, अलसी, अरण्डी, बिनौला अन्य तिलहनों तथा कपूर में तेजी बनेगी। धान्य सस्ते होंगे। सन, सूत, सोना आदि में तेजी।

17 अक्टूबर–सूर्य तुला में 07।05 पर–कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। सोना-चांदी में साधारण मंदा चलकर तेजी का रुख बनेगा। लाख, चपड़ा में साधारण तेजी आयेगी। घी तथा धान्यों में तेजी आयेगी। रसकस, धान्यों तथा घास आदि के भाव अनुमानित रहेंगे। ता. **20 अक्टू.**–शुक्र उ.फा. 16।11 पर–धान्यों में गिरावट आयेगी। गेहूं, अनाज तथा रुई में तेजी बनेगी। सोना, चांदी में घटबढ़ चलेगी। **23 अक्टूबर**–शुक्र कन्या में 10।45 पर–वर्षा में कमी से कृषि की हानि होगी। खड़ी फसल खराब होने से महंगाई बढ़ेगी। घास, गेहूं, चावल, सोना, गुड़, खाण्ड, शाल की लकड़ी तथा ऊनी वस्त्रों में तेजी आयेगी। चांदी घटाबढ़ी में आकर तेजी होगी। रुई में गिरावट आयेगी। सन तथा बारदाना के भावों में मंदा होगा। पशुधन में तेजी आयेगी।

27 अक्टू.–बुध चित्रा (व) में 14।23 पर–रुई, चांदी में घटबढ़ चलेगी। अनाज में तेजी रहेगी। **30 अक्टू.**–गुरु उ.षा. में 13।06 पर–गुड़ तेज होगा। **31 अक्टू.**–वक्री बुधोदय पूर्व में प्रातः 08।11 पर, शुक्र हस्त में 17।09 पर–रुई तथा वस्त्र में मंदा आयेगा। धातुओं तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी आयेगी।

कार्तिक मास–01 नवम्बर से प्रारम्भ पांच रविवार तथा पांच सोमवार युत मास में–**यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग स्यात्तदास्ते च महद्भयं॥** तथा **सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवति हि धन धान्य समृद्धिः। स्यात् सुखम् भवति सर्वदा॥** के अनुसार साधारण वर्षा योग से कृषि उत्पादन प्रभावित होगा। व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी घटाबढ़ी के साथ मंदे का रुख प्रबल रहेगा।

03 नवंबर–बुध मार्गी 23।20 पर–रुई में घटाबढ़ी चलकर तेजी बनेगी। घी, शक्कर, अलसी तथा आयुर्वेदिक तथा यूनानी औषधि, रेशम, चंदन, कपूर, अफीम तथा अनाज तेजी में रहेंगे। गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, में मंदा रहेगा। **11 नवं**–शुक्र चित्रा में 15।01 पर, बुध स्वाति में 21।46 पर–सोना, चांदी तथा अनाज के भाव स्थिर रहेंगे। रुई में मंदा रहेगा। **14 नव.**–मंगल मार्गी प्रातः 06।06 पर–अनाज, घी, चमड़ा तथा मांस उद्योग में तेजी रहेगी। रुई में गिरावट आयेगी। **15 नव.**–रविवारी कार्तिकी अमावस्या के दिन बादल बिना गर्जे वर्षे तो विश्व में सुख रहेगा। भूसा आदि पशु आहारों में गिरावट रहेगी परन्तु अन्न में तेजी बनेगी। **16 नव.**–सूर्य वृश्चिक में 06।54 पर–कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। सोना, चांदी में साधारण मंदा चलकर तेजी का रुख बनेगा। लाख, चपड़ा में साधारण तेजी आयेगी। धान्य के भाव साधारण रहेंगे परन्तु लाल रंग की वस्तुओं में गिरावट आयेगी, इनका संग्रह करके छः मास बाद बेचने से लाभ होगा। घी, किराना, गुड़, खांड, कुसुंभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओ में तेजी बनेगी। बाजार भाव सम रहेंगे।

17 नव.–शुक्र तुला में 01।02 पर–गुड़, शक्कर, सोना में साधारण तेजी रहेगी। रुई में तेजी आकर गिरावट बनेगी। चांदी में घटबढ़ चलेगी। अन्न घटाबढ़ी में रह कर मंदा होगा। **20 नव.**–गुरु मकर में 13।23 पर–रुई में मंदे के बाद तेजी आयेगी। कपूर, चन्दन, मूंगफली, तांबा, सोना, चान्दी, सरसों में तेजी रहेगी। गेहूं, जौ, चना में अचानक तेजी बनेगी।

20 नवंबर–शनि उ.षा.-3 में प्रातः 07।01 पर–अनावृष्टि से हानि होगी। धान्य तेज होंगे। **21 नवंबर**–बुध विशाखा में 18।30 पर–गुड़, खांड, शक्कर तथा धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। रुई में मंदा रहेगा। **22 नवंबर**–शुक्र स्वाति में 10।35 पर–गुड़, खांड में तेजी आयेगी, अनाजों में मंदा रहेगा। **25 नवंबर**–प्रातः 08।23 पर राहु के मृगशिरा में प्रथम चरण में गोचर से दो मास में ऊन, लाख, नील, मेथी, ज्वार तथा चना में तेजी बनेगी।

28 नवं.–बुध वृश्चिक में 07।04 पर–सोना के मूल्य स्थिर रहेंगे। घी, सरसों, तैल, अरण्डा, बिनोला आदि तिलहनों, चांदी तथा पशुओं में तेजी आयेगी। सोना, अफीम, घी, तैल, अलसी, सरसों, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ग्वार में गिरावट आयेगी। रुई में घटाबढ़ी चलेगी। **30 नवं**–बुध अनुराधा में 10।31 पर–धान्यों के भाव स्थिर रहेंगे। सोना, चांदी, रुई, सूत, सन में गिरावट रहेगी।

मार्गशीर्ष–01 दिसम्बर से प्रारम्भ पांच मंगलवार तथा पांच बुधवार युत मास में पांच मंगलवार–**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** तथा **बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तम सुभिक्ष च प्रजायेत॥** पश्चिमी देशों में भारी रक्तपात, आतंकवाद की घटनायें घटित होंगी। लाल वस्तुओं तथा धान्यों में तेजी आयेगी। उत्तम कृषि की उपज होगी। धान्य आदि के भावों में समता रहेगी।

01 दिसं.–बुधास्त पूर्व में प्रातः 04।12 पर–सभी धातुओं में तेजी बनेगी। **03 दिसं.**–शुक्र विशाखा में 04।36 पर–व्यापार में लगातार उतार-चढ़ाव होने से व्यापारी वर्ग चिन्ता में रहेगा। रुई तथा अनाजों में मंदा आयेगा। **08 दिसं**–बुध ज्येष्ठा में 23।29 पर–गेहूं, जौ, चना, बाजरा, उड़द, मूंग, ग्वार, चावल, गुड़, खांड, धान, ईख तथा घी में तेजी बनेगी। **11 दिसं.**–शुक्र वृश्चिक में 05।17 पर–उत्तम कृषि से सभी प्रकार के धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। महंगाई से राहत मिलेगी। ज्वार, बाजरा, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ आदि में मंदा होगा। चांदी में यदि अब तक तेजी रही तो मंदा होगा अन्यथा मंदा होने पर तेजी आयेगी। अलसी, रुई, कपास तथा शेयर मार्केट में तेजी बनेगी। गुड़ में घटाबढ़ी चलेगी। मादक पदार्थों में पहले मंदा होकर बाद में तेजी बनेगी। **13 दिसं.**–शुक्र अनुराधा में 21।23 पर–रुई, गुड़, चावल, खाण्ड, नमक में मंदा आयेगा। **15 दिसं.**–सूर्य धनु में रात्रि 21।32 पर–कृषि उत्पादन साधारण रहेगा। धान्यों में गिरावट रहेगी। लवण, नमक, सज्जी खार, कपास, सूत, सन, रेशम, तिल, तैल, घी, गुड़, गेहूं, अलसी, कुसुंभा, मजीठ, कपूर, कस्तूरी, चन्दन ऊन एवं वस्त्रों में तेजी बनेगी। सोना, चांदी में साधारण मंदा चलकर तेजी का रुख बनेगा। लाख, चपड़ा में साधारण तेजी आयेगी।

17 दिसं.–बुध धनु में 11।38 पर–सोना, चांदी में गिरावट चलेगी। रुई, सन, सूत में साधारण तेजी रहेगी। मादक पदार्थों, ईख, चावल, सूत, कपास, कपड़े में तेजी चलेगी, अन्य व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ रहेगी। **24 दिसं.**–मंगल मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में 10।19 पर, शुक्र ज्येष्ठा में 13।26 पर, शनि उत्तराषाढ़ा-4 में रात्रि 23।29 पर–गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, तिल, तैल, हींग, मूंग, मोठ, अरहर, मटर, ज्वार, बाजरा में गिरावट रहेगी। गुड़, शक्कर, खांड में घटाबढ़ी के बाद मंदा रहेगा। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, मूंगा, मक्का में साधारण तेजी बनेगी। **25 दिसं.**–बुध पू.षा. में 21।21 पर–गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी में मंदा आयेगा। गुड़, शक्कर, खांड, सरसों, अलसी, बिनोला, रुई, कपास में तेजी आयेगी।

पौष मास–31 दिसम्बर से प्रारम्भ पांच गुरुवार युत पौष मास में **यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते॥ विग्रह पश्चिमी देशे खड्ग युद्धञ्च जायते॥** पश्चिमी देशों में विग्रह होंगे। सशस्त्र युद्ध की आशंका बनेगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। रुख मंदे का रहेगा। रसकस की हानि से रसादि में तेजी चलेगी।

जनवरी 2021–ता. 03 जन. बुध उ.षा. में 03।04 पर–कृषि उत्पादन संतोषजनक रहने से धान्यों तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओं में मंदा बनेगा। **04 जन.**–शुक्र धनु राशि मूल नक्षत्र में 05।04 पर–व्यापार में अच्छी तेजी-मंदी से व्यापारियों में घबराहट रहेगी। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, सोना, चांदी, शेयर्स, सूत, रुई, कपास, वस्त्रों, अफीम, चांदी, तांबा, लोहा आदि में तेजी रहेगी। सोना में घटाबढ़ी चलेगी। रुई पहले तेजी होकर बाद में मंदे में जायेगी। **05 जन.**–बुध मकर में 03।55 पर–गेहूं, जौ, चना के भावों में विशेष परिवर्तन नहीं होगा। रुई, गुड़, खांड, घी, तैल के भावों में मंदा आयेगा। मादक पदार्थों, सोना, चांदी तथा रुई में तेजी रहेगी। बाजारों में सामान्य घटबढ़ चलेगी।

07 जन.–गुरु श्रवण में 03।46 पर–गुड़, खांड, सोना, चांदी तथा अनाजों में मंदा आयेगा। **09 जन.**–बुधोदय पश्चिम में रात्रि 0।02 पर–धान्यों तथा रसकसों में गिरावट रहेगी। **09 जन.**–शनि अस्त सायं 16।27 पर–रसकस, धान्यों, भूसा, अलसी, सरसों, तैल, तिलहन, लोहा तथा अन्य धातुओं एवं शेयरों में तेजी आयेगी। **11 जन.**–बुध श्रवण में 06।20 पर–अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, चना, गेहूं में तेजी आयेगी। चने की फसल को पाला अथवा ओला वृष्टि से हानि होगी। **13 जन.**–सायं 16।28 पर मंगल तथा शनि के परस्पर 90 अंश की दृष्टि से रुई में मंदा रहेगा। **14 जन.**–सूर्य मकर में 08।18 पर, शुक्र पूर्वाषाढ़ा में 20।23 पर–मास में जन्म वेध तथा **खप्पर योग** बना होने से प्राणियों को कष्ट रहेगा। सभी प्रकार के धान्य, तिल, तैल, सरसों, अलसी, मूंग, मोठ, उड़द, नमक मंदे होंगे। सोना, चांदी, रुई में घटबढ़ चलेगी। घी, गुड़, खांड, कुसुंभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओं में तेजी आयेगी। लाख, चपड़ा में साधारण तेजी आयेगी। जलीय उत्पादों की हानि होगी। **17 जन.**–गुरु अस्त पूर्वान्ह 11।44 पर–व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी। तिल तथा उड़द का उत्पादन बढ़ेगा।

19 जन.–बुध धनिष्ठा में 21।47 पर–सोना, चांदी, पीतल, जस्ता तथा धान्यों में गिरावट आयेगी। रुई में घटाबढ़ी चलेगी। चावल में तेजी बनेगी। दुधारू पशुओं में कष्ट रहेगा। **22 जन.**–मंगल भरणी में 13।01 पर–धान्यों, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ग्वार, मोठ, मूंग, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। ईख, गुड़, खाण्ड, शक्कर में गिरावट चलेगी। **22 जन.**–शनि श्रवण नक्षत्र में सायं 17।44 पर–गेहूं, अलसी, चौपायों में तेजी तथा अन्य धान्यों के मूल्य स्थिर रहेंगे।

25 जन.–बुध कुंभ में 16।28 पर, शुक्र उ.षा. में 11।39 पर–अन्न के भावों में स्थिरता रहेगी। घी, तैल, अलसी, अरण्डा, रसकस, गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद मंदा बनेगा। रुई में घटाबढ़ चलेगी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल में मंदा आकर तेजी आयेगी। अलसी, सरसों में घटाबढ़ी चलेगी। मादक पदार्थ तेजी के बाद गिरावट में जायेंगे। **28 जन.**–शुक्र मकर में 03।30 पर–कृषि उपज में कमी से खाद्यान्नों में तेजी बनेगी। गुड़, खांड, शक्कर, घी तथा सभी प्रकार के अन्नों में तेजी आयेगी। रुई, सोना, चांदी, सूत, सन में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख रहेगा। खाण्ड, गुड़, गेहूं, घी, तेल में तेजी रहेगी।

माघ मास–29 जनवरी से प्रारम्भ पांच शुक्रवार तथा पांच शनिवार युत माघ मास में **शुक्रस्य पंचवारास्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्ष च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** तथा **शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान देशं भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥** साधारण वर्षा होगी। व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ चलेगी। महगांई बढ़ेगी। प्रत्येक वस्तु में तेजी बनेगी। रसकसों में मंदे का प्रभाव रहेगा। माघ मास में पंचमी में शुक्रवार, षष्ठी को शनिवार तथा सप्तमी को सोमवार न होने से भाद्रपद मास में गेहूं, चावल तथा मूंग में तेजी चलेगी। **30 जन.**–बुध वक्री 21।22

पर–रुई में तेजी आकर मंदा होगा। ईख, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तैल, सरसों, अलसी, अरण्डी, बिनौला अन्य तिलहनों तथा कपूर में तेजी बनेगी। धान्य सस्ते होंगे। रसकस में तेजी होकर मंदा आयेगी। बाजारों में घटवढ़ चलेगी।

फरवरी–ता. 03 फरवरी बुध अस्त पश्चिम में मध्यान्ह 12।48 पर– गेहूं, चांदी तेज होगी। पटसन, शेयरों में मंदा आयेगा। हिमपात-पाले से कृषि की हानि होगी। **05 फर.**–शुक्र श्रवण में 03।02 पर–सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, उड़द, मूंग तथा मोठ में मंदा रहेगा। कपास, तिल, तैल, सरसों में तेजी बनेगी। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। **06 फरवरी**–पूर्वान्ह 11।45 पर शुक्र तथा शनि की युति से धान्य सस्ते होंगे। **10 फर.**–बुध श्रवण (व) में 22।42 पर–गुड़, खांड, अलसी, चना, चावल में तेजी बनेगी। कृषि को ओला वृष्टि अथवा पाले से हानि होगी। **12 फरवरी**–शुक्रास्त पूर्व में रात्रि 19।24 पर, सूर्य कुंभ में 21।12 पर–शुक्रवारी संक्रांति तथा अमावस्या से **खप्पर योग** बना होने से अनाजों में मंदा रहेगा। उड़द, मूंग, तुअर, घी, गुड़, खांड, कुसुंभा, मजीठ तथा अन्य लाल रंगों की वस्तुओं में तेजी बनेगी। सोना-चांदी में साधारण मंदा चलकर तेजी का रुख बनेगा। लवण, तैल तथा लाख-चपड़ा में साधारण तेजी आयेगी। ज्वार, बाजरी, मसूर, जौ, गेहूं, चने, कपास आदि में मंदा रहेगा। इनका संग्रह कर दो मास बाद विक्रय करने से लाभ होगा। **14 फरवरी**–शनि उदित सायं 16।00 पर–धान्यों तथा रुई में मंदा आयेगा। लकड़ी, लोहा, पशु तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी।

15 फरवरी–बुधोदय पूर्व में रात्रि 01।07 पर–रुई में तेजी आयेगी। तिल, घी, सन, लाल मिर्च, धान्यों तथा रसकस में तेजी बनेगी। **15 फर.**– शुक्र धनिष्ठा में 18।31 पर–चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास में तेजी बनेगी। गेहूं में मंदा रहेगा। **16 फर.**–गुरु उदित रात्रि 01।39 पर, मंगल कृतिका में 07।06 पर–अच्छी वर्षा से कृषि उत्पादन सन्तोष जनक रहेगा। गेहूं, जौ, चना, तिल, सरसों, अलसी, चांदी, चावल, सूत, कपड़ा में तेजी बनेगी। रुई में मंदा रहेगा।

21 फर.–शुक्र कुंभ में 02।22 पर, बुध मार्गी 06।22 पर–खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी से महंगाई बढ़ेगी। रेशम, चंदन, कपूर, तथा अनाजों में तेजी चलेगी। रुई में घटाबढ़ी चलकर तेजी बनेगी। चांदी, गेहूं, जौं, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा, सफेद वस्तुओं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरण्डी, तिल, तैल, सरसों, अलसी में गिरावट आयेगी। फल-फूलों में तेजी बनेगी। **22 फर.**–मंगल वृष में 04।36 पर–जौ, गेहूं, चना, उड़द, मूंग, मोठ, सरसों, अरण्डी, तिल, तैल, अलसी, तोरया, कुंकुम, केशर, जूट, बारदाना, गेरू, मजीठ, चन्दन, केशर, कपूर वस्त्र, कपास तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आयेगी। **26 फर.**–शुक्र शतभिषा में 10।20 पर–घी, तिल, तैल, गुड़, शक्कर, खांड, सरसों, अलसी, अरण्डी, रुई, कपास, चावल, सोना, चांदी तथा पशुओं में तेजी रहेगी।

फाल्गुन–28 फरवरी से प्रारम्भ पांच रविवार युत फाल्गुन मास में **यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग स्यात्तदास्ते च महद्भयं॥** सत्ता परिवर्तन होगा। युद्ध जैसी अफवाहों का बाजार गरम रहेगा। जनता रोग अशान्ति तथा भय से पीड़ित होगी।

मार्च–ता. 05 गुरु धनिष्ठा में 01।57 पर, बुध धनिष्ठा में 07।17 पर–अच्छी वर्षा से कृषि उत्पादन उत्तम होगा। गेहूं, चावल, जौ, चना में मंदा रहेगा। रुई में घटाबढ़ी होगी। सोना, चांदी, पीतल, जस्ता, तथा धान्यों में गिरावट आयेगी। रुई में घटाबढ़ी चलेगी। चावल में तेजी बनेगी। **09 मार्च**– शुक्र पू.भा. में 02।34 पर–रुई में तेजी आयेगी। अनाजों में मंदा रहेगा। **11 मार्च**–मंगल रोहिणी में 11।47 पर, बुध कुंभ में 12।34 पर–रुई, सूत, कपास, कपड़ा, शेयर मार्केट, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रेशम, हींग, मिर्च, अलसी, सरसों तथा तैलों में तेजी चलेगी। सोना, चांदी आदि धातुओं तथा अन्न के भावों में स्थिरता रहेगी। मादक पदार्थ तेज होने के बाद गिरावट में जायेंगे। **14 मार्च**–सूर्य मीन में 18।03 पर–सोना-चांदी में साधारण मंदा चलकर तेजी का रुख बनेगा। नमक, तिल, तैल, लाख-चपड़ा में साधारण तेजी आयेगी। धान्यों में विशेष तेजी बनेगी। घी, गुड़, खांड, कुसुंभा, मजीठ तथा लाल रंगों की वस्तुओं में तेजी बनेगी।

16 मार्च–बुध शतभिषा में 18।35 पर–खाद्यान्नों की अनुपलब्धता रहेगी। सोना, चांदी, सन, सूत में तेजी रहेगी। कुछ स्थानों पर अन्न में तेजी बनेगी। कुछ स्थानों पर वर्षा के छींटे पड़ेंगे। **17 मार्च**–शुक्र मीन में 03।01 पर–खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी से महंगाई बढ़ेगी। तैल, तिलहन, अलसी, अरण्डी, गुड़, खाण्ड में गिरावट आयेगी। घी, रुई एवं चांदी में तेजी बनेगी। **19 मार्च**–शुक्र उ.भा. में 19।14 पर–दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों, घी में घटवढ़ चलेगी। चांदी, नमक, कपूर, खांड, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मंदा रहेगा। मोती, तिल, तैल में मंदा आकर तेजी बनेगी। शाक-भाजी के उत्पादकों को हानि होगी। **25 मार्च**–शनि श्रवण-3 में प्रातः 09।46 पर–सभी प्रकार के रसकसों तथा धान्यों में तेजी बनेगी। **25 मार्च**–बुध पू.भा. में 22।00 पर–अन्न पदार्थों की उपलब्धता में कमी आयेगी। सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। रुई, सूत में घटाबढ़ी चलेगी। **26 मार्च**–फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी के क्षय से रुई में तेजी रहेगी। **28 मार्च**–बुधास्त पूर्व में सायं 16।29 पर–अन्न में तेजी आयेगी। तेज हवायें चलेंगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष–30 मार्च–शुक्र रेवती में 12।33 पर–रुई, सूत, कपास, चांदी, चावल, गुड़, खांड, शक्कर, चन्दन, कपूर में मंदा रहेगा। ता. 02 अप्रैल-मंगल मृगशिरा में 23।08 पर–कपास की खेती की हानि होने से रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। चांदी तेजी में रहेगी। तिल की हानि होगी।

अप्रैल–ता. 01 बुध मीन में 00।44 पर–रुई, कपास, बिनोला में तेजी बनेगी। सोना, चांदी तेज होकर मंदे होंगे। गेहूं, चना, गुड़, शक्कर, घी, तैल, मूंगफली, अरण्डा, बिनोला तथा रुई में मंदा आयेगा। **02 अप्रैल**–बुध उ.भा. में 23।01 पर–चांदी में घटबढ़ चलेगी। खाद्यान्नों के भावों में अधिक फेरबदल नहीं होने से गुड़, खाड, रुई, धान्य एवं चावल बाजार में स्थिरता रहेगी। **06 अप्रैल**–गुरु कुंभ में 00।24 पर–पूर्व के देशों में अन्न महंगे होंगे। धातुओं तथा मूल पदार्थों में तेजी आयेगी। **10 अप्रैल**– बुध रेवती में 05।08 पर, शुक्र मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में 06।29 पर–रुई, कपास, ऊन, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तैल, सरसों, तिल तथा तिलहनों में मंदा आयेगा। सोना, चांदी, लाल मिर्च, लौंग, मजीठ, लाल चन्दन तथा लाल रंग की वस्तुओं, गेहूं, जौ, चना, चावल, गेरू, कुंकम, कपूर, केसर, पशुधन में तेजी बनेगी। बारदाना में घटबढ़ के बाद तेजी बनेगी।

कमोडिटी मार्केट का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित है तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है। बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है। बाजार में काम करने, व्यापार करने से पूर्व बाजार का आंकलन कर लेना हितावह है। ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक-प्रकाशक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। बाजार की वार्षिक, अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट के लिये लेखक से सी-82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने, नोविनो तरसाली रोड, वडोदरा (गुजरात), पिन-390009 मो. 09574337962 पर अथवा pmummy@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

लेखक : **प्रवीन कुमार जैन एवं डॉ. उमा जैन**

रुई के योग

वर्षारम्भ से 30 मार्च रात्रि 03।56 तक तथा 30 जून प्रातः 05।03 से 20 नवं. मध्यान्ह 13।35 तक गुरु के धनु राशि से गोचर में घी में तेजी रहेगी परन्तु तिल में मंदा चलेगा। वर्षारम्भ से 23 सितं. मध्यान्ह 12।08 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में चांदी में मंदा रहेगा।

जनवरी 2020–पौष मास की बुधवारी संक्रांति तथा अमावस्या से मास में चांदी में तेजी रहेगी। 01 से 04 जनवरी प्रातः 10।06 तक रुई में तेजी रहेगी। 01 जनवरी से 23 सितं. 2020 तक राहु के मिथुन राशि से गोचर में सोने में गिरावट रहेगी। वर्ष पर्यन्त गुरु के धनु राशि तथा मकर राशि से गोचर में जब-जब गुरु अकेला होगा अथवा शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट होगा तब-तब सोने में गिरावट रहेगी। **08 जन.**–दोपहर 13।01 पर गुरु-शुक्र के 45° अंश के योग से रुई में मंदा रहेगा। **10 जन.** –रात्रि 21।33 पर उदित गुरु से सोने में गिरावट तथा चांदी में तेजी रहेगी। **10 जन.**–रात्रि 20।44 तक सूर्य बुध की युति रहने तक रुई में घटबढ़ चलेगी। **11 जन.**–रुई में मंदा रहेगा। 11 से 24 जनवरी तक के 14 दिन के माघ कृष्ण पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी। 18 जनवरी प्रातः 05।30 के बाद शुक्र के कुंभ राशि में 11 अंश के बाद के गोचर में रुई में तेजी आयेगी। 27 जनवरी रात्रि 01।49 पर उदित बुध से चांदी में तेजी रहेगी।

फरवरी–03 फरवरी रात्रि 02।16 से 25 फरवरी रात्रि 19।11 तक शुक्र के मीन से गोचर में चांदी में तेजी रहेगी। यही योग पुनः रात्रि 28 फरवरी रात्रि 01।09 से 23 मार्च सायं 18।37 तक रहेगा। 10 से 23 फरवरी तक के 14 दिन के फाल्गुन कृष्ण पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी।

02 फरवरी–शनि उदय–रुई में मंदा आयेगा। ता. 04 रात्रि 03।30 पर शुक्र-शनि के 60 अंश का योग रुई में तेजी बनायेगा। ता. 16 सायं 18।25 पर वक्री हुए बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा अरंडा में गिरावट आयेगी। परन्तु चांदी में तेजी चलेगी। ता. 20 सायं 17।08 पर वक्री तथा अस्त बुध से चांदी में तेजी तथा रुई में मंदा रहेगी। ता. 20 सायं 17।08 से 04 मार्च मध्यान्ह 12।38 तक बुध के अस्त काल में चांदी में तेजी रहेगी। ता. 23 रात्रि 22।27 पर गुरु-शुक्र के 90° अंश के योग से रुई में मंदा रहेगा। ता. 24 फरवरी 12।09 पर मंगल केतु युति से रुई में मंदा रहेगा। 26 फरवरी प्रातः 07।14 पर सूर्य तथा वक्री बुध की युति से चांदी तथा रुई में तेजी रहेगी। सायं 16।52 पर बुध-शुक्र का 45° अंश का योग रुई में मंदा रहेगा।

मार्च–ता. 04 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में बुधवार के संयोग से वर्ष में घी में मंदा रहेगा, चांदी में तेजी रहेगी। 04 मार्च मध्यान्ह 13।38 पर पूर्व में उदित बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तौरया में तेजी चलेगी। 09 मार्च मध्यान्ह 14।32 पर–शुक्र-राहु के 60 अंश का योग रुई में तेजी देगा। इसके बाद रात्रि 21।22 पर मार्गी हुआ बुध चांदी में तेजी देगा। परन्तु रुई में मंदा बनायेगा। 14 मार्च शनिवारी मीन संक्रांति से घी में तेजी चलेगी। 22 मार्च मध्यान्ह 14।40 से 04 मई रात्रि 20।40 तक मंगल मकर राशि से गोचर में सोने में तेजी बनेगी। 25 मार्च–चैत्र शुक्ल पक्ष तीन बुधवार युत होने से घी तथा चांदी में तेजी रहेगी। 28 मार्च 15।38 से पूर्व मेष राशि से उतरते शुक्र में चांदी में तेजी बनेगी।

अप्रैल–ता. 01 बुधवारी शुक्ल अष्टमी से रुई में मंदा रहेगा। ता. 08 मध्यान्ह 15।59 से 27 अप्रैल सायं 16।49 तक शुक्र के राहिणी में गोचर से सोने में तेजी रहेगी। 08 अप्रैल–बैशाख की गुरुवारी संक्रांति तथा अमावस्या से मास में चांदी में तेजी रहेगी। 09 अप्रैल–बैशाख कृष्ण पक्ष तीन बुधवार युत होने से घी में तेजी रहेगी। 15 अप्रैल–रात्रि 23।53 पर पूर्व में अस्त बुध से चांदी, सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तौरया में तेजी चलेगी। 25 अप्रैल–रात्रि 02।35 से 09 मई प्रातः 09।47 तक बुध के मेष राशि से गोचर में चांदी में गिरावट रहेगी। 29 अप्रैल सायं 18।02 पर बुध-शुक्र का 45° अंश का योग रुई में मंदा देगा। 27 अप्रैल–मध्यान्ह 12।04 से 04 मई रात्रि 20।40 तक भरणी तथा कृतिका नक्षत्र में मंगल से दृष्ट सूर्य के गोचर में सोने में तेजी रहेगी।

मई–ता. 04 बैशाख शुक्ल एकादशी से क्षय में घी में तेजी रहेगी। 04 मई रात्रि 20।40 से 18 जून 20।15 तक मंगल के कुंभ राशि में गोचर से चांदी में तेजी चलेगी। 05 मई रात्रि 03।11 पर सूर्य-बुध युति से चांदी में तेजी रहेगी। 05 मई रात्रि 03।09 पर सूर्य बुध की युति से रुई में तेजी रहने के बाद मंदा आयेगा। 10 मई–रात्रि 20।32 पर वक्री हुआ शनि अरण्डा में घटबढ़ करेगा। बिनौला में तेजी रहेगी। सोने में गिरावट आयेगी। 13 मई मध्यान्ह 13।24 पर पश्चिम में उदित बुध से सोने में गिरावट रहेगी, चांदी में तेजी रहेगी। 14 मई प्रातः 07।41 पर मकर राशि में वक्री हुआ गुरु सोने तथा चांदी में तेजी देगा। रुई, सरसों, अलसी, मूंगफली तथा अरंडा में गिरावट आयेगी। 15 मई रात्रि 00।35 पर मंगल राहु का नव पंचम योग रुई में तेजी देगा। 22 मई मध्यान्ह 14।11 पर बुध शुक्र की युति से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तौरया में मंदा चलेगी, रुई में मंदा रहेगा। बुध-शुक्र की युति समाप्त होते ही रुई में तेजी आयेगी। 24 मई रात्रि 23।53 से 02 अग. रात्रि 03।32 तक बुध के मिथुन से गोचर में सोने में गिरावट रहेगी। 31 मई प्रातः 05।12 पर पश्चिम में अस्त शुक्र से चांदी में तेजी रहेगी।

जून–ता. 01 मंगलवारी व्यतिपात योग में रुई में तेजी रहेगी। 05 जून– पक्ष में सुदी 14 के क्षय तथा अगले दिन चन्द्र ग्रहण से रुई में मंदा आयेगा। 08 जून रात्रि 23।24 पर उदित वक्री शुक्र चांदी में तेजी देगा। 11 जून रात्रि 22।31 पर वक्री हुए बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा अरंड में गिरावट आयेगी। 14 जून–रविवारी संक्रांति तथा अमावस्या से मास में चांदी में तेजी रहेगी। 17 जून–रात्रि 22।31 पर वक्री हुआ बुध चांदी में तेजी करेगा। 20 जून–प्रातः 06।43 पर सूर्य-राहु की युति से रुई में मंदा रहेगा। 21 जून–प्रातः 06।25 पर पश्चिम में अस्त बुध से रुई में मंदा रहेगा, चांदी में तेजी चलेगी। 25 जून–रात्रि 00।23 पर मार्गी हुआ शुक्र चांदी में तेजी देगा। 26 जून– आषाढ़ शुक्ल षष्ठी तिथि के क्षय से इस पक्ष में रुई में तेजी चलेगी।

जुलाई–श्रावण शुक्ल पक्ष में सोमवारी सप्तमी तथा शनिवारी त्रयोदशी के संयोग से गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में तेजी बनेगी। 01 जुलाई–प्रातः 08।26 तक सूर्य-बुध की युति रहने तक रुई में तेजी चलेगी। प्रातः 08।26 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। इसके बाद प्रातः 10।07 पर उदित बुध से चांदी में तेजी रहेगी। ता. 05 से 20 जुलाई के श्रावण कृष्ण पक्ष की सोमवारी अमावस्या से श्रावण मास में चांदी में मंदा रहेगा। ता. 05 जुलाई–रात्रि 23।04 से 16 अग. रात्रि 19।12 तक मंगल तथा शनि से दृष्ट सूर्य के गोचर में सोने में तेजी रहेगी। 11 जुलाई–प्रातः 10।07 पर पूर्व में उदित बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तौरया में तेजी चलेगी। 12 जुलाई–रात्रि 01।58 पर मार्गी हुआ बुध चांदी में तेजी तथा रुई में मंदा देगा।

अगस्त–ता. 04 रात्रि 00।29 से 10 अग. रात्रि 19।50 तक बुध के पुष्य से गोचर में सोने में गिरावट रहेगी। 04 अग.–प्रातः 07।06 पर शुक्र-राहु की युति से रुई में घटबढ़ चलेगी। 05 अग. –रात्रि 03।35 पर शुक्र- शनि के 150 अंश का योग रुई में तेजी देगा। 08 अग.–मध्यान्ह 13।15 पर पूर्व में अस्त बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तौरया में तेजी चलेगी। 09 अग.–रविवारी रेवती नक्षत्र से रुई में तेजी आयेगी। 17 अग.–प्रातः 05।35 पर पर बुध-शुक्र के 45° अंश के योग से रुई में मंदा रहेगा। रात्रि 20।34 तक सूर्य-बुध की युति रहने तक रुई में घटबढ़ चलेगी। रात्रि 20।37 पर सूर्य तथा बुध की युति से चांदी में तेजी रहेगी। 17 अग.–प्रातः 08।28 से 02 सितं. मध्यान्ह 12।01 तक बुध के सिंह राशि में गोचर में सोने में तेजी रहेगी। 25 अग.–रात्रि 23।55 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 26 अग.– बुधवारी शुक्ल अष्टमी से रुई में मंदा रहेगा।

सितम्बर–ता. 04 सायं 16।13 पर पश्चिम में उदित बुध से सोने में गिरावट रहेगी। चांदी में तेजी रहेगी। 09 सितं. –मध्यान्ह 12।52 पर वक्री हुआ मंगल सोने तथा चांदी में तेजी

बनेगी। 12 सितं.–सायं 18।32 पर मार्गी हुआ गुरु चांदी में तेजी देगा। 16 सितं.–भाद्रपद मास की बुधवारी संक्रांति तथा अमावस्या से मास में चांदी में तेजी रहेगी। 22 सितं.–सायं 16।52 से 28 नवं.–प्रात: 07।04 पर तुला से गोचर कर रहे बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा अरंडा में गिरावट आयेगी। 27 सितं. –रात्रि 20।14 पर शुक्र-राहु के 60 अंश का योग रुई में तेजी देगा। 28 सितं.–रात्रि 01।00 से 23 अक्टू. प्रात: 10।44 तक शुक्र के सिंह राशि में गोचर में सोने में तेजी रहेगी। 29 सितं. रात्रि 01।50 पर शुक्र-शनि के 150 अंश का योग रुई में तेजी देगा।

अक्टूबर–13 अक्टू. सायं 18।32 पर वक्री हुए बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा अरंडा में गिरावट आयेगी, चांदी में तेजी चलेगी। 14 अक्टू. रात्रि 04।42 पर वक्री तथा अस्त बुध से चांदी में तेजी रहेगी, रुई में मंदा रहेगा। 17 अक्टू.–शनिवारी तुला संक्रांति से घी में तेजी रहेगी। 17 अक्टू. प्रात: 07।06 से 16 नवं. प्रात: 06।5 तक तुला राशि से गोचर कर रहे सूर्य पर शनि की दशम दृष्टि से सोने में तेजी रहेगी। 19 अक्टू. मध्यान्ह 12।35 पर मंगल-शुक्र के 150 अंश का योग रुई में घटवढ़ रहेगी। 22 अक्टू. रात्रि 02।00 पर बुध-शुक्र का 45° अंश का योग रुई में मंदा देगा। 25 अक्टू. रात्रि 23।52 पर सूर्य तथा वक्री बुध की युति से रुई तथा चांदी में तेजी रहेगी। 31 अक्टू. प्रात: 08।11 पर पूर्व में उदित वक्री बुध से चांदी, सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तोरया में तेजी चलेगी।

नवम्बर–ता. 01 रविवारी व्यतिपात योग में रुई में मंदा आयेगा। 03 नवं. पूर्वान्ह 11।24 पर मार्गी हुए बुध से रुई में मंदा आयेगा, चांदी में तेजी चलेगी। 13 नवं.–सायं 18।00 पर मार्गी हुआ मंगल सोने में गिरावट देगा। 16 नवं.–कार्तिक शुक्ल द्वितीया के क्षय से घी में तेजी चलेगी। 16 नवं.– प्रात: 10।58 पर गुरु-शुक्र के 90° अंश के योग से रुई में मंदा रहेगा। 19 नवं. मध्यान्ह 14।13 से 02 दिसं. सायं 18।34 तक सूर्य के अनुराधा से गोचर में सोने में गिरावट रहेगी। 29 नवं. रुई में मंदा रहेगा। 30 नवं. सोमवारी चन्द्र ग्रहण से घी में तेजी बनेगी। 30 नवं. के सोमवारी चन्द्रग्रहण से तैल के संग्रह से लाभ मिलेगा। चांदी में गिरावट रहेगी।

दिसम्बर–ता. 01 से 14 दिसं. के मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में बुधवारी द्वितीया, रविवारी षष्ठी तथा गुरुवारी दशमी से इस पक्ष में घी में तेजी रहेगी, चांदी में मंदा रहेगा। 05 से 30 दिसं. के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में बुधवारी द्वितीया, रविवारी षष्ठी तथा गुरुवारी दशमी से इस पक्ष में घी में तेजी रहेगी। 01 दिसम्बर रात्रि 04।12 पर पूर्व में अस्त बुध से सरसों, अलसी, मूंगफली तथा तोरया में तेजी चलेगी। 06 दिसं. मध्यान्ह 12।11 पर मंगल-शुक्र के 150 अंश का योग रुई में तेजी देगा। 08 दिसं. रात्रि 00।15 पर शुक्र-राहु के 150 अंश का योग रुई में तेजी देगा। 14 दिसं. के सोमवारी कंकणाकृति सूर्यग्रहण से तैल के संग्रह से लाभ मिलेगा। 15 दिसं. मंगलवारी धनु संक्रांति से घी, तिल तथा तैल में तेजी चलेगी, सायं 18।28 पर शुक्र-शनि के 60 अंश का योग रुई में तेजी देगा। 20 दिसं. प्रात: 08।55 पर सूर्य तथा बुध की युति से चांदी में तेजी रहेगी। रुई में घटवढ़ रहेगी। 22 दिसं. मंगलवारी मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी तथा व्यतिपात योग से रुई में तेजी रहेगी। 24 दिसं. प्रात: 10।19 पर मंगल के मेष से गोचर में चांदी में तेजी रहेगी। 29 दिसं. मध्यान्ह 15।51 पर गुरु-शुक्र के 45° अंश के योग से रुई में मंदा रहेगा। 15 से 30 दिसं. के 16 दिन के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी। 31 दिसं. से 13 जन. 2021 तक के 14 दिन के कृष्ण पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी।

जनवरी 2021–ता. 09 सायं 16।27 पर अस्त शनि से अरण्डी में तेजी चलेगी। रात्रि 00।02 पर पश्चिम में उदित बुध से सोने में गिरावट रहेगी। 15 जन. मकर संक्रांति के समय सूर्य तथा गुरु के एक राशि में स्थिति तथा मंगल के मेष से गोचर में घी में मंदा रहेगा। 26 जन. मंगलवारी पौष शुक्ल त्रयोदशी में घी के संग्रह से लाभ होगा।

फरवरी–ता. 03 मध्यान्ह 12।48 पर पश्चिम में अस्त बुध तथा मध्यान्ह 13।19 पर बुध-शुक्र की युति से रुई में मंदा रहेगा। 06 फर. दशमी तिथि के क्षय से घी में तेजी बनेगी। 08 फर. रात्रि 19।20 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 11 फर. रात्रि 20।24 पर गुरु-शुक्र की युति से रुई में मंदा रहेगा। 24 फर. प्रात: 06।09 पर कुंभ राशि में चन्द्रमा-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा।

मार्च–ता. 14 रविवारी मीन संक्रांति से घी में तेजी चलेगी। 22 मार्च रात्रि 02।08 पर कुंभ राशि में चन्द्रमा-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 28 मार्च फाल्गुन शुक्ल पक्ष में मंगल-राहु की युति तथा त्रयोदशी के क्षय से रुई में मंदा रहेगा। 28 मार्च रविवारी फाल्गुन पूर्णमासी से घी में तेजी आयेगी। 26 मार्च त्रयोदशी के क्षय से घी में तेजी रहेगी।

चांदी में तेजी-मंदी वर्ष 2020-21

21 जून प्रात: 06।25 से 11 जुलाई प्रात: 10।07 तक वक्री बुध के अस्त काल में चांदी में तेजी रहेगी। 08 अग. मध्यान्ह 15।13 से 04 सितं. सायं 16।13 तक बुध के अस्त काल में चांदी में तेजी रहेगी। 16 अग. रात्रि 19।12 से 16 सितं. रात्रि 19।08 तक सूर्य के सिंह तथा शनि के मकर राशि से गोचर में चांदी में तेजी चलेगी। 17 अग. प्रात: 08।28 से 02 सितं. मध्यान्ह 12।01 तक बुध के सिंह से गोचर में चांदी में तेजी रहेगी। 28 सितं. रात्रि 01।00 से 23 अक्टू. तक शुक्र के सिंह राशि से गोचर में चांदी में गिरावट रहेगी। 02 सितं. मध्यान्ह 12।01 से 22 सितं. सायं 16।52 तक बुध के कन्या राशि से गोचर में चांदी में गिरावट रहेगी।

23 अक्टू. प्रात: 10।44 से 17 नवं. रात्रि 01।01 तक शुक्र के कन्या से गोचर में चांदी में तेजी रहेगी। 17 नवं. रात्रि 01।01 से 11 दिसं. प्रात: 05।16 तक शुक्र के तुला राशि से गोचर में चांदी में गिरावट रहेगी।

24 अक्टू. रात्रि 04।42 से 31 अक्टू. प्रात: 08।11 तक वक्री बुध के अस्त काल में चांदी में तेजी रहेगी। 01 दिसं. 2020 रात्रि 04।12 से 09 जनवरी 2021 रात्रि 00।02 तक बुध के अस्त काल में चांदी में तेजी रहेगी। 01 से 14 दिसं. तक के 14 दिन के मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी।

अप्रैल–24 अप्रैल से 07 मई तक 14 दिन के वैशाख कृष्ण पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी।

जून–17 जून रात्रि 22।31 से 12 जुलाई रात्रि 01।58 तक वक्री तथा वक्रावस्था में गोचर कर रहे गुरु से चांदी में तेजी रहेगी।

पौष मास की गुरुवारी संक्रांति तथा अमावस्या से मास में चांदी में तेजी रहेगी। माघ मास की शुक्रवारी संक्रांति तथा अमावस्या से मास में चांदी में तेजी रहेगी। 12 से 27 फरवरी तक के 16 दिवस के माघ शुक्ल पक्ष में चांदी में तेजी रहेगी। 29 मार्च से 12 अप्रैल के चैत्र कृष्ण पक्ष की सोमवारी अमावस्या से चैत्र मास में चांदी में मंदा रहेगा।

रुई में तेजी-मंदी वर्ष 2020

17 अप्रैल मध्यान्ह 12।18 से 22 अप्रैल मध्यान्ह 13।17 तक रुई में तेजी रहेगी। 14 मई सायं 19।23 से 19 मई 19।54 तक रुई में तेजी रहेगी।

11 जून रात्रि 03।42 से 16 जून रात्रि 03।18 तक रुई में तेजी रहेगी।

21 जुलाई से 03 अग. के श्रावण शुक्ल पक्ष में रुई में अच्छी तेजी चलेगी। 15 से 30 दिसं. के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में रुई में अच्छी तेजी चलेगी।

17 फरवरी रात्रि 20।59 से 22 फरवरी सायं 17।10 तक मंगल के मिथुन नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 15 अप्रैल 14।13 से 20 अप्रैल प्रात: 09।27 तक मंगल के मिथुन नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 13 जून 14।52 से 18 जून 20।15 तक मंगल के मिथुन नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी।

04 जन. रात्रि 19।36 से 09 जून 18।14 तक मंगल के कन्या नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 03 मार्च प्रात: 09।01 से 08 मार्च रात्रि 04।41 तक मंगल के कन्या नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 30 अप्रैल रात्रि 00।36 से 04 मई रात्रि 20।40 तक मंगल के कन्या नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 29 जून मध्यान्ह 15।15 से 05 जुलाई प्रात: 06।05 तक मंगल के कन्या नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी।

24 जन. मध्यान्ह 12।15 से 29 जून प्रात 09।42 तक मंगल के मकर नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 22 मार्च मध्यान्ह 14।40 से 27 मार्च प्रात: 09।47 तक मंगल के मकर नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 19 मई पूर्वान्ह 11।32 से 24 मई प्रात: 09।52 तक मंगल के मकर नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 23 जुलाई मध्यान्ह 14।20 से 30 जुलाई मध्यान्ह 13।53 तक मंगल के मकर नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी। 26 अक्टू. सायं 17।32 से 03 दिसं. रात्रि 04।42 तक मंगल के मकर नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी।

15 जन. रात्रि 21।21 से 18 मार्च रात्रि 19।08 तक राहु के मकर नवांश से गोचर में रुई में तेजी चलेगी।

09 जनवरी रात्रि 04।25 से शुक्र के कुंभ से गोचर में जबकि शनि अस्त है रुई में मंदा रहेगा यह योग 02 फरवरी 09।28 तक रहेगा।

ता. 23 जनवरी प्रात: 08।13 से 25 जनवरी प्रात: 06।39 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 31 जनवरी प्रात: 06।57 से 03 फरवरी रात्रि 02।16 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

08 फरवरी रात्रि 03।52 से 27 फरवरी मध्यान्ह 13।10 तक मंगल तथा केतु के नक्षत्र में गोचर से रुई में तेजी बनेगी।

06 मार्च रात्रि 02।08 से 09 मार्च 03।43 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

22 मार्च मध्यान्ह 14।40 से 04 मई रात्रि 20।40 तक मंगल तथा शनि के मकर से गोचर में रुई में तेजी। यद्यपि बीच बीच में मंदे के रियेक्शन भी आयेंगे परन्तु वह स्थाई नही होंगे।

30 मार्च रात्रि 0।54 से 04 मई रात्रि 20।40 मंगल तथा गुरु के मकर से गोचर में रुई में मंदा रहेगा।

05 अप्रैल प्रात: 07।08 से 07 अप्रैल 14।23 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

17 अप्रैल रात्रि 02।11 से 21 अप्रैल रात्रि 22।47 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

03 जून रात्रि 23।14 पर सूर्य शुक्र की युति से रुई में तेजी का योग है परन्तु रात्रि 01।55 से 08 जून पूर्वान्ह 11।23 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

13 जुलाई मध्यान्ह 14।47 से 19 जुलाई रात्रि 02।00 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

28 अग. रात्रि 22।17 से 01 सितं. रात्रि 02।02 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

03 अक्टू. सायं 18।55 से 06 अक्टू. मध्यान्ह 15।16 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

06 नवं. रात्रि 04।24 से 08 नवं. रात्रि 21।47 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

08 दिसं. मध्यान्ह 13।06 से 11 दिसं. प्रात: 05।16 तक शुक्र के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

07 अप्रैल 2020 मध्यान्ह 14।23 से 13 अप्रैल रात्रि 20।24 तक सूर्य बुध के मीन राशि से गोचर में रुई में मंदा रहेगा। 28 अप्रैल प्रात: 10।52 से 30 अप्रैल रात्रि 01।47 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

14 मई प्रात: 07।41 से 12 सितं. 2020 तक वक्री गुरु तथा वक्री शनि के मकर राशि से गोचर में रुई में मंदा आयेगा।

17 मई प्रात: 10।39 से 19 मई प्रात: 04।39 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 01 जून रात्रि 01।18 से 04 जून मध्यान्ह 12।51 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 12 जुलाई रात्रि 22।5 से 16 जुलाई प्रात: 10।48 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 31 जुलाई रात्रि 03।23 से 02 अग. रात्रि 03।32 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 20 अग. सायं 16।51 से 22 अगस्त 10।02 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 23 अगस्त सायं 17।22 से 27 अगस्त प्रात: 04।18 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 13 सितं. रात्रि 01।02 से 15 सितम्बर प्रात: 07।58 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 03 अक्टू. रात्रि 19।22 से 07 अक्टूबर प्रात: 04।33 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

12 नवंबर रात्रि 23।29 से 16 नवंबर प्रात: 06।55 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 26 नवंबर 03।23 से 28 नवंबर प्रात: 07।04 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा। 21 दिसंबर 16।55 से 23 दिसंबर रात्रि 19।55 तक बुध के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

30 मार्च से 30 जून तक रुई में गिरावट का योग रहेगा। 09 से 28 मार्च प्रात: 09।52 पर शुक्र गुरु के 120° अंश के योग से रुई में मंदा रहेगा।

20 नवम्बर से 22 दिसम्बर प्रात: 00।06 तक गिरावट के बाद गुरु शनि के बाद तेजी की शुरुआत होगी।

रुई में मंदी वर्ष-2021

04 फरवरी 2021 प्रात: 10।04 से 18 फरवरी मध्यान्ह 13।28 तक गुरु के मिथुन नवांश में गोचर से रुई में मंदा रहेगा।

02 अप्रैल-कृष्ण पक्ष षष्ठी के क्षय से रुई में मंदा रहेगा।

19 अप्रैल-प्रात: 07।17 पर सूर्य बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 26 अप्रैल-रात्रि 03।49 पर बुध-शुक्र की युति से रुई में मंदा रहेगा। 29 मई-प्रात: 10।45 पर बुध-शुक्र की युति से रुई में मंदा रहेगा। 01 जून-प्रात: 08।35 पर सूर्य-राहु की युति से रुई में मंदा रहेगा।

02 जून मध्यान्ह 12।28 पर पश्चिम में अस्त बुध से रुई में मंदा रहेगा। 11 जून-प्रात: 06।46 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 01 अग.-रात्रि 19।35 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 27 सितं.-रात्रि 02।06 पर पश्चिम में अस्त बुध से रुई में मंदा रहेगा। 09 अक्टूबर-रात्रि 21।50 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 29 नवंबर-प्रात: 10।05 पर सूर्य-बुध की युति से रुई में मंदा रहेगा। 14 दिसंबर-प्रात: 07।55 पर मंगल-केतु युति से रुई में मंदा रहेगा।

29 दिसंबर-सायं 16।01 पर बुध-शुक्र की युति से रुई में मंदा रहेगा।

ता. 28-29 मार्च-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 10 अप्रैल-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। ता. 24-25 अप्रैल-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 08 मई-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 10 मई-रविवारी मूल नक्षत्र से रुई में तेजी बनेगी। ता. 21-22 मई-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 04 जून-चतुर्दशी तिथि का क्षय हुआ है। क्षय तिथि तथा विशाखा नक्षत्र से रुई में घटबढ़ चलेगी। धान्यों में किंचित तेजी रहेगी। मादक पदार्थों में गिरावट आयेगी। तिथि क्षय से चांदी तेजी बनेगी। घी तथा अन्न में तेजी रहेगी। 05 जून-शुक्रवारी चन्द्रग्रहण सत्ता के केन्द्र बिंदुओं के लिये संघर्ष को बढ़ावा देगा। चांदी, मोती तथा श्वेत वस्त्रों में तेजी बनेगी। रुई के भावों में गिरावट आयेगी। संग्रह कर तीन मास पश्चात् बेंचने से लाभ होगा। वायु वेग के साथ वर्षा होगी। कृषि उत्पादन उत्तम होगा तथा धान्य बाजार साधारण रहेगा। 06 जून-16 दिवसीय पक्ष में चांदी में मंदा रहेगा। 07 जून-रविवारी मूल नक्षत्र से रुई में तेजी बनेगी। ता. 18-19 जून-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 01 जुलाई-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। ता. 15-16 जुलाई-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 27 जुलाई-अष्टमी तिथि क्षय से चांदी, रुई, घी तथा अन्न में तेजी रहेगी। 29 जुलाई-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 04 अग.-16 दिवसीय पक्ष में चांदी में मंदा रहेगा। ता. 11-12 अग.-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 25 अगस्त-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 08-09 सितंबर-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 19 सितंबर-तृतीया तिथि क्षय से चांदी रुई में तेजी बनेगी। घी तथा अन्न में तेजी रहेगी। 21 सितंबर-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 04-05 अक्टू.-भरणी तथा कृतिका नक्षत्रयुत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 18 अक्टू.-विशाखा नक्षत्रयुत दिन में रुई में मंदा।

ता. 01-02 नवंबर-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 06 नवंबर-षष्ठी तिथि की वृद्धि हुई है। खाद्यान्नों में औसतन मंदा रहेगा। 15 नवंबर-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 16 नवंबर- द्वितीया का क्षय हुआ है। खाद्यान्नों में औसतन 10 से 15 प्रतिशत की गिरावट आयेगी। तिथि क्षय से चांदी रुई में तेजी बनेगी। मादक पदार्थों-घी तथा अन्न में तेजी रहेगी। ता. 29 नवंबर-01 दिसंबर-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 12 दिसं.-विशाखा नक्षत्रयुत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 15 दिसंबर-16 दिवसीय पक्ष में चांदी में मंदा रहेगा। ता. 26-27 दिसंबर-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 03 जनवरी 2021-पौष कृष्ण पंचमी के क्षय से मादक पदार्थों में तेजी आयेगी। 09 जनवरी-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। ता. 22-23 जनवरी-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 05 फरवरी-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 17 फरवरी-माघ सुदी षष्ठी तिथि की वृद्धि से मादक पदार्थों में मंदा रहेगा। ता. 19-20 फरवरी-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा।

ता. 03 मार्च-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 06 मार्च-रविवारी मूल नक्षत्र से रुई में तेजी बनेगी। 09 मार्च-नवमी तिथि के क्षय से औसत भावों में तेजी आयेगी। ता. 18-19 मार्च-भरणी तथा कृतिका नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा रहेगा। 20 मार्च-सप्तमी तिथि की वृद्धि से मादक पदार्थों में तेजी आयेगी। 21 मार्च-फाल्गुन सुदी में सप्तमी की वृद्धि से मादक पदार्थों में तेजी आयेगी।

ता. 01 अप्रैल-विशाखा नक्षत्र युत दिन में रुई में मंदा।

जिन्स-धातु तेजी-मदी वर्ष 2020-21

अप्रैल-सूर्य मेष में 13 अप्रैल 20।23 पर-**यदाभानुः स्थितोमेषे फलानितुलीभादिकम्। इक्ष्वादि तिल-तैलादि तदाचैवमहर्घता॥**

ईख, घी, तिल, तैल, श्वेत वस्त्र, चांद, चन्दन, नारियल, सुपारी आदि फल, रुई आदि तौल से बिकने वाली वस्तुयें, गुड़, खांड़, सूत में तेजी बनेगी। सभी प्रकार की धातुओं तथा रसकसों का उत्पादन बढ़ेगा। बाजार मूल्यों में गिरावट रहेगी। महंगाई नियन्त्रित रहेगी।

सूर्य वृष में 14 मई 17।16 पर-शुक्र के क्षेत्र का सूर्य दो मास तक तेजी बनाये रखेगा। अन्न उत्पादन उत्तम रहेगा। भविष्यफल भास्कर के मत से सर्व सुखदायी सुभिक्ष होगा तथा अन्न उत्पादन अधिक होगा। वर्ष प्रबोध के मत से अनाजों में तेजी बनेगी। दूध, दही, घी एवं अन्य दुग्ध उत्पादों के भावो में तेजी रहेगी। वृष राशि के रवि करै सुख सम्पदा सुकाल। दूध, दही, घी में रहै महंगाई की चाल।।'

अन्य मत से प्रजा में कष्ट रहेगा। अन्न में तेजी रहेगी। किन्हीं स्थानों पर वर्षा की अधिकता होगी। सोना, कपड़ा, शस्त्र तथा अफीम में तेजी रहेगी।

सूर्य मिथुन में 14 जून 23।54 पर-कपास, कंदमूल, तिल तथा सभी प्रकार के धान्यों में तेजी बनेगी। (अर्घप्रकाश के मत से) आलू, अरबी, अदरक, सोंठ, मूंगफली, हल्दी, प्याज, आलू, अदरक, रुई, कपास, तिलहन, जूट, सरसों, अलसी, तिल, तैल तथा सभी प्रकार के अनाजों में तेजी आयेगी।

मिथुने रवि महंगे बिकै मूल रु कन्द कपास।
तिलहन सारे धान्य में तेजी का आभास॥

बुध की मिथुन राशि का सूर्य भूसा, धान, ज्वार, बाजार, मकई, ग्वार की पैदावार में वृद्धि करेगा। ज्येष्ठ मास की शनिवारी मिथुन संक्रांति से अन्न के मूल्यों में तेजी आयेगी।

सूर्य कर्क में 16 जुलाई 10।47 पर-कर्क राशि के सूर्य में यदि आश्लेशा नक्षत्र के दिन वर्षा हुई तो सभी प्रकार के अन्न उत्पन्न होंगे साथ ही किन्हीं स्थानों पर धान्यो में तेजी आयेगी। (अर्घप्रकाश के मत से)

सूर्य सिंह में 16 अगस्त 19।11 पर
सूर्य कन्या में 16 सितंबर 19।07 पर
सूर्य तुला में 17 अक्टूबर 07।05 पर
सूर्य वृश्चिक में 16 नवंबर 06।54 पर
सूर्य धनु में 15 दिसंबर 21।32 पर

ता. 14 जन. 08।15 पर मकर राशि में-अर्घप्रकाश ज्योतिष के अनुसार-**मकरेचस्थितेभानौघृततैलमहर्घता। सुभिक्षंसर्वधन यानांलोकानांदुःखपीडनम्॥**

वस्त्र, घी तथा तेल महंगे होंगे। सभी प्रकार के धान्यों में मंदा आकर भावों में समानता बनेगी। सोमवारी पौषी मकर संक्रांति से धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। गुड़ का उत्पादन बढ़ेगा। घी, तैल, रुई तथा लाल वस्त्रों में तेजी आयेगी। धान्यों में कभी तेजी तो कभी मंदा रहेगा।

कुम्भ में 12 फर. 21।12 पर-सभी प्रकार के धान्यों के मूल्यों में समता रहेगी। नमक में तेजी आयेगी। (अर्घप्रकाश के मत से) अन्न, रुई, पटसन, बारदाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में गिरावट आयेगी। गन्ना, मक्का, ज्वार बाजरा, ऊनी रेशमी वस्त्र तथा किराने की वस्तुओं में मंदा आयेगा। अन्य मत से वस्त्रों में तेजी बनेगी। नमक, तैल, सरसों, मूंगफली, अलसी, राई के भावों में सामान्य तेजी आयेगी। सोना, चांदी आदि धातुओं के भाव सम रहेंगे। रुई, सूत, बिनोला, कपास में घटबढ़ चलेगी। तिल, तेल सरसों, लाही, अलसी में पहले तेजी आकर बाद में मंदा होगा। जौ, चना गेहूं में घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी। सोमवारी संक्रांति अनाजों, मूंगा, मोती के भावों में गिरावट का योग बना रही है। गुड़ तथा लाल रंग के वस्त्रों का उत्पादन बढ़ेगा। अफीम में गिरावट रहेगी। अन्न में मंदा चलेगा। रुई नमक, तिल, तैल तथा धान्यों में तेजी आयेगी।

मीन में 14 मार्च 18।03 पर-15 मुहूर्ति संक्रांति में रसकस तथा अन्न में तेजी बनेगी। बैठी संक्रांति से समान स्थिति रहेगी। नमक, तिल, तैल तथा सभी धन्यों में तेजी बनेगी। नमक, तिल, तैल तथा सभी धान्यो में तेजी बनेगी। मीन के सूर्य से धान्यों में तेजी बनेगी। नमक, तिल, तेल में साधारण तेजी आयेगी। फाल्गुन मास की शुक्रवारी संक्रांति में सुखद तथा शुभफल होंगे। सुभिक्ष रहेगा। नमक, तिल, तैल तथा सभी धान्यों में तेजी। नमक, तिल, तैल तथा सभी धान्यों में तेजी। बुधवारी संक्रांति रस पदार्थों में, गुड़, खांड, सरसों, अलसी, तिल, तैल, तिलहनों में मंदा करेगी। भविष्यफल भास्कर में मत से बुधवारी संक्रांति से सुभिक्ष होगा।

बुधवार को जब कभी हो सूर्य संक्रांत।
रस पदार्थ गुड़, खांड अरु तिलहन तेज नितांत॥
सर्व धान्य महंगे बिकै मीन राशि गत भानु।
तेजी तिलहन, नमक में साधारण अनुमानु॥

मीन के सूर्य से धान्यों में तेजी बनेगी। नमक, तिल, तेल में साधारण तेजी आयेगी। शुक्रवारी मीन संक्रांति से प्रजा में सुख-सुभिक्ष रहेगा। शक्कर आदि के संग्रह से लाभ होगा।

लेखक : प्रवीन कुमार जैन एवं डॉ. उमा जैन
आवास सी- 82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने
नोविनो तरसाली रोड, वडोदरा (गुजरात), पिन-390009
मो 09574337962 E-mail : pmummy@gmail.com

शेयर बाजार वर्ष 2020-2021 ई.

लेखक:-
प्रवीन कुमार जैन, डॉ. उमा जैन

गत वर्ष के शेयर बाजार आंकलन में हमने स्पष्ट रूप से बैंक्स के विलय, माईनिंग, पैट्रोलियम रिफाईनरीज में शेयर्स में तेजी तथा शेयर बाजार इण्डेक्स में नई ऊंचाईयों को छूने की भविष्यवाणी की थी । वैसा ही हुआ। इस वर्ष का शेयर बाजार आंकलन भी उन्हीं ज्योतिषीय सिद्धांतों, मतों एवं परम्परा तथा ग्रह गोचर पर आधारित है जिन की गणना के आधार पर हमारा शेयर बाजार का आंकलन पूर्व में बहुचर्चित, सर्वत्र प्रशंसित तथा सराहनीय रहा है। विभिन्न संचार माध्यमों से दिन-प्रतिदिन अनेक पाठकों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पूर्व की भांति इस वर्ष भी हम इस आलेख में वर्ष के प्रत्येक मंगलवार के लिये शेयर बाजार का आंकलन प्रस्तुत कर रहे हैं तो उसका कारण जैसा कि हम पूर्व में भी कह चुके है, मात्र इतना है कि अनेक विद्वानों ने शेयर बाजार का लग्न वृश्चिक निर्धारित किया है। अपने संशोधन तथा शोध के उपरान्त हम भी इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि मंगल ग्रह का शेयर बाजार पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हमारा प्रयास सदैव शोधात्मक कार्य को प्रस्तुत करना रहा है ताकि वह अनेकानेक प्रकार से विद्वत्जनों के लिये न केवल उपयोगी हो वरन् विचारोत्तेजक भी हो तथा विद्वान् पाठकों को इस दिशा में अधिक परिष्कृत रूप में कार्य करने के लिये प्रेरित करें। बाजार के आंकलन में प्रतिशत में बताई गई तेजी-मंदी इन्ट्राडे है, बाजार किसी दिन तेजी में जाने के उपरान्त भी पिछले दिन की तुलना में गिरकर बंद हुआ हो सकता है ।

24 मार्च—ओपनिंग समय पर 32.34 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 42.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। इण्डियन होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी। टाटा स्टील, मुकुन्द सेल, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, बाटा इण्डिया, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

31 मार्च—ओपनिंग समय पर 24.99 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.69 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.32 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया) लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, टाईड वाटर, अरविन्द फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, अबोट इण्डिया, मर्क, टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी. , गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ , मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयर टैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

07 अप्रैल—ओपनिंग समय पर 24.99 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 41.65 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, पी.सी.ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, आयशर मोटर्स, बजाज ऑटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, मिर्जा इन्टरनेशनल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

14 अप्रैल—ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.36 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। रेमण्ड, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, सन टी वी, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन इण्डियन होटल्स, ई.आई.एच., लेमन ट्री होटल्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, युनिकैम लैबोरेटरीज, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। टाटा स्टील, आई. टी. सी., वी एस टी इण्डस्ट्रीज, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

21 अप्रैल—ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.36 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरबिन्दो फार्मा, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। एम. पी. डिस्टलरीज, आई. टी. सी. , गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलपर्स, डी. एल. एफ., मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयर टैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

28 अप्रैल—ओपनिंग समय पर 16.67 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 50.01 प्रतिशत निगेटिव तथा 33.32 प्रतिशत सामान्य रहेंगे। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, बजाज हिन्दुस्तान शेयर्स, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शेयर्स मिल्स, मवाना शेयर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), इण्डियन होटल्स, लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, जी. पी. पेट्रोलियम, बायकोन, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प के शेयर्स गिरावट में रहेंगे। सेल, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, बी. ई. एम. एल., आई.टी. सी., अल्ट्राटेक सीमेन्ट, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, रिलैक्सो फूट वियर, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

05 मई—ओपनिंग समय पर 16.67 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.32 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शेयर्स, टाटा काफी, रेडिको खेतान, गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरबिन्दो फार्मा, लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स गिरावट में रहेंगे। ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, डी. एल. एफ., मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयर टैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

12 मई–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत सामान्य रहेंगे। क्लोजिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में तथा 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। शेष 33.32 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अरविन्द, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी पैरी (इण्डिया), टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, उषा मार्टिन, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स गिरावट में रहेंगे। ई.आई.एच., लेमन ट्री होटल्स, कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., अपोलो टायर्स अल्ट्राटेक सीमेन्ट, गोदरेज प्रापर्टी, बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

19 मई–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे। आयशर मोटर्स, बजाज आटो, टाटा स्टील, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज़, गुडरिक ग्रुप, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स में गिरावट रहेगी।

26 मई–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), बजाज आटो, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल., के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई.टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलपर्स, बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

02 जून–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.32 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। क्लोजिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में तथा 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। शेष 25.00 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, वर्क्स, टाईड वाटर, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

09 जून–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.32 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), अरविन्दो फार्मा, ल्यूपिन, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स में गिरावट रहेगी। इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), श्री सीमेंट, वेदान्ता, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

16 जून–ओपनिंग समय पर 16.67 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो, ई. आई. एच., टाटा स्टील, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

23 जून–ओपनिंग समय पर 33.34 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.66 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल., टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

30 जून–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जय श्री.टी.एण्ड इण्डस्ट्रीज, एम.पी. डिस्टलरीज, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम के शेयर्स में गिरावट रहेगी। श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, भारती एयरटैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

07 जुलाई–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 58.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, मुकुन्द, सेल, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन

आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी.एस.टी. इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस.बी.आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स गिरावट में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्राप्र्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

14 जुलाई–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, बजाज आटो, इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर के शेयर्स में गिरावट रहेगी। द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

21 जुलाई–ओपनिंग समय पर 58.31 प्रतिशत शेयर्स तेजी में तथा 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। शेष 08.33 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। गवर्नमेन्ट पेपर्स टाटा स्टील, मुकुन्द, सेल, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल., टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज, हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अल्ट्राटेक सीमेन्ट, श्री सीमेंट, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्राप्र्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

28 जुलाई–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, सिएट, अपोलो टायस के शेयर्स तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, टाईड वाटर, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मर्क, महिन्द्रा लाजस्टिक, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्राप्र्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., रिलैक्सो फूट वियर, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

04 अगस्त–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), टाटा स्टील, मुकुन्द, सेल, टाटा काफी, एम. पी. डिस्टलरीज, आई. टी. सी., वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। इण्डियन होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, द रामको सीमेंट, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

11 अगस्त–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), टाटा स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, मुकुन्द, गुडरिक ग्रुप, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, इण्डियन होटल्स, लेमन ट्री होटल्स, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अल्ट्राटेक सीमेंट, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्राप्र्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, रिलैक्सो फूट वियर, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

18 अगस्त–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिन्द्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, इण्डियन होटल्स, ई आई एच, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, जी. पी. पेट्रोलियम के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), जिन्दल स्टील एण्ड पावर, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अल्ट्राटेक सीमेन्ट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्राप्र्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

25 अगस्त–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, इण्डियन होटल्स, लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल., टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, अरबिन्दो फार्मा, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। श्री सीमेंट, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्राप्र्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

01 सितम्बर–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., अपोलो टायर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द सेल, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर

मोटर्स, बजाज आटो, गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया) के शेयर्स में गिरावट रहेगी। द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेंगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

08 सितम्बर–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। क्लोजिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में तथा 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। शेष 16.67 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो, गवर्नमेन्ट पेपर्स अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया) के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अल्ट्राटेक सीमेन्ट, बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

15 सितम्बर–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 52.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 10.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। क्लोजिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में तथा 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। शेष 08.33 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, टाटा स्टील, सेल, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, टाटा मोटर्स, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया) के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अल्ट्राटेक सीमेंट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

22 सितम्बर–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.35 प्रतिशत निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत सामान्य रहेंगे। ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिद्रां बैंक, सिएट, अपोलो टायर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेगें। टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), अल्ट्राटेक सीमेन्ट, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, भारती एयरटेल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

29 सितम्बर–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 49.99 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल., अरविन्द, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), टाईटन कम्पनी, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया गवर्नमेन्ट पेपर्स के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

06 अक्तूबर–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल., आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

13 अक्तूबर–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल., आई. टी. सी., वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, एच. टी. मीडिया, जागरण प्रकाशन, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, मारुति सुजुकी, बजाज आटो में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया सामान्य रहेंगे।

20 अक्तूबर–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। जिन्दल स्टील एण्ड पावर, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल., आई. टी. सी. , गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिद्रां बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज,टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी.वी., जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

27 अक्तूबर–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 58.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, आई. टी. सी. , गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच, टाईड वाटर, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

03 नवम्बर–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। इण्डियन होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, रेडिको खेतान, बी. ई. एम. एल., आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, डी. एल. एफ., रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

10 नवम्बर–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल., आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी. एस. टी. इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, लेमन ट्री होटल्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन,, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलपर्स, डी. एल. एफ., मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

17 नवम्बर–ओपनिंग समय पर 58.31 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 08.33 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, एम. पी. डिस्टलरीज, गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, जी. पी. पेट्रोलियम गवर्नमेन्ट पेपर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, अरबिन्दो फार्मा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, डी.एल. एफ., बाटा इण्डिया. रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

24 नवम्बर–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, मुकुन्द, सेल, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, गवर्नमेन्ट पेपर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज, हिन्दुस्तान शुगर, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, हिन्दुस्तान मीडिया, जागरण प्रकाशन में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स अल्ट्राटेक सीमेन्ट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलपर्स. बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

01 दिसम्बर–ओपनिंग समय पर 58.31 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 25.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, अरविन्द, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज, हिन्दुस्तान शुगर, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया) टाटा स्टील, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, रेडिको खेतान के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, बजाज आटो, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स गिरावट में रहेंगे। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलपर्स, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

08 दिसम्बर–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, उषा मार्टिन, मुकुन्द, सेल, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल. , वर्धमान टैक्स्टाईल्स, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया) के शेयर्स तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, आयशर मोटर्स, बजाज आटो, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, हिन्दुस्तान मीडिया, जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

15 दिसम्बर–ओपनिंग समय पर 66.64 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 16.69 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, इण्डियन होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, मोहन मीकिन्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल,

एच.टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन में तेजी रहेगी। मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजीस्टिक, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

22 दिसम्बर–ओपनिंग समय पर 66.64 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 16.69 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम टाटा स्टील, गुडरिक ग्रुप, टाटा काफी, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरबिन्दो फार्मा, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स गिरावट में रहेंगे। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

29 दिसम्बर–ओपनिंग समय पर 50.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 16.67 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। ई. आई. एच., टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, टाटा कॉफी, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी. , वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

05 जनवरी 2021–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 25.03 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 41.65 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी. , एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, मुकुन्द, सेल, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल. , अरबिन्दो फार्मा, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। ई. आई. एच., जी. पी. पेट्रोलियम, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

12 जनवरी–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 25.03 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 33.32 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी. के शेयर्स तेजी में रहेंगे। टाटा स्टील, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, एम. पी. डिस्टलरीज, बी. ई. एम. एल., अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई. , अपोलो टायर्स श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

19 जनवरी–ओपनिंग समय पर 33.32 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 25.03 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 41.65 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। जिन्दल स्टील एण्ड पावर, रेडिको खेतान, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), आई. टी. सी., वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई. , सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, भारती एयरटैल के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

02 फरवरी–ओपनिंग समय पर 16.67 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 50.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया, टाटा कम्युनिकेशन, भारती इन्फ्राटेल, रिलायंस कम्युनिकेशन के शेयर्स तेजी में रहेंगे। लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, जागरण प्रकाशन, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, एम. पी. डिस्टलरीज, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी।

09 फरवरी–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 25.00 प्रतिशत निगेटिव तथा 50.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। इण्डियन होटल्स, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम के शेयर्स तेजी में रहेंगे। जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, एम. पी. डिस्टलरीज, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। गवर्नमेन्ट पेपर्स आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), वी. एस. टी. इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस.बी.आई., सिएट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

16 फरवरी–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 41.65 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, टाटा कॉफी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, अबोट इण्डिया, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प,

अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), बी एस टी इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, जागरण प्रकाशन, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

23 फरवरी–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.66 प्रतिशत निगेटिव तथा 33.34 प्रतिशत सामान्य रहेंगे। जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स तेजी में रहेंगे। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, बजाज, हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी.एल.एफ., बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

02 मार्च–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 41.65 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, उषा मार्टिन, मुकुन्द, सेल, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, मोहन मीकिन्स, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स तेजी में रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, युनिकैम लैबोरेटरीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), बी. एस. टी. इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, गोदरेज प्रापर्टी, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

09 मार्च–ओपनिंग समय पर 25.00 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 41.65 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, बी. ई. एम. एल. के शेयर्स तेजी में रहेंगे। अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, खादिम इण्डिया, आई. टी. सी., कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर के शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, वोकहार्ट, युनिकैम लैबोरेटरीज, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा लाजस्टिक, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, बजाज आटो टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन के शेयर्स में गिरावट रहेगी।

16 मार्च–ओपनिंग समय पर 33.35 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, उषा मार्टिन, मुकुन्द, सेल, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप के शेयर्स तेजी में रहेंगे। टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., जी. पी. पेट्रोलियम अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, रेमण्ड, आलोक इण्डस्ट्रीज, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), बी. एस. टी. इण्डस्ट्रीज, कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, गोदरेज प्रापर्टी, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

23 मार्च–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील, जिन्दल स्टील एण्ड पावर, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, वैभव ग्लोबल, हिन्दुस्तान मीडिया, डी. बी. कार्प के शेयर्स तेजी में रहेंगे। ई. आई. एच., जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, अरविन्द, वर्धमान टैक्स्टाईल्स, बजाज, हिन्दुस्तान शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स, धामपुर शुगर मिल्स, मवाना शुगर्स, ई. आई. डी. पैरी (इण्डिया), अरबिन्दो फार्मा, ल्यूपिन, बायकोन, टाटा मोटर्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुति सुजुकी, हीरो मोटरकार्प, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स, अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, श्री सीमेंट, वेदान्ता, गोदरेज प्रापर्टी, महिन्द्रा लाईफ स्पेस डेवलेपर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

30 मार्च–ओपनिंग समय पर 41.65 प्रतिशत शेयर्स तेजी में, 66.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव तथा 25.00 प्रतिशत शेयर्स सामान्य रहेंगे। गवर्नमेन्ट पेपर्स, टाईटन कम्पनी, पी. सी. ज्वैलर्स, हिन्दुस्तान मीडिया, सन टी. वी., एच. टी. मीडिया, डी. बी. कार्प, जागरण प्रकाशन, टाटा स्टील, सेल, लायडस मैटल एण्ड इण्डस्ट्रीज, जय श्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज, गुडरिक ग्रुप, टाटा कॉफी, मोहन मीकिन्स के शेयर्स तेजी में रहेंगे। इण्डियन होटल्स, ई. आई. एच., लेमन ट्री होटल्स, होटल लीला वैन्चर, जुबलियेन्ट फूड वर्क्स, टाईड वाटर, जी. पी. पेट्रोलियम, अरविन्द, आलोक इण्डस्ट्रीज, सतलुज टैक्स्टाईल एण्ड इण्डस्ट्रीज, बजाज हिन्दुस्तान शुगर, युनिकैम लैबोरेटरीज, मर्क, मोरपेन लैबोरेट्रीज, टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, अशोका लैलेन्ड, आयशर मोटर्स, बजाज आटो के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आई. टी. सी., गोडफ्रे फिलिप्स (इण्डिया), कोटक महिंद्रा बैंक, एस. बी. आई., सिएट, अपोलो टायर्स अल्ट्राटेक सीमेन्ट, द रामको सीमेंट, वेदान्ता, सन्दूर मेगनीज एण्ड आयरन ओर्स, डी. एल. एफ., बाटा इण्डिया, रिलैक्सो फूट वियर, मिर्जा इन्टरनेशनल, खादिम इण्डिया, भारती एयरटैल, वोडाफोन-आयडिया के शेयर्स सामान्य रहेंगे।

शेयर्स बाजार का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर आधारित है तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है। बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है। बाजार में काम करने व्यापार करने से पूर्व बाजार का आंकलन कर लेना हितावह है। ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक, प्रकाशक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। बाजार की वार्षिक, अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट के लिये लेखक से उनके स्थायी आवास सी- 82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने, नोविनो तरसाली रोड, वडोदरा (गुजरात), पिन-390009 मो 09574337962 पर अथवा pmummy@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

लेखक : प्रवीन कुमार जैन एवं डॉ. उमा जैन

भारतीय मानसून एवं आकाशीय लक्षण सन् 2020 ई.

जनवरी 2020–मासारंभ में सूर्य पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 11 को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में, ता. 24 को यह श्रवण नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 8 को शुक्र कुंभ में, ता. 13 को बुध मकर में, ता. 14 को सूर्य-बुध की युति, ता. 24 को शनि-सूर्य-बुध की प्रतियुति होने से मास के प्रारंभ में पूर्वी भारत में मौसम का मिजाज बिगड़ेगा। पहाड़ी भू-भागों में भयंकर हिमपात या प्राकृतिक उत्पात होने का योग बन रहा है। भारत के कुछ भू-भागों में अचानक वायु-वेगात्मक वर्षा से अचानक शीत लहर का प्रकोप पूरे उत्तर भारत एवं पश्चिम भारत में बना रहेगा। दक्षिण भारत में भी वायु वेगात्मक आंधी-तूफान, वर्षा हो सकती है। ता. 1, 3, 5, 10, 11, 14 को यत्र-तत्र वर्षा और ओले पड़ सकते हैं। ता. 14 को सूर्य की मकर संक्रांति वायुमण्डल में पड़ रही है। जिससे वायु के अव्यवस्थित, अप्रत्याशित संचरण के कारण मौसम में बदलाव दिखेगा। ताप लहरों से आम जन-जीवन पीड़ित रहेंगे। ता. 17, 18, 19, 21, 25, 27, 28, 30 को मौसम में परिवर्तन हो सकता है। समुद्र तटीय प्रदेशों मे वायु-वेगात्मक तूफान संभव है।

फरवरी–मासारंभ में सूर्य श्रवण नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 6 को धनिष्ठा में, ता. 19 को शतभिषा में विचरण करते रहेंगे। ता. 2 को शुक्र जलीय राशि मीन में, ता. 7 को मंगल धनु राशि में, ता. 17 को बुध वक्री होगा। जिससे मास के प्रारंभ में ही अनेक भू-भाग में वायु वेग तीव्र हवा के साथ शीत का प्रकोप अपने चरम सीमा पर होगा। रात में पाला पड़ने पर जहां खड़ी फसलों को नुकसान पहुंचा सकता है। तो कहीं यातायात, इंटरनेट, वायुयान प्रभावित हो सकते हैं। मौसम के व्यतिक्रमित होने के कारण कीट प्रकोपों से खड़ी फसलों को कुछ नुकसान भी संभावित है। पर्वतीय क्षेत्रों में विशेष हिमपात होने से मैदानी भू-भागों में ठंड का ग्राफ बढ़ता जायेगा। ता. 2, 3, 5, 7, 9, 10, 12 को बादल-वृष्टि हो सकती है। ता. 13 को सूर्य की कुंभ संक्रांति वायुमंडल में पड़ने से अचानक मौसम में सामान्य किन्तु तेजी से बदलाव हो सकता है। हालांकि ता. 20 के आसपास में मौसम में फिर जोरदार उपद्रव शुरू हो सकता है। ता. 13, 17, 19, 21, 24, 25, 27, 28 को ऋतु विपर्यय से ठंड का ग्राफ अभी जारी रहेगा।

मार्च–मासारंभ में सूर्य शतभिषा नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 4 को यह पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में, ता. 17 को उत्तराभाद्रपद में तथा ता. 31 को रेवती नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 2 को बुध पूर्व में उदय होगा। यह उदित अवस्था में ही ता. 10 को मार्गी हो जायेगा। जिससे तापमान में धीरे-धीरे सुधार होता जायेगा। दिन और रात के तापमान में अंतर सामान्य से अलग दिखेगा। हालांकि पर्वतीय भू-भागों में बर्फीली हवाओं के कारण मैदानी भू-भागों में यत्र-तत्र बूंदा-बांदी, ओलावृष्टि हो सकती है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में वायु वेगात्मक उपद्रव से नुकसान संभावित है। दक्षिण भारत, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, गुजरात में मौसम अचानक बिगड़ सकता है। ता. 14 को सूर्य की मीन संक्रांति अग्निमंडल में पड़ने से तीव्र गर्मी, तापमान बढ़ने के साथ ही अचानक कहीं-कहीं वायु वेगात्मक आंधी-तूफान, वर्षा संभावित है। मासांत में अचानक उत्तर-पश्चिमी भारत का मौसम बिगड़ सकता है। जिससे अनेक भू-भागों में बेमौसम वर्षा से खड़ी फसलों को नुकसान भी संभावित है। ता. 2, 3, 5, 7, 8, 11, 12, 14, 16, 17, 19, 21, 23, 25, 28, 30 को मौसम का मिजाज बदला-बदला सा रह सकता है।

अप्रैल–मासारंभ में सूर्य रेवती नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 13 को यह अश्विनी नक्षत्र तथा ता. 27 को भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। ता. 7 को बुध मीन में प्रवेश करने से देश के अधिकांश भू-भागों में धूल भरी आंधी-तूफान का उपद्रव हो सकता है। इसके साथ ही अधिकांश भू-भागों में अचानक तापमान में व्यापक वृद्धि होगी। दक्षिण भारत के साथ ही पूर्वोत्तर भू-भागों में बूंदा-बांदी से लेकर वायु वेगात्मक वृष्टि भी हो सकती है। ता. 2, 3, 4, 5, 7, 9, 10, 12 को मौसम में व्यतिक्रम उत्पन्न होगा। जो कृषि कार्य को प्रभावित करेगा। ता. 13 को सूर्य की मेष संक्रांति वायुमण्डल में पड़ने से तापमान में निरन्तर वृद्धि के साथ वायु संचरण की स्थिति अनियंत्रित होने से मौसम में व्यतिरेक दिखेगा। ता. 15, 19, 21, 23, 25, 26, 29 को मौसम का परिवर्तन, गर्मी बढ़ने और हवा में उष्णता बढ़ने से होगी। जिससे गर्मी का प्रकोप समय से पहले आश्चर्य जनक तरीकों से अपनी पराकाष्ठा की ओर बढ़ती जायेगी। जिससे जन-जीवन कष्ट अनुभव करेंगे।

मई–मासारंभ में सूर्य भरणी नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 11 को यह कृतिका में, ता. 24 को रोहिणी में प्रवेश करेंगे। ता. 4 को मंगल शत्रु शनि की राशि कुंभ में, ता. 9 को बुध वृष में, ता. 11 को शनि वक्री होगा। ता. 13 को शुक्र भी वक्री होगा। ता. 14 को गुरु भी वक्री होगा। जिससे मास के प्रारंभ से ही मौसम का मिजाज कुछ उपद्रवकारी हो सकता है। जिससे महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, बंगाल एवं उड़ीसा के तटीय भू-भागों में तूफान, चक्रवात और वर्षा से जन-जीवन बाधित हो सकता है। माह में तीन ग्रह वक्री होने से भी वायु-वेग तथा मेघा गमन की स्थिति भी उपद्रवकारी हो सकती है। ता. 14 को सूर्य की वृष संक्रांति अग्निमण्डल में पड़ने से मैदानी भू-भागों में गर्मी का प्रकोप अपनी चरम सीमा पर रहेगी। तापमान वृद्धि के कारण मृत्यु ग्राफ में वृद्धि हो सकती है। ता. 1, 5, 8, 9, 10, 13 को कुछ प्राकृतिक उत्पात संभावित है।

जून–मासारंभ में सूर्य रोहिणी नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 7 को मृगशिरा तथा ता. 21 को यह आर्द्रा नक्षत्र में विचरण करेंगे। मासारंभ में बुध उदित अवस्था मे ता. 18 को वक्री होकर ता. 21 को अस्त हो जायेगा। जिससे मासारंभ में भारत के अधिकांश भू-भागों में गर्मी का प्रकोप बढ़ता जायेगा। हालांकि मानसून प्रवेश में अभी भी गतिरोध की स्थिति बनी रहेगी। जिससे दिन-रात के तापमान में गर्मी की उष्णता बनी रहेगी। इसके साथ ही जल स्तर काफी नीचे चले जाने से जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। मास के उत्तरार्द्ध तक ताप लहरी, लू-बवंडर का प्रकोप जारी रहेगा। ता. 14 को मिथुन की सूर्य संक्रांति वायु मण्डल में पड़ने से वायु संचरण की स्थिति रहेगी। जिससे कुछ विलम्ब से मानसून का आगमन हो सकता है। कुल मिलाकर ता. 21 जून के आस-पास व्यापक मानसून का हालात बन सकता है। ता. 1, 3, 4, 7, 9, 11, 13, 14 को ताप लहरी, लू-बवंडर, आंधी, तूफान, अन्य प्राकृतिक उत्पात संभावित है।

जुलाई–मासारंभ में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में विचरण करते हुए यह ता. 5 को पुनर्वसु में, ता. 19 को पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। मास के प्रारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलते हुए ता. 11 को यह उदय होगा। ता. 12 को यह उदित अवस्था में मार्गी हो जायेगा। जिससे यह चतुर्दिक पावस की सक्रियता को बढ़ायेगा। जिससे अधिकांश भू-भागों में सामान्य से भारी वर्षा संभावित है। तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, सौराष्ट्र में भी व्यापक वर्षा हो सकती है। ता. 1, 3, 4, 5, 7, 9, 10, 11, 12 को अधिकांश भू-भागों में अच्छी वृष्टि संभव है। ता. 16 को कर्क की सूर्य संक्रांति चन्द्रमण्डल में पड़ने से वर्षा का क्रम व्यवस्थित हो पायेगा। वर्षा समयानुकूल और अच्छी होने के कारण कृषक वर्ग खुशहाल रहेंगे।

अगस्त–मासारंभ में सूर्य पुष्य नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 2 को यह आश्लेषा में, ता. 16 को यह मघा में, ता. 30 को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 1 को शुक्र मिथुन में, इसी तारीख को बुध जलीय राशि कर्क में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 7 को बुध अस्त हो जायेगा। जिससे मासारंभ में कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि का योग बनेगा। ता. 2, 3, 4,

5, 7, 9, 10, 11, 12 को अधिकांश भू-भागों में गरज-तरज के साथ-साथ कहीं-कहीं अतिवृष्टि का योग बनेगा। ता. 16 को सिंह की सूर्य संक्रांति चन्द्र मण्डल में पड़ने से बाढ़ ग्रस्त इलाकों में बाढ़ का प्रकोप अपनी पराकाष्ठा पर रहेगा। बाढ़ से पूर्वोत्तर भारत, उत्तरी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेष रूप से प्रभावित हो सकते हैं। जबकि महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात में सामान्य या कम वर्षा हो सकती है।

सितंबर–मासारंभ में सूर्य पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 13 को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में तथा ता. 26 को यह हस्त नक्षत्र में विचरण करेंगे। मासारंभ में बुध विचरण करते हुए ता. 7 को उदित हो जायेंगे। ता. 10 को मंगल तथा ता. 13 को गुरु वक्री होंगे। जिससे मासारंभ में अधिकांश भू-भागों में सामान्य वर्षा का क्रम जारी रहेगा। ता. 13 को गुरु मार्गी होने से अचानक मानसून की सक्रियता कम होने लगेगी। यदा-कदा पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता से पश्चिमी भारत को छोड़कर कहीं-कहीं सामान्य वर्षा हो सकती है। आकाशीय बिजली गिरने से जन हानि हो सकती है। कन्या की सूर्य संक्रांति ता. 16 को अग्निमंडल में पड़ने से मानसून भारतीय परिक्षेत्र से बाहर निकलने के लिए आतुर हो जायेगा। जिससे इस वर्ष हस्त नक्षत्र की कीमती जल भाग्यशाली प्रदेशों को प्राप्त होना ही संभव है।

अक्टूबर–मासारंभ मे सूर्य हस्त नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 10 को चित्रा नक्षत्र में तथा ता. 23 को स्वाती नक्षत्र में विचरण करेंगे। हालांकि आगामी मास में शनि मार्गी हो गया है। ता. 4 को मंगल जलीय राशि मीन में तथा बुध उदित अवस्था में चलते हुए ता. 13 को अस्त होकर ता. 14 को वक्री हो जायेंगे। फलत: मास के प्रारंभ में भारत के अधिकांश भू-भागों मे मौसम का मिजाज बिगड़ा रहेगा। इससे अधिकांश भू-भागों में प्राकृतिक उत्पात भी संभावित है। कृषि के पर्याप्त वर्षा हालांकि भाग्यशाली प्रदेशों में ही संभव है। ता. 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9, 10, 12 को कहीं-कहीं बूंदा-बांदी, बादल-वृष्टि हो सकती है। ता. 17 को तुला की सूर्य संक्रांति वायुमण्डल में पड़ने से मानसून भारतीय उपमहाद्वीप से आगे निकल जायेगा। रात्रि का तापमान धीरे-धीरे गिरेगा। दिन में भी इसकी तेजी कमजोर होगी। ता. 25, 27, 29, 30 को मौसम परिवर्तित हो सकता है। जिससे समुद्रतटीय प्रदेशों में वायु वेगात्मक आंधी-तूफान, चक्रवात अथवा बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, झारखण्ड के कुछ भू-भागों में वायु वेगात्मक वर्षा से फसल को हानि पहुंच सकता है।

नवंबर–मास के प्रारंभ में सूर्य स्वाती में विचरण, ता. 6 को विशाखा में, ता. 19 को अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। मास के प्रारंभ में बुध उदित अवस्था में चलते हुए ता. 4 को मार्गी होगा। ता. 14 को मंगल भी मार्गी हो जायेगा। जिससे दिन और रात के तापमान में गिरावट से गुलाबी ठंड महसूस होने लगेगी। ता. 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9, 11, 12 को पछुआ हवाओं के जोर से रात्रि का तापमान गिरेगा। पर्वतीय भू-भागों में विशेषत: उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश एवं कश्मीर में हिमपात हो सकता है। ता. 16 को वृश्चिक की सूर्य संक्रांति चन्द्रमण्डल में पड़ने से ठंड का असर उत्तर भारत में बढ़ेगा। मास के उत्तरार्द्ध के बाद कुछ भू-भागों में बूंदा-बांदी होगी। ता. 19, 21, 24, 25, 27, 28, 30 को मौसम का मिजाज बदला-बदला सा रहेगा। जिससे कुछ भू-भागों में प्राकृतिक उत्पात से जन-जीवन बाधित हो सकता है।

दिसम्बर–मास के प्रारंभ में सूर्य अनुराधा नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 2 को यह ज्येष्ठा में, ता. 15 को यह मूल नक्षत्र में, ता. 28 को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। मास के प्रारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलते रहेंगे। ता. 10 को शुक्र, सूर्य, बुध, केतु के साथ प्रतियुति होने से अधिकांश भू-भागों मे सामान्य वायु का जोर रहेगा। जिससे समुद्रतटीय भू-भागों में आंधी-तूफान, चक्रवात से अचानक वायु-वेगात्मक वर्षा का जोर रहेगा। पहाड़ी भू-भागों में हिमपात से असमय शीत में वृद्धि जारी रहेगी। जिससे ठंड का ग्राफ आश्चर्य जनक तरीका से नीचे जा सकता है। ता. 3, 4, 7, 9, 11, 14, 17, 21, 27 को छिटपुट बारिश हो सकती है।

हरिद्वार में कुंभ महापर्व का सुयोग

कुंभ मेला सूर्य और बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करता है। जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है और बृहस्पति कुंभ राशि में होता है तो इसे हरिद्वार में मनाया जाता है।

संवत् 2078 में बुधवार ता. 14 अप्रैल सन् 2021 ई. को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने और बृहस्पति कुंभ राशि में होने से हरिद्वार में कुम्भ महापर्व का आयोजन किया जा रहा है। चूंकि 6 अप्रैल, 2021, मंगलवार को गुरु के कुंभ राशि में प्रवेश होने के बाद ही कुंभ महापर्व का विशेष महात्म्य प्रारंभ हो जायेगा।

ब्रह्मचारी गृहस्थौ वा वाना प्रस्थो अथ भिक्षुक:। बाल वृद्ध युवा नं च नर: नारी नपुंशका।। अर्थात् कुंभ पर्व योग पावन पर्व स्नान दान करने वाले सात्वकी प्रवृति वाले मनुष्य पुनर्जन्म, मरण के बंधन से मुक्त हो जाते हैं। हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग एवं नासिक इन तीर्थों पर प्रत्येक 12 वर्षों के पश्चात् सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति-इन तीनों ग्रहों का विशेष योग बनने पर कुंभ महापर्व का आयोजन किया जाता है। हरिद्वार में श्रीगंगा के तट पर स्नान करके प्राणी अनेक पापों से मुक्त होकर स्वर्गिक सुखों को प्राप्त करता है। विधिपूर्वक कुंभ स्नान से बढ़कर कोई पवित्र और पापनाशक पर्व नहीं है। शास्त्रानुसार व्यक्ति मात्र तीन दिन नियमपूर्वक स्नान कर लें तो उसे एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों के करने के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है। कुंभ महापर्व मनुष्य के पूर्व संस्कारों से प्राप्त मानसिक व शारीरिक पापों को नष्ट करता है। जिस प्रकार नदी अपने किनारे को काटती हुई आगे बढ़ती है।

जो लोग हरिद्वार जाने से असमर्थ हों, वे लोग अपने निवास स्थान पर ही स्नान पात्र में गंगा का जल डालकर भगवान् विष्णु, सूर्य एवं वरुण के मंत्र पढ़कर एवं प्रार्थना पूर्वक अन्न, वस्त्र, कलश, तिल, गुड़, पुष्प, फलों का दान तथा विष्णु सहस्त्रनाम, श्री गंगा स्तोत्र, आदित्य हृदय स्तोत्र, सूर्य के द्वादश नाम आदि स्तोत्रों का विधिपूर्वक पाठ करें तो शुभफल की प्राप्ति होती है एवं मानसिक पापों का क्षय होता है।

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणां भूमे: कुंभ स्नानेन तत्फलम्।। श्री विष्णु पुराणानुसार सहस्त्रों अश्वमेध यज्ञ करने से, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह पुण्य फल केवल कुंभ स्नान करने से प्राप्त होता है। कुंभ पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुंभ का पूजन कर, उसे वस्त्र अलंकार, आभूषण सुवर्ण या चांदी की मुद्रा सहित सदाचारी ब्राह्मण या विद्वान को संकल्प पूर्वक देने से सैकड़ों गोदान करने का फल प्राप्त होता है। कुंभ पर्व पर साधु-महात्माओं को भोजन खिलाना व दक्षिणा देने से आत्म कल्याण के साथ-साथ पित्तरों को भी तृप्ति होती है। कुंभ पर्व पर मनुष्यों को मन की निर्मलता, सादगी एवं सदाचार का पालन अवश्य करना चाहिए।

कुंभ महापर्व प्रमुख स्नान की तिथियां

तिथि	वार	पर्व	तिथि	वार	पर्व
14 जनवरी 2021	गुरुवार	मकर संक्रांति	28 मार्च 2021	रविवार	फाल्गुन पूर्णिमा
28 जनवरी 2021	गुरुवार	पौषी पूर्णिमा	12 अप्रैल 2021	सोमवार	सोमवती अमावस्या
11 फरवरी 2021	गुरुवार	मौनी अमा.	14 अप्रैल 2021	बुधवार	वैशा. सं. प्र. शाही स्ना.
16 फरवरी 2021	मंगल	वसंत पंचमी	21 अप्रैल 2021	बुधवार	राम नवमी
27 फरवरी 2021	शनिवार	माघ पूर्णिमा	27 अप्रैल 2021	मंगलवार	चैत्र पूर्णिमा
11 मार्च 2021	गुरुवार	महाशिवरात्री	14 मई 2021	शुक्रवार	अक्षय 3 शाही स्ना.